



सिद्धपद (सिद्धपुर) निवासी-गीर्वाणविद्याभ्रपण
स्व० शास्त्री दुर्गागङ्कर उमागङ्कर शर्मा.

जन्म शक १७९८ आश्विन शुद्ध पौषमा] [स्वर्गवास शक १८६३ भाद्रपद शुद्ध पौषी

प्रास्ताविकं किञ्चित्

समादरणीयाचरणाः विद्वद्वरेण्याः !

श्रौतस्मार्तकर्मनुष्ठानसहायस्यास्य बृहद्ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयस्याष्टमीमावृत्तिं प्रकाशयतो मे भृशं मोदते चेतः । साम्प्रतमियमस्य पुस्तकस्याष्टमी खल्वामावृत्तिः प्रकाशिता भवतीत्येव पुस्तकस्यास्योपयोगितायाः परमं प्रमाणमित्यतोऽस्मिन्विषये किमधिकेन वक्तव्येन ।

पूर्वामावृत्ताविवास्यामपि त एवाष्टौ विभागाः वर्तन्ते, धैर्यपेक्षितो विषयः सारल्येन श्रीमतां विदुषा हस्तगतो भविष्यति । परिशिष्टप्रकरणे महालय-मासिकसांवत्सरिकश्राद्धविषयोऽपि प्रदत्त एव । अपरं च यथापूर्वं पुस्तकस्यास्य सौन्दर्ये, वैशद्ये, विशुद्धिमत्त्वे च मया पर्याप्तं प्रयतितमस्ति । सचित्रोपवस्त्रेण दृढबन्धनेन चेदं सुबद्धं वर्तते ।

यद्यपि सप्तम्यावृत्यपेक्षयाऽपीयमावृत्तिरतीव महार्घा समजनि तथापि मूल्यमेतस्य यत्किञ्चिदेव संवर्धितं श्रीमन्तो द्रक्ष्यन्ति ।

नेदं निहेतुकं निरवधानं वा । एतदर्थमुपयुक्तानां वस्तुजातानां विदेशीयायातप्रतिबन्धवशादेव मूल्यममर्यादं वृद्धिं गतमथ च वैदिकविषयाणां सस्वरमन्त्राणां मुद्रापणमपि न सुकरं स्वल्पव्ययं चेति नाविदितं विदुषाम् ।

श्रौतस्मार्तकर्मनुष्ठाननिष्ठवैदिकजगतः सश्रद्धां सेवां चिकीर्षुस्तथाच ग्रन्थस्यास्य लेखकस्य पूज्यपादस्य मम पितुर्वृत्तेः प्रवृत्तेश्च स्मारकमिदं निर्मिमिपुरहमिदानीं द्रव्यार्जनेऽनादरोऽस्मि ।

एतेनैव मूल्येनेतोप्यधिकमहदक्षरमुद्रापित (५२५) पचविंशत्युत्तर
पचशतपृष्ठात्मक पुस्तक न त्रौऽपि दातु प्रभवेद्यदि तत्रस्था मन्त्रा अपूर्णा
न स्यु । मया तु ऋण्यप्रायान् 'सन्निनऽइन्द्रो०' एतादृशान् मन्त्रान्
नग मर्येऽपि मन्त्रा सम्पूर्णा एव निरिता सन्तीति वैशिष्ट्यमस्य
ग्रन्थस्येति ।

प्रयत्ननिम श्रीमन्त महदयतया सहानुभूत्या च सन्वृत्य प्रोत्साहयि-
ष्यन्ति मानित्याशामे ।

पुनःकस्यास्य मशो मनभारनुद्धृष्टि नदीयपितुर्मित्रस्य " श्री. शास्त्रीजी
तुलजाशङ्कर धीरजराज पंढ्या " इत्येतेमहदुपहृतमिति सादर वृत्तजा-
मुर्गीभवेति । एतेमहानुभवंमया च सगोधने भावधान सिहितेऽपि
ममस्तरदेरे दुःखापि दृष्टिपथ शेषनेश इति स्वीकृत्यादायेव तन्मूचनार्थ
मभ्यर्प्यार्थेजानि धानाम् ।

अथावशि श्रीनद्विरम्भप्रकाशनानि सराण्यपि ममादरेणाप्यनोक्तानि
तर्कान्दप्यनोरुदित्यन्तीति विज्ञापयति —

वाङ्मयसंस्कृतशास्त्राणां
शास्त्राणां मुद्रणं ६
मार्ग १०० नं २०१०
२०१-१-११

त्रिपुरा विषय
यत्तद्वत्तः शास्त्री

दो शब्द

आदरणीय महानुभाव,

बृहद्ब्रह्मनित्यरुर्मसमुच्चय की यह आठवीं आवृत्ति ही इस पुस्तक की उपयोगिता एवं आपके आदर की परिचायिका है। अतः इस विषयमें अधिक कुछ कहने की या लिखने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती।

सातवीं आवृत्तिके अनुसार मैंने इसे आठ विभागोंमें बाट दिया है ताकि कोई भी विषय आसानी से ढूँढा जा सके। अनुक्रमणिका को देखते ही आपको इस बातका पता चल जायगा। इस आवृत्तिमें भी अत्यन्त उपयोगी एक परिशिष्ट प्रकरण है जिसमें आप महालय, मासिक एवं सांवत्सरिक श्राद्ध पूराका पूरा पायेंगे।

इसकी पूर्व सातवीं आवृत्तिसे यह आठवीं आवृत्ति मुझे काफी महँगी पडी है, उसके कई विशिष्ट कारण हैं। इसके उपयोगमें आनेवाली कई चीजोंके भाव, विदेशीय वस्तुओंकी आयात पर प्रतिबन्ध आजानेके कारण दुगने, तिगुने बढ़ गये हैं यह आपको सुविदित है ही। आप यह भी जानते हैं कि वैदिक स्वरांवाली छपाई भी बहुत कम प्रेसोंमें होती है और अधिक महँगी होती है। फिर भी मैंने इस पुस्तक में सफेद, चिकने कागज का ही उपयोग किया है और पहलेकी तरह इस पुस्तक को विशेष शुद्ध और सुन्दर बनाने की भरसक कोशिश की है। साथ में इसे, रंगीन, सचित्र उपवस्त्र (जेकेट) से सुशोभित एवं सुरक्षित बनाने की भी चेष्टा की है। पृष्ठ ५२५ हैं और वाइन्डिंग भी पक्का है। फिर भी इसका मूल्य बहुत थोडा ही बढ़ाया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के केवल दो ही उद्देश्य हैं। एक तो श्रौत-स्मार्तकर्मनुष्ठानप्रेमियों की सेवा करना और दूसरा, इस पुस्तक के लेखक मेरे स्वर्गीय पूज्यपाद पिताजी की धार्मिक वृत्ति-प्रवृत्ति का स्मारक करना।

इस ग्रन्थ में पहलेकी तरह सर्वसामान्य और प्रायः कण्ठस्थ मंत्रोंको छोड़कर सभी मन्त्र जगह जगह पर मैंने पूरे दिये हैं। सर्वसामान्य

गणपतिपूजन और षोडश संस्कारविधिको देखने से आपको यह पता चलेगा । इस स्थिति में पूरे मन्त्रों के साथ यदि मैं इस पुस्तक को बड़े अक्षरों में देने की चेष्टा करता तो इतने पृष्ठोंमें, इतनी कीमत में, इतने विषय, मैं हरगीज नहीं दे सकता । और पृष्ठसंख्या बढ़ाकर इसकी कीमत अधिक बढ़ा देना मैंने उचित नहीं माना । आशा है पाठक इस बातको सहृदयतापूर्वक सोचेंगे, समझेंगे और मेरे इस प्रयास को सहानुभूतिसे देखेंगे ।

प्रस्तुत पुस्तक के संशोधन का पूरा भार मेरे पूज्य पिताजी के परम मित्र एव वेदशास्त्रादि के पूरे तत्त्वज्ञ वे. शा. सं. श्री. शास्त्रीजी तुलजाशङ्कर धीरजराम पण्ड्या ने अपने सिर पर लेकर सहृदयतापूर्वक भुझे जो सहायता दी है उसे भला मैं कैसे भूल सकता हूँ ? ।

इस प्रकार संशोधन में भी मैंने पूरा ध्यान दिया है फिर भी हो सकता है कहीं दोष रह गया हो । अतः आपसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि क्षमापूर्वक उस ओर मेरा ध्यान अवश्य खींचें ताकि आगामी आवृत्तिमें मैं उसे सुधार सकूँ ।

आप महानुभाव आज तक मेरे प्रत्येक प्रकाशनको अतीव आदरसे अपनाते आये हैं, इसलिये मैं आपके प्रति श्रद्धाके साथ कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप उसी आदर दृष्टिसे मेरी इस लघु पुस्तिका को अपनाकर भुझे प्रोत्साहित करेंगे, ताकि मैं ऐसे और भी ग्रन्थ प्रकाशित कर आप सर्व सनातनधर्मानुरागी, श्रौतस्मार्तकर्मणुष्ठान प्रेमी विद्वद्गण की सेवा करता रहूँ और पिताजी की विशेष प्रिय इस प्रवृत्ति को वेग देकर उनकी आत्माको प्रसन्न कर जब तक जीऊँ तब तक उनके पुनित आशीर्वाद पाता रहूँ ।

वालुकेश्वर संस्कृत पाठशाला
याणगंगा, यमुई, ६
अश्वयुज्या स. २०१९
ता. २६-४-६३

आपका
यज्ञदत्त शास्त्री.

अनुक्रमणिका

॥ नित्यकर्मात्मकः प्रथमो विभागः ॥ १ ॥

१ मंगलाचरणम्	१	१७ पंचायतनदेवताः ...	१८
२ प्रातःस्नानम्	२	१८ पंचायतनदेवतास्थापन- प्रकारः ..	२०
३ भूमिस्पर्शः	२	१९ शिवपंचायतनपूजाप्रयोगः २९-५६.	२०
४ प्रातःस्मरणम्	२	॥ अथ रुद्राभिषेकप्रयोगः ॥	
५ मूत्रपुरीषोत्सर्गविधिः	४	२० रुद्राभिषेकप्रकाराः ५६-६०	
६ दन्तधावनविधिः ...	५	२१ रुद्राभिषेकप्रयोगः ६०-९१	
(नद्यादौ नित्यस्नानप्रयोगः टिप्पण्यम्) २६९		२२ मध्याह्नसन्ध्याप्रयोगः ९२	
७ गृहे प्रातःस्नानप्रयोगः	७	२३ सूर्योपस्थानप्रयोगः ९४	
८ गौणस्नानानि	९	(मण्डलब्राह्मणम्) ९५	
९ आशौचे कर्मादित्याग- विचारः १०		२४ ब्रह्मयज्ञप्रयोगः ... ९८	
१० प्रातःसन्ध्याप्रयोगः ११-२५		२५ तर्पणप्रयोगः १०२	
॥ शिवपंचायतनपूजनप्रयोगः ॥		२६ वैश्वदेवप्रयोगः ... १११	
११ देवस्पर्शोऽनधिकारिणः २६		२७ भोजनविधिः ... ११६	
१२ देवार्चनकालः	२६	२८ सायंसन्ध्याप्रयोगः ... १२०	
१३ देवप्रतिमायां नित्यस्नान- विचारः ..	२६	२९ शयनविधिः १२२	
१४ मध्याह्ने भुक्तस्यापि रात्रौ पंचोपचारपूजाप्रकारः ..	२७	३० संक्षिप्तनूतनयज्ञोपरीत- धारणप्रयोगः १२४	
१५ गृहे देवताप्रतिमाविचारः २७		३१ प्रमादाद्यज्ञोपवीतनाशे विशेषप्रयोगः १२६	
१६ देवप्रतिमाप्रतिष्ठाविचारः ..	२७	३२ सूत्रके संख्याविधिः १२७	
		३३ सूत्रोक्तत्रिकालसन्ध्याप्र० ..	१२७

गणपतिपूजन और षोडश सस्कारविधिको देखने से आपको यह पता चलेगा । इस स्थिति में पूरे मन्त्रों के साथ यदि मैं इस पुस्तक को बड़े अक्षरों में देने की चेष्टा करता तो इतने पृष्ठोंमें, इतनी कीमत में, इतने मिय, मैं हरगीज नहीं दे सकता । और पृष्ठसख्या बढ़ाकर इसकी कीमत अधिक बढ़ा देना मैंने उचित नहीं माना । आशा है पाठक इस बातको सहृदयतापूर्वक सोचेंगे, समझेंगे और मेरे इस प्रयास को सहानुभूतिसे देखेंगे ।

प्रस्तुत पुस्तक के सशोधन का पूरा भार मेरे पूज्य पिताजी के परम मित्र एव वेदशास्त्रादि के पूरे तत्पज्ञ वे. शा. सं. श्री. शास्त्रीजी तुलजाशङ्कर धीरजराम पण्ड्या ने अपने सिर पर लेकर सहृदयतापूर्वक मुझे जो सहायता दी है उसे भला मैं कैसे भूल सकता हूँ ? ।

इस प्रकार सशोधन में भी मैंने पूरा ध्यान दिया है फिर भी हो सकता है कहीं दोष रह गया हो । अतः आपसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि क्षमापूर्वक उस ओर मेरा ध्यान अनन्य स्वीचें ताकि आगामी आवृत्तिमें मैं उसे सुधार सकूँ ।

आप महानुभाव आजतक मेरे प्रत्येक प्रकाशनको अतीव आदरसे अपनाते आये हैं, इसलिये मैं आपके प्रति श्रद्धाके साथ कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप उसी आदर दृष्टिसे मेरी इस लघु पुस्तिका को अपनाकर मुझे प्रोत्साहित करेंगे, ताकि मैं ऐसे और भी अन्य प्रकाशित कर आप सर्व सनातनधर्मानुरागी, श्रौतस्मार्तन्मार्निष्ठान प्रेमी निष्ठद्वेष की सेवा करता रहूँ और पिताजी की विशेष प्रिय इस प्रवृत्ति को वेग देकर उनकी आत्मानो प्रसन्न कर जब तक जीऊँ तब तक उनके पुनिन आशीर्वाद पाता रहूँ ।

पालुकेश्वर संस्कृत पाठशाला
 पाणगगा, यम्बई, ६
 अश्वयुजीया स २०१९
 ता २६-४-६३

आपका
 यज्ञदत्त शास्त्री.

अनुक्रमणिका

॥ नित्यकर्मात्मकः प्रथमो विभागः ॥ १ ॥

१ मंगलाचरणम्	१	१७ पंचायतनदेवताः ...	१८
२ प्रातरुत्थानम्	२	१८ पंचायतनदेवतास्थापन- प्रकारः ..	२१
३ भूमिस्पर्शः	३	१९ शिवपंचायतनपूजाप्रयोगः २१-५६.	
४ प्रातःस्मरणम्	४	॥ अथ रुद्राभिषेकप्रयोगः ॥	
५ मूत्रपुरीषोत्सर्गविधिः	५	२० रुद्राभिषेकप्रकाराः ५६-६०	
६ दन्तधावनविधिः ...	६	२१ रुद्राभिषेकप्रयोगः ६०-९१	
(नद्यादी नित्यस्नानप्रयोगः टिप्पण्यम्) २६९		२२ मध्याह्नसन्ध्याप्रयोगः ९२	
७ गृहे प्रातःस्नानप्रयोगः	७	२३ सूर्योपस्थानप्रयोगः ९४	
८ गौणस्नानानि	८	(मण्डलप्राप्त्यम्) ९५	
९ आशौचे कर्मादित्याग- विचारः १०		२४ ब्रह्मयज्ञप्रयोगः ... ९८	
१० प्रातःसन्ध्याप्रयोगः ११-२५		२५ तर्पणप्रयोगः १०२	
॥ शिवपंचायतनपूजनप्रयोगः ॥		२६ वैश्वदेवप्रयोगः ... १११	
११ देवस्पर्शोऽनधिकारिणः २६		२७ भोजनविधिः ... ११६	
१२ देवार्चनकालः	२७	२८ सायंसन्ध्याप्रयोगः ... १२०	
१३ देवप्रतिमायां नित्यस्नान- विचारः ..	२८	२९ शयनविधिः १२२	
१४ मध्याह्ने भुक्तस्यापि रात्रौ पंचोपचारपूजाप्रकारः ..	२९	३० संक्षिप्तनूतनयज्ञोपवीत- धारणप्रयोगः १२४	
१५ गृहे देवताप्रतिमाविचारः २७		३१ प्रमादाद्यज्ञोपवीतनाशे विशेषप्रयोगः १२६	
१६ देवप्रतिमाप्रतिष्ठाविचारः ..	३०	३२ सूक्तके सन्ध्याविधिः १२७	
		३३ सूत्रोक्तत्रिकालसन्ध्याप्र० ..	

॥ नैमित्तिककर्मात्मको द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥

॥ भस्मोद्भूलनरुद्राक्षमालाधारणभृशुद्धयादिमहान्याससमन्वितपञ्चवक्त्रपूजनप्रयोगः ॥

(रुद्राभियेकप्रयोगलंकृतः) १२२-१७१	४३ पञ्चवक्त्रपूजनम् ... १६१
३४ भस्मोद्भूलनप्रयोगः १३०	प्रकारान्तरेण पञ्चवक्त्रपूजा ... १६२
३५ रुद्राक्षमालाधारणप्रयोगः १३३	(शिवमानसपूजा) ... १६२
३६ भृशुद्धिप्रयोगः ... १३४	(भेयोदानविधिः) .. १७०
३७ भूतशुद्धिप्रयोगः ... १३५	४४ कुण्डपूजनप्रयोगः ... १७१
३८ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः १३९	४५ होमात्मकलघुरुद्रप्रयोगः १७४-१७७
३९ अन्तर्मातृकान्यासप्रयोगः १४२	(प्रधानहोमप्रयोगः १६१ एकपक्ष- सु
४० बहिर्मातृकान्यासप्रयोगः १४३	शतधामन्त्रविभागात्मकहोम- स्वाहाकारः) ... १७७
४१ महान्यासप्रयोगः ... १४५	
४२ रुद्रपूजनप्रयोगः .. १५६	

॥ देवीयागात्मकस्तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

४६ नवचण्डीशतचण्डीसहस्र— चण्डीप्रयोगः १८८-२९१	देवीपूजागहोमविधि .. २१७
एकादशन्यासप्रयोगः .. १९०	बलिपंचकविधि ... २१८
४७ पात्रासादनप्रयोगः ... १९५	प्रधानदेवीबलिदानम् ... २१९
पीठपूजा १९९	देवीनीराजनम् ... ,,
नवशक्तिस्थापनम् ... २००	कुमारीपूजा ... २२१
यंत्रदेवतास्थापनम् १	होमः ... २२२
४८ देवीरात्रोपचारपूजाप्रयोगः २०२	४९ नवरात्रे घटस्थापनादिप्र० २२७
अंगपूजा, आवरणदेवतापूजा २०६	कुमारिकापूजनम् ... २२९
अष्टे चरगतनामानि ... २१२	नियमग्रहणम्, नियमन्यागप्रकारः ,,
नैवेद्यनिवेदनविधिः ... २१४	विसर्जनविधिः ... २३०

॥ चतुर्थो विभागः ॥ ४ ॥

॥ यत्नोन्मुक्तविधिधरेनास्थापन—एवास्तुपूजनात्मकः ॥

५० विष्णोस्त्रिशोपचारपूजा २३१	५२ चतुःपष्टिपदवास्तुमंडल-
५१ शक्तिशैलशस्थापनम् २३३	देवतास्थापनम् ... २३४

५३ चतुःषष्टियोगिनीस्थापनम् २३७	भद्रमंडलदेवतास्थापनम् २४७
५४ एकपंचाशत्क्षेत्रपालस्था- पनम् २३९	५७ (३४) रेखात्मकद्वादशलिंग- गतोभद्रमण्डलदेवतास्था- पनम् २५०
५५ सर्वतोभद्रमंडलदेवतास्था- पनं वैदिकपुराणोक्तमंत्र- सहितम् २४०	५८ गृहवास्तुपूजाप्रयोगः २५३
५६ (४३) रेखात्मकहरिहर- मण्डलस्थद्वादशलिंगतो-	एकाशीतिपदवास्तुमंडलदेवता- स्थापनम् २५५

॥ पञ्चमो विभागः ॥ ५ ॥

॥ श्रावणीकर्मसहितविविधमन्त्रप्रयोगात्मकः ॥

१९ हेमाद्रिप्रोक्तज्ञानसंकल्पः २५९	७२ गायत्रीपुरध्वरणप्रयोगः ३००
६० दशविघ्नज्ञानानि ... २६५	७३ चतुर्विंशतिगायत्र्यः ३०३
६१ श्रावणीप्रयोगः २६७-२९४	७४ शानाक्षरागायत्रीमन्त्राः ३०४
तीर्थज्ञानप्रयोगः ... २६९	७५ वेदाधिकाररहितानां गायत्रीमंत्रः "
६२ सप्तर्षिपूजनप्रयोगः ... २७६	७६ जपसिद्धयर्थे नियमाः .. "
६३ स्वपितृभ्यो यज्ञोपवीतदानम् २८०	७७ जपफलम् "
६४ यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः .. "	७८ सन्तानगोपालमंत्रजप- विधिः ३०५
६५ उत्सर्गतर्पणम् ... २८३	७९ (सर्वादिष्टशान्त्यर्थम्) समहामृत्युञ्जयजपविधिः .. "
६६ धंशानां घुवणम् ... २८४	८० वेदोक्तसवीजनवग्रहमन्त्र- जपप्रयोगः ३०८
६७ शान्त्रा० कण्डिकाः ... २८८	८१ पुराणोक्तनवग्रहमन्त्राः ३१२
६८ ऋषिश्वाहम् २९०	
६९ उपाकर्महवनप्रयोगः ... २९२	
७० रक्षाबंधनविधिः ... २९५	
७१ शिवपार्थिवेश्वरचिन्ताम- णिपूजनप्रयोगः "	

॥ षष्ठो विभागः ॥ ६ ॥

॥ ग्रहशान्तिसहितपोडशसंस्कारात्मकः ॥

८२ ग्रहशान्तिप्रयोगः ३१३-३७१	८४ सङ्कल्पः ३१४
८३ भद्रसूक्तम् ३१३	८५ गणपतिपूजनम् ... ३१५

८६ पुण्याहवाचनप्रयोगः	३१९	१०९ उत्तरपूजनम्	...	३५७	
८७ मातृकापूजनप्रयोगः	३१९	११० स्विष्टकृद्धोमः	...	३५८	
श्रयादिसप्तवसोर्द्धारा- पूजनम्	...	३३३	१११ नवाहुतिहोमः	...	३५९
८८ आयुष्यमन्त्रजपः	...	३३४	११२ वलिदानप्रयोगः	...	३५९
८९ सांकल्पविधिना नान्दी- श्राद्धप्रयोगः	...	३३५	११३ पूर्णाहुतिहोमः	...	३६१
९० आचार्यादिक्रतुविग्वर- णम्	...	३३७	११४ वसोर्द्धाराहोमः	...	३६५
९१ (दिग्भक्षणम्) पंचग- ध्यकरणम्	...	३४०	११५ भस्मधारणम्	...	३६६
९२ भूमिकूर्मान्तपूजनम्	३४१	११६ त्रेयोदानम्	...	३६७	
९३ स्यंङ्गिले पंचभूसंस्काराः	३४१	११७ दक्षिणादानम्	...	३६७	
९४ अग्निस्थापनम्	...	३४२	११८ अभिषेकः	...	३६८
९५ ग्रहमण्डलदेवतास्था- पनम्	...	३४२	(घृतपात्रादिदानम्)	...	३६९
९६ अग्न्युत्थारणम्	...	३४५	११९ प्रयाःमकपुण्याहवा- चनम्	...	३७०
९७ प्राणप्रतिष्ठा	...	३५०	॥ षोडशसंस्कारप्रयोगः ॥		
९८ वैकल्पिकपदार्थायधारणं देवताभिषयानं च	...	३५१	१२० गर्भाधानसंस्कारप्रयोगः	३७२	
९९ कुशकंडिका	...	३५२	१२१ पुंसवनसंस्कारप्रयोगः	३७३	
१०० आचारहोमः	...	३५४	१२२ सीमंतोजवनसं० प्रयोगः	३७४	
१०१ आज्यभागहोमः	...	३५५	१२३ शीघ्रप्रसवोपायो यन्त्रश्च	३७७	
१०२ द्रव्यत्यागसंकल्पः	...	३५५	१२४ जातकर्मसंस्कारप्रयोगः	३७७	
१०३ अग्निपूजनम्	...	३५५	१२५ अनादिष्टप्रायश्चित्तहोमः	३७७	
१०४ प्रधानहोमः	...	३५५	१२६ पृथ्वीपूजनप्रयोगः	३८१	
१०५ गुग्गुलुहोमः	...	३५६	१२७ नामकर्मसंस्कारप्रयोगः	३८३	
१०६ सर्पपहोमः	...	३५६	१२८ निष्क्रमणसंस्कारप्रयोगः	३८५	
१०७ लक्ष्मीहोमः	...	३५६	१२९ अन्नप्राशनसंस्कारप्रयोगः	३८६	
१०८ ध्याहतिहोमः	...	३५६	१३० चौलसंस्कारप्रयोगः	३८८	
			१३१ उपनयनसंस्कारप्रयोगः	३९१	
			१३२ वेदारंभसंस्कारप्रयोगः	४०३	
			१३३ केशान्तसंस्कारप्रयोगः	४०७	
			१३४ समावर्तनसंस्कारप्रयोगः	४०७	
			१३५ घादानप्रयोगः	४१७	

१३६ विवाहसंस्कारप्रयोगः ४१९ ४४५	१४४ लाजाहोमः ४३६
१३७ मधुपर्कप्रयोगः ... ४१९	१४५ सप्तपदाक्रमणम् ... ४३९
(मंगलाष्टकम्) ... ४२३	१४६ सप्तपदी गुर्जरटीकोपेता ,,
१३८ कन्यादान-(संकल्पः)	१४७ कन्याप्रतिष्ठा... .. ४४२
प्रयोगः ४२७	१४८ चतुर्थीकर्मप्रयोगः ४४५
१३९ विवाहहोमः ... ४३१	१४९ विवाहहोमकाले कन्या-
१४० राष्ट्रभूद्धोमः ... ४३२	यामृतमत्यां होमविधिः ४४८
१४१ जयाहोमः ... ४३४	१५० कन्याग्रहे भोजनविचारः ४४९
१४२ अभ्यातानहोमः ... ,,	१५१ अर्कविवाहः ,,
१४३ अग्निरित्यादिपंचाहुतयः ४३६	१५२ कुम्भविवाहः ४५४

॥ विविधशांतिप्रयोगात्मकः सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

१५३ रजोदोषे श्रीशांतिः... ४५६	१५८ आश्लेषाशांतिप्रयोगः ४६७
१५४ वृहस्पतिशांतिः ... ४५७	१५९ वैधृतिशांतिप्रयोगः ४६९
वास्तुशांतिप्रयोगः ... २५३	१६० द्व्यतीपातशांतिप्रयोगः ४७०
ग्रहशांतिप्रयोगः ... ३१३	१६१ त्रिकप्रसवशांतिप्रयोगः ४७१
१५५ गोमुखप्रसवशांतिप्रयोग ४५९	१६२ कृष्णचतुर्दशीशांतिः ४७२
१५६ मूलशांतिप्रयोगः ... ४६१	१६३ दर्शशांतिः ,,
१५७ ज्येष्ठाशांतिप्रयोगः ४६६	

॥ स्तोत्रादिसंग्रहात्मकः अष्टमो विभागः ॥ ८ ॥

१६४ गणपत्यथर्वशीर्षम् ४७२	१७५ विष्णोरष्टोत्तरशतना-
१६५ श्रीसूक्तम् ४७३	मानि ४९४
१६६ शिवमहिम्नस्तोत्रम् ४७६	१७६ विष्णोर्नीराजनम् ... ४९५
१६७ श्रीमद्भगवद्गीतायाः	१७७ शिवनीराजनम् ... ४९६
पञ्चदशोऽध्यायः ४८१	१७८ देवीनीराजनम् ५१९
१६८ पुराणोक्तपुरुषसूक्तम् ४८१	
१६९ चण्डीकवचम् ४८३	॥ परिशिष्टप्रकरणम् ॥
१७० तान्त्रिकं रात्रिसूक्तम् ४८७	१७९ वैदिकमहालयचटभ्राद्-
१७१ शक्रादिहृता देवीस्तुतिः ४८८	प्रयोगः ४९७-५१६
१७२ देव्यपराधक्षमापनस्तो० ४९१	१८० मासिकभ्राद्प्रयोगः टिप्पण्याम्
१७३ कुञ्जिकास्तोत्रम् ४९२	१८१ सांवत्सरिकभ्राद्प्रयोगः
१७४ शीतलाष्टकम् ४९३	टिप्पण्याम्

ॐ

श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीशुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसनेयिनां
ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयः ॥

नित्यकर्मात्मकः प्रथमो विभागः ॥

॥ १ ॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

आदौ श्रीगणनाथं सरस्वतीं चैव केवलं भक्त्या ॥ प्रणमामि शङ्कर-
पुरःसरान्यथाविधि तथाऽखिलान्देवान् ॥ १ ॥ तातो मौनसगोत्रज-
द्विजवरः श्रीठक्कुरोपाधिभृद् गोविंदात्मजभाईशङ्करसुतः श्रीमानुमा-
शङ्करः ॥ मेनानाम्न्यपि चैव यस्य जननी गङ्गास्वरूपिण्यसौ दुर्गा-
शङ्कर आत्मजोऽहमनयोर्वन्देऽङ्घ्रियुग्मं मुहुः ॥ २ ॥ श्रीभाईशङ्करा-
जातः स उमाशङ्करो द्विजः । पिता मे सुकृती जन्मप्रदाता गुरुरादिमः
॥ ३ ॥ शुक्लोपाढमहानन्दतनयो देवशङ्करः ॥ दीक्षागुरुर्द्वितीयोऽगा-
त्पश्चाद्भूत्वा यतिर्दिवम् ॥४॥ वेदान्तादिवृद्वादिद्यां सरहस्यामुपादिशत् ॥
गुरुः श्रीचेतनानन्दब्रह्मचारी तृतीयकः ॥ ५ ॥ स्मृत्स्वैतान् त्रीन्गुरुन्
ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयम् ॥ ग्रथाम्यमुं शुक्यजुर्वेदीयं द्विजहेतवे ॥ ६ ॥
श्रियते श्रमो मयाऽयं निःसंदेहं परोपकृतयेऽत्र ॥ यत्किञ्चिन्न्यूनं
स्यात्तत्क्षन्तव्यं युधैः स्वयं कृपया ॥ ७ ॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

॥ २ ॥ अथ प्रातरुत्थानम् ॥

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय स्वरुतलावलोकनम् । तस्य मन्त्रः—कराग्रे वसते
लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥

१ रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यत्तृतीयकः । स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने ॥
रात्रेः पश्चिमयामे तु घटिका पदमेव हि । वेदाभ्यास द्विजः कुर्यात्सा वेला पाठदायिनी

॥ ३ ॥ अथ भूमिस्पर्शः ॥

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं
क्षमस्व मे ॥ ततो मुखशुद्धयर्थं गण्डूपर्त्रयं कृत्वा नेत्रे प्रक्षाल्याचम्य
गवादिभङ्गलानि पश्येत् । स्वप्नदेवतां नमस्कृत्य प्रातःस्मरणं कुर्यात् ॥

॥ ४ ॥ अथ प्रातःस्मरणम् ॥

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं, सचित्तुखं परमहंसगतिं
तुरीयम् । यत्स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यं, तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च
भूतसंघः ॥ १ ॥ प्रातर्भजामि मनसो वचसापवाच्यं, वाचो विभान्ति
निखिला यदनुग्रहेण । यन्नेतिनेतिवचनैर्निगमा अबोचुस्तन्देवदेवम-
जमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥ २ ॥ प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं, पूर्णं
सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् । यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तो,
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै ॥ ३ ॥ शङ्करं शङ्कराचार्यं
केशवं वादरायणम् । सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥४॥
महर्षिर्भगवान् व्यासः कृत्वेमां संहितां पुरा । श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत् । वायुक्लेशाथ तन्मूल-वेदतत्त्वार्थमेव च ॥ ब्राह्मे
मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी । तां करोति द्विजो मोहात्पादकृच्छ्रण शुद्धयति ॥ ब्राह्म
मुहूर्ते पुण्यस्त्वन्नेत्रिद्रामतन्द्रित । पत्रं प्रातः प्रबुद्ध हि श्रयति धीगुणाश्रयम् ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते
चोत्थाय चिन्तयेदःमनो हितम् ॥ धर्मार्थकामान्स्वे काले यथाशक्ति न ह्यप्येत् ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते
चोत्थाय पर ब्रह्म विचिन्तयेत् ॥ ब्रह्मो मुहूर्तथ द्वेषा ॥ अन्त्ययामात्मको रात्रेहपान्त्यमुहूर्त-
तथ । १ अथाय पश्चिमं रात्रे तत आचम्य चोदकम् । मुखशुद्धयर्थमाहौ तु गण्डूपर्त्रितयं चरेत् ॥
२ प्रातर्दर्शनीयानि-श्रोत्रियं च भगवा गाञ्च बह्विमन्निचितं तथा ॥ प्रातस्तथाय य पश्येदापन्नय
स प्रमुच्यते ॥ १ ॥ भारद्वाजमयूराणां चापत्य नकुलस्य च । प्रभाते दर्शनं श्रेष्ठ
वामश्रेष्ठे विगेषत ॥ २ ॥ लोकेऽस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः ॥ हिरण्य सर्पिरादित्य
भापो राजाऽष्टमः सृष्ट ॥ ३ ॥ ३ ब्रह्मे काले समुत्थाय गणेशादीन्स्मरेत्ततः । प्रातःस्तोत्रं
मङ्गलानि पठित्वा शौचमाचरेत् ॥

पुत्रमध्यापयच्छुकम् ॥ ५ ॥ मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च ।
संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥ ६ ॥ हर्षस्थानसहस्राणि
भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ॥ ७ ॥
ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे । धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं
न सेव्यते ॥ ८ ॥ न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि
हेतोः । धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः
॥ ९ ॥ इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत् । स भारतफलं प्राप्य परं
ब्रह्माधिगच्छति ॥ १० ॥ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि-
सुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिगह्वकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ ११
भृगुर्वसिष्ठः ऋतुरांगिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः । रैभ्यो मरी-
चिश्चयवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ १२ ॥ सनत्कुमारः सनकः
सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च । सप्तस्वराः सप्तरसातलाणि कुर्व-
न्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ १३ ॥ सप्तार्णवाः सप्तकुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीप-
वनानि सप्त । भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ १४
पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शा च वायुर्ज्वलनः सतेजाः । नभः
सशब्दं महता सहैते कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ १५ ॥ इत्थं प्रभाते परमं
पवित्रं पठेत्स्मरेद्वा शृणुयाच्च तद्वत् । दुःस्वप्ननाशास्त्विह सुप्रभातं भवेच्च
नित्यं भगवत्प्रसादात् ॥ १६ ॥ वैन्यं पृथुं हैहयमर्जुनं च शाकुन्तलेयं भरतं
नलं च । रामं च यो वै स्मरति प्रभाते तस्यार्थलाभो विजयश्च हस्ते ॥ १७
बलिर्विभीषणो भीष्मः प्रह्लादो नारदो ध्रुवः । पठेते वैष्णवाः प्रोक्ताः
स्मरणं पापनाशनम् ॥ १८ ॥ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमाश्च विभी-
षणः । कृष्णः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ १९ ॥ सप्तैतान्संस्मरे-
न्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ २० ॥

इत्यादिपौराणिकश्लोकान्पठित्वा वैदिकं प्रातःस्मरणं पठेत् ॥ ॐ प्रातर-
 ग्निमप्रातरिन्द्रं इ रामेहेप्प्रातर्भिर्मन्त्रापरुषणाप्प्रातरग्निभना ॥ प्रातर्भर्गो म्पुषण-
 म्ब्रह्मणस्पतिर्भिः प्रातः सोमं मुनरुद्रं इन्द्रं रेम ॥ ३६ ॥ प्रातर्जित्मर्गमुग्रं इन्द्रं वे-
 मव्यम्पुत्रमदितैर्दिव्यो विधेत् ॥ आर्ध्रश्चिद्दयम्मन्त्र्यमानस्तुरग्निद्राजाचि-
 द्यम्भर्गम्भृशीत्वाहं ॥ ३७ ॥ भगव्यर्णेतुर्भर्गुसर्च्यराधो भगे मान्त्रियमुदं वा द-
 दं नदं ॥ भगव्यर्णो जनय गोभिरश्चैर्भगव्यर्णभिर्नृवन्तं-स्याम ॥ ३८ ॥ उ-
 तेदानीम्भर्गवन्तं स्यामोत्प्रापिचवऽउतमद्वयेऽअहं चाम् । उतोद्वितामव-
 वन्त्सृष्ट्यैस्यव्यन्देवानां ॐ तुमनो स्याम ॥ ३९ ॥ भर्गोऽष्टयभर्गवोऽभस्तु दे-
 वास्तेनैव्यम्भर्गवन्तं स्याम ॥ तन्त्रया भगवत्सवऽऽजो हवीति सनो भगवुरऽष्ट-
 ता भवेद्दह ॥ ४० ॥ समं द्पुरायोपसोनमन्तदधिक्रावेत्तु शुचये प्रदाय ॥ अग्नीची-
 नं वसुविदुम्भगव्योरथं पिवाश्वान् ॥ जिनऽआर्धदन्तु ॥ ४१ ॥ अश्वान्वावतीर्गो-
 मतीर्नऽउपासो वीरवतीर्दंसदं मुच्छन्तु भद्राः । घृतन्दुहानाश्चिश्चतर्दं प्रपी-
 तायुयर्पातस्वस्तिभिर्दंसदानं ॥ ४२ ॥ इति प्रातःस्मरणम् ॥

॥ ५ ॥ अथ मूत्रपुरीषोत्सर्गनिधिः ॥

ग्रामाहर्हिर्नैकस्यामिपुत्रोपात्यये शुद्धमृत्तिकां जलपात्रं चादाय कीटादि-
 रहितस्थलं गत्वा मृज्जलपात्रे तिधाय अपज्ञियैरनार्दस्तृणैर्भूमिमाच्छाद्य
 प्रावृतशिराः पृष्ठतः कंठले वितयज्ञोपवीतो यथेकवस्त्रथेद्वक्षिणकर्णे निहित-
 यज्ञोपवीतः स्वस्थो घ्राणास्ये पिधाय दिवासभ्ययोरुदङ्मुखो रात्रौ दक्षि-
 णाभिमुखो भौनमासीनो मूत्रपुरीषे कुर्यात् ॥ प्राणवाधाभये तु रात्रावहनि
 वा छायायामन्धकारे च गृहेऽपि यथासुखं मुखं कृत्वा मूत्रपुरीषे कुर्यात् ॥
 लोष्ठादिना गुदं परिमृज्य गृहीतशिश्र उरथाय पूर्वगृहीतमृज्जलपात्रे गृही-
 त्वाऽऽर्द्रामलकमात्रमृज्जलैर्द्विवारं लिङ्गशौचं कृत्वाऽर्धप्रसृतितदर्धार्धै-
 र्मृज्जलैस्त्रिवारमपानं संशोध्य पुनर्जलैरेव लिङ्गगुदे प्रक्षाल्य शुद्धमृत्ति-

कयैकवारं हस्तं प्रक्षाल्य शुद्धभूमिमागत्यान्यमृज्जलैर्दशवारं वामकरं
 प्रक्षाल्य ततः करद्वयं सप्तवारं तावद्भिरेव मृज्जलैः प्रक्षाल्य वामदक्षि-
 णपादौ प्रत्येकं त्रिः प्रक्षाल्यान्यजलेन द्वादशगण्डूपान्त्रामभागे कृत्वा
 जलपात्रं त्रिः पर्युक्ष्य जलविन्दूञ्जले निक्षिप्योपवीती द्विराचामेत् ॥
 मूत्रमात्रोत्सर्गे तु पूर्ववदेकवारं लिङ्गं प्रक्षाल्य वामकरं त्रिः प्रक्षाल्य करद्वयं
 द्विः प्रक्षाल्यैकैकया मृदा पौदौ प्रक्षाल्य गण्डूपचतुष्टयं विधायामेत् ॥

॥ ६ ॥ अथ दन्तधावनविधिः ॥

प्रतिपच्छष्ट्यष्टमीनवम्येकादशीचतुर्दशीपूर्णिमासंक्रान्तिव्यतीपातत्रतो-
 पवासश्चाद्दिनार्कभौमशुक्रमन्ददिननिषिद्धदिनातिरिक्तदिनेषु ब्राह्मणो
 द्वादशाङ्गुलप्रमाणेन दर्शाङ्गुलप्रमाणेन वा कनिष्ठान्गुलिबत्स्थूलेनोदुम्ब-

१ एका लिङ्गे गुदे तिलस्तया वामकरे दद्यात् । उभयोः करयोः सप्त सप्त त्रिर्वापि पादयोः ॥
 २ मूत्रमात्रोत्सर्गे तु—एका लिङ्गे करे तिल उभयोर्मृत्तिमाद्वयम् । एकैकया मृदा पादौ प्रक्षाल्य
 तु अचिर्भवेत् ॥ ३ एका द्वे वाऽथ वा तिस्रो मृदाः पादद्वये पृथक् । पादाजाजानुतः शोष्य
 करौ वै मणिवंधनात् ॥ ४ मूत्रे पुरीषे भुक्त्यन्ते रेत प्रसवणे तथा । चतुरश्रद्विपृष्टपृष्ट-
 गच्छ्रैः अद्विमाप्रयात् ॥ कुर्याद् द्वादशगण्डूपान्पुरीषोत्सर्जने ततः । मूत्रोत्सर्गे तु चतुरो
 भोजनान्ते तु पौडश ॥ भक्ष्यभोज्यावसाने तु गण्डुपाठकमाचरेत् ॥ पुरतः सर्वदेवाथ दक्षिणे
 पितरस्तथा । ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वाभे गण्डुपाठमाचरेत् ॥ ५ मुत्रे पर्युषिणे निचं भवन्प्रयतो
 नरः । दन्तधावनमुद्दिष्टे जिह्वोलेवनिका तथा ॥ अथो मुत्रविशुद्धयर्थं गृहीयाद्दन्तधावनम् ।
 आचान्तोऽप्यञ्चिर्स्मादष्टवा दन्त-राजनम् ॥ ६ प्रतिपदशोपष्टीषु नवम्या रविवासरे । दन्ताना
 काष्टर्मयोगो दहत्याममं कुत्सम् ॥ अष्टम्योथ चतुर्दशोः पञ्चदश्यां त्रिजन्मसु । व्यतीपाते च
 सङ्क्रान्त्या दन्तमाष्टे न भक्षयेत् ॥ ७ तत्रादौ दन्तपवनं द्वादशाङ्गुलमायतम् । कनिष्ठिनापरी-
 णाङ्गुलमग्रन्धिरमत्रणम् ॥ कनिष्ठिनाप्रवस्थौल्ये सकूर्चं द्वादशाङ्गुलम् । प्रातर्भूया च यतवाग-
 क्षयेदन्तधावनम् ॥ ८ दशाङ्गुलं तु विषाणा क्षत्रियाणा नवाङ्गुलम् । अष्टाङ्गुलं तु वैश्यानां
 शूद्राणां सप्तसम्मितम् । चतुरङ्गुलमात्रं तु नारीणां नात्र सदायः ॥ ९ कनिष्ठिनाप्रवस्थूलं
 सपचं निर्रणमृज्जम् । द्वादशाङ्गुलिकं विरे कथितं दन्त-राजनम् ॥

रफण्टकिसीरवृक्षापामार्गादिविहितं वृक्षोद्भवेनाव्रणेन चूर्णाकृताग्रेण प्रक्षालितेन शुष्केणाद्रेण वा काष्ठेन प्राङ्मुखो मानेन दन्तधावनं कुर्यात् ॥ निपिद्धकाष्ठानि वर्जयेत् ॥ दन्तधावनकाष्ठाभिमन्त्रणम्—आयुर्वलं यशो वर्चः प्रजाः पशून्वसूनि च ॥ ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥ इत्यभिमन्त्र्य ॥ मुखदुर्गन्धिनाशाय दन्तानां च विशुद्धये ॥ ग्रीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ॥ २ ॥ इतिमन्त्रमुक्त्वा पश्चाद्दन्तधावनमन्त्रं पठेत् ॥ यथा—ॐ भद्राद्यायव्यूहध्वञ्चसोमोराजायमागमत् ॥ समेमुखंममाक्षर्यतेयशसाचभगेनच ॥ १ ॥ इत्यनेन दन्तान्संशुध्य

१ करधोदुम्बरशूल कदम्बो लोघ्नचण्पकौ । वदरीतिदुमावैते प्रोक्ता दन्तधावने ॥ आम्रप्रातःकार्पाजमडूटखदिरोद्भवम् । शम्भुपामार्गस्वर्जुरीश्लेखीपार्थिवीलजम् ॥ राजादनं च नारङ्गं कपायं कटुकं च ॥ क्षीरक्षोद्रं वापि प्रसक्तं दन्तधावने ॥ तिमिन्तिभिर्वेणुपृष्ठं च ह्याप्रनिम्बो तथैव च । सर्जं धैर्यं कटे दीप्तिं करञ्जे विजयो रणे । शशजे चार्थसरतिर्वेदर्यां मधुरः स्वरः । खादिरै चैव सौभाग्यं शिल्पे तु विपुलं धनम् ॥ उदुम्बरे च वाक्सिद्धिर्वन्धुके च हृदा मतिः । सैत्रे च कीर्तिः सौभाग्यं पालाशा सिद्धिस्तथा । कदम्बे सक्त्वा लक्ष्मीरात्र आरोग्यमेव च । अपामार्गं स्मृतिर्मेवा प्रज्ञा वाणी वपुर्भूतिः ॥ आयुः शीलं यशो लक्ष्मीः सौभाग्यं चोपजायते । अर्धेण हृदि रोगोस्तु वीजयूणे तु व्यथाम् ॥ दाहिमे सिन्दुवारे च ह्युद्रे कुट्रे तथा । जाती च करमर्दा च दुस्वप्नं नाशयेदिति ॥ कटुभेन तथायुग्मान्भवेत्फलिनवार्जिनः । तस्माच्छुक्रं तदद्वि वा भक्षयेद्दन्तधावनम् ॥ २ प्राह मुखस्य धृति सौर्यं शरीरारोग्यमेव च । दक्षिणेन तथा कष्टं पश्चिमेन पराजयः ॥ उत्तरेण गत्रं नाशः स्त्रीणां परिजनस्य च । पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ३ उच्चरि मधुरे चैव प्रस्तावे दन्तधावने । धाद्वे भोजनकाले च परसु मौनं समाचरेत् ॥ ४ कुशाशा च कार्ष्णसं पालाशा ब्रह्मरक्षजम् । पुत्रमौससमं श्लेष बाहुच्यं दन्तधावनम् ॥ कुदाशानं पथार्यं च निघर्षं यस्तु भक्षयेत् । तावद्भवति चाण्डालो यावद्ब्रह्मा न पश्यति ॥ अर्धेणकं त्वचा हीनं यत्नेन परिवर्जयेत् । पतिने चातिरिक्तं च कीटविद्धं तथैव च ॥ नाहुलीमिश्र मृत्निध पालेष्टैश्च भस्मना । नायमैश्च तथा लोहैः सदा दन्तान्मूजेद् द्विज ॥ ५ अयुग्मप्रन्थि यचापि प्रत्यमं सारभूमिजम् । अक्षेऽर्जुं च दोषं च रसे वीर्यं च योजयेत् ॥ कपाय मधुरं तिक्तं कटुकं प्रातःकल्पिनः । निम्बश्च तिक्तके धेष्टु कपाये रजदिरस्तथा ॥ मधुके मधुरे श्लेष्ट करण कटुके तथा ॥ क्षेद्रयोपत्रिवर्गोक्तं सर्वैलं सन्धवेन च ॥ चूर्णेन तेजोवत्याश्च दन्ताप्रित्यं विशोपयेत् ॥ एतैकं धर्षयेद्दन्तं सुदुना पूर्चनेन च । दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमासान्यवाधयन् ॥

तेनैव काष्ठार्धेन वा रजतादिनिर्मितया जिह्वोल्लेखिन्या जिह्वामुल्लिख्य
द्वादशगण्डूषैश्च कृत्वा ॐकारं गायत्रीं च स्मृत्वा शिखां बध्नीयात् ॥ का-
ष्ठाभाभे श्राद्धोपवासादिनिषिद्धदिने च पर्णादिना प्रदेशिनीवर्ज्याङ्गुल्या
वा द्वादशगण्डूषैर्वा दन्तान्संशोधयेत् ॥ पश्चात्-अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा-
वस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥
इत्यनेनाद्भिः शरीरं मार्जयेत् ॥ तदनन्तरं सूर्यतुलसीगोदर्शनं प्रार्थनां
च कुर्यात् । आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिनेदिने ॥ जन्मान्तर-
सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥ आदित्यं भास्करं भानुं रविं सूर्यं दिवा-
करम् ॥ पण्णामस्मरणान्नित्यं महापातकनाशनम् ॥ महाप्रसादजननी सर्व-
सौभाग्यवर्धिनी । आधिव्याधिहरा नित्यं तुलसि त्वं नमोऽस्तु ते ॥
गावो मे ह्यग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गर्वा
मध्ये वसाम्यहम् ॥ ४ ॥ इति दन्तधावनविधिः ॥

॥ ७ ॥ अथ गृहे प्रातःस्नानप्रयोगः ॥

शिलासने दारुजासने वा सूर्याभिमुख उपविश्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य
गण्डूषत्रयं कुर्यात् ॥ आचम्य शिखां बद्ध्वा हस्ते जलमादाय स्नानस-
ङ्कल्पः- विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया

१ जिह्वानिलेखने रौप्यं सौवर्णं वार्षमेव च । तन्मलापहर शस्ते मृदु श्लेष्म दशाङ्गुलम् ॥
मुखवस्त्रदीर्घान्धशोफजाड्यहरं परम् ॥ २ पश्चाद्द्वादशगण्डूषैर्विदध्यादन्तधावनम् । स्मृत्वौङ्कारं च
गायत्रीं बध्नीयाद्दि शिखा तत ॥ ३ अभावे दन्तकाष्ठस्य प्रतिषिद्धदिने तथा । अपां
द्वादशगण्डूषैर्विदध्यादन्तधावनम् ॥ ४ प्रातः स्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकृन् हि तद् । सर्वमर्हति
शुद्धात्मा प्रातः स्नायी जगदिकम् ॥ अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः । सक्त्येव
दिवारात्रौ प्रातः स्नानं विशेषनम् ॥ प्रातः स्नानं चरित्वाऽथ शुद्धे त र्थे विशेषतः । प्रातः स्नानायन
शुद्धोऽप्योऽयं मलिनः सदा ॥ नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातः स्नायिजन क्वचित् । दृष्टादृष्टफल
तस्मात् प्रातः स्नानं समाचरेत् ॥

प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपराद्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतम-
 न्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे
 रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे
 श्रीमल्लवणाब्धेरुत्तरे तीरे अमुके श्रीशालिवाहनशके अमुकनामसंवत्सरे
 अमुके श्रीविक्रमवर्षे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्त्ता अमुकमासे
 अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे ममात्मनः श्रुतिस्मृति-
 पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम इह जन्मनि कायिकवाचिकमानसिकसां-
 गिकज्ञाताज्ञातस्पर्शास्पर्शासनभोजनशयनगमनादिकृतकर्मदोषनिरास-
 द्वारात्रिविधतापोपशमनार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् (उष्णोदकेन) प्रातःस्नान-
 नमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य पात्रे शीतोदकं प्राक्षिप्य तदुपर्युष्णोदकेन
 पात्रमापूर्य तेन जलेन गङ्गादितीर्थानि स्मरन् स्थायात् ॥ तीर्थप्रार्थना-
 पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा । आगच्छन्तु पवित्राणि
 स्नानकाले सदा मम ॥ नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्वन्दितदि-
 व्यरूपम् । श्रुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा
 नराणाम् ॥ गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि । मुच्यते
 सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ सुरधुनि मुनिकन्ये तारयेः पुण्य-

१ अत्राद्या नाचरेत्कर्म जपहोमादिक तथा । लालस्वेदसमाकीर्णं शयनदुधित
 पुमान् ॥ शिवयन्त्रे हि ह्युपस्थे इन्द्रियाणि सन्ति च । अङ्गानि समता यान्ति चोत्तमान्धर्मै-
 सह ॥ अगम्यागमनचित्र पापेभ्यश्च प्रतिप्रहात् । रहस्यचरितान्पापान्मुच्यत स्नानयोगत ॥
 शुष्णं दश स्नानपरस्य नित्यं रूपं च तेनैव बलं च शीघ्रम् । आयुष्यमारोग्यमलोलुपं च दुःस्वप्न-
 नादाश्च यशश्च मया ॥ २ चित्तमन्तरात्तं दृष्टं तीर्थस्नानं न ह्यद्वयति । शतशोऽथ जलैर्घृतं
 ह्यराभाण्डमिवाङ्घ्रि । यस्य हस्तौ च पादौ च सन्तश्चैव ह्यसंयतम् । विद्या तपश्च कीर्त्तिश्च रा-
 तीर्थफलमधुन ॥ मनोविद्वद्द पुण्यस्य तीर्थे वाचा यमस्त्विन्द्रियनिप्रदस्तप । एतानि तीर्थानि
 शरीरजानि स्वर्गस्य मार्गं प्रतिबोधयन्ति ॥

वन्तं स तरति निजपुण्यैस्तत्र किं ते महत्त्वम् । यदि च गतिविहीनं पापिनं
 तारयेमां तदपि च तव मातर्यन्महत्त्वं महत्त्वम् ॥ नन्दिनी नलिनी सीता
 मालती च मलापहा । विष्णुपादाब्जसंभृता गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥
 भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी । द्वादशैतानि नामानि स्नान-
 काले सदा स्मरेत् ॥ आपो नारा इति प्रोक्तास्ता एवास्यायनं पुनः ।
 तस्मान्नारायणं देवं स्नानकाले स्मराम्यहम् ॥ सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं
 तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः । सर्वभूतदया तीर्थं सर्वत्रार्जवमेव च ॥ दानं तीर्थं
 दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते । ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवा-
 दिता ॥ ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यं तीर्थमुदाहृतम् । तीर्थानामपि
 तृतीयं विशुद्धिर्मनसः परा ॥ इति स्मरणपूर्वकं स्नात्वा त्रिराचामेत् ॥

॥ इति गृहे प्रातःस्नानप्रयोगः ॥

॥ ८ ॥ अथ गौणस्नानानि ॥

अतिवालयवाद्भ्रूवयातुरतया अस्वास्थ्ये सति उष्णोदकेनापि स्नानं
 कर्तुमशक्तश्चेत् गौणस्नानं कर्तव्यम् । यथा-आचम्य संध्याद्यधिकारार्थम्
 अमुकस्नानमहं करिष्ये इति यथानिमित्तं संकल्पादि कृत्वा स्नानं विधे-
 यम् । गौणस्नानानि-आपोद्दिष्टेति तिसृभिर्मन्त्रैः अङ्गानां प्रोक्षणं मंत्र-
 स्नानम् । गायत्र्या दशकृत्वो जलमभिमन्त्र्य तेन सर्वाङ्गप्रोक्षणं गायत्रम् ।
 अग्निरिति भस्मेत्यादि मन्त्रैरङ्गेषु भस्मलेपनम् आप्रेयस्नानम् । आर्द्रवस्त्रे-
 णाङ्गमार्जनं कापिलम् । गोरजसाम् अङ्गे लेपनं वायव्यस्नानम् । मृदा-

१ अस्नानार्थ्याच्छरीरस्य देशकालाद्यपेक्षया । मन्त्रस्नानादिनाः सप्त केचिद्विच्छन्ति
 सूरयः ॥ स्नानं तु द्विविधं प्रोक्तं मुख्यगौणरभेदनः । चतुर्विधं तत्र मुख्यं गौणं वै षड्विधं
 भवेत् ॥ अक्षिरस्कं भवेन्नानं स्नानशर्का तु वर्णिगाम् । आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं
 दैहिकं त्रिदुः ॥

लम्भं पार्थिवस्नानम् । सातपवर्षेण स्नानं दिव्यम् । आत्मचिन्तनं
मानसम् । विष्णुपादोदकविषपादोदकमोक्षणविष्णुध्यानादिभिश्च स्नाना-
न्तराणि सन्ति तेषां मध्ये यथासंभवं विधेयम् । गौणस्नानैर्जपसंध्यादौ
शुद्धिर्न तु श्राद्धदेवार्चनादौ । ब्रह्मयज्ञे विकल्पः ॥ इति गौणस्नानानि ॥

॥ ९ ॥ अथाशौचे कर्मादित्यागविचारः ॥

कात्यायनः—मृतके कर्मणां त्यागः सन्ध्यादीनां विधीयते ।
होमः श्रौते च कर्तव्यः शुष्कान्नेनाथवा फलैः ॥ जात्रालिः—जन्महानौ
वितानस्य कर्मत्यागो विधीयते । शालाग्रौ केवलौ होमः कार्यं
एवान्यगोत्रजैः ॥ सन्ध्यां पञ्चमहायज्ञानैत्यकं स्मृतिकर्म च । तन्मध्ये
हापयेत्तेषां दशाहान्ते पुनः क्रियाः ॥ मनुः—उभयत्र दशाहानि
कुलस्यान्नं न भुज्यते । दानं प्रतिग्रहो होमः स्वाध्यायश्च निवर्तते ॥
शुद्धयेद्विषो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः । वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो
मासेन शुद्ध्यति ॥ यमः—मृतके च कुलस्यान्नमभोज्यं मनुरग्रवीत् ।
एकादशेऽह्नि कुर्यात्तु दानमध्ययनं तपः ॥ पराशरः—एकाहाद्ब्राह्मणः
शुद्धयेद्योऽग्निवेदसमन्वितः । ऋहात्केवलवेदज्ञो निर्गुणो दशभिर्दिनैः ॥
आह्निककारिकासु—देशान्तरे मृतं श्रुत्वा गोत्रिणं च स्ववान्धवम् ।
स्वगोत्री शुद्ध्यते सद्यो मातापित्रोर्दशाहकम् ॥ यदि गर्भविपातश्च श्रूयते
माससङ्घट्टया । यावन्मासस्थितो गर्भस्तावद्यामाश्च मृतकम् ।
आचतुर्थाद्भवेत्स्त्रावः पातः पञ्चमपष्टयोः । अत ऊर्ध्वं प्रमूतिः स्याद्दशाहं
मृतकं भवेत् ॥ अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी च प्रमूतिः । दशरात्रेण
शुद्ध्यन्ति भूमिस्थं च नवोदकम् ॥ ग्राममध्ये मृतः कश्चिन्नरो नारी
चतुष्पदः । न कुर्याद्भ्रानं च मृतं यावन्न नीयते ॥ अपां मध्ये गवां
गोष्ठे विवाहे यज्ञपण्डपे । राहोर्दर्शनकालस्य मृतकं न विधीयते ॥ इति ॥

॥ १० ॥ अथ प्रातःसन्ध्याप्रयोगः ॥

यथोक्तस्नानानन्तरं श्वेतं धौतं वैश्वं परिधाय उपवैश्वं गृहीत्वा कुशा-
दिविहितौसने माङ्मुख उपविश्य सव्यहस्ते कुशत्रपं दक्षिणहस्ते
कुशद्वयं धारयेत्-पवित्रधारणम्-तस्य मन्त्रः—

ॐ पवित्रैस्सथोवैष्णव्यैः सवितुर्वैः प्रसवऽउत्पुनाम्य-
च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ १३ ॥ तस्य ते पवि-
त्रपते पवित्रं पूतस्य यत्कामं पुनेतच्छक्रेयम् ॥ ३ ॥

१ उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारसा । अधमा सूर्यसहिता प्रातःसन्ध्या त्रिधा
मता ॥ अहोरात्रस्य यः सन्धिः सूर्येनक्षत्रवर्जितः । सा तु सन्ध्या समाख्याता मुनिभिस्तत्त्वद-
र्शिभिः ॥ २ स्नातवैव वाससी धीते अङ्गिरे परिधापयेत् । अभावे धौतवस्त्रस्य पट्टशौमादिकानि
च । कुतपं योगपट्टं वा विनासा येन नो भवेत् ॥ वस्त्रधारणे मन्त्रः (पा० गृ० सू०) परिधास्यै
यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदशिरस्मि । शतं च जीवामि शरदः पुरुषी रायस्पोपमभिसंध्य-
दिधे ॥ ३ ॥ उरत्रधारणावश्यता-होमेदेवार्चनायास्तु क्रियास्तु पठने तथा । नैकवस्त्रः प्रवर्तेत
द्विजो नाचमने जपे ॥ एकवस्त्रं विना पात्रं सव्ययज्ञोपवीतकम् । प्रत्यक्षं तु नदीशौचं कुर्वच्छुद्र-
त्यमाप्नुयान् ॥ उपवस्त्रधारणे मन्त्रः-यशसा मा यावापृथिवी यशसेन्द्रावृहसती । यशो भगध्व-
माविशद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ॥ ४ ॥ काम्यार्थं कंचनं चैव श्रेष्ठं च रक्तचलम् । कृष्णजिने ज्ञान-
सिद्धिर्भोक्षस्तु ध्याप्रचर्षणि ॥ कुशासने ज्ञानसिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा ॥ धारण्यां दुःखसंभू-
तिर्दांभीर्ग्यं दारुजासने ॥ वंशासने दरिद्रः स्थान् पापाणे व्याधिरीडनम् । तुगासने यशोहानिः
पञ्चैश्वर्यविभ्रमः ॥ जपस्थानतरोहानि कुर्वन्वस्त्रासनं तथा ॥ ५ ॥ सब्रह्मण्यौ विगर्भौ तु कुशी
द्वौ दक्षिणे करे । सन्धे चैव तथा त्रीन्चै विभ्रयात्सर्वकर्मसु ॥ दर्भदीना तु या सन्ध्या यच्च
दानं विनोदरम् । असंघातं तु यज्जप्त तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ कुशापवित्राभावे हेमपवित्र
धर्मम्-जपे होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृर्पणे । अशून्यं तु वरं कुर्यात्सर्वगर्जरजैः पुशैः ॥
स्नानं होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि । करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिज्ञाने ॥
उभयत्र स्थितैर्दर्भैः समाचामति थो द्विजः । सोमपानफलं तस्य भुक्त्वा यशफलं लभेत् ॥
सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम् । नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत् ॥

आचमनम्—अन्तर्जानुहस्तः संहतोद्गलिना शुद्धजलं गृहीत्वा
मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन वामेनान्वारब्धपाणिना ब्रह्मतीर्थेन त्रिरपः पियेत
ॐ केशवाय नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय
नमः स्वाहा । हस्तप्रक्षालनम्—ॐ गोविदाय नमः ॥ प्राणायामः—
प्रणवस्य परब्रह्मरूपिः परमात्मा देवता दैवी गायत्री छन्दः
भूरादिसप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवासिष्ठकश्यपा
ऋषयः आग्निवायुसूर्यवृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता गायत्र्युष्णिग-
नुष्टुब्जवृहतीपंक्तिशिषुब्जगत्यश्छन्दांसि तत्सवितुस्त्यस्य विश्वामित्र-
ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापति-
ऋषिः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजुश्छन्दः सर्वेषां प्राणायामे विनि-
योगः । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात्
॥३॥ ॐ आपो ज्योती रसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ एवं पूरुः
कुम्भकः रेचकः इति क्रमेण त्रिवारं पठेत् ॥ भस्मधारणम्—वामहस्ते
दक्षिणहस्तेन भस्म गृहीत्वा जलमिश्रणानन्तरं दक्षिणहस्तेन मर्दयेत्
ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म
व्योमेति भस्म सर्वेऽहवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूऽपि भस्मानि ॥
इति मंत्रेण मर्दनानन्तरं दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य अभिमंत्रणम्—ॐ इयं वरु-

१ भोजनं हवनं दानमुपहारं प्रतिग्रहं । बहिर्जानुं न कार्याणि तद्गदाचमनं विदुः ॥ २
संहतोद्गलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः । मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन शोभेणाचमनं चरेत् ॥ ३ सव्या
इति सत्रपत्रां गायत्रीं शिरसा सद्यः । त्रि पठदाच्यतप्राणं प्राणायामं स उच्यते ॥
४ करोति शिस्मत्रेण यस्मिपुः द्विजोत्तम । अक्षुः शुद्धतरं सौम्यं शिवशोके महीयते ॥
५ यच्च-वामहस्ततले भस्म क्षिप्त्वाऽऽच्छाद्यान्यपाणिना । अग्निरित्यादिमंत्रेण स्पृशत
भस्मानिमस्य च ॥ मध्याङ्गुलिप्रयणैव स्वदक्षिणकरस्य च । त्रिपुटं धारयेद्विद्वा सर्वं कस्मयनाश
नम् । सत्यं शीघ्रं जगो होमस्तीर्थं देवादिपूजनम् ॥ तस्य ध्ययंमिदं सर्वं यस्मिपुः न धारयेत् ॥

मित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः प्रसद्येत्यस्य विरूप
ऋषिः अग्निदेवता अनुष्टुप्छन्दः भस्माभिमंत्रणे विनियोगः ॥

ॐ त्र्यम्बकं ख्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुक-
मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ६० ॥ ॐ प्रसह्य
भस्मना योनिं सपञ्चपृथिवीमग्ने ॥ सृष्ट्वा सृज्यमानं तृभिष्टृ-
ज्ज्योतिषमाप्नुनरासदं ॥ १६ ॥

इत्यभिमंत्र्य धारणम्—त्र्यायुपमित्यस्य नारायण ऋषिः रुद्रो देवता
उष्णिक्छन्दः भस्मधारणे विनियोगः ॥ ॐ त्र्यायुपञ्जमदग्ने—ललाटे ।
कश्यपस्य त्र्यायुपम्—श्रीवायाम् । बह्वैषु त्र्यायुपम्—वाहोः ।
तन्नोऽभस्तु त्र्यायुपम्—हृदये ॥ शिखाबन्धनम्—मानस्तोक इति मन्त्रस्य
कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः—

ॐ मानस्तोकेतनेयेमान्ऽआयुपिमानो गोपुमानोऽ-
अश्वेपुरीरिपः ॥ मानो वीरान्ब्रुद्भामिनो व्वधीर्हवि-
ष्मन्तं सदमित्वाहवामहे ॥ १६ ॥

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते । तिष्ठ देवि शिखाबन्धने
तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे । अङ्गुष्ठमात्रां शिखां नैर्ऋत्यां बद्धा ॥ कण्ठे रुद्राक्ष-

१ घ्राणे दाणे जपे होमे सन्ध्यायां देवातर्चने । शिखाप्रस्थिं विना कर्म न कुर्याद्वि-
शदाचन ॥ २ ख्यासा यस्य मात्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रम् । स चाण्डालोऽपि सम्ज्यः
सर्वैर्गोत्तमो भवेत् ॥ अभक्तो वापि भक्तो वा नीचो नीचनरोपि वा । ख्यासान्वारयेद्यस्तु
मुच्यते सर्वपातकैः ॥

मालाधारणम्—त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः रुद्राक्षमालाधारणे विनियोगः—

ॐ त्र्यम्बकं कथ्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारु-
कमिव ब्रह्मन् नमस्कृत्योर्मुमुक्षीय मामृतात् ॥ १ ॥

अनेन मन्त्रेण रुद्राक्षमालां धृत्वा पवित्रकरणम्—ॐ विष्णुर्विष्णु । ॐ वाक्वाक्—जलाद्र्द्रहस्तेन दक्षिणकराद्बुल्यग्रैः ओष्ठौ स्पृशेत् । ॐ प्राणः—प्राणः—अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां नासारन्ध्रे स्पृशेत् । ॐ वक्षुश्चक्षु—अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम् अक्षिणी स्पृशेत् । ॐ श्रोत्रं श्रोत्रम्—अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां कर्णौ स्पृशेत्—ॐ नाभिः । अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां नाभिं स्पृशेत् । ॐ हृदयम् हस्ततलेन हृदयं स्पृशेत् । ॐ कण्ठः—कराग्रेण कण्ठं स्पृशेत् । ॐ शिरः—कराग्रेण शीर्षं स्पृशेत् । ॐ बाहुभ्यां यशोत्रलम्—कराग्रेण बाहुमूले स्पृशेत् । अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाद्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ अनेन मन्त्रेण किञ्चिज्जलं शिरसि सिञ्चेत् ॥
सङ्कल्पः—विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अत्र ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कल्पियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे श्रीपञ्चवणाव्येरुत्तरे तीरे अमुके श्रीशालिवाहनशके अमुकनामसंवत्सरे तथा अमुके श्रीवित्रमवर्षे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्ता अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिसिन्धुने चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीमूर्धे अमुकराशिरिपते देवगुरो शेषेषु

ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकब्रह्मवर्चसकामार्थं श्रीपरमेश्वर-प्रीतये प्रातःसन्धयोपासनमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य भूमिपार्थना-पृथि-वीत्यस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः कूर्मो देवता सुतलं छन्दः आसने विनियोगः-पृथिव त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इतिमन्त्रेण दक्षिणहस्तस्य मध्यमानामिकाभ्याम् आसनोपरि किञ्चिज्जलं क्षिपेत् ॥ भूतशुद्धिः-अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् । सर्वेषामत्ररोधेन सन्ध्याकर्म समारभे ॥ इति द्वाभ्यां वामपादपाणिना त्रिवारं भूमिं ताडयित्वा भूतान्युत्सार्य भैरवनमस्कारः-तीक्ष्णदंष्ट्रं महाकाय कल्पान्तदहनोपम । भैरवाय नमस्तु-भ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ अभिषेचनम्-ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिः परमा-त्मा देवता गायत्री छन्दः सर्वकर्मरम्भे विनियोगः । भूरादिसप्तव्या-हृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः । अग्नि-वायुमूर्यवृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्धहृती-पङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः अभिषेके विनियोगः । ॐभूः पुनातु-शिरसि । ॐभुवः पुनातु-नेत्रयोः । ॐस्वः पुनातु-कण्ठे । ॐमहः पुनातु-हृदये । ॐजनः पुनातु-नाभ्याम् । ॐतपः पुनातु-पादयोः । ॐसत्यं पुनातु-पुनः शिरसि । ॐतत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नो ॥ ॐ चो दयात् ॥ ३५ ॥-सर्वाङ्गं पुनातु ॥ इति प्रतिमन्त्रं दक्षिणेन पाणिना कुशा-नादाय वामकरस्थिततोयैरभिषिञ्चेत् ॥ ततो व्याहृतिपूर्वकगायत्रीकर-न्यासाः-ॐभूः-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐभुवः-तर्जनीभ्यां नमः । ॐस्वः-

मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तत्संवितुर्वरेण्यम्-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भर्गो
 देवस्यधीमहि-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्-करत-
 लकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ व्याहृतिपूर्वकं गायत्रीपङ्क्त्यासाः-
 ॐ भूः-हृदयाय नमः। ॐ भुवः-शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः-शिखायै वषट्
 ॐ तत्संवितुर्वरेण्यम्-कवचाय हुम्। ॐ भर्गो देवस्यधीमहि-नेत्रत्रयाय
 वौषट्। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्-अन्नाय फट् ॥ अथ प्रणवन्यासाः-
 ॐ भकारम्-नाभौ। ॐ उकारम्-हृदये। ॐ मकारम्-मूर्ध्नि। अथ
 व्याहृतिन्यासाः-ॐ भूः-पादयोः। ॐ भुवः-जान्वोः। ॐ स्वः-ऊर्वोः
 ॐ महः-जठरे। ॐ जनः-कण्ठे। ॐ नपः-मुखे। ॐ सत्यम्-शिरसि।
 अथ गायत्र्यक्षरन्यासाः-ॐ तकारम्-गदाङ्गुष्ठयोः। ॐ सकारम्-
 गुल्फयोः। ॐ विकारम्-जङ्घयोः। ॐ तुकारम्-जान्वोः। ॐ वकारम्-
 ऊर्वोः। ॐ रेकारम्-गुदे। ॐ णिकारम्-लिङ्गे। ॐ यकारम्-कक्ष्याम्।
 ॐ भकारम्-नाभौ। ॐ गौकारम्-उदरे। ॐ देकारम्-स्तनयोः। ॐ वका-
 रम्-हृदये। ॐ स्यकारम्-कण्ठे। ॐ वीकारम्-मुखे। ॐ पकारम्-तालु-
 देशे। ॐ हिकारम्-नासिकाग्रे। ॐ धिकारम्-नेत्रयोः। ॐ यौकारम्-
 भ्रुवोर्मध्ये। ॐ द्वितीययोकारम्-जलाटे। ॐ नकारम्-पूर्वमुखे। ॐ प्रका-
 रम्-दक्षिणमुखे। ॐ वोकारम्-पश्चिममुखे। ॐ दकारम्-उत्तरमुखे।
 ॐ याकारम्-मूर्ध्नि। ॐ व्यञ्जनं तकारम्-श्यापकं सर्वतो न्यसेत् ॥

अथ शिरोन्यासाः-ॐ आपः-गुणे। ॐ ज्योतिः-चक्षुषोः।
 ॐ रमः-बक्त्रे। ॐ अमृतम्-जान्वोः। ॐ ब्रह्म-हृदये। ॐ भूः-पादयोः।
 ॐ भुवः-नाभौ। ॐ स्वः-जलाटे। ॐ कारम्-मूर्ध्नि। अथ गायत्र्यावा-
 हनम्-गायत्रीं श्यमरां चालां माससूषकमण्डलम्। रक्ताङ्गो रक्तवस्त्रां

च हंसवाहनसंस्थिताम् ॥ ऋग्वेदकृतोत्सङ्गं चतुर्वक्रां चतुर्भुजाम् ।
 ब्रह्मार्णीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ॥ आवाहयाम्यहं
 देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् । आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥
 गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोनि नमोऽस्तु ते ॥ प्राणायामः—प्रणवस्य
 परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः भूरादिसप्तव्याहृतीनां
 विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः आग्निवायु-
 सूर्यवृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवता गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्हतीपङ्क्तित्रिष्टु-
 व्जगत्यश्छन्दांसि । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता
 गायत्री छन्दः आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्माग्निवायुसूर्या
 देवता यजुश्छन्दः सर्वेषां प्राणायामे विनियोगः ॥ ॐभूः ॐभुवः
 ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐतत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देव-
 स्यधीमहि ॥ धियो यो नो प्रचोदयात् ॥ ३५ ॥ ॐ आपोज्योतीरसोमृतं
 ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ एवं पूरकः कुम्भकः रेचकः क्रमेण त्रिवारं
 पठेत् ॥ अम्बुप्राशनम्—सूर्यश्चमेत्यस्य नारायण ऋषिः सूर्यो देवता
 अनुष्टुप्छन्दः अम्बुप्राशने विनियोगः । ॐसूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च
 मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा
 हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्रा रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि
 इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥ एतन्मन्त्रेण जलं
 प्राश्य तूर्णो द्विराचामेत् ॥

१ प्राणायामैर्विना यद्यत्कृतं कर्म निरर्थकम् । अतो यत्नेन कर्तव्यः प्राणायामः
 ह्यभार्थिना ॥ श्रुतिस्मृत्यादिकर्मादौ सगर्भः प्राणसंयमः । अगर्भो ध्यानमार्गं तु स चामन्त्रः
 प्रकीर्तितः ॥ द्वौ द्वौ प्रातस्तु मध्याह्ने त्रिभिः सन्ध्यासुरारवने । भोजनादौ भोजनान्ते
 प्राणायामास्तु षोडश ॥

मार्जनम्—आपोहिष्टेतिमृणां सिन्धुद्वीप ऋषिरापो देवता गायत्री
 छन्दः मार्जने विनियोगः—ॐ आपोहिष्ठाभयो भुवत्—मस्तके । ॐ तानं ऽङ्ग-
 ज्जैर्दधातन—चरणयोः । ॐ महेरणाय चक्षसे—हृदये । ॐ घोर्वं—शिवत्-
 मोरसत्—हृदये । ॐ तस्यं भाजयते हनं—चरणयोः । ॐ उग्रतीरिवमातरं—
 मस्तके । ॐ तस्मात् ऽ अरंङ्गमामवत्—मस्तके । ॐ यस्य क्षयाय जिर्व्वथ—हृदये ।
 ॐ आपो जनयथा च नत्—चरणयोः । इति नवभिः पादैः सुवर्णादिपात्र-
 स्थैर्वा महस्तस्थैर्वा जलैः कुशत्रयेण मार्जयेत् । अपो ऽञ्जलावादाय
 प्रक्षेपः—सुमित्रिया दुर्मित्रिया इत्यनयोः प्रजापतिर्ऋषिः आपो देवता
 अनुष्टुप्छन्दः क्रमेण अम्बुग्रहणे प्रक्षेपे च विनियोगः—ॐ सुमित्रियान् ऽ
 आपुऽओपधयत् सन्तु—इत्यञ्जलिना जलमादाय—ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै
 सन्तु शोस्मान्दोष्ट्रियञ्च वयन्दिहम् ॥ ३६ ॥ इत्यनेन वामभागे जन्तुहीन-
 स्थले निक्षिपेत् ॥ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलराजपुत्र ऋषिः आपो देवता
 अनुष्टुप्छन्दः जलग्रहणे आच्छादने च विनियोगः ॥ ऋतञ्च सत्यञ्चे-
 त्यस्याघमर्षण ऋषिः भाववृत्तो देवता अनुष्टुप्छन्दः उदकावघ्राणपूर्वक-
 प्रक्षेपणे विनियोगः ॥

ॐ द्रुपदादिवमुमुचान् ? स्विन्नं ? स्नातो मलादिव ॥

पूतम्पवित्रेणेवाज्ज्यमार्पं—शुन्धन्तुमैनसह ॥ ३७ ॥

अनेन मन्त्रेण जलं वामहस्ते गृहीत्वा न्युञ्जेन दक्षिणहस्तेना-
 च्छाद्य । अघमर्षणम्—

ॐ ऋतं च सत्यञ्चाभीञ्जात्तपसोऽर्चयायत । ततोरात्र्यं-

१ शेषत्रयमाकाशे वरुणीणि मस्तके । नकारेस्तु क्षिपेद् भूमावापो द्विष्टेति मार्जनम् ॥
 भूमिपदेन चरणावाकाशां हृदयं सृष्टम् । शिरस्त्वेव शिर शब्दो मार्जनस्यैवावृत्तः ॥

जायतततं=समुद्रोऽअर्णवः? । समुद्रादर्णवादधिसंव-
त्सरोऽअजायत । अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिपतो-
वशी । सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् । दिवंञ्च-
पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथोस्वः ॥ ८१ ॥

इति मंत्रेण तदाच्छादितं जलमवघ्राणपूर्वकं वामभागे क्षिपेत् ॥

अर्घदानम्-प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री
छन्दः भूर्भुवः स्वरितिमहाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः अग्निवा-
युसूर्या देवता गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र
ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः अर्घदाने विनियोगः ॥

सूर्याभिमुखस्तिष्ठन्गन्धाक्षतपुष्पयुक्तार्घत्रयं दद्यात् ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी-
महि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३५ ॥

ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः अयमर्घो दत्तो न मम ॥
दत्तार्घोदकेन दक्षिणनासाचक्षुःश्रोत्रस्पर्शनं कुर्यात् ॥ इत्यर्घत्रयं दत्त्वा
दक्षिणहस्ते जलं गृहीत्वा-ॐ असावादित्यो ब्रह्म-अनेन मन्त्रेणात्मनः

१ ईषन्नम्रः प्रभाते तु मध्याह्ने ऋजुसंस्थितः । द्विजोऽर्घ्यं प्रक्षिपेद्देव्याः सायं तूपविशन्भुवि ॥
कराभ्यां तोयमादाय गायत्र्या चाभिमन्त्रितम् । आदित्याभिमुखस्तिष्ठन्त्रिरुर्ध्वं सन्ध्ययोः
क्षिपेत् ॥ सकृदेव तु मध्याह्ने क्षेपणीयं द्विजातिभिः ॥

२ कालातिक्रमे सति-ॐ आरुष्ण्णे नरजंसाञ्चर्त्तमानो निषेशयंश्चमृत-
ममर्त्यञ्च ॥ द्विरुष्ण्ययेन सवितारथेनाद्देवोयातिभुवं नान्निपदश्यन् ॥ ३६ ॥
ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः प्रायश्चित्तार्थमयमर्घो दत्तो न मम ।
अनेन प्रकारेण चतुर्थार्घं दद्यात् ॥

समन्तात्मदक्षिणवदुदकं क्षिपेत् ॥ सूर्योपस्थानम्-उत्थाय स्वस्तिका-
कारपाणिः सूर्योदयामिमुखो वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मन्त्रैः सूर्यमुपतिष्ठेत्--
ॐ उद्वयमुदुत्यमित्तिद्वयोः प्रस्कण्व ऋषिः सूर्यो देवता अनुष्टुप्छन्दः
चित्रन्देवानामित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिः सूर्यो देवता त्रिष्टुप्छन्दः
तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङार्यवण ऋषिः सूर्यो देवता उष्णिक्छन्दः सूर्योप-
स्थाने विनियोगः—

ॐ उद्वयन्तमसस्परिस्त्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ॥ देवन्दे-
वत्रासूर्यमगन्मज्ज्योतिरुत्तमम् ॥ ३१ ॥ ॐ उदुत्य आतवेद-
सन्देवं वहन्ति केतवः ॥ दृशे विश्वायसूर्यम् ॥ ३२ ॥ ॐ-
चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः ॥
आप्राद्द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्यंऽआत्माजगत-
स्तस्थुपञ्च ॥ ३३ ॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥
पश्येमशुरदःशुतञ्जीवेमशुरदःशुतःशृणुयामशुरदःशु-
तम्प्रव्रवामशुरदःशुतमदीनाहस्यामशुरदःशुतम्भूयञ्च-
शुरदःशुतात् ॥ ३४ ॥

गायत्र्यावाहनम्-तेजोसीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः आज्यं
देवता जगती छन्दः यजुर्गायत्र्यावाहने विनियोगः—

ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतममिधामनामासिप्रियन्दे-
वानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ॥ ३५ ॥

१ हस्ताभ्यां स्वस्तिकं कृत्वा प्रातस्तिष्ठेद्दिवाकरम् । मध्याह्ने तु ऋजू-
पाद् सायं मुकुलितौ करोतु ॥

गायत्र्युपस्थानम्—तुरीयपदस्य विमल ऋपिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः—ॐ गायत्र्यस्येकपदीद्विपदीत्रिपदीचतुष्पद्यपयसिनाहिपयसेनमस्तेतुरीयायदर्शतायपदायपरोरजसेसावदोम् ॥ इति नमस्कृत्य हस्ते जलमादाय-तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋपिः सविता देवता गायत्री छन्दः वायव्यं बीजं चतुर्थं शक्तिः पञ्चविंशतिर्व्यञ्जनानि कीलकं चतुर्थं पदं प्रणवो मुखम् (अग्निमुखं) ब्रह्मा शिरः विष्णुर्हृदयं रुद्रः कवचं परमात्मा शरीरं पृथिवी योनिः प्राणापानव्यानोदानसमाना समाणा श्वेतवर्णा साह्युचयनसगोत्रा चतुर्विंशत्यक्षरा पद्स्वरा सरस्वतीजिह्वा पिङ्गाक्षी त्रिपदा गायत्री अशेषपापक्षयार्थे जपे विनियोगः । गायत्रीध्यानम्—

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाशुभ्रं कपालं गुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ।

ब्रह्मशापविमोचनम्—अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋपिः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता गायत्री-छन्दः ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः—

गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः ॥ ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥

अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋपिः वसिष्ठानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठ-शापविमोचनार्थे जपे विनियोगः—

चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा । शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम् ।
 प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् । सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं
 सुद्वरं पल्लवं तथा । इति मुद्रां दर्शयित्वा वस्त्राच्छादितान् जपमालां
 गोमुखीं वा नाभिदेशे धृत्वा गायत्रीजपः कार्यः । प्रणवस्य परब्रह्मऋषिः
 परमात्मा देवता गायत्री छन्दः व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः अग्निवायुमूर्या
 देवता गायत्री छन्दः सर्वपापक्षयार्थं गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः—ॐ भूर्भुवः
 स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
 ॥ ३ ॥ एवं प्रवालरुद्राक्षस्फटिकमौक्तिकादिनिर्मितया मालयां करमा-
 लया वा मंत्रार्थं ध्यायन्मौनी सहस्रं शतम् अष्टोत्तरशतम् अष्टाविंश-

१ चतुर्विंशतिमुद्राश्च जपादीं सम्प्रदर्शयेत् । एता मुद्रा न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ २ चक्ष्रेणाच्छाय तु वरं दक्षिणं य. सदा जपेत् । तस्य स्यात्सफल जायं तद्दीनमफलं स्मृतम् ॥ अत एव जपार्थं सा गोमुखी ध्रियते जनैः ॥ यक्षरक्ष-पिशाचाश्च सिद्धविद्याधरा गणाः । यस्मात्प्रभावं गृह्णन्ति तस्माद्गुह्यं तु कारयेत् ॥ ३ प्रातर्नाभौ वरं कृत्वा मध्याह्ने हृदि संस्थितम् । सायं जपेच्च नामाग्रे होय जप्यविधि. स्मृतः ॥ ४ ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवःस्वस्त्यैव च । गायत्रीं प्रणवश्चान्ते जप एवमुदाहृतः ॥

५ अनामामभ्यमारभ्य कनिष्ठादि तथैव च । तर्जनीमूलपर्यन्तं दशम्वंसु संजपेत् ॥ मन्त्र-
 मादित्थं पूर्वं जपनाले तु वर्जयेत् । तं वै मेहं विजृम्भीयात्कथितं ब्रह्मण पुरा ॥ मेहहीना च
 या माला मेस्तद्वा च या भजेत् । अशुद्धप्रतिकृशा च सा माला निष्फला भवेत् ॥ अरिष्टपरं
 बीजं च शङ्खपद्मीं गणितस्तथा । कुशप्रन्थिश्च रुद्राक्ष उत्तमं चोत्तरोत्तरम् ॥ प्रवालमुक्तास्फटिकै-
 र्जपः कोटिकलप्रदः । तुलसीमणिभिर्वेन गणितं चाक्षयं फलम् ॥ चित्रिणी विमलन्त्राभा ब्रह्म
 नाडीगतान्तरा । तथा सङ्घृयिता माला सर्वकामफलप्रदा ॥ ६ ध्यायेत्तु मनसा मन्त्रं जिह्वोष्ठौ
 न विचालयेत् । न रम्भयेच्छिरो प्रीवा दन्ताश्रव प्रकाशयेत् । ७ उपाशु स्याच्छतशुण साङ्ग्यो
 मानसो जपः ॥ ८ सायं प्रातश्च मध्याह्ने सावित्रीं वाग्यतो जपेत् । सहस्रपरमा देवीं शतमभ्या
 दशावराम् ॥ अन्यच्च—अष्टोत्तरशतं नित्यमष्टाविंशतिरेव वा । विधिना दशरुं वापि त्रिकालेषु
 जपेद्बुधः ॥

तिवारं दशवारं वा गायत्रीं जपेत् ॥ ततः षडङ्गन्यासान्कुर्यात्—ॐभूः
 हृदयाय नमः। ॐभुवःशिरसे स्वाहा। ॐस्वःशिखायै वषट्। ॐतत्सावितु-
 वरेण्यं कवचाय हुम्। ॐभर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐधियो
 योनःप्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥ ततो मुद्राप्रदर्शनम्—सुरभिर्ज्ञानवैराग्यं
 योनिः शङ्खोऽथ षड्भुजम्। लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्श-
 येत् ॥ ततः सूर्यप्रदक्षिणा—विश्वतश्चक्षुरितिमंत्रस्य विश्वकर्मा भौवन
 ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुब्धन्दः सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः ॥ -

ॐविश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरु-
 तविश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यान्धर्मतिसम्पतत्रैर्दूर्धावा-
 भूमींजनयन्देवऽएकः ॥ १७ ॥

सूर्यादिदेवतानां नमस्काराः—एकचक्र इत्यस्य नारायण ऋषिः
 सूर्यो देवता उष्णिक्छन्दः सूर्यनमस्कारे विनियोगः—एकचक्रो रथो
 यस्य दिव्यः कनकभूषितः। स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः ॥
 ॐश्रीसूर्याय नमः। ॐगायत्र्यै नमः। ॐसावित्र्यै नमः। ॐसन्ध्यायै नमः।
 ॐसरस्वत्यै नमः। माच्याम्—ॐइन्द्राय नमः। आपेट्याम्—ॐअग्नये
 नमः। दक्षिणस्याम्—ॐयमाय नमः। नैर्ऋत्याम्—ॐनिर्ऋतये नमः।
 पश्चिमायाम्—ॐवरुणाय नमः। वायव्याम्—ॐवायवे नमः। उत्तरस्याम्—
 ॐकुबेराय नमः। ईशान्याम्—ॐईश्वराय नमः। ऊर्ध्वायां—ॐब्रह्मणे
 नमः। अधोदिशि—ॐअनन्ताय नमः ॥ जपनिवेदनम्—
 देवागातुविद् इत्यस्य मनसस्पतिर्ऋषिः वातो देवता विराट्
 छन्दः जपनिवेदने विनियोगः—ॐदेवागातुविदोगातुंविस्वागातु-
 मितं। मनसस्पतऽइन्द्रमदैवयज्ञं७स्वाहावातेधाट् ॥१८॥ जपार्पणम्—
 अनेन प्रातःसन्ध्याङ्गभूतेन अमुरुसङ्क्याकेन गायत्रीमन्त्रजपाख्येन

कर्मणा श्रीभगवान्ब्रह्मस्वरूपी सूर्यनारायणः प्रीयतां नमम ॥ प्रार्थना—
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि काश्यप-
प्रियवादिनि ॥ सन्ध्याविसर्जनम् । उत्तरे शिखरे इत्यस्य कश्यप ऋषिः
सन्ध्या देवता अनुष्टुप्छन्दः सन्ध्याविसर्जने विनियोगः—उत्तरे शिखरे
देवि भूम्यां पर्वतमस्तके । ब्राह्मणेभ्यो विनिर्मुक्ता गच्छ देवि यथासु-
खम् ॥ गोत्रप्रवरोच्चारणपूर्वकमभिवादनम्—अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकप्र-
वरान्वितः शुक्रयजुर्वेदान्नायवाजिमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायी अमुकश-
र्माऽहं भो आचार्य त्वामभिवादयामि । भो वैश्वानर त्वामभिवादयामि ।
भो सूर्याचन्द्रमसौयुवामभिवादयामि । भो याज्ञवल्क्य त्वामभिवादयामि ।
भो ईश्वर त्वामभिवादयामि ॥ ईश्वरस्तुतिः—आकाशात्पतितं तोयं यथा
गच्छति सागरम् । सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥ य.य
स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो
वन्दे तमच्युतम् ॥ अर्पणम्—अनेन प्रातःसन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा
भगवान्ब्रह्मस्वरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ द्विराचमनम्—ॐ क्ले-
शवाय नमः स्वाहा ॐ नारायणाय नमः स्वाहा ॐ माधवाय नमः स्वाहा ॥
हस्तमक्षालनम् ॐ गोविन्दाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे
नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥ इति प्रातःसन्ध्याप्रयोगः ॥

१ स्वस्तिकाकारहस्ताभ्यां कर्णां स्पृष्ट्वा स्वस्य नामगोत्रप्रवरोच्चारणपूर्वकम् अभिवादयेत् ॥

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपशेविनः । चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्धनो बलम् ॥

२ शोमे भोजनकाले च सन्ध्ययोश्मयोरपि । आचान्तः पुनराचामेदन्यत्रापि सकृत्सकृत् ॥

द्विराचम्य ततः शुद्धः स्मृत्वा विशुं सनातनम् ॥ व्यामः—शिरः प्रावृत्य कण्ठं वा मुक्तकच्छ-
शिखोऽपि वा । अकृत्वा पादयोः शौचमाचान्तोऽप्यशुचिर्भवेत् ॥ अपः पागिनक्षेः स्पृष्ट्वा आचा-
मेयस्तु वै द्विजः । सरापानेन तजुल्यमित्येवमुपिखवीत् ॥

३ सन्ध्यादेवपूजातर्पणादौ धृतं कुडापवित्रं तत्तत्कर्मसम्बन्धितं च पवित्रस्थले विसर्जयेत् ॥

॥ अथ श्रीशिवपञ्चायतनपूजनविशेषः ॥

॥ ११ ॥ देवस्पर्शोऽनधिकारिणः ॥

नारदीये—स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च नराधिप । स्पर्शने
नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च ॥ शूद्रो वाऽनुपनीतो वा स्त्री
वापि पतितोऽपि वा । केशवं वा शिवं वापि स्पृष्ट्वा नरकमश्नुते ॥
(अत एव देवालये शिवलिङ्गदेव्यादिमूर्तानां पृथुपितनिर्माल्योत्सर्जन-
पूर्वकं प्रथमपूजनादौ नियुक्ताः 'शूद्राः' (" गुरवा ' " गोसाई ")
इत्यभिधानाः सन्तीति सम्प्रदायः प्रवृत्तः) ॥

॥ १२ ॥ देवार्चनकालः ॥

मात्स्ये—प्रातर्माध्यन्दिने सायं देवपूजां समारभेत् । अशक्तौ
विस्तरेणैव प्रातः सम्पूज्य केशवम् । मध्याह्ने चैव सायं च पुष्पाञ्जलि-
मपि क्षिपेत् ॥ नृसिंहपुराणे—जलदेवं नमस्कृत्य ततो गच्छेद्द्रुहं बुधः ।
पौरुषेण च सूक्तेन ततो विष्णुं समर्चयेत् ॥ मरीचिः—विधाय देवता-
पूजां प्रातर्होमादनन्तरम् । गुरुक्तेन तु मार्गेण मूलमन्त्रं जपेद्बुधः ॥

॥ १३ ॥ देवप्रतिमायां नित्यस्नानविचारः ॥

प्रयोगपारिजाते—प्रतिमापट्टयन्त्राणां नित्यस्नानं न कारयेत् ।
कारयेत्पर्वदिवसे यदा वा मलधारणम् ॥ अयं नियमस्तु पडङ्गलोर्ध्व-
प्रतिमामु घोद्धव्यः । यदि पडङ्गलन्यूना प्रतिमा चेत् तर्हि तां नित्यमव-
स्नापयेत् ॥

॥ १४ ॥ मध्याह्ने भुक्तस्यापि रात्रौ पञ्चोपचारपूजाप्रकारः ॥

शारदातिलके—आसनस्नानवस्त्राणि भूषणं च विवर्जयेत् । रात्रौ
देवार्चने तत्र पदार्थैः पञ्चभिस्तथा । स्नाने वस्त्रे तथा भक्ष्ये दद्यादा-
चमनीयकम् ॥

॥ १५ ॥ गृहे देवताप्रतिमाविचारः ॥

मात्स्ये—सौवर्णां राजती वापि ताम्नी रत्नमयी तथा । शैली
दारुमयी वापि लोहसङ्घमयी तथा । अङ्गुष्ठपर्वादारभ्य वितस्ति यावदेव
तु । गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः ॥ स्मृत्यन्तरे—एका
मूर्तिर्न पूज्यैव गृहिणा स्वेषामिच्छता । अनेकमूर्तिसम्पन्नः सर्वान्कामा-
नवाप्नुयात् ॥ गृहे लिङ्गद्वयं नाचर्यं गणेशत्रितयं तथा । शङ्खद्वयं तथा
सूर्यो नाचर्यो शक्तित्रयं तथा ॥ द्वे चक्रे द्वारकायाश्च शालिग्रामशिला-
द्वयम् । तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद्गृही ॥ रविर्विनायकश्चण्डी
ईशो विष्णुस्तथैव च । अनुक्रमेण पूज्यन्ते व्युत्क्रमे तु महद्भयम् ॥
अथर्वणरहस्ये हारीतः—शालिग्रामशिला विष्णुर्वाणस्तु शशिशेखरः ।
चण्डिका काञ्चनी प्रोक्ता स्वर्णमाक्षी तु शौनक ॥ नार्पदेयो विघ्नहरो
लोहितः प्रस्तरः शुभः । अर्ककान्तस्तु तरणिर्गार्ह्या ह्येवं सयासतः ॥
पञ्चानामपि देवानां यथाभागं क्रमेण वा । स्थापनं कारयेद्भक्त्या
मुनिभिस्तच्चदर्शिभिः ॥ चक्राङ्गमित्युनं पूज्यं शालिग्रामशिलाग्रतः ॥
स्कान्दे—भक्त्या वा यदि वाऽभक्त्या कलौ मुक्तिमवाप्नुयात् ॥

॥ १६ ॥ देवप्रतिमाप्रतिष्ठाविचारः ॥

स्कान्दे—शालिग्रामशिलायास्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते ॥ भविष्ये—
वाणलिङ्गानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये । न प्रतिष्ठा न संस्कारस्तेषां
चात्राहनं तथा ॥ भरतमालार्या मार्कण्डेयोक्तिः—कम्पुश्चक्रं शैलभवा
नार्पदेयाञ्जिनीपती । वाणो विष्णुशिला चेषां प्रतिष्ठां नैव काग्येत् ॥
नाममालार्या वृद्धपरशरः—शैलीं दारुमयीं ह्रीं धात्वाद्याकारस-
म्भवाम् । प्रतिष्ठां वै प्रकुर्वीत प्रासादे वा गृहे नृप ॥ कालिकासङ्ग्रहे
लौगाक्षिः—गृहे चलार्चा विज्ञेया प्रासादे स्थिरसाङ्गिका । इत्येते कथिता

मार्गा मुनिभिः कर्मत्रादिभिः ॥ कर्मयोगे भगवद्वाक्यम्—ये त्वेतदभ्य-
सूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूर्ढास्तांस्त्विद्धि नष्टानचेतसः ॥

॥ १७ ॥ पञ्चायतनदेवताः ॥

वाचस्पतौ—आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम् । पञ्च-
देवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥ तत्रादौ 'शालिग्रामः' स्कान्दे—
शिलाऽध्यामलकीतुल्या पूज्या सूक्ष्मव या भवेत् । यथा यथा शिला सूक्ष्मा
तथा स्यात्तु महत्फलम् ॥ 'शिववाणः' पुराणसङ्ग्रहे—पञ्चजम्बू-
फलाकारं कुकुटाण्डसमाकृति । भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव वाणलिङ्गमुदाहृतम् ॥
'गणेशः'—शुण्डादण्डेन दन्ताभ्यां शोभनाभ्यामलङ्कृता । एकेन
बाध दन्तेन रक्तचिन्दुभिरन्विता ॥ पार्श्वभागेकवदना वक्त्राभ्यां शोभिता
च या । गणेशमूर्तिः सा ज्ञेया विघ्नाद्यौघविनाशिनी ॥ 'सूर्यः'—बाधे
वाऽभ्यन्तरे वापि चक्रद्वादशसंयुता । शूर्पमूर्तिरिति ख्याता सर्वव्याधि-
विनाशिनी ॥ 'देवी'—गर्ते वा गर्तमध्ये वा योन्याकारेण चिन्तिता ।
योनेरुपरि मध्ये वा कुण्डलीभूतसर्पवत् ॥ अर्धाधिका त्रिरेखाभिर्भूषिता
या शिला शुभा । शक्तिकुण्डलिनी सा तु देवानामपि दुर्लभा ॥ शक्ति-
कुण्डलिनीं देवीं नित्यं यः पूजयेन्नरः । इन्द्रादिदुर्लभान्भोगान् भुवत्त्वं
निर्वाप्नुमाप्नुयात् ॥

॥ १८ ॥ पञ्चायतनदेवतास्थापनप्रकारः ॥

शिवपञ्चायतनम् विष्णुपञ्चायतनम् सूर्यपञ्चायतनम् देवीपञ्चायतनम् गणेशपञ्चायतनम्

विष्णु सूर्य
शिव
देवी गणेश

शिव गणेश
विष्णु
देवी सूर्य

शिव गणेश
सूर्य
देवी विष्णु

विष्णु शिव
देवी
सूर्य गणेश

विष्णु शिव
गणेश
देवी सूर्य

१ शम्भौ मध्यगते हरी नहरमूदेभ्यो, हरी शङ्करेभास्येनागसुता, रवी
हरगणेशाजाम्बिका स्यापिताः ॥ देव्यां विष्णुहरैकदन्तरथयो, लम्बोदरेऽजे-
श्वरेनार्याः, शङ्करभागतोःतिसुपदा प्यस्तास्तु ते दानिदाः ॥

॥ १९ ॥ अथ श्रीशिवपञ्चायतनपूजाप्रयोगः ॥

प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा स्वासने उपविश्य पवित्रपाणिः शिवपञ्चायतनं पुरतः संस्थाप्य वामे कलशं पूजोपचारान्दाक्षिणे निधाय आचम्य गणानायम्य ।

ॐ स्वस्ति नः स इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नः स्ताक्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ३६ ॥

सुशान्तिर्भवतु ॥ देवतानमस्कारः—श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः । निर्विघ्नमस्तु । सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥ धूम्रकेतुर्गणध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यै शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये ज्यम्बके गौरि नारायाणि नमोऽस्तु ते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवा-

न्मङ्गलायतनं हरिः ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव तारावलं चन्द्रवलं तदेव ।
 विद्यावलं दैववलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ काभस्तेपां
 जयस्तेपां कुतस्तेपां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो
 जनार्दनः ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयी
 भूर्तिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
 देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ विनायकं गुहं भानुं
 ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥
 सङ्कल्पः—विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया
 प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-
 मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे
 रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे
 श्रीमल्लवणाव्येरुत्तरे तीरे अमुके श्रीशालिवाहनशके अस्मिन्वर्तमाने
 अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक-
 तियो अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते
 श्रीमूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान-
 स्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यातियो ममात्मनः
 श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् अपामलक्ष्मी-
 प्राप्त्यर्थम् प्राप्तलक्ष्म्याधिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनईप्सितकामनासं-
 सिद्धयर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्य-
 र्थम् इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य
 सपुत्रस्य सवान्यवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्या-
 धिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं मम जन्मरा-

शेरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये कोचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वाद-
 शस्थानस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विना-
 शद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलमाप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेरवि-
 च्छिन्नवृद्धयर्थम् आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्धयर्थम् इन्द्रादिदशदि-
 कपालप्रसन्नतासिद्धयर्थम् आधिदैविकाऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिकत्रिवि-
 धतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलावाप्त्यर्थं च श्रीशिवपञ्चायतनदे-
 वताप्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनादिपोड-
 शोपचारैः अन्योपचारैश्च श्रीशिवपञ्चायतनदेवतानां पूजनमहं करिष्ये ।
 तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं शङ्खघण्टार्चनं च करिष्ये ॥ दिग्रक्षणम् ।
 वामहस्ते गौरसर्पपान्गृहीत्वा—

ॐ रुक्षो हणो ववलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं ववलगमुत्कि-
 रामियम्मेनिष्टयोयमात्योनिचखानेदमहन्तं ववलगमु-
 त्किरामियम्मेसमानोयमसमानोनिचखानेदमहन्तं ववल-
 गमुत्किरामियम्मेसर्वन्धुर्यमसर्वन्धुर्निचखानेदमहन्तं-
 ववलगमुत्किरामियम्मेसजातोयमसजातोनिचखानोत्कृ-
 त्याङ्किरामि ॥ १ ॥ रुक्षो हणो ववलगहनं प्रोक्षामिवै-
 ष्णवान्त्रक्षो हणो ववलगहनो वनयामिवैष्णवान्त्रक्षो ह-
 णो ववलगहनो वस्तृणामिवैष्णवान्त्रक्षो हणो वा ववल-

१ यो मोहादपवाऽऽस्त्यादकृत्वा देवताचनम् । भङ्गे स याति नरकं सूक्ष्मेष्वभिजायते ॥
 अतोऽहरद्वैतपूजा प्रतिपुरुषमावश्यकी । अकरणे प्रचवायदर्शनात् ॥

गृह्णाऽउपदधामिवैष्णवैरक्षोहणौवांवल्लगृह्णौपर्यु-
 हामिवैष्णवैष्णवमसिवैष्णवास्थं ॥ ३५ ॥ रक्षसां-
 भागोसिनिरस्तर्क्षऽइदमहर्क्षोभित्तिष्णामिदमहर्क्ष-
 क्षोववाधऽइदमहर्क्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृतेनदद्यावा-
 पृथिवीप्रोणुवाथांवायोवेस्तोकानामग्निराज्यस्यवे-
 तुस्वाहास्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसम्मामरुतङ्गच्छतम् ॥ ३६ ॥
 रुक्षोहास्त्रिभुवर्षणिरुभियोन्निमयोहते ॥ द्रोणैसधस्थ-
 मासदत् ॥ ३६ ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते
 नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
 सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे । यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य
 सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ भूतमेतापि-
 शाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । स्थानादस्माद्ब्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं
 त्विमाम् ॥ भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन । ते सर्वेऽप्य-
 पगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥ एतैर्मन्त्रैः सर्वदिक्षु विकिरेत् ॥ वाम-
 पादेन भूमिं त्रिवारं ताडयेत् ॥ उदकस्पर्शः ॥ ततः स्ववामभागे पूजा-
 र्थंजलपूरितकलशार्चनम् ।

तत्र वरुणावाहनम्—तत्त्वायामतियस्य शुनःशेष ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
 वरुणो देवता वरुणावाहने विनियोगः ॥

ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यज-
मानो हविर्विभः ॥ अहँडमानो वरुणेहवोद्ध्युरुशस-
मानऽ आयुऽप्रमोपीऽ ॥ १८ ॥

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं
यादसां पतिम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं
सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि ॥ प्रतिष्ठापनम्—

ॐ मनोजूतिर्जुपतामाज्ज्यस्यवृहस्पतिर्गर्भज्ञमिमन्त-
नोत्वरिष्टृग्यज्ञसामिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासोऽइह
मादयन्तामोऽप्रतिष्ठ ॥ १९ ॥

ॐ वरुणाय नमः । वरुण सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ प्रतिष्ठाप्य ॥
ततः ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः चन्दनं समर्पयामि ॥ इत्यादिपञ्चो-
पचारैः सम्पूज्य तत्त्वायामीति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य अनेन पूजनेन वरुणः
प्रीयताम् ॥ ततः अनामिकाया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमन्त्रयेत्—कलशस्य
मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ-
गणाः स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ
यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमा-
श्रिताः । गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम
शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः । गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु । ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि

१ स्पृशन्त्वनामिकाप्रेण क्वचिदालोक्यन्नपि । २ अनुमन्त्रणं सर्वत्र सदैवमभिमन्त्रयेत् ॥
प्र. ३

करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ ततो
 पूजनम्— पूर्वं ऋग्वेदाय नमः ॥ दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः ॥ पश्चिमे
 सामवेदाय नमः ॥ उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः ॥ कलशमध्ये अपाम्पतये
 वरुणाय नमः ॥ इति वरुणं सम्पूज्य “ गायत्र्यादिभ्यो नमः ” इति
 कलशदेवताः पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य कलशं प्रार्थयेत् ॥ देवदानवसंवादे
 मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
 त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति
 भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं
 च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि
 तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे
 जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ अङ्कुशमुद्रया
 सूर्यमण्डलात् सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य । वं इति धेनु मुद्रया अमृतीकृत्य
 हुं इति कवचेनावगुण्ठय मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य वं इति भूलेनाष्टवारम-
 भिमन्त्र्य तस्माद्दुदकादुदकं गृहीत्वा पूजाद्रव्याणि सम्प्रोक्षेत् । तां च
 भूमिं सम्प्रोक्षेत् । पुनः स्वल्पोदकमादाय स्वात्मानं स्वशिरश्च सम्प्रो-
 क्षेत् ॥ तत्र मन्त्रः—अपावित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः
 स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ आपोहिण्ड्यामंयोभुवस्तानंऽजुर्जेदधातन ॥ मुहेर-
 णायचक्षसे ॥ ११ ॥ योर्वंशिवतंमोरसस्तस्यभाजयते-
 हनं ॥ उशुतीरिवमातरं ॥ १२ ॥ तस्माऽअरंङ्गमामवोय-
 स्यक्षयायुजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचन ॥ १३ ॥

पश्चात्कलशं (कुम्भ) मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

अथ दीपपूजनम्—घृतदीपं प्रज्वाल्य निर्वातस्थले निधाय ॥

ॐ अग्निज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरुग्निः स्वाहा सूर्योर्ज्ज्यो-
तिर्ज्ज्योतिर् सूर्योर् स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चोर्ज्ज्योतिर्वर्-
चोर्स्वाहासूर्योर्वर्चोर्ज्ज्योतिर्वर्चोर्स्वाहा ॥ ज्योतिर्
सूर्योर्ज्ज्योतिर् स्वाहा ॥ १/३ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ प्रार्थयेत्— भो दीप देव-
रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ॥ यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो
भव ॥ अनेन पूजनेन दीपदेवता प्रीयताम् ॥ शङ्खपूजनम्—शङ्खे जल-
पूरणम् । शङ्खं चन्द्रार्कदेवतस्य बरुणं चाधिदैवतम् । पृष्ठे मजापतिं
विद्यादग्ने गङ्गा सरस्वती ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य
चाज्ञया । शङ्खे तिष्ठन्ति विभेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥

ॐ अग्निर्ऋषिर्पितृपर्वमानुषोपाश्र्वजन्योपुरोहितः ॥
तमीमहे महागयम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्युग्नयेत्त्वाव्व-
र्चोसऽएपतेषोनिर्गुग्नयेत्त्वाव्वर्चोसे ॥ ३६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं
गन्धपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ प्रार्थयेत्—त्वं पुरा सागरोत्पन्नो
विष्णुना विधृतः करे । नमितः सर्वदेवैश्च पाश्र्वजन्य नमोऽस्तु ते ॥

१ दशानुष्ठे परानुष्ठे (वामानुष्ठे) क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन च । सावकाशा (मध्यशल्यां)
मुष्टिकां च कुर्यात्ता वृष्ममुष्टिका ॥

पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ॥
 शङ्खमुद्रां प्रदर्शयेत् । घण्टापूजनम्—आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं
 तु रक्षसाम् । घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत् ॥

ॐ सुपुण्ड्रोऽसिगरुत्कमाँस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रश्चक्षुर्वृहद्द्र-
 थन्तरेपक्षौ ॥ स्तोमंऽआत्कमाच्छन्दुःस्यङ्गानिषजूं
 पिनामं ॥ सामंतेतनूर्वाँमदेव्यैर्ष्यज्ञायुज्ञियुम्पुच्छन्धि-
 ष्णयाँऽशुफा? ॥ सुपुण्ड्रोऽसिगरुत्कमान्दिवङ्गच्छस्वः
 पत ॥ ३२ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्याय गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचा-
 रार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् ।

शिवध्यानम्—ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
 रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं मसन्नम् । पद्मासीनं
 समन्तात्स्तुतममरुगणैर्व्याप्रकृतिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभ-
 यहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ .

ॐ नमस्तेरुद्रमन्त्र्यवऽउतोतऽइपवेनमः ॥ बाहुभ्यां-
 मुततेनमः ॥ ३३ ॥

१ वामाङ्गुष्ठं तु सङ्गस्य दक्षिणेन तु मुष्टिना । हृत्कोत्तानं ततो मुष्टिमङ्गुष्ठं तु प्रसारयेत् ।
 वामाङ्गुल्यस्तथाऽऽश्लिष्टाः संयुक्ता हस्तसारिताः । दक्षिणाङ्गुष्ठं संश्लिष्टां हृत्कोत्तानं मुष्टिना ।
 २ मित्तत्रैकिके श्लिष्टे श्लिष्टाङ्गुष्ठौ तथा । मध्यमानामिके तु द्वौ पश्चाद्विष्व विचालयेत्
 एषा गददमुद्रा स्याद्विष्णोः सन्तोषवर्धिनी ॥

विष्णुध्यानम्—शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं
गगनसदृशं भेषवर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्या-
नगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ विष्णो रुराटमसि विष्णो ॐ श्रुत्रैस्त्यो विष्णो ॐ
स्यूरसि विष्णो ॐ वुसि ॥ वैष्णवमसि विष्णो वेत्वा ॥ ३१ ॥

सूर्यध्यानम्—ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः
सरसिजासनसन्निविष्टः । केयूरवान्मकरकुण्डलवान्किरीटी हारी हिरण्य-
यवपुर्णतश्ङ्खचक्रः ॥

ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेश ॐ पुरस्तात्सविताज्ज्योतिरु-
दयाँ २५ अजस्रम् ॥ तस्य पूपाप्रसवेर्षाति विद्द्रान्तसम्प-
श्यन्निवश्वाभुवनानि गोपा? ॥ ५७ ॥

गणपतिध्यानम्—श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतग-
न्धैः क्षीराब्ध्यां रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् । दोर्भिः
पाशाङ्कुशाब्जामयवरदधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं ध्याये शान्त्यर्थमीशं
गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वोनमो नमो ब्रातै-
भ्यो ब्रातपतिभ्यश्च वोनमो नमो गृत्सैभ्यो गृत्सपति-
भ्यश्च वोनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो-
नमः ॥ ३५ ॥

देवीध्यानम् विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्या-
भिः करवालखेटविलसद्भस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेट-
विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा
त्रिनेत्रां भजे ॥

ॐ मनसुं काममाकृतिं व्वाच १ सत्यमंशीय ॥ पशूना-
० रूपमन्नस्य रसो यशुं श्री १ श्रयताम्मयि स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः ध्यायामि ॥
आवाहनाभावे पुष्पाञ्जल्यर्पणम्-ॐ सहस्रं शीर्षां पुरुषं सहस्राक्षं
सहस्रपात् ॥ स भूमिं सर्वतस्त्वृत्तयति षड्दशान्जुलम् ॥ ३१ ॥
आगच्छ देवदेवेश तेजोराशे जगत्पते । क्रियमाणं मया पूजां गृह्णाण
सुरसत्तम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः आवाहना
भावे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ आसनम्-ॐ पुरुषं ऽएवेदं सर्वं द्यद्-
द्भूतं द्यच्च भ्राव्यम् ॥ उतामृतचस्पेशानो यदन्नैनातिरोहति ॥ ३१ ॥
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् । आसने च मया दत्तं

१ कुर्यादावाहन मूर्तीं मृन्मय्यां सर्वदेव हि । प्रतिमाया जले वही नावाहनविसर्जने ॥
शालग्रामार्चने चैव नावाहनविसर्जने । आवाहनश्च दद्यात्पूर्वं पुष्पाञ्जलिं हरेः । अन्ते पुष्पाञ्जलिं
दद्यात्पूजासम्पूर्तिहेतवे ॥ आवाहनादिपौडशोपन्नाग यथा-आययाऽऽवाहयेद्देवमृत्वा तु पुरपोत्त-
मम् । द्वितीययाऽऽसने दद्यात्पश्चाच्च तृतीयया ॥ अर्घ्यञ्चतुर्थ्यां दातव्यः पञ्चम्याऽऽचमनं
तथा षष्ठ्या स्नानं प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रधौतम् ॥ यशोपवीतं चाष्टम्या नवम्या गन्धमेव च ।
पुष्पं दशम्या तु एकादश्या च धूरकम् ॥ द्वादश्या दापकं दद्यात् त्रयोदश्या निवेदनम् ।
चतुर्दश्या नमस्कारं पञ्चदश्या प्रदक्षिणाः ॥ षोडशोद्वासने कुर्याच्छ्रेयस्कर्माणि पूर्ववत् । तत्र सर्वं
जपेत्पुण्यं पीठ्यं तूक्तमेव च ॥ अपरं यजुर्वेदिभिः-चतुर्दश्या तु ताम्बूलं तथा षोडश्या
मन्त्रपुण्यपुण्यनमस्कारः एवं कचन वदन्ति तत्र मूलं सूत्रम् ॥

गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः
 आसनं समर्पयामि ॥ पाद्यम्—ॐ एतावानस्य महिमा तोज्ज्वल्यार्याँश्च-
 पूरुषं ॥ पादौस्यद्विष्वर्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३/१ ॥
 उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ॥ पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते
 प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः पाद्यं
 समर्पयामि ॥ अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादुर्द्ध्वऽउद्वैत्तुर्पूरुषं पादौस्येहा-
 भवत्पुनः ॥ ततो विष्णुवृद्धव्यक्रामरसाशनानशनेऽभि ॥ ३/१ ॥
 अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम् ॥ ताम्रपात्रस्थितं चैव फलतोय-
 समन्वितम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं
 समर्पयामि ॥ आचमनम्—ॐ ततो विराडजायत विराजोऽग्नि
 पूरुषं ॥ स जातोऽर्च्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ३/१ ॥
 सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् । आचम्यतां मया दत्तं
 गृहीत्वा परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः
 आचमनीयं समर्पयामि ॥ स्नानम्—ॐ तस्माद्द्यज्ञात्सर्व्वहुतं सम्भृतम्पृ-
 पदाज्ज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रे द्वायव्यानारण्या ग्नाम्प्याश्च ये ६/१ ॥
 गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया देव ह्यतः
 शान्तिं कुरुष्व मे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः स्नानं
 समर्पयामि ॥ एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पञ्चनद्वद्दुःसरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सर-
 स्वतीतुपञ्चधासोद्रेशे भवत्सरित् ॥ ११ ॥

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो
नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ अथवा पृथक् पृथक् मन्त्रेण पञ्चामृ-
तस्नानम् । यथा—पयःस्नानम्—

ॐ पयः पृथिव्यामपयऽओपधीपुपयोद्विह्युन्तरिक्षे
पयोधाँ ॥ पयस्वतीँ प्रदिशः सन्तु महर्षयम् ॥ ३६ ॥

कामयेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः
स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः
पयःस्नानं समर्पयामि ॥ पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ दधिस्नानम्—

ॐ दधिक्रावणोऽअकारिपञ्चिण्णोरश्वस्यवाजि-
नः ॥ सुरभिनो मुखार्करुत्प्रणऽआयूँपितारिपत् ॥ ३७ ॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दधानीतं मया देव
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो
नमः दधिस्नानं समर्पयामि ॥ दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ घृतस्नानम्—

ॐ घृतं घृतपावानं पिवतु वसाँवसापावानं पिवतु-
न्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहाँ ॥ दिशः प्रदिशऽ आदिशोँ
त्रिदिशऽत्रिदिशोँ दिग्भ्यः स्वाहाँ ॥ ३८ ॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो
नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं सम० ॥ मधुस्नानम्—

ॐ मधुञ्वाताऽऽकृताय ते मधुं क्षरन्ति सिन्धवः ॥ मादध्वी-
र्नः ॥ सन्त्वोपधी ॥ ३० ॥ मधुनक्तं मुतोपसो मधुं मत्पा-
त्थिवः ॥ मधुदद्यौरस्तु नः पिता ॥ ३१ ॥ मधु-
मात्रो वनस्पतिर्मधुमाँऽऽस्तुसूर्यः ॥ मादध्वी-
र्गावो भवन्तु नः ॥ ३२ ॥

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः
मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानम्—

ॐ अपां रसमुद्ध्वयसहसूर्ये सन्तं हसमाहितम् ॥
अपां रसस्य योरसस्तं वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृही-
तोऽसीन्द्राय त्वाजुष्टं गृह्णाम्येपते यो निरिन्द्राय त्वाजु-
ष्टं तमम् ॥ ३ ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो

नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ गन्धोदकस्नानम्—

ॐ गन्धुर्वस्त्रांविश्वधावसुं परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै-
 षजमानस्यपरिधिरस्युगिरिडऽईडितः ॥ ३ ॥

मलयाचलसम्भृतं चन्दनागरुसम्भवम् । चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ उद्धर्तनस्नानम्—

ॐ अङ्गुनातेऽअङ्गुः पृच्छ्यताम्परुपापरुः ॥
 गन्धस्तेसोममवतुमदायुरसोऽअच्युतः ॥ ३० ॥

नानामुगान्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीपुतम् । उद्धर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः उद्धर्तनस्नानं समर्पयामि ॥ उद्धर्तनस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ पञ्चासृतादिस्नानाङ्गपूजा— ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः वत्सोपवस्त्रार्थे अक्षतान्समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतार्थे अक्षतान्समर्पयामि ॥ गन्धं समर्पयामि ॥ नानापरिमलसौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ॥ यथाऋतुकालोद्भवपुष्पाणि समर्पयामि ॥ धूपम् आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ शर्करोपहारनैवेद्यम्— ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ भ्रपानाय स्वाहा । ॐ ध्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ॥ नैवेद्यं समर्पयामि ॥ नैवेद्यान्ते हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि ॥ करोटतनार्थं चन्दनं

समर्पयामि॥मुखवासार्थे पूगीफलं ताम्बूलं च समर्पयामि॥ हिरण्यमुद्राद-
क्षिणां समर्पयामि ॥ कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि ॥ प्रदक्षिणाः समर्पयामि ॥
मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि ॥ अनेन यथाश-
क्त्या ध्यानादिस्नानाङ्गपूर्वाराधनकृतेन श्रीशिवपञ्चायतनदेवताः प्रीय-
न्तां न मम ॥ निर्माल्यम् उत्तरे विसृज्य गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य शाल-
ग्रामोपरि तुलसीदलं तथा शिवोपरि विल्वपत्रं समर्प्य घारापात्रं गन्धा-
दिभिः सम्पूज्य पुरुषमूक्तेन गन्धोदकेन देवानां मूर्ध्नि अभिषेकस्नानं
कार्यम् । ॐ सहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्य पुरुषमूक्तस्य नारायणपुरुष ऋषिः
आद्यानां पञ्चदशानाम् अनुष्टुप् अन्त्यायास्त्रिष्टुप् जगद्धीजपुरुषो देवता
श्रीशिवपञ्चायतनदेवताप्रीतये अभिषेके विनियोगः । हरिः-ॐ सहस्र-
शीर्षा पुरुषं सहस्राक्षं सहस्रपादं ॥ स भूमिं सर्वतस्त्वृत्त्वात्त्यतिष्ठ-
दशाङ्गलम् ॥ १ ॥ पुरुषं ऽपवेदं सर्व्वेषु त्वेषु च भाव्यम् ॥ उता-
मृतत्वस्येशानो यदत्रैनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्ज्या-
यांश्च पुरुषं ॥ पादोऽस्य द्विभ्र्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतान्दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्वं ऽउर्ध्वं पुरुषं पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ्क्वक्रा-
मत्साशनानशनेऽभि ॥ ४ ॥ ततो द्विराहं जायत द्विराजोऽधि
पुरुषं ॥ स जातोऽ अर्यरिच्यत पचाद्भूमिमथो पुरं ॥ ५ ॥
तस्माद्दृष्ट्वात्सर्व्वं हुतं सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशुंस्तान्श्चक्रं वाय-
व्यानारण्या ग्नाम्याश्च ये ॥ ६ ॥ तस्माद्दृष्ट्वात्सर्व्वं हुतं ऋचुं

१ अत्र सम्भवे साङ्गद्वयेण स्त्रीमादक्षिन्या महिम्नःस्तोत्रेण वाऽभिषेकः कार्यः । २ स्नाने
धूपे च दीपे च घण्टादेर्नादमाचरेत् ॥ प्रतिमाषट्पञ्चाणां नित्यं स्नानं न कारयेत् । कारयेत्पर्व-
दिवसे यथा मलनिगारणम् ॥

सार्पानि जज्ञिरे ॥ छन्दाँऽसि जज्ञिरे तस्माद्ब्रह्मजुस्तस्माद्ब्रजायत
 ॥ ३१ ॥ तस्माद्ब्रह्माँऽअजायन्त ये के चोभयादतं ॥ गार्वा
 ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताँऽअजावयं ॥ ३२ ॥ तँष्यज्ञम्बर्हिषि
 प्रोक्षन्पुरुषंजातमंग्रतः ॥ तेन देवाँऽअयजन्त साद्व्याँऽ
 ऋषयँश्च ये ॥ ३३ ॥ यत्पुरुषं व्यदधुँ कतिधाव्यकल्पयन् ॥
 मुखद्विषंस्यासीत्किम्बाहू किमूरुपादाँऽउच्येते ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणोस्य
 मुखंपासीद्बाहूराजंयत्कृतः ॥ ऊरुतदस्ययद्वैश्वर्यं पद्भ्याँऽशुभ्रो
 अजायत ॥ ३५ ॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोँऽसूर्योँऽअजायत ॥
 श्रोत्राँद्वायुश्च प्पाणश्च मुखंद्वाग्निर्जायत ॥ ३६ ॥ नाभ्याँऽआसीदु-
 न्तरिक्षंऽशीर्ष्णोँदद्यौँसमवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशँ श्रोत्रात्तथा
 लोकाँऽअकल्पयन् ॥ ३७ ॥ यत्पुरुषेण हविषाँ देवा यज्ञमतंभवत ॥
 वसन्तोँऽस्यासीदाज्येज्ञीष्मँऽइध्मँऽशरद्धविः ॥ ३८ ॥ सप्तास्या-
 सन्नपरिधयस्त्रिँसप्त समिधंऽकृताः ॥ देवा यद्यज्ञन्तंऽगानाँऽअर्-
 द्धन्पुरुषंप्पशुम् ॥ ३९ ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माँणिप्रथमा-
 न्यासन् ॥ ते ह नाकंम्महिमानंऽसचन्त वन्न पूर्वं साद्व्याँऽसन्ति
 देवाः ॥ ४० ॥ एवमभिषिच्य शङ्खपूरितोदकेन शालग्रामं स्नापयेत्—
 अहृदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाँसुरे
 स्वाहा ॥ ४१ ॥ पश्चात्पश्चायतनदेवानामुपरि शान्त्यभिषेकं कुर्यात्—
 अँशौँ शान्तिरन्तरिक्षंऽशान्तिः पृथिवी शान्तिरापदं शान्तिरोपधयँ
 शान्तिः ॥ वनस्पतयँ शान्तिर्विँश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिँ
 सर्व्यँऽशान्तिँ शान्तिरेव शान्तिँसा माँ शान्तिरेधि ॥ ४२ ॥ यतोयतदं
 सर्वाँऽसेततोनाँऽअमंयद्ब्रह्म ॥ नम्रंऽकुरु प्रजाभ्योमंयन्नदं पशुभ्यः ॥

ॐ शिवो भवप्रजाब्जो मानुषीब्जस्तु मङ्गिरः ॥ मा-
श्वावापृथिवीऽअभिर्शोचीर्मान्तरिक्षम्मावन्नस्पतीन्
॥ ५५ ॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् ॥ त्रिजन्मपापसंहारमेक-
विल्वं शिवार्पणम् । ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः विल्वप-
त्राणि समर्पयामि । विष्णवे तुलसीदलार्पणम्—

ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यतु यतो व्रतानि पश्यते ॥
इन्द्रस्य युज्यते सर्वा ॥ ३३ ॥

तुलसी हेमरूपा च रत्नरूपा च मञ्जरीम् । भवमोक्षमदां तुभ्यमर्प-
यामि हरिमियाम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमहाविष्णवे नमः तुलसीदलानि
समर्पयामि । सूर्याय पुष्पार्पणम्—

ॐ सवितो त्वा सवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां
सोमो वन्नस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्या-
यरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥ ३५ ॥

भानो दिवाकरादित्य मार्तण्ड जगतां पते । अपानिधे जगद्रस
भूतभावन भास्कर ॥ प्रणतार्तिहरादित्य विश्वचिंतामणे विभो । विष्णो
हंसादिभूतेश पुष्पाणि त्वं गृहाण मे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्याय नमः
पुष्पाणि समर्पयामि ॥ गणेशाय दूर्वादङ्कुरार्पणम्—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुपटं परुपस्परिं ॥
एवानो दूर्वाप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ ३३ ॥

विष्ण्वादिसर्वदेवानां दूर्वा वै प्रीतिदा सदा । वंशवृद्धिकरी नित्यं
गणेशायार्पयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणेशाय नमः दूर्वाङ्कुरान्स-
मर्पयामि ॥ देव्यै पुष्पार्पणम्—

ॐ समं कल्पयेद्देह्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ माम्
आयुःप्रमोपीमोऽअहन्तवन्वीरं विदेयतवदेविसन्दृशि ॥ ३४ ॥

सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः पुत्रागजातिकस्वीररसालपुष्पैः ।
विल्वमवालतुलसीदलमालतीभिस्त्वा पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद ॥
ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीदेव्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि ॥ सौभाग्यद्रव्याणि-

ॐ अहिरिवभोगेऽपर्येतिवाहुज्ज्यायाहेतिम्परिवा-
धमानं ॥ हुस्त्रग्गोविविश्वाव्युनानिविद्धान्पुमान्पु-
मांऽसम्परिपातुविविश्वतः ॥ ३५ ॥

अवीरं च गुडालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृह्णाण
परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः सौभाग्यद्र-
व्याणि समर्पयामि ॥ धूपम्— ॐ ब्राह्मणोस्य मुखं ॥ ३६ ॥ ॐ पूर्यसि धूर्व-
धूर्वन्तं धूर्वन्तस्मोस्मान्धूर्वन्ति तन्धूर्व्यं ध्वयन्धूर्वाम् ॥ देवाना-
मामि बहिश्चतमर्द्धं सस्त्रितमम्पमितमञ्जुर्धृतमन्देवहृतमम् ॥ ३७ ॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं
प्रतिष्ठनाम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः धूप-

प्राघ्रापयामि ॥ दीपम्—ॐ चन्द्रमा मनसो ज्ञातश्चक्षोर्दृष्टोऽज्जायत ॥
 श्रोत्राद्वायुश्चक्षुष्माणश्च मुखीद्गुग्गिरंजायत ॥ १२ ॥ साज्यं च वर्तिसं-
 पुक्तं बह्विना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः दीपं दर्शयामि ॥
 नैवेद्यम्—ॐ नाभ्यांऽआसी ० ॥ १३ ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्यनो देहानमीवस्यं
 शुष्मिण ः ॥ प्रप्रदातारन्तारिषुऽऊर्जानोपेहिद्विपदेचतुष्पदे ॥ १४ ॥
 अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः पद्भिः समन्वितम् ॥ भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नै-
 वेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ गायत्रीमन्त्रेण तुलसीदलेन सम्प्रोक्ष्य तचुलसीदलं
 नैवेद्योपरि निधाय अस्त्रेण संरक्ष्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्रया
 ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदा-
 नाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतन-
 देवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥ पूर्वापोशनं समर्पयामि ॥ नैवेद्य-
 मध्ये पानीयम्—एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं
 तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः
 मध्ये पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि । हस्तप्रक्षालनं सम-
 र्पयामि । मुखप्रक्षालनं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । करोद्द-
 र्तनार्थं गन्धं समर्पयामि । मूखवासार्थं ताम्बूलम्—

१ तुलसीगन्धपुष्पैश्च सम्पूज्यान्नं हरेः प्रियम् । सम्प्रोक्ष्यार्थजलेनैव सरस्यास्त्रेण सर्वदा ।
 धेनुमुद्रां प्रदस्याप्य ततो देवं निवेदयेत् ॥ २ परिदत्तकरो पश्चात्तर्जनीमथ्यमे युते । कनिष्ठा-
 नामिकाङ्गुष्ठं परस्परयुतं कुरु । धेनुमुद्रेयमाख्याता अमृतीकरणं भवेत् ॥ ३ अङ्गुल्यः
 कुटिलीभूता विरलाप्राः परस्परम् । ग्रासमुद्रा समाख्याता सव्यपाणौ नियोजिता ॥ ४ वैश्वदेवं
 प्रारभ्यत्वा नित्ये चाभ्युदये तथा । स्वामीष्टदेवतादिभ्यो नैवेद्यं च निवेदयेत् । अकृत्वा वैश्वदेवं
 तु नैवेद्यं यो निवेदयेत् । तदन्नं न च गृह्णन्ति देवा विष्वाद्यो ध्रुवम् ॥

दिवः सदा ॐ सिवृहतीविति ष्टुसऽआत्वेपंवर्त्तते तमः ॥ ३३ ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् । सदा वसन्तं
हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥ मङ्गलं भगवान् विष्णुर्मङ्गलं
गरुडध्वजः ॥ मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मङ्गलायतनो हरिः ॥ सर्वमङ्गलमा-
ङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये ज्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् । आरातिमयमहं कुर्वे पश्य मे वर-
दोत्तम ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः कर्पूरारतिव्यं
दर्शयामि ॥ प्रदक्षिणा-ॐ सप्तास्यासन्नपरिधयस्त्रिः सप्त समिधः-
कृताऽग्निदेवा यद्यद्गन्तं वानाऽअर्घद् नद्रूपुरुपम्पशुम् ॥ ३५ ॥ यानि कानि
च पापानि जन्मान्तरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे
पदे ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः प्रदक्षिणां
करोमि ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः-अञ्जलीं पुष्पाण्यादाय तिष्ठन् ॥ हरि-
ॐ गणानान्त्वा गुणपतिऽ हवामहे प्रियार्णान्त्वा प्रियपतिऽ हवामहे नि-
धीनान्त्वा निधिपतिऽ हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा-
स्वमजासि गर्भधम् ॥ ३३ ॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्वन्यावहोरात्र
पाश्वे नक्षत्राणिरूपमाश्विनौ व्योत्तम् ॥ इष्णान्निपाणामुर्मऽइषाण०
॥ ३३ ॥ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके न मां नयति, कश्चन ॥ ससस्त्य-
श्वरुः सुमद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥ ३३ ॥ तन्तऽएतमनु जोषम्भ-
राम्भ्येप नेत्त्वर्दपचेतयाताऽअग्नेः प्रियम्पाथो पीतम् ॥ ३३ ॥ सऽ-
स्रवभागा स्थेपा बृहन्तः प्पस्तरेष्टाः परिधेयाश्च देवाः ॥ ३३ ॥

मुद्गान्दिबोऽअरतिमृथिव्याव्यैश्चानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ क्विं
 सम्प्राजपतिधिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवा? ॥ ३५ ॥ प्रोक्षमाणं
 सोमऽ आगतो वरुणऽआसन्त्यामासन्नोग्निराग्नीद्भुऽइन्द्रो हविर्दानेथ
 वीपावहियमाणं ॥ ५६ ॥ विश्वैदेवाऽअशुपु न्यप्लो विष्णुरा-
 प्पीतपाऽआप्याप्यमानो यमः सुयमानो विष्णु-सम्भ्रयमाणो वायुः
 पूयमानं शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी संक्तुश्रीविश्वैदेवा?
 ॥ ५७ ॥ पितृवैधि सुनवऽआ सुशेवा स्वावेशा तन्वा संविशस्वाश्वि-
 नाद्भ्रष्ट्यु सादयतामिह स्वा ॥ १३ ॥ पृथिव्याऽपुरीषमस्यप्सो नाम
 तान्त्वा विश्वैऽअभिगृणन्तु देवा? ॥ १४ ॥ षोडशी स्तोमऽओजो द्विवि-
 णश्चतुश्चत्वारिंश स्तोमो वृषो द्विविणम् ॥ अग्नेऽपुरीषमस्यप्सो नाम
 तान्त्वा विश्वैऽअभिगृणन्तु देवा? ॥ १५ ॥ समिद्धेऽअग्नावधि माम-
 हानऽउक्त्रथपत्रऽ ईड्यो गृभीतः ॥ तप्तहर्मम्परिगृह्यायजन्तोर्जा
 यज्ञमयजन्त देवा? ॥ १६ ॥ यस्येमा? प्प्रदिशो यस्य वाह कस्मै
 देवार्य हविषा विधेम ॥ १७ ॥ यऽआत्वमदा बलदा यस्य विश्वैऽउपा-
 सते प्प्रशिष्यस्य देवा? ॥ १८ ॥ अनागास्त्वन्नोऽअदितिं कृणोतु
 सन्नोऽअश्वो वनताऽहविष्मान् ॥ १९ ॥ इमा नु कम्भुवना सीष-
 धामेन्द्रश्च विश्वै च देवा? ॥ २० ॥ बृहस्पते सवितर्वोधयैतः स-
 शितश्चित्तन्तराऽ सप्तशेशाधि ॥ वृद्धयै नममहते सौभगाय विश्वऽ
 एनमनु मदन्तु देवा? ॥ २१ ॥ प्रजापतेस्तपसा वावृधानऽ सद्यो
 जातो दधिपे यज्ञमग्ने ॥ स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा आहि सादधा
 हविरदन्तु देवा? ॥ २२ ॥ सप्रोजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम-
 भवत्पुरोगा? ॥ अस्य होतुऽप्रदिशुतस्य व्याचि स्वाहाकृतऽ हविर-

दन्तु देवा? ॥ ३६ ॥ अस्मे रुद्रा मेघना पर्वतासो वृत्रहस्ये भरंहृतौ
सजोपाह ॥ य? शृष्टंते स्तुवते धारिं पञ्जऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्मोर
ऽअवन्तु देवा? ॥ ५३ ॥ नहि स्पशमविदन्नयमस्माद्धैश्वानुरात्पुरऽए-
तारमग्ने? ॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यवैश्वानुरैर्ह्वत्रिजित्याय देवा?
॥ ६३ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि घर्माणि पथमान्यासन् ॥ तेह-
नाकम्पहिमानंसचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्या? सन्ति देवा? ॥ १६ ॥
ॐ राजाधिराजार्थं प्रसह्यसाहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे
कामान्कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रव-
णाय । महाराजाय नमः ॥ ॐस्वास्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं
वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्या-
त्सार्वभौमः सार्वभृपऽअन्तादापरार्थात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया
ऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोभिगीतो महतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या-
वसन्गृहे । आविहितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥
ॐश्विर्ध्वश्चतक्षुरुतश्चिर्ध्वतोमुरवोश्चिर्ध्वतोवाहुरुतश्चिर्ध्वतस्पात् ॥
सम्वाहुब्भ्यान्धर्मातिसम्पतत्रैर्दर्यावाभूर्भीजनयन्देवऽएकः ॥ १७ ॥ ॐभू-
र्धुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्प-
यामि ॥ प्रार्थनापूर्वकनमस्कारः— ॐयत्पुरुषेणहृदिपादेवायज्ञमतेह्वत ॥

१ अत्रावसरे केचन पार्यदपूजां कुर्वन्ति-बाणरावणवग्ण्डाख नन्दिभृङ्गरिटादयः । सदा-
शिवप्रसादं ते सर्वे गृहन्तु शांभवा ॥ ॐभूर्धुव स्वः श्रीशिवपार्यदगणेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि नमस्करोमि ॥ विश्वस्सेनोद्धवाकूरा सनकायाः शुकादयः । महाविष्णुप्रसादं ते
सर्वे गृहन्तु वैष्णवा ॥ ॐभूर्धुवःस्वः श्रीविष्णुपार्यदगणेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि
नमस्करोमि ॥ माठरः पिङ्गलो दण्डधण्डांशोः परिपार्श्वकाः । प्रभाकरप्रसादं ते सर्वे गृहन्तु
पार्यदाः ॥ ॐभूर्धुवःस्वः श्रीसूर्यपार्यदगणेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥

वृषसन्तोस्यास्मीदाज्जयंङ्घ्नीष्मऽड्ध्मऽशरद्धवि? ॥ ३५ ॥ गिरीशं गणेशं
 गले नीलवर्णं गजेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ॥ भवं भास्वरं भस्मना
 भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥ १ ॥ योगेन सिद्धविद्युधैः
 परिभाव्यमानं लक्ष्म्यालयं तुलसिकाचितभक्तमृद्गम् ॥ प्रोचुङ्करक्त-
 खराहुलिपत्रचित्रं गङ्गारसं हरिपदाम्बुजमाधयेऽहम् ॥ २ ॥ उदय-
 गिरिमुपेतं भास्करं पद्महस्तं निखिलभुवननेत्रं रत्नरत्नोपमेयम् ॥
 तिमिरकरिमृगेन्द्रं द्यौधकं पद्मिनीनां सुरवरमभिवन्दे सुन्दरं विश्ववन्द्यम्
 ॥ ३ ॥ निजैरौषधीस्तर्पयन्तं कराद्यैः सुरौघान्कलाभिः सुधासावि-
 णीभिः ॥ दिनेशांशुसन्तापहारं द्विजेशं शशाङ्कस्वरूपं गणेशं नमामः
 ॥ ४ ॥ स्वभक्तवत्सलेऽनघे सदापवर्गभोगदे दरिद्रदुःखहारिणि त्रिलो-
 कशङ्करेश्वरि ॥ भवानि भीम अम्बिके प्रचण्डतेजज्ज्वले भुजाकला-
 पमण्डिते नमोऽस्तु ते महेश्वरि ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतन-
 देवताभ्यो नमः प्रार्थनापूर्वकनमस्कारं समर्पयामि ॥ पूजितदेवतानां
 यथाशक्ति जपं कृत्वा ॥ राजोपचाराः—उग्रं च चामरं चैव व्यजनं
 दर्पणं तथा । पादुकादि च सर्वाणि गृह्यन्तां परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
 श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः राजोपचारान्समर्पयामि ॥ विशेषार्थः-
 अर्घ्यपात्रे जलं प्रपूर्य गन्धाक्षतपुष्पसहितं नारिकेलं पूगीफलं वा धृत्वा
 रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव

गणेशो गालवथैव सुदुल्लभ सधाकरः । गणेशस्य प्रसादं वै सर्वे गृह्णन्तु गाणयाः ॥ ॐ भूर्भु-
 व स्व श्रीगणेशार्पदगणेश्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ शक्तिरुच्छि-
 क्त्वाण्डाली गणेशः सविता शशी । महादेवीप्रसादे ते सर्वे गृह्णन्तु पार्शदाः । ॐ भूर्भुव स्व
 श्रीदेवीपार्शदगणेश्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥

भवार्षावात् ॥ चरद् त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद । अनेन सफ-
 लार्थेण फलदोऽस्तु सदा मम ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेव-
 ताभ्यो नमः विशेषार्थं समर्पयामि ॥ क्षमापनम्—आवाहनं न जानामि
 न जानामि त्वार्चनम् ॥ पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥
 अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व
 परमेश्वर ॥ २ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ॥ त्वयि जाता-
 पराधानां त्वमेव शरणं मम ॥ ३ ॥ मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समो नास्ति-
 पापहा ॥ इति मत्वा दयासिन्धो यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ४ ॥ गतं पापं
 गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्योऽहं तव
 दर्शनात् ॥ ५ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं
 मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ६ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च
 यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ७ ॥ अपराधसहस्राणि
 क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर
 ॥ ८ ॥ अर्पणम्—अनेनावाहनासनपाद्यार्थाचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतग-
 न्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणानमस्कारप्रदक्षिणामंत्रपुष्परूपैः षोड-
 शोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृत्पूज-
 नेन श्रीशिवपञ्चायतनदेवताः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणम-
 स्तु ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्ण-
 तां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे
 नमः ॥ जलपूरितशङ्खभ्रामणम्—शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केश-
 बोपरि ॥ अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ इत्युक्त्वा शङ्खं
 देवोपरि भ्रामयित्वा तस्योदकेन स्वशरीरं मार्जयेत् । तीर्थग्रहणम्—अ-

कालमृत्युहरणं ब्रह्महत्यादिनाशनम् ॥ सुरपादोदकं पुण्यं पिबाम्या
युर्विवर्धनम् ॥ इति मन्त्रेण देवतीर्थं पीत्वा देवानिर्माल्यं शृहीत्वा
दक्षिणनासावघ्राणं कृत्वा शिरशि धारयेत् ॥

॥ इति शिवपञ्चायतनपूजाप्रयोगः ॥

॥ अथ रुद्राभिषेकप्रयोगः ॥

॥ २० ॥ अथ रुद्राभिषेकप्रकाराः ॥

तत्र प्राक् रुद्रस्य षडङ्गानि कथ्यन्ते । उक्तञ्च—शिवसंकल्पहृदयं
सूक्तं स्यात्पौरुषं शिरः । प्राहुर्नारायणीयंच शिखा स्याच्चोत्तराभिधम् ॥
आशुः शिशानः कवचं नेत्रं विभ्राड् बृहत्स्मृतम् । शतरुद्रियमस्रं
स्यात्षडङ्गक्रम ईरितः ॥ हृच्छिरस्तु शिखा वर्म नेत्रं चास्रं महामते ॥
प्राहुर्विधिज्ञा रुद्रस्य षडङ्गानि स्वशास्त्रतः ॥

॥ अथ प्रथमो रूपरुद्रस्तस्य प्रथम प्रकारः ॥

अँयज्ञाप्रात इति शिवसङ्कल्पसूक्तेन, अँसहस्रशीर्षेति पौरुषसूक्तेन,
अँअद्भ्यः सम्भृत इति उत्तरनारायणसूक्तेन, अँ आशुः शिशान इति
द्वादशभिः सप्तदशभिर्वा मन्त्रैः अपतिरथसूक्तेन, अँविभ्राड् इति मैत्रसू-
क्तेन, अँभूः अँभुवः अँस्वः अँनमस्ते इत्यादिना तमेपाञ्जम्भेद्दध्म
अँभूः अँभुवः अँस्वः अँइत्यन्तेनाष्टमणवयुक्तेन रौद्राध्यायेन, अँषयद्
इति अष्टमंत्रैः, नतंविदेति देवपद्भ्युक्तद्वाभ्यां मन्त्राभ्याम्, अँउग्रश्रीर्
सप्तनद्यामन्त्रैः, अँव्वाजध म इति एकोनत्रिंशन्मन्त्रैश्चाभिषेकः

अन्ते च ॐ ऋचंवाचामिति शान्त्यध्यायेन शान्तिकरणं ॐ शान्तिरिति त्रिरुच्चारणं वा ॥ अयमेव प्रकारश्चमकवर्जं सर्वैर्वाजसनेयिभिराहतः ॥

॥ अथ प्रथमो रूपरुद्रस्तस्य द्वितीयप्रकारः ॥

षडङ्गपक्षे-ॐ षज्जाग्रत इत्यादिभिर्नमस्तेरुद्रेतिरौद्राध्यायान्तैः षडङ्गमन्त्रैः पूर्वमाभिषेकः । ततः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्तेरुद्रेत्यादिना तमेपाञ्जम्भेदधमः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ इत्येतेनाष्टप्रणवयुक्तेन रौद्राध्यायेनाभिषिच्य ॐ व्वयः सोमेत्यष्टकण्डिकाभिरभिषेकः ॐ उग्रश्चेति सप्तमिश्च । महच्छिरोरुद्रजटाभ्यामभिषेकाभावपक्षे वाजश्चम इत्यष्टानुवाकैरभिषेकः । ॐ वाजश्चम इत्यष्टानुवाकाभावपक्षे महच्छिरोरुद्रजटाभिरभिषेकः । ॐ ऋचंवाचामिति शान्त्यध्यायेन पक्षद्वयेऽपि अभिषेकेण शान्तिकरणम् ॐ शान्तिरिति त्रिरुच्चारणं वा ॥ इति द्वितीयो रूपरुद्रप्रकारः ॥ बृहत्पाराशरस्मृतिमते तु पञ्चाङ्गमन्त्रपूर्वकरौद्राध्यायस्यैव जपाऽन्ते ऋचंवाचमित्यनेनाभिषेककरणमित्ययमेव रूपाख्यो रुद्रजपो न तु पुनरन्यस्य कस्यचिन्मन्त्रस्य जप इति विशेषः ॥

॥ अथ द्वितीयो रुद्राख्यः (एकादशिनी रुद्र इति पर्यायः)

तस्य प्रकारः ॥ तत्र प्रथमप्रकारो यथा--

ॐ षज्जाग्रत इत्यादिभिर्विष्वादिन्यनुवाकान्तैः पञ्चभिरङ्गमन्त्रैः पूर्वमाभिषेकः । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्तेरुद्रेत्यारभ्य तमेपाञ्जम्भेदधमः

१ नमस्तेष्टमन्यव इति षोडशर्चं शतस्रियमिति कमलाकरादयः ॥ तयो--षट्पष्टि-नीच्छतूर्कं च पुनः षोडशकम्भेद्व । एतत् द्वे नमस्ते द्वे नर्तवित्वयमेव च । मीढुष्टमेति चत्वारि श्लोतश्च शतस्रियम् । नमस्तेष्टेति षट्पष्टिमन्त्रात्मकमेव शतस्रियमिति मुख्यपक्षः ॥

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐइत्यन्तस्याष्टप्रणवयुक्तरौद्राध्यायस्य दश-
 वृत्त्याऽभिषेकः । ततः ॐथज्जाग्रत इत्यादिभिर्विबुध्राडित्यनुवाकान्तैः
 पूर्वोक्तैः पञ्चभिरङ्गमन्त्रैः समन्वितया केवलया वा एकावृत्त्याऽभिषे-
 कः । ततः ॐव्यवृत्सोमेत्यष्टभिर्महच्छिरोनाम्नीभिश्चाभिषेकः । ॐन्तं-
 विदायेति द्वाभ्यामभिषेकः । ॐउग्रश्चेति तिसृभिः सप्तभिर्वा रुद्रजटा-
 नाम्नीभिरभिषेकः । ॐऋचंवाचमित्यध्यायेन शान्तिकरणम् ॐशा-
 न्तिरिति त्रिरुच्चारणं वा ॥

अथ द्वितीयप्रकारः—ॐथज्जाग्रत इत्यादिभिर्नमस्तेरुद्रेति रौद्रा-
 ध्यायान्तैः पञ्चभिरङ्गमन्त्रैः पूर्वमभिषेकः । तत ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐ
 नमस्तेरुद्रेत्यारभ्य तमेपाञ्जम्भेद्धमः ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐइत्यन्त-
 स्याष्टप्रणवयुक्तस्य रौद्राध्यायस्यैकादशावृत्त्याऽभिषेकः । तदन्ते ॐ
 व्यवृत्सोमेत्यष्टभिः शान्त्यध्यायेन चाभिषेकः ॥

अथ तृतीयप्रकारः—ॐथज्जाग्रत इत्यादिभिर्विबुध्राडित्यनुवाका-
 न्तैः पञ्चभिरङ्गमन्त्रैः पूर्वमभिषेकः । तत ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐनमस्ते
 रुद्रेत्यारभ्य तमेपाञ्जम्भेद्धमः ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐइत्यष्टप्रणवसहितं
 रुद्रं जपित्वा—ॐव्रोजश्चमे० प्राणश्चमे० ओजश्चमे० ज्यैष्ठ्यश्चमे० ॥१॥
 पुनः अष्टप्रणवसहितं रुद्रं जपित्वा—ॐसत्यश्चमे० ऋतश्चमे० यन्ताचमे०

१ अयं प्रकारस्तु—साङ्गसादी जपेद्रुद्रं केवलानि नवान्तरे । साङ्गं महच्छिरोधान्ते निरङ्गं
 मिति केचन ॥ इति वृद्धरण्यास्मृतिमतानुसारी पद्मान्नपक्षे हेयः ॥ सर्वत्राभिषेकेष्वपि सङ्गस्य
 मारभ्य पञ्चविधाङ्गन्यासपूर्वकमुपस्थानान्तं पूर्वप्रयोगानुसारेण श्रीमहास्यस्याभ्यर्चनं तथा च
 ऋत्यादिस्मरणं पूर्वप्रयोगाद्योजनीयम् ॥ २ वेदैर्वेदैर्बिरामर्थं रामरौमद्वि कैकेयकर्म । द्वौ द्वौ पृथक्
 च मन्त्रेभ्य नमःकाथमन्त्रः सृष्टाः । ब्राह्मण्य एतस्यपूर्ववर्षमा कामिरंघस्तयामिकाः । एकावैव
 एतस्य व्यविर्वावा इति क्रमः ।

शश्वमे० ॥ २ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा-ॐ ऊर्चमे०
 रयिश्चमे० वित्तश्चमे० व्रीहयश्चमे० ॥ ३ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं
 रुद्रं जपित्वा-ॐ अशपाचमे० अग्निश्चमे० वसुचमे० ॥ ४ ॥ पुनः
 अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा-ॐ अग्निश्चमे० मित्रश्चमे० पृथिवीचमे०
 ॥ ५ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा-ॐ अशुश्चमे० आग्रय-
 णश्चमे० स्रुचश्चमे० ॥ ६ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा
 ॐ अग्निश्चमे० घर्म० व्रतश्चमे० ॥ ७ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा
 ॐ एकाचमे० ॥ ८ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा-ॐ चतस्रश्च-
 मे० ॥ ९ ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा-ॐ अयविश्चमे० पट्वाट्-
 मे० ॥ १० ॥ पुनः अष्टमणवसहितं रुद्रं जपित्वा-ॐ वाजायस्वाहा०
 आयुर्ध्वेन० ॥ ११ ॥ एवं एकादशधा विभक्तेन चमकानुवाकेन
 सहाष्टमणवयुक्तरौद्राध्यायस्यैकादशाष्ट्याऽभिषेकः ॥ ततः ॐ ऋचंवा-
 चमितिशान्त्यध्यायेन शान्तिकरणम् ॥ इति तृतीयप्रकारः ॥

बृहत्पराशरस्मृतिमते तु अङ्गपञ्चमन्त्रैरभिषेकपूर्वकं रौद्राध्यायस्य
 एकादशभिराष्टिभिरभिषेकोऽन्ते च शान्तिकरणमित्येतावानेव द्वितीयो
 रुद्र इति विशेषः ॥ यत्तु महार्णवानुसारिणां मतम्-शिवसङ्कल्पाद्यङ्ग-
 मन्त्रवर्जं मणवस्य महाव्याहृतीनां रौद्राध्यायस्य ध्वजश्च इत्यष्टानुवा-
 कानां शान्त्यध्यायस्य पूर्ववदार्पादिस्मरणं कृत्वा अष्टौ चमकानुवाकान्
 एकादशधा विभज्य एकैकेन चमकविभागेन सह अष्टमणवयुक्तरौद्रा-
 ध्यायस्यैकादशाष्ट्याऽभिषेकः ॥ ततः ॐ ऋचंवाचमितिशान्त्यध्याये-
 नाभिषेकः ॥ व्याधिविमोचनार्थाभिषेके तु विशेषः ॥ अक्षीभ्यामित्यनुवा-
 केनापोहिष्ठेतिंसृभिश्चाभिषिक्तोदकेन मस्तकादिपादान्तानि सर्वाण्यङ्ग-

नि मार्जयेत्—कृसीभ्यामिति पण्णां विट्हा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः यस्मात्
 देवता आपोहिष्ठेतिविष्टणां सिन्धुदीप ऋषिः गायत्री छन्दः आपो देवता
 सर्वरोगशान्त्यै अभिषेकोदकेन मार्जने विनियोगः । ॐ प्रसीभ्यां ते
 नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ॥ यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया
 विट्हामि ते ॥ १ ॥ ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुरयात् ॥
 यक्ष्मं दोषण्यामंसाभ्यां बाहुभ्यां विट्हामि ते ॥ २ ॥ आन्त्रेभ्यस्ते
 गुदाभ्यो वनिष्ठौर्हृदयादधि ॥ यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यवनः श्वाभिभ्यो
 विट्हामि ते ॥ ३ ॥ ऊरुभ्यां ते अष्टीवज्र्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ॥
 यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्रंससो विट्हामि ते ॥ ४ ॥ मेहनाद्रनंकरणा-
 ल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ॥ यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तामिदं विट्हामि ते ॥ ५ ॥
 अङ्गादङ्गाल्लोमो लोमो जातं पर्वणि पर्वणि ॥ यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्त-
 मिदं विट्हामि ते ॥ ६ ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभ्युरस्ता ० ॐ योवःशिवतमो ०
 ॐ तस्मात् अरङ्गमा ० । एतैर्मन्त्रैर्मस्तकादिपादान्तानि सर्वाङ्गानि मार्ज-
 येत् । इति द्वितीयो रुद्रः । अयमेव रुद्रो रुद्रैकादशिनी रुद्री रुद्रेति
 संज्ञात्रयं लभते । तैरेकादशरुद्रैर्लघुरुद्रस्तृतीयः । तैरेकादशलघुरुद्रैर्महा-
 रुद्रश्चतुर्थः । तैरेकादशमहारुद्रैरतिरुद्रः पञ्चमः ॥ रुद्रीलघुरुद्रमहारुद्रेष्वेकं
 एकादश ऋत्विजो वा वृणुयात् ॥ अतिरुद्रे एकादश एकविंशत्युत्तरं
 शतं वेति ऋत्विक्सङ्ख्या ॥

॥ अथ रुद्राभिषेकप्रयोगः ॥

ततः शिवस्य मूर्ध्नि सौवर्णेन राजतेन ताम्रेण वा कलशेन मधुना
 गन्धेन सर्पिषा पयसा वा तदभावे माहिषेण वा इक्षुरसेन नालिकेर-
 रसेनाम्रसेन वा गन्धोदकेन वा केवलोदकेन वा अभिषेकः कर्तव्यः ॥

णाच्छादयामि सोमंस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् । उरो-
 र्वरीयोवरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवा मंदन्तु ॥१०॥
 ॐ कवचाय हुम् ॥ ॐ ह्रिश्चतश्चक्षुरुतह्रिश्चतोमुखो-
 ह्रिश्चतोबाहुरुतह्रिश्चतस्पात् । सम्ब्राहुभ्यान्धर्मतिर्स-
 म्पतत्रैर्दद्यावाभूमीजुनयन्देवऽएकं ॥११॥ ॐ नेत्रत्रयाय
 वौपद् ॥ ॐ मानस्तोके ० ॥ १६ ॥ अस्त्राय फद् ॥

हरिः ॥ ॐ गुणानान्त्वागुणपतिः हवामहेऽपियाणान्त्वा
 प्रियपतिः हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिः हवामहे बसो
 मम् ॥ आहमंजानिगर्भुधमात्त्वमंजासिगर्भुधम् ॥ ११ ॥
 गायत्री त्रिष्टुब्जगत्त्यनुष्टुप्पुङ्गव्यासुह ॥ वृहत्पुष्णिणहा
 ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्वा ॥ २३ ॥ द्विपंदायाश्चतु-
 ष्षपदास्त्रिपदायाश्चतुष्षपदाः ॥ विच्छन्दायाश्चसच्छन्दाः
 सूचीभिः शम्यन्तुत्वा ॥ ३३ ॥ सुहस्तोमाः सुहच्छन्द-

१ अत्र याश्चतुष्पदा इत्यत्र 'स्वराक्षययोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र' ॥ इति चतुर्थाध्या-
 यस्य शततमसूत्रेण सामान्यतः शकारस्य द्वित्वं प्राप्तं परं त्वस्यापवादरूपेण 'उपमान्तस्था-
 म्यश्च स्पृश' इति चतुर्थाध्यायस्य अथि कशततमसूत्रेण लभ्यः शकारादिस्य चकारस्यैव
 द्वित्वं भवति ॥ २ तुर्हनिषेध — अङ्गयलु प्रातिशाल्ये चतुर्थाध्याये सूत्रं २६ — 'यस्यातिहाय
 सहेति न' ॥ भाष्यम् — यस्य, अतिहाय, सह इत्येतेः पदैश्चदित् स्वराः छकारे प्रत्यये न चका-
 रणं व्यवधीयते यया — यैस्यं लुग्या ॥ ३३ ॥ अतिहायं द्विपदागात्राणि ॥ ३३ ॥ सुह-
 स्तोमाः सुहच्छन्दः ॥ ३३ ॥

सऽआवृतःसुहर्षमाऽऋषयःसुप्तदैव्याः ॥ पूर्वेषु
मनुदृश्यधीरांऽअन्वालेभिरेरुत्थ्योनरुग्मीन् ॥ ७३८ ॥

ॐ यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥
दूरङ्गमज्ज्योतिपाज्ज्योतिरेकुन्तन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु
॥ १३४ ॥ येन कर्माण्युपसोमनीपिणोषुज्ञेकृण्वन्तिविद-
धेषुधीरांः ॥ यदपूर्वेषुक्षमुन्तःप्रजानान्तन्मेमनः
शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २३४ ॥ यत्प्रज्ञानमुत्चेतोयतिश्च-
यज्ज्योतिरुन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म-
विक्रयतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ३३४ ॥ येनेदम्भू-
तम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनुसर्वम् ॥ येनयज्ञ-
स्तायतेसुप्तहोतातन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ४३४ ॥
यस्मिन्नुचुःसामुयजूंषियस्मिन्नुप्रतिष्ठितारथनाभा-
विवाराः ॥ यस्मिंश्चित्तदसर्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः
शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५३४ ॥ सुपारुथिरश्वानिवुषन्मनुष्या-
नेनीयतेभीशुभिर्वाजिनऽइव ॥ हुत्प्रतिष्ठुष्यदञ्जिरञ्जवि-
ष्टुन्तन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ६३४ ॥ इतिप्रथमोऽध्यायः ॥

१ इति शिवसङ्कल्पसूक्तस्य हृदयरूपाङ्गस्य षण्मन्त्रैरभिवेक ॥ उक्तं च शिवसङ्कल्पहृदय
सूक्तं स्वार्थोक्तं चित् । प्राहुर्नारायणीयं च शिवा स्याच्चोत्तराभियम् ॥ आद्यःशिशानकवच

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषं सहस्राक्षं सहस्रपात् ॥ सभूमिः-
 सर्वतस्स्पृत्वा त्र्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषं ऽपु वेद-
 सर्वं ऋद्धूतं ऋचं भाष्यम् ॥ उता मृतत्वस्येशानो यदन्नैना-
 तिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमा तु ज्ययायांश्चु पू-
 र्णं ॥ पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्य मृतं दिवि
 ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वं ऽउदैत् पुरुषं पादोऽस्येहा भवत्पुनः ॥
 ततो विष्णुर्द्वयकक्रामत्साशनानशुने ऽभुभि ॥ ४ ॥
 ततो विराडजायत विराजो ऽधिपुरुषं ॥ सजातो ऽअ-
 त्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥ ५ ॥ तस्माद्द्युज्ञा-
 त्सर्वं हुतं सम्भृतं पृषदाज्यम् ॥ पशूस्तांश्चक्रे व्यायु-
 व्यानारुण्याग्नाम्याश्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्युज्ञात्सर्व-
 हुतं ऋचुक्षसामानि जज्ञिरे ॥ छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य-
 जुस्तस्माद्जायत ॥ ७ ॥ तस्माद्श्वाऽअजायन्त-
 ये केषोभयादतं ॥ गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ-
 अजावयः ॥ ८ ॥ तं ऋक्षं बुर्हि पिप्रौक्षु पुरुषं जातम-
 ग्युतः ॥ तेन देवाऽअयजन्तसाद्भ्याऽऋषयश्चये ॥ ९ ॥

नेत्रं विश्राड् बृहत्सृतम् । शतरुद्रियमन्नं स्यात्पञ्चकम ईरितः ॥ इन्द्रियरत्नं त्रिधा वर्म नेत्रं
 चारुं महामते ॥ प्राहुर्विपिनो यस्य षडङ्गानि स्वराश्रतः ॥

यत्पुरुषं पृथग्दधुं कतिघावयं कल्पयन् ॥ मुञ्चङ्किमं स्यासी-
 त्किमुञ्चाहूकिमूरूपादाऽउच्येते ॥ १० १/३ ॥ शुद्धमृणोस्स्यु-
 मुखमासीद्दद्याहूराज्यं कृतं ? ॥ ऊरुतदं स्युषद्वै-
 र्यं पदद्वयांशूद्रोऽअजायत ॥ ११ १/३ ॥ चन्द्रमा-
 मनसोजातश्चश्रोऽमूर्योऽअजायत ॥ श्रोत्राहायुश्चप्रा-
 णश्चमुखादुग्निरजायत ॥ १२ १/३ ॥ नाभ्यांऽआसीदुन्त-
 रिक्ष्णशीर्ष्णोऽह्यौ ? समवर्त्तत ॥ पुद्भ्याम्भूमिर्दिशुः श्रोत्रा-
 त्थालोकां २ऽअकल्पयन् ॥ १३ १/३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा दे-
 वायज्ञमतं व्रत ॥ वृसन्तो स्यासीदाज्यं द्वाण्मऽइदं ? शु-
 रद्वि ? ॥ १४ १/३ ॥ सुप्तास्यां सव्यरिधयस्त्रि ? सुप्तसमिधः
 कृता ? देवाय दद्यज्ञन्तं व्रानाऽअवदं न्नपुरुषम्पशुम् ॥ १५ १/३ ॥
 युज्ञेनं यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
 तेहनाकं महिमानं सचन्तुषत्रुपूर्वेमादध्या ? सन्ति देवा ?
 ॥ १६ १/३ ॥ ॐ अदद्व्य ? सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकं-
 र्मणुऽसमवर्त्तताग्ने ॥ तस्युत्त्वष्टां विदधद्रूपमोतितन्म-
 र्यस्य देवत्वमाजानुमग्ने ॥ १७ १/३ ॥ वेदुहमेतम्पुरुषम्पु-

१ इति पुरुषसूक्तस्य शिरोनामकाङ्गस्य एकत्रिंशत्तथायस्य षोडशमन्त्रैरभिषेकः (सूक्तं स्यात्पौष्ट्यं शिरः) ॥

हान्तंमादित्यवर्णान्तमसहपुरस्तात् ॥ तमेवविदित्वाति-
 मृत्युमेतिनाद्यपन्थाविद्युतेयनाय ॥ २३६ ॥ प्रजापति-
 श्ररतिमर्भेऽअन्तरजायमानोबहुधाविजायते ॥ तस्यु-
 घोनिम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हहतस्थुर्भुवनादिर्वि-
 श्वा ॥ ३३६ ॥ योदेवेभ्यःऽआतपतिषोदेवानांपुरोहि-
 तः ॥ पूष्टोयोदेवेभ्योजातो नमोरुवायुव्राह्मणे ॥ ४३६ ॥
 रुचम्राह्ममञ्जनयन्तो देवाऽअग्नेतदंब्रुवन् ॥ यस्तैवम्रा-
 ह्मणोषिद्धात्तस्य देवाऽअसुवर्षे ॥ ५३६ ॥ श्रीश्चतेल-
 क्ष्मीश्चपत्कन्यावहोरात्रेपुश्चैतक्षत्राणिरूपसुश्चनौ-
 व्यात्तम् ॥ इष्णन्निपाणामुम्ऽइषाणसर्वलोकम्ऽइषाण ॥
 ६३६ ॥ इतिद्वितीयोऽध्यायः ॥

ॐ आशु शिशानोवृषभोनभीमोर्धनाघ्नःक्षोभणश्च-
 र्पणीनाम् ॥ सुङ्क्रन्दनोनिमिपऽएकवीरःशुतःसेनाऽअ-
 जयत्सुकमिन्द्रः ॥ १३७ ॥ सुङ्क्रन्दनेनानिमिपेणजि-
 ष्णुनायुत्कारेणदुश्चयवनेतंघृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयत्-

१ आशुश्चरिषाणाम्—वकारद्विविधः प्रोक्तो गुरुर्लघुर्लघुतरः ॥ आदौ गुरुर्लघुर्मध्ये
 परान्तो लघुतरः ॥ प्रतिशब्दं—अन्त्यस्यान्त स्थाना पदादिमध्यान्तस्थस्य द्विविधं
 गुरुमध्यमलघु इतिभिरुच्चारणम् ॥ २ ॥ इत्युत्तरात्प्रायणसूक्तस्य शिवास्पादस्य एकत्रिंशत्पादस्य
 पञ्चमैरभिरुक् ॥ (शिवा स्यात्पौत्तसमिपम्) ॥

तत्सहद्व्युधोनरुद्रपुहस्तेनवृष्णां ॥२३॥ सऽइपु
 हस्तेऽसनिपुङ्गिभिर्वशीसंखंष्ट्रासयुधुऽइन्द्रोऽगुणेन ॥
 सुहृमृष्टृजित्सोमुपावाहुशुद्धर्युग्ग्रधंन्वाप्रतिहिताभिरस्तां
 ३३॥ बृहस्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्रां २ऽअपुवाधमानः
 । प्रभुञ्जन्सेनांऽप्रमृणोयुधाजयन्नुस्माकमेदध्यवितारथा-
 नाम् ॥४३॥ वलुविज्ञायस्थविरुऽप्रवीरुऽसहस्वान्बु-
 जीसहमानऽउग्रः ॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्र-
 मिन्द्ररथुमातिऽद्विगोवित् ॥ ५३ ॥ गोत्रभिदङ्गोविदुं-
 ज्त्रवाहुञ्जयन्तुमज्जमंप्रमृणन्तुमोजंसा ॥ इमऽसंजाताऽ-
 अनुवीरयद्भूमिन्द्रऽसखायोऽअनुसहरंभदध्वम् ॥ ६३॥ अ-
 भिगोत्राणिसहसागाहमानोदुयोर्बिरःशुतमन्न्युरिन्द्रः
 ॥ दुश्च्युवनःपृतनापाडयुद्ध्योस्माकुडसेनाऽअवतुप्रपु-
 त्सु ॥ ७३ ॥ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणाधुज्ञः-
 पुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीना-
 म्मरुतोऽष्टन्त्वग्रम् ॥८३॥ इन्द्रस्युवृष्णोवरुणस्युराज्ञऽ-
 आदित्यानांम्रुताऽशर्द्धऽउग्रम् ॥ महामनसाम्भुवन-
 च्यवान्नाहोपोदेवान्नाञ्जयन्तामुदंस्थात् ॥ ९३ ॥ उद्धर्ष-

यमघवुन्नायुं धान्युत्सत्त्वं नाम्नामुकानाम्नांमनां ऽसि ॥ उद्-
 दृत्रहन्वुवाजिनांवाजिनांयुद्धथानाञ्जयतां ऋवन्तुघोपां ८
 ॥ १० ॥ ३ ॥ अस्माकुमिन्द्रः समृतेषुदध्वजेष्वस्माकं ऋवाऽ
 इषवस्ताजयन्तु ॥ अस्माकं वीराऽउत्तरे भवन्तुस्माँ २५-
 उदेवाऽअवताहवेषु ॥ ११ ॥ ३ ॥ अमीपाञ्चित्तप्रतिलोभ-
 यन्ती गृहाणाङ्गान्येष्वेपरेहि ॥ अभिप्रेहिनिर्दहदृत्सुशो-
 कैरुन्धेनामित्रास्तमसासचन्ताम् ॥ १२ ॥ ३ ॥ इति-
 तृतीयोऽध्यायः ॥

सप्तदशमन्त्रैरभिषेकपक्षे-अथस्रष्टुपरापतुशरं व्येव्रह्मसदृशिते ॥ ग-
 च्छामित्रान्पद्वयस्वुमापीपाङ्कञ्चुनोच्छिषट् ॥ १ ॥ ३ ॥ मितुजयतानरुऽइ-
 न्द्रोवृहशर्मयच्छतु ॥ उग्रप्रार्वः-सन्तुवाहवोनाधूप्यायथासथ ॥ २ ॥ ३ ॥
 असौयासेनामरुतं परेषामुभयैतिनुऽभोजसास्पद्विमाना ॥ ताङ्गुहतुतमु-
 सापंच्रतेनुयथामीऽअन्वयोऽअन्यन्नजानन ॥ ३ ॥ ३ ॥ यत्रवाणाऽसु-
 म्पतन्तिक्रमाराविंशित्वाऽइव ॥ तन्नऽइन्द्रोवृहस्पतिरादितिहशर्मय-
 च्छतुव्युश्वाहुशर्मयच्छतु ॥ ४ ॥ ३ ॥ मर्माणितेवर्मणाच्छादया-
 मिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुज-
 यन्तन्त्वानुदेवामन्दन्तु ॥ ५ ॥ ३ ॥

१ इत्यप्रतिरयत्कर्म्य करवरूपाग्रस्य द्वादशमन्त्रैरभिषेकः ॥ सप्तदशवेनेति कर्क - तस्मा-
 सप्तदशमे सप्तदशानामप्रतिषेधप्रतिष्ठादिविनिर्गमं कृत्वा सप्तदशवेनाप्रतिरयेनाभिषेकः
 कार्यः ॥

२ एतान्यगमन्त्रन्योजयित्वा सप्तदशोनाभिषेकः कार्यः ॥

ॐ विष्वा इवृहत्पवतुसोम्यममदध्वायुर्दधं ह्यज्ञपंताव-
 विदुतम् ॥ वातं जूतो योऽभिरक्षंति त्कमनां प्रजा? पुंषोप-
 पुरुथा विराजति ॥ १^{३३} ॥ उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवं बहन्ति-
 केतवं ॥ दृशे विश्वं आयुसूर्यम् ॥ २^{३३} ॥ येनापावकुचक्ष-
 साभुरण्यन्तुञ्जनां २ऽअनु ॥ त्वं वरुण पश्यसि ॥ ३^{३३} ॥
 दैव्यावदध्वर्युऽआगतुर्दरथेनुसूर्यत्वा ॥ मध्वायुज्ञ-
 षसमञ्जाथे ॥ तम्प्रत्कनथायंवेनश्चित्रन्देवानां ॥ ४^{३३} ॥
 तम्प्रत्कनथापूर्वथां विश्वथेमथाज्जयेष्टृतांतिम्वर्हिपदं स्व-
 विदम् ॥ प्रतीचीनं वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनु-
 यासुर्वर्द्धसे ॥ ५^{३३} ॥ अयंवेनश्चोदयत्पृश्निगवर्भाज्ज्यो-
 तिर्जरायूरजसो विमाने ॥ इममुपासंङ्गमेसूर्यस्य शिशु-
 न्निविप्रामुतिभीरिहन्ति ॥ ६^{३३} ॥ चित्रन्देवानामुदं गा-
 दनीकुञ्जक्षुर्मिन्नस्यवरुणस्याग्ने? ॥ आप्राद्यावापृथि-
 वीऽअन्तरिक्षेऽसूर्येऽआत्कमाजगतस्तुस्तथुषश्च ॥ ७^{३३} ॥
 आनुऽइडांभिर्विदथेसुशस्तिविश्वानरहसविनादेवऽएतु
 ॥ अपियथासुवानोमत्संथानो विश्वञ्जगदाभिपित्वेभन्ती-

पा ॥ ८^{३५} ॥ यदुद्यकचवृत्रहनुदगाऽऽभिसूर्य ॥ सर्व-
 न्तिन्द्रतेवशे ॥ ९^{३५} ॥ तुरणिर्विश्वदर्शतो ज्योति-
 ष्कृदांसिसूर्य ॥ विश्वमाभांसिरोचनम् ॥ १०^{३६} ॥
 तत्सूर्यस्य देवत्वन्तन्महित्वा मुद्भ्या कर्त्तुर्विततुऽसञ्ज-
 भार ॥ यदेदयुक्कतहरितः सधस्थादाद्वाञ्जीवासस्तनुते-
 सिमस्मै ॥ ११^{३६} ॥ तन्निमुत्रस्य वरुणस्याभिचक्षेसूर्यो-
 रूपकृणुते द्व्योरुपस्थे ॥ अनुन्तमन्यद्द्रशदस्यपार्जःकृ-
 ष्णमुन्यद्हरितुऽसम्भरन्ति ॥ १२^{३६} ॥ वण्णमहाँऽऽ-
 अंसिसूर्युवडादित्यमहाँऽऽअंसि ॥ महस्तेसतोमहिमा-
 पनस्यतेद्वादेवमहाँऽऽअंसि ॥ १३^{३६} ॥ वट्सूर्यश्च-
 वंसामहाँऽऽअंसिसत्रादेवमहाँऽऽअंसि ॥ महन्नादेवा-
 नामसूर्यः पुरोहितो विभुज्योतिरदाब्ध्यम् ॥ १४^{३६} ॥
 श्रायन्तऽऽहवसूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥ वृसूनिजाते-
 जनमानुऽओजसाप्रतिभागन्नदीधिम् ॥ १५^{३६} ॥ अ-
 पादेवाऽऽउदितासूर्यस्य निरऽऽहसहपिपृतानिरवद्यात् ॥
 तन्नोमित्रो वरुणो मामहन्तामदिति क्षिन्धुः पृथिवीऽऽत-
 षो ॥ १६^{३६} ॥ आकृष्णेन रजसाव्वर्तमानो निवेशय-

न्नमृतम्भर्त्यञ्च ॥ हिरुण्ययेनसवितारथेनादेवोषांति-
भुवनानिपश्यन् ॥ १७^३/_{३३} ॥ इतिचतुर्थोऽध्यायः ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्रमुच्यवऽउतोतऽइष-
वेनमः ॥ वाहुब्भ्यामुततेनमः ॥ १^६/_६ ॥ यातेरुद्रशिवात्-
नूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिश-
न्ताभिचाकशीहि ॥ २^६/_६ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तैविभ-
र्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरिञ्चिताङ्कुरुमाहिष्मीः पुरुषञ्जगत् ॥
३^६/_६ ॥ शिवेनवचसात्त्रागिरिशाच्छावदामसि ॥ यथा-
नहसर्वमिज्जगदयुक्ष्मसुमन्ताऽअसत् ॥ ४^६/_६ ॥ अर्ध्ववो-
चदधिवक्ताप्रथमोदैवयोभिपक् ॥ अहीञ्चसर्वाञ्जम्भय-
न्तसर्वाञ्चयातुघान्योघराचीः परासुव ॥ ५^६/_६ ॥ असौयस्ता-
म्नोऽअरुणऽउतवव्भुः सुमङ्गलः । येचैनऽरुद्राऽअभितो-

१ इति मैत्रसूक्तस्य नेत्ररूपस्य पञ्चमाङ्गस्य सप्तदशमनेत्ररभिषेकः ॥ नेत्रं त्रिञ्चाङ्-
गुहस्तसूतम् ॥ २ ॥ केवल्योपनिषदि-यः शतरुद्रियमधीते सोऽभिपूतो भवति स वायुपूतो भवति
स आत्मपूतो भवति स सुरापातातूतो भवति स ब्रह्मज्ञत्यायाः पूतो भवति स सुवर्णस्तेयात्पूतो-
भवति स कृश्याकृश्यापूतो भवति तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवत्वित्याश्रमी सकृद्वा जपेत् । अनेन
ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम् । तस्मादेवं विदिरैवेन केवल्यपदमश्नुते ॥ जाबालोपनिषदि-
अथदेनं ब्रह्मकारिण उचुः- किं ज्येनामृतत्वं ब्रूहीति । स होवीच याजः शतरुद्रियेणेत्यान्ये-
व ह वा अमृतस्य नामानि एतैर्देवाऽमृतो भवतीति एवमेवैतद्याज्ञवल्क्यः ॥ नमस्ते रुद्रमग्यव
इतिशोइश्वर्यं शतरुद्रियमिति कमलाकरादिभिरुक्तम् तथा केनचित्-पर्यष्टिर्नालसूक्तं च पुनःषो-

द्विक्षुश्चिन्ता?सहस्रशोवैपा७हेडंईमहे ॥१६॥ असौयोव-
 सर्पीतिनीलग्रीवोविलोहितः॥ उत्तैर्नङ्गोपाऽअदृशुन्नद-
 श्रुदहायुःसदृष्टोमृडयातिनः ॥ १६ ॥ नमोस्तुनील-
 ग्रीवायसहस्राक्षार्यमीदुषे ॥ अथोषेऽअस्यसत्त्वानोहन्ते-
 वभ्योकरुन्नमः॥१७॥ प्रमुञ्चधन्वंतस्त्वमुभयोरत्वन्योर्ज्ज्या-
 म् ॥ याश्चतेहस्तऽइपवःपरुताभगवोवप ॥१८॥ विज्ज्य-
 न्वनुःऋर्हिन्नोविशाल्योवाणवाँ २ऽउत ॥ अनेशन्न-
 स्युषाऽइपवऽअभुरस्यनिपङ्गधि? ॥१९॥ यातेहेतिर्मी-
 दुष्टमहस्तेवभूवतेधनुः ॥ तयास्मान्निवुश्वतस्त्वमयक्ष्म-
 यापरिभुज ॥ २० ॥ परितेधन्वनोहेतिरुस्मान्निवृणक्तुवि-
 श्वतः ॥ अथोषऽइपुधिस्तवारेऽअस्मान्निधैहितम् ॥२१॥

दशरुद्रमवेत् । एतेद्वेनमस्तेद्वे नरं विद्वममेव च ॥ मीदुष्टमेतिचस्वारिहोतव शतरुद्रियम् इति ।
 यदुक्तं तन्निर्घलमेव ॥ उक्तय शतमसद्दृष्टाता द्वा देवता अस्येति शतरुद्रियम् ॥ शतरुद्रादुप-
 (तद्धितप्रकरणेति ३१६) इतिप्रप्रययान्तोऽयं शतरुद्रियशब्दः ॥ स्मृतिसूत्रपुराणवचनेषु
 द्दशरेदितिद्वान् जयेदिति च ध्रुयते तत्र उभयथाप्येवचनान्तरत्वेन बहुवचनान्तरत्वेन वा धृतस्य
 द्दशपदस्य रौद्राप्यायोऽभिधेयः॥स्मृतिः।राणामिह रौद्राध्यायवाचकत्वेन द्दशप्रसिद्धैर्दृष्टकारामिग-
 याघ नमस्तेद्वेति पठ्यतिमन्त्रः।मन्त्रेण शतरुद्रियम् ॥ शतरुद्रियहोमे विनियुक्तमन्त्रमुदायस्यैव
 स्मृतिसूत्रपुराणस्यद्विधानेषु द्दशप्रतिपादनेन तस्यैवात्रद्दशपदवाच्यतया प्रसिद्धत्वेन च द्दशवात्
 ॥ इत् दुःग प्राययतीति द्दः ॥ भयवा इत् शानं सति द्दशतीति द्दः ॥ यद्वा पापिनो नरान्
 दुःसामोमेन रौद्रयतीति द्दः ॥

अवतत्त्यधनुद्वष्टसहस्राक्षशतैपुधे॥निशीर्ष्यशुल्ल्यानाम्मु-
 खांशिवोनंस्सुमनांभव ॥ ३३ ॥ नमस्तऽआयुंघायाना-
 ततायधृष्णवे ॥ उभाब्भ्यामुततेनमोवाहुब्भ्यान्तवुधब्ब-
 ने॥३४॥मानोमुहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानुऽउक्षन्तमुत-
 मानंऽउक्षितम् ॥ मानोवधीक्षितरुम्मतमातरुम्मानंऽपि-
 यास्तुन्नोरुद्धरीरिपक्ष ॥ ३५ ॥ मानंस्तोकेतनयेमानुऽआ-
 युषिमानो गोपुमानोऽअश्वेषुरीरिपक्ष॥ मानोव्वीराञ्छुद्ध-
 भामिनोवधीर्हविष्मन्तुहमदुमित्त्वाहवामहे ॥ ३६ ॥ नमो-
 हिरण्यवाहवेसेनान्येदिशाञ्चुपतयेनमोनमोवृक्षेब्भ्योह-
 रिकेशेब्भ्यक्षपशूनाम्पतयेनमोनमंऽशुष्पिञ्जरायुत्त्वपीम-
 तेपथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपर्वीतिनेपुष्टानाम्प-
 तयेनमो-नमोवब्भुशायह्याधिनेन्नानाम्पतयेनमोनमोभ-
 वस्यहृत्स्यैजगताम्पतयेनमोनमोरुद्रायाततायिनेक्षेत्राणु-
 म्पतयेनमोनमंऽसूनायाहन्त्यैवर्नानाम्पतयेनमो-नमोरो-
 हितायस्त्यपतयेवृक्षाणाम्पतयेनमोनमोभुवन्तयेवारिव-
 स्कृतायौपधीनाम्पतयेनमोनमोमुन्त्रिणैवाणिजायुःक्ष्मा-
 णाम्पतयेनमोनमंऽउच्चैर्घोषायाकक्रन्दयतेपत्नीनाम्पतये-
 नमो-नमंऽकृत्स्नायुतयाधावतेसत्त्वंनाम्पतयेनमोनमुहस-

हंमानायनिव्याधिनाऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनि-
 पुङ्गिणेककुभायस्त्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचुरैवपरिचुरा-
 यारण्यानाम्पतयेनमो-नमोवञ्चतेपरिवञ्चतेस्तायुनाम्पत-
 येनमोनमोनिपुङ्गिणऽइयुधिमत्तेतस्कराणाम्पतयेनमोन-
 मःसृकायिबभ्योजिघां७सद्भ्योमुष्णताम्पतयेनमोनमो-
 सिमद्भ्योनक्त्तश्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः॥१५१६-
 १६३०३१॥ नमऽउष्णीपिणैगिरिचुरायकुलुञ्चानाम्पतये-
 नमोनमऽइपुमद्भ्योधव्यायिबभ्यश्चवोनमोनमऽआत-
 न्त्वानेबभ्यःप्रतिदधानेबभ्यश्चवोनमोनमऽआयच्छद्-
 भ्योस्यद्भ्यश्चवोनमो-नमोविसृजद्भ्योविद्ध्यद्भ्यश्च-
 वोनमोनमःस्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवोनमोनमःग्रयाने-
 बभ्यऽआसीनेबभ्यश्चवोनमोनमःस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्य-
 श्चवोनमो-नमःसुभाबभ्यःसुभापतिबभ्यश्चवोनमोनमो-
 श्चैबभ्योश्चपतिबभ्यश्चवोनमोनमऽआव्याधिनीबभ्यो-
 त्त्रिविद्धयन्तीबभ्यश्चवोनमोनमऽउगंणाबभ्यस्तृहृती-
 बभ्यश्चवोनमो-नमोगणेबभ्योगणपतिबभ्यश्चवोनमोन-
 मोव्रातेबभ्योव्रातपतिबभ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेबभ्योगृ-
 त्सपतिबभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेबभ्योत्त्रिभ्ररूपेबभ्यश्च-

वोनमो-नमःसेनावभ्यःसेनानिवभ्यश्चवोनमोनमोरुथि-
 वभ्योऽअरुथेवभ्यश्चवोनमोनमःक्षुतृवभ्यःसङ्ग्रहीतृवभ्य-
 श्चवोनमोनमोमहद्भ्योऽअवर्भकेवभ्यश्चवोनमः। ^{२२३३४}/_{१६}
^{२५२६}/_{१६} । नमस्तक्षवभ्योरथकारेवभ्यश्चवोनमोनमःकुलाले-
 वभ्यःकुर्मारेवभ्यश्चवोनमोनमोनिपादेवभ्यःपुञ्जिष्टेवभ्य-
 श्चवोनमोनमःश्चनिवभ्योमृगयुवभ्यश्चवोनमो-नमःश्व-
 वभ्यःश्वर्पतिवभ्यश्चवोनमोनमोभवायचरुद्रायचनमःशु-
 व्वायचपशुपतयेचनमोनीलम्ग्रीवायचशित्तिकण्ठायच। ^{१७}/_{१६}
^{२६}/_{१६} नमःऋषिर्हिनेचव्युप्तकेशायचनमःसहस्राक्षायचशुत-
 धन्वनेचनमोगिरिशुयायचशिपिविष्टायचनमोमीढुष्टमा-
 यचेपुमतेच ॥ ^{२६}/_{१६} ॥ नमोऽहस्त्रायचवामनायचनमोबृहतेच-
 व्वर्षीयसेचनमोबृद्धायचसवृधेचनमोग्र्यायचप्रथमायच
 ॥ ^{२६}/_{१६} ॥ नमःऽआशवेचाजिरायचनमःशीर्ग्यायचशीवभ्या-
 यचनमःऽऊर्म्यायचावस्त्र्यायचनमोनादेयायचहीण्या-
 यच ॥ ^{२६}/_{१६} ॥ नमोऽज्येष्टायचकनिष्टायचनमःपूर्वजाय-
 चापरुजायचनमोमद्ध्युमायचापगल्भायचनमोजघ्न्या-
 यचबुध्यायच ॥ ^{२६}/_{१६} ॥ नमःसोवभ्यायचप्रतिसर्षायचन-
 मोयाम्यायचक्षेम्यायचनमःश्लोक्यायचावसान्याय-

चनमऽउर्व्वर्याय च खल्ल्याय च ॥ ३३ ॥ नमो वृद्ध्याय च क-
 कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमऽआशुपैणा-
 य च आशुरथाय च नमः शूराय च अवभेदिने च ॥ ३४ ॥ नमो वि-
 लिम्बने च कवचिने च नमो ब्रह्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय-
 च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय च अहनश्याय च ॥ ३५ ॥
 नमो घृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निपङ्क्तिने च पुष्टिमते च नम-
 स्तीक्ष्णे पवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥ ३६ ॥
 नमः सुत्याय च पत्न्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च न-
 मः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशुन्ताय च
 ॥ ३७ ॥ नमः कृष्याय च वट्ट्याय च नमो वीध्याय च तप्याय-
 च नमो मेघ्याय च विद्वत्याय च नमो वृष्याय च वृष्याय-
 च ॥ ३८ ॥ नमो वृत्त्याय च रेण्भ्याय च नमो वृस्तव्याय च वृ-
 स्तुषाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमः स्ताम्प्राय चारुणाय-
 च ॥ ३९ ॥ नमः शुङ्गवे च पशुपते च नमऽउग्राय च भीमाय-
 च नमो ग्रेव्हाय च दूरेव्हाय च नमो हुन्त्रे च हनीयसे च नमो-
 वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमः स्ताराय ॥ ४० ॥ नमः शम्भवाय-
 च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
 च शिवतराय च ॥ ४१ ॥ नमः शार्ङ्गाय च शार्ङ्गाय च नमः प्र-

तरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्थ्यायचकूल्यायचनमःश-
 ष्यायचफेन्त्यायच ॥१३॥ नमःसिकत्यायचप्रवाह्याय-
 चनमःकिङ्किलायचक्षयणायचनमःकपर्दिनेचपुलस्तये
 चनमःइरिण्यायचप्रपत्यायच ॥१४॥ नमोव्रज्यायच-
 गोष्ठ्यायचनमस्तल्प्यायचगेह्यायचनमोहदुष्यायच
 निवेण्यायचनमःकाट्यायचगह्वरेष्ट्यायचा ॥१५॥ नमःशु-
 ष्क्यायचहरित्यायचनमःपाण्ड्यायचरजस्यायच-
 नमोलोप्यायचोलप्यायचनमःऊर्ध्व्यायचसूर्ध्व्यायच ॥१६॥
 नमःपुण्यायचपुण्यायचनमःउद्दगुरमाणायचाभि-
 र्गन्तेचनमःआखिदुतेचप्रखिदुतेचनमःइपुकृद्दभ्योऽध-
 नुष्कृद्दभ्यश्चोनमोनमोवःकिरिकेभ्योऽदेवानाऽहृद-
 येभ्योनमोऽविचिन्वत्केभ्योनमोऽविक्षिणत्केभ्योनमः
 आनिर्हतेभ्यः ॥१७॥ द्रापेऽअन्धसपतेदरिद्रुनीललो-
 हित ॥ आसाम्प्रजानामिषाम्पशूनाम्माभेर्मारोड्ङ्गोच-
 नःकिञ्चनाममत् ॥१८॥ इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयर्दी-
 रायप्रभंरामहेमती? ॥ यथाशमसंहिपदेचतुष्पदेविविश्व-
 ष्पुष्ट्वामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥१९॥ यातेरुद्रशिवातनू?-
 शिवाविश्वहाभेषुजी ॥ शिवारुतस्यभेषुजीतयानोमृ-

डजीवसे ॥५६॥ परिंनोरुद्रस्यहेतिर्वृगकस्तुपरित्वेपस्यदु
 र्मातिरंघायो? ॥ अवंस्थिरामधवंदभ्यस्तनुष्वमीद्ध-
 स्तोकायतनयायमृड ॥५७॥ मीढुष्टमशिवंतमशिवोनं-
 सुमनांभव ॥ पुरुमेव्वृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिं वसानुऽआ-
 चरुपिनांकुम्बिभृदागहि ॥५८॥ विवकिरिद्रुविलोहितुन-
 मस्तेऽअस्तुभगवद ॥ यास्तेसुहस्रहेतयोऽन्यमस्मन्नि-
 वपन्तुता? ॥५९॥ सहस्राणिसहस्रशोवाह्वोस्तवहेतयः॥
 तामामीशानोभगवदपराचीनामुखांकृधि ॥ ६० ॥ अस-
 ह्वयातासहस्राणिषेरुद्राऽअधिभूम्याम् ॥ तेषां०सहस्र-
 योजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ६१ ॥ अस्मिन्महत्तृणवे-
 न्तरिक्षेभवाऽअधि ॥ तेषां०सहस्रयोजनेवधन्वानितन्म-
 सि ॥६२॥ नीलंग्रीवाऽशित्तिःफण्टादिवंरुद्राऽउपंश्रि-
 ताः ॥ तेषां०सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ६३ ॥
 नीलंग्रीवाऽशित्तिःफण्टाऽशुर्वाऽअध?क्षमाचरा?॥तेषां-
 ०सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ६४ ॥ येनृक्षेपुशुष्पि-
 अरानीलंग्रीवाऽविलोहिताः ॥ तेषां०सहस्रयोजनेवध-
 न्वानितन्मसि ॥ ६५ ॥ येभूतानामधिपतयोद्विशुत्वांसः

कपर्दिनः ॥ तेषां सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥
 ५६ ॥ येषां पथिरक्षयः ऽएलवृदाऽआयुर्धुधः ॥ तेषां
 सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ५७ ॥ ये तीर्थानि प्रचर-
 न्ति सृकाहस्तानि पङ्क्तिः ॥ तेषां सहस्रयोजने वधन्वा-
 नितन्मसि ॥ ५८ ॥ ये त्रेपुर्विविद्धयन्ति पात्रेषु पिवता ज-
 नान् ॥ तेषां सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ५९ ॥
 षऽएतावन्तश्च भूयां सश्च दिशो रुद्रा विवतस्थिरे ॥ ते-
 पां सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ६० ॥ नमोऽस्तु-
 रुद्रेऽभ्योऽये दिविषे पां वपमिपवः ॥ तेऽभ्यो दशुप्राचीर्दश-
 दक्षिणादशुप्राचीर्दशोर्दीचीर्दशोर्ध्वा? ॥ तेऽभ्यो न-
 मोऽस्तुते नो वन्तुते नो मृडयन्तुते यन्द्दृष्मो यश्चने द्वे-
 ष्टितमेपाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६१ ॥ नमोऽस्तुरुद्रेऽभ्योऽयेन्तरि-
 श्वेषां वात्ऽइपवः ॥ तेऽभ्यो दशुप्राचीर्दशदक्षिणादश-
 प्रतीचीर्दशोर्दीचीर्दशोर्ध्वा? ॥ तेऽभ्यो नमोऽस्तुते नो-
 वन्तुते नो मृडयन्तुते यन्द्दृष्मो यश्चने द्वे ष्टितमेपाञ्जम्भेद-
 ध्मः ॥ ६२ ॥ नमोऽस्तुरुद्रेऽभ्योऽये पृथिव्यां येषामन्नमिपवः
 ॥ तेऽभ्यो दशुप्राचीर्दशदक्षिणादशुप्राचीर्दशोर्दीचीर्द-
 शोर्ध्वा? ॥ तेऽभ्यो नमोऽस्तुते नो वन्तुते नो मृडय-

न्तुनेयन्दिष्टमोयश्चनोद्वेष्टितमैपाञ्जम्भेदधमे ॥ ६६ ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ ॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

ॐ वृष्यः सोमव्रते तव मनस्तु नूपु विव्रतः ॥ प्रजावे-
 न्तं सचे महि ॥ १५ ॥ एते रुद्राः सप्तसहस्रान् विष्णु-
 तञ्जुपस्व स्वाहेपते रुद्राः सप्तसहस्रान् ॥ २५ ॥ अवरु-
 द्रमदीमद्व्यवदेव न्यम्बकम् ॥ यथानोवस्य सुस्करुद्व-
 थानः श्रेयसुस्करुद्वथानोद्वयवसाययात् ॥ ३५ ॥ भेषज-
 मसि भेषजद्वेषश्चायुपुरुपाय भेषजम् ॥ सुखम्पेपायमे-
 ष्यै ॥ ४५ ॥ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिर्मुष्पुष्टिर्वचनम् ॥
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं
 व्यजामहे सुगन्धिर्मुष्पुष्टिर्वेदनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनादि-
 तोमुक्षीय मामृतात् ॥ ५५ ॥ एतत्तैरुद्रावसन्ते नपरो मूर्ज-
 वतोतीहि ॥ अतततधन्वापिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिः
 सन्नक्षिशिवोतीहि ॥ ६५ ॥ त्र्यायुप अमदग्नेः कश्यपस्य त्र्या-
 युपम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुपन्तन्नोऽस्तु त्र्यायुपम् ॥ ७५ ॥
 शिवो नामसि स्वर्धितिस्तेऽपितानमस्तेऽस्तु मामाहिः
 सीः ॥ निवर्त्तयाभ्यायुषेन्नादद्याय प्रजनेनायरायस्पो-

पायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय ॥८३॥ ॐ नतंविदाथषऽ-
 इमाज्जानान्यदशुष्माकमन्तरम्बभूव । नीहारेणप्रा-
 वृताजल्पाचासुतृपऽउक्कथशासंश्चरन्ति ॥९३॥ विश्व-
 कर्माह्वयजनिष्टदेवऽआदिदद्गन्धुर्वोऽअभवद्वितीयः ॥
 तृतीयःपिताजनितापथीनामुपाङ्गवर्भृदधात्पुरुत्रां ॥
 ॥१०३॥ ॐ उग्रश्चभीमश्चदध्वान्तश्चधुनिश्च ॥ सास-
 ह्वांश्चाभियुग्वाचांश्चिक्षिपस्वाहा ॥११३॥ अग्निहृद-
 येनाशनिहृदयाग्नेणपशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भव्युक्त्वा ॥
 शुर्वम्मतस्त्राभ्यामीशानम्भ्युनामहादेवमन्तःपर्शुव्ये-
 नोग्रन्देवंबनिष्ठुनावसिष्ठुहनुक्षिज्ञानिकोश्याभ्याम्
 ॥१२३॥ उग्रंलौहितेनमित्रं सौव्रत्येनरुद्रन्दौव्रत्येने-
 न्द्रं प्रक्रीडेनमरुतोवलेनसाक्ष्याप्रमुदा ॥ भुवस्यक-
 ण्ठ्यंरुद्रस्यान्तःप्राश्वर्यंमहादेवस्ययक्त्वा चर्षवनि-
 ष्ठुःपशुपतेःपुरीतत् ॥ १३३ ॥ लोमंभ्युस्वाहालोमं-
 भ्युस्वाहात्तुवेस्वाहात्तुवेस्वाहालोहितायस्वाहालो-
 हितायस्वाहामेदोभ्युस्वाहामेदोभ्युस्वाहा ॥ सांसे-

१ इति महच्छिरोरुपाभिरष्टाभिरभिवेकः ॥ काष्वाणां तु सप्तकण्डिकाभिरिति विशेषः ॥

२ इति देवस्य युक्त्याभ्यामभिवेकः ॥ कल्पद्रुमे—उग्रधेति तिसृभिः सप्तभिर्वाऽभिवेकाः ॥

ष्युःस्वाहा॑माँसेऽष्युःस्वाहा॑स्त्रावँष्युःस्वाहा॑स्त्रावँ-
 ष्युःस्वाहा॑स्तथँष्युःस्वाहा॑स्तथँष्युःस्वाहा॑मुजँष्युःस्वा-
 हा॑मुजँष्युःस्वाहा॑ ॥ रेतँसेऽस्वाहा॑प्रायवेऽस्वाहा॑ ॥ १४१ ॥
 आयासायुःस्वाहा॑प्रायासायुःस्वाहा॑सँष्युःसायुःस्वाहा॑वि-
 यासायुःस्वाहा॑द्यासायुःस्वाहा॑ ॥ शूचेऽस्वाहा॑शोचँतेऽस्वाहा॑-
 शोचँमानायुःस्वाहा॑शोकाँयुःस्वाहा॑ ॥ १५१ ॥ तपँसेऽस्वाहा॑-
 तप्यँतेऽस्वाहा॑तप्यँमानायुःस्वाहा॑तप्सायुःस्वाहा॑घुर्मायु-
 स्वाहा॑ ॥ निष्कृत्यैऽस्वाहा॑प्रार्यँश्चित्त्यैऽस्वाहा॑भेषजायु-
 स्वाहा॑ ॥ १६१ ॥ युमायुःस्वाहान्तँकायुःस्वाहा॑मृत्पत्रे-
 स्वाहा॑ ॥ ब्रह्मणँस्वाहा॑ब्रह्महृत्यायैऽस्वाहा॑विश्वँष्यो-
 देवेऽष्युःस्वाहा॑द्यावाँपृथिवीँष्युःस्वाहा॑ ॥ १७१ ॥
 इति षष्ठोऽध्यायः ॥

मनश्चमेचक्षुश्चमेश्श्रोत्रञ्चमेदक्षश्चमेवलञ्चमेयज्ञेनकल्प-
न्ताम् ॥३६॥ ओजश्चमेसहश्चमऽआत्ममाचमेतनूश्चमे-
शर्मचमेवर्मचमेज्ञानिचमेस्थानिचमेपरुंॐपिचमेशरी-
राणिचमऽआयुश्चमेजराचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥३७॥ ज्यै-
ष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्यञ्चमेमन्युश्चमेभामश्चमेमश्चमेभश्च-
मेजेमाचमेमाहिमाचमेवरिमाचमेप्राथिमाचमेवर्षिमाचमेद्रा-
धिमाचमेवृद्धञ्चमेवृद्धिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ३८ ॥ सु-
त्यञ्चमेश्श्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेविश्चञ्चमेमहश्चमेककी-
टाचमेमोदश्चमेजातञ्चमेजानिष्प्यमाणञ्चमेसूक्तञ्चमेसुकृ-
तञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥३९॥ ऋतञ्चमेमृतञ्चमेयक्षमञ्चमे-
नामयञ्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायुत्वञ्चमेनामित्रञ्चमेभयञ्चमे-
सुखञ्चमेशयनञ्चमेसुपाश्चमेसुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्
॥४०॥ युन्ताचमेधुर्त्ताचमेक्षेमश्चमेधृतिश्चमेविश्चञ्चमेम-
हश्चमेसुविचमेज्ञात्रञ्चमेसूश्चमेप्रसूश्चमेसीरञ्चमेलयश्चमे-
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥४१॥ शञ्चमेमयश्चमेप्रियञ्चमेनुकाम-
श्चमेकामश्चमेसौमनसश्चमेभगश्चमेद्रविणञ्चमेभद्रञ्चमे-
श्श्रेयश्चमेवसीयश्चमेयशश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥४२॥ ऊर्क-
चमेसूनृताचमेपर्यश्चमेरसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्धिश्च-

मेसर्पीतिश्चमेकृपिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रंश्चमुऽऔर्दिद्भश्चमे-
 यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १८ ॥ रयिश्चमेरायश्चमेपुष्टश्चमेपुष्टिश्च-
 मेधुभुचंमेप्रभुचंमेपूर्णश्चमेपूर्णतरश्चमेकुर्यवश्चमेक्षितश्चमे-
 न्नश्चमेक्षुचंमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ धित्तश्चमेवेद्यश्चमेभूत-
 श्चमेभविष्ण्यश्चमेसुगश्चमेसुपत्थ्यश्चमुऽऋद्धश्चमुऽऋद्धिश्च-
 मेकृष्णश्चमेकृष्णिश्चमेसुमतिश्चमेसुमतिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्
 ॥ २० ॥ व्रीहयश्चमेयवाश्चमेमापाश्चमेतिलाश्चमेमुद्गा-
 श्चमेखलवाश्चमेप्रियङ्गवश्चमेणवश्चमेश्यामाकाश्चमेनी-
 वाराश्चमेगोधूमाश्चमेसूराश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २१ ॥
 अश्माचमेमृत्तिकाचमेगिरयश्चमेपर्वताश्चमेसिकताश्च-
 मेवनस्पतयश्चमेहिरण्यश्चमेयश्चमेश्यामश्चमेलोहश्चमे-
 सीसश्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ अग्निश्चमुऽ
 आपश्चमेत्रीरुधश्चमुऽओषधयश्चमेकृष्टपुच्छ्याश्चमेकृष्टपु-
 च्च्याश्चमेग्गाम्याश्चमेपशवऽआरुण्याश्चमेधित्तश्चमेवि-
 त्तिश्चमेभूतश्चमेभूतिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २३ ॥ वसु-
 चमेवसुतिश्चमेकर्मचमेशक्तिश्चमेर्थाश्चमुऽएमंश्चमुऽ-
 इत्याचमेगतिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ अग्निश्च-
 मुऽइन्द्रश्चमेसोमश्चमुऽइन्द्रश्चमेसविताचमुऽइन्द्रश्चमेस-

रस्वतीचमुऽइन्द्रं श्रमेपूपाचमुऽइन्द्रं श्रमेवृहस्पतिं श्रमुऽ-
 इन्द्रं श्रमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १८ ॥ मित्रं श्रमंऽइन्द्रं श्रमेव-
 रुणं श्रमुऽइन्द्रं श्रमेघाताचमुऽइन्द्रं श्रमेत्वष्ट्राचमुऽइन्द्रं-
 श्रमेमरुतं श्रमुऽइन्द्रं श्रमेविविश्वेचमेदेवाऽइन्द्रं श्रमेयज्ञेन-
 कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ पृथिवीचमंऽइन्द्रं श्रमेन्तरिक्षञ्चमंऽइ-
 न्द्रं श्रमेह्यौ श्रमंऽइन्द्रं श्रमेसमां श्रमंऽइन्द्रं श्रमेनक्षत्राणि-
 चमंऽइन्द्रं श्रमेदिशं श्रमंऽइन्द्रं श्रमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २० ॥
 अशु श्रमेरुश्मि श्रमेदाब्ज्यं श्रमेधिपतिं श्रमऽउपांशु-
 श्रमेन्तर्धामं श्रमंऽएन्द्रवायव श्रमेमैत्रावरुणं श्रमंऽआ-
 श्विनं श्रमेप्रतिप्रस्थानं श्रमेशुकक्रं श्रमेमन्थीचमेयज्ञेन-
 कल्पन्ताम् ॥ २१ ॥ आग्रयणं श्रमेवैश्वदेवं श्रमेद्भुवं श्र-
 मेवैश्वानरं श्रमंऽएन्द्राग्नं श्रमेमहावैश्वदेवं श्रमेमरुत्व-
 तीयां श्रमेनिष्केवल्ल्यं श्रमेसावित्रं श्रमेसारस्वतं श्रमेपा-
 त्कीवतं श्रमेहारियोजनं श्रमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ सुचं-
 श्रमेचमसां श्रमेव्वायुह्यानिचमेद्रोणकलशं श्रमेग्रावाण-
 श्रमेधिपवणेचमेपूतभृच्चमंऽआधवनीयं श्रमेव्वेदिं श्रमेव-
 हिं श्रमेवभूथं श्रमेस्वगाकारं श्रमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २३ ॥
 अग्निं श्रमेघर्मं श्रमेर्कं श्रमेसूर्यं श्रमेप्राणं श्रमेऽश्वमेघ-

अमेपृथिवीचमेदिति अमेदिति अमेद्वयौ अमेहुलयंश-
 क्वंरयोदिशं अमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ३२ ॥ व्रुतञ्चमऽऋ-
 तवं अमेतपं अमेसंवत्सर अमेहोरात्रेऽर्कवृष्टीवेबृहद्वथन्त-
 रेचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ३३ ॥ एकाचमेतिस्रश्चमेतिस्र-
 अमेपञ्चचमेपञ्चचमेसप्तचमेसप्तचमेनवचमेनवचमुऽएका-
 दशचमुऽएकादशचमेत्रयोदशचमेत्रयोदशचमेपञ्चदशच-
 मेपञ्चदशचमेसप्तदशचमेसप्तदशचमेनवदशचमेनवदश-
 चमुऽएकविंशतिश्चमुऽएकविंशतिश्चमेत्रयोविंशति-
 अमेत्रयोविंशतिश्चमेपञ्चविंशतिश्चमेपञ्चविंशतिश्च-
 मेसप्तविंशतिश्चमेसप्तविंशतिश्चमेनवविंशतिश्चमेन-
 वविंशतिश्चमुऽएकत्रिंशच्चमुऽएकत्रिंशच्चमेत्रयस्त्रिं-
 शच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ३४ ॥ चतस्रश्चमेष्टौचमेष्टौचमेद्वा-
 दशचमेद्वादशचमेषोडशचमेषोडशचमेविंशतिश्चमेविं-
 शतिश्चमेचतुर्विंशतिश्चमेचतुर्विंशतिश्चमेष्टाविंशति-
 तिश्चमेष्टाविंशतिश्चमेद्वात्रिंशच्चमेद्वात्रिंशच्चमेपदत्रिं-
 शच्चमेपदत्रिंशच्चमेचत्वारिंशच्चमेचत्वारिंशच्चमेचतु-
 श्चत्वारिंशच्चमेचतुश्चत्वारिंशच्चमेष्टाचत्वारिंशच्चमे-
 युज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ३५ ॥ त्र्यविंशमेत्र्युवीचमेदित्युवाद-

चमेदित्यौहीचमेपञ्चाविश्रमेपञ्चावीचमेत्रिवृत्सश्चमेत्रिवृ-
त्साचमेतुर्गुवाद्चमेतुर्गुहीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥३६॥
पुष्टुवाद्चमेपुष्टुहीचमऽउक्षाचमेवृशाचमऽऋपुभश्चमेवे-
हचमेनुड्डाँश्चमेधेनुश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥३७॥ वाजा-
युस्वाहांप्रसुवायुस्वाहांपिजायुस्वाहाक्कतंवेस्वाहावसंवे-
स्वाहाहर्षतयेस्वाहाहर्षेमुग्घायुस्वाहांमुग्घायवैनष्टिशि-
नायुस्वाहांविनुर्दशिनंऽआन्त्यायुनायुस्वाहान्त्यायभौवु-
नायुस्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहांप्रजापतये-
स्वाहा ॥ इयन्तेराणिमुत्राययुन्तासियमनऽउर्जेत्त्वावृ-
ष्ट्यैत्त्वांप्रजानुन्त्वाधिपत्याय ॥३८॥ आयुर्गुज्ञेनकल्प-
ताम्प्राणोयुज्ञेनकल्पताञ्क्षुर्गुज्ञेनकल्पतांश्रोत्रंयज्ञे-
नकल्पतांवाग्युज्ञेनकल्पतामनोयुज्ञेनकल्पतामात्ममा-
युज्ञेनकल्पताम्रहमायुज्ञेनकल्पताञ्ज्योतिर्गुज्ञेनकल्पता-
ंस्वर्गुज्ञेनकल्पताम्पुष्टुर्गुज्ञेनकल्पतांयज्ञोयुज्ञेनक-
ल्पताम् ॥ स्तोमंश्चयजुश्चऽऋक्कुसामंचवृहच्चरथन्तरञ्च ॥
स्वर्देवाऽअगन्तामृताऽअभूमप्रजापतेऽप्रजाऽअभूमवे-
दस्वाहा ॥ २९३ ॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

१ इत्येकीनप्रिश्नमन्त्रात्मरुचमकाध्यायेन धर्मिषुः ॥ वाजधमइत्यष्टानुवादात्मकेन

चमकेन चेति देवयाज्ञिकः ॥ महच्छिःसाऽभिषेकपक्षे न चमकानुवाकेरभिषेक । चमकानुवाके-
रभिषेकपक्षे न महच्छिःसाऽभिषेक इत्यपरे ॥

ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये सामं प्राणं प्रपद्ये-
 चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये ॥ वागोजं संहौजो मयि प्राणापानौ
 ॥३६॥ यन्मोच्छिद्रञ्क्षुपो हृदयस्य मनसो वा तितृणम्वृह-
 स्पतिं मूर्तेतद्देधातु ॥ शन्नो भवतु भुवनस्य स्पतिः
 ॥३७॥ भूर्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य-
 धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३८॥ कया नाश्चित्रऽ-
 आभुवदूती सदा वृधसखा ॥ कया शचिष्ठया वृता ॥३९॥
 कस्त्वा सत्त्वो मदानाम्महिष्ठो मत्सदन्धसह ॥ इडा चि-
 दारुजेवसु ॥४०॥ अभीषुणसखी नाम विता जरितृणाम्
 ॥ शुतम्भवा स्यूतिभिः ॥४१॥ कया त्वन्नं ऽकृत्याभिप्रम-
 न्दसेवृषन् ॥ कया स्तोतृभ्युऽआभर ॥४२॥ इन्द्रो वि-
 श्वस्य राजति ॥ शन्नो ऽस्तु द्विपदेशश्चतुष्पदे ॥४३॥
 शन्नो मित्रशंवरुणः शन्नो भवत्वर्ष्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रो वृह-
 स्पतिश्शन्नो विष्णुरुरुक्क्रमः ॥४४॥ शन्नो वातः पवता-
 ऽशन्नस्तपतुसूर्यः ॥ शन्नः कनिक्कदद्देवः पर्जन्योऽ

१ अत्र पदादिमत्वेऽपि न द्वित्वम् ॥ अमोघनन्दिन्या शिष्यायाम् वो वा वा वै मन्त्रपाठे
 रूपवो गुणव पदे ॥ पदपाठे तु "श्वाम्" इत्याद्युदाहरणानि स्वयम्भूतानि ॥ याज्ञवल्क्यशिष्या-
 यामपि तदर्थं वाचिनो वो वा वा वै यदि निरातजो ॥ आदेशाथ विकल्पार्थो ईयः सृष्टा इति स्मृताः ॥

२ अत्र अर्धमन्त्रः मन्थ्यभावदर्शनात् ॥

अभिवर्षतु ॥३६॥ अहानिशम्भवन्तुनुःशङ्कराञ्जीःप्रति-
 धीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरु-
 णारातहृष्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणावाजसातौशमिन्द्रासो-
 मांसुवितायुशँय्यो? ॥३७॥ शन्नोदेवीरुभिष्टृयुऽआपोभ-
 वन्तुपीतये ॥ शँय्योरुभिस्रवन्तुनः ॥३८॥ स्योनापृथि-
 विनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानुःशर्मसुप्रथाः
 ॥३९॥ आपोहिष्टामयोभ्रुवस्तानऽऊर्जेदधातन ॥ मुहे-
 रणांयुचक्षसे ॥४०॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयते-
 हनः ॥ दुशुतीरिवमातरः ॥४१॥ तस्म्याऽअरङ्गमास-
 वोयस्युक्षयांयजिञ्चथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥४२॥
 द्यौःशान्तिरुन्तरिक्षुःशान्तिःपृथिवीशान्तिरापुःशा-
 न्तिरोपधयुःशान्तिः ॥ वनस्पतयुःशान्तिर्विश्वेदेवा?
 शान्तिर्व्रह्मशान्तिःसर्बुःशान्तिःशान्तिरेवशान्तिः-
 सामाशान्तिरेधि ॥४३॥ दृतेदृहमासिन्नस्यसाचक्षुषा-
 सर्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ सिन्नस्याहञ्चक्षुषासर्वाणि
 भूतानिसमीक्षे ॥ सिन्नस्यचक्षुषासमीक्षामहे ॥४४॥ दृते-
 दृहमा ॥ ज्योक्तेःसुन्दरिशिजीव्यासज्योक्तेःसुन्दरिशिजी-

द्यासम् ॥३३॥ नमस्तेहरसेशोचिपेनमस्तेऽअस्तुत्रिपे ॥
 अन्यास्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावुकोऽअस्मवभ्यं वृशि-
 वो भव ॥३४॥ नमस्तेऽअस्तुद्विदद्युतेनमस्तेस्तनयित्कनवे
 ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुषतःस्वः समीहसे ॥३५॥ यतोयतः
 समीहसेततोऽअभयङ्करु ॥ शन्नः कुरुप्रजावभ्यो-
 भयन्नः पशुवभ्यः ॥३६॥ सुमित्रियानुऽआपुऽओपधयः स-
 न्तुदुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुशोस्मान्द्वेष्टिष्वन्नयन्दिष्म?
 ॥३७॥ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्कमुच्चरत् ॥ पश्येम-
 शुरदः शतञ्जीवेमशुरदः शतः शृणुयामशुरदः शतम्प्रव्र-
 वामशुरदः शतमर्दीनाः स्यामशुरदः शतम्भूयश्चशुरदः
 शतात् ॥३८॥ ॥ इति शान्त्यध्यायः ॥

अथस्वस्तिमार्थनादिमन्त्राः ॥ ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः
 पूषा विश्ववेदा ॥ स्वस्ति नः स्तारक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिः
 इषाता ॥ १ ॥ ॐ पर्यः पृथिव्याम्पयऽओपधोषु पर्यो दिव्यन्तरिक्षे पर्यो
 पाः ॥ पर्यस्वती ॥ प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रुराटमसि-
 विष्णोः श्रव्येस्तयो विष्णोः स्फुरसि विष्णोर्दधुवोसि ॥ वैष्णवमसि
 विष्णवेत्वा ॥ ३ ॥ अग्निर्देवताः वातो देवता मूर्ध्वा देवता चन्द्रमा देवता व-
 संधो देवता रुद्रा देवता दिव्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पति
 देवतेन्द्रो देवता चरुणो देवता ॥ ४ ॥ सद्योजातं पद्यामि सद्योजाताय वै नमो

नमः । भवेभवेनातिभवेभवस्वर्मा भवोद्भवाय नमः ॥ वामदेवाय नमोज्ये-
 ष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमोरुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमोवल्-
 विकरणाय नमोवलाय नमोवलयप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमोमनो-
 र्मनाय नमः ॥ अघोरेभ्यो यघोरेभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो
 नमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ तत्पुरुपाय विद्महेमहादेवाय घीमहि । तन्नो रुद्रः
 प्रचोदयात् ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माधिपतिर्ब्र-
 ह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम् ॥ ॐ शिवो नामासि स्वर्धिति
 स्ते पितानमस्तेऽअस्तु मामाहिःसीत् ॥ निर्वर्त्तयाम्मयाद्युपेन्नाद्ययप्पजन-
 नायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय ॥ ३/३ ॥ ॐ विभ्वानि देव सवि-
 तर्हुरितानि परा सुव ॥ यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ३/३ ॥ ॐ योऽशान्तिरन्त-
 रिक्षुः शान्तिः पृथिवीशान्तिरापृथ्वीशान्तिरोपधयत् शान्तिः ॥ वनस्पतयत्
 शान्तिर्विश्वेदेवाऽशान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वुः शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः
 सा मा शान्तिरेधि ॥ ३/३ ॥ ॐ सर्व्वेषां वापपवेदानाँ रसोयत्सामसर्व्वे-
 पामेवैनमेतद्देदानाँ रसेनाभिपिञ्चति ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥
 अनेन पूजनपूर्वकरुद्राभिषेककर्मणा कृत्वेन श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः
 प्रीयतां न मम ॥ ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ॥

॥ इति रुद्राभिषेकप्रयोगः ॥

॥ २२ ॥ अथ मध्याह्नसन्ध्यप्रयोगः ॥

कर्ता मध्याह्नस्नानं यथावत्कृत्वा धौते वाससी परिधाय दर्भासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य ततः क्रमेण पवित्रधारणम् आचमनं प्राणायामं गन्धमिश्रितभस्मधारणं शिखाबन्धनं रुद्राक्षमालाधारणं पवित्रकरणञ्च प्रातःसन्ध्यावत्कुर्यात् ॥ अथ सङ्कल्पः- विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य० शुभपुण्यतिथौ ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वरुद्र-ह्रस्वसंज्ञामार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीतये मध्याह्नसन्ध्योपासनमहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य भूमिपार्थनां भूतशुद्धिम् अभिपेचनं व्याहृतिपूर्वकगायत्री-करन्यासान् व्याहृतिपूर्वकगायत्रीषडङ्गन्यासान् प्रणवन्यासान् गायत्र्य-क्षरन्यासान् शिरोन्यासांश्च क्रमेण प्रातःसन्ध्यावद्विधाय ततः सावित्र्या-वाहनम्-सावित्रीं युरतीं शुक्लां शुक्लवस्त्रां त्रिलोचनाम् । यजुर्वेदकृतोत्स-ङ्गां वृषारुढां त्रिशुलिनीम् ॥ रुद्राणीं रुद्रदेवत्यां रुद्रलोकनिवासिनीम् । अवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं मूर्धमण्डलात् ॥ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे रुद्रादिनि । सावित्रि छन्दसां माता रुद्रयोने नमोऽस्तु ते ॥ ततः प्रातःसन्ध्यावत्प्राणायामं कृत्वा अम्युप्राशनम्—आपः पुनन्त्विति मन्त्रस्य नारायण ऋषिः आपो देवता गायत्री छन्दः अम्युप्राशने विनियोगः ॥ १ ॥ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवीपुना पुनातु माम् । पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपु-

१ भाष्येणामादागार्यं सन्ध्या मध्याह्निकीभ्यते ॥ इति धर्मसिद्धिबननाद् द्वादशपटीदिनो-
त्तरं गन्धाद्गन्ध्या विदितम् ॥

२ यजुषे ५ दिवाभागे छानर्धे मृदमाहरेत् । तिरुपुत्रमुदादीयं क्रादाभाट्टप्रिये जते ॥

३ गार्गी नाम पूरुषे सावित्री मन्त्रे दिने । सरस्वती च साक्षे एवं गन्ध्या त्रिणा
४ गन्ध्या ३ सावित्र्याः कर्त्तव्यताम् ॥

तापुनातुमाम् । यद्गुच्छिष्ठप्रभोज्यं च यद्वाद्गुश्चरितं मम । सर्वंपुनन्तुमामापो-
सतांचप्रतिग्रहं स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण जलं प्राश्य तूष्णीं द्विराचामेत् ॥ ततो
मार्जनम् । अपोऽञ्जलावादानं जलप्रक्षेपणम् । अपो वामहस्ते गृहीत्वा न्यु-
ञ्जेन दक्षिणहस्तेनाच्छादनम् अघमर्षणं च प्रातःसन्ध्यावत्कृत्वा गायत्री-
मन्त्रेण आकृष्णेनेति मन्त्रेण वा प्रातःसन्ध्योक्तविधिना सूर्याभिमुखस्ति-
ष्ठन् “रुद्रस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम” इति वद-
न्गन्धाक्षतपुष्पयुक्तम् एकमर्घ्यं दद्यात् ॥ इत्ताद्योदकेन दक्षिणनासाचक्षुः-
श्रोत्रस्पर्शनं कुर्यात् ॥ ततो दक्षिणहस्ते जलं गृहीत्वा-“ॐ असावादित्यो
ब्रह्म”-अनेन मन्त्रेण आत्मनः समन्तात्प्रदक्षिणवदुदकं क्षिपेत् ॥ ततः
सूर्योपस्थानं गायत्र्यावाहनं गायत्र्युपस्थानं गायत्रीजपविनियोगं गाय-
त्रीध्यानं ब्रह्मशापविमोचनं वसिष्ठशापविमोचनं विश्वामित्रशापविमो-
चनं गायत्र्यस्त्रोपाहरणं जपादौ मुद्राप्रदर्शनं च प्रातःसन्ध्यावत्कुर्यात् ॥
ततो वस्त्राच्छादितां जपमालां हृदयदेशे धृत्वा गायत्रीमन्त्रजपार्थे विनि-
योगं कृत्वा प्रातःसन्ध्योक्तविधिना गायत्रीजपः कार्यः ॥ ततः षडङ्ग-
न्यासं मुद्राप्रदर्शनं सूर्यप्रदक्षिणां सूर्यादिदेवानां नमस्कारान् जपनिवेदनं
च प्रातःसन्ध्यावत् कुर्यात् । जपार्पणम्-अनेन मध्याह्नसन्ध्याह्नभूतेन
अमुकसंख्याकेन गायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् रुद्रस्वरूपी

१ मुक्तहस्तेन दातव्यं मुद्रां तत्र न कारयेत् । तर्जन्यङ्गुष्ठयोगे तु राक्षसी मुद्रिका स्मृता ॥
राक्षसी मुद्रिकार्थं चेतत्तोयं रुधिरं भवेत् । जलेष्वर्थे प्रशतव्यं जलाभावे शुचिस्थले ।
संप्रोक्ष्य वारिणा सम्यक्नतोऽर्घ्यं तु प्रदापयेत् ॥ २ वृषामन्त्रजपथेव ज्ञानं भोजनमेव च । तथा
वे तीर्थयात्रा च मुद्राहीना वृषा भवेत् ॥ यज्ञश्च निष्कलस्तेषां होमो देवार्चनं तथा । तस्मान्मुद्रा
सदा ह्येया विद्वद्भिर्यत्नमास्थितैः ॥ ३ कुलाणवे-नाक्षतैर्हस्तपैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः ।
चन्दैर्नृत्तिकाभिश्च जपसंख्या न कारयेत् ॥ खाद्या कुशां च सिन्दूरं गोमयं च करीपकम् ।
विलोच्च गुटिकाः क्षत्रा जपसंख्यां तु कारयेत् ॥

सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम ॥ ततः प्रार्थनां सन्ध्याविसर्जनं गोत्र-
प्रवरोच्चारणपूर्वकमभिवादनम् ईश्वरस्तुतिं च प्रातःसन्ध्यावत्कृत्वा
अर्पणम्—अनेन मध्याह्नसन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा भगवान् रुद्रस्वरूपी
परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ ततो द्विराचमनम्—ॐ केशवाय नमः स्वाहा ।
ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा ॥ हस्तप्रक्षालनम्-
ॐ गोविन्दाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥

॥ इति मध्याह्नसन्ध्याप्रयोगः ॥

॥ २३ ॥ अथ सूर्योपस्थानप्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सङ्कल्पः—अथ पूर्वोच्चारितवर्तमाने० एवं
गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-
फलप्राप्त्यर्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं सूर्योपस्थानमहं करिष्ये ॥
कुशपवित्रधारणम्—ॐ पवित्रैस्त्यो० ॥ इति मन्त्रेण दक्षिणवामहस्तयो-
रनामिकयोः कुशपवित्रे धार्ये ॥ सूर्यपूजनम्—ॐ उदुच्यञ्जातवैदसं० ॥
इति मन्त्रेण सूर्यं गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य दक्षिणवामपाण्योर्द्वौ द्वौ
साग्रदर्शौ गन्धाक्षतभेतपुष्पतुलसीदलसहितौ धृत्वा सूर्यमुदीक्षन् ॐ उ-
दुच्यन्तमसु० ॥ ॐ उदुच्यञ्जा० ॥ ॐ चित्रन्देवान्ना० ॥ ॐ तचक्षुर्द्वे० ॥
ॐ तर्सावितु० ॥ ॐ विभ्राड्० इत्यनुवाक् ॥ १७ ॥ ॐ सहस्रशीर्षा०
साद्भ्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥ ॐ यज्ञाग्रतो० इत्यारभ्य सुषारयि-
रर्षा० इत्यन्तम् ॥ ६ ॥ एतज्जपत्वाऽनन्तरं मण्डलब्राह्मणं जपेत् ॥

मण्डलत्राहणम्—अयदेतन्मण्डलंतपति तन्महदुक्थन्ताऽश्च
सऽक्रुचालोकोथयदेतदचिर्दीप्यतेतन्महाप्रतंतानिसामानिसाम्राज्योकोथ-
यऽएपऽएतस्मिन्मण्डलेपुरुषुसोमिस्तानियजूंषिसयजुषांछोकुंडं ॥१॥
सैपात्रयेवद्विद्यातपतितद्वैतदप्यविद्वांषऽआहुस्त्रयीवाऽएपाविद्यातप-
तीतिवाग्यैवतत्प्रयन्तीवदति ॥२॥ सऽएपऽएवमृत्युर्यऽएपऽएतस्मिन्म-
ण्डलेपुरुषोथैतदमृतं यदेतदचिर्दीप्यतेतस्मान्मृत्युर्नम्रियतेमृतेर्ह्यन्तस्तस्मा-
दुनदृश्यतेमृतेर्ह्यन्तः ॥३॥ 'तदेप श्लोको भवति'—अन्तरंमृत्योरमृत-
मिच्यवरंभ्येतन्मृत्योरमृतमृत्यावमृतमाहितमिच्येतस्मिन्दिपुरुषऽएत-
न्मण्डलमप्रतिष्ठितंतपतिमृत्युद्विवस्वन्तंवस्तइत्यसांवाऽआदित्योष्विव-
स्वानेपह्यहोरात्रेद्विवस्तेतमेपवस्तेसर्वतोद्येनेनपरिवृतोमृत्योरात्माद्विवस्व-
तीत्येतस्मिन्दिमण्डलऽएतस्य पुरुषस्यात्मैतदेपश्लोकोभवति ॥ ४ ॥
तयोर्वाऽएतयोरुभयोरेतस्यचार्चिषऽएतस्यचपुरुषस्यैतन्मण्डलंप्रतिष्ठात-
स्मान्महदुक्थम्परस्मैनुशऽसेन्नेदेतांप्रतिष्ठाच्छिनदाऽइत्येताऽहसमतिष्ठां-
च्छिन्तेऽयामहदुक्थंपरस्मैशऽसतितस्मादुक्थशसम्भूयिष्ठंपरिचक्षतेप्रतिष्ठा-
च्छिन्नोहिभवतीत्यधिदवतम् ॥५॥ 'अथाधियज्ञम्'—यदेतन्मण्डलं तप-
त्ययऽसुरुमोथयदेतदचिर्दीप्यतऽइदंतत्पुष्करपर्णमापोद्धेताऽआप ६पु-
ष्करपर्णमथयऽएपऽएतस्मिन्मण्डलेपुरुषोयमेवसयोयऽहिरण्मय ६पुरुष-
स्तदेतदेवतत्रयऽसंस्कृत्येहोपधत्तेतयज्जस्यैवानुसंस्थामृद्धंस्तुक्रामतित-
देतमप्येतिषऽएपतपतितस्मादग्नित्राद्रियेतपरिहन्तुममुनद्येप तदाभवती-
त्युऽएवाधियज्ञम् ॥६॥ 'अथाध्यात्मम्'—यदेतन्मण्डलंतपतिश्चैषरु-
वमऽइदंतच्छुक्रमक्षन्नथयदेतदचिर्दीप्यतेयचैतत्पुष्करपर्णमिदंतत्कृष्णम-
क्षन्नथयऽएपऽएतस्मिन्मण्डलेपुरुषोयश्चैपहिरण्मयऽपुरुषोयमेवसयोयं-

क्षिणेक्षन्पुरुष? ॥ ७ ॥ सुऽएऽएवलोकंपृणतापेपसर्वोऽग्निरभिसम्पद्य-
तेतस्यैतामिथुनंयोयऽसच्चक्षेक्षन्पुरुषोद्धर्मैतदात्मनोयन्मिथुनंयदावैसह-
मिथुनेनाथसर्वोपकृत्स्नऽकृत्स्नतायैतद्यत्तैर्भवतोद्वन्द्वद्द्विमिथुनम्जन-
नंतस्माद्देहेलोकंपृणेऽऽपधीयेतेतस्माद्दाभ्यां द्वाभ्यांचित्तिम्पणयन्ति। ८।
सुऽएऽएवेन्द्रऽ । योयंदक्षिणेक्षन्पुरुषो धेयमिन्द्राणीताभ्यदेवाऽएता-
विधृतिमकृषंज्ञासिकान्तस्माज्जायायाऽअन्तेनाश्रीयाद्द्विप्यंयान्हास्माज्जा-
यतेत्रीर्ष्यवन्तमुहसाजनयतियस्याऽअन्तेनाश्राति ॥ ९ ॥ तदेतद्देवमतः
राजन्यवन्द्यवोमनुष्याणामनुतर्मागोपायन्तितस्मादुतेपुष्टीर्ष्यवाज्जायतेमु-
त्वाकावृयसांसाक्षिप्रश्येनं जनयति ॥१०॥ ताद्दृश्यस्याकाशंमत्यवे-
त्यमिथुनीभवतस्तायदामिथुनस्यान्तद्दच्छतोयंहतत्पुरुषस्तुस्वपितितय-
थाहैवेदुम्मानुपस्यमिथुनस्यान्तद्वत्यासंविदुऽइयभवरयवर्हवैतद्दसांविदुऽ
इवभवतिद्रुयुधोतुन्मिथुनम्परमोषेपुऽभानन्दऽ ॥११॥ तस्मादेवंवित्स्व-
प्यात् ॥ लोभयद्देहेऽएवतंहवतेमिथुनेनमियेणधात्रासुमर्दयतितस्माद्-
दम्बपन्नंपुरेवनयोधयेद्रेतेदेवतेमिथुनीभवन्त्यादिनसानीतितस्माद्देहेत-
त्गुपुपुपुष्टीम्भणामित्रमुसम्भवत्येतेऽएवतद्देवतेरेतदंसिश्चतस्तस्माद्वैतस-
इदुम्भवतियदिदंक्रिश्च ॥१२॥ सुऽएऽएवपुष्टीम्भणामिन्द्राणीताभ्यदेवाऽएता-
न्यन्द्रेपुरुषोयद्वापन्दिक्षिणेक्षन्पुरुषस्तस्यैतस्यहृदयेपादाचतिहतीनी-
तदास्तिष्ठोत्तामनिमन्तदोन्नामत्ययर्हेतन्पुरुषोऽसिचितेतस्माद्देहेतमेनमा-
दुगाणैयम्येति ॥ १३ ॥ एवऽइएवमाणुपुष्टीमाऽसर्वाऽमजाऽमप-
यतिनुर्म्येतेषाणाऽन्वाऽमयदाग्यपिन्यथैनमेतेषाणाऽस्वाऽभुपियन्तित-
ग्मागवाऽयऽदस्वाप्यपोऽर्धेनऽस्यम्ऽइत्याचरानेपुऽसन्पुऽसक्तामाहि-
देवाऽ ॥ १४ ॥ सुऽएनेऽगुमीनरूपपनवेदनमनसासुक्लृत्पयतिनवा

चान्नस्यरसांविजानातिनप्राणेनगन्धंघ्रिजानातिनचक्षुपापश्यतिनश्रोत्रेण-
 शृणोत्येतत्पृच्छतेतदापीताभवन्तिसऽएषऽएकः? सन्प्रजासुबहुधाव्यावि-
 ष्तस्तस्मादेकासतीळोकमृणासर्वमग्निमनुव्विभवत्यथयदेकऽएवतस्मादे-
 का? ॥१५॥ तदाहुऽएकोमृत्युर्बहुवऽइत्येकश्चबहुवश्चेतिह्रूयाद्यदहासा-
 वमुत्रतेनैकोथयदिहप्रजासुबहुधाव्याविष्टस्तेनोबहुव? ॥१६॥ तदाहुऽ
 अन्तिकेमृत्युर्दूराऽइत्यन्तिकेचदूरेचेतिह्रूयाद्यदहायामिहाव्यात्मन्तेना-
 न्तिकेयद्यदसावमुत्रतेनोदूरे ॥ १७ ॥ तदेप? क्लोको भवति । अन्येभात्य-
 पशितोरुसानां संसरे मृतऽइति यदेतन्मण्डलं तपतितदन्नमथयऽएषऽएत
 स्मिन्मण्डले पुरुषुऽसोत्तासऽएतस्मिन्नन्नेपशितोभातीत्यधिदेवतम् ॥१८॥
 'अथाध्यात्मम्'—इदमेवशरीरमन्नमथयोर्युन्दाक्षिणेसन्पुरुषुऽसोत्तासऽ
 एतस्मिन्नन्नेपशितोभाति ॥१९॥ तमेतमग्निरित्यध्वर्षवऽजुपासते ॥ यजु-
 रित्येपहीदऽसर्वयुनक्तिसामेतिछन्दोगाऽएतस्मिन्हीदऽसर्वऽसमानुमुक्थ-
 मितिबह्वाऽएपहीदऽसर्वमुत्थापयतियातुरितियातुविदऽएतेनहीदऽस-
 र्वयतं द्विपमितिसर्पाऽसर्पाऽइतिसर्पाविदऽउर्गितिदेवारयिरितिमनुष्या-
 मायेत्यसुराऽस्वधेतिपितरोदेवजनऽइतिदेवजनविदोरूपमितिगन्धर्वाग-
 न्धऽइत्यप्सरसस्तंयथायथोपासतेतदेवभवतितुद्धेनान्भूत्वावतितस्मादेन-
 मेवंविचसर्वैरैरुपासीतसर्वऽहैतद्धवतिसर्वऽहैनमेतद्धत्वाऽवति ॥२०॥
 सऽएपत्रीष्टकोग्निर्ऋगेका यजुरेका सामैकातथाङ्गाश्चात्रर्षोपदुयातिरु-
 क्मऽएवतस्याऽआयतनमथर्षायजुषापुरुषऽएवतस्याऽआयतनमथर्षाय
 साम्नापुष्करपर्णमेवतस्याऽआयतनमेवंत्रीष्टव? ॥२१॥ तेषाऽएतेऽउभऽ
 एपचरुवमुऽएतच्चपुष्करपर्णमितम्पुरुषमुपीतऽउभेद्वयसामेयजुरपीतऽएव-
 न्देदोऽहः ॥२२॥ सऽएषऽएवमृत्युर्यऽएषऽएतस्मिन्मण्डलेपुरुषोयथा-

यंदक्षिणेक्षन्पुरुषः सऽएषऽएवंविदऽआत्मा भवति सखदेवंविदस्माँल्लोका-
 त्रैत्युथैतुमेवात्मानमभिसम्भवतिसोमृतो भवति मृत्युर्ह्यस्यात्मा भवति । २३
 तेन वाऽइदमग्रेसदासीन्नैवसदासीत् ॥ एतैर्मन्त्रैरुपस्थाय पाण्योर्गृहीतकु-
 शादीन्कुशपवित्रे च पूर्वस्यां दिशि त्यक्त्वा सूर्यं प्रदक्षिणीकृत्य नम-
 स्कृत्य उपविश्य अर्पणम्—अनेन यथाशक्त्या कृतेन सूर्योपस्थानक-
 र्मणा श्रीभगवान् सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
 ॥ इति सूर्योपस्थानप्रयोगः ॥

॥ २४ ॥ अथ ब्रह्मयज्ञप्रयोगः ॥

दर्भासनोपरि प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य कुशपवित्र-
 धारणम्—ॐ पवित्रैस्त्यो० ॥ अनेन मन्त्रेण दक्षिणवामहस्तयोरना-
 पिकयोः कुशपवित्रे घृत्वा सङ्कल्पः—अद्यपूर्वोच्चारित० एवंगुणविशेषेण
 विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं
 ॐ तत्सत् श्रीपरमेश्वरमीत्यर्थं यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञेनाहं यक्ष्ये ॥ अयातो
 ब्रह्मयज्ञं च्याख्यास्यामः ॥ पुनः सङ्कल्पः—इपेत्वादिषु मन्त्रेषु खंघ-

१ कार्यायनपरिशिष्टमूत्रे-विन्प्राथित्यनुवाकपुरुषसूक्तिवसङ्कल्पमण्डलत्राङ्गोरित्युपस्थाय
 प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्योपविशेद्दक्षेणु दर्भाणिः स्नाप्यायं च यथाशक्त्यादावाख्य वेदम् ॥
 दास्येत्तयः-प्रदक्षिणं मनाह्य धासने उपविश्य च । दक्षेणु दर्भाणिः सन्प्राङ्मुखस्तु
 कृताप्रतिः । स्नाप्यायं तु यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञार्थमाचरेत् ॥ वेदशास्त्रोपापार्वादेत्युपलक्षणार्थः-
 वेदशास्त्रोपापानि सेतिहागानि सञ्चितः । जपयज्ञसिद्धयर्थं विद्यां चाप्यतिमही जपेत् ॥
 २४ श्रुतिप्रः प्रोक्षो मद्रायस्तु च स्मृतः । स चार्वाक्याणां गार्हपत्यैः पथाद्वा प्रातराहुतेः ॥

ह्यान्तेषु दशमर्णवसहितेषु याः क्रियास्तत्र विवस्वानृषिः प्रजापतिर्देवता
 सर्वाणि छन्दांसि सर्वाणि सामानि प्रतिलिङ्गोक्ता देवता ब्रह्मयज्ञे
 विनियोगः ॥ न्यासाः—ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः नेत्रयोः ॥
 ॐ विश्वामित्रजमदाग्निभ्यां नमः श्रोत्रयोः ॥ ॐ वसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः
 नासिकयोः ॥ ॐ अत्रये नमः वाचि ॥ ॐ गायत्र्यग्निभ्यां नमः
 शिरसि ॥ ॐ उष्णिक्सवितृभ्यां नमः ग्रीवायाम् ॥ ॐ वृहतीवृहस्पतिभ्यां
 नमः अर्नूके ॥ ॐ वृहद्रथन्तरद्यावापृथिवीभ्यां नमः बाह्वोः ॥ ॐ त्रिष्टु-
 विन्द्राभ्यां नमः नाभौ ॥ ॐ जगत्यादित्याभ्यां नमः श्रोण्योः ॥
 ॐ अतिच्छन्दाप्रजापतिभ्यां नमः लिङ्गे ॥ ॐ यज्ञायज्ञियवैश्वानराभ्यां
 नमः गुदे ॥ ॐ अनुष्टुब्धिश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वोः । ॐ पङ्क्तिमरु-
 द्भ्यो नमः जान्वोः । ॐ द्विपदाविष्णुभ्यां नमः पादयोः ॥ ॐ विच्छ-
 न्दावायुभ्यां नमः नासापुटस्थप्राणेषु ॥ ॐ न्यूनाक्षराछन्दोभ्यो नमः
 सर्वाङ्गैर्षु ॥ ततो वामहस्ततले दर्भजलयवाक्षतचन्दनादीन्क्षिप्त्वा
 तदुपरि दक्षिणहस्तमधोमुखं कृत्वा दक्षिणजानूपरि निधाय वक्ष्यमाण-

१ इषेत्वादिषु मंत्रेषु खंत्रज्ञान्तेषु याः क्रियाः । दशमर्णवसंयुक्ता भूर्भुव स्वरितीरिताः ॥
 तदप्रकारो द्वेषा । आदौ प्रणवमुच्चार्य व्याहृतिः प्रणवान्विता ॥ मंत्रादौ प्रणवः कार्यो मंत्रान्ते
 प्रणवः पुनः ॥ ततो व्याहृतिसंयुक्तस्वन्ते च प्रणवं पठेत् ॥ द्वितीयः प्रकारः—आदौ
 प्रणवमुच्चार्य सप्तव्याहृतयस्ततः । मंत्रादौ प्रणवः कार्यो मंत्रान्ते प्रणवः पुनः ॥
 २ अनुः ष्टुवंशः । ३ एवमेव सर्वाङ्गानि योजयित्वा वेदमयः सम्पद्यते शापानुपदसमर्थो
 भवति ब्राह्मं तेजश्च वर्धते न कुतश्चिद्भयं विन्दत ऋषयो यजुर्मयः साममयस्तेजोमयो
 ब्रह्ममयोऽमृतमयः संभूय ब्रह्मैवाभ्येति तस्मादित्याब्रह्मचारिणे नातशस्त्रिणे नासंबत्सरोपिताय
 नाप्रवन्त्रेऽनुनूयादनेनाधीतेन च द्रायणाब्दफलमवाप्नोत्यनेन च सम्भ्यग्जातेन ब्राह्मणः सायुज्यं
 सत्येकतामाप्नोत्याप्नोति ॥ सर्वानुक्रम० अ० ४११३॥

मन्त्रान्पठेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो रमन्ते ॥ ॐ इषे चोर्जे रवा व्यायव-
 स्थ देवो वः सविता पार्ष्णीयतु श्रेष्ठेनमायु कर्मणः आत्त्याय-
 द्भवमग्न्याऽ इन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयश्मा मा वंस्तेनऽ
 ईशतु माघशऽसो दधुवाऽअस्मिन्नगोपतौ स्यात् बृहन्वीर्यवर्जमानस्य
 पृथ्वराहि ॥ १ ॥ ॐ वसोऽ पवित्रम् ॥ २ ॥ ॐ हिरण्यमयेन पात्रेण
 सच्यस्यापिहितम्मुखम् ॥ शोसावादिच्ये पुरुषऽ सुसावहम् ॥ ३ ॥
 ॐ इक्ष्मन्सह ॥ ४ ॥ ॐ तर्तमुपैप्यनन्तरेणाहवनीयं च गार्हपत्यश्चमा-
 ह्तिष्टन्नपऽउपस्पृशति तद्यदुपस्पृशत्यमेध्यो वैपुरुषोषदुनृतंबदतिते-
 नपूतिरन्तरतोमेध्यावाऽआपोमेध्योभूत्वाग्रतमुपायानीतिपवित्रंवाऽआपः
 पवित्रपूतोग्रतमुपायानीतितस्माद्वाऽअपऽउपस्पृशति ॥ १ ॥ सोमिमेवा-
 भीक्षमाणोत्रतमुपैति ॥ ॐ प्रींश्रीपुत्राद्वासुरिवासिनः प्रींश्रीपुत्रऽआसुराय-
 णादासुरायणऽआसुरेरासुरियांश्वल्क्याद्यांश्वल्क्यऽउद्वाल्कादुद्वाल्को-
 रुणादुरुणऽउपवेशेरुपवेशिः कुश्रेः कुश्रिर्वाजश्रवसोवाजश्रवा जिह्वावतो
 वाध्योगाज्जिह्वारान्वाध्योगोसिताह्वार्षगणाद्दुसितोवार्षगणोहुरिताः क्रश्य-
 पाद्दुरितः क्रश्यपः शिल्पात्क्रश्यपाच्छिल्पः क्रश्यपः क्रश्यपास्त्रैध्रुवेः क्रश्य-
 पेनैः त्रिविर्वाचे वागम्भिण्याऽ अम्भिण्यादिच्यादादिच्यानीमानिशुक्रानिय-
 जूश्विवाजसनेयेन यांश्वल्क्येनारुषायन्ते । ॐ अग्निषींकेपुरोहितयज्ञस्य-
 देवमृत्वित्रम् । होतारंरत्नधातमम् ॥ ॐ अग्नेऽआयाहि वीतयेष्टेणानोहव्य-

१ शतयजमानो प्रथमकाण्डस्य प्रथमाध्यायस्य प्रथममन्त्रस्य प्रथमा कण्डिका ॥

२ इत्ययं वाग् १ अ० १ मा० कण्डिका २ आदिभाग ॥ ३ शतयज० वा० १४

अ० ७ प्र० ५ व० ११ ॥ ४ अग्नेरस्य दिवो मन्त्रः ॥ ५ सप्तदेवतादिदो मन्त्रः ॥

दातये ॥ ^{१ २ २ २} निहोतासत्सिर्वैर्हिपि ॥ ^{१ २} ॐ शंभो देवीरभिष्टयुऽआपो भवन्तु-
 पीतये ॥ शंभोरभिस्तवन्तुनः ॥ ॐ अथानुवाकान्वक्ष्यामि ॥ ॐ मण्डलं
 दक्षिणमक्षिहृदयम् ॥ अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि ॥ अथातोऽधिकारः फलयु-
 क्तानि कर्माणि ॥ अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्म ॥ वृद्धिरादैच् ।
 समान्नायः समान्नातः । मयरसतजर्भनलगसमितम् । पञ्चसंवत्सरमयं
 शुगाध्यक्षम् । गौः गर्भा । अथातो धर्मजिज्ञासां । अथातो ब्रह्मजिज्ञासा ।
 योगीश्वरं याज्ञवल्क्यम् । नारायणं नैमिस्कृत्य । इति विद्यातपोयोनिर-
 योनिर्विष्णुरीडितः । वाग्यज्ञेनार्चितो देवः प्रीयतां मे जनार्दनः ॥ एवं
 ब्रह्मयज्ञं विधाय पाण्योर्गृहीतकुशादीन् उत्तरस्यां दिशि त्यजेत् ॥ अर्पण-
 म्—अनेन ब्रह्मयज्ञारूपेण कर्मणा श्रीभगवान्परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥
 ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपोयज्ञक्रियादिषु ।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ॐ विष्णवे नमो विष्णवे
 नमो विष्णवे नमः ॥ इति ब्रह्मयज्ञप्रयोगः ॥

१ अथर्वणवेदस्यादिमो मंत्रः ॥ २ अनुवाकसूत्रस्य प्रथमश्लोकस्यादिभागः ॥

३ सर्वानुक्रमसूत्रस्य प्रथमकण्डिकाया आदिभागः ॥ ४ शिक्षायाः प्रथमश्लोकस्यादिभागः ॥

५ कात्यायनश्रौतसूत्रस्य प्रथमाध्यायस्य प्रथमकण्डिकायाः आदिमे द्वे सूत्रे ॥ ६ धारस्करगृ-

ह्यसूत्रस्य प्रथमकाण्डस्य प्रथमकण्डिकायाः प्रथमसूत्रम् ॥ ७ अष्टाध्याय्याः प्रथमं सूत्रम् ॥

८ निरुक्तस्य आदिशब्दाः ॥ ९ छन्दसः प्रथमश्लोकस्यादिभागः ॥ १० ज्योतिषस्य

प्रथमश्लोकपूर्वार्धम् ॥ ११ निघण्टोरारम्भशब्दाः ॥ १२ पूर्वमीमांसायाः प्रथमाध्यायस्य

प्रथमसूत्रम् ॥ १३ उत्तरमीमांसायाः प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादस्य प्रथमसूत्रम् ॥ १४ याज्ञव-

ल्क्यस्मृतेः प्रथमाध्यायस्य प्रथमश्लोकस्य आदिभागः ॥ १५ महाभारतस्य प्रथमश्लोकस्य

जागृतोऽअस्वप्नजौसत्रसदौचदेवौ ॥५५॥ ॐसनकस्तृप्यतु २ । ॐस-
 नन्दनस्तृप्यतु २ । ॐसनातनस्तृप्यतु २ । ॐकपिलस्तृप्यतु २ । ॐआ-
 सुरिस्तृप्यतु २ । ॐधोदुस्तृप्यतु २ । ॐपञ्चशिखस्तृप्यतु २ ॥ पितृर्ष-
 णम्-तानेव दर्भान्दक्षिणाग्रमूलान्द्विगुणीकृत्य तेषां मध्यं वामहस्त-
 स्याद्भुष्टतर्जन्यन्तरे धृत्वा मुलाग्राणि दक्षिणहस्तस्याद्भुष्टतर्जनीमध्यम-
 देशे कृत्वाऽपसव्येन दक्षिणामुखं कृष्णतिलमिश्रितजलेन पितृतीर्थे-
 न श्रीस्त्रीनञ्जलीन्दद्यात् । ॐकव्यवाडनलस्तृप्यताम् ३ । ॐसोमस्तृ-
 प्यताम् ३ । ॐयमस्तृप्यताम् ३ । ॐअर्यमा तृप्यताम् ३ । ॐअग्नि-
 प्यात्ता पितरस्तृप्यन्ताम् ३ । ॐसोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ । ॐव-
 र्हिपदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ । यमतर्पणम्—ॐयमाय नमः ३ । ॐधर्म-
 राजाय नमः ३ । ॐमृत्यवे नमः ३ । ॐअन्तकाय नमः ३ । ॐवैव-
 स्वताय नमः ३ । ॐकालाय नमः ३ । ॐसर्वभूतक्षयाय नमः ३ ।
 ॐभौदुम्बराय नमः ३ । ॐधनाय नमः ३ । ॐनीलाय नमः ३ ।
 ॐपरमेष्ठिने नमः ३ । ॐवृकोदराय नमः ३ । ॐचित्राय नमः ३ ।
 ॐचित्रगुप्ताय नमः ३ । अथ मनुष्यपितृतर्पणम् ॥ आवाहनम्-उश-
 न्तस्त्वेत्यस्य प्रजापत्यश्विसरस्वत्य ऋषयः गायत्री छन्दः पितरो
 देवता आवाहने विनियोगः ॥ ॐउशन्तस्त्वानिर्धोमह्व्युशन्तुःसमिधी-
 महि ॥ उशर्शुशतऽआवंहपितृदृहृविपेऽअर्त्तवे ॥ ५६ ॥ तिलान्गृहीत्वा
 अमुकगोत्रान्ममापितृपितामहमपितामहान्मातृपितामहीप्रपितामहीः अमुक-
 गोत्रान्मातामहममातामहवृद्धममातामहान्मातामहीप्रमातामहीवृद्धममाता-
 महीः तथा च पत्न्याद्याप्तान्तान्समस्तपितृन्तर्पणे आवाहयिष्ये ॥ अमुक-

गोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् । इदं जलं तस्मै स्वधा नमः । इदं जलं तस्मै स्वधा नमः । इदं जलं तस्मै स्वधा नमः । अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् । इदं जलं ० ३ । अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् । इदं जलं तस्मै ० ३ ॥ अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकदा वसुरुपा तृप्यताम् । इदं जलं तस्यै ० ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकदा रुद्ररूपा तृप्यताम् । इदं ० ३ । अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकदा आदित्यरूपा तृप्यताम् । इदं ० ३ ॥ अमुकगोत्रा अस्मत्साँपत्नमाता अमुकदा वसुरुपा तृप्यताम् । इदं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ प्रसेचनम् ॥ उदीरतामिति क्रमेण नवर्चः उपांशु आम्रायस्वरेण पठन् अञ्जलिकृतं जलं पितृतीर्थेन प्रसिंचेत्-उदीरतामङ्गिरसश्रायन्तुनइति त्रयाणां शङ्ख-
 ऋषिः त्रिष्टुच्छन्दः पितरो देवता ऊर्जंभवहन्तीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः पितृभ्योषेचेइतिद्वयोः प्रजापत्यश्विसरस्वस्य ऋषयः त्रिष्टुप् छन्दः त्रयाणां पितरो देवताः मधुघाताइतिवृचस्य गौतम ऋषिः गायत्री छन्दः विश्वेदेवा देवताः सर्वेषां प्रसेके विनियोगः—ॐ उदीरतामवर्ऽउ-
 र्परऽसुऽ उन्नमद्ध्यमा? पितरंऽसोम्यासंऽ ॥ असुँऽरुऽईयुरं वुकाऽऋ-
 तज्ञास्तेनोवन्तुपितरोइवेषु ॥ ३२ ॥ अङ्गिरसो नऽ पितरो नवग्वाऽअथ-
 र्वाणो भृगवऽ सुोम्यासंऽ ॥ तेषां द्वयऽसुमतायज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे

१ ताताम्वात्प्रितयं सपत्नजननी मातामहादिप्रयं सखि स्त्रीतनयादितातजननीस्वध्रातरः स-
 क्षियः ॥ ताताम्वात्प्रमगिन्यपत्यधवयुक् जायापिता सद्गुरुः शिष्याप्ताः पितरो महालयविधौ
 तीर्थे तथा तर्पणे ॥ २ ॥ अत्र क्षत्रियाणां वर्मा वैश्यानां गुप्तेद्रत्युहः कार्यः ॥ ३ मातृमुह्यास्तु
 यास्तिष्ठस्ताषा श्रीञ्जीञ्जलाञ्जलीन् । दद्यान्मातृत्रयीभिन्नस्त्रीभ्य एकाञ्जलिं तथा ।

स्याम ॥ ५० ॥ आर्यन्तुनहं पितरं+ सोम्यासोभिप्रञ्चात्ता? प-
 थिभिर्देवयानैहं ॥ अस्मिन्मद्यज्ञे स्वधया मद्दन्तोधिर्ब्रुवन्तु त्वेवत्व-
 स्मान् ॥ ५१ ॥ ऊर्ज्वहन्तीरमृतङ्घृतम्पर्य+ कीलालम्परिस्रुतम् ॥
 स्वधास्त्व्यं तृष्ययत मे पितन् ॥ ५२ ॥ पितृभ्यः+ स्वधायिभ्यः+ स्वधा
 नमः+ पितामहेभ्यः+ स्वधायिभ्यः+ स्वधा नमः+ अपितामहेभ्यः+
 स्वधायिभ्यः+ स्वधा नमः+ ॥ अक्षरिपितरोर्भामदन्तपितरोतीतृपन्तपितरं
 पितरंशुन्धंद्धम् ॥ ५३ ॥ ये चेह पितरो वेचनेहृयाश्चविद्ययाऽउचन-
 ष्विद्य ॥ त्वं वैत्थयतितेजातवेदं स्वधाभिर्ध्वंश्च सुकृतस्तृपस्व
 ॥ ५४ ॥ मधुव्वाताऽऽकृतायुतेमधुंक्षरन्ति सिन्धवहं ॥ माङ्गीर्नहंसुन्वो-
 र्पथीहं ॥ ५५ ॥ मधु नक्त्तमुतोपसो मधुमुस्पाथिर्बुद्धिरजः ॥ मधु
 द्यौरस्तुनहंपिता ॥ ५६ ॥ मधुमात्रो वतुस्पातिर्मधुमाँरऽअस्तु सूर्व्यः+
 माद्वीर्गावो भवन्तुनहं ॥ ५७ ॥ अतृप्यध्वं तृप्यध्वं तृप्यध्वम् ॥ इति
 भसेचनम् ॥ जपः—नमो व इति मंत्रस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः
 यजुश्छन्दः पितरो देवता जपे विनियोगः ॥ नमोवहंपितरोरसाय
 नमोवहंपितरुंशोपायनमोवहंपितरोजीवायनमोवहंपितरंस्वधायैनमो
 वहंपितरो घोरायनमोवहंपितरोमद्यवेनमोवहंपितरुंशोपितरोनमोवोगृहा-
 र्त्न+पितरोदत्तसतोर्वः+पितरोदेष्मैतद्द्वः+पितरोवासाऽआर्धत्ता ॥ ५८ ॥ अमु-
 कगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै
 स्वधा नमः ३ । अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृ-
 प्यतामिदं जलं तस्मै० ३ । अमुकगोत्रः अस्मद्बृद्धप्रमातामहः अमुक-
 शर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै० ३ ॥ अमुकगोत्रा अस्मन्मा-
 तामही अमुकदा वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः३ । अमुक-

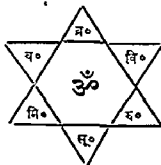
गोत्रा अस्मत्प्रमातामही अमुकदा रुद्ररूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै
 स्वधा० ३ । अमुकगोत्रा अस्मद्बृद्धप्रमातामही अमुकदा आदित्यरूपा
 तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ॥ अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी अमु-
 कदा वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा० ३ ॥ अमुकगोत्रः अस्म-
 त्सुतः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा० ३ । अमु-
 कगोत्रा अस्मत्कन्या अमुकदा वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा
 नमः ३ । अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं
 जलं तस्मै स्वधा० ३ । अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः अमुकशर्मा वसुरूप-
 स्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा० ३ । अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता अमुक-
 शर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । अमुकगोत्रा
 अस्मत्पितृभगिनी अमुकदा वसुरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा
 नमः ३ । अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी अमुकदा वसुरूपा तृप्यतामिदं
 जलं तस्यै स्वधा० ३ । अमुकगोत्रा अस्मद्भगिनी अमुकदा वसुरूपा
 तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा० ३ । अमुकगोत्रः अस्मच्छशुरः अमुक-
 शर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । अमुकगोत्रः अस्म-
 द्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा० ३ । अमुक-
 गोत्रः अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा
 नमः ३ । अमुकगोत्रः अस्मन्मित्रम् अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं
 तस्मै स्वधा० ३ । अमुकगोत्रः अस्मदाप्तः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्य-
 तामिदं जलं तस्मै स्वधा० ३ । अञ्जलिदानम्—येऽवान्धवा वान्धवा

१ यदि तस्य भार्या सुतो वा मृतस्ताई सपत्नीकः ससत इयूदः कार्यः । २ यदि
 तस्या भर्ता सुतो वा मृतस्ताई सभर्तृका ससता इत्यूदः कार्यः ॥

ये येऽन्यजन्मनि वान्धवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ।
 आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमाता-
 महादयः ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लो-
 कादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ इत्यञ्जलित्रयं दद्यात् । वस्त्रानिष्पीडनम्-
 ये के चास्पत्कृले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । ते गृह्णन्तु मया
 दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ इति मन्त्रेण स्नानवस्त्रं चतुर्गुणं कृत्वा
 भूमौ वामभागे निष्पीडयेत् ॥ सव्येन द्विराचम्य पुनरपसव्यम् ॥
 दर्भत्यागः—येषां पिता न च भ्राता न पुत्रो नान्यगोत्रिणः । ते सर्वे
 तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः कुशैः सदा ॥ इति मन्त्रेण दर्भानुत्तरतः परि-
 त्यजेत् ॥ सव्येनाचम्य ॥ जले ब्रह्मादीनां पूजनम्—पात्रे शुद्धोदकं
 प्रपूर्य अनामिकया दर्भेण वा पङ्कजं कृत्वा गन्धपुष्पैरर्चयेत् । ब्रह्म-
 जज्ञानमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः ब्रह्मा देवता ब्रह्मपूजने

१ वस्त्रनिष्पीडितं तोयं स्नातस्योच्छिष्टमाग्निः । भागधेयं श्रुतिः प्राह तस्मान्निष्पीडयेत्-
 स्पले । शकदेताद्वैरीधिव विद्वेषादि न तर्पयेत् । तावत् पीडयेद्वस्त्रं येन स्नातो भवेत्तरः ॥ इत्थं
 चतुर्गुणीकृत्य पीडयेच्च जलाद्वहिः । वामप्रकोष्ठे निक्षिप्य द्विराचम्य अर्चिर्भवेत् ॥ एकादश्यां
 पंचदश्यां संक्रमे थादवाक्षरे । वस्त्रनिष्पीडने तूर्णो न मन्त्रेण कदाचन ॥

० पद्मनाभकृतिर्यथा—



विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षिर्ब्रह्मज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विहीतः सुरुचो ह्येनऽ
 आवहं ॥ सवृष्ट्याऽऽपमाऽभस्यष्टिष्ठा? सुतश्च योनिमसंतश्च विव-
 ॥३॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पूजयामि ॥ इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः
 गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता विष्णुपूजने विनियोगः ॥ ॐ इदं विष्णु-
 विचक्रमेत्रेधानिर्दधेपदम् ॥ समूढमस्यपाँसुरे स्वाहा ॥५॥ विष्णवे
 नमः विष्णुं पूजयामि ॥ नमस्तइतिपरमेष्ठी ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो
 देवता रुद्रपूजने विनियोगः ॥ ॐ नमस्तेरुद्रद्रमन्त्रयवऽउतोतऽइष्वेनम-
 वाहुब्भ्यामुततेनमः ॥६॥ रुद्राय नमः रुद्रं पूजयामि ॥ तत्सवितुरिति
 विश्वामित्र ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्यपूजने विनियोगः ॥ ॐ-
 तत्सवितुर्वरेण्यमभ्यर्गोदेवस्य धीमहि ॥ धियो यो नःप्रचोदयात् ॥३॥
 सवित्रे नमः सवितारं पूजयामि ॥ मित्रस्येति विश्वामित्र ऋषिः गायत्री
 छन्दः मित्रो देवता मित्रार्चने विनियोगः ॥ ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोर्वो
 देवस्य सानसि ॥ ह्युम्नश्चित्रश्रवस्तमम् ॥६॥ मित्राय नमः मित्रं
 पूजयामि । इमम् इत्यस्य शुनःशेष ऋषिः गायत्री छन्दः वरुणो देवता
 वरुणपूजने विनियोगः ॥ ॐ इमम्मेवरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय ॥
 त्वामवस्युरार्चके ॥७॥ वरुणाय नमः वरुणं पूजयामि ॥ सूर्योपस्थानम्-
 अदृश्रमस्य केतव इति प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता
 हःसः शुचिपादिति वामदेव ऋषिः अतिजगती छन्दः सूर्यो देवता
 सूर्योपस्थाने विनियोगः । उत्थाय ऊर्द्धवाहुः सन्धर्यमुपतिष्ठेत्-ॐ अदृ-
 श्रमस्य केतवोद्विरश्मयो जनाँऽऽनु ॥ भ्राजन्तोऽअग्रयो यथा ॥
 उपयाम गृहीतोसिमूर्ध्याय स्वाब्भ्राजायैपते योनिं सूर्ध्यायत्वा

ब्रह्माजाय ॥ सूर्य्यैः ब्रह्मजिह्वुः ब्रह्मजिह्वुः स्तवन्द्रेष्वसि ब्रह्मजिह्वुः हम्मनु-
 ष्येषु भूयासम् ॥ १० ॥ ह॒र्षस॑र्गुचिपद्दसुंरन्तरिक्षुसद्धोता वेद्विपदति-
 थिर्दुरीणसत् ॥ नृपद्द्वरसदंतसद्द्वयोमसदुब्जागोजाऽऽकृतजाऽऽद्वि-
 जाऽऽकृतम्बूहत् ॥ ११ ॥ सूर्यप्रदाक्षिणा—स्वयम्भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः
 यजुश्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रदाक्षिणीकरणे विनियोगः ॥ ॐ स्वयम्भू-
 रसिंश्चेद्द्वौ रश्मिर्व्योदाऽअसिंश्चेत्तौ मे देहि ॥ सूर्य्यस्यावृत्तमन्वा-
 वृत्ते ॥ १२ ॥ इत्यनेन प्रदाक्षिणामावृत्य दिशां देवतानां च नमस्काराः
 ॐ प्राच्यै दिशे नमः । ॐ इन्द्राय नमः ॥ ॐ आग्नेयै दिशे नमः । ॐ अग्नये
 नमः ॥ ॐ दक्षिणायै दिशे नमः । ॐ यमाय नमः ॥ ॐ नैर्ऋत्यै दिशे नमः ।
 ॐ निऋतये नमः ॥ ॐ प्रतीच्यै दिशे नमः । ॐ वरुणाय नमः ॥ ॐ
 वायव्यै दिशे नमः । ॐ वायवे नमः ॥ ॐ उदीच्यै दिशे नमः । ॐ सो-
 माय नमः ॥ ॐ ईशान्यै दिशे नमः । ॐ ईशानाय नमः ॥ ॐ ऊर्ध्वायै
 दिशे नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ अवाच्यै दिशे नमः । ॐ अनन्ताय
 नमः ॥ तत उपविश्य नमस्कारपूर्वकमञ्जलिदानम्—ॐ ब्रह्मणे नमः ।
 ॐ अग्नये नमः । ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ॐ ओषधीभ्यो नमः । ॐ वाचे नमः ।
 ॐ वाचस्पतये नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ महद्भ्यो नमः । ॐ अद्भ्यो
 नमः ॥ ॐ अपाम्पतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । इति देवतीर्थेनाञ्जलि-
 दानपूर्वकं नमस्कारः ॥ मुखविमार्जनम्—संवर्चसेतिपरमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्
 छन्दः त्र्यष्टा देवता मुखविमार्जने विनियोगः ॥ ॐ संवर्चसापयसा सन्तनु-
 भिरगन्महिमर्नसामऽृषिर्वेन ॥ त्र्यष्टां सुदंष्ट्रां षुर्दधानुसायोनुमाप्सुतन्त्रो

१ रेचिद्व कएउ ननरहागानं कुंनि परं च “योगिदाशान्यवनादुदहदानम्
 दिन्” इतिदिहिरात्तत्र मन्नापुदहदानगदिने ननस्तातर्गं कौष्यम् ॥

षट्खिलिष्टम् ॥ ११ ॥ इति मन्त्रेण शुद्धोदकेन मुखं विमृजेत् ॥ विसर्जनम्-
 देवागातुविदइति मनस्पतिर्ऋषिः विराट् छन्दः वातो देवता कर्माङ्ग-
 देवताविसर्जने विनियोगः ॥ ॐ देवागातुविदो ग्रातुं त्विच्वागातुमित ॥
 मनसस्पतऽइमन्दैवयज्ञे स्वाहा वार्तेधात् ॥ ११ ॥ इति विमृज्य
 अर्पणम्-अनेन यथाशक्तिदेवऋषिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भग-
 वान्मम समस्तपितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम । ॐ तत्स-
 ह्यह्यर्पणमस्तु । श्रीगयागदाधरस्तृप्यतु । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे
 नमः । ॐ विष्णवे नमः । इति तर्पणप्रयोगः ॥

॥ २६ ॥ अथ वैश्वदेवप्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य । कुशपवित्रधारणम्-ॐ पवित्रेस्थो ॥ ११ ॥
 सङ्कल्पः-अथ पूर्वोच्चरितं ० एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यति-
 थौ मम गृहे पञ्चमूनाजनितसकलदोषपरिहारपूर्वकं नित्यकर्मानुष्ठानसि-
 द्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चतुर्भिर्यज्ञैर्वैश्वदेवं करिष्ये । अन्वाधानम्-
 तत्र ब्रह्माणं प्रजापतिं गृह्णाः कश्यपम् अनुमतिं विश्वान्देवान् अग्निं
 स्विष्टकृतं पर्जन्यम् अपः पृथिवीं धातारं विधातारं वायुं चतुर्वारं
 प्रार्चीं दिशं दक्षिणां दिशं प्रतीचीं दिशं उदीचीं दिशं ब्रह्माणम् अन्तरि-
 क्षं सूर्यं विश्वान्देवान् विश्वानि भूतानि उपसं भूतानां च पतिं पितृन्-
 क्षमाणं सनकादिमनुष्यान् वैश्वदेवाख्ये कर्मण्यहं यक्ष्ये ॥ यथाविहिते
 ताम्रमये कुण्डे स्थंडिले वा पञ्चभूसंस्काराः-दर्भैः परिसमुद्य ३ ।
 गोमयोदकेन उपालिप्य ३ । वज्रेणोल्लिख्य ३ । अनामिकाङ्गुष्ठेनो-

दृश्य ३। उदकेनाभ्युक्ष्य ३॥ अग्न्यानयनम्—ॐ अह्वग्निरूपसामग्र-
 मकल्प्यद्वरहानिप्रथमोज्ञातवेदाहं ॥ अनुमूर्च्यस्यपुरुत्राचरश्मीननुद-
 द्यावापृथिवीऽआतंतन्य ॥ ११ ॥ इत्यनेन पारुशालाया लौकिकमग्निमादाय
 ॥ स्थापनम्—ॐ पुष्टोदिवि पुष्टोऽअग्नि? पृथिव्यां पुष्टोदिविऽ-
 ओर्षधाराविवेश ॥ द्वैश्वानर? सहसापुष्टोऽअग्नि? सन्नोदिवीसरिप-
 र्पातुनक्तम् ॥ १२ ॥ मज्जालनम्—ॐ तरसंवितुर्व्व ॥ १३ ॥ अंता-
 ऽसंवितुर्व्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणुते सुमतिं द्विश्वजन्त्रयाम् ॥ धाम-
 स्यरुण्योऽअदुहस्वपीनाऽसुहस्रधारुम्पर्यसा महीक्षाम् ॥ १४ ॥ ॐ
 द्विश्वानि देव सवितर्षुरितानि परां सुव ॥ यद्दृष्टन्तस्त्रऽआमुव ॥ १५ ॥
 एतेपैत्रैः त्रेणुनालिकयाऽग्निं प्रज्वाल्य ॥ ध्यानम्—ॐ चत्वारिंशद्भाग्योऽ
 अस्य पादा द्वेनीपे सप्तहस्तासोऽ अस्य ॥ त्रिधा वृद्धो घृषुभो गौर-
 वीति मृशे देवो मर्त्योऽ आविवेश ॥ १६ ॥ आवाहनम्—ॐ एषोहदेव?
 अदिगोनुसर्गाहं पृष्वोहजात? सऽउगर्भेऽअन्त? ॥ सऽएवजात?
 मज्जनिप्यमाणहं प्रत्यहजनांस्तिष्ठानि सूर्वतोऽसुखहं ॥ १७ ॥ पावक-
 नामानमामि आवाश्यामि । पुजनम्—ॐ अग्निर्मूर्धादिव? कुरुस्वनि-
 पृथिव्याऽअयम् ॥ अवाऽरेताऽसिजिञ्चति ॥ १८ ॥ पावकनामाप्रये-
 नमः गन्धासनपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्कारः—मुखं यः सर्वदेवानां
 इत्यस्यस्यसुक् तथा । पितृणां च नमस्तस्मै विष्णोव पावकात्मने ॥
 मार्पना-भ्रंशे जाद्विन्यगोत्र धरणीमातः वरुणपितः उत्तानदुभे
 ष्यत्रनिह्य मेधयत माट्मुय मम सम्मुखो भर ॥ इति सम्प्रार्थ्य
 मद्गतिगपयेः पर्युषणम् इतरपाटणिः ॥ ततः सिद्धपाशादभ्यमुद्वन्य घृते-
 नाभिवार्यं दक्षिणतानुनिपातनं कृत्वा नामहस्तेन हृदयं स्पृशन् अह्व-

ल्यग्रस्थदेवतीर्थेन प्रज्वलितेऽग्नौ वदरीफलप्रमाणा आहुतीर्बुध्यात्—
 ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये
 न मम । ॐ गृह्णाभ्यः स्वाहा इदं गृह्णाभ्यो न मम । ॐ कश्यपाय स्वाहा
 इदं कश्यपाय नमम । ॐ अनुमतये स्वाहा इदम् अनुमतये न मम ।
 ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम । ॐ अग्नये
 स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम । इति देवयज्ञः प्रथमः ॥१॥
 मणिकसमीपे प्राक्संस्थं बलित्रयं दद्यात्—१ ॐ पर्जन्याय नमः इदं
 पर्जन्याय न मम । २ ॐ अद्भ्यो नमः इदम् अद्भ्यो न मम । ३ ॐ
 पृथिव्यै नमः इदं पृथिव्यै न मम । ततोऽग्नेः पश्चाज्जलेन वितस्तिमानं
 मंडलं कृत्वा सत्र गृहद्वारशाखे प्रकल्प्य बलिहरणं कुर्यात् । द्वारशाखयो-
 र्दक्षिणोत्तरयोर्बलिद्वयं १ ॐ धात्रे नमः इदं धात्रे न मम ।
 २ ॐ विधात्रे नमः इदं विधात्रे न मम ॥ (प्राचीमारभ्य प्रतिदिशं

१ बलिहरणमण्डलम्

पू०

२ वि०	७ प्रा०	१ घा०
	३ वा०	
उ० १०३०६वा०	१७भू० १५वि० १३सू०	१२अ० १८पितृ० ४वा० ८द०
	१६उ० १४वि० दे०	११ प्र०
२० हन्तसे०	५ या०	
१९ यश्मै०	९ प्र०	

द०

मणिक०
 ३ पृथि०
 २ अद्भ्यो०
 १ पर्ज०

प०

प्रदक्षिणं वलिचतुष्टयम्—) ३ अँवायवे नमः इदं वायवे न मम । ४
 अँवायवे नमः इदं वायवे न मम । ५ अँवायवे नमः इदं वायवे
 न मम । ६ अँवायवे नमः इदं वायवे न मम ॥ (ततः पूर्वतः क्रमात्)
 ७ अँप्राच्यै दिशे नमः इदं प्राच्यै दिशे न मम । ८ अँदक्षि-
 णायै दिशे नमः इदं दक्षिणायै दिशे न मम । ९ अँप्रतीच्यै दिशे
 नमः इदं प्रतीच्यै दिशे न मम । १० अँउदीच्यै दिशे नमः इदम्
 उदीच्यै दिशे न मम ॥ (तेषां मध्ये प्राक्संस्थम्) ११ अँब्रह्मणे नमः
 इदं ब्रह्मणे न मम । १२ अँअन्तरिक्षाय नमः इदमन्तरिक्षाय न मम । १३
 अँसूर्याय नमः इदं सूर्याय न मम ॥ (तेषामुत्तरे) १४ अँविश्वेभ्यो
 देवेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम । १५ अँविश्वेभ्यो भूतेभ्यो
 नमः इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम ॥ (अनयोरुत्तरे—) १६ अँउपसे
 नमः इदमुपसे न मम । १७ अँभूतानां पतये नमः इदं भूतानां पतये
 न मम । इति भूतयज्ञो द्वितीयः ॥२॥ ततो देवानां नैवेद्यार्पणम्—देवस-
 न्मुखपवित्रस्थले चतुरस्रमण्डलोपरि नैवेद्यपात्रं सोपस्करं निधाय “अँनमो
 भगवते वामुदेवाय” इति मन्त्रेण पात्रसमन्ताज्जलधारया पाद्विवारणं
 कुर्यात् ॥ तद्वह्नं गायत्रीमन्त्रेण तुलसीदलेन सम्मोक्ष्य नैवेद्योपरि
 तत्तुलसीदलं निधाय धेनुमुद्रां प्रदश्य सव्यदृस्तस्याङ्गुलीः समानाः
 कृत्वा नैवेद्यमर्पयेत्—अँप्राणाय स्वाहा । अँअपानाय स्वाहा । अँच्या-
 नाय स्वाहा । अँसमानाय स्वाहा । अँउदानाय स्वाहा । इति समर्प्य
 नैवेद्यमध्ये पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि । दृस्तप्रहा-
 लनं समर्पयामि । मुखप्रशालनं समर्पयामि । फरोदूर्तनार्थं चंदनं

समर्पयामि । मुखवासाथे ताम्बूलं समर्पयामि । एवं देवतानैवेद्यं कृत्वा ॥
 अथ पितृयज्ञस्तृतीयः । तत्र प्राचीनावीती भूत्वा दक्षिणाभिमुखः सव्यं
 जान्वाच्य ब्रह्मादिवलित्रयस्य दक्षिणप्रदेशे पितृतीर्थेन १८ ॐपितृभ्यः
 स्वधा नमः इदं पितृभ्यो न मम । इति पितृयज्ञस्तृतीयः ॥३॥ सव्यम्—
 ततस्तत्पात्रं प्रक्षाल्य तज्जलं ब्रह्मादिवलितो वायव्यां दिशि उत्सृजेत्—
 १९ ॐयक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः इदं यक्ष्मणे न मम । पूर्वमकृतश्चेदत्र
 ब्रह्मयज्ञः कार्यः । अथ मनुष्ययज्ञश्चतुर्थः ॥ अतिथिप्राप्तौ भोजनपर्या-
 समन्नं षोडशग्रासमितं वा अतिथेरभावे ग्रासचतुष्टयं ग्रासमितं वा निवी-
 त्युदङ्मुखः प्राजापत्येन तीर्थेन २० ॐहन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो
 नमः इदं सनकादिमनुष्येभ्यो न मम । इति मनुष्ययज्ञश्चतुर्थः । ४। गोग्रा-
 सादिसमर्पणम्—सौरभेद्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृ-
 ह्णन्त्विमं ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ इदं गोभ्यो न मम ॥ ततो गृहा-
 द्दहिर्भूमौ अप आसिच्य—ऐंद्रवारुणवायव्याः सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा ।
 वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयाऽर्पितम् ॥ इदं वायसेभ्यो न
 मम ॥ द्वौ भवानौ इयामशवलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्या-
 मि स्यातामेतावद्दिसकौ । इति श्वभ्यां न मम ॥ पिपीलिकाः कीटपत-
 ङ्गकाया बुभुक्षिताः कर्मनियोगवद्धाः । तृप्त्यर्थमन्नं हि मया प्रदत्तं

१ पद्यतो ब्रह्मयज्ञो निरयतर्पणात्पूर्वं न कृतश्चेद्वैश्वदेवसङ्कल्पे पञ्चमहायज्ञैरहं यक्ष्ये इत्युहं
 कृत्वाऽत्र कार्यः । हन्तकारात्पूर्वं ब्रह्मयज्ञस्यावसरः । तत्र विकल्पः—प्रातर्होमानंतरं वा तर्पणात्पूर्वं
 वा वैश्वदेवावसाने वा ब्रह्मयज्ञ इति हरिद्वरः । कार्यायनः—यश्च धृतिजपः प्रोक्तो ब्रह्मयज्ञस्तु स
 स्मृतः ॥ स चावोक्तर्पणाकार्यः पथाद्वा प्रातराहुतेः ॥ क्वचिप्रयोगेऽत्र ब्रह्मयज्ञसिद्धयर्थे तिस्रो
 गायत्रीर्जपेदित्युक्तं तत्र सम्मगभाति । तत्र प्रमाणम्—ब्रह्मयज्ञ एकस्मिन्नहनि सङ्गदेव कार्यः
 तदाह—न हन्तति न होमं च स्वाध्यायं पितृतर्पणम् । नैकः धाद्वद्वयं कुर्यात्समानेऽहनि
 कुत्रचिन् ॥

तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु ॥ इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम । पादं
 प्रक्षाल्याचम्य गृहमागत्य वैश्वदेविकं भस्म त्र्यायुषमित्यनेन मन्त्रेण
 यथास्थानं धारयेत् । श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं वलम् ।
 आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ इति नमस्कुर्यात् ॥ गन्ध-
 धारणम्—ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्याम्भूयासऽसुवर्चामुखेन । सुश्रुत्कर्णा-
 भ्यां भूयासम् ॥ अग्निविमर्जनम्—ॐ यज्ञं यज्ञं च्छयज्ञं पतिं च्छ स्वा-
 प्योनिं च्छ स्वाहा ॥ एतैः यज्ञोर्षज्ञपतेः सहस्रं कृत्वा कुरु सर्ववीरस्तद्भुपस्व-
 स्वाहा ॥ २२ ॥ इति विसृज्य कुशपवित्रत्यागं कुर्यात् । अर्पणम्—अनेन
 वैश्वदेवारूपेण कर्मणा यज्ञस्वरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम । प्रमादा-
 त्कुर्वतां कर्म ॥ यस्य स्मृत्या ॥ विष्णवे नमो विष्णवे नमो
 विष्णवे नमः ॥ प्राग्दत्तं वलिं गवादिभ्योऽर्पयेत् ॥ इति वैश्वदेवमयोगः ॥

॥ २७ ॥ अथ भोजनविधिः ।

पाणिपादौ प्रक्षाल्य भोजनशालायामागत्य गोमयोपलिप्ते शुचौ देशे
 विहितपीठासने प्राङ्मुखः प्रत्यङ्मुखो वा उपविश्य दक्षिणे धृतजलपात्रौ
 हस्तपादास्येषु पञ्चस्वाद्वोऽन्तर्जानुकरः स्वपुरतो वितस्तिमात्रं चतुष्कोणं
 मण्डलं जलेन कृत्वा तदुपरि सुवर्णादिविहितपात्रं रंभापध्वाघ्नजम्बुपनस-

१ गोराज्जम्बुमय भिन्न तर्था पालाशपिपले । लोहयद्ग तथैवार्कं वर्जयेदासनं शुभ ॥
 २ उपलिप्ते शुचौ देशे पादौ प्रक्षाल्य वाग्यत । प्राङ्मुखोऽर्पे तु भुञ्जीत शुचि पीठमधिष्ठित ॥
 पुत्रबालु गृहे नित्यं नाधीयादुत्तरामुस । सोमवारे तथाभ्यङ्गं वर्जयेत्तु तदा शुभ ॥
 ३ सौर्वेणं राजते चैव पद्मपालादापत्रयो । भाजने भोजने चैव त्रिरात्रं फलमधुते ॥
 भूमौ पात्रं प्रतिष्ठप्य यो धृक् वाग्यत शुचि । भोजने भोजने चैव त्रिरात्रं फलमधुते ॥
 अन्नप्रयु यो धृक् स समेक निरन्तरम् । चान्द्रायणसमं पुण्यं कृत्स्न्यापि चतुर्गुणम् ॥ वर्ज-
 पात्राणि-मुष्मये पत्रगृहे वा आयसे ताघ्नभाजने । नाध्यादपि चतुष्के नरकं प्रतिपद्यते ॥
 बटार्धभयस्त्रयु बुम्भीतिन्दुक्त्रयु च । श्रीकामो न्तु भुञ्जीत बोविदारकरजयो ॥ आयसे
 तु पात्रेण यदन्नमन्दीयत तदन्नमन्निर्घ्नं स्यात्प्राग्य वै सर्वकर्मणि ॥

पञ्चोदुम्बरपालाशपत्राणां मध्ये अन्यतमपत्ररचितां पत्रावलिं वा निधाय
 तत्र यज्ञावशिष्टं घृताक्तमन्नं मध्ये भक्ष्यभोज्यं वामतः घृतपायसं दक्षिणे
 शाकादीन् पुरतः परिवेष्य प्राञ्जलिः अन्नं प्रणमेत्—“अस्माकं नित्यमस्त्वे-
 तत्” इति भक्त्या वन्दयित्वा पङ्क्तिवारणम्—“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”
 इति मन्त्रेण दक्षिणतः पात्रसमन्ताज्जलधारां कुर्यात् । अन्नस्तुतिः—ॐ पि-
 तुनुस्तौपम्महो धुम्मर्षणन्तविपीम् ॥ यस्य त्रितोष्यो जसाव्वृत्रं विपर्वं मर्दयत्
 ॥ १६ ॥ इत्यन्नं स्तुत्वा अभिमन्त्रणम्—अमानस्तोकेतनये ॥ १६ ॥ ॐ नमो-
 वरुणिकेऽभ्यो देवानां हृद्दयेऽभ्यो नमो विचित्रकेऽभ्यो नमो विषिण-
 रकेऽभ्यो नमः आनिर्हृतेऽभ्यः ॥ १६ ॥ ॐ नमः शम्भुवाय च मयो भुवाय च-
 नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ १६ ॥ एतैर्मन्त्रै-
 रभिमन्त्र्य प्रोक्षणम्—ॐ सत्यं त्वत्तम परिपिञ्चामि । इति दिवा । रात्रौ तु-
 ऋतं त्वा सत्येन परिपिञ्चामि । इति मन्त्रेणान्नं प्रोक्ष्य । अन्नाभिस्पर्श-
 नम्—ॐ तेजोसिशुक्कर्मस्य मृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधुष्ट-
 न्देव्यर्जनमसि ॥ १७ ॥ इत्यनेनान्नमभिमृश्य आत्मन्यग्निध्यानम्—
 ॐ अग्निरस्मिन्नद्वर्षनाजातवेदा घृतम्पेचक्षुरमृतम्स आसन् ॥ अर्कस्त्रि-
 धातुरर्जसो द्विमानोर्जसो घुस्मो हविरस्मिन्नाम ॥ १७ ॥ इत्यात्मानम-
 ग्निं ध्यात्वा दक्षिणतो भुवि उदकधारां प्राक्संस्थां कृत्वा तत्र भोज-
 नपात्रात् घृताक्तमोदनं गृहीत्वा बलित्रयं दद्यात्—ॐ भूपतये स्वाहा नमः ।
 ॐ भुवनपतये स्वाहा नमः । ॐ भूतानां पतये स्वाहा नमः । इति बदरी-
 फलप्रमाणं बलित्रयं प्राक्संस्थं दत्त्वा आपोशनम्—सव्यहस्ते जलं
 गृहीत्वा—अन्नं ब्रह्म रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः । एवं ध्यात्वा द्विजो
 भुङ्क्ते सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते ॥ अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।
 त्वं ब्रह्म त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारस्त्वं विष्णोः परमं पदम् । ॐ अ-

मृतोपस्तरणमसि स्वाहा । इति मन्त्रेण विष्णुमभिध्यायन्निःशब्दं तज्जलं
 पिबेत् । प्राणाहुतयः—वामहस्तेन भोजनपात्रमालभ्य अन्नममृतं ध्याय-
 न्मौनी हस्तचापल्यादिरहितो घृताक्तौदनस्य बदरीफलप्रमाणाः पञ्च प्रा-
 णाहुतीर्मुखे जुहुयात् — तर्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैः—ॐप्राणाय स्वाहा । मध्य-
 मानामिकाङ्गुष्ठैः—ॐअपानाय स्वाहा । कनिष्ठानामिकाङ्गुष्ठैः—ॐ
 व्यानाय स्वाहा । कनिष्ठातर्जन्यङ्गुष्ठैः—ॐसमानाय स्वाहा । साङ्गुष्ठाभिः
 सर्वाभिरङ्गुलीभिः—ॐउदानाय स्वाहा ॥ ततो वामहस्तं प्रक्षाल्य तेन
 नेत्रयोरुदकस्पर्शनम् । शिखांमुक्तिः—ब्रह्मपाशसहस्रेण रुद्रशूलशतेन
 च । विष्णुचक्रसहस्रेण शिखांमुक्तिं करोम्यहम् ॥ इत्यनेन शिखां विमुच्य
 पाणिकम्पनं मुखशब्दं च अकुर्वन् माक्द्रवरूपं मध्ये कठिनमन्ते पुनर्द्रव-
 रूपं मधुरं पूर्वं लवणाम्ले मध्ये कटुतिक्तादिकान् पश्चाद्यथासुखं भुञ्जीत ॥
 पादुकास्थः वेष्टितशिरा अर्द्धरात्रे च भोजनं वर्जयेत् । लवणव्य-
 ञ्जनादीनि हस्तदत्तानि न भक्षयेत् । घृतं तैलं च नखनिःसृतं न भुञ्जीत ।
 केशरोमनखैर्दूर्घपितं त्यजेत् । अतिभोजनं शूद्रान्नभोजनं च न कर्तव्यम् ।
 जलं वामहस्ते घृत्वा दक्षिणमणिवन्द्ये निधाय पिबेत् । भोजनं कुर्वन्नश्रुतं
 न स्पृशेत् । एवं घृतपायसवर्जितं सर्वं सशेषं भुक्त्वा चित्राहुतिः—
 सर्वस्मान्द्रुक्तशेषात्किञ्चित्किञ्चिद्धस्ते गृहीत्वा अवघ्राय-मद्भुक्तोच्छिष्ट-
 शेषं ये भुञ्जन्ति पितरोऽधमाः । तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥
 इति मन्त्रेण पितृवर्धनेन दक्षिणतो दद्यात् । उत्तरापोशनम्—ॐअमृतापि-
 धानमसि स्वाहा । इत्यनेन हस्ते गृहीतानामपामर्द्धं पीत्वा—रौरवे
 पूषनिलये पश्चार्जुदनिवासिनाम् । अर्धेनां सर्वभूतानामक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥
 इत्यनेन मन्त्रेण पीतशेषम् उदकम् उच्छिष्टान्चित्राहुतौ पितृवर्धनेन

१ घ्राते च भोजने चैव तथा पूत्रपुरीषयोः । मैत्रुने च शबलकंठे शिखां पदसु विसर्जयेत् ॥

निक्षिपेत् । ततस्तूर्णीं वामपाणिना शिखां बद्धा वल्लं चित्राहृतिं चादा-
 पोत्थाय तदन्नं काकेभ्यो विसृज्य मृज्जलाभ्यां हस्तौ मुखं च सम्यक्सा-
 लयेत् । काष्ठेन शलाकया तर्जनीवर्ज्याङ्गुलिना वा दन्तान्संशोध्य
 षोडशगण्डूपाङ्कत्वा स्मरेत्—अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो ह्यङ्गुष्ठं च समाश्रितः ।
 ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुक् ॥ नाभेरालभनम्—अंश्वा-
 त्राशुपीताभवतयुयमापोऽअस्माकंमन्तरुदरेसशेषाः ॥ ताऽअस्मभ्य-
 मयक्ष्माऽअनमीवाऽअनागसुसुखदन्तुदेवीरमृतऽऽकृतावृथः ॥ १३ ॥
 तत उदरालम्भनम्—अगस्त्यं वैनतेर्यं च शनिं च बडवानलम् । अन्नस्य
 परिणामार्थं स्मरेद्धीमं च पञ्चमम् ॥ आतापी मारितो येन वातापी च
 निपातितः । समुद्रः शोपितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदंतु ॥ इत्युदरं परि-
 मृज्य स्मरणम्—शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ । भोजनान्ते
 स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते ॥ इति स्मृत्वा निर्माल्यतुलसीपत्रं
 भक्षयित्वा ततस्ताम्बूलभक्षणं कृत्वा शतपदं व्रजेत् । वामपार्श्वे निद्रार-
 हितं शयनं कर्तव्यम् । तत इतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि चाभ्यसेत् ।
 पश्चाद्विहितव्यवहारादि कृत्यं कुर्यात् । दिवा स्वापं स्त्रियं च व्रजेत् ॥
 ॥ इति भोजनविधिस्तदुत्तरकर्म च ॥

१ भोजनानन्तरं दिग्नीरर्पितं तुलसीदलम् । भक्षयेद्देहद्वयार्थं चान्द्रायणशताधिकम् ॥
 २ पर्णस्याग्रं च मूलं च दिक्षां चैव विशेषतः । चूर्णपर्णं वर्जयित्वा ताम्बूलं भक्षयेद्दुग्धः ॥
 सुपर्णं च सुपर्णं च चूर्णेन च समन्वितम् । अदत्त्वा द्विजदेवेभ्यस्ताम्बूलं वर्जयेद्दुग्धः ॥ ताम्बूलं
 विव्वास्त्रीणां गतीनां ब्रह्मचारिणाम् । तपस्विनां च विप्रेन्द्र सर्वपुण्यहरं स्मृतम् ॥ ताम्बूलाभ्य-
 ग्रने चैव कांस्यपात्रे च भोजनम् । यतिश्च ब्रह्मचारी च विधवा च विवर्जयेत् ॥ ३ भोजनान्ते
 शतपदं गत्वा ताम्बूलभक्षणम् । शयनं वामुकुक्षी चेन्नैपग्यं किंप्रयोजनम् ॥ ४ इतिहासपुरा-
 णानि धर्मशास्त्राणि चाभ्यसेत् । वृथा विवादवाक्यानि परीवादांश्च व्रजेत् ॥ ५ दिवा स्वापं न
 कुर्यात् स्त्रियं चैव विवर्जयेत् । आत्युदन्ति दिवा निद्रां दिवा स्त्री पुण्यनाशिनी ॥

॥ २८ ॥ अथ सायंसन्ध्याप्रयोगः ॥

स्नात्वा धाते वाससी परिधाय दर्भासने प्रत्यङ्मुख उपविश्य ततः क्रमेण पवित्रधारणम् आचमनं प्राणायामं निर्जलं भस्मधारणं शिखाबन्धनं रुद्राक्षमालाधारणं पवित्रकरणं च प्रातःसन्ध्यावत्कुर्यात् ॥ अथ सङ्कल्पः-विष्णुर्विष्णुर्विष्णुःश्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य ० शुभपुण्यतियो ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकत्रह्यवर्चसकामार्थं श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं च सायंसन्ध्यापासनमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य भूमिप्रार्थना भृशुद्धिः अभिषेचनं व्याहृतिपूर्वकगायत्रीकरन्यासाः व्याहृतिपूर्वकगायत्रीपङ्क्तन्यासाः प्रणवन्यासाः गायत्र्यक्षरन्यासाः शिरोन्यासाश्च क्रमेण प्रातःसन्ध्यावत्कार्याः तत आवाहनम्-वृद्धां सरस्वतीं कृष्णां पीतवस्त्रां चतुर्भुजाम् । शङ्खचक्रगदापद्महस्तां गरुडवाहिनीम् ॥ सामवेदकृतोत्सङ्गां वनमालाविभूषिताम् । वैष्णवीं विष्णुदेवत्यां विष्णुलोकनिवासिनीम् ॥ आवाहयाम्यहं देवीमार्यान्तीं विष्णुमण्डलात् । आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे विष्णुवादिनि । भारति छन्दसां मातर्विष्णुयोने नमोऽस्तु ते ॥ ततः प्रातःसन्ध्यावत्प्राणायामं कृत्वा अम्बुप्राशनम्-अग्निश्चमेति नारायण ऋषिः अग्निर्देवता अनुष्टुप्छन्दः अम्बुप्राशने विनियोगः-ॐ अग्निर्ध्रुवा मन्वुश्च मन्वुपतयश्च मन्वुकु-

१ रेवेरस्तमयात्पूर्वं चण्डिका यदा भवेत् । सायसन्ध्यामुपस्थाय वासीत कुर्याद्भोमं च पूर्ववत् ॥ शौचं कृत्वा यथान्यायमर्द्धास्तमितभास्वरे । सायसन्ध्यामुपस्थाय आसीनस्त्वथ वास्यत ॥ अर्द्धास्तमित आदित्ये पश्चिमाया य उत्तर । भागस्तन्मुख आसीन सावित्रीं वास्यतो जपेत् ॥ यदि सन्ध्या दशगुणा इदं प्रवर्णेषु च । सा च तीर्थे शतगुणा सहस्रा जाह्नवीतरे ॥ उत्तना मूर्धच्छदिता मध्यमा उत्तराश्रया । अधमा तारकोपेता सायसन्ध्या त्रिधा मता ॥ सन्ध्याकाले व्यतीते तु जप कृत्वा पुनर्मन । ऋचं वाच ऋच जप्त्वा तत सन्ध्यामुपस्थाने ॥ यदुपस्थाने पारं यथ दोनिकृतं भवेत् । सायसन्ध्यामुपस्थाय तेन तस्मात्प्रनुच्यते ॥ २ अग्निधेत्युवाचिन सायसन्ध्याकाले शिवेत् ॥

तेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्या-
 मुदरेण शिश्रा अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिदुरितं मयि इदमहं माममृत-
 योनां सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ एतन्मन्त्रेण जलं प्राश्य तृष्णीं द्विरा-
 चामेत् ॥ ततो मार्जनम्—अपामञ्जलावादानं जलप्रक्षेपणम् अपो वामहस्ते
 गृहीत्वा न्युद्वजेन दक्षिणहस्तेनाच्छादनम् अघमर्पणं च प्रातःसन्ध्यावत्कृ-
 त्वा गायत्रीमन्त्रेण प्रातःसन्धयोक्तविधिना सूर्याभिमुखस्तिष्ठन् “विष्णुस्व-
 रूपिणे सूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम” इति वदन्गन्धाक्षतपु-
 ष्पयुक्तानि त्रीण्यर्घ्याणि दद्यात् । दत्तार्घ्योदकेन दक्षिणनासाचक्षुःश्रोत्र-
 स्पर्शनं कुर्यात् । ततो दक्षिणहस्ते जलं गृहीत्वा—“ॐ असावादित्यो ब्रह्म”
 अनेन मन्त्रेण आत्मनः समन्तात्मदक्षिणवदुदकं क्षिपेत् । ततः सूर्योप-
 स्थानं गायत्र्यावाहनं गायत्र्युपस्थानं गायत्रीजपविनियोगं गायत्रीध्यानं
 ब्रह्मशापविमोचनं वसिष्ठशापविमोचनं विश्वामित्रशापविमोचनं गायत्र्य-
 स्त्रोपाहरणं जपादौ मुद्राप्रदर्शनं च प्रातःसन्ध्यावत्कुर्यात् । ततो गाय-
 त्रीमन्त्रजपार्थं विनियोगं कृत्वा बद्धाच्छादितां जपमालां नासाग्रे धृत्वा
 प्रातःसन्धयोक्तविधिना गायत्रीजपः कार्यः । ततः षडङ्गन्यासं मुद्राप्रद-
 र्शनं सूर्यप्रदक्षिणां सूर्यादिदेवानां नमस्कारान् जपनिवेदनं च प्रातःस-
 न्ध्यावत्कृत्वा जपार्पणम्—अनेन सायंसन्ध्याङ्गभूतेन बाहुल्यगोत्रधा-
 रिण्या गायत्र्या यथाशक्त्या कृतेन जपरुमणा श्रीभगवान् विष्णुस्वरूपी
 सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम । ततः प्रार्थनां सन्ध्याविसर्जनं गोत्रप्र-
 वरोच्चारणपूर्वरुमभिवादनम् ईश्वरस्तुतिं च प्रातःसन्ध्यावत्कृत्वा अर्पण-

१ गृह्यपरिशिष्टे अथाचम्य दर्भगणि पूर्णमुदकाङ्गलिमुद्धृत्यादित्याभिमुखः स्थित्वा प्रणव
 व्यदतिपूर्व्या सावित्र्या त्रिरर्घ्यं निवेश क्षिपेत् । कालातिक्रमे—कालातिक्रमे चेव त्रिसध्यमपि
 सर्वदा । अर्घ्यमैकाधिकं दद्यात् भानोर्व्यादितिपूर्वकम् ॥

म्—अनेन सायंसन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा भगवान्विष्णुस्वरूपी पर-
मेश्वरः प्रीयतां न मम । ततो द्विराचमनम्—ॐ केशवाय नमः स्वाहा ।
ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा । हस्तप्रक्षाल-
नम्—ॐ गोविन्दाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ इति सायंसन्ध्याप्रयोगः ॥

॥ २९ ॥ अथ शयनविधिः ॥

सायंसन्ध्यादि निर्वर्त्य प्राङ्मुखमुदङ्मुखं दीपं प्रज्वाल्य स्तुवीत
यथा—दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः । दीपो हरतु मे पापं
सन्ध्यादीप नमोऽस्तु ते ॥ शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदम् ।
शत्रुबुद्धिविनाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ इति स्तुत्वानत्वा तत्स-
न्निपावाप्तादिकानां कुशलाभिवादनं कुर्यात् । पश्चाद्गृहदेवादीनां पञ्चोप-
चारैः पूजां कृत्वा सायंभोजनं कृत्वा स्तोत्रपाठादिना ग्रन्थाद्यवलोकना-
दिविधाभ्यासेन वा प्रथमयामप्रतिक्रामेत् । शयनात्माकृ हस्तौ पादौ
प्रक्षाल्य जलपूर्णकुम्भं शिरःस्थाने निधाय रात्रिसूक्त पठेत्—ॐ आ रात्रि

१ सन्ध्यातिक्रमणे-सन्ध्याकाले त्वत्क्रान्ते छात्रा चैव यथाविधि । जपेदष्टशतं देवीं तत
रन्ध्या समाचरेत् ॥ एकाद चाप्यतिक्रम्य सन्ध्यावन्दनकर्म च । अहोरात्रोपितो भुक्त्वा
गायत्र्या भयुत जपेत् ॥ द्विरात्रे द्विगु । प्रोक्त त्रिशने त्रिगुण भवेत् ॥ त्रिरात्रान्तरं चैस्या-हृद
एव न सद्यः ॥ २ चतुर्थप्रथमौ यामौ विद्याभ्यासेनैवेति शि । प्रहरदयशर्यां तु प्रह्नभूयाय
कल्पे ॥ उग्रस्य पथिमां सन्ध्यां कृत्वाऽग्नीस्तानुपास्य च । भूधे परिचृतो भुक्त्वा नातिक्रमोऽथ
संशितः । ३ आयुर्दं प्राङ्मुखो दीपो धनदः स्यादुदङ्मुखः । प्रयङ्मुखो तु सप्तोऽग्नौ
हानिदो दक्षिणमुखः ॥ ४ शृणां भोजनकाले तु यदि दीपो विन्द्यति । तदत्र पाणिना
शृष्ट्वा सावित्री मनसा स्मरत् ॥ पुनर्दीपं तत्रोत्था रोहं उप्रीत कामतः । अन्यदत्तं न
नोक्त्यं भुक्त्वा पान्द्रायणं चरेत् ॥

पार्थिवः रजःपितुरप्यायि धामभिर्ह ॥ द्विवश्रु सदां७सि वृहुती च्वि-
 तिष्टुसऽआ च्वेपं वंचते तमः ॥३३॥ उपस्तच्चित्रमार्भरास्मभ्यं वाजिनी-
 वति ॥ येन तोकश्च तनयश्च धामहे ॥३३॥ ॐ नमो नन्दीश्वराय । जले
 रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः । अटव्यां नारासिंहश्च सर्वतः पातु
 केशवः । जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः । अटव्यां वीरभद्रश्च
 सर्वतः पातु शङ्करः ॥ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
 वीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य
 दाहिनी मोहिनी सती । तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ।
 अगस्तिर्माधवश्चैव मुचकुन्दो महाबलः । कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते
 सुखशायिनः ॥ गारुडमन्त्रान्पठेत्-नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो
 निशि । नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विपसर्पतः ॥ सर्पापसर्प भद्रं
 ते दूरं गच्छ महाविप । जनपेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥
 आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते । शतधा भिद्यते मूर्ध्नि
 शिशुवृक्षफलं यथा ॥ यो जरत्कारुणा जातो जरत्कन्यां महायशः । तस्य
 सर्पोऽपि भद्रं ते दूरं गच्छ महाविप ॥ एतान् गारुडमन्त्रांस्तु निशायां
 पठते यदि । मुच्यते सर्ववाधाभ्यो नात्र कार्या विचारणा ॥ इति पठित्वा
 समाधिस्थमव्ययं विष्णुं नमस्कृत्य एककाष्ठमवायाम् अदग्धायां
 नान्यवर्णोपसेवितायां शुचिरूपायां शुचिदेशस्थापितायां शुचिवस्त्रावृता-
 याम् अभग्रायाम् आस्तृतायां जन्तुरहितायां शय्यायां प्राच्यां याम्यायां
 वा शिरः कृत्वा शुचिर्नाद्रिकरचरणोऽनग्नोऽतैलाभ्यक्तशिरा भार्यया सह
 पृथक् वा स्वपेत् । महादेवालये भस्मनि दिवा सन्ध्यायां शून्यालयश्म-

शानचतुष्पथससर्पगृहकूलमहावृक्षच्छायालोष्टपापाणवल्मीकभूतयक्षा-
घायतनेषु तथा देवविप्रगुरुणामुपरि उच्छिष्टो नम आर्द्रवासान स्वपेत्
निद्रासमये तांबूलं त्यजेत् । उपानहौ वैशुदण्डं ताम्बूलादीनि समीपे
स्थापयेत् ॥ इति शयनविधिः ॥

॥ ३० ॥ अथ संक्षिप्तनूतनयज्ञोपवीतधारणप्रयोगः ॥

विच्छिन्नम् अधोयातं भुवत्वा निर्मितं तथा चित्तिकाष्टचित्तिधूमच-
ण्डालरजस्वलाश्वसूतिकास्पर्शं तथा कण्ठलम्पितत्वाद्यकृत्वा मलमू-
त्रोत्सर्गं तथा जननशावांशौचयोरन्ते तथा मासचतुष्टयान्ते च
यज्ञोपवीतं त्यक्त्वा नूतनं धार्यम् । तत्र प्रयोगः— रूत्वा शुद्धवस्त्रं
परिधाय आसने उपविश्य भस्मधारणं शिखावन्धनं च कृत्वा आच-
मनं प्राणायामं च कृत्वा संकल्पं कुर्यात् । अथ पूर्वोच्चरित० अमुकमासे
अमुकपक्षे अमुकतिथौ मम अमुकवासरे एवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टार्थां
शुभपुण्यतिथौ मम अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकशर्मणः (अमुकवर्मणः
अमुकगुप्तस्य वा) श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्धयर्थम् अमुककर्माङ्गत्वेन
नूतनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये । अथ तत्र प्राक् यज्ञोपवीतप्रक्षालनम्-
ॐ आपोहिष्ठा० ॥ ॐ योर्व-शिवतमो० ॥ ॐ तस्माऽअरंङ्ग० ॥ ततो
यज्ञोपवीतं करसंपुटं कृत्वा दशवारं गायत्रीमन्त्रेण अभिमन्त्रयेत् । ॐ भू-
भुवःस्व-तस्वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः-प्रचोदयात् ॥
॥ ३५ ॥ ततस्तन्तुग्रन्थिषु देवतावाहनम् । ॐ प्रथमतस्तौ ॐ काराय नमः

१ नूतनयज्ञोपवीतधारणस्य मन्त्रो विस्तृतप्रयोगस्तु श्रावणीप्रयोगे (पृ २८०)
दृश्यः ॥ २ सूतके सूतके चैव यत् मासचतुष्टये । नवयज्ञोपवातानि पृत्वा जीर्णानि सत्यजत् ॥
विना यज्ञोपवीतेन विष्णोःसर्गवृचदि । उपावासद्वयं कृत्वा दानैर्होमैस्तु शुद्धयति ॥

ॐकारमावाहयामि ॥ १ ॥ द्वितीयतन्तौ अग्नये नमः अग्निम् आ० ॥२॥
 तृतीयतन्तौ नागेभ्यो नमः नागान् आ० ॥ ३ ॥ चतुर्थतन्तौ सोमाय
 नमः सोमम् आवाहयामि ॥ ४ ॥ पञ्चमतन्तौ पितृभ्यो नमः पितॄन् आ०
 ॥ ५ ॥ षष्ठतन्तौ प्रजापतये नमः प्रजापतिम् आ० ॥ ६ ॥ सप्तमतन्तौ
 अनिलाय नमः अनिलम् आ० ॥ ७ ॥ अष्टमतन्तौ यमाय नमः यमम्
 आ० ॥ ८ ॥ नवमतन्तौ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि
 ॥ ९ ॥ यज्ञोपवीतग्रंथिमध्ये ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो नमः ब्रह्मविष्णुरुद्रान् आवा-
 हयामि ॥ आवाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ॥ इति देवानावाह-
 यित्वा प्रतिष्ठाप्य ततः पूजनं कुर्यात् ॥ प्रणवाद्यावाहितयज्ञोपवीतदेव-
 ताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । (वा मानसोपचारैः संपूज-
 येत् ।) अथ सूर्यप्रदर्शनम् । ॐ तच्चक्षुर्द्वे ॥ यज्ञोपवीतधारणम्—यज्ञोपवी-
 तमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप् छन्दः यज्ञोपवी-
 तधारणे विनियोगः । ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुर-
 स्तात् । आयुष्यमग्न्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । यज्ञोप-
 वीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ दक्षिणहस्ते धृत्वा प्रतिय-
 ज्ञोपवीतम् आचमनं कुर्यात् । अथ जीर्णयज्ञोपवीतत्यागः—एतावद्दिनप-
 र्यंतं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासु-
 खम् ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण जीर्णयज्ञोपवीतं शिरोमार्गेण निःसार्य शुद्ध-
 भूमौ त्यजेत् । पश्चात् यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रजपं कुर्यात् । अनेन नूतन-
 यज्ञोपवीतधारणार्थकृतेन यथाशक्ति मायत्रीजपकर्मणा श्रीसविता देवता
 प्रीयतां न मम ॥ पुनः—अनेन नूतनयज्ञोपवीतधारणारूपेण कर्मणा मम
 श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥
 ॥ इति संक्षिप्तनूतनयज्ञोपवीतधारणविधिः ॥

॥ ३१ ॥ अथ प्रमादाद्यज्ञोपवीतनाशे विशेषप्रयोगः ॥

यज्ञोपवीतं प्रमादाद्गतं चेत्तूर्णां लौकिकं धृत्वा सङ्कल्पः—अत्रायं०
अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकरासरे मम यज्ञोपवीतनाशज-
न्यदोषनिवारणार्थमायश्चित्ताङ्गभूतम् आज्यहोममहं करिष्ये । इति सङ्क-
ल्प्य कुण्डे स्थण्डिले वा अग्निं प्रतिष्ठाप्य मन्त्रचतुष्टयेन चतस्र आज्याहुती-
र्जुहुयात्—ॐ मनोज्योतिर्जुपतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञं साममन्दघातु । स्वाहा
या इष्टा उपसो निम्नुचश्च ताः सन्दधामि हविषा घृतेन स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छक्रेयं तन्मे राध्यतां स्वाहा
॥ २ ॥ ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छक्रेयं तन्मे राध्यतां स्वाहा
॥ ३ ॥ ॐ आदित्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छक्रेयं तन्मे राध्यतां
स्वाहा ॥ ४ ॥ इति हुत्वा पूर्वोक्तविधिना नूतनम् उपवीतं धारयेत् ॥

अथान्यप्रकारः—अद्यपूर्वोच्चारितं शुभपुण्यतिथौ मम यज्ञोपवीत-
नाशजन्यदोषनिरासार्थं प्रायश्चित्तं करिष्ये इति सङ्कल्प्य आचार्यवर-
णाग्निप्रतिष्ठाद्याज्यभागान्ते सवितारं गायत्र्या तिलैराज्येन चाष्टौ-
त्तरशतं सहस्रं वा जुहुयात् । ततः पूर्वोक्तविधिना नूतनं धृत्वा
अतिक्रान्तं सन्व्याद्याचरेत् ॥ यज्ञोपवीतहीनः क्षणं तिष्ठेच्चैच्छतगायत्री-
जपः । यज्ञोपवीतं विना भोजने विन्मूत्रकरणे वा गायत्र्यष्टसहस्रं जपः ।
यज्ञोपवीतं विना जलपाने एकेनोपवासेन पञ्चगव्यपानेन च शुद्ध्यति ।
वामस्कन्धात्कूर्परं मणिबन्धान्ते वा पतिते यथास्थानं धृत्वा त्रीन्पद-
वा यथाक्रमं प्राणायामान्कृत्वा नवं धारयेत् । कोपादिना स्वयं यज्ञो-
पवीतत्यागे पूर्ववत्लौकिकं धृत्वा प्रायश्चित्तान्ते नवं धारयेत् । ब्रह्मचारिण

१ विना यज्ञोपवीतेन विष्णुप्रोत्सर्गकृत्यदि । उपवासद्वयं कृत्वा दानैर्दोषैस्तु शुद्ध्यति ॥

२ विना यज्ञोपवीतेन तोयं यः पितने द्विजः । उपवासेन चैकेन पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥

एकं यज्ञोपवीतं स्नातकर्त्तव्यं द्वे उत्तरीयाभावे तृतीयकम् आयुष्कामस्य
त्र्यधिकानि बहूनि यज्ञोपवीतानि । कण्ठादुत्तार्य क्षालने पुनःसंस्कारः ॥

॥ ३२ ॥ सूतके सन्ध्याविधिः ॥

तूर्णीं त्रिराचम्य प्राणानायम्य आपोहिष्ठेति मार्जनमन्त्रान्मनसोच्चार्य
मार्जयेत् । गायत्रीमन्त्रं सम्यग्नुच्चार्य सूर्यायाध्यं दद्यात् । जलेन प्रदक्षिणं
कृत्वा गायत्रीजपं मनसा दर्शवारं कृत्वा सूर्यं ध्यायेन्नमस्कुर्यात् ॥
अशौचे होम (वैश्वदेव) दानप्रतिग्रहस्वाध्यायपराश्रमभक्षणादि न कुर्यात् ॥

॥ ३३ ॥ अथ सूत्रोक्तत्रिकालसन्ध्याप्रयोगः ॥

भस्मधारणम्-ॐ व्यायुषं जुमदंग्रेहं-ललाटे । कृशयपस्य व्या-
युषम्-त्रीवायाम् । यद्देवेषु व्यायुषम्-वाहोः । तन्नोऽस्तुव्यायुषम्-
हृदये । आचमनम्-ॐ आमगन्यशसा सःसृज वर्चसा । तं मा कुरु
प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥ इत्यनेन मन्त्रेणाचम्य
गायत्रीमन्त्रेण शिखां चद्धा प्राणायामः-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः

१ उपवीतद्वयं धार्यमेकं नैव च धारयेत् । तृतीयं चोत्तरीयं स्याद्ब्रह्माभावे विधीयते ॥ २
कठाः काण्वाथ चरका विप्रा वाजसनेयकाः । बहूनाः सामगाथैव ये चान्ये यजुःशाखिनः ।
कण्ठादुत्तार्य सूत्रं तु पुनःसंस्कारमर्हति ॥ ३ सन्ध्यामिष्टिं चहं होमं यावन्नीवं समाचरेत् । न
त्यज्रेत्सूतके वापि त्यजन्गच्छेदधो द्विजः ॥ सूतके मृतकं चैव सन्ध्याकर्म समाचरेत् । मनसो-
च्चारयेन्मन्त्रान्प्राणायाममृते द्विजः ॥ धृतिः-अहरहःसन्ध्यामुपासीत । ४ सूतके मृतके कुर्यात्प्राणा-
याममन्त्रकम् । तथा मार्जनमन्त्रांश्च मनसोच्चार्य मार्जयेत् ॥ ५ गायत्रीं सम्यग्नुच्चार्य सूर्या-
यार्थं निवेदयेत् । उपस्थानं नैव कार्यं मार्जनं तु कृतावृत्तम् ॥ ६ धर्मसिधौ-केचिन्मनसा दश-
गायत्रीजपः कार्यः इत्याहुः ॥ ७ पेठीनसिः-सूतके सावित्र्या जलं प्रक्षिप्य सूर्यं ध्यायन्नमस्कुर्यात् ॥
८ का० परिशिट्मूत्रे-उत्तरीयं धीते वाससी परिधाय मृदोरुदरौ प्रक्षाल्याचम्य त्रिरायम्यासूनुष्या-
प्यम्युमिध्राप्यूर्ध्वं क्षिप्तोर्ध्वबाहुः सूर्यमुदीक्षन्तुद्वयमुदुत्तयं चित्रं तच्चक्षुरिति गायत्र्या च यथा-
शक्ति ॥ आचम्य प्राणान्संमृशति आचामेति आमगन्यशसति ॥ न्यासाः-वाङ् आत्ये नद्योः
प्राणोऽध्मोः कर्णयोः श्रोत्रं बाहोर्बलमूर्ध्वोरोजोऽरिष्ठानि मेढ्रानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु ॥

ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३५ ॥ ॐ आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्व-
 रोम् । एवं पूरकः कुम्भकः रेचकः क्रमेण त्रिवारं पठेत् । न्यासाः—वा-
 द्यऽआस्पेस्तु—मुखं कराग्रेण स्पृशेत् । नसोमं प्राणोस्तु—तर्जन्यङ्गु-
 ष्ठाभ्यां नासारन्ध्रद्वयं स्पृशेत् । अक्षोमं चक्षुरस्तु—अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां
 चक्षुर्द्वयं स्पृशेत् । कर्णयोमं श्रोत्रमस्तु—मध्यमाङ्गुष्ठाभ्यां कर्णौ स्पृशेत् ।
 वाहोमं बलमस्तु—कराग्रेण बाहू स्पृशेत् । ऊर्वोमंऽओजोस्तु—युगप-
 द्दस्तेनोरु स्पृशेत् । अरिष्टानि मेङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु—शिरः-
 प्रभृतिपादान्तानि सर्वाङ्गाण्युभाभ्यां हस्ताभ्यामालभेत् ॥ सङ्कल्पः—
 ॐ तत्सत्परमेश्वरमीत्यर्थं प्रातःमन्धोपासनमहं करिष्ये । अर्घ्यदानम्-
 ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः
 प्रचोदयात् ॥ ३५ ॥ अनेन मन्त्रेणार्घ्यत्रयं दद्यात् ॥ सूर्योपस्थानम्—ॐ उ-
 द्द्वयन्तमसुष्पारिस्त्रुः पश्यन्तऽउत्तरम् ॥ देवन्देवत्रा मूर्ध्न्यमग्नमज्यो-
 तिरुत्तमम् ॥ ३६ ॥ ॐ उदुत्स्यञ्जातवेदसन्देवं ब्रह्मन्ति केतवः ॥ इशे
 विश्वायु मूर्ध्न्यम् ॥ ३७ ॥ ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चर्भुमिन्नस्य
 वर्णस्याग्नेः ॥ आप्पाद्दद्यात्वापृथिवीऽअन्तरिक्षुऽमूर्ध्न्यऽआत्ममाजर्गत्-
 स्तस्त्वपुष्पञ्च ॥ ३८ ॥ ॐ तच्चक्षुर्द्विवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुचरत् ॥ पश्येम
 शुरदं श्रुतञ्जीवेम शुरदं श्रुतं शृणुयाम शुरदं श्रुतम्प्रध्वं वामशुरदं
 श्रुतमर्दीनादं स्याम शुरदं श्रुतम्भूयञ्च शुरदं श्रुतात् ॥ ३९ ॥ इत्युपस्थाय
 गायत्रीमन्त्रजपः कार्यः ॥ अर्पणम्—अनेनाष्टोत्तरशतसहस्राकेन
 गायत्रीजपाख्येन कर्मणा श्रीसविता देवता प्रीयता न मम ॥

॥ इति सूत्रोक्तत्रिकालसन्ध्याप्रयोगः ॥

॥ अथ नैमित्तिककर्मात्मको द्वितीयविभागः ॥

तत्र मस्मोद्धूलनरुद्राक्षमालाधारणभूशुद्ध्यादिमहान्यासस-
मन्वितपञ्चवक्त्रपूजनपूर्वकरुद्राभिषेकप्रयोगः ॥

श्रीगणेशाय नमः । सम्भृतसम्भारः परिहिताहतसोत्तरीयशुक्लवासाः
दक्षिणपार्श्वे वद्धशिखाभिन्नकेशः सव्ये पाणौ कृतकुशोपग्रहो दक्षिणे
पाणौ धृतपवित्रो यजमानः श्रीपर्ण्यादिमशस्तदारुनिर्मिते कुशोत्तरक-
म्बलाद्यास्तृते स्वासने प्राङ्मुख उद्ङ्मुखो वा उपविश्य स्वदक्षिणतः
पत्नीं चोपवेश्य स्ववामभागे अग्नोदककलशस्य स्वदक्षिणभागे घण्टादिपू-
जोपकरणानां पुरतो गन्धादिपात्राणां च स्थापनं कुर्यात् । करादिसाल-
नार्थपात्रं स्वपृष्ठतः स्थापयेत् ॥ घृतदीपस्याभावे तिलतैलदीपस्थापनम् ॥
आचम्य प्राणानायम्य । ॐ श्रीगणेशान्तिं ० यतो यतहं ० सुशान्तिर्भवतु ।
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः । ॐ सिद्धिबुद्धिसहितश्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमापहेश्वराभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दरा-
भ्यां नमः । सुमुखश्चैकदन्तश्च ० । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो ० । विद्यारम्भे ० शु-
क्लाम्बरधरं ० । अभीप्सितार्थं ० । सर्वमङ्गल ० । सर्वदा सर्वकार्येषु ० । तदेव-
लग्नं ० । लाभस्तेषां ० । यत्र योगेश्वरः कृष्णो ० । सर्वेष्वारब्धकार्येषु ० । विना-
यकं गुहं ० । सङ्कल्पः—विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः इत्यारभ्य शुभपुण्यतिथौ मम
सभार्यस्य सापत्यस्य सवान्धवस्य श्रीमहारुद्रप्रसादद्वारेण दीर्घायुः-
सुपुत्रसन्ततिभासिद्वारा एतज्जन्मकृतजन्मान्तरार्जितसकलकल्पपनिवृत्त्य-
र्थं कर्मणा ह्याक्रियमाणभूतानेकमहाग्रहभूतादिवाधानिरसनार्थं स-
च्चिदानन्दानन्ताद्र्याखण्डाचलाजाक्रियकूटस्थाच्युतब्रह्मात्मज्ञानरहितस्य
स्वश्रिया स्वविषयावस्तुरूपाविद्याविलसितसंसारचक्रभुक्तनानादेहस्यं

इदानीं केनचित्पुण्यपुञ्जातिशयेन प्राप्तनरकुलायस्य तत्र स्रक्चन्दन-
 वनितादिप्राप्तनानेन्द्रियकलाजलसर्वजादेहात्माभिमानस्य मरीचितोय-
 सन्निभनानाविषयसुखासक्ततया जातकामाद्यरिपदुर्गकृतमूर्च्छाकुलस्य
 श्रुत्या प्ररोचनार्थं प्रद्योतितस्वर्गादिफलानुसन्धानाभिनिविष्टतया कृत-
 नानाकर्मजातस्य स्वर्गादिप्राप्तावपि नश्वरत्वात्केनचिदपि प्रकारेण सु-
 खमलभमानस्य अधुना केनचिन्पारब्धसंस्कारेण प्राप्तप्रसादादाचार-
 श्रोत्रियशपदमादिसंपन्नब्रह्मात्मज्ञाननिष्ठसाधुसङ्गतस्य तन्मुखपङ्कज-
 निःसृतभगवद्गुणकथामकरन्दश्रवणपुटकृतपानजातसन्तोषस्य निर्वि-
 कल्पनिर्विकारनिरामयनिरालम्बनिर्वाणरूपस्यात्मसुखानुभवलालसत-
 यैहिकामुष्मिकनानाविधजातवैराग्यभाग्योदयस्य “चित्तशुद्धिद्वारा ज्ञान-
 प्राप्तावात्मसाक्षात्कारताभवती”तिन्यायात् चित्तशोधकधर्मसाधन आत्म-
 ज्ञानप्रकाशात्स्वरूपसंसिद्धयैअखण्डाव्यभिचारिण्या भक्त्या नित्यानन्द-
 निर्मलकीर्तिनामरूपगुणातिरिक्तभक्तजनसंसृतिनिरस्तगृहीतसदाशिव-
 स्वरूपश्रीमत्कर्पूरगौरवृषभवाहनगौरीदेहाद्धधारिसच्चिदानन्दमूर्तिमेरण-
 या श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं तथा च श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्त्यर्थं
 देशकालाद्यनुसारतो यथाशक्ति भस्मोद्भूलनरुद्राक्षमालाधारणभूशुद्धि-
 भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकावर्हिर्मातृकापूर्वकमहान्याससमन्वितपञ्चव-
 कत्रपूजनपूर्वकम् अमुकरुद्रेण रुद्राभिषेकं (ऋत्विग्द्वारा वा) करिष्ये ॥
 तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं पूजनं च करिष्ये ॥कलशाराधनपूर्वकम् ऋत्विजो
 वृत्वा ऋत्विग्भिः साकं भस्मोद्भूलनादि कुर्यात् ॥

॥ ३४ ॥ अथ भस्मोलनप्रज्ञोयोगः ॥

सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुब्धः ब्रह्मा देवता

वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः विष्णुर्देवता अघोरेत्यस्य
 अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः
 गायत्री छन्दः रुद्रो देवता ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
 रुद्रो देवता सर्वेषां भस्मपरिग्रहणे विनियोगः—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि
 सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय
 नमः ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः
 कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो
 बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ अघोरे-
 भ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते-
 अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ तत्पुरुषाय विद्महे । महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः
 प्रचोदयात् ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-
 र्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ॥ इतिपञ्चभिर्मन्त्रैर्न-
 र्यसम्भवस्यावसथ्यसम्भवस्य वा भस्मनः सव्यहस्ते परिग्रहणं दाक्षिण-
 हस्तेनाच्छादनम् ॥ अग्निरित्यादिभस्माभिमन्त्रणमन्त्राणां पिप्पलाद
 ऋषिः गायत्री छन्दः कालाग्निरुद्रो देवता भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः ।
 ॐ अग्निरितिभस्म वायुरितिभस्म जलमितिभस्म स्थलमितिभस्म व्योमेति
 भस्म सर्वदृष्ट्वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि तस्माद्भूतमेत-
 त्पाशुपतं यद् भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद्भूतमेतत्पाशुपतं पशुपाशवि-
 मोक्षायेति मन्त्रेण त्रिःकृत्वा भस्मनोऽभिमन्त्रणम् ॥ आपोज्योतिरि-
 त्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः यजुर्ब्रह्माग्निवायुसूर्याथ देवताः भस्मन्यपामासे-
 चने विनियोगः—“ॐ आपोज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्” इतिमन्त्रे-
 ण जलाधिपं विष्णुमभिध्यायन्भस्मन्यपामासेचनम् । ॐ नमः शिवायेति
 षडक्षरेण संमर्दनम् । सर्वाङ्गे भस्मोद्भूलनम्—ईशान इत्यस्य ईशान

ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता शिरसि भस्मोद्धूलने विनियोगः ।
 ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपति-
 र्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम्—इतिमन्त्रेण शिरसि । तत्पुरुषाये-
 त्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता मुखे भस्मोद्धूलने
 विनियोगः—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः
 प्रचोदयात्—मुखे । अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
 रुद्रो देवता हृदये भस्मोद्धूलने विनियोगः । ॐ अघोरेभ्यो ध घोरैभ्यो
 घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः—हृदये ।
 वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः विष्णुर्देवता गुह्ये भस्मो-
 द्धूलने विनियोगः—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय
 नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो
 बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—गुह्ये । सद्यो-
 जातमितिसद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता पादयोर्भस्मोद्धूलने
 विनियोगः—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे
 भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः—पादयोः । प्रणवेन (ॐ) मस्त-
 कादिपादतलपर्यन्तं सर्वाङ्गे । तत्स्त्रिपुण्ड्रधारणम्—मानस्तोक इत्यस्य
 कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता भस्मोद्धरणे विनियोगः ।
 ॐ मानस्तो० ॥ १६ ॥ इत्यनेन भस्मोद्धरणम् । त्र्यम्बकमित्यस्य
 वसिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता त्र्यायुषमित्यस्य
 नारायण ऋषिः उष्णिक्छन्दः आशीर्देवता भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणे
 विनियोगः । ध्यानम्—यास्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्यश्चाकारो रजो
 भूर्लोकश्चात्मा क्रियाशक्तिर्ऋग्वेदः प्रातःसवनं महादेवो देवता । यास्य
 द्वितीया रेखा सा दक्षिणाग्निरुकारः सचमन्तरिक्षमन्तरात्मा चेच्छाश-

क्तिर्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं महेश्वरो देवता । यास्य तृतीया रेखा
सा आहवनीयो मकारस्तमो द्यौः परमात्मा ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृती-
यसवनं शिवो देवता । इति ध्यायन्-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॥ ॐ त्र्यायुषं
जमदग्रेरितिद्वाभ्यामृग्भ्यां मध्यमाङ्गुलिभिस्तिष्ठभिः शिरसि त्रिपुण्ड्रधा-
रणम् ॥ एवमेताभ्यामृग्भ्यां नेत्रयुगमप्रमाणं भ्रुवोरन्तरं यावत्त्रिपुण्ड्रं
ललाटे । एताभ्यामेव ऋग्भ्यां तथैव वक्षसि । एवमेव दक्षिणोत्तरयोः
स्कन्धयोश्च । एवं पञ्चसु स्थानेषु भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणम् ॥

॥ ३५ ॥ अथ रुद्राक्षमालाधारणप्रयोगः ॥

स्वपुरतः पात्रे रुद्राक्षाभिन्नाय जलेन सम्प्रोक्ष्य गन्धपुष्पैरभ्यर्च्य
ध्यानम्-विविक्तदेशे च सुखासनस्थः शुचिः समग्रीवशिरःशरीरः ।
अत्याश्रमस्थः सकलेन्द्रियाणि निरुध्य भक्त्या स्वगुरुं प्रणम्य ॥
हृत्पुण्डरीकं विरुजं विशुद्धं विचिन्त्य मध्ये विशदं विशोकम् । तथादि-
मध्यान्तविहीनमेकं विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम् ॥ उमासहायं पर-
मेश्वरं प्रभुं त्रिलोचनं नीलकण्ठं मशान्तम् ॥ इति उमासहायं शिवं
ध्यात्वा-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे इत्यनेन शैवपङ्क्षरेण वा मन्त्रेण प्रतिष्ठित-
रुद्राक्षधारणम् ॥ प्रतिष्ठाामन्त्रयोरन्यतरेण मन्त्रेण वा कण्ठे मस्तके
कर्णयोः करयोर्बाह्वोर्नयनयोः शिखायां वक्षसि च धारयेत् ॥ ॥

१ यद्वा ललाटे बाह्वोर्दये नाभौ चेत्येवं पञ्च स्थानेषु त्रिपुण्ड्रधारणम् । इदं भस्मधारणं
त्रिपुण्ड्रधारणं च चतुराश्रमिणां साधारणं नित्यं च । भस्मोद्गूलेऽशुच्येच्छिरोललाटवक्षः-
स्थेषु त्रिपुण्ड्रधारणमेव कुर्यादिति रुद्रकल्पद्रुमे ॥ २ इति जावालोपनिषदि ॥ ३ रुद्राक्ष-
धारणनिर्णयः—रुद्राक्षान् कण्ठदेशे दशनैपरिमिताम्मस्तके विधीती द्वे धृत् पृष्ठ कर्णप्रदेशे
करयुगलकृते द्वादशै द्वौदशैव । बाहोरिन्दोः कलाभिर्नयनयुगकृते द्वैर्दमेकं शिखायां वक्षस्यटा-
पिकं यः कलयति दीर्घकं स स्वयं नीलकण्ठः ॥ बाहोरिन्दोः कलाभिः पृथगथ च
शिखासूत्रयोरैकमेकम्-इत्यपि पाठः ॥

॥ ३६ ॥ अथ भृशुद्धिप्रयोगः ॥

हस्ते जलमादाय—ॐ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षरमन्त्रस्य मन्त्रापि-
 ऋषिः रुद्रो देवता विराट् छन्दः आचमने प्राणायामे च विनियोगः ।
 ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो
 भगवते रुद्राय स्वाहा । हस्तप्रक्षालनम्—ॐ नमो भगवते रुद्राय । प्राणा-
 यामः—ॐ नमो भगवते रुद्राय । ॐ नमो भगवते रुद्राय । ॐ नमो भगवते
 रुद्राय ॥ हस्ते जलमादाय—रुद्राभिपेकं कर्तुं योग्यतासिद्धये ऋत्विग्भिः
 सहाहं भृशुद्धिभूतेशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकायट्टिर्मातृकान्यासान्महा-
 न्यासांश्च करिष्ये । नमस्कारः—दक्षिणे—ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ शङ्ख-
 निधये नमः ॥ वामभागे—ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ पद्मनिधये नमः ॥ आसनम्-
 पृथिव्यत्वयेति मे हृष्ट ऋषिः कूर्मो देवता सुतलं छन्दः आसने विनियोगः ।
 ॐ पृथिव्य त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां
 देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ प्रार्थना—ॐ विश्वेश्वर्यै नमः । ॐ महाश्वर्यै
 नमः । ॐ कूर्मासनाय नमः । ॐ योगासनाय नमः । ॐ अनन्तासनाय
 नमः । ॐ विमलासनाय नमः । मध्ये—ॐ परमसुखासनाय नमः ।
 ॐ भूर्भुवःस्व आत्मासनाय नमः—इति मन्त्रेण पुष्पादिना आत्मनः
 आसनदानम् ॥ शिखाबन्धनम्—चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः-
 समन्विते । तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥ अद्भुतमात्रां

१ परशुरामकाविकायाम्—भूरीति च भृशुद्धिः कार्या कार्यस्य सिद्धये । २ रामतापि-
 न्याम् देवो भूत्वा यजेदेवं नादेवो देवमर्चयेत् । देवार्चोयोग्यताप्राप्तये भूतशुद्धि समाचरेत् ।
 भूतशुद्धिं विधायैव प्राणस्थापनमाचरेत् । एवं प्राणाभ्रतिष्ठान्य मातृकान्यासमाचरेत् ॥ हृदय-
 दुमस्याभिषेकपरिच्छेदे—भूतशुद्धयादिकं कार्यमिति परशुरामादयः नेवेति देव्याशिकनारायणभ-
 श्वाद्यः । हेमाद्री महार्णवे चान्येवम् । भूतशुद्धयाय मरणे न रुद्रवैगुण्यं करणे तु फलभूयस्त्वमिति
 केचित् ॥

शिखां नैर्ऋत्यां बद्ध्वा दिग्बन्धः—अपसर्पन्तु० । अपक्रामन्तु० । तीक्ष्णदंष्ट्र० ।
 तालत्रयकरणम्—ॐ सर्वभूतनिवारकाय शाङ्गीय-सशराय सुदर्शनाय
 अस्त्रराजाय हुंफट् स्वाहा ॥ तालत्रयं कृत्वा स्वस्य परितः सर्वादिक्षु
 अस्त्रमुद्रां प्रदर्शयेत् । स्वदक्षिणभागे-ॐ गुरुभ्यो नमः । ॐ परमगुरुभ्यो
 नमः । ॐ परमोष्ठिगुरुभ्यो नमः । ॐ पूर्वसिद्धेभ्यो नमः । ॐ आचार्येभ्यो
 नमः ॥ स्ववामभागे—ॐ गणेशाय नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ क्षेत्रपालाय
 नमः । ॐ योगिनीभ्यो नमः । ॐ क्षेत्रेशाय नमः ॥ भूमिताडनम्—
 अपसर्पन्तु० । अपक्रामन्तु० । स्ववामपार्श्वेना त्रिवारं भूमिं ताडयेत् ।
 भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः मातृका देवताः प्रस्तारपङ्क्तिश्छन्दः भूशुद्धौ
 विनियोगः—भूमौ हस्तं कृत्वा—ॐ भूरासि भमिरस्यदितिरसि त्विभ्रवर्धा-
 या त्विभ्रवस्य भुवनस्य धूर्त्रा ॥ पृथिवीर्ष्वर्च्छपृथिवीन्ष्टुहृपृथिवीम्माहिङ्—
 सीढ ॥ ११ ॥ भैरवनमस्कारः—यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिः
 नारायणो देवता अनुष्टुप्छन्दः भैरवनमस्कारे विनियोगः—ॐ षोभ-
 तानामधिपतिर्ष्वर्षिर्स्मिल्लोकाऽअधिभ्रता? ॥ वऽइशं महतो महास्तेन
 गृह्णामि त्वामहम् ॥ ३३ ॥ भैरवाय नमः ॥
 इति भूशुद्धिः ॥

॥ ३७ ॥ अथ भूतशुद्धिप्रयोगः ॥

कुम्भकमाणायामेन मूलाधारतः कुण्डलीं परदेवतां विसतन्तुनिभां
 समुत्थाप्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीपकालिकाकारं
 गृहीत्वा सुपुण्यामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रं गत्वा ॐ हंसः सोहमिति मन्त्रेण जीवं

१ मूलाधारतः समुत्थाप्य कुण्डलीं परदेवताम् । सुपुण्यामार्गमाश्रित्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत् ।
 जीवं ब्रह्मणि संयोज्य हंसमन्त्रेण साधकः ॥

ब्रह्मणि संयोजयेत् । मातृकोपसंहारः—अक्षकारं हकारे उपसंहरामि ।
 अहकारं सकारे उप० । असकारं पकारे उप० । अपकारं शकारे उप० ।
 अशकारं वकारे उप० । अवकारं लकारे उप० । अलकारं रकारे उप० ।
 अरकारं यकारे उप० । अयकारं मकारे उप० । अमकारं भकारे उप० ।
 अभकारं वकारे उप० । अवकारं फकारे उप० । अफकारं पकारे उप० ।
 अपकारं नकारे उप० । अनकारं धकारे उप० । अंधकारं दकारे उप० ।
 अंदकारं थकारे उप० । अंधकारं तकारे उप० । अंतकारं णकारे उप० ।
 अणकारं ढकारे उप० । अढकारं ढकारे उप० । अढकारं टकारे उप० ।
 अठकारं टकारे उप० । अटकारं अकारे उप० । अवकारं झकारे उप० ।
 अझकारं जकारे उप० । अजकारं छकारे उप० । अच्छकारं चकारे उप० ।
 अच्छकारं ङकारे उप० । अङ्कारं घकारे उप० । अघकारं गकारे उप० ।
 अंगकारं खकारे उप० । अखकारं ककारे उप० । अककारं अःकारे उप० ।
 अअःकारम् अंकारे उप० । अंकारम् औकारे उप० । औकारम् ओकारे उप० ।
 ओकारम् ऐकारे उप० । ऐकारम् एकारे उप० । एकारं लृकारे उप० ।
 अलृकारं लृकारे उप० । अलृकारम् ऋकारे उप० । अऋकारम् ऋकारे उप० ।
 अऋकारम् ऊकारे उप० । अऊकारम् उकारे उप० । अउकारम् ईकारे उप० ।
 अईकारम् इकारे उप० । अइकारम् आकारे उप० । आकारम् अकारे उप० ।
 अपकारं सहस्रदलाम्बुजाकारे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मानि लयं गत इति
 भावयेत् ॥ शरीरस्यात्मा ऋषिः मकृतिश्चन्द्रः परमात्मा देवता शरीर-
 भूतशुद्धयर्थे जपे विनियोगः । अपृथ्वीवीजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री

१ मातृकोपसंहार आदिकर्मप्रवक्ष्याम् अस्ति केष्वपि प्राचीनग्रन्थेषु न दृश्यते तत्र
 मूल मन्त्रम् ॥ २ शरीरकारभूतानां भूतानां यद्विशोधनम् । अथ्यक्तवत्प्रणवर्कौहृतशुद्धिरिय
 मता ॥ भूतशुद्धिं विना कर्म क्रियते मन्त्रपादिकम् । तस्मिन् निष्फलं यस्मात्तस्मात् प्राग्भावरत् ॥

छन्दःपृथ्वी देवता पृथ्वीभूतशुद्धयर्थे जपे विनियोगः—पादादिजानुपर्यन्तं पृथिवीस्थानं चतुरस्रं पीतवर्णं सविन्दुकं लंबीजसहितं ध्यायेत् ॥ ॐ वरुणवीजमन्त्रस्य हिरण्यगर्भं ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः वरुणो देवता वारुणि-
भूतशुद्धयर्थं जपे विनियोगः—जान्वादिनाभिपर्यन्तं वरुणमण्डलं धनु-
पाकारं शुभ्रवर्णं सविन्दुकं वंबीजसहितं ध्यायेत् ॥ ॐ वह्निवीजमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः जगती छन्दः जातवेदोऽग्निदेवता आग्नेयभूतशुद्धयर्थे जपे
विनियोगः—नाभ्यां आरभ्य हृदयपर्यन्तं त्रिकोणम् अग्निमण्डलं रक्तवर्णं सविन्दुकं रंबीजसहितं ध्यायेत् ॥ ॐ वायुवीजमन्त्रस्य किष्किन्ध ऋषिः
गृह्णीती छन्दः वायुदेवता वायव्याख्यभूतशुद्धयर्थे जपे विनियोगः—
हृदयादारभ्य भ्रूमध्यपर्यन्तं वायुमण्डलं वर्तुलं धूम्रवर्णं सविन्दुकं
यंबीजसहितं ध्यायेत् ॥ ॐ आकाशवीजमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
परमात्मा देवता आकाशाख्यभूतशुद्धयर्थे जपे विनियोगः—भ्रूमध्येादा-
रभ्य ललाटान्तपर्यन्तम् आकाशमण्डलं नीलवर्णं अवर्णं सविन्दुकं हंबीज-
सहितं ध्यायेत् ॥ ततो वायुं सम्यङ् निरुध्य पृथिवीम् अप्सु लयं
नयेत्—ॐ लं ङँ ङुं फट् भुवं जले प्रविलापयामि । ततो जलम् अग्नौ

१ परशराममहास्त्रपद्धतौ पादादिजानुपर्यन्तं भूतत्वं तत्र मण्डलम् । पार्थिवं चतुरस्रं तदंबीजं वज्रलाञ्छितम् । पीतवर्णं च तद् ध्यात्वा बीजोच्छ्रितेन वा पुनः । भावितेन च तेनैव पृथिवीं प्राप्तिशोधयेत् ॥ २ जान्वादिनाभिपर्यन्तम् आपस्तत्त्वं द्वितीयकम् । वारुणं मण्डलं तत्र धनुर्वद्विन्दुलाञ्छितम् ॥ ३ वं बीजं शुभ्रवर्णं तदद्यात्ताऽपस्तेन शोधयेत् ॥ ४ नाभिहृदयपर्यन्तं तेजस्तत्त्वं तृतीयकम् । मण्डलं वह्निसंज्ञं तत्रिकोणं पद्मलाञ्छितम् ॥ ५ रंबीजं रक्तवर्णं तदद्यात्वा तेजस्तु शोधयेत् ॥ ६ हृदयादिभ्रुवोरन्तं वायुतत्त्वं चतुर्थकम् । वायव्यं मण्डलं तत्र वर्तुलं स्वस्तिस्त्वितम् धूम्रवर्णं च यं बीजं ध्यात्वा वायुं विशोधयेत् ॥ ७ भ्रूमध्याद्भ्रुवोरन्तं व्योमन्तत्त्वं च पञ्चमम् ॥ हंबीजं निर्मलं ध्यात्वा तेनैव व्योमं शोधयेत् ॥ ८ एवंभूतानि सञ्चिन्त्य प्रत्येकं प्रविलापयेत् । भुवं जले जलं बद्धी वह्निं वायौ नमस्यमुम् ॥ विलाप्य खमर्दकारे महत्तत्त्वेऽप्यहंकृतम् । महान्तं ऋषीः माधामाग्नीमि प्रविलापयेत् ॥

संहरेत्-ॐ वँ ह्रीं ह्रः फट् जलं शुचौ प्रविलापयामि । ततः अग्निं वायौ
 संहरेत्-ॐ रँ ह्रँ ह्रः फट् अग्निं वायौ प्रविलापयामि । वायुम् आकाशे
 लयं नयेत् ॐ यँ ह्रँ ह्रँ ह्रः फट् वायुम् आकाशे प्रविलापयामि ।
 आकाशम् अहंकारे संहरेत्-ॐ हँ ह्रौं ह्रः फट् आकाशम् अहंकारे
 प्रविलापयामि ॥ ॐ अहंकारं प्रकृतौ प्रविलापयामि । ॐ प्रकृतिं परमा-
 त्मानि प्रविलापयामि । ततः शिरसि कर्णिकाकेसरैर्धुते अष्टदले पद्मे
 चन्द्रसन्निभं चित्प्रकाशितं शिवं स्मृत्वा शुद्धचिन्मयो भूत्वा वामकुक्षि-
 स्थितं कृष्णम् अङ्गुष्ठपरिमाणकं विप्रहत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयवाहुकं
 मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीयुतं तत्संयोगिपदद्वन्द्वम् उपपातकरोमकं
 खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्रं दुःसहम् पापपूरुषं चिन्तयेत् । यँ इति वायुबीजं
 नाभौ एकादशवारं स्मृत्वा एनं पापपूरुषं शोपयेत्-ॐ यँ मिति वायुबी-
 जमन्त्रस्य किष्किन्ध ऋषिः बृहती छन्दः वायुर्देवता पापपूरुषशोपणे
 विनियोगः-नाभिकुहरादुत्थितेन महावायुना ॐ यँ यँ यँ यँ यँ यँ यँ
 यँ यँ यँ यँ (जप्त्वा) ॐ पापपूरुषं शोपयामि ॥ ॐ रँ मिति अग्निबीज-
 मन्त्रस्य कश्यप ऋषिः जगती छन्दः जातवेदोऽग्निर्देवता पापपूरुषदहने
 विनियोगः-मूलाधारादुत्थितेन अग्निकलापेन नवरन्ध्रप्रविष्टेन ॐ रँ
 रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ (जप्त्वा) ॐ पापपूरुषं सन्दहामि ॥ एवं
 दग्ध्वा तद्दक्षिणया नासिकया विरेच्य ॐ वँ मिति वरुणबीजमन्त्रस्य हिर-

१ नाभौ स्मृत्वा मरुद्बीजं यमित्यक्षरसयुतम् । कृष्ण पट्कोणमङ्गस्थ शोपयेत्तत्र
 वायुना ॥ २ रमित्यक्षरसयुक्तं त्रिकोणं महिमण्डलम् । रद्वारं जपित्वा तु निदंहेत्पापपूरुषम् ॥
 अथ प्रयेयु यमिति बीजं षोडशवारं रमिति चतुः पठित्वा रमिति द्वात्रिंशद्द्वारं जपत्वा शोपणादि
 विधिर्देशान्स्नयान्प्रयोगे काशिदीक्षितस्तद्व्यवहृत्यनुष्ठारेण सर्वान्पि बीजाभ्येकादशवारं
 जप्त्वा शोपणादिविधिषु ॥ ३ ततो हृत्पद्मनध्यस्थाश्चन्द्रबिम्बात्परेरितात् । यमित्यक्षरसयुक्ता-
 मिमन्त्रानुनादिति । एषाबीजेन देहोत्थं मरुम सप्तवारयेत्पृथीः ॥

प्यगर्भं ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः बरुणो देवता जीवसन्दोहाप्लावने विनियोगः-
मूलाधारात्सुपुम्णामार्गेण कुण्डलिनीं सच्चिदानन्दपर्यां द्वादशान्तं नीत्वा
तत्संसर्गाद्भुतचिच्चन्द्रमण्डलाद्विगलितसुधाधारापूरेण ॐ वँ वँ वँ वँ वँ वँ
वँ वँ वँ वँ वँ (इत्यमृतबीजं जप्त्वा) ॐ जीवसन्दोहम् आप्लावयामि ॥
ॐ लँ मिति पृथिवीबीजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः पृथिवी
देवता भस्मपिण्डीकरणे विनियोगः-ॐ लँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ लँ
लँ लँ (जप्त्वा) ॐ अमृतपिण्डाच्छरीरमुत्पादयामि ॥ ॐ हँ मिति आ-
काशबीजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः परमात्मा देवता अवका-
शीकरणे विनियोगः-ॐ हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ (जप्त्वा) ॐ सा-
वकाशं करोमि ॥ ततः सृष्टिमार्गेण ब्रह्मणः सकाशादाकाशादीनि
भूतानि उत्पादयेत् । ब्रह्मणः प्रकृतिः प्रकृतेर्महत् महतोऽहङ्कारः अहङ्कारा-
दाकाशः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्रेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या
ओपधयः ओपधीभ्योऽन्नम् अन्नाद्देतः रेतसः पुरुषः स वा एष पुरुषोऽ-
न्नरसमयः ॐ हँ सः सोहम् । ब्रह्मण्येकभूतं जीवं स्वहृदयाम्बुजे संस्थाप्य
कुण्डलीं मूलाधारगतां संस्मरेत् ॥ इति भूतशुद्धिः ॥

॥ ३८ ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः-
सामानि छन्दांसि जगत्सृष्टिः प्राणशक्तिर्देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः
क्रौं कीलकं स्वशरीरे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः-ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वर

१ भूबीजेन घनीकृत्य भस्म तत्कनकाण्डवत् ॥ २ हँबीजं निर्मलं जप्त्वा सावकाशं तु
कारयेत् । ३ कुण्डलीं जीवमादाय परसङ्घातसुधामयीम् । संस्थाप्य हृदयाम्बुजे मूलाधारगता
स्मरेत् ॥

ऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे । जग-
 त्सृष्ट्यै प्राणशक्त्यै नमः हृदये । आँधीजाय नमः लिङ्गे । ँहीशक्तये
 नमः पादयोः । क्रौ कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु । अथकरन्यासाः-
 ॐआँ ँही क्रौ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आँ
 अद्भुष्टाभ्यां नमः । ॐआँ ँही क्रौ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसग-
 न्धात्मने ईँ तर्जनीभ्यां नमः । ॐआँ ँही क्रौ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्र-
 त्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊँ मध्यमाभ्यां नमः । ॐआँ ँही क्रौ ऐँ तँ यँ
 दँ धँ नँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐँ अनामिकाभ्यां नमः । ॐआँ
 ँही क्रौ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने औँ कनि-
 ष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ आँ ही क्रौ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ हँ ळँ मनी-
 बुद्धयद्द्वारचित्तविज्ञानात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । अथ
 हृदयादिन्यासाः-ॐआँ ँही क्रौ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ पृथिव्यप्तेजोवाय्वा-
 काशात्मने आँ हृदयाय नमः । ॐ आँ ँही क्रौ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्द-
 स्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईँ शिरसे स्वाहा । ॐ आँ ही क्रौ उँ टँ ठँ डँ ढँ
 णँ श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊँ शिखायै वषट् । ॐ आँ ँही क्रौ
 ऐँ तँ यँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐँ कवचाय हुम् ।
 ॐ आँ ँही क्रौ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने
 औँ नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ आँ ँही क्रौ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ हँ ळँ
 मनीबुद्धयद्द्वारचित्तविज्ञानात्मने अः अस्त्राय फट् । आँ इति
 पाशवीजं नाभेरारभ्य पादान्तं न्यंसामि । ँही इति शक्तिवीजं हृदया-

दारभ्य नाभ्यन्तं न्यसामि । क्रौ इति अङ्कुशबीजं मस्तकादारभ्य हृद-
यान्तं न्यसामि । ॐ यँ त्वगात्मने हृदयाय नमः । ॐ रँ असृगात्मने
दोर्मूलाभ्यां नमः । ॐ लँ मांसात्मने ग्रीवायै नमः । ॐ वँ मेद आत्मने
कुक्षिभ्यां नमः । ॐ शँ अस्थ्यात्मने दक्षिणकराय नमः । ॐ पँ मज्जा-
त्मने वामकराय नमः । ॐ सँ शुक्रात्मने दक्षिणपादाय नमः । ॐ हँ प्रा-
णात्मने वामपादाय नमः । ॐ लँ शक्त्यात्मने जठराय नमः । ॐ क्षँ वी-
जात्मने आस्याय नमः । ध्यानमूर्क्ताम्भोधिस्थपोतोऽलसदरुणसरो-
जाधिरुडा करान्जैः पार्श्व कौदण्डमिक्षुद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चवाणान् ।
विभ्राणा सृक्पालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहादद्या देवी वालार्कवर्णा
भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ हृदये हस्तं निधाय—ॐ आँ
ह्रीँ क्रौ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ हँ लँ क्षँ हंसः सोहं मम प्राणा इह प्राणाः । ॐ आँ
ह्रीँ क्रौ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ हँ लँ क्षँ हंसः सोहं मम जीव इह स्थितः । ॐ आँ
ह्रीँ क्रौ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ हँ लँ क्षँ हंसः सोहं मम सर्वेन्द्रियाणि इहायान्तु ।
ॐ आँ ह्रीँ क्रौ यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ लँ क्षँ हंसः सोहं मम वाङ्मनस्त्वच्चक्षुः—
श्रोत्रजिह्वाघ्राणमाणाः इहैवागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । षोडश-
वारं ॐ इति प्रणवं जपन् षोडशसंस्कारान्भावयेत्— ॐ गर्भाधानं सम्पाद-
यामि । ॐ पुंसवनं सम्पादयामि । ॐ सीमन्तोन्नयनं सं० । ॐ जात-
कर्म सं० । ॐ नामकरणं सम्पादयामि । ॐ निष्क्रमणं सं० । ॐ अन्न-
प्राशनं सं० । ॐ चूडाकरणं सं० । ॐ उपनयनं सं० । ॐ वेदव्रतचतु-
ष्टयं सं० । ॐ गोदानं सम्पादयामि । ॐ व्रतविसर्गं सं० । ॐ विवाहं
सम्पादयामि ॥ १६ ॥ इति प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

॥ ३९ ॥ अथ अन्तर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥

अस्य श्रीअन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्रीच्छन्दः
अन्तर्मातृका सरस्वती देवता हेलो बीजानि स्वराः शक्तयः विन्दवः
कीलकम् अनुष्ठीयमानश्रीपूजनपूर्वकरुद्राभिषेकाङ्गत्वेन न्यासे विनि-
योगः ॥ ऋष्यादिन्यासाः—ॐ ब्रह्मणे नमः शिरसि । ॐ गायत्री-
च्छन्दसे नमो मुखे । ॐ अन्तर्मातृकासरस्वतीदेवतायै नमो हृदि ।
ॐ हृत्बीजेभ्यो नमः गुह्ये । ॐ स्वरशक्तिभ्यो नमः पादयोः ।
ॐ विन्दुकीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ प्राणायामत्रयं कृत्वा करन्यासाः—
ॐ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ इं चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ
तर्जनीभ्यां नमः । ॐ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः । ॐ एँ
तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनि-
ष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ङँ अः करतल-
करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ हृदयादिपङ्क्त्यन्यासाः—ॐ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ
हृदयाय नमः । ॐ इं चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा । ॐ उँ टँ ठँ डँ ढँ
णँ ऊँ शिखायै वषट् । ॐ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम् । ॐ ओँ
पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वाँपट् । ॐ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ङँ
अः अस्त्राय फट् । भ्यानम्—पञ्चाशष्टिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृत्पद्म-
यक्षःस्थलां भास्वन्मीलिनिरुद्रचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् । मुद्रा-
मक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताभ्युजैर्विभ्राणां विशदमर्भा

१ घोहमिति ॥ २ तर्कायैकमृषिच्छन्दोदेवताबीजशक्तयः । शिवोवदनद्वन्द्वरूपारोह
ब्रह्मणे नमो ॥ ३ हृदयाय पूजयन्प्राणान्स्वीर्षणैश्च कुम्भयेत् । रेचयेद्यादिकैर्बैरीस्ततः पिबत्येवा
पुनः ॥ तर्पणं पूजनायै कुम्भकं रेचनं पुनः । इत्याद्यास्ततो द्वाभ्यां पूजनादिप्रथमं पुनः ॥
प्राणायामत्रयं रेचनं कृत्वा न्यासान्तमारभेत् ॥

त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥ कण्ठस्थपोडशदलपत्रे अकारादिपोडश-
 स्वराद्यसेत् ॐ अँ आँ ईँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लँ लँ एँ ऐँ ओँ औँ ॐ
 अः । हृदयस्थे द्वादशदलपत्रे कादिठान्ताद्यसेत्—ॐ कँ खँ गँ घँ ङँ
 चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ । नाभौ दशदलपत्रे डादिफान्ताद्यसेत्—ॐ ङँ
 ङँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ । तदधः लिङ्गे पद्दले वादिलान्ताद्यसेत्—
 ॐ वँ भँ मँ यँ रँ लँ । आधारे गुदे चतुर्दले वादिसान्ताद्यसेत्—ॐ
 वँ शँ षँ सँ । ललाटे द्विदले ॐ हँ क्षँ इति द्वौ वर्णौ विन्यसेत् ।
 ध्यानम्—आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे
 पोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के । वासान्ते बालमध्ये डफ-
 कठसाहिते कण्ठदेशे स्वराणां हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं
 नमामि ॥ बन्धूकाभां त्रिनेत्रां पृथुजघनलसत्कुक्षिमुद्रक्तवस्त्रां पीनो-
 तुङ्गप्रवृद्धस्तनजघनभरां यौवनारम्भरूढाम् । सर्वालङ्कारयुक्तां सरसि-
 जवदनामिन्दुसङ्क्रान्तमौलिं क्षम्वं पाशाङ्कुशेष्टाभयवरदकरामम्बिकां
 तां नमामि ॥ वर्णाङ्गवर्णमालाङ्गीं भारतीं भाळलोचनाम् । रत्नसिंहा-
 सनां देवीं वन्देऽहं सिद्धमातृकाम् ॥ इति अन्तर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥

॥४०॥ अथ वहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥

अस्य श्रीवहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः देवी गायत्रीच्छन्दः
 वहिर्मातृका सरस्वती देवता इत्यो बीजानि स्वराः शक्तयः विन्दवः
 कीलकम् अनुष्ठीयमानश्रीपूजनपूर्वकरुद्राभिषेकाङ्गत्वेन न्यासे विनि-
 योगः ॥ ऋष्यादिन्यासाः—ॐ ब्रह्मणे नमः शिरसि ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः
 मुखे । ॐ वहिर्मातृकासरस्वतीदेवतायै नमो हृदि । ॐ हल्बीजेभ्यो नमः

गुह्ये । ॐ स्वराशक्तिभ्यो नमः पादयोः । ॐ ऐं नम मौलौ । ॐ औं
 नमः मुखे । ॐ ईं नमः दक्षिणनेत्रे । ॐ ईं नमः वामनेत्रे । ॐ उं नमः
 दक्षिणकर्णे । ॐ ऊं नमः वामकर्णे । ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ।
 ॐ ॠं नमः वामनासापुटे । ॐ ऌं नमः दक्षिणपोले । ॐ ॡं नमः
 वामरूपोले । ॐ एं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । ॐ ऐं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ ।
 ॐ ओं नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ॐ औं नमः अधरोष्ठे । ॐ अं नमः जिह्वामूले ।
 ॐ अः नमः ग्रीवायाम् ॥ ॐ कं नमः दक्षिणवाहुमूले । ॐ खं नमः
 दक्षिणकूर्परे । ॐ गं नमः दक्षिणमणिवन्धे । ॐ घं नमः दक्षिणकराङ्गुलि
 मूले । ॐ ङं नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे । ॐ चं नमः वामवाहुमूले । ॐ
 छं नमः वामकूर्परे । ॐ जं नमः वाममणिवन्धे । ॐ झं नमः वामाङ्गु-
 लिमूले । ॐ ञं नमः वामकराङ्गुल्यग्रे । ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले ।
 ॐ ठं नमः दक्षिणजानुनि । ॐ डं नमः दक्षिणगुल्फे । ॐ ढं नमः
 दक्षिणपादाङ्गुलिमूले । ॐ णं नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे । ॐ तं नमः
 वामपादमूले । ॐ थं नमः वामजानुनि । ॐ दं नमः वामगुल्फे ।
 ॐ धं नमः वामपादाङ्गुलिमूले । ॐ नं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे । ॐ पं
 नमः दक्षिणकृक्षी । ॐ फं नमः वामकृक्षी । ॐ बं नमः पृष्ठे । ॐ भं
 नमः नाभौ । ॐ मं नमः उदरे । ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ।

१ आयो मौलिरुपायो मुखभिर्दं नेत्रे च कर्णवृक्ष नासावशापुटे ऋः तदनुजौ वर्णी
 कपोलद्वये । दन्ताथोष्यमथस्तयोश्चुगल सध्यश्शरणि कमाजिह्वामूलमुदप्रविन्दुरासौ प्रीता
 त्रिगर्भाभराः ॥ २ कादिर्दक्षिणतो भ्रजस्तदपरो वर्गथ वामो भ्रज्यदिस्तादिस्तुकमेण चरणौ
 कुञ्जिद्रम ये पत्नी । अथ पृथमसोऽथ नाभिदर बादिनय धातवो धाया सप्त समीरगाथ
 गपरा धान्तास्त षोडशे न्यषेत् ॥ त्वगवृद्धागमेनेस्त्रिमन्नाद्यथाणि धातव । प्राणशक्त्याम-
 परमात्मोचिता व्यापारहात्म्यमी ॥ ३ ॥ सादयो हृदयेऽग्रेऽथ वृत्रुयंने हृदादि च । कर्त्वाद्युगे
 न्यस्येदुदराननयोस्तथा । लिपिर्गोदरादेरे तु देशिधो यतमानस ॥

ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षिणांसे । ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि ।
 ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे । ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादिद-
 क्षिणहस्तान्तम् । ॐ पं मज्जात्मने नमः हृदादिवामहस्तान्तम् । ॐ सँ
 शुक्रात्मने नमः हृदादिदक्षिणपादान्तम् । ॐ हँ प्राणात्मने नमः हृदा-
 दिवामपादान्तम् । ॐ लँ शक्त्यात्मने नमः उदरे । ॐ क्षँ परमात्मने
 नमः मुखे ॥ ध्यानम्—पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादहृत्कुक्षिवक्षो-
 देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलाभिन्दुकुन्दावदाताम् । अक्षस्रकुम्भ-
 चिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणां पद्मसंस्थामच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघन-
 भरां भारतीं तां नमामि ॥ इतिबहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥

॥ ४१ ॥ अथ महान्यासप्रयोगः ।

छन्दःपुरुषन्यासः—ॐतिर्यग्बिलाय चमसायोर्ध्वबुध्नाय छन्दः—
 पुरुषाय नमः शिरसि । ॐगौतमभरद्वाजाभ्यां नमः नेत्रयोः । ॐवि-
 श्वामित्रजपदग्निभ्यां नमः श्रोत्रयोः । ॐवसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः नासा-
 पुटयोः । ॐ अत्रये नमः वात्रि । ॐगायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नमः
 शिरसि । ॐ उष्णिहे छन्दसे नमः सवित्रे नमः ग्रीवायाम् । ॐबृहत्यै
 छन्दसे नमः वृहस्पतये नमः अनेके । ॐबृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावा-
 पृथिवीभ्यां नमः वाह्योः । ॐत्रिष्टुभे छन्दसे नमः इन्द्राय नमः मध्ये ।
 ॐजगत्स्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः श्रोण्योः । ॐअतिच्छन्दसे
 नमः प्रजापतये नमः लिङ्गे । ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वा-
 नराय नमः पार्श्वे । ॐअनुष्टुभे छन्दसे नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
 ऊर्वोः । ॐ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः अष्टीर्वतोः । ॐद्विपदायै

१ एतं अनादेशे सर्वेऽप्यद्गुणानामिकाभ्यां कार्याः आदेशे तु यथादेशम् ॥ २ अर्कं
 पृथ्वेशम् ॥ ३ मध्यमुदरम् ॥ ४ अष्टीवान् जानु ॥

छन्दसे नमः विष्णवे नमः पादयोः । ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः प्राणेषु । ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः हस्तद्वयविपर्यासेन मस्तकादिपादान्तं सर्वाङ्गेषु । इति सर्वानुक्रमसूत्रविहितश्छन्दःपुरुष-
न्यासः ॥ अथ बृहत्पराशरस्मृतिविहितः पञ्चाङ्गरुद्राणां न्यासः प्रथमः-
मनोजूतिरित्यस्य आङ्गिरसो बृहस्पतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः विश्वेदेवा देवता
हृदये न्यासे विनियोगः । हृदयं स्पृष्ट्वा-ॐ मनोजूति० ॥ १३ ॥
हृदयाय नमः ॥ अबोध्याग्निरित्यस्य बुधगविष्टिरावृषी त्रिष्टुप्छन्दः
अग्निदेवता शिरसि न्यासे विनियोगः । शिरः स्पृष्ट्वा-ॐ अर्वाङ्ग्याग्नि१.
समिधाजनानाम्प्रतिर्धनुर्विवायुतामुपासम् । यद्वाऽइध्रप्रवयामुज्जिहा-
नात्पभानवः-सिस्रते नाकुमच्छं ॥ १४ ॥ शिरसे स्वाहा ॥ मूर्धा-
नमित्यस्य भरद्वाज ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरोऽग्निदेवता शिखायां
न्यासे विनियोगः ॥ शिखां स्पृष्ट्वा-ॐ मूर्धानन्दिवो० ॥ १५ ॥ शिखा-
यै वषट् ॥ मर्माणित इत्यस्य विवस्वानृषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्ता
देवताः कवचन्यासे विनियोगः-ॐ मर्माणितेव्वर्म्भणा० ॥ १६ ॥ कव-
चाय हुम् । मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको
रुद्रो देवता अस्रन्यासे विनियोगः । ॐ मानस्तोके० ॥ १७ ॥ अस्राय
फट् ॥ इति पञ्चाङ्गन्यासः प्रथमः ॥

अथ द्वितीयो न्यासः-यातेरुद्रेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
एको रुद्रो देवता शिखायां न्यासे विनियोगः-ॐ यातेरुद्रशिखा० ॥ १८ ॥

१ प्राणवायोः मक्षारस्थानं नासिका प्राणशब्देनोच्यते ॥ २ वक्ष्यमाणेषु सर्वेष्वङ्गन्यासेषु
सततद्वं शृष्ट्वा सर्वे न्यासमन्त्राः सत्यरा एव न्यस्तव्याः ॥ ३ जूतिर्जुपतामित्यस्यस्यानेज्यो-
तिर्जुपतानित्येवं काण्ठपाठः । एवं न्यासपूजादौ प्रतीकेन विनियुक्तमन्त्राः स्वशास्त्रासमधीतपाठाः
पठनीया न पुनर्माप्यन्दिनशास्त्रासमधीतपाठाः इति तेषां विशेषः ।

शिखायाम् ॥ अस्मिन्महत्पर्णव इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
 बहवो रुद्रा देवताः शिरसि न्यासे विनियोगः—ॐ अस्मिन्महत्पर्णव-
 वेन्त० ॥ ५५ ॥ शिरसि ॥ असह्यख्याता इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः
 अनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवता ललाटे न्यासे विनियोगः—ॐ असह्य-
 ख्याता० ॥ ५६ ॥ ललाटे ॥ त्र्यम्बकमितिद्वयोराद्यस्य वसिष्ठ ऋषिः
 द्वितीयस्य प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता नेत्रयो-
 न्यासे विनियोगः—ॐ त्र्यम्बकं० ॥ त्र्यम्बकं त्र्यम्बकं त्र्यम्बकं त्र्यम्बकं
 ॥ ५७ ॥ नेत्रयोः ॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः
 एको रुद्रो देवता नासिकायां न्यासे विनियोगः—ॐ मानस्तोके०
 ॥ ५८ ॥ नासिकायाम् ॥ अवतत्येत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
 एको रुद्रो देवता मुखे न्यासे विनियोगः—ॐ अवतत्येधनुष्टुप्० ॥ ५९ ॥
 मुखे । नीलग्रीवा इति द्वयोः परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा
 देवताः कण्ठे न्यासे विनियोगः ॐ नीलग्रीवाः शितिरुष्ठादिवदु०
 ॥ ६० ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिरुष्ठादिवदुः ॥ ६० ॥ कण्ठे ॥ नम-
 स्तऽआयुधायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रो देवता
 प्रकोष्ठयोर्न्यासे विनियोगः—ॐ नमस्तऽआयुधायानां० ॥ ६१ ॥ प्रको-
 ष्ठीयोः ॥ ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा
 देवताः हस्तयोर्न्यासे विनियोगः—ॐ वेतीर्थानि० ॥ ६२ ॥ हस्तयोः ॥
 नमो वः किरिकेभ्य इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः सामोष्णिक् यजुरुष्णिक्
 यजुरुष्णिक् यजुरुष्णिक् दैवी जगती वा छन्दांसि किरिकादयो मन्त्र-
 वर्णावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः हृदये न्यासे

विनियोगः-ॐ नमो वाक्किरिकेभ्यो ० ॥ १६ ॥ हृदये ॥ नमो हिरण्य-
वाहव इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अत्रैकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् अष्टाक्ष-
राणां मजुरनुष्टुप् दशाक्षरस्य यजुः पङ्क्तिरति छन्दांसि हिरण्यवाह्यादयो
मन्त्रवर्णावगता उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवता नाभौ न्यासे
विनियोगः-ॐ नमो हिरण्यवाहवे ० ॥ १७ ॥ नाभौ ॥ इमारुद्रायेत्यस्य
कुत्सऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता गुह्ये न्यासे विनियोगः-
ॐ इमारुद्रायतवसे ० ॥ १८ ॥ गुह्ये ॥ मानोमहान्तमित्यस्य कुत्स ऋषिः
जगती छन्दः एको रुद्रो देवता ऊर्वोर्न्यासे विनियोगः-ॐ मानो-
महान्तमुतमानोऽ ० ॥ १९ ॥ ऊर्वोः । एषत इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः
सामपाङ्क्तिर्यजुर्जगतीछन्दांसि रुद्रो देवता जान्वोर्न्यासे विनियोगः-
ॐ एषतेरुद्रभाग ० ॥ २० ॥ जान्वोः ॥ अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः
पङ्क्तिश्छन्दः रुद्रो देवता जङ्घयोर्न्यासे विनियोगः-ॐ अवरुद्रमदीमृद्व ०
॥ २१ ॥ जङ्घयोः ॥ अद्दधवोचदित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः एको रुद्रो
देवता कवचन्यासे विनियोगः-ॐ अद्दधवोचद ० ॥ २२ ॥ कवचाय हुम् ।
नमोत्रिलिम्नइत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः षडक्षराणां यजुर्गायत्री पञ्चाक्षर-
याद्वैवीपङ्क्तिः सप्ताक्षरस्य यजुर्हृष्णिकू छन्दांसि विलिम्नादयो मन्त्रवर्णा-
वगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवता उपकवचन्यासे
विनियोगः-ॐ नमोत्रिलिम्ने ० ॥ २३ ॥ उपकवचम् ॥ नमोस्तुनीलग्री-
वायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रो देवता तृतीयनेत्र-
न्यासे विनियोगः-ॐ नमोस्तुनीलग्रीवाय ० ॥ २४ ॥ मुष्टितो विमुक्तया
मध्यमया तृतीयनेत्रे ॥ प्रमुञ्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः एको

१ अनुष्टुप् योऽन्तर्गतं जहा ॥ २ कवचाद्विरीतमुपकवचमिति महाण्वेवकारानु-
सारिणो नित्यवशात् पङ्क्तिश्चायम् । कवचोपरि कवचमुपकवचमि यथे ॥

रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः—ॐ प्रमुञ्चधन्व० ॥ १/६ ॥ अस्त्राय फट् ॥ षड्एतावन्तश्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः दिग्बन्धने विनियोगः— ॐ षड्एतावन्तश्च ॥ १/६ ॥ दिक्षु विदिक्षु च परस्परं तर्जन्यङ्गुष्ठाग्रस्फोटनेन दिग्बन्धः ॥ इति शिखाद्य-
स्त्रान्तो दिग्बन्धसहित एकोनविंशत्यङ्गन्यासो द्वितीयः ॥

अथ तृतीयो न्यासः—ॐ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः विराट् छन्दः श्रीरुद्रो देवता न्यासे विनियोगः—ॐ नमः मूर्धनि । ॐ ननमः नासिकायाम् । ॐ मॉनमः कलाटे । ॐ भंनमः मुखे । ॐ गंनमः कण्ठे । ॐ वंनमः हृदये । ॐ तेंनमः दक्षिणहस्ते । ॐ रंनमः वामहस्ते । ॐ द्रांनमः नाभौ । ॐ यं नमः पादयोः ॥ इति दशाक्षरम-
न्त्रन्यासस्तृतीयः ॥

अथ चतुर्थो न्यासः—त्रातारमित्यस्य गर्ग ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता प्राच्यां सम्पुटीकरणे विनियोगः—ॐ त्रातारुमिन्द्रमवितारुमिन्द्र-
हर्वेहवेसुहवदशुरमिन्द्रम् ॥ ह्ययामिशक्त्रम्पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिर्नो मयवां धात्विन्द्रः ॥ १/३ ॥ प्राच्याम् ॥ १ ॥ त्वन्नोऽअग्नेइत्यस्य हिरण्य-
स्तूप आङ्गिरस ऋषिः जगती छन्दः अग्निदेवता आग्नेय्यां सम्पुटीक-
रणे विनियोगः—ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवदेवपायुभिर्ममथोनोरक्षतद्वृश्चवन्द्या
त्रातातोऽकस्यतनये गवामस्यनिषेपुर् रक्षमाणस्तवंब्रते ॥ १/३ ॥ आग्ने-
य्याम् ॥ २ ॥ सुगन्धुपन्यामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वैवस्वतो देवता दक्षिणस्यां दिशि सम्पुटीकरणे विनियोगः—ॐ सुगन्धुपन्याम्प्रादि-

१ य च मुद्रिताङ्गलिना प्राच्यादिदिक्षु वक्ष्यमाणमन्त्रैः कार्यः ॥ २ यदि सम्पुटी-
करणे समस्काराधिकतन्त्रेण कर्तव्याथेतदा सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः इति वक्तव्यम् ।
एवं प्राच्यां सम्पुटीकरणम् इन्द्राय नमः । आग्नेय्यां सम्पुटीकरणम् अग्नये नमः इत्यादिकं वक्तव्यम् ॥

शन्नऽएहिज्येतिऽमद्धेऽजरन्नऽआयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतम्ऽआगाद्वैस्व-
 तोनोऽअभयंकृणोतु ॥ दक्षिणस्याम् ॥३॥ असुन्वन्तामित्यस्य प्रजापति-
 ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः निर्ऋतिर्देवता नैऋत्यां सम्पुटीकरणे विनियोगः-
 ॐ असुंद्भवन्तमयंजमानामिच्छस्तेनस्येत्यामन्निवहितस्कारस्य ॥ अन्य-
 मस्मदिच्छुसा तऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुवभ्यमस्तु ॥६१॥ नैऋत्याम्
 ॥ ४ ॥ तत्त्वायामीत्यस्य शुनःशेष ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता
 प्रतीच्यां सम्पुटीकरणे विनियोगः-ॐ तत्त्वायामिद्वहर्षणा० ॥६२॥ प्रती-
 च्याम् ॥५॥ आनोनियुद्धिरित्यस्य वासिष्ठ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वायुर्देवता
 वायव्यां सम्पुटीकरणे विनियोगः-ॐ आनोनियुद्धिः शतिनीभिरद्वुरः
 सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥ वार्योऽअस्मिन्त्सर्वेनेमादयस्वन्न्युयम्पात-
 स्वस्तिभिःसदान् ॥६३॥ वायव्याम् ॥६॥ वयःसोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः
 गायत्री छन्दः सोमो देवता उदीच्यां सम्पुटीकरणे विनियोगः-ॐ
 वयःसोमवृते० ॥६४॥ उत्तरस्याम् ॥७॥ तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः
 जगती छन्दः ईशानो देवता ऐशान्यां सम्पुटीकरणे विनियोगः-ॐ तमी-
 शानञ्जगतस्तुम्युपस्पतिन्धियस्त्रिद्वमर्वसेहमद्वेष्यम् ॥ पूषानोयथावेद-
 सामसद्वृषेरंश्रिता पायुरद्व्यहस्वस्तये ॥६५॥ ऐशान्याम् ॥८॥ अस्मे
 रुद्रा इत्यस्य प्रगाथ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता ऊर्ध्वाच्यां सम्पुटी-
 करणे विनियोगः-ॐ अस्मे रुद्रामेहनापर्वथासोवृत्रहृत्त्ये भरहृतीस-
 जोपाह ॥ यः शंसते स्तुवते धारिः पूञ्जऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँऽ
 अवन्तु देवाः ॥६६॥ ऊर्ध्वाच्याम् ॥९॥ स्योनापृथिवीत्यस्य मेधाति-
 थिऋषिः गायत्रीछन्दः अनन्तो देवता अधोदिशि सम्पुटीकरणे विनि-
 योगः-ॐ स्योनापृथिविनो० ॥६७॥ अधोदिशि ॥१०॥ प्रातारमित्यस्य
 गर्ग ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता प्राच्यां नमस्यारे विनियोगः-

ॐ त्रातामिन्द्रं ० ॥ इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ त्वन्नोऽन्न इत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गि-
रस ऋषिः जगती छन्दः अग्निदेवता आप्रेय्यां नमस्कारे विनियोगः-
ॐ त्वन्नोऽन्नमे ० ॥ अग्नये नमः ॥ २ ॥ सुगन्धुपन्थामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः
त्रिष्टुप्छन्दः वैवस्वतो देवता दक्षिणस्यां दिशि नमस्कारे विनियोगः-
ॐ सुगन्धुपन्थां ० ॥ यमाय नमः ॥ ३ ॥ असुन्वन्तमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रि-
ष्टुप्छन्दः निर्ऋतिर्देवता नैर्ऋत्यां नमस्कारे विनियोगः- ॐ असुन्वन्तु ० ॥
निर्ऋतये नमः ॥ ४ ॥ तत्रायामीत्यस्य शुनःशेष ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो
देवता प्रतीच्यां नमस्कारे विनियोगः- ॐ तत्रायामि ० ॥ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥
आनोनियुद्धिरित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वायुर्देवता वायव्यां नम-
स्कारे विनियोगः- ॐ आनोनियुद्धिः ० ॥ वायवे नमः ॥ ६ ॥ वयसोमेत्यस्य
बन्धुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता उदीच्यां नमस्कारे विनियोगः-
ॐ वयसोम ० ॥ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगती
छन्दः ईशानो देवता ऐशान्यां नमस्कारे विनियोगः- ॐ तमीशानं ० ॥
ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ अस्मेरुद्रा इत्यस्य प्रगाथ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा
देवता ऊर्ध्वायां नमस्कारे विनियोगः- ॐ अस्मेरुद्रा ० ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ९ ॥
स्योनापृथिवीत्यस्य मेघातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता
अधोदिशि नमस्कारे विनियोगः- ॐ स्योनापृथिवि ० ॥ अनन्ताय नमः ॥
इति सम्पुटनमस्कारारूपो न्यासश्चतुर्थः ॥

अथ पञ्चमो न्यासः- यज्जाग्रतइतिपडं च शिवसङ्कल्पसूक्तस्य शिवस-
ङ्कल्प ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः मनो देवता हृदये न्यासे विनियोगः ॥ मुष्टि-
विनिर्गताङ्गुष्ठौ संयुक्ता कृत्वा हृदये संस्थाप्य ॐ यज्जाग्रतो ० ॥ येन कर्षा ० ॥

१ काण्वाशाखायां स्वैकस्या एव ऋचः शिवसङ्कल्पदृष्टायाः समाम्नातत्वात् यज्जाग्रत
इत्येक्या ऋचा हृदयन्यास इति काण्वानां विशेषः ॥

यत्प्रज्ञा० । येनेदम्भु० । यस्मिन्नृच० । सुपाराधि० । हृदयाय नमः ॥ सहस्र-
 शीर्षेतिषोडशर्चस्य पुरुषमृक्तस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां
 पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः ब्रह्मेनयज्ञमित्यस्यास्त्रिष्टुप् छन्दः जगद्धीजं
 पुरुषो देवता शिरसि न्यासे विनियोगः । मुष्टिविनिर्गताङ्गुष्ठौ संयुक्तौ
 निस्तर्जनीकौ ललाटे कृत्वा ॐ सहस्रशीर्षा० । पुरुषऽष्टुवे० । एतावा-
 नस्य० । त्रिपादुर्द्ध० । ततोऽविरा० । तस्माद्यज्ञा० । तस्माद्यज्ञा० ।
 तस्माद्भ्या० । तेष्वज्ञं० । यत्पुरुषं० । ब्राह्मणोऽस्य० । चन्द्रमा० ।
 नाभ्या० । यत्पुरुषेण० । सप्तास्या० । ब्रह्मेनयज्ञं० । शिरसे स्वाहा ॥
 अद्भ्यःसम्भृत इति षडृचस्य उत्तरनारायणस्य नारायणपुरुष ऋषिः
 आद्यानां तिस्रणां त्रिष्टुप् छन्दः चतुर्थपञ्चमयोरनुष्टुप्छन्दः अन्त्याया-
 स्त्रिष्टुप्छन्दः आदित्यो देवता शिखायां न्यासे विनियोगः ॥ मुष्टिपुटौ
 करौ कृत्वाऽङ्गुष्ठावधः प्रसक्ताग्रौ कनिष्ठे चोर्ध्वतः प्रसक्ताग्रे कृत्वा शिखां
 स्पृष्ट्वा ॐ अद्भ्यः० । वेदाहमे० । प्रजापति० । यो देवेभ्यः० । रुचम्ना० ।
 श्रीश्चते० । शिखायै वषट् ॥ आशुःशिशान इति द्वादशर्चस्याप्रतिरथस्य
 अप्रतिरथ ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता कवचन्यासे विनियोगः ।
 ॐ आशु० । सुहृकन्दने० । सऽऽर्षु० । वृहस्पते० । बलविज्ञा० । गोत्रभिदं० ।
 अभिगोत्राणि० । इन्द्रऽआसा० । इन्द्रस्य० । उद्धर्षय० । अस्माक० । अमी-
 पांश्चितं० । कवचाय हुम् । इत्युच्चार्य अङ्गुष्ठौ प्रसक्ताग्रौ तर्जन्यौ च
 त्रिकोणवत्कृत्वा मूर्द्धि पश्चान्मुखं कृत्वा उभयपार्श्वतः करौ हृदन्तं नय-
 न्कवचं न्यसेत् ॥ विभ्रादित्यस्य विभ्राद् सौर्य ऋषिः जगती छन्दः
 सूर्यो देवता उदुत्यपितितिस्रणां प्रस्फण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो
 देवता तम्पत्क्रथेत्यस्य ब्रह्मस्वर्यंभूर्ऋषिः जगतीछन्दः विश्वेदेवा देवता

अयंवेनइत्यस्य ब्रह्मस्वयंभूर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता चित्रामित्यस्य
 ब्रह्मस्वयंभूर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिः
 त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतङ्कक्षावृषी गायत्री
 छन्दः सूर्यो देवता तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो
 देवता तत्सूर्यस्येतिद्वयोः कुत्स ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता वण्महा-
 नितिद्वयोर्जमदग्निर्ऋषिः आद्यस्य बृहती छन्दः द्वितीयस्य सतो बृहती
 छन्दः सूर्यो देवता श्रायन्तऽइवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहती छन्दः सूर्यो
 देवता अद्यादेवा इत्यस्य कुत्स ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता आकृ-
 ष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता
 नेत्रत्रयन्यासे विनियोगः—ॐ ष्विभ्राद् ० । उदुस्यं ० । येनापावक्र ० । दैव्या-
 वद्धुर्द्यु ० । तम्पृत्वन्था ० । अयंवेन ० । चित्रन्देवा ० । आनऽइहा ० । यदुद्य ०
 तरणि ० । तत्सूर्यस्य ० । तन्मित्रस्य ० । वण्महा ० । वट्मूर्ध्व ० । श्रायन्त ० ।
 अद्यादेवा ० । आकृष्णेन ० । नेत्रत्रयाय वौपट् ॥ नमस्तेरुद्रेतिशतरुद्रि-
 याख्यस्य रौद्राध्यायस्य परमेष्ठी ऋषिः देवा ऋषयः प्रजापतिर्वा
 ऋषिः नमस्तेरुद्रेत्यस्य गायत्री छन्दः यातेरुद्रेत्यादीनां तिसृणामनुष्टुप्
 छन्दः अद्ध्यवोचदधिवक्तादितिष्टाणां पङ्क्तिश्छन्दः नमोऽस्तुनीलग्रीवा-
 येत्यादिसप्तानामनुष्टुप्छन्दः मानोमहान्तामितिद्वयोः कुत्सोऽपि ऋषिः
 जगती छन्दः सर्वासामेको रुद्रो देवता नमोहिरण्यवाहव इत्यादिद्रापेत्य-
 न्तःप्राक्तनेषु चतुरक्षराणां यजुषां देवी बृहती छन्दः पञ्चाक्षराणां

१ विभ्रादित्यादिकं भुवनानि पश्यन् इत्यन्तं प्रतीकचोदिताभिस्तिष्ठभिः सह सप्तदश-
 र्चमनुवाकं जप्त्वा नेत्रत्रये न्यसेत् ॥ २ नमो हिरण्यवाहव इत्यादीनां यजुषामनियताक्षरत्वा-
 च्छन्दो नास्तीत्येकेयां मते । पिह्लमते तु एकाक्षरप्रभृत्येकैकाक्षरवृद्ध्या नियताक्षराणां षडधि-
 कशताक्षरपर्यन्तानां यजुषां छन्दोविशेषनियमोऽत्येव ॥

देवी पङ्क्तिः षडक्षराणां देवी त्रिष्टुप् यजुर्गायत्री वा सप्ताक्षराणां
 देवी जगती यजुर्हृषिगवा अष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् प्रा-
 जापत्या गायत्री वा नवाक्षराणां यजुर्वृहती आसुरी जगती वा
 दशाक्षराणां यजुःपङ्क्तिः एकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् आसुरी पङ्क्तिर्वा
 द्वादशाक्षराणां यजुर्जगती आसुरी वृहती वा प्राजापत्योष्णिगवा साम-
 गायत्री वा चतुर्दशाक्षरस्य सामोष्णिक् नमोहिरण्यवाहव इत्यादीनां
 श्वपतिभ्यश्चवो नम इत्यन्तानां यजुषां हिरण्यवाहुः सेनानीर्दिशास्पति-
 रित्यादिमंत्रवर्णाविगतनामना उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नमो-
 भवायचन्द्रायचेत्यादीनां प्रत्विदतेचेत्यन्तानां यजुषां भवादयो मन्त्र-
 लिङ्गावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नम इपुकृद्भ्यो
 धनुष्कृद्भ्यश्चवो नम इत्यस्य यजुष उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा
 देवताः नमोहिरण्यवाहवइत्यादयो नमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनम इत्य-
 न्ता द्वन्द्विनः नमःसभाभ्य इत्यादयो नम आनिर्हतेभ्य इत्यन्ता जाताख्याः
 नमोवः किरिकेभ्य इत्यादीनामग्निवायुसूर्यहृद्यभूतव्याहृतीनाम् अन्यतर-
 तो नमस्काराः बहवो रुद्रा देवताः द्रापेइत्यस्या उपरिष्ठावृहती छन्दः इमा-
 रुद्रायेत्यस्याः कुत्सोपि ऋषिः जगती छन्दः धातइत्यस्या अनुष्टुप्छन्दः
 परिनइतिद्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः विंकिरिद्रसहस्राणीतिद्वयोः अनुष्टुप्छन्दः सप्ता-
 नामेको रुद्रो देवता असङ्ख्यातेत्यादीनां दशानामनुष्टुप्छन्द बहवो
 रुद्रा देवताः नमोस्तुरुद्रेभ्य इत्यादीनां त्रयाणां यजुषां धृतिश्छन्दः बहवो
 रुद्रा देवताः सकलाध्यायस्य शतशीर्षो रुद्रो वा देवता अह्नन्यासे
 विनियोगः—ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव इत्यारभ्य तमेपाञ्जम्भेदध्मः इत्यन्तं

१ ममो व किरिकेभ्य इति चतुर्दशाक्षरं सामोष्णिगेऽमेव ॥ २ तत्र देवतामन्त्रव-
 र्णदेशे चतुर्ध्वन्त्या प्रथिताः ॥

पैतृषष्टिकण्डिकात्मकशतरुद्रियाख्यरौद्राध्यायं जप्त्वा अस्त्राय फट्
इत्युच्चार्य परस्परतालं कुर्वन् अहं न्यसेत् ॥ इति पञ्चमो न्यासः ॥

अथ पैष्ठो न्यासः—प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। इस्तयो-
र्हरस्तिष्ठतु। वाहोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरेऽग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे
वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोः
सूर्याचन्द्रमसौ तिष्ठताम्। कर्णयोरश्विनौ तिष्ठताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु
मूर्द्ध्नि भादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि महापुरुषस्तिष्ठतु। शिखायां चामुण्डा
तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करो तिष्ठे-
ताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। बहिःसर्वतोऽग्निर्ज्वालामालापरिवृतस्तिष्ठतु।
सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवतास्तिष्ठन्तु सर्वाङ्गे मां रक्षन्तु ॥ इति षष्ठो न्यासः ॥

अथ लघुन्यासः—अग्निं वाचि श्रित इत्यादिभिर्मन्त्रैर्यथालिङ्गमङ्गानि
संस्पृशेत्-ॐ अग्नि मे वाचि श्रितः वाक् हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं
ब्रह्मणि-वाचं स्पृशेत् ॐ वायु मे प्राणे श्रितः प्राणो हृदये हृदयं मयि अहममृते
अमृतं ब्रह्मणि-हृदयं स्पृशेत् ॐ मूर्ध्नि मे चक्षुषि श्रितः चक्षुर्हृदये हृदयं
मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि-चक्षुषी स्पृशेत् ॐ चन्द्रमा मे मनसि श्रितः
मनो हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि-वक्त्रं स्पृशेत् ॐ अंदिशो
मे श्रोत्रे श्रिताः श्रोत्रं हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि-श्रोत्रे
स्पृशेत् ॐ आपो मे रेतसि श्रिताः रेतो हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं
ब्रह्मणि-लिङ्गे स्पृशेत् ॐ पृथिवी मे शरीरं श्रिता शरीरं हृदये हृदयं मयि
अहममृते अमृतं ब्रह्मणि-शरीरं स्पृशेत् ॐ ओपधिवनस्पतयो मे लोमसु

१ चतुः षष्टिकण्डिकात्मको रौद्राध्यायं इति काष्कानां विशेषः ॥ २ स च अभिदेक एव
भवति ॥ ३ अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च चन्द्रमा दिश एव च । भावः पृथिव्योपधय इन्द्रः पर्जन्य
एव च । ईशान आत्मा च पुनर्लघुन्यासे त्रयोदश ॥ ४ मनसः स्थानत्वात् ॥

श्रिताः लोमानि हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि रोमकृपान्स्पृ
 शेत् । ॐ इन्द्रो मे बले श्रितः बलं हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि
 सर्वाङ्गं स्पृशेत् । ॐ पर्जन्यो मे मूर्द्धि श्रितः मूर्द्धा हृदये हृदयं मयि अहममृते
 अमृतं ब्रह्मणि—मस्तकं स्पृशेत् । ॐ ईशानो मे मन्यौ श्रितः मन्युर्हृदये हृदयं
 मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि—हृदयं स्पृशेत् । ॐ आत्मा म आत्मनि श्रितः
 आत्मा हृदये हृदयं मयि अहममृते अमृतं ब्रह्मणि—वक्षः स्पृशेत् । ॐ पुनर्म
 आत्मा पुनरायुरागात्पुनः प्राणः पुनराकृतमागात् । वैश्वानरो रश्मिभिर्वा
 वृधानः अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः । सर्वशरीरं स्पृशेत् ॥ एषत इत्यस्य
 प्रजापतिर्ऋषिः सामपङ्क्तिर्यजुर्जगती छन्दसी रुद्रो देवता योनिमुद्राप्रदर्श-
 ने विनियोगः—ॐ एष ते रुद्रभागः सहस्वस्त्रांश्चिक्यात् क्षुपस्वस्वाहुपैते
 रुद्र भागऽआयुस्ते पुशुः ॥ १३ ॥ अनेन मन्त्रेण योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥
 इति महान्यास (लघुन्यास) प्रयोगः ॥

॥ ४२ ॥ अथ रुद्रपूजनप्रयोगः ॥

आत्मनः श्रीरुद्रस्वरूपेण ध्यानम्-पश्चात्स्यं सौम्यमात्मानं सर्वो-
 भरणभूषितम् । मृगलाञ्छनमूर्द्धानं शुद्धस्फटिकसन्निभम् ॥ फणा
 सहस्रविस्फूर्जेदुरगेन्द्रोपवीतिनम् । सप्तार्चिर्विज्वलज्ज्वालजटाजूटकिरी
 टिनम् ॥ सहस्रकरविभ्राजत्खट्वाङ्गादिविभूषितम् ॥ ब्रह्माण्डखण्ड-

१ क्रोधादिस्थानत्वात् २ चित्तस्थानत्वात् ३ रुद्रकल्पद्रुमे—एव न्यासविधिं कृत्वा
 ततो मुद्रां प्रदर्शयेत् । शिवपुष्टि शिवस्योक्ता सैव शान्तिप्रदायिनी ॥ एष ते रुद्रभाग
 इति मुद्राप्रदर्शनम् । श्रीकाम शीर्ष्णि कुर्वीत तेजस्कामस्तु नेत्रयोः ॥ मुखे त्वनाद्यकामस्तु
 भीकायां रोगनाशने । हृदये सर्वकामस्तु नाभौ ज्ञानी प्रदर्शयेत् ॥ प्रजाकामस्तु गुह्ये वै पञ्चव-
 भास्तु ऽङ्गयोः । जानुभ्यां प्रामकामस्तु राष्ट्रकामस्तु पादयोः ॥ वशीकरणकामस्तु वामहस्ते
 प्रदर्शयेत् । पापक्षयेऽभिचारे च व्याधिरुपगमे तथा ॥ बहि शरीरास्कुर्वीत शिवस्याज्ञेति च
 स्मरन् । एव प्रदर्शयित्वा तु ततो ध्यानं समाभेत् ॥

वत्काशत्कपालवरधारिणम् । देदीप्यमानं चन्द्राकंजवलदग्नित्रिनेत्रिणम् ॥
 त्रैलोक्यद्योतिकृद्भास्वत्स्कन्धे कपालमालिनम् । दीप्तनक्षत्रमालावद-
 क्षमालाधरं विभुम् ॥ निःशेषवारिसम्पूर्णं रुमण्डलुकरं त्वजम् । जग-
 द्भाधिर्यकृन्नादमुचं डमरुधारिणम् ॥ केयूरवद्धनागेन्द्रमूर्द्धमणिविरा-
 जितम् । मेखलाकिङ्किणीमालामुक्तारावविराजितम् ॥ वर्धराव्यक्त-
 निर्गच्छद्गम्भीरारावनूपुरम् । व्याघ्रचर्मपरीधानं गजचर्मवसान-
 कम् ॥ सहेमपट्टनीलाभव्याघ्रचर्मोत्तरीयकम् । विद्युलताप्रभागङ्गा-
 भातमूर्द्धं सुरार्चितम् ॥ समस्तभुवनाधारधरणोक्षासनस्थितम् । त्रैलो-
 क्यवनितामूर्द्धनतदेहार्धपार्वतीम् ॥ लक्ष्मूर्यप्रभाभास्वत्रैलोक्यकृत-
 पाण्डुरम् । अमृतप्लुतहृष्टाङ्गं दिव्यभोगसमाकुलम् ॥ दिग्देवतासमायुक्तं
 सुरासुरनमस्कृतम् । नित्यं शाश्वतमव्यक्तं व्यापिनं नन्दिनं ध्रुवम् ॥
 इत्थं श्रीरुद्रस्वरूपमात्मानं ध्यात्वा आत्मानि पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण
 श्रीरुद्रस्वावाहनम्—ॐ आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः ।
 आराधयामि भक्त्या त्वां गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीरुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ
 इत्यात्मानि पुष्पाक्षतप्रक्षेपणं कुर्यात् ॥ त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः
 अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता स्वात्मानि श्रीरुद्रपूजने विनियोगः
 ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे ॥ ६० ॥ स्वशरीरेऽवस्थितश्रीरुद्रस्वरूपिणे जीवा-
 त्मने नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ नैवेद्यं परिकल्पयामि ॥
 स्वदक्षिणभागे साधारस्य ताम्रपात्रस्य स्थापनम् ॥ नमःशम्भवायेत्यस्य
 परमेष्ठी ऋषिः अत्र सप्ताक्षराणां यजुरुष्णिक् छन्दः षडक्षराणां यजुर्गा-
 यत्री छन्दः शम्भवाद्यो मन्त्रवर्णावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो

१ द्विजो ध्यात्वेवमात्मानं त्र्यम्बकरुद्रस्वरूपिणम् । त्र्यम्बकस्तान्तरामः सन् ततो
 यजन्मारयेत् ॥ २ अत्र नैवेद्यमपि मानसं परिकल्पयेदिति महर्षिः ॥

रुद्रा देवता अर्घ्यपूरणे विनियोगः—ॐ नमः+शम्भुवाय० ॥ ११ ॥
 अनेन मन्त्रेण तीर्थोदकेनाद्यं पूरयित्वा तस्मिन्गन्धासतपुष्पाणि प्रक्षिपेत् ।
 नमः शम्भुवायेत्यस्य परमेष्ठीं श्लाघिः अत्र सप्ताक्षराणां यजुरुष्णिक्
 छन्दः षडक्षराणां यजुर्गायत्री छन्दः शम्भुवादयो मन्त्रवर्णावगता
 अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवता अर्घ्याभिमन्त्रणे विनियोगः—
 ॐ नमः+शम्भुवाय० । इति मन्त्रमष्टवारं जपित्वा अर्घ्याभिमन्त्रणं कुर्यात् ।
 नमः शम्भुवायेत्यस्य परमेष्ठीं श्लाघिः अत्र सप्ताक्षराणां यजुरुष्णिक्
 छन्दः षडक्षराणां यजुर्गायत्री छन्दः शम्भुवादयो मन्त्रवर्णावगता
 अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः सम्भारप्रोक्षणे विनियोगः—
 ॐ नमः+शम्भुवाय० । इति मन्त्रेण पात्रान्तरग्रहीतेन तदर्थोदकेन पूजा-
 सम्भारान्सम्प्रोक्षयेत् । [आसनाद्युपचारसमर्पणादि बक्ष्यमाणं सर्वं
 देवकार्यमनेनैवार्थोदकेन कर्तव्यम्] अथासतैः पुष्पैर्वा पीठपूजा ।
 पीठम्याघोभागे—ॐ प्राधारशक्त्यै नमः । ॐ हूर्माय नमः । ॐ अनन्ताय
 नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ विचित्रदिव्यमण्डपाय
 नमः । मण्डपपरितः—ॐ कल्पद्रुमेभ्यो नमः । ॐ मुवर्णवेदिकार्यै
 नमः । ॐ रत्नासिंहासनाय नमः । एभिर्मन्त्रैर्कुर्यात्परि पूजा ॥ सिंहासन-
 पादेषु आग्नेय्याम्—ॐ धर्माय नमः । नैऋत्याम्—ॐ ज्ञानाय नमः ।
 पाप्य्याम्—ॐ वरुणाय नमः । ऐशान्याम्—ॐ ऐश्वर्याय नमः ॥ गार्ग्ये
 पूर्स्याम्—ॐ भ्रमर्माय नमः । दक्षिणम्याम्—ॐ भ्रमर्माय नमः ।
 पश्चिमायाम्—ॐ भ्रमर्माय नमः । उत्तरस्याम् ॐ भ्रमर्माय
 नमः ॥ गिह्यामनोपरि—ॐ न्यासारायानन्ताय नमः । ॐ पद्माय
 नमः । ॐ आनन्दरुन्दाय नमः । ॐ संविद्याय नमः । ॐ अज्ञानमय-
 पत्रेभ्यो नमः । ॐ पिकामयकेगरेभ्यो नमः । ॐ पञ्चाशद्गुणाद्यकार्णि-

कार्यै नमः ॥ पद्मस्य दलकेसरकर्णिकास्वर्चनम् । पद्मदलेषु—ॐ
 ॐ सत्त्वाय नमः । केसरेषु—ॐ ॐ रजसे नमः ॥ कर्णिकायाम्—ॐ मँ
 तमसे नमः ॥ एवं प्रतित्रिकं सर्वत्र यथा—पद्मदलेषु—ॐ ॐ द्वादश-
 कलात्मनेऽर्कमण्डलाय नमः । केसरेषु—ॐ ॐ षोडशकलात्मने सोम-
 मण्डलाय नमः ॥ कर्णिकायाम्—ॐ मँ दशकलात्मनेऽग्निमण्डलाय
 नमः ॥ पद्मदलेषु—ॐ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ केसरेषु—ॐ ॐ
 विष्णवे नमः ॥ कर्णिकायाम्—ॐ मँ महेश्वराय नमः ॥ पद्मदलेषु—
 ॐ ॐ आत्मने नमः ॥ केसरेषु—ॐ ॐ अन्तरात्मने नमः ॥ कर्णिका-
 याम्—ॐ मँ परमात्मने नमः ॥ पद्मेषु सर्वत्र—ॐ आँ ज्ञानात्मने
 नमः ॥ स्वाग्रतः पद्मपूर्वादिपत्रेषु—ॐ वामायै नमः । ॐ ज्येष्ठायै नमः ।
 ॐ रौद्र्यै नमः । ॐ काल्यै नमः । ॐ कलविकरण्यै नमः । ॐ बलविकरण्यै
 नमः । ॐ बलप्रमथिन्यै नमः । ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः । इत्यष्टौ शक्तीः
 सम्पूज्य । कर्णिकायाम्—ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ॐ नमो भगवते सकल-
 गुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः । इति कर्णिकायां पुष्पा-
 झलिना पीठं सम्पूज्य सत्यज्ञानानन्तानन्दरूपं परं धामैव संकलं पीठ-
 मिति चिन्तयेत् ॥ इति पीठपूजा ॥ पीठोपरि स्थापितपात्रे शिवलिङ्गं
 धातुमयीं शैवीं प्रतिमां वा प्रतिष्ठाप्य आवाहनम्—अञ्जलौ पुष्पाण्या-
 दाय सूर्यमण्डले स्वहृत्कमले वा श्रीरुद्रं ध्यात्वा—ॐ आत्वावहन्तु हरयः
 सचेतसः श्वेतैरश्वैः सहकेतुमद्भिः । वाताजवैर्बलवद्भिर्मनोजवैरायाहि
 शीघ्रं मम हृदयाय शर्वोम् ॥ ॐ ज्येम्बर्कं यजामहे ० । सद्योजातं प्रपद्यामि
 भगवन्तं सहस्राक्षं विरूपाक्षं महादेवं साम्भशिवम् आवाहयामि । इति सूर्य-

१ एवं ज्येम्बर्कं यजामहे इति मन्त्रेण सह समुचितैः सद्योजातं प्रपद्यामीति मन्त्रैः
 सर्वेऽप्युपचाराः कार्या इति द्रव्यत्पद्मे ॥

दक्षिणवक्रपूजने विनियोगः । ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापका-
 शिनी ॥ तथा नस्तद्ब्रह्मा शन्तमया गिरिशन्तामिचाकशीहि ॥ ३६ ॥
 अधोराय दक्षिणवक्राय नमः गन्धादिनीलाब्जकरवीरपुष्पाणि समर्प-
 यामि ॥ गन्धादिदूर्वाङ्कुरार्कपुष्पैश्च पूर्ववक्रपूजनम्—यत्पुरुषमित्यस्य
 नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः जगद्बीजं पुरुषो देवता प्राग्वक्रपूजने
 विनियोगः—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ॥ मुखङ्कि-
 मस्यासीत्किम्वाह किमुरु पादाऽ उच्येते ॥ ३७ ॥ तत्पुरुषाय पूर्व-
 वक्राय नमः गन्धादिदूर्वाङ्कुरार्कपुष्पाणि समर्पयामि ॥ गन्धादिविल्वक-
 नकपुष्पैश्च ऊर्ध्ववक्रपूजनम्—तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगती
 छन्दः ईशानो देवता ऊर्ध्ववक्रपूजने विनियोगः—ॐ तमीशानञ्जगतस्त-
 स्त्थुप्ररप्पातिन्धियञ्जिन्वमवंसे ह्रमहे ह्रयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसं-
 द्बुधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ३८ ॥ ईशानायोर्ध्ववक्राय नमः
 गन्धादिविल्वकनकपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति रुद्रकल्पद्रुमान्तर्गताभि-
 पेकपरिच्छेदोक्तैकतरप्रकारेण पञ्चवक्रपूजनम् ॥

॥ अथ प्रकारान्तरेण पञ्चवक्रपूजा ॥

अथ पश्चिमवक्रपूजा—(प्रतिवक्रपूजने नमस्कारादि कर्तव्यम्) सद्यो-
 जातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सद्योजातो देवता श्वेतवर्ण
 हंसवाहनं पश्चिमवक्रं पृथिवीतत्त्वं पश्चिमवक्रनमस्कारे विनियोगः—
 ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे
 भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ सद्योजाताय श्वेतवर्णाय हंसवाहनाय
 पश्चिमवक्राय पृथिवीतत्त्वाय सृष्टिरूपात्मने ब्रह्मणे नमः हाँ इति प्रणम्य

धनुर्वाणमुद्राप्रदर्शनम् ॥ सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिण्डुपु
 छन्दः सद्योजातो देवता श्वेतवर्णं हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवीतत्त्वं
 पश्चिमवक्त्रपूजने विनियोगः-ॐसद्योजातं० ॥ सद्योजाताय श्वेतवर्णाय
 हंसवाहनाय पश्चिमवक्त्राय नमः इत्यनेन गन्धमनःशिलाचन्दनश्वेता-
 क्षतश्वेतपुष्पगुग्गुलधूपघृतदीपपायसनैवेद्यादिभिः पूजनम् । ततः
 कलापूजनम्-ॐऋद्धये नमः । ॐसिद्धये नमः । ॐश्रुत्यै नमः । ॐलक्ष्म्यै
 नमः । ॐवेधायै नमः । ॐकान्त्यै नमः । ॐस्वधायै नमः । ॐप्रभायै
 नमः । इत्यष्टौ कलाः सम्पूज्य ध्यानम्-प्रालेयामलविन्दुकुन्दयवलं
 गोक्षीरफेनप्रभं भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदमनज्वालावलीलोचनम् । ब्रह्मे-
 न्द्रादिमरुद्गणैः स्तुतिपरंरभ्यर्चितं योगिभिर्वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं
 स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥ शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम् ।
 शुद्धस्फटिकसङ्कशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ॥ इति पश्चिमवक्त्रपूजा ॥

अथोत्तरवक्त्रपूजा-वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः
 विष्णुर्देवता कृष्णवर्णं गरुडवाहनम् उत्तरवक्त्रम् आपस्तत्त्वम् उत्तरवक्त्र-
 नमस्कारे विनियोगः-ॐवामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय
 नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः ॥ वामदेवाय
 कृष्णवर्णाय गरुडवाहनायोत्तरवक्त्राय आपस्तत्त्वायामृतरूपात्मने विष्णवे
 नमः ॥ इति प्रणम्य पद्ममुद्राप्रदर्शनम् ॥ वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः

१ वामस्य मध्यमांशं तु तर्जन्वप्रे नियोजयेत् । अनामिकां कनिष्ठां च तरयाङ्गुष्ठेन
 पीडयेत् । दर्शयेद्दक्षिणस्त्रन्धे धनुर्मुद्रायमीरिता ॥ दक्षमुष्टिस्थतर्जन्व्या दीर्घया बाणमुद्रिका ॥ १
 श्वेताक्षतैः श्वेतपुष्पैः पूजयेदंसवाहनम् । सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि पूजनेन न संशयः ॥ ३ ऋद्धिः
 विद्धिर्भुतिर्लक्ष्मीर्मेधा कान्तिः स्वधा प्रभा । सद्योजातकला ह्येता ह्यष्टौ च परिकीर्तिताः ॥
 * करौ तु संहतौ कृत्वा संमुखंघुवताङ्गुली । तस्मान्तर्मिलिताङ्गुष्टौ कुर्यादेवाऽञ्जमुद्रिका ॥

जगतीच्छन्दःविष्णुर्देवता कृष्णवर्णं गरुडवाहनम् उत्तरवक्रम् आपस्तत्वम्
 उत्तरवक्रपूजने विनियोगः-ॐ वामदेवाय ० ॥ वामदेवाय कृष्णवर्णाय
 गरुडवाहनायोत्तरवक्राय नमः इत्यनेन हरिचन्दनतुलसीशतपत्रपुष्प-
 पञ्चसौगन्धकधूपघृतपक्वगोधूमाम्बुनैवेद्यादिभिः पूजनम् । ततः कौला-
 पूजनम्-ॐ रजसे नमः । ॐ रक्षायै नमः । ॐ रत्यै नमः । ॐ पाल्यायै
 नमः । ॐ कामायै नमः । ॐ सञ्जीविन्यै नमः । ॐ प्रियायै नमः । ॐ बुद्धयै
 नमः । ॐ क्रियायै नमः । ॐ ध्यायै नमः । ॐ भ्रामर्यै नमः । ॐ मोहिन्यै
 नमः । ॐ ज्वरायै नमः । इति त्रयोदशकलाः सम्पूज्य ध्यानम्-गौरं
 कुङ्कुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगण्डस्थलं भ्रूविधेपकटाक्षवीक्षणलस-
 तसंसक्तकर्णोत्पलम् । स्निग्धं भिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतं
 वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं वक्रं हरस्योत्तरम् ॥ वामदेवं सुवर्णाभं
 दिव्यास्त्रगणसेवितम् । अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ॥
 इत्युत्तरवक्रपूजा ॥

अथ दक्षिणवक्रपूजा-अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
 रुद्रो देवता नीलवर्णं कूर्मवाहनं दक्षिणवक्रं तेजस्तत्त्वं दक्षिणवक्रनमस्कारे
 विनियोगः-ॐ अघोरेभ्योयघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्यो
 नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ अघोराय नीलवर्णाय कूर्मवाहनाय दक्षिण-
 वक्राय तेजस्तत्त्वाय विश्वरूपात्मने कालाशिरुद्राय नमः हूँ इति प्रणम्य

१ तुलसीशतपत्रैश्च पूजयेद्रुद्रामनम् । सर्वदोषविनाशेन प्राप्नोति श्रियसम्पदम् ॥ २ कङ्कोल-
 'पुष्पधूपरजातीफललवङ्गकैः । सुगन्धपत्रकं प्रोक्षमायुर्वेदप्रकाशकैः ॥ ३ रजो रक्षा रतिः
 पाल्या कामा सञ्जीविनी प्रिया । बुद्धिः क्रिया च धात्री च भ्रामरी मोहिनी ज्वरा । वामदेव-
 कला सेतास्त्रयोदश वरानने ॥

ज्ञानमुद्रापदर्शनम् । अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता नीलवर्णं कूर्मवाहनं दक्षिणवक्रं तेजस्तत्त्वं दक्षिणवक्रपूजने विनियोगः—ॐ अघोरेभ्यो ० ॥ अघोराय नीलवर्णाय कूर्मवाहनाय दक्षिणवक्राय नमः इत्यनेन कृष्णागरुचन्दननीलोत्पलकरवीरपुष्पसितागरुधूपपापान्ननैवेद्यादिभिः पूजनम् । ततः कलापूजनम्—ॐ तमसे नमः । ॐ मोहायै नमः । ॐ क्षयायै नमः । ॐ निद्रायै नमः । ॐ व्याधये नमः । ॐ मृत्यवे नमः । ॐ क्षुधायै नमः । ॐ तृषायै नमः । इत्यष्टौ कलाः सम्पूज्य ध्यानम्—कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यावृत्तपिङ्गेषणं खण्डेन्दुद्वयमिश्रितांशुदशनमोद्भिन्नदंष्ट्राद्गुरम् । सर्पमोतकपालशक्तिसकलं व्याकीर्णसच्छेखरं वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिलभ्रूमङ्गरौद्रं मुखम् ॥ नीलाभ्रवर्णमौकारमयोरं घोरदंष्ट्रकम् । दंष्ट्राकरालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम् । इति दक्षिणवक्रपूजा ॥

अथ पूर्ववक्रपूजा—तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता पीतवर्णम् अश्ववाहनं पूर्ववक्रं वायुतत्त्वं पूर्ववक्रनमस्कारे विनियोगः । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । तत्पुरुषाय पीतवर्णायश्ववाहनाय पूर्ववक्राय वायुतत्त्वाय चैतन्यात्मने आदित्याय नमः ॐ इति प्रणम्य कवचमुद्रापदर्शनम् । तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता पीतवर्णम् अश्ववाहनं पूर्ववक्रं वायुतत्त्वं पूर्ववक्रपूजने विनियोगः—ॐ तत्पुरुषाय ० ॥ तत्पुरुषाय पीतवर्णायश्ववाहनाय पूर्ववक्राय नमः इत्यनेन हरिताल-

- १ तर्जन्यङ्गुली सत्त्वावप्रतो हृदि विन्यसेत् । ज्ञानमुद्रा भवेदेया कथिता तत्त्वदर्शिभिः ।
 २ नीलोत्पलैः करवीरैः पूजयेत्कूर्मसंस्थितम् । सर्वबाधाविनाशाय ज्ञानमोक्षप्रसाधकम् ॥
 ३ तमो मोहा ध्यान्ना म्पाधिर्मृत्युः क्षुधा तृषा । अघोरस्य कला ह्येता षष्टौ च परिकीर्तिताः ॥
 ४ कवचमुद्रालक्षणम्—करदन्त्राङ्गुलयो वर्मणि स्युः ॥

चन्दनदूर्वाङ्कुरार्कपुष्पान्यतरपुष्पकृष्णागरुधूपमोदकनैवेद्यादिभिः पूज-
नम् । ततः कलापूजनम्—ॐनिवृत्त्यै नमः । ॐप्रतिष्ठायै नमः ।
ॐविद्यायै नमः । ॐशान्त्यै नमः । इति चतस्रः कलाः सम्पूज्य
ध्यानम्—संवर्त्ताग्निताडितप्रतप्तकनकप्रस्पद्धितेजोरुणं गम्भीरस्मृतिनिःस-
तोग्रदशनप्रोद्भासिताम्राधरम् । बालेन्दुद्युतिलोलपिङ्गलजटाभारप्रबद्धो-
रगं वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः ॥ बालार्कवर्णमारक्तं
पुरुषं च तडित्प्रभम् । दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वादिङ्मुखम् ॥
इति पूर्ववक्रपूजा ॥

अथोर्ध्ववक्रपूजा—ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः
रुद्रो देवता गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनम् ऊर्ध्ववक्रम् आकाशतत्त्वम् ऊर्ध्व-
वक्रनमस्कारे विनियोगः । ॐईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ॥ ईशानाय
गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनायोर्ध्ववक्रायाकाशतत्त्वायाव्यक्ताय सर्वव्याप-
कात्मने नमः ह्रीं इति प्रणम्य महामुद्रां (व्यापकमुद्रा) प्रदर्शनम् ।
ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता गोक्षीरवर्णं
वृषभवाहनम् ऊर्ध्ववक्रम् आकाशतत्त्वम् ऊर्ध्ववक्रपूजने विनियोगः ।
ॐईशानः सर्व० ॥ ईशानाय गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनायोर्ध्ववक्राय

१ दूर्वाङ्कुरैरर्कपुष्पैः पूजयेदश्वनाहनम् । भायुर्ध्वं वर्धते तत्र विशिष्टफलदायकम् ॥ २
निवृत्तिश्च प्रतिष्ठा च विद्या शान्तिस्तथैव च ॥ तत्पुरुषकला हेताश्चतस्रश्च न सप्तयः ॥
३ उत्तमौ ताडशावेव व्यापकाञ्जलिक करौ । ताडशौ संयुतावेव नतानौ करौ व्यापका
प्रतिकं नाम मुद्रा ॥

नमः । इत्यनेन भस्मचन्दनविल्वपत्रकनकपुष्पक्रतुभवान्यपुष्पहरिचन्द-
नधूपशर्करादध्योदननैवेद्यादिभिः पूजनम् । ततः कलापूजनम्—
ॐ शशिन्यै नमः । ॐ अङ्गनायै नमः । ॐ इष्टायै नमः । ॐ मरीच्यै नमः
ॐ ज्वालिन्यै नमः । इति पञ्चकलाः सम्पूज्य ध्यानम्—व्यक्ताव्यक्त
गुणोत्तरं सुवदनं पट्टत्रिंशत्त्वाधिकं तस्मादुत्तरतत्त्वमक्षयमिति ध्येय
सदा योगिभिः । वन्दे तामसवर्जितेन मनसा मूर्क्षमातिसूक्ष्मं परं शान्तं
पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम् । ईशानं मूर्क्षमव्यक्तं तेजःपुञ्ज-
परायणम् । अमृतस्त्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पञ्चमं सुखम् ॥ इत्यूर्ध्ववक्त्रपूजा ॥

इति पञ्चवक्त्रपूजां कृत्वा देववामभागे शक्तिपूजनम्—ॐ उमायै नमः ।
ॐ शङ्करप्रियायै नमः । ॐ पार्वत्यै नमः । ॐ गौर्यै नमः । ॐ काल्यै
नमः । ॐ कालिन्यै नमः । ॐ कोट्यै नमः । ॐ विश्वधारिण्यै नमः । ॐ ह्रीं
नमः । ॐ ह्रीं नमः । ॐ शङ्कदेव्यै नमः । ततः—ॐ गणपतये नमः ।
ॐ कार्तिकाय नमः । ॐ पुष्पदन्ताय नमः । ॐ कपर्दिने नमः । ॐ भैरवाय
नमः । ॐ शूलपाणये नमः । ॐ ईश्वराय नमः । ॐ दण्डपाणये नमः ।
ॐ नन्दिने नमः । ॐ महाकालाय नमः । इति सम्पूज्य ततः एकादश-
रुद्रार्चनम्—ॐ अघोराय नमः । ॐ पशुपतये नमः । ॐ शर्वाय नमः ।

१ अत्र केचित् भस्मचन्दनस्थाने यक्षकर्मचन्दनेन पूजनं कार्यमिति पठन्ति ।
यक्षकर्मचन्दनम्—कस्तूरिफाया द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुङ्कुमस्य च । चन्दनस्य त्रयो भागा
शशिनस्त्वेक एव हि ॥ परं त्वस्माभिस्त्वत्र रक्षकलद्रुमसंमतेन भस्मचन्दनमेव सगृहीतम् ॥ २
हसहंसेति यो श्रूयाद्भयो नाम सदाशिवः । वित्तैः कनकपुष्पैश्च अन्यैर्क्रतुभ्यैस्तथा । सौख्यमो
क्षप्रदातारं पूजयेद्दृष्ट्वादनम् ॥ ३ शशिनी अद्भदा इष्टा मरीचिर्ज्वालिनी तथा । ईशानस्य
कला पद्य निरञ्जनपदानुगाः । ४ अस्याश्च पद्यवक्त्रपूजाया देवप्रतिष्ठायां विहितत्वेन खदजप
खदशेामहदग्निभेकचैर्नैर्बिहितत्वेन च प्रमाणाभावादान्तर एव तस्या प्रमाणम् ॥

ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः । ॐ त्र्यम्बकाय नमः । ॐ कपर्दिने नमः । ॐ भैरवाय नमः । ॐ शूलपाणये नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ महेश्वराय नमः ॥ इति ॥

ततो रुद्राभिपेकं कृत्वा शुद्धोदकस्नानवस्त्रोपवीतगन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य (समयश्चेत् शिवसहस्रनामभिः (१०००) अष्टोत्तरशतनामभिर्वा (१०८) विल्वार्पणं कुर्यात्) तदनंतरं सौभाग्यद्रव्यधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणार्तिक्यप्रदक्षिणामंत्रपुष्पाञ्जलिविशेषार्घ्याद्युपचारान् समर्प्य ॥ ॐ नमः शिवायेति शिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य यथाशक्ति जपं कृत्वा समर्प्य ॥ राजोपचारान्-छत्रं च चामरं चैव व्यजनं दर्पणं तथा । पादुकानि च सर्वाणि गृह्यताम् परमेश्वर ॥ (अभावे कल्पयामि) इत्यर्पयित्वा साष्टाङ्गं प्रणैमेत् ॥

अथ शिवमानसपूजा—रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदान्वितं चन्दनम् । जातीचम्पकविल्वपत्रसाहितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥ सौत्रणं मणिरत्नखण्डरचिते पात्रे घृत पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधिघृतं रम्भाफलं पानसम् । शाकानामपुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्त्रीकुरु ॥ २ ॥ छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणा-मेरिमृदङ्गकाहलरुढागीनं च नृत्यं तथा । साष्टाङ्गप्रणतिः स्तुतिर्वहु-विधा चैतत्समस्तं मया सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृह्याण

१ सम्पूर्णरुद्राभिपेकप्रयोगस्तु ६१ पृष्ठे द्रष्टव्य ॥ २ समन्त्ररुद्रयोगस्तु शिवपञ्चाक्षरं नपूजाप्रयोगे (४५ पृष्ठे) द्रष्टव्य ॥ ३ उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा । परम्या कराम्या जलुम्या प्रणामोऽशाङ्क उच्यते ॥

प्रभो ॥ ३ ॥ आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । सञ्चारः पदयोः
प्रदक्षिणाविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं
शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण-
नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवमानसपूजास्तोत्रम् ॥

ध्यानम्—त्रिलोचनं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम् । नागयज्ञोपवीतं च
व्याघ्रचर्मोत्तरीयकम् ॥ वृषस्कन्धसमारूढमुमादेहार्धधारिणम् । अमृते-
नाप्लुतं शान्तं चन्द्रार्धकृतशेखरम् ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं जटामुकुटप-
ण्डितम् । वरदाभयहस्तं च सर्वकामफलपदम् ॥ एवं ध्यायेद् द्विजः
सम्यगनङ्गाङ्गहरं हरम् ॥ स्तुतिः—अनादिनिधनो रुद्रो गीयते श्रुतिभिः
सदा । राजसेन स्वयं ब्रह्मा सात्त्विकेन स्वयं हरिः ॥ तामसेन स्वयं
रुद्रस्त्रितयं त्वयि संस्थितम् । नमामि त्वां विरूपाक्ष नीलग्रीव नमोऽस्तु
ते ॥ त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यमुमादेहार्धधारिणे । त्रिशूलधारिणे तुभ्यं
भूतानां पतये नमः ॥ पिनाकिने नमस्तुभ्यं नमो मीढुष्टमाय च ।
नमामि त्वां महाभूतपतये त्वां नमाम्यहम् ॥ स्वयं भिक्षान्नभोक्ता च
भक्तानां राज्यदः स्वयम् । सूर्यरूपं समासाद्य देहिनां देहदायकः ॥
यतीनां मुक्तिदस्त्वं च भुक्त्यर्थिनां च भुक्तिदः । यदृच्छया सर्वमिदं
ततं मध्ये च पालितम् ॥ अन्ते च विलयं नीतं शक्तिः कस्य भवा-
दृते ॥ मन्त्रहीना क्रियाहीना भक्तिहीना महेश्वर । पूजा सम्पूर्णतां
यातु त्वत्प्रसादात्त्रिलोचन ॥ अनुस्वारेण हीनस्य जपस्याम्नोदितस्य

च । दोषाः प्रयान्तु नाशं च त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ महाहृद्राभिपेकोऽयं
 न्यूनो वाऽप्यधिकोऽपि वा । सम्पूर्णस्त्वत्प्रसादाच्च भूयाद्भूतिविभूषण ॥
 इति स्तुत्वा ॥ माङ्गुखा ऋत्विजः उदङ्मुखयजमानहस्ते श्रेयः-
 सम्पादनं कुर्युः—

श्रेयोदानविधिः—ॐशिवा आपः सन्त्वितिमन्त्रेण यजमानहस्ते
 जलप्रक्षेपः । ॐसौमनस्यमस्त्विति पुष्पाणां प्रक्षेपः । ॐअक्षतञ्चारिष्टञ्चा-
 स्त्वित्यक्षतानां प्रक्षेपः । ॐदीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्विति
 पुनर्जलप्रक्षेपः । तत आचार्यः साक्षतपूर्णाफलं गृहीत्वा “ भवान्नियोगेन
 मया अमुकसंख्याकरेभिर्ब्राह्मणैः सह अभिपेकात्मकामुकरुद्रकृतेन
 यज्जातं श्रेयस्तत्तुभ्यमहं सम्प्रददे । तेन त्वं श्रेयस्वी भव” इति पूर्णाफलं
 यजमानहस्ते दद्यात् ॥ यजमानो “भवामि” इति ब्रूयात् । तत अथेत्यादि०
 देशकालौ सङ्कीर्त्य कृतस्याभिपेकात्मकामुकरुद्रकर्मणः साङ्गन्तासिद्धये
 आचार्यादीनामर्चनं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ आचार्यायेदं पाद्यम् इदं
 वार्हस्पत्यं वासोद्युगलमित्यादि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलानि दत्त्वा पूर्वो-
 क्तविशेषणवति काले कृतस्याभिपेकात्मकामुकरुद्रकर्मणः प्रतिष्ठासिद्धय-
 र्थममुकसगोत्राय यजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयिमाध्यन्दिनशाखाध्यायिने
 अमुकसर्पणे आचार्याय यथाशक्त्यलङ्कृतामिमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां
 इदं च हिरण्यमग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति विप्रहस्ते सकुशाक्ष-
 तजलप्रक्षेपपूर्वकं दक्षिणां दत्त्वा “न मम” इति ब्रूयात् । विप्रस्तु ॐश्री-
 स्त्वाददातुपृथिवीत्वाप्रतिगृह्णात्वितिमन्त्रान्ते रुद्राय गां “ॐप्रतिगृह्णामि”
 इत्युक्त्वा ॐकौटुत्कस्ममाऽअद्रात्कामौद्रात्कामायादात् ॥ कामौ दृता-

१ इदं च निर्मूलं यजमानप्रतारणमात्रमेव ॥ पुत्रकृतप्रेतलगादानजन्यधेदोदानकमा-
 पन्नानादित्रन्दपुण्यशान्त्वन्वेदमपि श्रेयोदानमविरुद्धमित्यपि केचित् ॥

कामः—प्रतिग्रहीता कामैतत्तै ॥ ५८ ॥ इति कामंस्तुतिं पठित्वा “ॐ स्व-
स्ती”ति वदेत् । प्रत्यक्षाया गोरभावे तु तन्निष्कपत्वेन सौवर्णिक-
निष्कदानम् ॥ निष्कस्तु चतुःसौवर्णिकः तदसम्भवे तदर्धस्य तस्याप्य-
सम्भवे तदर्धस्य एतावद्विरण्यासम्भवे सौवर्णिकनिष्कपरिमितरजत-
दानं तदसम्भवे तदर्धस्य तस्याप्यसम्भवे तदर्धस्य ॥ एवमृत्विग्भ्योऽपि
सङ्कल्पपूर्वकं वरणक्रमेण तान्सम्पूज्य दक्षिणादानम् । यथाशक्त्या-
चार्यादिभ्योऽलङ्कारमुद्रिकोदपात्रोपानद्वयजनछत्रचामराद्युपकरणदा-
नम् ॥ अथ कृतस्याभिपेकामुकरुद्रकर्मणः समृद्धये यथाकालं यथोप-
पन्नेनाग्नेन नानागोत्रान्नानाशर्मणोऽमुकसङ्ख्याकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये।
इति सङ्कल्पपूर्वकं ब्राह्मणभोजनम् ॥ अञ्जलिं वद्ध्वा “मयाचरिताभिपेका-
त्मकामुकरुद्रविधौ यद्व्यूनातिरिक्तं तद्भवतां ब्राह्मणानां वचनात्सर्वं परि-
पूर्णमच्छिद्रं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु” इति यजमानेन प्रार्थिते “सम्पूर्ण-
मच्छिद्रं चास्तु” इति विषा प्रतिवचनं वदेयुः । ततो मयाचरितेनाभिपेका-
त्मकेनामुकरुद्रेण श्रीभगवान्परमात्मा साम्बसदाशिवः प्रीयताम् । ॐ तत्स-
दुब्रह्मार्पणमस्त्विति भूमौ कुशजलमक्षेपपूर्वकं कर्म ब्रह्मार्पणं विधाय
विषेभ्यो मन्त्राशिषां ग्रहणं तेषां सानुनयं विसर्जनं च । दीनानाथा-
दीनां चान्नादिना सन्तोषणम् । ततः स्वयं सुहृन्मित्रादियुतः सोत्साहः
सन्तुष्टो हविष्यं भुञ्जीत ॥

इति श्रीमद्द्विवेद्युद्धवमनुश्रीमदनन्तदेवविरचितश्रीरुद्रकल्पद्रुमस्याभि-
पेकपरिच्छेदानुसारी अभिपेकात्मकरुद्रप्रयोगः ॥

॥ ४४ ॥ अथ कुण्डपूजनप्रयोगः ॥

होमात्मके प्रयोगे कुण्डपूजनम्—सपत्नीको यजमानः आचार्यो

क्षौणी ब्रह्माण्डं विश्वमंडलम् ॥ व्यापिनं भीमरूपं च सुरूपं विश्वरूपिणम्
 ॥ १ ॥ पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम् । वास्तुपुरुष देवेश
 सर्वविघ्नहरो भव । शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥
 (“ कुंडमध्ये ” गंधादिना त्रिकोणपद्कोणं तदुपरि अष्टदलपद्मं कृत्वा
 तस्मिन् ब्रह्मणे नमः । त्रिणवे० । रुद्राय० । ऋग्वेदाय० । यजुर्वेदाय० ।
 सामवेदाय० । अथर्ववेदाय० । कूर्माय० । अनंताय० । हिरण्यगर्भाय० ।
 श्रीकंठाय० । धनदाय० । शिवाय० । धर्माय० । सूर्याय० । इति
 ब्रह्मादिदेवान् गंधादिभिः पूजयेत् ॥) ततः पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निं
 प्रतिष्ठापयेत् ॥

॥ ४५ ॥ अथ होमात्मकलघुरुद्रप्रयोगः ॥

पूर्वं दशहस्तपरिमितं मण्डपं विधाय तन्मध्ये द्विहस्तमात्रं चतुरस्रं कुण्डं
 स्पण्डिलं वा विधाय कुण्डादीशान्यां वेदीद्वयकरणम् ॥ तत्र दक्षिणतो
 ग्रहवेदी । वेदी च द्वयङ्गुलत्र्यङ्गुलोच्छ्रायद्वयङ्गुलवप्रद्वययुता हस्तोच्चा
 हस्तविस्तृता च कार्या ॥

तत्रादौ पञ्चदशकृच्छ्रात्मकं प्रायश्चित्तं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात् ॥
 तद्यथा-कर्त्ता आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्प-
 न्नोऽमुकशर्माऽहं मम कायि क्वाथखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्वि-
 धपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थम् एकपष्ट्युत्तरशतधाम-
 न्त्रविभागपक्षेण सनवग्रहमखं होमात्मकलघुरुद्राख्यं कर्म करिष्ये । पुनर्न-
 र्त्तमादाय-तदङ्गत्वेन दिग्प्रक्षणं कलशाराधनं दीपपूजनं गणपतिपूजनं
 स्वग्निपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोद्वाराम् आयुष्यमन्त्रजपं नान्दी-

श्राद्धम् आचार्यादिवरणं पञ्चगव्यं भूम्यादिपूजनम् अग्निप्रतिष्ठापनं देवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये ॥ इति संकल्प्य । गणपतिपूजनादिना-
न्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादिवरणं कुर्यात् । वृताचार्यः सर्पपान्विकीर्य
पञ्चगव्येन भूमिं संप्रोक्ष्य ततोऽग्निस्थापनं कृत्वा ग्रहाणां स्थापनं
पूजनं च कुर्यात् । अनन्तरं लिङ्गतोभद्रमण्डले देवतापूजनम् । तन्मध्ये
कलशोपरि सौवर्णां रुद्रप्रतिमां निधाय । “नमः शम्भवाय च०” इति
मन्त्रेणावाह्य (देववामभागे पार्वतीं देवस्याग्रे वृषं चावाह्य) पूजयेत् ।
ततो ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कर्म कृत्वा द्रव्यत्यागं कुर्यात् । ततः
वराहूर्तिं हुत्वा ग्रहहोमं विधाय ऋत्विजः रुद्रहोमं कुर्युः । यथा आच० ।
प्राणा० । देशकालौ० अमुकशर्मणो यजमानस्याज्ञया यजमानसङ्क-
ल्पितलघुरुद्रहोमे एकपष्ट्युत्तरशतधामन्त्रविभागपक्षेण यथांशेन विहितं
हवनं करिष्ये । इति सङ्कल्पपूर्वकम् ऋत्विजः होमं कुर्युः । तत्रादौ
पङ्गन्यासान्कृत्वा होममारभेरन् ।

एकलघुरुद्रहोमे एकादशविधाः ऋष्यादिस्मरणपूर्वकं सावधाना
घृताक्ततिलान् मृगीमुद्रया महारुद्रं ध्यायन्तः मन्त्रपठनपूर्वकं जुहुयुः ॥

ॐ वज्राग्रतो० ॥ येन कर्माण्य० ॥ चत्पज्ञान० ॥ येनेदम्भृतं० ॥
यस्मिन्नृचहं० ॥ सुपारथिरश्वानिव० शिवसङ्कल्पमस्तु स्वाहा ॥ १ ॥
इति शिवसङ्कल्पमूक्तस्य हृदयरूपाङ्गस्य चतुर्विंशोऽध्यायस्य षण्मन्त्रै-
रेकाहुतिः ॥

ॐ सहस्रशीर्षा० ॥ पुरुषऽए० ॥ एतावानस्य० ॥ त्रिषा द्वौ० ॥
ततो द्विरा० ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतहं सम्भृतं० ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ
ऋचहं० ॥ तस्माद्भवा० ॥ तैष्वज्ञं० ॥ यत्पुरुषं० ॥ ब्राह्मणोस्स्य० ॥

चन्द्रमा मनसो ॥ नाभ्याऽ आसी ॥ यत्पुरुषेण ॥ सप्तास्या ॥
 वंजेन ० सन्ति देवा? स्वाहा ॥ २ ॥ इति शिरोरूपस्य पौरुषस्य
 एकत्रिंशध्यायस्य षोडशमन्त्रैरेकाहुतिः ॥

ॐ अद्भ्य? सम्भृतं ॥ वेदाहमे ॥ प्रजापतिश्चरति ॥ यो देवेभ्य ॥
 रुचम्राहमं ॥ श्रीश्च ते ० लोकम्मऽइषाण स्वाहा ॥ ३ ॥ इति उत्तरा-
 भिधशिखारूपस्य नारायणीयस्य एकत्रिंशध्यायस्य षण्मन्त्रैरेकाहुतिः ॥

ॐ आशु? शिशानो ॥ सङ्क्रन्दने ॥ सऽइषुहस्त्वे ॥ बृहस्पते ॥
 चळविज्ञा ॥ गोत्रभिदङ्गोविदं ॥ अभिगोत्राणि ॥ इन्द्रऽ आसाव्रेता ॥
 इन्द्रस्य वृष्णो ॥ उद्धर्षय ॥ अस्माकमिन्द्रं ॥ अमीपाञ्चितं
 सचन्ताम् स्वाहा ॥ ४ ॥ इत्यप्रतिरथमूक्तस्य कवचरूपाङ्गस्य सप्त-
 दशध्यायस्य द्वादशमन्त्रैरेकाहुतिः ॥

ॐ विन्भ्राह्मवृहत् ॥ उदुत्त्यञ्जातवे ॥ येनापावक ॥ दैव्यावद्भु-
 र्यु ॥ तम्पत्क्रथा पूर्वथा ॥ अयं वेनश्चो ॥ चित्रन्देवाना ॥ आ-
 नऽइडा ॥ यदद्य कच्च ॥ तरणिर्विश्व ॥ तत्सूर्यस्य द्वे ॥ तन्निम-
 न्नस्य ॥ वण्महो ॥ यद्सूर्यश्च ॥ थायन्तऽइव ॥ अद्या देवाऽ ॥
 आकृष्णेन ॥ भुवनानि पश्यन् स्वाहा ॥ ५ ॥ इति मैत्रमूक्तस्य नेत्ररूपस्य
 पञ्चमाङ्गस्य सप्तदशमन्त्रैरेकाहुतिः ॥

एवं पञ्चाङ्गाहुतीर्हुत्वा यदि षडङ्गपक्ष आश्रयितव्यश्चेदस्त्ररूपस्य
 रुद्राध्यायस्य षडङ्गमन्त्रैर्होमः कार्यः यथा—

ॐ नमस्ते ॥ यातेरुद्रशिवा ॥ यामिपुङ्गिरिशन्त ॥ शिवेनवचसा ॥
 अदयवोचदधि ॥ असौ यस्ताम्ब्रोऽ ॥ असौ यो ॥ नमोस्तुनी ॥
 ममुश्च धरव ॥ विज्यन्धनुः ॥ यतिहेतिर्मो ॥ परितेधरवो ॥

अवतरय० ॥ नमस्तऽआ० ॥ मानो महान्त० ॥ मानस्तोकै० ॥ नमो
हिरण्यवा० ॥ नमोवभ्रुशाय० ॥ नमोरोहिताय० ॥ नमःकृशनाय० ॥
नमोवञ्चते० ॥ नमऽउष्णीपिणे० ॥ नमो विसृजद्भ्यो० ॥ नमःसभा-
भ्यः० ॥ नमोगणेभ्यो० ॥ नमःसेनाभ्यः० ॥ नमस्तक्षभ्यो० ॥ नमः
भ्यः० ॥ नमःकपर्दिने० ॥ नमोऽहस्वाय० ॥ नमऽआशवे० ॥ नमो
ज्ज्येष्ठाय० ॥ नमःसोभ्याय० ॥ नमो व्वह्याय० ॥ नमोविल्मिने० ॥
नमोवृष्णवे० ॥ नमःस्रुत्याय० ॥ नमःकृष्णाय० ॥ नमोव्वारयाय० ॥
नमःशङ्खवे० ॥ नमःशम्भवाय० ॥ नमःपार्श्व्याय० ॥ नमःसिकत्याय० ॥
नमोव्व्रज्याय० ॥ नमःशुष्वाय० ॥ नमःपर्णाय० ॥ द्रुपेऽअन्य० ॥
इमारुद्राय० ॥ यातेरुद्रशिवातनू० ॥ परिनोरुद्रस्य० ॥ मीहुमृम० ॥
विकिरिद्र० ॥ सहस्राणि० ॥ असह्ययाता० ॥ अस्मिन्म० ॥ नीलग्रीवात्
शितिकण्ठादिव० ॥ नीलग्रीवात्शितिकण्ठात्शर्वाऽ० ॥ ये वृक्षेषु० ॥
येभूताना० ॥ येपथाम्पथि० ॥ येतीर्यानि० ॥ येनेषु० ॥ यऽएतावन्तश्च० ॥
नमोस्तुरुद्रेभ्योयेदिवि० ॥ नमोस्तुरुद्रेभ्योयेन्तरिक्षे० ॥ नमोस्तुरुद्रे-
भ्योयेपृथिव्या० ॥ यश्च नो द्वेष्टि तमेप्राञ्जम्भेद्दध्मत् स्वाहा ॥ ६ ॥
इति षडङ्गपक्षे षडङ्गमन्त्रैः एकाहुतिः ॥ ६ ॥

॥ अथ प्रधानहोमप्रयोगः ॥

एकपट्युत्तरशतधामन्त्रविभागात्मकरुद्रहोमस्वाहाकाराः ।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्त्रवऽउतोतऽइपवेनमः ॥ बाहुभ्यामुततेनमःस्वाहा ॥

अंया ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ॥

तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

अंयामिपुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ॥

- ॐमानोमहान्तमुतमानोऽअर्धकमानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मा-
 नोवधीऽपितरम्मोतमातरम्मानऽपियास्तद्वोरुद्ररीरिपऽस्वाहा ॥ १५ ॥
 ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुपिमानोऽगोपुमानोऽअश्वेपुरीरिपऽ ॥
 मानोव्वीराङ्गभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तऽसदमिस्वाहवामहेस्वाहा ॥ १६ ॥
 ॐनमो हिरण्यवाहवे सेनाह्वये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ॥ १७ ॥
 ॐनमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यऽ पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १८ ॥
 ॐनमऽशष्पिञ्जराय त्विपीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १९ ॥
 ॐनमो हरिकेशायोपधीतिने पुष्टानाम्पतये नमः, स्वाहा ॥ २० ॥
 ॐनमो वव्वलुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २१ ॥
 ॐनमो भवस्य हेर्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥ २२ ॥
 ॐनमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २३ ॥
 ॐनमऽसूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २४ ॥
 ॐनमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २५ ॥
 ॐनमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौपधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २६ ॥
 ॐनमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २७ ॥
 ॐनमऽउच्चैर्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २८ ॥
 ॐनमऽकृत्स्नायतया धावते सत्रनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २९ ॥
 ॐनमऽसहमानायनिव्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमः स्वाहा ॥ ३० ॥
 ॐनमो निपङ्क्तिने ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३१ ॥
 ॐनमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३२ ॥
 ॐनमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥
 ॐनमो निषङ्क्तिणऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३४ ॥
 ॐनमऽसृकायिभ्यो जिघाँसद्भ्योमुष्णताम्पतयेनमः स्वाहा ॥ ३५ ॥

- ॐ नमोसिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्योऽविकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३६ ॥
- ॐ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३७ ॥
- ॐ नमऽशुभद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३८ ॥
- ॐ नमऽआतन्वानेभ्यः-प्पतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥
- ॐ नमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४० ॥
- ॐ नमो विसृजद्भ्यो विद्वद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४१ ॥
- ॐ नमः-स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥
- ॐ नमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४३ ॥
- ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४४ ॥
- ॐ नमः-समाभ्यः-सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४५ ॥
- ॐ नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४६ ॥
- ॐ नमऽआव्याधिनीभ्यो विविद्गन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥
- ॐ नमऽउगणारुभ्यस्तृहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४८ ॥
- ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४९ ॥
- ॐ नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५० ॥
- ॐ नमो गृसेभ्यो गृसपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५१ ॥
- ॐ नमो विरूपेभ्यो विप्रश्रुपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५२ ॥
- ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५३ ॥
- ॐ नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५४ ॥
- ॐ नमः-सत्तृभ्यः-सङ्घीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५५ ॥
- ॐ नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५६ ॥
- ॐ नमस्तस्यैभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५७ ॥

ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५८ ॥

ॐ नमो निपादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५९ ॥

ॐ नमः भ्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६० ॥

ॐ नमः भ्वभ्यः भ्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६१ ॥

ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ ६२ ॥

ॐ नमः शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥ ६३ ॥

ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥ ६४ ॥

ॐ नमः कपर्दिने च व्युत्प्लेशाय च स्वाहा ॥ ६५ ॥

ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥ ६६ ॥

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥ ६७ ॥

ॐ नमो मीढुष्टमाय चेपुमते च स्वाहा ॥ ६८ ॥

ॐ नमो ऋस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥ ६९ ॥

ॐ नमो बृहते च वर्षायसे च स्वाहा ॥ ७० ॥

ॐ नमो ऋद्धाय च सृष्टे च स्वाहा ॥ ७१ ॥

ॐ नमोऽत्रयाय च पथमाय च स्वाहा ॥ ७२ ॥

ॐ नमः आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥ ७३ ॥

ॐ नमः शीघ्र्याय च शिभ्याय च स्वाहा ॥ ७४ ॥

ॐ नमः ऊर्म्याय चावस्वनायाय च स्वाहा ॥ ७५ ॥

ॐ नमो नादेयाय च ह्रीण्याय च स्वाहा ॥ ७६ ॥

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥ ७७ ॥

ॐ नमः पूर्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥ ७८ ॥

ॐ नमो मद्गधमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥ ७९ ॥

ॐ नमो जघन्याय च बुध्याय च स्वाहा ॥ ८० ॥

- ॐ नमः सोम्याय च प्रतिसर्वाय च स्वाहा ॥ ८१ ॥
 ॐ नमो व्याम्भ्याय च क्षेम्भ्याय च स्वाहा ॥ ८२ ॥
 ॐ नमः श्लोकत्रयाय चावसान्याय च स्वाहा ॥ ८३ ॥
 ॐ नमः उर्वर्ध्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥ ८४ ॥
 ॐ नमो ध्रुवाय च कवक्ष्याय च स्वाहा ॥ ८५ ॥
 ॐ नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च स्वाहा ॥ ८६ ॥
 ॐ नमः आशुपेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥ ८७ ॥
 ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥ ८८ ॥
 ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥ ८९ ॥
 ॐ नमो व्वर्मिणे च व्वरुधिने च स्वाहा ॥ ९० ॥
 ॐ नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥ ९१ ॥
 ॐ नमो दुन्दुभ्याय चाहनत्रयाय च स्वाहा ॥ ९२ ॥
 ॐ नमो मृष्णवे च प्पमृशाय च स्वाहा ॥ ९३ ॥
 ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥ ९४ ॥
 ॐ नमस्तीक्ष्णपत्रे चापुधिने च स्वाहा ॥ ९५ ॥
 ॐ नमः स्वापुष्याय च मुषङ्गने च स्वाहा ॥ ९६ ॥
 ॐ नमः सुत्र्याय च पत्त्र्याय च स्वाहा ॥ ९७ ॥
 ॐ नमः काट्याय च नील्याय च स्वाहा ॥ ९८ ॥
 ॐ नमः कुल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥ ९९ ॥
 ॐ नमो नादेयाय च ध्वेग्न्याय च स्वाहा ॥ १०० ॥
 ॐ नमः गृष्याय चावह्याय च स्वाहा ॥ १०१ ॥
 ॐ नमो व्वीङ्ग्याय चातप्याय च स्वाहा ॥ १०२ ॥
 ॐ नमो मेघ्याय च ध्रियुष्याय च स्वाहा ॥ १०३ ॥

- ॐ नमो ववर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥ १०४ ॥
 ॐ नमो व्वास्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥ १०५ ॥
 ॐ नमो व्वास्तत्र्याय च वास्तुपाय च स्वाहा ॥ १०६ ॥
 ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ १०७ ॥
 ॐ नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ॥ १०८ ॥
 ॐ नमः शङ्खे च पशुपतये च स्वाहा ॥ १०९ ॥
 ॐ नमः उग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥ ११० ॥
 ॐ नमोग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥ १११ ॥
 ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥ ११२ ॥
 ॐ नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा ॥ ११३ ॥
 ॐ नमस्ताराय स्वाहा ॥ ११४ ॥
 ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥ ११५ ॥
 ॐ नमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥ ११६ ॥
 ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥ ११७ ॥
 ॐ नमः पाष्याय चावाष्याय च स्वाहा ॥ ११८ ॥
 ॐ नमः पत्रणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥ ११९ ॥
 ॐ नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च स्वाहा ॥ १२० ॥
 ॐ नमः शष्प्याय च फेद्याय च स्वाहा ॥ १२१ ॥
 ॐ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ॥ १२२ ॥
 ॐ नमः किशिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥ १२३ ॥
 ॐ नमः ऋषिदेवे च पुलस्तये च स्वाहा ॥ १२४ ॥
 ॐ नमः इरिण्याय च प्रपल्याय च स्वाहा ॥ १२५ ॥
 ॐ नमो व्यङ्ग्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥ १२६ ॥

- ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥ १२७ ॥
 ॐ नमो हृदय्याय च निवेण्याय च स्वाहा ॥ १२८ ॥
 ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठ्याय स्वाहा ॥ १२९ ॥
 ॐ नमः शुष्ययाय च हरिण्याय च स्वाहा ॥ १३० ॥
 ॐ नमः पाण्डुसल्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥ १३१ ॥
 ॐ नमो लोण्याय चोल्याय च स्वाहा ॥ १३२ ॥
 ॐ नमः ऊर्ज्याय च मूर्ज्याय च स्वाहा ॥ १३३ ॥
 ॐ नमः पण्णाय च पण्णशदाय च स्वाहा ॥ १३४ ॥
 ॐ नमः उद्गुरमाणाय चाभिग्मते च स्वाहा ॥ १३५ ॥
 ॐ नमः आखिदते च प्खिदते च स्वाहा ॥ १३६ ॥
 ॐ नमः इषुकुम्भ्यो धनुष्कुम्भ्यश्च नमः स्वाहा ॥ १३७ ॥
 ॐ नमो वृहं किरिकेभ्यो देवानां हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १३८ ॥
 ॐ नमो त्रिचिह्नस्तेभ्यो देवानां हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १३९ ॥
 ॐ नमो द्विशिणस्तेभ्यो देवानां हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १४० ॥
 ॐ नमः अनिर्हतेभ्यो देवानां हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १४१ ॥
 ॐ श्रापेऽअन्धसम्पत्ते दरिद्र नीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्प-
 न्नाम्मा भेष्मी रोह्ण्यो च नर्दं किञ्चनामपन् स्वाहा ॥ १४२ ॥
 ॐ इमा रुद्राय तवमे कपर्दिने सपथीराय प्भरामहेमती ॥ यथाश्रम
 सदिपदेनतुष्पदेविश्वम्पुष्टङ्गामेऽअस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ १४३ ॥
 ॐ या मे रुद्र शिवा तनु १ शिवा विश्वाहा भेषजी ॥
 शिवा गलस्य भेषजी तथा नो मृट जीवसे स्वाहा ॥ १४४ ॥

१ अत्र दीर्घात्तोऽयत्तुःशोऽस्मिन्न इत्यन्वयः शिवा इति ॥ १४२ ॥ यथाश्रम यथाश्रम इति ॥ १४३ ॥
 अत्र कर्त्तव्यं शिवाः अन्धसम्पत्तेः इति ॥ १४४ ॥ अत्र शिवा इति ॥ १४५ ॥ अत्र शिवा इति ॥ १४६ ॥

- ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणवक्तुपरिच्वेपस्यदुर्मतिरघायो? ॥ अवस्थि-
 रामघवद्भयस्तनुष्वमीडुद्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा ॥ १४५ ॥
- ॐ मीडुप्रम शिवतम शिवो न ÷ सुमना भव ॥ परमे वृक्षऽआयुधनिधाय
 कृत्ति वसानऽ आचर पिनाकाम्बिभ्रदागहि स्वाहा ॥ १४६ ॥
- ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवत् ॥
 वास्ते सहस्रऽहेतयोद्भयमस्मन्निवपन्तु ता? स्वाहा ॥ १४७ ॥
- ॐ सहस्राणि सहस्रशो वाद्दोस्तव हेतयः ॥
 तासामीशानो भगवत् पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥ १४८ ॥
- ॐ असह्यघाता सहस्राणि वे रुद्राऽ अधि भूम्याम् ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १४९ ॥
- ॐ अश्मिन्महस्यर्णवेन्तरिक्षे भवाऽ अधि ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५० ॥
- ॐ नीलग्रीवात् शितिकृष्ठा दिवङ् रुद्राऽ उपस्थितात् ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५१ ॥
- ॐ नीलग्रीवात् शितिकृष्ठात् शर्वाऽअघ? क्षमाचरा? ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५२ ॥
- ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहितात् ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५३ ॥
- ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः-कपर्दिनः ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५४ ॥
- ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदाऽ आयुर्धुधः ॥
 तेपाँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५५ ॥

ॐ ये तीर्थानि पचरन्ति सृकाहस्ता निपङ्क्तिणः ॥

तेपाँसहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५६ ॥

ॐ वेत्नेषु विविद्धयन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥

तेपाँसहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५७ ॥

ॐ षड एतावन्तश्च भूयाँसश्च दिशो रुद्रा वितस्तिरि ॥

तेपाँसहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५८ ॥

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्ष्मिपवदं ॥ तेभ्यो दश

प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्पतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः ॥

तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृढयन्तु ते यन्दिष्मो

यश्च नो द्वेष्टि तमेपाञ्जम्भे दध्मदं स्वाहा ॥ १५९ ॥

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे येषां वातऽऽपवदं ॥ तेभ्यो दश

प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्पतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः ॥

तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृढयन्तु ते यन्दिष्मो

यश्च नो द्वेष्टि तमेपाञ्जम्भे दध्मदं स्वाहा ॥ १६० ॥

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्याँष्येषामन्नमिपवदं ॥ तेभ्यो दश

प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्पतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः ॥

तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृढयन्तु ते यन्दिष्मो

यश्च नो द्वेष्टि तमेपाञ्जम्भे दध्मदं स्वाहा ॥ १६१ ॥

॥ एकपष्टपुत्तरशतधामन्त्रविभागात्मकरुद्रहोमस्वाहाकाराः सम्पूर्णाः ॥

एवम् एकपष्टपुत्तरशतधामन्त्रविभागात्मकरौद्राध्यायेनैकादशवारं

नुहुयात् ॥

ॐ षडसोमः ॥ एपतेरुद्रः ॥ अवरुद्रपः ॥ भेषजमसिः ॥ त्र्यम्ब-

केशनाः ॥ एतत्तेरुद्राः ॥ त्र्यापुपञ्जमः ॥ शिवीनामासिः ॥ सुवी-

ध्याय स्वाहा ॥ इति अष्टकण्डिकात्मकेन महच्छिरसा प्रतिलघुरुद्रान्ते एकामाहुतिं जुहुयात् ॥

ॐ ऋचंवाचम्प्रपद्ये० स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ऋमेच्छिद्रं० स्वाहा ॥ २ ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः० तत्सवितु० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ कयानश्चित्रऽआ०
 स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ कस्त्वासत्यो० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ अभीपुणः० स्वाहा
 ॥ ६ ॥ ॐ कयात्वन्न० स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ इन्द्रोविश्वस्य० स्वाहा ॥ ८ ॥
 ॐ शन्नोमित्र० स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ शन्नोव्वातः० स्वाहा ॥ १० ॥
 ॐ अहानिशं० स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ शन्नोदेवी० स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ स्यो-
 नापृथिवि० स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ आपोहिष्ठा० स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ षोवः-
 शिवतमो० स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ तस्माऽअरङ्ग० स्वाहा ॥ १६ ॥
 ॐ द्यौः शान्ति० स्वाहा ॥ १७ ॥ ॐ द्देहमात्रस्यमा० स्वाहा ॥ १८ ॥
 ॐ द्देहमा ॥ ज्योक्ते० स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ नमस्तेहरसे० स्वाहा ॥ २० ॥
 ॐ नमस्तेऽअस्तु० स्वाहा ॥ २१ ॥ ॐ यतोयतः० स्वाहा ॥ २२ ॥ ॐ सुमि-
 त्रियान० स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं स्वाहा० ॥ २४ ॥ एवम् ऋचंवा-
 चमित्यादिभिः शान्त्यध्यायमन्त्रैः चतुर्विंशतिभिराहुतिभिर्जुहुयात् ॥

एवं क्रमेण लघुरुद्रहोमं विधाय सर्वे ऋत्विजः षडङ्गन्यासं कुर्युः ॥
 तत आचार्यो लिङ्गतोभद्रदेवतानाममन्त्रैर्जुहुयात् ॥ तत आचारात्
 फलहोमं गुग्गुलहोमं सर्पपहोमं लक्ष्मीहवनं च विधाय आवाहितदेवता-
 नामुत्तरपूजनं कुर्यात् ॥ अनन्तरं स्विकृदादिमणीताविमोक्तान्तं च
 कुर्यात् ॥ ततो यजमानः आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् ॥ ततोऽभि-
 षेकः ॥ भूयसीसङ्कल्पः ॥ कृतकर्मण ईश्वरार्पणम् ॥ देवताविसर्जनम् ॥
 अधिविसर्जनम् ॥ ततो द्राघ्यभोजनम् ॥

॥ इति लघुरुद्रहोमप्रयोगः समाप्तः ॥

॥ अथ देवीयागात्मकस्तृतीयो विभागः ॥

॥ ४६ ॥ अथ नवचंडीशतचंडीसहस्रचंडीप्रयोगः ॥

श्रीगणेशाय नमः । पूर्वं कुण्डमण्डपं विधाय यथाविधि प्रायश्चित्तं कृत्वा शुभेऽह्नि सपत्नीकः कर्ता तिलतैलेन कृताभ्यंगो भूपितसंपूर्णकल-
शहस्तो भद्रं कर्णेभिरिति मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य
देशकालौ स्मृत्वा ममेहजन्मनि दुर्गाभीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं
दीर्घायुर्विपुलधनधान्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्ति-
लाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्धयर्थं भूतमेतपिशाचादिभयनिवृत्त्यर्थं राज-
भयदस्युभयादिनिवृत्तये च ममाशेषपापक्षयार्थं श्रीविद्यानादिविद्यानां
परिशीलनजनितपरमज्ञानावाप्तये परमपदप्राप्तये महिषशुम्भनिशुम्भ-
धूम्रलोचनदैत्यदानवगणगन्धर्वयक्षराक्षसवेतालादिजनितसर्वोपद्रवना-
शिन्या आनन्दमाङ्गल्यातुलबुद्धिपराक्रमदापिन्या द्विपदचतुष्पदक्षेमकर्त्या
दशवक्रत्रिंशल्लोचनाद्यनन्तरूपाया गणपतिक्षेत्रपालवास्तुयोगिनीवदुकु-
नवग्रहादिपरिवारयुतायाः श्रीभवानीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्या-
दित्रिगुणात्मिकायाः श्रीगौरीवागीश्वर्यादिरूपायाः पराम्बाभगवतीजगद-
म्बायाः प्रीतिक्रामः सग्रहमखां नवचण्डीं शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा
ब्राह्मणद्वारा करिष्ये ॥ तदङ्गतया गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृका-
पूजनं वसोधाराप्राप्यमन्त्रजपं नादीध्यादमाचार्यादिवरणं च करिष्ये ॥
इति संकल्प्य तानि कृत्वा आचार्यादीन्वृत्त्वा तान्यथाविभवं बह्नादिना
संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ ते च शतचण्ड्यां दश सहस्रचण्ड्यां शतम् ॥
(केचिदत्र ग्रहजपार्थमेकमृत्विजं वरयन्ति ॥) अथाचार्य आचम्य देश-

कालौ संक्रीत्य यजमानेन वृतोऽहमाचार्यकर्म करिष्ये इति संकल्प्य
 “ यदत्र० ” इति गौरसर्पपान्विकीर्य पंचगव्येन कुशोदकेन वा मण्डपं
 प्रोक्षेत्॥ आपोहिष्ठा० अपवित्रः० पृथिव्यया० इति । तत उपविश्य अनं-
 तासनाय नमः ॥ विमलासनाय नमः ॥ पद्मासनाय० ॥ अपक्रामन्तु० ।
 इति भूमौ वामपादघातत्रयं कृत्वा ततो वेद्यां सर्वतोभद्रमष्टदलं वा विलिख्य
 तत्र ब्रह्मादिमंडलदेवताः संस्थाप्य तन्मध्ये महीधौरित्यादिमंत्रैः कलशं
 संस्थाप्य तस्मिन्गंधपुष्पफलसर्वोपधीदूर्वापंचपल्लवसप्तमृत्तिकापृगीफल-
 पञ्चरत्नदक्षिणाश्च तत्तन्मंत्रेण निक्षिप्य वस्त्रद्वयेनावेष्ट्य तदुपरिपूर्णपात्रं
 निधाय कलशे वरुणमावाह्य पूजयेत् ॥ ततः कलशे देवताः स्मरेत् ॥
 कलशस्य मुखे विष्णुः० प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ इतिकलशं प्रार्थयेत् ॥
 ततः कलशोपरिस्थपूर्णपात्रे वस्त्रे यंत्रं लिखेत् ॥ तद्यथा ॥ मध्ये
 विन्दुं त्रिकोणं तद्बहिः षट्कोणं तद्बाह्ये वृत्तं तद्बाह्येऽष्टौ दलानि
 तदुपरि वृत्तं तदुपरि चतुर्विंशतिपात्राणि तद्बाह्ये चतुर्द्वारं चतुरस्रत्रयमिति ॥
 एवं यंत्रं विलिख्य तत्राष्टादशभुजाम् अष्टभुजां वा सिंहारूढां सौवर्णां
 देवीमूर्तिमग्न्युत्तारणमाणप्रतिष्ठापूर्वकं प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् ॥

अथ देवीपूजाभयोगः ॥ मूलेनाचम्य प्राणानायम्य ॥ शिखावन्ध-
 नम् ॥ अद्ये० अमुक नाम्नो मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थं श्रीमहाकाली-
 महालक्ष्मीमहासरस्वतीत्रिगुणात्मिकाम्बिकादेवताप्रार्थयं पात्रासादन-
 पूर्वकं श्रीत्रिगुणात्मिकाया जगदम्बिकाया यथामिलितोपचारद्रव्येण
 पूजनमहं करिष्ये ॥ तदङ्गतया पूजनाधिकारार्थं भूशुद्ध्यादिन्यासाने-
 कादशन्यासांश्च करिष्ये ॥ पूर्ववत् भूशुद्धिभूतशुद्ध्यादिन्यासान्कुर्यात् ॥

॥ अथैकादशन्यासप्रयोगः ॥

ॐ अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिग-
 नुष्टुच्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दा-
 शाकम्भरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवा-
 युक्षर्यास्तत्त्वानि सर्वाभीष्टसिद्धयर्थं श्रीमहालक्ष्मीपूजाङ्गत्वेन न्यासे
 विनियोगः ॥ ऋषिन्यासः—ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥
 गायत्र्युष्णिगनुष्टुच्छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-
 महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ नन्दाशाकम्भरीभीमाशक्तिभ्यो
 नमो दक्षिणस्तने ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमो वामस्तने ॥
 अग्निवायुक्षर्येभ्यस्तत्त्वेभ्यो नमः नाभौ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥
 मूलेन करौ संशोधयेत् ॥

॥ अथैकादशन्यासाः दुर्गोपासनाकल्पस्थाः ॥ प्रथमो मातृ-
 कान्यासो देवसारूप्यदः स्मृतः ॥ स च अद्भुष्टानामिकामेलनरूपया
 तत्त्वमुद्रया सर्वत्र न्यस्य कर्तव्यः ॥ सर्वत्रादौ प्रणवोच्चारः । अं नमो
 मूर्ध्नि । आं नमो ललाटे । इं नमो दक्षिणनेत्रे । ईं नमो वामनेत्रे । उं नमो
 दक्षिणकपोले । ऊं नमो वामकपोले । ऋं नमो दक्षिणकर्णे । ॠं नमो
 वामकर्णे । लृं नमो दक्षिणनासापुटे । ॡं नमो वामनासापुटे । एं नमः
 ऊर्ध्वोष्ठे । ऐं नमः अधरोष्ठे । औं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । औं नमः
 अधोदन्तपङ्क्तौ । अं नमः जिह्वायाम् । अः नमस्तालुनि । कं नमो
 दक्षिणबाहुमूले । खं नमो दक्षिणकूर्परे । गं नमो दक्षिणमणिबन्धे ।
 घं नमो दक्षिणाङ्गुलिमूले । ङं नमो दक्षिणाङ्गुल्यग्रे । चं नमो वाम-
 बाहुमूले । छं नमो वामकूर्परे । जं नमो वाममणिबन्धे । झं नमो

वामाङ्गुलिमूले । अं नमो वामाङ्गुल्यग्रे । टं नमो दक्षिणपादमूले ।
ठं नमो दक्षिणजानुनि । डं नमो दक्षिणपादगुल्फे । ढं नमो
दक्षिणपादाङ्गुलिमूले । णं नमो दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे । तं नमो
वामपादमूले । थं नमो वामजानुनि । दं नमो वामपादगुल्फे । धं
नमो वामपादाङ्गुलिमूले । नं नमो वामपादाङ्गुल्यग्रे । पं नमो
दक्षिणपार्श्वे । फं नमो वामपार्श्वे । बं नमो पृष्ठे । भं नमो नाभौ ।
मं नमः उदरे । यं नमस्त्वचि । रं नमः अमृजि । लं नमः मांसे ।
वं नमः स्नायुषु । शं नमः आस्थिनि । पं नमः मज्जायाम् । सं नमः
मेदसि । हं नमः शुके । क्षं नमः सर्वत्र । इति मातृकान्यासः प्रथमः
येन मात्रिकः साङ्गवेदसमो भाति ॥ १ ॥ (२) द्वितीयः सारस्वतो
न्यासः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनामि-
काभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
करतलाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करपृष्ठाभ्यां नमः । ॐ ऐं
ह्रीं क्लीं स्फाराभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं माणिक्याभ्यां नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रद्वयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय नमः । ॐ ऐं ह्रीं
क्लीं पूर्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अग्रये नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षिणायै
नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्ऋतये नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पश्चिमायै नमः । ॐ
ऐं ह्रीं क्लीं वायवे नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उत्तरायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
ईशानाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अधस्तात्त्रयः ।
इति द्वितीयः सारस्वतो न्यासः येन दुरितं जाड्यं वाक्पापसञ्चयश्च

परहंसोऽक्षिमण्डलं मे पातु । महिषारूढः प्रेतः पदद्वयं मे पातु । हंसीं
 महेशशण्डिकापुक्तः सर्वाङ्गं मे पातु । इति षष्ठः सद्गतिपापको न्यासः
 येन वैकुण्ठसुखं सर्वकष्टोपशान्तिश्च भवति ॥६॥ (७) सप्तमो रोगना-
 शको न्यासः ॥ ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे । ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे । क्लीं नमः
 वामनेत्रे । चां नमो दक्षिणकर्णे । मुं नमो वामकर्णे । डां नमो
 दक्षिणनासापुटे । यैं नमो वामनासापुटे । विं नमो मुखे । चैं नमो
 पायौ ॥ इति सप्तमो मूलाक्षरो रोगनाशको न्यासः येन सर्वरोगक्षयो
 भवति ॥ ७ ॥ (८) अष्टमः सर्वदुःखहरो न्यासः ॥ च्चैं नमः पायौ । विं
 नमो मुखे । यैं नमो वामनासापुटे । डां नमो दक्षिणनासापुटे । मुं नमो
 वामकर्णे । चां नमो दक्षिणकर्णे । क्लीं नमो वामनेत्रे । ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे ।
 ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ इति अष्टमः विलोमाक्षरः सर्वदुःखहरो न्यासः
 येन सर्वदुःखं विनश्यति ॥ ८ ॥ (९) नवमो देवताप्राप्तिकृन्न्यासः ॥
 मूलमुच्चार्य । मस्तकाचरणातिं चरणान्मस्तकान्तम् अष्टवारं व्यापकं
 कुर्यात् । तद् यथा-प्रथमं पुरतो मूलेन मस्तकाचरणावधि ॥
 ततश्चरणान्मस्तकावधि मूलोच्चारेण व्यापकम् । एवं दक्षिणतः
 पश्चाद्दामभागे चेति प्रतिदिग्भागेऽनुलोमविलोमतया द्विद्विरिति ॥
 इति नवमो मूलव्यापको देवताप्राप्तिकृन्न्यासः येन साधको देववद्भवेत्
 ॥९॥ (१०) दशमः त्रैलोक्यवशकृन्न्यासः ॥ मूलमुच्चार्य हृदयाय
 नमः । शिरसे स्वाहा । शिखायै वषट् । कवचाय हुम् । नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
 अस्त्राय फट् । इति एवं मूलमुच्चार्य पदंगेषु न्यसेत् ॥ इति दशमस्त्रैलो-
 क्यवशकृन्न्यासः येन साधको यद्वदति तदेव भवति यद्दृष्ट्या पश्यति
 तत्तथैव भवति ॥१०॥ (११) एकादशः सर्वरक्षाकरो न्यासो दशन्या-
 ससप्तफलदायकः ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।

शक्तिनी चापिनी वाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ १ ॥ सौम्या सौम्यतराशेष-
 सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ २ ॥ यच्च
 किञ्चित्कचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा
 त्वं किं स्तूपसे मया ॥ ३ ॥ यया त्वया जगत्सृष्टा जगत्पात्यति यो
 जगत् ॥ सोपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुभिहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः
 शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतो तस्त्वां कः स्तोतुं
 शक्तिमान्भवेत् ॥ ५ ॥ आद्यं वाग्बीजं ऐं श्यामवर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे
 विन्यसेत् ॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्व-
 नेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ १ ॥ माच्यां रक्ष प्रतीच्यां च
 चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रापणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ २ ॥
 सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थ-
 घोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि
 चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मात्त्रस्य सर्वतः ॥ ४ ॥
 द्वितीयं मायाबीजं ह्रीं चालार्कवर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् ॥ सर्व-
 स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्याहि नो देवि दुर्गे देवि
 नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्व-
 भूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषागुर-
 मृदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतिभेद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ द्विनस्ति
 दैत्यतेजासि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पाप-
 ध्यांसनः गुनानिव ॥ ४ ॥ असुरासृग्घसापद्रुचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥
 शुभाय तद्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ तृतीयं फाम-
 पीत्रं ह्रीं स्फटिकाभासं ध्यान्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् ॥ इति सर्गानिष्टहरः
 सर्गामोष्टदः मर्भरक्षाकरमैकादशो न्यासः ॥ ११ ॥

॥ इत्येकादशन्यासप्रयोगः ॥

एवमेकादशन्यासान् कृत्वा गणपतिं स्मृत्वा । देव्या दक्षिणे घृतदीपं
तन्मध्ये विन्दुत्रिकोणपट्कोणं देव्या वामे तैलदीपं तन्मध्ये विन्दु-
त्रिकोणपट्कोणात्मकं यन्त्रं विलिख्य संपूज्य दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य
प्रार्थयेत् ॥ भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ॥ यावत्कर्म-
समाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥ १ ॥ इति दीपं संस्थाप्य शरीर-
शुद्धयर्थं मूलमन्त्रेण पङ्क्त्यासं कृत्वा कलशे वरुणं संपूज्य शैल्यं
यथा च सम्पूज्य कलशजलेन सर्वत्र प्रोक्षयेत् ॥ अपवित्रः ॥

॥ ४७ ॥ अथ पात्रासादनप्रयोगः ॥

“अथ पात्रस्थापनम्”—तत्रादां(१) कलशः॥ स्ववामे विंदुत्रिको-
णपट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यंत्रं विलिख्य अक्षतैः पूजयेत् ॥ मध्ये
मूलं । त्रिकोणे त्रिपदैः—ऐं ह्रीं क्लीं । चामुंडायै । विचे नमः ॥ एवं
द्विरावृत्त्या पट्कोणे ॥ मातृकया वृत्तम्—अं आं इत्यादि क्षान्तम् ॥ चतुरस्रे
पदंगानि—आग्नेये ऐं हृदयाय० । ऐशाने ह्रीं शिरसे० । नैऋत्ये क्लीं
शिखायै० । वायव्ये चामुंडायै कवचाय० । मध्ये विचे नेत्रत्रयाय० ।
चतुर्दिक्षु मूलम् अस्त्राय० ॥ इति यंत्रं संपूज्य हुं इति आधारं प्रक्षाल्य ॥
मूलेन संस्थाप्य ॥ ॐ मंवल्लिमंडलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिकादु-
र्गादेवताकलशपात्राधाराय नमः इति आधारं संपूज्य दशकलाः पूजयेत् ॥
ॐ यं धूम्राचिपे नमः । रं ऊष्मार्यै० । लं ज्वलिन्यै० । वं ज्वालिन्यै० । शं विस्फु-
ल्लिगिन्यै० । पं सुध्रियै० । सं सुरूपायै० । हं कपिलायै० । लं हव्यवाहायै० । खं
कव्यवाहायै० ॥ १ ॥ इति संपूज्य हुं इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य
सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका-दुर्गादेवता-कलशपात्राय
नमः इति संपूज्य ॥ द्वादशकलाः पूजयेत् ॥ ॐ कं भं तपिन्यै० । खं

वं तापिन्यै० । गं फं धूम्रायै० । घं पं मरिच्यै० । ङं नं ज्वालिन्यै० ।
 चं धं रुच्यै० । छं दं सुपुम्णायै० । जं थं भोगदायै० । झं तं विश्वायै० ।
 अं णं वोधिन्यै० । टं ढं धारिण्यै० । ठं डं क्षमायै० ॥१२॥ इति संपूज्य ॥
 तत्र विलोममातृकया शुद्धजलमापूरयेत् । यथा ॥ ॐ हं लं हं सं पं शं
 वं लं रं गं मं भं वं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं अं झं जं छं चं डं
 घं गं खं कै अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋं ॠं ऊं उं ईं इं आं अं ॥
 गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य ॥ पोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्री त्रिगुणा-
 त्तिका दुर्गादेवता-कलशामृताय नमः इति संपूज्य तत्र पोडशकलाः पूज-
 येत् ॥ अं अमृतायै० । आं मानदायै० । इं पूपायै० । ईं पुष्टायै० । उं तुष्टायै० ।
 ऊं रत्यै० । ऋं धृत्यै० । ॠं शशिन्यै० । लृं चंद्रिकायै० । लृं कान्त्यै० ।
 एं ज्योत्स्नायै० । ऐं त्रियै० । औं प्रीत्यै० । औं अंगदायै० । अं पूर्णायै० ।
 अः पूर्णामृतायै० ॥१६॥ इति संपूज्य ॥ फलिते संरक्ष्य मूलेन देवीमा-
 वाह्य आवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ यथा ॥ मूलेन-आवाहिता
 भव ॥ स्थापिता भव ॥ सनिहिता भव ॥ सन्निरुद्धा भव ॥ संमुखी-
 कृता भव ॥ पदंगेन सरलीकृता भव । मूलं हृदयायेत्यादि अवगुठिता
 भव ॥ अमृतीकृता भव ॥ परमीकृता भव ॥ योनिमुद्रां प्रदर्श्य ॥१०॥
 मूलेन संपूज्य ॥ मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य । मूलेनाष्टवारमभिमंत्र्य ॥ धेतुं
 योनिं च प्रदर्शयेत् ॥ इति फलेशः ॥

मध्ये मूलम् । त्रिकोणे त्रिपदैः । मातृकया वृत्तम् । चतुरस्रे षडंगानि ।
 फडिति आधारं प्रक्षाल्य । मूलेन संस्थाप्य । मं वह्निमंडलाय दशकला-
 त्मने श्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवतासामान्यार्घपात्राधाराय नमः इति
 आधारं संपूज्य । फड् इति पात्रं प्रक्षाल्य । मूलेन संस्थाप्य । सूर्यमण्डलाय
 द्वादशकलात्मने श्रीत्रिगुणा० सामान्यार्घपात्राय नमः इति पात्रं संपूज्य ।
 मूलेन शुद्धजलमापूर्य गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य चंद्रमंडलाय षोडशकला-
 त्मने श्रीदुर्गादेवतासामान्यार्घपात्रामृताय नमः इति सम्पूज्य ॥
 मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य मूलेनाष्टधाऽभिमंत्र्य धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च
 प्रदर्शयेत् ॥ इति सामान्यार्घः ॥

“अथ (३) विशेषार्घः”—सामान्यार्घादक्षिणे आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये
 त्रिदुत्रिकोणपट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यंत्रं चंद्रनादिना विलिख्य अक्षतैः
 पूजयेत् ॥ मध्ये मूलम् ॥ त्रिकोणे त्रिपदैः—ऐं ह्रीं क्लीं । चामुंडायै ।
 विद्महे नमः ॥ एवं द्विरात्र्या पट्कोणे ॥ मातृकया वृत्तम्—अं आं इत्यादि
 क्षान्तम् ॥ चतुरस्रे षडंगानि । इति यंत्रं संपूज्य । हुं इत्याधारं प्रक्षाल्य ।
 मूलेन संस्थाप्य । मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने श्रीदुर्गादेवताविशे-
 पार्घपात्राधाराय नम इति आधारं संपूज्य । तत्र पूर्वोक्ताः दशकलाः
 पूजयेत् ॥ ततः हं इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य ॥ सूर्यमंडलाय
 द्वादशकलात्मने श्रीदुर्गादेवताविशेषार्घपात्राय नम इति पात्रं संपूज्य
 तत्र पूर्वोक्ता द्वादशकलाः पूजयेत् । ततः तत्र क्षंळं इत्यादि विलोममातृ-
 कया शुद्धजलमापूर्य गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य षोडशकलात्मने चंद्रमंड-
 लाय श्रीत्रिगु० दुर्गादेवताविशेषार्घपात्रामृताय नम इति संपूज्य तत्र
 पूर्वोक्ताः षोडशकलाः संपूज्य फडिति संरक्ष्य मूलेन देवीमावाह्य
 आवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य

मूलेन पीडशवारमभिर्मञ्ज्य धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च प्रदर्शयेत् ॥ इति विशेषार्थः ॥ अथ तद्वक्षिणे पाद्यादिपञ्चपात्राणि स्थापयेत्

(४) पाद्यपात्रम् (५) अर्घ्यपात्रम् (६) आचमनीयपात्रं (७) मधुपर्कपात्रं (प्रोक्षणाथं) (८) प्रोक्षणीपात्रं च सामान्यार्घ्यवत् संस्थाप्य पाद्यपात्रे श्यामा क (सामो) दुर्वाविष्णुक्रान्तादीनि प्रक्षिप्य अर्घ्यपात्रे सर्पपतिलदूर्वाकुश-प्रक्षेपः । आचमनीयपात्रे जातीफलैलालविंगकंकोल (चिनरुवाला) प्रक्षेपः । मधुपर्कपात्रे दधिमधुघृतानि प्रक्षिप्य विशेषार्घ्यविन्दुं सर्वपात्रेषु प्रक्षिप्य मूलेन प्रोक्षणीपात्राज्जलं गृहीत्वा तज्जलेन पूजासामग्रीं मूलेन सम्प्रोक्ष्य आत्मानं प्रोक्षयेत् ॥ इत्थं पात्रासादनं कृत्वा अन्तर्यजनं यथाधिकारं कृत्वा स्वहृदयस्थां महालक्ष्मीं ध्वात्वा मानसो-पचारैः संपूज्य स्वात्मना सहैक्यं भावयेत् ॥ तत आत्मपूजां कुर्यात् ॥ यथा-भ्रं मंहृत्काय० आधारे । कालाग्निरुद्राय० स्वाधिष्ठाने । कच्छपाय० नाभौ । आधारशक्तिकूर्मान्तपृथिवीसागररत्नद्वीपप्रासादाद्देवपीठेभ्यो० हृदि । घर्माय० दक्षसि । ज्ञानाय० वामांसे । वैराग्याय० वामोरो । ऐश्वर्याय० दक्षोरो । अधर्माय० मुखे । अज्ञानाय० वामपार्श्वे । अवे राग्याय० नाभौ । अनैश्वर्याय० दक्षिणपार्श्वे । अनन्ताय० हृदि । तत्रपद्माय० । आनन्दमयमन्दाय० । संविज्ञालाय० । विकारमयकेसरे-भ्यो० । प्रकृतिमयपत्रेभ्यो० । पंचाशदूर्वासीजाह्वयर्णिक्कायै० । सूर्य-मंडलाय० । चंद्रमंडलाय० । अग्निमंडलाय० । इत्यन्तं हृदि न्यसेत् ॥ पीताग्राः पीठशक्तयः ॥ पीतायै० । श्वेतायै० । अरुणायै० । कृष्णायै० । घूम्रायै० । तीत्रायै० । स्फुलिगिन्यै० । रचिरायै० । ज्वालिन्यै० ॥ रं यद्वचासनायै० । इति स्वदेहे पीठशक्तिं विन्यसेत् ॥ इति ॥

तत आत्मानं गन्धपुष्परंभ्यश्च ॥ मूलेन त्रिः स्वशिरसि पुष्पांजलि

दत्त्वा मानसोपचारैः संपूज्य देवरूपा सन् मूलं जप्त्वा देव्यै जपं
निवेद्य पुष्पमाघ्राय “कुम्भोदराय नमः” इति वामे क्षिप्त्वा हस्तं
प्रक्षाल्य पीठपूजां कुर्यात् ॥

अथ पीठपूजा ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा—ॐ पूर्वपीठाय नमः । ॐ
पं पूर्णपीठाय नमः । कं कामपीठाय० । प्राच्यां दिशि—ॐ उं उड्यान-
पीठाय० । आग्नेय्यां—मां मातृपीठाय० । दक्षिणे—जं जालंधरपीठाय० ।
नैर्ऋत्ये—कं कोल्हापुरोपपीठाय० । पश्चिमे पूं पूर्णगिरिपीठाय० ।
वायव्यां—सां सौहारोपपीठाय० । उत्तरे—कं कोल्हागिरिपीठाय० ।
ऐशान्यां—कं कामरूपीठाय० ॥ १ ॥ इति पीठं सम्पूज्य ॥ नमस्कारः
—दक्षिणे-गुरवे० । परमगुरवे० । परमेष्ठिगुरवे० । गुरुपंक्तये० ।
मातापितृभ्यां० । उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो० ॥ ६ ॥ वामे
गं गणपतये० । दुं दुर्गायै० । सं सरस्वत्यै० । क्षं क्षेत्रपालाय० ॥४॥
इति नत्वा ॥ पीठदेवताः स्थापयेत्—पीठमध्ये—मं मण्डूकाय० । आं
आधारशक्त्यै० । मूं मूलप्रकृत्यै० । कं कालाग्निरुद्राय० । तदुपरि
आं आदिकूर्माय० । अं अनन्ताय० । आं आदिवराहाय० ।
पं पृथिव्यै० । तदुपरि—अं अमृतार्णवाय० । रं रत्नद्वीपाय० । हं हेम-
गिरये० । नं नन्दनोद्यानाय० । कं कल्पवृक्षाय० । मं मणिभूत-
लाय० । दं दिव्यमण्डपाय० । सं स्वर्णवेदिकायै० । रं रत्नसिंहास-
नाय० । धं धर्माय० । ज्ञं ज्ञानाय० । वै वैराग्याय० । ऐं ऐश्वर्याय० ।
इति सम्पूज्य ॥ पूर्वे—अं अनैश्वर्याय० । पुनर्मध्ये—सं सत्त्वाय० ।
मं प्रबोधात्मने० । रं रजसे० । प्रं प्रकृत्यात्मने० । तं तमसे० । मं मोहा-
त्मने० । सां सोममण्डलाय० । मूं मूर्धमण्डलाय० । वं वह्निमण्डलाय० ।
मां मायातत्त्वाय० । विं विद्यातत्त्वाय० । शं शिवतत्त्वाय० । द्रं ब्रह्मणे० ।

मं महेश्वराय० । आं आत्मने० । अं अन्तरात्मने० । पं परमात्मने० ।
जं जीवात्मने० । ज्ञं ज्ञानात्मने० । कं कन्दाय० । नं नीलाय० । पं पद्माय० ।
मं महापद्माय० । रं रत्नेभ्यो० । केंकेसरेभ्यो० । कं० कर्णिकार्यै० ॥ ५१ ॥

अथ नवशक्तीः स्थापयेत् ॥ तद्यथा—पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॥ नन्दायै० ।
भगवत्यै० । रक्तदन्तिकायै० । शाकम्भर्यै० । दुर्गायै० । भीमायै० ।
कालिकायै० । भ्रामर्यै० । मध्ये शिवदूत्यै० ॥ ९ ॥ इति संस्थाप्य
यथाशक्त्या शक्तिसहितपीठदेवताः पूजयेत् ॥ इति ॥

अथ यंत्रदेवतास्थापनम् ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ विंदुमध्ये
ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विचे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरू-
पिणीश्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवतायै नमः श्रीमन्महाकाली० दुर्गादेवता-
मावा० ॥ विंदोः परितो गुरुचतुष्टयमावाहयेत् ॥ गुरवे० । परात्पर-
गुरवे० । परमेष्ठिगुरवे० । गुरुपंक्तये० ॥ पडंगम् ॥ ऐं हृदयाय० ।
ह्रीं शिरसे० । क्लीं शिखायै० । चामुंडायै कवचाय० । विचे नेत्रत्रयाय० ।
मूलेन अस्त्राय० ॥ अथ त्रिकोणे स्वाश्रादिप्रादाक्षिण्येन क्रमेण ।
स्वरया सह विधात्रे० । श्रिया सह विष्णवे० । उमया सह शिवाय० ।
दक्षिणे हुं सिंहाय० । वामे हूं महिषाय० । पट्कोणे (अग्नीशासुर-
वायव्ये मध्ये दिक्षु च) ऐं नन्दजायै० । ह्रीं रक्तदन्तिकायै० । क्लीं
शाकम्भर्यै० । हुं दुर्गायै० । हूं भीमायै० । ह्रीं भ्रामर्यै० ॥ ६ ॥ ततो
अष्टपत्रे स्वाश्रादिप्रादाक्षिण्यक्रमेण । ऐं द्राह्म्यै० । ह्रीं माहेश्वर्यै० । क्लीं
कौमार्यै० । ह्रीं वैष्णव्यै० । हुं वाराह्यै० । क्ष्ण्यै० नारसिंह्यै० । लं ऐन्द्र्यै० ।
स्त्रं चामुण्डायै० ॥ ८ ॥ ततश्चतुर्विंशतिदले ॥ विं विष्णुमायायै० । चं
चेतनायै० । पुं युद्धयै० । निं निन्द्रायै० । क्षुं क्षुषायै० । छं छायायै० ।
शं शक्त्यै० । तं तृष्णायै० । क्षां क्षान्त्र्यै० । जां जात्यै० । लं लजायै० ।

शां शान्त्यै० । श्रं श्रद्धायै० । कां कान्त्यै० । लं लक्ष्म्यै० । धूं धृत्यै० ।
 वृं वृत्यै० । श्रुं श्रुत्यै० । स्मं स्मृत्यै० । दं दयायै० । तुं तुष्ट्यै० । पुं पुष्ट्यै० ।
 मां मातृभ्यो० । भ्रां भ्रान्त्यै० ॥ २४ ॥ भूपुरे कोणचतुष्टये आप्त्यादि-
 कोणे ॥ गं गणपतये० । क्षं क्षेत्रपालाय० । वं बहुकाय० । यां योगिन्यै० ॥
 पूर्वादिदिक्षु-इन्द्राय० । अग्नये० । यमाय० । निर्ऋतये० । वरुणाय० ।
 वायवे० । सोमाय० । ईशानाय० । ब्रह्मणे० । अनन्ताय० ॥ तद्बहिः-
 वज्राय० । शक्तये० । वंशाय० । खड्गाय० । पाशाय० । अंकुशाय० ।
 गदायै० । त्रिशूलायै० । पद्माय० । चक्राय० ॥ तद्बहिः ॥ वज्रहस्तायै
 गजारूढायै कादंबरीदेव्यै० । शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै० ।
 दंडहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै० । खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ता-
 क्षीदेव्यै० ॥ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै० । अंकुशहस्तायै
 मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै० । गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै० ।
 शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै० । पद्महस्तायै हंसवाहनायै
 सुरज्येष्ठादेव्यै० । चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराक्षीदेव्यै नमः ॥ इत्या-
 वाह्यं “यंत्रस्थदेवताभ्यो नमः” इति मूलमंत्रेण यथाशक्त्या पूजनं
 कुर्यात् ॥ इति यन्त्रदेवतापूजनम् ॥

ततो हृदिस्थां ज्योतिर्मयीं सपरिवारां महालक्ष्मीं ध्यायेत् ॥ अथवा
 देवीध्यानम्—विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां कन्याभिः
 करवालखेटविलसद्गस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रदरालिखेटविशिखां-
 श्रापं गुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे
 ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा ॥ हस्ते पुष्पाण्यादाय-आगच्छ वरदे देवि दैत्य-
 दर्पनिषूदिनि ॥ पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥ १ ॥ सर्वतीर्थ-
 पत्यं न्यसि सर्वदेवसमन्विता ॥ इमं घटं समागच्छ त्रिष्टु देवगणैः स्तु-

॥ २ ॥ दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिदं कल्पय ॥ बलिपूजां गृहाण
त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ ३ ॥ प्रत्याणजननीं सत्यां कामदां करुणा-
कराम् ॥ अनन्तशक्तिसंपन्नां दुर्गांमावाहयाम्यहम् ॥ ४ ॥ साङ्गां
सपरिवारां सावरणां सायुषां दुर्गांमावाहयामि ॥ महाकालीमहालक्ष्मी-
महासरस्वतीस्वरूपिणीदुर्गे देवते आवाहिता भव ॥ स्थापिता भव ॥
सन्निहिता भव ॥ सन्निरुद्धा भव ॥ संमुखीकृता भव ॥ पदद्वेन सक-
लीकृता भव ॥ अवगुण्डिता भव ॥ परमीकृता भव ॥ अपृतीकृता भव ॥
पार्थिता भव ॥ नमस्कृता भव ॥ ११ ॥ ॐ मनोजुति० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणि (दुर्गे देवते) मुप्रतिष्ठिता
वरदा भव ॥ ततः श्रीमूक्तेन देवीन्यासं कृत्वा यथाशक्ति श्रीमूक्तेन
वा जयन्ती मङ्गला० मूलेन वा षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ यथावकाशं वा
देवीराजोपचारपूजनं कुर्यात् ॥

॥ ४८ ॥ अथ देवीराजोपचारपूजाप्रयोगः ॥

अथदेवीराजोपचारपूजाप्रयोगः ॥ तत्रादौ स्ववापे स्नानशालां
विभाव्य देवीं संस्थाप्य ध्यायेत् । ध्यानम्—खड्गं चक्र० ॥ १ ॥ अक्षस्रक्०
॥ २ ॥ घंटाशूल० ॥ ३ ॥ मूलम् ॥ आवाहनम्—उपासि मागधमंगल
गायनैर्ज्ञाति जाग्रहि जाग्रहि जाग्रहि । अतिकृपार्द्ररुटाक्षनिरीक्षणैर्जग-
दिदं जगदंब सुखीकुरु ॥ ४ ॥ कनकमयवितर्दिशोभमानं दिशि दिशि
पूर्णसुवर्णकुंभयुक्तम् ॥ मणिमयशुभमदपं त्वमेहि मायि कृपयैति सम-
र्चनं गृहीतुम् ॥ ५ ॥ मूलम्—श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती
स्वरूपिणीदुर्गायै नमः आवाहनम् समर्पयामि ॥ (एवं सर्वत्र उक्त्वा
उपचारान् कुर्यात्) आसनम्—कनकमयवितर्दिस्थापिते तुलिकाख्ये

विविधकुसुमकर्णौ कोटिवालार्कवर्णौ ॥ भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽ-
 स्मिन्नुपविश पदयुगं हेमपीठे निधेहि ॥ ६ ॥ पाद्यम्—दूर्वया सरसिजा-
 न्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम् ॥ पद्मयुगमसदृशे पदयुग्मे पाद्य-
 मतदुररीकुरु मातः । (पाद्यपात्रात्) पादयोः पाद्यं स० ॥ ७ ॥ अर्घ्यम्—
 गंधपुष्पयत्रसर्पपदूर्वासंयुतं कुशतिलाक्षतामिश्रम् ॥ हेमपात्रनिहितं सह
 रत्नैरर्घ्यमेतदुररीकुरु मातः ॥ (अर्घ्यपात्रात्) हस्तयोरर्घ्यं स० ॥ ८ ॥
 आचमनीयम्—जलजश्रुतिना करेण जातीफलकंकोललवंगंधयुक्तैः ॥
 अमृतैरमृतैरिवासितैर्भगवत्याचमनं त्रिधीयताम् ॥ (आचमनीयपात्रात्)
 आचमनीयं स० ॥ ९ ॥ मधुपर्कः—मधुनिहितं कनकस्य संपुटे
 विहितं रत्नापिधानकेन यत् ॥ तदिदं भगवति करेऽर्पितं
 मधुपर्कं जननि प्रगृह्यताम् ॥ (मधुपर्कपात्रात्) मधुपर्कं स०
 ॥ १० ॥ आचमनीयम्—पाद्यं ते परिकल्पितं च पदयोरर्घ्यं तथा
 हस्तयोः सौधीभिर्मधुपर्कमंब मधुरं धाराभिरास्वादय ॥ तोयेनाचमनं
 विधेहि शुचिना गांगेन मत्कल्पितं साष्टांगं प्रणिपातमंब कमले
 दृष्ट्या कृतार्था कुरु ॥ (आचमनीयपात्रात्) आचमनीयं स०
 ॥ ११ ॥ पयःस्नानम्—स्वर्धेनुजातं बलश्रीर्यवर्धनं दिव्यामृतात्यन्तर-
 समदं सितम् ॥ श्रीचंडिके दुग्धसमुद्रसंभवे गृहाण दुग्धं मनसा मयाऽ-
 र्पितम् ॥ १२ ॥ दधिस्नानम्—क्षीरोद्भवं स्वादु सुधामयं च श्री-
 चंद्रकान्तिसदृशं सुशोभनम् ॥ श्रीचंडिके शुभनिशुभनाशिनि स्नानार्थ-
 मंगीकुरु तेऽर्पितं दधि ॥ १३ ॥ घृतस्नानम्—श्रीक्षीरजोद्भूतमिदं मनोज्ञं
 प्रदीप्तवह्नियुतिपावितं च । श्रीचंडिके दैत्यविनाशदक्षे ह्यैर्यगवीनं परि-
 गृह्यतां च ॥ १४ ॥ मधुस्नानम्—माधुर्यमिश्रं मधुमक्षिकागणैर्वृक्षालि-
 स्ये मधुस्नाने नितम् ॥ श्रीचंडिके शंकरपाण्डुभ्ये स्नानार्थमंगीकुरु

तेऽर्पितं मधु ॥ १५ ॥ शर्करास्नानम्—पूर्णेक्षुकांभोधिसमुद्भवाभिमां
 माणिवयमुक्ताफलदामंजुलाम् । श्रीचंडिके चंडविनाशकारिणि स्ना-
 नार्थमंगीकुरु शर्करां शुभाम् ॥ १६ ॥ सुगं०—एतच्चंपकतैलमंत्रविविधैः
 पुष्पैर्मुहूर्वासितं न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचपके भृगैर्भ्रमद्भिर्द्वृतम् ॥ सान-
 न्दं ब्रजसुंदरीभिरभितो हस्तैर्द्वृतं चिन्मये केशेषु भ्रमरमेषु सरुलेष्वोपु
 चाल्लिप्यताम् ॥ १७ ॥ उद्धर्तनस्नानम्—मातः कुंकुमपंकनिर्मितमिदं देहे
 नवोद्धर्तनं भवत्याऽहं कलयामि हैमरजसा संमिश्रितं केशरैः ॥ केशा-
 नापलकैर्विशोभ्य विशदान्कस्तुरिकाद्यचितैः स्नानं ते नवरत्नकुंभवि-
 धिना संवासितोष्णोदकैः ॥ १८ ॥ स्नानम्—एलाशीरसुवासितैः सुकु-
 सुभैर्गंगादितीर्थोदकैर्माणिवयादिकमौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैःसुवर्णोदकैः ॥
 मंत्रान्वैदिकतान्त्रिकान्परिपठन्सानंदमत्यादरात् स्नानं ते परिकल्पयामि
 जननि स्नेहात्त्वमंगीकुरु ॥ १९ ॥ श्रीमन्महालक्ष्म्याद्यावाहितदेवताभ्यो
 नमः इति मूलमंत्रेण पंचोपचारैः संपूज्य । उत्तरे निर्माल्यं विसृज्य पुनः
 संपूज्य अभिषेकं कुर्यात् ॥ अभिषेकार्थं पात्रे जलगंधपुष्पदुग्धादीनि
 क्षिपेत् ॥ देवीमूक्तं श्रीमूक्तं शक्राद्य इत्यादिस्तौत्रैश्चाभिषेकः कार्यः ॥
 शुद्धो०स्ना०—उद्गंधैरगुरुद्रवैः सुरभिणा रुस्तुरिकावारिणा स्फूर्ज-
 न्सारभयक्षरुमजलैः काश्मीरनीलैरापि ॥ पुष्पांभोभिरशेषतीर्थसालिलैः
 कर्पूरवासोभरैः स्नानं ते परिकल्पयामि कमले भवत्या नदंगीकुरु ॥ २० ॥
 वस्त्रम्—वाञ्छार्कद्युनिद्रादिमीघकुसुमप्रस्पर्धिसर्वोत्तमं मानस्त्रं परिधेहि
 दिव्यवसनं भवत्या मया कल्पितम् ॥ मुनताभिर्प्रायिनं च कंचुक्रमिदं
 स्वीकृत्य पीतमपं तप्तस्वर्णसमानवर्णमतुलं प्रावारमंगीकुरु ॥ २१ ॥
 आच०—भूपालद्विपालकिरीटरत्नमरीचिनीराजितपादपीठे ॥ देवैः
 ममागाधिनपादपद्मे श्रीचंडिके स्वाचमनं गृहाण ॥ २२ ॥ पादुके-

नवरत्नयुते मयाऽर्पिते कमनीये तपनीयपादुके ॥ सविलासमिदं पदद्वयं
 कृपया देवि तयोर्निधीयताम् ॥ २३ ॥ केशपाशसंस्करणम्—बहुभिर-
 गरुधूपैः सादरं धूपयित्वा भगवति तव केशान् कंकृतैर्मार्जयित्वा ॥ सुर-
 भिभिररविन्दैश्चैश्चार्चयित्वा झटिति कनकमृत्रैर्जटयन्वेष्टयामि ॥ २४ ॥
 सौवीराजनं—(सुरमो) सौवीराजनमिदमंब चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कन-
 कशलाकया मया यत् ॥ तन्नूनं मलिनमपि त्वदाक्षिसंगात् ब्रह्मेन्द्राद्य-
 भिलषणीयतामियाय ॥ २५ ॥ अलं०—मंजीरान्बदयोर्निधाय रुचिरा-
 न्विन्यस्य कांचीं कटौ मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले ॥
 केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीः करेषु क्रमात् ताटंके भव कर्णयोर्वि-
 निदधे शीर्षे च चूडामणिम् ॥ २६ ॥ धम्मिले तव देवि हेमकुसुमा-
 न्याधाय भालस्थले मुक्ताराजिविराजि हेमतिलकं नासापुटे मौक्त-
 कम् ॥ मातर्मौक्तिकजालिकां च कुचयोः सर्वांगुलीषुर्मिकाः कट्यां कां-
 चनकिंकिणीर्विनिदधे रत्नावतंसौ श्रुतौ ॥ २७ ॥ गंधः—प्रत्यगं परि-
 मार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोञ्जनं कुर्वे केशकलापमायततरं धूपोत्तमै-
 र्धूपितम् ॥ काशपीरैरगरुद्रवैर्मलयजैः संपर्ष्य संपादितं भक्तत्राणपरे
 श्रीकृष्णगृहिणि श्रीचंदनं गृह्यताम् ॥ २८ ॥ कुंकुमम्—मातर्भालतले तवा-
 तिविमले काशपीरकस्तूरिकाकर्पूरागरुभिः करोमि तिलकं देहेंऽगरागं
 ततः ॥ वसोजादिषु यक्षरुदमरसं सिक्त्वा च पुष्पावृत्तिं पादौ कुंकुम-
 लेपनादिभिर्गृहः संपूजयामि क्रमात् ॥ २९ ॥ कज्जलम्—चापेयकर्पूर-
 कचन्दनादिकैर्नानाविधैर्गंधचयैः सुवासितम् ॥ नेत्रांजनार्थाय हरिन्मणि-
 प्रभं श्रीचंडिके स्त्रीकुरु कज्जलं शुभम् ॥ ३० ॥ अक्षताः—रत्नाक्षतैस्त्वां परि-
 पूजयामि मुक्ताफलैर्वा रुचिरैरविडैः ॥ अखंडितैर्देवि यवादिभिर्वा का-
 शपीरपंकांकिततंडुलैर्वा ॥ ३१ ॥ अत्तरं—जननि चंपकैस्त्वमिदं पुरो

मृगमदोऽयमयं पट्टवासकः ॥ सुरभिगंधमिदं च चतुःसमं संपदि सर्वमिदं
परिवृह्यताम् ॥ ३२ ॥ सिंदूरं—सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्त-
मेतत् सिंदूरं ते हृदयकमले हर्षवर्षं तनोतु ॥ बालादित्यद्युतिरिव सदा
लोहिता यस्य कान्तिरन्तर्ध्वान्तं हरतु सततं चेतसा चिन्तयामि ॥ ३३ ॥
पुष्पाणि—मंदारकुंदकरवीरलवंगपुष्पस्त्वां देवि संततमहं परिपूजयामि ।
जातीजपावकुलचंपककेतकादिनानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि
॥ ३४ ॥ पुष्पमाला—पुष्पौघैर्योतयन्तैः सततपरिचलत्कान्तिकुल्लोल-
जालैः कुर्वाणा मञ्जदन्तःकरणविमलतां शोभितेव त्रिवेणी ॥
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणिभिर्निर्मिता दीप्यमानैर्नित्यं हारत्रयी
त्वं भगवति कमले गृह्यतां कंठमध्ये ॥ पुष्पमालां स० ॥ ३५ ॥

अथांगपूजा ॥ हस्ते गंधपात्रं गृहीत्वा दक्षिणेनार्चयेत् ॥ ह्रीं दुर्गायै
नमः पादौ पूजयामि ॥ ह्रीं मंगलायै० गुल्फौ पूज० ॥ ह्रीं भगवत्यै०
जंघे पूज० ॥ ह्रीं कौमार्यै० जानुनी पूज० ॥ ह्रीं वागीश्वर्यै० उरू० पूज० ॥
ह्रीं वरदायै० कटी० पूज० ॥ ह्रीं पद्माकरवासिन्यै० स्तनौ पूज० ॥
ह्रीं महिषमार्द्दिन्यै० कंठं पूज० ॥ ह्रीं उमासुतायै० स्कंधौ पूज० ॥
ह्रीं इन्द्राण्यै० भुजौ पूज० ॥ ह्रीं गौर्यै० हस्तौ पूज० ॥ ह्रीं मोहवत्यै०
मुखं पूज० ॥ ह्रीं शिवायै० कर्णौ पूज० ॥ ह्रीं अन्नपूर्णायै० नेत्रे पूज० ॥
ह्रीं कमलायै० ललाटं पूज० ॥ ह्रीं महालक्ष्म्यै० सर्वांगं पूजयामि ॥
देव्या दक्षिणे सिंहं पूजयामि ॥ वामे महिषं पूजयामि ॥

॥ अथावरणपूजा ॥

प्रथमावरणपूजा—त्रापेन तत्रमुद्रया तर्पणम् । दक्षिणेन शानमुद्रया
पूजनम् । प्रार्थना—संचिन्मयपरे देवि परामृतचक्रप्रिये ॥ अनुज्ञां देवि
मे मातः परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ (यथा दक्षिणेनासतपुष्पादिना

पूजयामीति संपूज्य । वामकरधृताद्रिखण्डेन विशेषार्घजलैस्तर्पयाम्येवं सर्वत्र ।)ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विद्महे साङ्गायै सपरिवारार्यै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकार्यै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यै नमः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १ ॥
 ॐ ऐं ह्रीं ० विद्महे साङ्गा ० सप ० साव ० सायु ० सश ० यै महाकाल्यै नमः महाकालीश्रीपा ० ॥ २ ॥ ॐ ऐं ह्रीं ० विद्महे साङ्गा ० सप ० साव ० सायु ० सश ० यै महालक्ष्म्यै ० महालक्ष्मीश्रीपा ० ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं ० विद्महे साङ्गा ० सप ० साव ० सायु ० सश ० यै महासरस्वत्यै ० महासरस्वतीश्रीपा ० ॥ ४ ॥ विन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत्—ॐ गुरवे नमः गुरुशक्तिश्रीपा ० ॥५॥ ॐ परमगुरवे ० परमगुरुशक्तिश्रीपा ० ॥६॥ ॐ परात्परगुरवे ० परात्परगुरुशक्तिश्रीपा ० ॥ ७ ॥ ॐ परमेष्ठिगुरवे ० परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपा ० ॥ ८ ॥ अथ षडङ्गं पूजयेत्—ॐ ऐं हृदयाय ० हृदयशक्तिश्रीपा ० ॥९॥ ॐ ह्रीं शिरसे नमः शिरःशक्तिश्रीपा ० ॥१०॥ ॐ क्लीं शिखायै ० शिखाशक्तिश्रीपा ० ॥११॥ ॐ चामुण्डायै कवचाय ० कवचशक्तिश्रीपा ० ॥ १२ ॥ ॐ विद्महे नेत्रत्रयाय ० नेत्रत्रयशक्तिश्रीपा ० ॥१३॥ मूलेन अस्त्राय ० अस्त्रशक्तिश्रीपा ० ॥१४॥ प्रथमावरणदेवताभ्यो ० सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं स ० ॥ सामान्यार्घजलमादाय—एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ॥ पुष्पांजलिमादाय—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ पुष्पांजलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥

अथ द्वितीयावरणम्—त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत्—
 ॐ सावित्र्या सह विधात्रे ० विधातृशक्तिश्रीपा ० ॥१५॥ ॐ श्रिया सह

विष्णवे० विष्णुशक्तिश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ उमया सह शिवाय०
 शिवशक्तिश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ धुं नमः सिंहाय० सिंहशक्तिश्रीपा०
 ॥ १८ ॥ ॐ हुं नमः महिषाय० महिषशक्तिश्रीपा० ॥ १९ ॥ द्विती-
 यावरणदेवताभ्यो० गंधं पु० स० ॥ सामा० जलमादाय—द्वितीयावरण-
 देवताः सा० सप० सायु० सश० पू० त० सन्तु । पुष्पा० आदाय—अभीष्ट० ॥
 शर० । भक्त्या० द्वितीया० ॥ पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमु० प्रणमेत् ॥
 इति द्वितीयावरणम् ॥

अथ तृतीयावरणम्—पट्कोणे अग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च
 पूजयेत्—ॐ ऐं नन्दजायै० नन्दजाशक्तिश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं
 रक्तदन्तिकायै० रक्तदन्तिकाशक्तिश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ क्लीं शारुम्भयै०
 शारुम्भरीशक्तिश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ हुं दुर्गायै० दुर्गाशक्तिश्रीपा०
 ॥ २३ ॥ ॐ हुं भीमायै० भीमाशक्तिश्रीपा० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं
 भ्रामर्यै० भ्रामरीशक्तिश्रीपा० ॥ २५ ॥ तृतीयावरणदेवताभ्यो० गंधं
 पु० स० ॥ सामा० दाय—एतास्तृतीयावरणदेवताः सा० सप० सायु०
 सश० पू० त० सन्तु ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय—अभीष्ट० ॥ भक्त्या० तृती-
 यावरणार्चनम् ॥ ३ ॥ पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुदया प्रणमेत् ॥
 इति तृतीयावरणम् ॥

अथ चतुर्थीवरणम्—उतोऽष्टपत्रे स्वाग्नादिमादक्षिण्येन पूजयेत्—
 ॐ ऐं ब्राह्म्यै० ब्राह्मीशक्तिश्रीपा० ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै० माहे-
 श्वरीशक्तिश्रीपा० ॥ २७ ॥ ॐ क्लीं कौमार्यै० कौमारीशक्तिश्रीपा० ॥ २८ ॥
 ॐ ह्रीं वैष्णव्यै० वैष्णवीशक्तिश्रीपा० ॥ २९ ॥ ॐ लृं वाराह्यै०
 वाराहीशक्तिश्रीपा० ॥ ३० ॥ ॐ ह्र-यौ नारसिंह्यै० नारसिंहीशक्तिश्रीपा०
 ॥ ३१ ॥ ॐ लं ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीशक्तिश्रीपा० ॥ ३२ ॥ ॐ म्भ्यै चामु-
 ण्डायै० चामुण्डाशक्तिश्रीपा० ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै० लक्ष्मीशक्ति-

श्रीपा० ॥३४॥ चतुर्थावरणदेवताभ्यो० गंधं पु० स०॥ सामा० मा-
दाय—एताः चतुर्थावरणदेवताः सा०सप० सायु० सश०पू०त० सन्तु ॥
पुष्पाञ्जलिमादाय—अभीष्ट० । भक्त्या० चतुर्थावरणार्चनम् ॥ ४ ॥
पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥

अथ पञ्चमावरणम्—ततश्चतुर्विंशतिदले स्वाम्रादिप्रादक्षिण्येन ।
ॐ विं विष्णुमायायै० विष्णुमायाशक्तिश्रीपा०॥३५॥ ॐ चें चेतनायै०
चेतनाशक्तिश्रीपा० ॥३६॥ ॐ वुं बुद्धयै० बुद्धिशक्तिश्रीपा० ॥३७॥
ॐ निं निद्रायै० निद्राशक्तिश्रीपा० ॥ ३८ ॥ ॐ क्षुं क्षुधायै० क्षुधा-
शक्तिश्रीपा० ॥ ३९ ॥ ॐ छां छायायै० छायाशक्तिश्रीपा० ॥४०॥
ॐ शं शक्त्यै० शक्तिश्रीपा० ॥४१॥ ॐ तृं तृष्णायै० तृष्णाशक्ति-
श्रीपा० ॥४२॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै० क्षान्तिशक्तिश्रीपा० ॥ ४३ ॥ ॐ जां
जात्यै० जातिशक्तिश्रीपा० ॥४४॥ ॐ लं लज्जायै० लज्जाशक्तिश्रीपा०
॥४५॥ ॐ शां शान्त्यै० शान्तिशक्तिश्रीपा० ॥४६॥ ॐ श्रं श्रद्धायै०
श्रद्धाशक्तिश्रीपा० ॥४७॥ ॐ कां कान्त्यै० कान्तिशक्तिश्रीपा०॥४८॥
ॐ लं लक्ष्म्यै० लक्ष्मीशक्तिश्रीपा० ॥ ४९ ॥ ॐ घृं घृत्यै० घृति-
शक्तिश्रीपा० ॥५०॥ ॐ वृं वृत्त्यै० वृत्तिशक्तिश्रीपा० ॥५१॥ ॐ श्रुं
श्रुत्यै० श्रुतिशक्तिश्रीपा० ॥५२॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै० स्मृतिशक्तिश्रीपा०
॥५३॥ ॐ दं दयायै० दयाशक्तिश्रीपा०॥५४॥ ॐ तुं तुष्ट्यै० तुष्टिशक्ति-
श्रीपा० ॥ ५५ ॥ ॐ पुं पुष्ट्यै० पुष्टिशक्तिश्रीपा० ॥ ५६ ॥ ॐ मां
मातृभ्यो० मातृशक्तिश्रीपा० ॥ ५७ ॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यै० भ्रान्तिश-
क्तिश्रीपा० ॥ ५८ ॥ पञ्चमावरणदेवताभ्यो० गंधं पु० सम० ॥
सामा० मादाय—एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गः सप० सायु०सश० पू०
त० सन्तु ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय—अभीष्ट० । भक्त्या० पञ्चमावरणार्च-

नम् ॥५॥ पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति पञ्चमावरणम् ॥

अथ षष्ठावरणम्—भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणमारभ्य ॥

ॐ गं गणपतये० गणपतिशक्तिश्रीपा० ॥५९॥ ॐ हं क्षेत्रपालाय०

क्षेत्रपालशक्तिश्रीपा० ॥ ६० ॥ ॐ वं बटुकाय० बटुकशक्तिश्रीपा०

॥ ६१ ॥ ॐ यां योगिन्यै० योगिनीशक्तिश्रीपा० ॥ ६२ ॥

षष्ठावरणदेवताभ्यो० गंधं पु० सम० ॥ सामा० मादाय—एताः षष्ठा-

वरणदेवताः सा० स० सायु० सश० पू० त० सन्तु ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय

अर्भीष्ट० । भक्त्या० षष्ठावरणार्चनम् ॥ ६॥ पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनि-

मुद्रया प्रणमेत् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥

• अथ सप्तमावरणम्—पूर्वादिदशदिक्षु ॥ ॐ लं इन्द्राय० इन्द्र-

शक्तिश्रीपा० ॥ ६३ ॥ ॐ रं अग्नये० अग्निशक्तिश्रीपा० ॥ ६४ ॥

ॐ यं यमाय० यमशक्तिश्रीपा० ॥ ६५ ॥ ॐ हं निर्ऋतये० निर्ऋ-

तिशक्तिश्रीपा० ॥ ६६ ॥ ॐ वं वरुणाय० वरुणशक्तिश्रीपा० ॥ ६७ ॥

ॐ यं वायवे० वायुशक्तिश्रीपा० ॥ ६८ ॥ ॐ सं सोमाय० सोम-

शक्तिश्रीपा० ॥ ६९ ॥ ॐ हं ईशानाय० ईशानशक्तिश्रीपा० ॥ ७० ॥

ॐ वं ब्रह्मणे० ब्रह्मशक्तिश्रीपा० ॥ ७१ ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय० अन-

न्तशक्तिश्रीपा० ॥ ७२ ॥ सप्तमावरणदेवताभ्यो० गंधं पु० स० ॥ सामा०

मादाय—एताः सप्तमावरणदेवताः सा० सप० सायु० सश० पू० त० सन्तु ॥

पुष्पाञ्जलिमादाय—अर्भीष्ट० । भक्त्या० सप्तमावरणार्चनम् ॥ ७ ॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥

अथाष्टमावरणम्—तद्वहिः । ॐ वं वज्राय० वज्रशक्तिश्रीपा० । ७३ ।

ॐ शं शक्तये० शक्तिश्रीपादु० ॥ ७४ ॥ ॐ दं दण्डाय० दण्डशक्तिश्री-

पा० ॥ ७५ ॥ ॐ खं खड्गाय० खड्गशक्तिश्रीपा० ॥ ७६ ॥ ॐ पां

पाशाय० पाशशक्तिश्रीपा० ॥ ७७ ॥ ॐ अं अङ्कुशाय० अङ्कुशशक्ति-
श्रीपा० ॥ ७८ ॥ ॐ गं गदायै० गदाशक्तिश्रीपा० ॥ ७९ ॥ ॐ त्रिं
त्रिशूलाय० त्रिशूलशक्तिश्रीपा० ॥ ८० ॥ ॐ पं पद्माय० पद्मशक्ति-
श्रीपा० ॥ ८१ ॥ ॐ चं चक्राय० चक्रशक्तिश्रीपा० ॥ ८२ ॥ अष्टमा-
वरणदेवताभ्यो० गंधं पु० स० ॥ सामा० मादाय-एता अष्टमावरणदेवताः
सा० सप० सायु० सश० पू० त० सन्तु । पुष्पाञ्जलिमादाय-अभीष्ट० ।
भक्त्या० अष्टमावरणार्चनम् ॥ ८॥ पुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रया प्रण-
मेत् ॥ इति अष्टमावरणार्चनम् ॥

अथ नवमावरणार्चनम्—कलशात्पूर्वादिदिक्षु । ॐ वज्रहस्तायै
गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै० कादम्बरीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि ॥ ८३ ॥ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै०
उल्कादेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ८४ ॥ दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै०
करालीदेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ८५ ॥ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी-
देव्यै० रक्ताक्षीदेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ८६ ॥ पाशहस्तायै मकरवाहनायै
श्वेताक्षीदेव्यै० श्वेताक्षीदेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ८७ ॥ अङ्कुशहस्तायै मृग-
वाहनायै हरिताक्षीदेव्यै० हरिताक्षीदेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ८८ ॥ गदाह-
स्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै० यक्षिणीदेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ८९ ॥
शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै० कालीदेवीशक्तिश्रीपा० ॥ ९० ॥
पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै० सुरज्येष्ठादेवीशक्तिश्रीपा०
॥ ९१ ॥ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै० सर्पराज्ञीदेवीशक्ति-
श्रीपा० ॥ ९२ ॥ नवमावरणदेवताभ्यो० गंधं पुष्पं सम० ॥ सामान्या०
मादाय-एता नवमावरणदेवताः साङ्गा० सप० सायु० सश० पू० त०
सन्तु ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय-अभीष्ट० । भक्त्या० नवमावरणार्चनम् ॥ ९ ॥

पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति नवमावरणम् ॥
इत्यावरणपूजा ॥

ततो यथाशक्त्यष्टोत्तरशतनामभिस्तुलसीदुर्वापुष्पाक्षतादिभिरर्चयेत् ॥
अथाष्टोत्तरशतनामानि ॥ ॐ माहेश्वर्ये नमः । महादेव्यै ० । जयंत्यै ० ।
सर्वमंगलायै ० । लज्जायै ० । भगवत्यै ० । वंद्यायै ० । भवान्यै ० ।
पापनाशिन्यै ० । चंडिकायै ० । १० । कालरात्र्यै ० । भद्रकाल्यै ० । अपराजि-
तायै ० । महाविद्यायै ० । महामेधायै ० । महामायायै ० । महाबलायै ० ।
कात्यायन्यै ० । जयायै ० । दुर्गायै ० । २० । मंदारवनवासिन्यै ० । आर्यायै ० ।
गिरिसुतायै ० । धात्र्यै ० । महिपासुरघातिन्यै ० । सिद्धिदायै ० । बुद्धि-
दायै ० । नित्यायै ० । वरदायै ० ॥ वरवर्णिन्यै ० । ३० । अंबिकायै ० ।
सुखदायै ० । सौम्यायै ० । जगन्मात्रे ० । शिवप्रियायै ० । भक्तसंतापसं-
हृद्यै ० । सर्वकामप्रपूरिण्यै ० । जगत्कर्त्र्यै ० । जगद्धात्र्यै ० । जगत्पा-
लनतत्परायै ० । ४० । अव्यक्तायै ० । व्यक्तरूपायै ० । भीमायै ० । त्रिपुर-
सुंदर्यै ० । अपर्णायै ० । ललितायै ० । वैद्यायै ० । पूर्णचंद्रनिभाननायै ० ।
चामुंडायै ० । चतुरायै ० । ५० । चंद्रायै ० । गुणत्रयविभाविन्यै ० । हेरंब-
जनन्यै ० । काल्यै ० । त्रिगुणायै ० । यशोधारिण्यै ० । उमायै ० । कलश-
हस्तायै ० । दैत्यदर्पनिघृदिन्यै ० । बुद्ध्यै ० । ६० । कांत्यै ० । क्षमायै ० ।
शांत्यै ० । पुष्ट्यै ० । तुष्ट्यै ० । धृत्यै ० । मर्त्यै ० । वरायुधधरायै ० । (धीरायै ०)
गौर्यै ० । शाकंभर्यै ० । ७० । शिवायै ० । अष्टसिद्धिप्रदायै ० । वामायै ० ।
शिववामांगवासिन्यै ० । धर्मदायै ० । धनदायै ० । श्रीदायै ० । कामदायै ० ।
मोक्षदायै ० । अपरायै ० । ८० । चित्स्वरूपायै ० । चिदानंदायै ० । जयत्रिर्यै ० ।
जयदायिन्यै ० । सर्वमंगलमंगलायै ० । जगन्नयहितैपिण्यै ० । शर्वा-
ण्यै ० । पार्वत्यै ० । धन्यायै ० । स्कंदमात्रे ० । ९० । अखिलेश्वर्यै ० । प्रपन्नार्ति-

हरायै० । देव्यै० । सुभगायै० । कामरूपिण्यै० । निराकारायै० ।
साकारायै० । महाकाल्यै० । सुरेश्वर्यै० । शर्वायै० । १०० । श्रद्धायै० ।
ध्रुवायै० । कृत्यायै० । मृडान्यै० । भक्तवत्सलायै० । सर्वशक्तिसमायु-
क्तायै० । शरण्यायै० । सर्वकामदायै० ॥ १०८ ॥ इत्यष्टोत्तरशतनामानि ॥

एवं तुलस्यादिभिः संपूज्य श्वेतचूर्णादिकं समर्पयेत् । यथा —

श्वेतचूर्णम्—मंदारमल्लीकरवीरसंभवं कर्पूरपाटीरसुवासितं सितम् ॥
श्रीश्वेतचूर्णं विधिना समर्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुबलमे ॥ ३६ ॥
रक्तचूर्णम्—प्रत्यूपकालार्कमयूरखसन्निभं जातिफलैलागरुणा सुवासितम् ॥
श्रीरक्तचूर्णं मनसा मयाऽर्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुबलमे ॥ ३७ ॥
सिंदूरम्—मध्याह्नचंद्रार्कमरीचिसन्निभं विघ्नेश्वरश्रीहनुमद्बहुमियम् ॥
सिंदूरचूर्णं मनसा मयाऽर्पितं प्रीत्या त्वमंगीकुरु विष्णुबलमे ॥ ३८ ॥ हरि-
द्रा-हरिद्रामोत्थामतिपीतवर्णां सुवासितां चंदनपारिजातैः ॥ अनन्यभावेन
समर्पितां ते मातर्हरिद्रामुररीकुरुष्व ॥ ३९ ॥ धूपः—लाक्षासंमिलितैः
सिताभ्रसाहितैः श्रीवाससंमिश्रितैः कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पि-
पाऽऽलोडितैः ॥ श्रीखंडागरुगुगुलप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिर्धूपं ते परि-
कल्पयामि जनानि त्वं धूपमंगीकुरु ॥ ४० ॥ दीपं—रत्नालंकृतहेमपात्र-

१ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नमः इति संपूज्य पुरतो निधाय (रं) इति
बहिर्बीजेन अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं धूपं दत्त्वा “ ह्रीं जय ध्वनिमंत्रमातः
स्वाहा ” इति घंटां संपूज्य वामहस्तेन घंटां वादयन् दक्षिणहस्तेन शंखस्थजलं गृहीत्वा
धूपमंत्रपाठपठनपुरःसरं शंखस्थजलं भूमौ क्षिप्त्वा देवीवामभागे धूपपात्रं निधाय तर्जनीमूल-
योरंगुष्ठयोगात्मिकां धूपमुद्रां प्रदर्शयेदिति ॥ २ दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंत्रुभिर्वस्तीं
निःक्षिप्य मूलेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयेत् ॥ मंत्रपाठपठनपुरः-
सरं देवीदक्षिणभागे दीपं निधाय शंखजलमुत्सृज्य मध्येमे अंगुष्ठमूललप्रे दीपमुद्रा तां
प्रदर्शयेदिति ॥

निहितैर्गोसर्पिणा दीपितैर्दीपैर्दीर्घतरान्धकारभिदुरैर्वाक्कारुकोटिप्रभैः ॥
आताम्रज्वलदुज्ज्वलद्रगनवद्रत्नमदीपैः सदा मातस्त्वामहमाद्रादनुदिनं
नीराजयाम्युचकैः ॥ ४१ ॥

अथ नैवेद्यनिवेदनविधिः ॥ तत्रादौ देव्या अग्रे दक्षिणतो वा
जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा । स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य ।
तन्मध्ये पद्मसौपेतं विविधप्रकारकं वा नैवेद्यं निधाय “ ह्रीं नमः ”
इत्यर्घजलेन संप्रीक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं
वामहस्तं निधाय । नैवेद्यमाच्छाद्य (यं) इति वायुवीजं षोडशधा संजप्य
वायुना तद्भूतदोषान् संशोध्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठप्रवामकरतलं
कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (रं) इति बद्धिवीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना
तदोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (वं) इति अमृतवीजं त्रिचिन्त्य तत्पृष्ठ-
कम्रं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (वं) इति सुधावीजं षोडशवारं
संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन संप्रीक्ष्य धेनुमुद्रां
प्रदर्श्य मूलेनाष्टवारमभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देव्या हृद्गतं तेजः
स्मृत्वा । वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा ।
चतुर्विधानं सघृतं सुवर्णपात्रे भया देवि समर्पितं तत् ॥ संवीज्यमानाऽ-
मरवृन्दकैस्त्वं जुपस्व मातर्दययाऽवलोक्य ॥ ४२ ॥ श्रीमन्महाकाली-
महालक्ष्मीमहासरस्वतीभ्यो नमः नैवेद्यं सम० । इति भूतले देवीदक्षिणे
जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य
सपुष्पकराभ्यां पात्रमुद्धरन् । “ भगवति ! निषेदितानि हवींषि जुषाण ” ।
इति पठन् प्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ वामहस्तेन पञ्चाभां प्राणाद्यां
दक्षिणेन तु ॥ यथा ॥ (कनिष्ठिकानामिकांगुष्ठः) ह्रीं प्राणाय
नमः ॥ (तर्जनीमध्यमांगुष्ठैः) ह्रीं अपानाय नमः ॥ (तर्जन्यनामामध्य-

मांगुष्ठैः) ह्रीं व्यानाय नमः ॥ (अनामामध्यमांगुष्ठैः) ह्रीं उदानाय नमः ॥ (सर्वांगुलिभिः) ह्रीं समानाय नमः ॥ एवं प्राणादिमुद्राः समर्प्य देवीं भुञ्जानां ध्यात्वा जलं दद्यात् ॥ नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम् ॥ अखंडानंदसंपूर्णे गृहाण जलमुत्तमम् ॥ ४३ ॥ श्रीमन्महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीभ्यो नमः जलं सम० ॥ इति स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य जनन्या तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तःपटं धृत्वा पठेत् ॥ “ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः मूपविष्टैः समन्तात् सिंजद्दालव्यजननिकरैर्वीज्यमाना सखीभिः । नर्मक्रीडाप्रहसनपरान् पंक्तिभांक्तून् हसन्ती भुंक्ते पात्रे कनकघटिते पङ्सान् देवदेवी ॥ ४४ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपमूपं क्लृप्तं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आर्ज्यं प्राज्यं सुभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलाभरीचः स्वादीयः शाकराजी परिकरममृताहारजोषं जुषस्व” ॥ ४५ ॥ इति अंतःपटं दत्त्वा आचमनीयपात्रादाचमनं दद्यात् ॥ ततो मूलमंत्रं सप्तवारं पठेत् ॥ जवनिकामपाकृत्य ॥ श्रीमन्महाकाली० मध्ये पानीयं सम० ॥ ततो भुञ्जानां देवीं ध्यात्वा यथाशक्ति मूलमंत्रं प्रजप्य देवीदक्षिणहस्ते जपं समर्पयेत् ॥ ततो नैवेद्यनिवेदनार्थमन्ये मंत्रा वक्तव्याः ॥

(नैवेद्यम्)--मातस्त्वां दधिदुग्धपायसमहाशाल्यन्नसंतालिकामूपापूपसिताघृतैः सवटकैः सक्षौद्ररंभाफलैः ॥ एलाजीरकाहिंशुनागरनिशाकौस्तुंबरैः संस्कृतैः शार्कैः शाकयुतैः सुधाधिकरसैः संतर्पयाम्यर्पितैः ॥ ४६ ॥ सापूपमूपदधिदुग्धसिताघृतानिसुस्वादुभक्ष्यपरमान्नपुरःसराणि ॥ शाकोल्लसन्मरिचजीरकवाल्लिकानि भक्ष्याणि भक्ष जगदंब मयाऽर्पितानि ॥ ४७ ॥ आच०-गंगोत्तरीवेगमप्रदवेन मशीतलेनातिमनोदरेण ॥ त्वं

पद्मपत्राक्षि मयाऽर्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्व ॥ आचमनं स० ॥ ४८ ॥
 पूर्वा०-क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्वलं मधु ॥ मातरेतदमृ-
 तोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः ॥ पूर्वा० स० ॥ ४९ ॥ जलम्-
 अतिशीतमुशैरवासितं तपनीयोपवने निवेदितम् ॥ पटपूतमिदं जितामृतं
 शुचि गंगामृतमंत्रं पीयताम् ॥ जलं स० ॥ ५० ॥ उत्तरा०-नीहारहारं वन-
 सारसारं प्रकल्पितानेकमुगंधिभारम् ॥ शीतांबु जंबूनदपात्रवर्ति पीत्वा हि
 दुर्गेश्वरि पीयतां तत् ॥ उत्तरा० स ॥ ५१ ॥ करो०-उष्णोदकैः पाणियुगं
 मुखं च प्रक्षाल्य मातः कलयौतपात्रे ॥ कर्पूरमिश्रेण सङ्कुमेन हस्तौ
 समुद्वर्तय चन्दनेन ॥ करो० गन्धं स० ॥ ५२ ॥ तांबूलम्-कर्पूरेण युतैर्लवंग-
 गसहितैः कंकोळचूर्णान्वितैः सुस्वादकमुकैः सगौरखदिरैः सुस्निग्धजाति-
 फलैः ॥ मातः केतकपत्रकेन्दुरुचिभिस्तांबूलवल्लीदलैः सानंदं मुखमंडनी-
 यमतुलं तांबूलमंगीकुरु ॥ ५३ ॥ एलालवंगादिसमन्वितानि कंकोळ-
 कर्पूरसुमिश्रितानि ॥ तांबूलवल्लीदलसंयुतानि पूगानि ते देवि समर्प-
 यामि ॥ ५४ ॥ दक्षिणा-अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य त्रिभुव-
 नकमनीये पूजयित्वा च वस्त्रैः ॥ मिलितविविधमुक्तैर्दिव्यलावण्ययुक्तां
 जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि ॥ ५५ ॥ प्रदक्षिणा-पदे पदे या परिपू-
 जकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति ॥ तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां
 ते परितः करोमि ॥ ५६ ॥ विशेषार्थः-कालिङ्गकोशातकसंयुतानि जंबीर-
 नारिङ्गसमन्वितानि ॥ सुनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि
 समर्पयामि ॥ ५७ ॥ छत्रम्-मातः कांचनदंडमंडितमिदं पूर्णेन्दुर्विषमभं
 नानारत्नविशोभिद्देमविलकं लोकत्रयाह्लादकम् ॥ भास्वन्मौक्तिकजालि-
 कापरिवृतं मीत्याऽऽत्महस्ते धृतं छत्रं ते परिकल्पयामि जननि त्वष्टा-
 स्वयंनिर्मितम् ॥ ५८ ॥ चामरम्-शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णे मणिमुक्तावि-

लसत्सुवर्णदंष्ट्रैः ॥ जगदंब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण वीजयामि
 ॥५९॥ व्यजनम्—शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैः परागपीतैः ॥
 भ्रमरीमुखरीकृतैरनन्तैर्व्यजनैस्त्वां जगदंब वीजयामि ॥ ६० ॥ आद-
 र्शः—मातङ्गमंडलनिभो जगदंब योऽयं भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पि-
 तस्ते ॥ पूर्णेन्दुर्विचरुचिरं वदनं स्वकीयमस्मिन्विलोक्य विलोलविलो-
 चने त्वम् ॥ ६१ ॥ तुरंगः—प्रियगतिरतितुंगो रत्नपल्याणयुक्तः कनक-
 मयविभूषः सिन्धुगंभीरघोषः ॥ भगवति कलितोऽयं वाहनार्थे मया
 ते तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरंगः ॥ ६२ ॥ मातंगः—मधुकरत्रतकुंभो
 न्यस्तसिंदुररेणुः कनककलितघंटाकिंकिणीशोभिकंठः ॥ श्रवणयुगल-
 चंचचामरो मेघतुल्यो जननि तव मुदे स्तान्मत्तमातंग एषः ॥ ६३ ॥
 रथः—द्रुततरतुरगैर्विराजमानं मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् ॥ कनकमयमहं
 वितानयुक्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि ॥ ६४ ॥ सैन्यम्—हयगजर-
 थपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुंदुभिमेघनादयुक्तम् ॥ अपिबहुचतुरंगसै-
 न्यमेतद्भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि ॥ ६५ ॥ माकारः—परिधीकृतसप्त-
 सागरं बहुसंपत्सहितं मयाऽम्बिके ॥ विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं
 दुर्गममंब तेऽर्पितम् ॥ ६६ ॥ नृत्यम्—भ्रमविलुलितकुन्तलोलतालिविग-
 लितपाल्यविकीर्णरंगभूमिः । इयमिति रुचिरानना नटन्ती तव हृदये
 मुदमातनोतु मातः ॥ इमरुडिडिमझरझरुलीमृदुरवार्द्रघटाद्रिघटादयः ॥
 श्रुतिसंज्ञकृतिभिर्जगदंबिके मृदुरवा हृदयं सुखयन्तु ते ॥ ६७ ॥ ताम्रपात्रे
 दधिलवणसर्पपदूर्वाक्षतान् निक्षिप्य देव्या दृष्टिमुत्तारयेत् ॥ दृष्ट्या
 महृष्ट्या खलु दृष्टोपान् संहर्तुमारान्प्रथितप्रकाश ॥ जनो भवेदिन्द्रपदाय
 योग्यस्तस्यै तवेदं लवणाक्षिदोषहम् ॥ ६८ ॥

“ अथ देवीपूजागहोमाविधिः ॥ जलमादाय अक्षेत्यादि० तियो

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीत्रिगुणात्मिकादुर्गाप्रीतये २॥१॥ हांम
करिष्ये ॥ तत्रादौ देवीदक्षिणे हस्तमात्रस्थाङ्गिले कुंडे वा संस्कार-
चतुष्टयं कुर्यात् ॥ मूलेनेक्षणम् । फडिति प्रोक्षणम् । फडिति चतुर्भिर्दभै-
स्ताडनम् । हुं इति मुष्टिना अप आसिञ्चेत् । वह्निमानीय पूर्ववत् संस्कृत्य
संस्थाप्य परिधिच्य मूलेन देवीं समावाह्य पंचविंशतिमाहुतीर्मूलेन
हुत्वा परिवारेदेवतानामेकैकाहुतिं हुत्वा संहारमुद्रया विसृजेत् ॥
एतदशक्तौ पंचाशद्वारं मूलं जपेत् ॥ इति ॥

“अथ बलिपंचकविधिः”-पीठस्य ईशानवायुनिर्ऋतिवाहिकोणेपु
त्रिकोणवृत्तात्मकं मंडलचतुष्टयं निर्माय ॥ ‘बलिमंडलाय नमः’ इति प्रत्येकं
मंडलं संपूज्य ॥ ईशाने वां बटुकाय नमः । वायवे यां योगिनीभ्यो० ।
नैर्ऋत्ये क्षां क्षेत्रपालाय० । आग्नेये गं गणपतये० । इति देवताचतुष्टय
गंधादिभिरभ्यर्च्य संकल्पपूर्वकं बलिदानं दद्यात् ॥ ४ ॥ ततः स्ववामे
त्रिकोणवृत्तचतुरस्रं मंडलं कृत्वा ‘ऐं ह्रीं श्रीं व्यापकमंडलाय नमः’ इति
संपूज्य अर्धान्नपूर्णसलिलं साधारं बलिं निधाय “ह्रीं सर्वविघ्न-
कृद्भयः सर्वभूतेभ्यो हुं स्वाहा” इति कलार्णमनुना सामान्योदकेन

१ बलिपंचकमयविचारः-इदं बलिपंचकमावश्य कमेव ॥ अदत्त्वा बटुकादीना यः पूजयति
चंडिकाम् । सा पूजा विफला तस्य देवीशापः प्रजायते ॥ १ ॥ इति तंत्रे दोषध्वणत् ॥
अदत्त्वेति उक्तप्रत्ययस्यानन्तरं ऋषिभ्यमाणचंडिकासत्यांतः प्राग्बलिदानबोधकत्वेन अर्प्यस्थाप-
नानन्तरं बटुकादिवलिदानपंचकं विधाय देवीपूजनादिकं कुर्वन्ति तान्त्रिकाः ॥ देवीपूजने
बटुकादिवलिनिरपेक्षं केवलं न कर्तव्यम् इत्यर्थमात्रस्य प्रतीयमानत्वात् क्रमवित्रक्षार्था कदा
कार्यमित्याशंकायां नेवेद्यावतरे एतत् काल इति केचित् पद्धतिकारा उक्तुः ॥ सपर्याधिकारिता-
पीतकं प्राक् पूजनार्गं चान्यदित्येवमुच्यतेपि विदध्यादित्यपि केचनेति ॥ तत्र यथासंप्रदायं
-व्यवस्था कर्तव्या ॥ इति ॥

सर्वभूतेभ्यः प्रार्थनापूर्वकं वलिं दत्त्वा तत्त्वमुद्रां प्रदर्श्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ इति वलिदानविधिः ॥

“अथ प्रधानदेवीवलिदानम्”-तत्रादौ देव्यै उत्तराचमनीयं दत्त्वा गंडूपात् कारयित्वा तांबूलं समर्प्य वलिं दद्यात् । मापभक्तं पायसं वा साधारणत्रयम् उत्तरदिशि कृतत्रिकोणमंडले संस्थाप्य । वाग्भवमाया-रमाभिर्बलिं संपूज्य स्वाहान्तं मूलमुच्चार्य “सांगायै सपरिवारायै महा-लक्ष्म्यै एष पायसवलिर्नमः ॥” इति विशेषार्घोदकं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥ काम्यवलिदानं तु पश्चात् वक्ष्यते ॥ इति ॥

अथ देवीनिराजनम् ॥ जय देवि जय देवि जयमातस्त्रिपुरे भव्यानुग्रहकारिणि दासानुग्रहकारिणि ईश्वरि सुरवरदे ॥ ध्रुव० ॥ दुर्गे दुर्गतिनाशिनि भवसागरतारे मृगेन्द्रवाहनगिरिजे दानवसंहारे ॥ अष्टादशभुजमूर्ते कंठखंडमाले सप्तशृंगनिवासिनि रुद्रात्मकशक्ते ॥ जय देवि० ॥१॥ बाळार्कारुणशोभितबंधककुसुमाभे । कुंकुमशोभितदेहे दाडिमकुसुमाभे ॥ पादाहतमहिपासुरदेवासुरसर्गे । नानादानवमर्दिनि अलिकुलरिपुवर्गे ॥ जय देवि० ॥ २ ॥ जय त्रिपुरासुरमर्दिनि मर्दय मम दोषान् ॥ तारय तारय मातर्भवजलकूपस्थान् ॥ कामक्रोधादी-न्मारय देहस्थान् करुणादृष्ट्या माता रक्षय निजभक्तान् ॥ जय देवि० ॥३॥ मूले चाधिष्ठाने मणिपूरे चक्रे हृदयेऽनाहतचक्रे षोडशदलपत्रे ॥ आज्ञाचक्रे घालय घालय कृतवलये ब्रह्मस्थाने विहरासि मातः शिवस-हिते ॥ जय देवि० ॥४॥ विधिहरिशंकरबंधे पंडितजनबंधे सनकादिक-मुनिबंधे यक्षासुरबंधे ॥ नारदतुंबुरुकिन्नरगीते सुरबंधे अधनाशिनि भवशोपिणि मातःसुखसहिते ॥ जय देवि० ॥५॥ इति ॥ कर्पूरगौरं करुणा० ।दि५॥ मूलम्-ॐ मू० श्रीमहाका० म० ल० महास० भ्यो नमःनिराजनं

स० ॥ जलेन प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ पुष्पैर्देवताभिवन्दनम् आत्माभिव-
न्दनम् । हस्तं प्रक्षाल्य मन्त्रपुष्पाञ्जलिः—ॐ गणानान्त्वा० ॥ युञ्जेन यु-
ञ्जर्मयजन्त० ॥ ॐ राजाधिराजा० ॥ ॐ मूलम् । श्रीमहाका० म० ल० म०
स० भ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं स० ॥ प्रदक्षिणा—ॐ त्रिविश्वतश्चक्षु० ॥
यानि कानि च पा० । श्रीमहाका० म० ल० म० स० भ्यो नमः प्रदक्षिणां
स० ॥ विशेषार्घ्यः—कलिङ्गकोशातकसंयुतानि जंवीरनारिङ्गसमन्वि-
तानि ॥ सुनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि ॥ ७० ॥
श्रीमहाका० म० ल० म० स० भ्यो नमः विशेषार्घ्यं स० ॥ जपः—ॐ ऐं ह्रीं
क्लौं चामुण्डायै विच्चे ॥ इति मन्त्रेण यथाशक्ति जपं कुर्यात् ॥ प्रार्थना-
पूर्वकनमस्कारः—एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान्मेऽपराधान्क्षमस्व । नूनं यत्तत्तव करुणया
पूर्णतामेतु सद्यः सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः ॥ ७१ ॥ ॐ
भू० श्रीमहाका० म० ल० म० स० भ्यो नमः प्रार्थनापूर्वकनमस्कारा-
न्स० ॥ क्षमापनम्—अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽ-
यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥ आवाहनं न जानामि न
जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैत्र न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ २ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पूजितं मया देवि परि-
पूर्णं तदस्तु मे ॥ ३ ॥ अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोचरेत् ॥ यां
गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ४ ॥ सापराधोऽस्मि
शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ॥ इदानीमनुकंप्योऽहं यथेच्छसि तथा
कुरु ॥ ५ ॥ अज्ञानाद्विस्मृतेभ्रान्त्या यद्गुणमधिकं कृतम् ॥ तत्सर्वं
क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारि-
द्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ मंत्र-

हीनं० ॥८॥ त्वं हि दात्री च भोक्त्री च देवीरूपमिदं जगत् ॥ देवीं जपति
 सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि ॥ ९ ॥ क्षमस्व देवदेवेशि क्षम्यतां परमे-
 श्वरि । तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ १० ॥ इति सम्मा-
 र्थ्य । अर्पणम्-अनेनावाहनासनपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतगन्धा-
 क्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणाप्रदक्षिणामन्त्रपुष्परूपै राजोपचारै-
 रन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पात्रासादन-
 पूजनपूर्वकविशेषकर्मणा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताः
 प्रीयतां नमम ॥ ॐ तत्सद् ० मस्तु ॥ यस्य स्मृत्या० मच्युतम् ॥

ततः कुमारीपूजा ॥ देशकालौ संकीर्त्य शतचंडीकर्मागत्वेन कुमारी-
 पूजां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य मूलेन षडंगं कृत्वा मूलमंत्रमुच्चार्य ।
 मंत्राक्षरमयीं देवीं मातृणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्या-
 मावाहयाम्यहम् ॥ इति कुमारीमावाह्यं यथासंभवं पूजयेत् ॥ कुमा-
 र्यश्च प्रत्यहं शतं नव एका वा यथाशक्ति वा पूज्याः ॥ प्रत्यहमेकवृ-
 द्द्या वा पूजयेत् ॥ ततो ब्राह्मणसुवासिनीपूजा ॥ एवं देवीकुमार्या-
 दिपूजां प्रत्यहं कृत्वा योगिनीक्षेत्रपालस्थापनपूजनं कुर्यात् ॥ ततः सर्वे
 विद्याः कृतांगन्यासाः कवचारंगलाकीलकानि सकृज्जप्त्वा अष्टोत्तरशतं
 नवार्णमंत्रं जप्त्वा रात्रिमूक्तं सप्तशतीं जप्त्वाऽते देवीमूक्तमष्टोत्तरशतं
 नवार्णं च जप्त्वा रहस्यानि जपेत् ॥ एकस्मिन्दिनेऽनेकाष्टौ तु
 कवचादीनां प्रत्यावृत्तिं नावृत्तिः ॥ एवमृत्विजः प्रथमदिने एकं द्वितीये
 द्वे तृतीये त्रीणि चतुर्थे चत्वारि रूपाणीत्येवं जपं कुर्यात् ॥ ऋत्विजां
 यजमानस्य च प्रत्यहं क्षीरमात्राशनम् अशक्तौ हविष्याशनं वा । प्रत्यहं
 सहस्रं शतं दश वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । पंचमेऽह्नि होमः ॥ नवरात्रे
 तु नवम्यामेव होमः । केचित्तु अष्टम्यामारभ्य नवम्यां होमं समापयन्ति ॥

अथ होमः ॥ हस्ते जलमादाय देशकालौ संकीर्त्य मया
 ब्राह्मणद्वारा कृतस्य शतचंडीजपकर्मणः संपूर्णतासिद्धयर्थं जपद-
 शांशेन तिलामिश्रपायसद्रव्येण होममहं करिष्ये इति संकल्पयेत् ॥
 अत्र केचित्पुण्याहवाचनमपि कुर्वन्ति । तथा पूर्वोक्तकलशस्थापनं देव-
 तास्थापनं पूजनं चात्रैव कुर्वन्ति ॥ ततः सनवग्रहमखशतचंडीजपदशां-
 शहोमं कर्तुं स्थंडिल्लादि करिष्ये इति संकल्प्य स्थंडिलं कुण्डं वा विधाय
 तत्र पञ्चभूसंस्कारादिकं कृत्वा तत्र (शतमंगलनामानम्) अग्निं प्रतिष्ठाप्य
 समिध्य ध्यायेत् ॥ ततः प्रागकृतं चेदिदानीमीशान्यां दिशि नवग्रह-
 स्थापनं पूजनं च कृत्वा तत्पूर्वतः कलशं स्थापयेत् । ततोऽग्निसमीपमा-
 गत्यान्वाधानं कुर्यात् ॥ यथा समिद्द्रव्यमादाय क्रियमाणे शतचंडीजपा-
 गहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहितेऽग्नावित्या-
 दिचक्षुपीत्राज्येनेत्यन्तमुक्त्वा । आदित्यादिनवग्रहान् प्रतिद्रव्यमष्टाविं-
 शतिभिरष्टाभिर्वा संख्याकाभिः समिच्चरुतिलाज्याहुतिभिः अधिदेवताः
 प्रत्यधिदेवताश्च तैरेव द्रव्यैः चतुःसंख्याकाभिराहुतिभिः विनायकाद्या
 सप्तदेवता इंद्रादिदश लोकपालाश्च तैरेव द्रव्यैः द्वाभ्यां द्वाभ्यामाहुति-
 भ्यां यक्ष्ये ॥ श्रीमहाकालीप्रहालक्ष्मीमहासरस्वतीः मूलमंत्रेण शतवारं
 सप्तशतीमंत्रैः जपदशांशसंख्यया पायसातिलाज्यपलाशपुष्पसर्पपृगी-
 फललाजादूर्वांकुरयवविल्वफलरक्तचंदनगुग्गुलद्रव्यैर्यथालाभद्रव्यैर्वा
 तिलमिश्रपायसेन वा पुनर्मूलमंत्रेण शतवारं तैरेव द्रव्यैः आधारशक्त्या-
 दिपीठदेवताः महाकाल्याद्यावरणदेवताश्च एकैकयाऽऽहुत्या पायसा-
 ज्येन यक्ष्ये ॥ शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि । तत आज्यभागार्तं कृत्वा ।
 यजमानः इदं हवनोयद्रव्यं या या० मया परित्यक्तं नमम । यथादेवतमस्तु
 इति त्यजेत् । ततो नवग्रहादिभ्यः समिच्चरुतिलाज्यैर्जुहुयात् ॥ [उक्त-

व्याणि मूलमंत्रेण शतवारं हुत्वा सप्तशतीमंत्रैर्जपदशांशेन हुत्वा पुनर्मूल-
मंत्रेण शतवारं जुहुयात् ॥ मूलमंत्रो नवार्णमंत्रः ॥ नवार्णमंत्रस्य केवला-
ष्येनैव वा होमः ॥ अत्राध्यायसमाप्तौ पत्रपुष्पफलैर्होमः ॥ एवं
प्रधानहोमं कृत्वा पीठदेवताभ्यो नाममंत्रैराज्यं पायसं च जुहुयात् ॥]
यथा-जलमादाय । अथेत्यादि० तिस्रौ मया ब्राह्मणद्वारा कृतस्य
शतचंडीजपस्य संपूर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशेन तिलादिमिश्रपायस-
द्रव्येण होममहं करिष्ये ॥ तत्रादौ पुस्तकं संपूज्य । कवचार्गलाकीलकं
पठित्वा रात्रिमूक्तं नवार्णन्यासं कृत्वा अष्टोत्तरशतं नवार्णमंत्रेण तिला-
ज्यपायसद्रव्येण जुहुयात् ॥ ततः प्रथमचरित्रस्येत्याद्युत्तरन्यासान्
कृत्वा नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ सावर्णिः सूर्यतनयो०
इत्यारभ्य प्रतिमंत्रेण सप्तशत (७००) संख्याहोमं कुर्यात् ॥ मध्ये
अध्यायसमाप्तौ उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैर्नवार्णयुक्तेन “नमो देव्यै महा-
देव्यै०” इति मंत्रेण महाहुतिं जुहुयात् ॥ “शूलेन पाहि०” इत्यादि श्लोक-
चतुष्टयं “महालक्ष्म्यै स्वाहा” इति मंत्रेण देयम् ॥ पाठसमाप्तौ खड्गि नी-
त्यादिन्यासान् कुर्यात् ॥ ततो नवार्णमंत्रेणाष्टोत्तरशताहुतीर्जुहुयात् ॥
तदनन्तरं देवीमूक्तं रहस्यत्रयं च पठेत् ॥ ततो नवार्णजपदशांशं जुहुयात् ॥
इति प्रधानहोमः ॥

ततः पीठदेवता-आवरणदेवताहोमः ॥ एवं होमं कृत्वा स्वष्ट-
कृदादिप्रणीताविमोक्तान्तं कृत्वा कर्मशेषं समाप्य मूलमंत्रेण होम-
दशांशेन दुग्धेन जलेन वा तर्पणं कृत्वा तेनैव मंत्रेण तदशांशेन मार्ज-
येत् ॥ ततो यजमान आचार्यादीन्ब्रह्माद्यैः संपूज्य तेभ्यो गोमिथुनानि
हिरण्यं च दद्यात् ॥ तत आचार्यादिभ्योऽन्येभ्यो वा कपिलागोनील-
मणिश्वेताश्वच्छत्रचामरभूमिशय्यासप्तधान्यानि यथासंभवं वा दद्यात् ॥
तत आचार्यादयः कलशोदकेन सपत्नीकं सक्कुटुंबं यजमानं समुद्रज्येष्ठा

उत्यादिभिः सुरास्त्वेत्यादिभिर्ग्रहमंत्रैश्चाभिषिच्येयुः ॥ ततो यज्ञमानो
ग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वाऽऽचार्येण विसर्जने कृते ग्रहपीठदानं कृत्वा देवी-
पंचोपचारैः संपूज्य महाबलिं दद्यात् ॥ (तत्र क्षत्रियादिना श्वमेपजाग-
महिषाणामन्यतरो देयः विषेण तु कूर्मांडविल्वेक्षवश्च देयाः ॥)

स चेत्यं—देवीं द्रोणपुष्पात्रिल्वाम्रदलजातीचंपकैः संपूज्य कर्ता उद-
ङ्मुखः देवीमुखो वा बलिं गंधादिनाऽभ्यर्च्य “पशुस्त्वं बलिरूपेण
मम भाग्यादुपस्थितः । प्रणमामि ततः सर्वरूपिण बलिरूपिणम् ॥
चंडिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुंडाबलिरूपाय बले तुभ्यं
नमोऽस्तु ते ॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां
घातयाम्यत्र यस्माद्यज्ञे बधोऽवधः ॥” इति बलिमभिमन्त्र्य ऐं ह्रीं श्रीं
इति मंत्रेण पुष्पं क्षिप्त्वा ॥ रसना त्वं चंडिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥
“ह्रीं ह्रीं खड्ग आं हुं फट्” इति खड्गमन्यद्वा शस्त्रं संपूज्य “ॐ कालिकालि
यज्ञेश्वरि लोहदंढार्ये नमः” ॥ इति बलिं छेदयित्वा “ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं कौं
शिकी रधिरेणायायताम्” इति देव्यै निवेद्य ततो माषपिष्टमयं शतं
कृत्वा खड्गेन छेदयित्वा स्कंधाय विशिखाय च दत्त्वा बलिशेषं रसो-
भ्यो हरेत् ॥ मंत्रस्तु ॐ ह्रीं स्फुरस्फुर कुंभ २ सुनु २ गुलु २ धुनु
२ मारय २ विद्रावय २ विदारय २ कंपय २ कंपातय २ पूरय २
ॐ ह्रीं ॐ हुं फट् २ हुं मर्दय २ हुं ॥ ततः शेषं वहिर्दद्यात् । तत्र
मंत्राः । बलिं गृह्णन्त्विमं देवा० इत्यादयः पूर्वोक्ता एव ॥ ततः स्नात्वा
तिलकं धृत्वा । कृतस्य फर्पणः सांगतासिद्धयर्थं कुमारिब्राह्मणमुवा-
सिनीः पूजापूर्वम् संभोज्य संकल्प्य वा न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं
प्राप्त्यनेभ्यो भूयसीं दक्षिणां दद्यात् ॥ ततो देवीं प्रार्थयेत् ॥ तत्र
मंत्राः ॥ ग्वाङ्गिनी श्लिनी घोरा० १ । शूलेन पाहि नो देवि० ४ ।

नमो देव्यै महादेव्यै० ६ । रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति
 देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ महिषाग्नि
 प्रहामाये चामुंढे मुंढमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि
 नमोऽस्तु ते ॥ त्वं हि दाता च भोक्ता च देवीरूपमिदं जगत् ॥
 देवीं जपति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि ॥ १ ॥ क्षमस्व देवदेवेशि क्ष-
 म्यतां परमेश्वरि ॥ तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ २ ॥
 इति संप्राथर्यं । जलमादाय । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या० । अनेन
 पात्रासादनपूर्वकपूजनेन महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यः प्रीयन्ताम् ॥
 ततः शंखजलमुद्धृत्य देव्या उपरि भ्रामयित्वा ॥ शंखमध्ये स्थितं तोयं
 भ्रामितं ललितोपरि ॥ अंगलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ १ ॥
 न रोगा न च कूर्पांडाः पिशाचोरगराक्षसाः ॥ दृष्ट्वा शंखोदकं
 मूर्ध्नि व्याधयो विलयं गताः ॥ २ ॥ इति मंत्रेण देव्या
 दक्षिणकरे किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्राग्बद्धं देव्याः शिरसि दत्त्वा शंखं
 यथास्थाने निवेशयेत् ॥ ततो गतसारनैवेद्यं देव्याश्चोच्छिष्टं किञ्चिदु-
 द्धृत्य “विष्वक्सेनाय नमः” इति मूलमंत्रेण विष्वक्सेनं संपूज्य
 उच्छिष्टधारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात् ॥ तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा
 नैवेद्यादिकं देवीभक्तेषु विभज्य स्वयं भुञ्जीयात् ॥ अथ चरणोदकग्रह-
 णम् ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥ देव्याः पादोदकं पीत्वा
 शिरसा धारयाम्यहम् ॥ इति पात्रान्तरेणैव न तु हस्तेन त्रिवारं पिबेत् ॥
 ततः किञ्चित् सामान्यार्घोदकमादाय । साधु वा साधु वा कर्म
 यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥
 इति मंत्रेण देवीवामहस्ते जलं समर्पयेत् ॥ ततः विशेषार्घोदकमादाय ॥
 इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिर्युवस्थासु

मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्रा यत्स्मृतं यदुक्तं
 यत्कृतं तत्सर्वं देव्यै समर्पणमस्तु ॥ मां मदीयं च सकलं देव्यै
 समर्पये ॥ इति तत्सद् इति तज्जलं देव्या उपरि समर्पयेत् ॥
 विशेषार्थं मूलमंत्रेण समर्प्य । तेनैव देवीं नीराज्य स्वस्थाने
 स्थापयित्वा ततः कलशं विसृजेत् ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥
 उत्तिष्ठ देवि चंडेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टा-
 भिः शक्तिभिः सह ॥ १ ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं गच्छ
 चंडिके ॥ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिता ॥ २ ॥ इमां
 पूजा मया देवि यथाशक्त्योपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय ब्रजस्व
 स्थानमुत्तमम् ॥ ३ ॥ इत्यक्षतान्निक्षिप्य ॥ संहारमुद्रया पुष्पं शिरसि
 धृत्वा ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्मादयो
 देवा न विदुः परमं पदम् ॥ १ ॥ इति संहारमुद्रया हृदयकमले हस्तं
 दत्त्वा देवीं स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवी-
 स्वरूपं भावयन् ॥ मूलं जप्त्वा “ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं
 जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ” इति देव्यै जपं
 निवेद्य ॥ संपूज्य विभूतिं धृत्वा यान्तु देव० इति देवान् गच्छगच्छेत्यग्निं
 च विसृज्य मूलमंत्रेण पुष्पेण देवीमुद्रास्य तेनैव पदंगं कुर्यात् ॥

उत्तिष्ठ ब्रह्मण० उत्तिष्ठ देवि चंडेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व
 मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ इति मंत्रैर्देवीं विसृज्याचार्याय
 दत्त्वा मंत्रं पठेत् ॥ त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते ॥ दानेनानेन
 संतुष्टा सुमीना वरदा भव ॥ ततो यस्य स्मृत्या० ममादात्कुर्वतां कर्म० ।
 इत्यादि जपित्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा मुद्गुतो मुद्गुत्तत्रा यथासुखं विहरेत ॥
 इदमेव पूजाशोभयत्यादिविधानं नवरात्रेऽपि ज्ञेयम् ॥ तत्र विशेषस्तु दशम्यां

प्रातर्देवीविसर्जनम् ॥ अन्यच्च देवीमहानिबंधेभ्योऽवगन्तव्यम् ॥

॥ इति देवीराजोपचारपूजाप्रयोगः ॥

॥ इति संक्षिप्तो नवचंडीशतचंडीसहस्रचंडीप्रयोगः ॥

॥ ४९ ॥ अथ नवरात्रे घटस्थापनादिप्रयोगः ॥

प्रतिपदि प्रातः कृताभ्यंगस्नानः कुंकुमचंदनादिना कृतपुंड्रो धृत-
पवित्रः सपत्नीको दशघटिकामध्येऽभिजिन्मुहूर्ते वा कलशस्थापनार्थं
शुद्धमृदा वेदिकां कृत्वा पञ्चपल्लवदूर्वाफलताम्बूलकुंकुमपुष्पधूपपादिसं-
भारान् संपादयेत् ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य ममेह जन्मनि दुर्गाप्री-
तिद्वारासर्वापच्छान्तिपूर्वकदीर्घायुर्विपुलयनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्तति-
वृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थम्
अथ शारदीयनवरात्रे प्रतिपदि विहितं कलशस्थापनं दुर्गापूजां (चंडी-
सप्तशतीपाठं) कुमारीपूजाद्युत्सवारूयं कर्म करिष्ये ॥ तत्र निर्विघ्नतासि-
द्धयर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं चंडीसप्तशतीजपाद्यर्थं ब्राह्मणवरणं
च करिष्ये इति संकल्प्य ॐ सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा गणपतिपूजनं विधाय
पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥ ततो गंधपुष्पवह्नांगुलीयकमादाय देशकालौ
संकीर्त्य—ॐ अद्य ० शरत्कालिकदुर्गापूजनपूर्वकमार्कण्डेयपुराणीयचंडी-
सप्तशतीपाठकरणार्थममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ॥ ॐ वृतोऽस्मीति
प्रतिवचनम् ॥ इति ब्राह्मणं वृत्वा गंधादिभिः पूजयेत् ॥ ततो विप्रः
ॐ भूरसिभूमिरस्य ० इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ १ ॥ तस्यां भुव्यंकुरारोपणार्थं शुद्ध-
मृदं प्रक्षिप्य । तत्र ॐ ध्रान्यमसिधिनुहि ० इति यवान्निक्षिप्य ॥ २ ॥
ॐ आजिग्रकलशं ० इति कुंभं संस्थाप्य ॥ ३ ॥ ॐ वरुणस्योत्तं ० इति
जलं प्रपूर्य ॥ ४ ॥ गंधद्वारां ० इति गंधम् ॥ ५ ॥ ॐ याऽभोर्षधी ० इति
सर्वोषधीः ॥ ६ ॥ ॐ क्राण्डांत्क्राण्डात् ० इति दूर्वाः ॥ ७ ॥ ॐ अश्वत्थेवो ० इति

पंचपल्लवान् ॥८॥ ॐ स्योनापृथिवि० इति सप्तमृदः ॥९॥ ॐ वा? फुलि-
नीर्या० इति पूगीफलम् ॥१०॥ ॐ परिवार्जपति० इति पंचरत्नानि ॥११॥
ॐ हिरण्यगुर्भ० इति हिरण्यं च क्षिप्त्वा ॥१२॥ ॐ वसो० इति पवित्रमसि० इति
रक्तवस्त्रेणावेष्टया ॥१३॥ ॐ पूर्णादहिं० इति तण्डुलपूर्णपात्रं निधाय ॥१४॥
तत्र ॐ तत्त्वायामि० इति वरुणमावाह्यं संपूज्य ॥१५॥ कलशस्य मुखे विष्णु-
रित्यभिर्मन्त्र्य देवदानवसंवादे० इत्यादि प्रार्थयेत् ॥ ततः कलशोपरि स्वर्ण-
मयीं दुर्गाप्रतिमाम् अग्न्युत्तारणपूर्वकं पंचामृतेन स्नापयित्वा संस्थापयेत् ॥

अथ पूजा ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम
(यजमानस्य वा) अतुलविभूतिकामः संवत्सरसुखप्राप्तिकामः
श्रीदुर्गापूजनं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्र-
काली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥१॥
आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिपूदनि ॥ पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते
शंकरमिये ॥२॥ इत्यावाह्यं दुर्गाम् आसनादिषोडशोपचारैः संपूजयेत् ॥
ततः प्रार्थना ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं० । महिषाग्नि महामाये चामुंडे
मुंडमालिनि ॥ यशो देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ इत्यादि
प्रार्थ्यं चंडीपाठं कुर्यात् ॥ तत्रादौ देशकालौ संकीर्त्य मम (यजमानस्य
वा) अतुलविभूतिकामः श्रीदुर्गाप्रतिपथं कवचार्गलाकीलकनवाणमंत्रा-
ष्टोत्तरशतजपरात्रिसूक्तपूर्वकं देवीमूक्तानवाणमंत्राष्टोत्तरशतजपहस्यत्रय-
पठनान्तं मार्कंडेयपुराणान्तर्गतं “ ॐ सावर्णिः सूर्यतनय इत्यादिकं साव-
र्णिर्भवितामनुरित्यंतं ” देवीमाहात्म्यपाठं करिष्ये इति संकल्प्य आसना-
दि विधाय आधारे अन्यद्वस्तलिखितं पुस्तकं स्थापयित्वा नारायणं

१ केचिददो रात्रिसूक्तपठनान्तरं नवाणमंत्रजपं कुर्वन्ति तथा चान्ते नवाणमंत्रजपान्तरं
देवीसूक्तं पठन्ति । तत्र परम्परानुकूलं कर्तव्यम् ॥

नमस्कृत्य प्रणवमुच्चार्य ग्रंथार्थं बुध्यमानः स्पष्टाक्षरं नातिशीघ्रं नातिमंदं
रसभावस्वरयुतं पाठं पठेत् ॥ अध्यायं समाप्य विरमेन्न तु मध्ये ॥

अथ कुमारिकापूजनम् ॥ हस्ते जलमादाय—अद्यपूर्वो० तियो शार-
दीयनवरात्रोत्सवाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं कुमारीपूजनं
करिष्ये ॥ अशक्तो यथाशक्ति एकामपि कुमारिकां सुगन्धतैलेनाभ्यंगं
कारयित्वा पीठे उपवेश्य पूजयेत् ॥ पूजनमंत्रः—मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं
मातृणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्
॥ १ ॥ इति मंत्रेण पञ्चोपचारैः सम्पूजयेत् । इति कुमारिकापूजनम् ॥
(बटुकपूजनम् “ बंबटुकाय नमः ” इति मूलमंत्रेण पञ्चोपचारैः बटुकं
संपूजयेत् ॥)

अथ नियमग्रहणम्—हस्ते जलमादाय—अद्यप्रभृति देवेशि करिष्ये
व्रतमुत्तमम् ॥ नवरात्रं करिष्यामि दुःखदारिद्र्यनाशनम् ॥ करिष्ये शास्त्र-
विधिना निर्विघ्नेन समाप्यताम् ॥ १ ॥ प्रतिपदिनमारभ्य व्रतस्थो (स्था)ऽहं
महेश्वरि ॥ नवदुर्गात्मिके मातर्निर्विघ्नं कुरु मे सदा ॥ २ ॥ नवरात्रं
यथाशक्ति सर्वभोगविवर्जितः (ता) ॥ उपोषणं करिष्यामि त्वमेव शरणं मम
॥ ३ ॥ इदं व्रतं मया देवि गृहीतं तव सन्निधौ ॥ निर्विघ्नतां समायातु
त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ४ ॥ ब्रह्ममिये महाभागे सत्यव्रतपरायणे ॥ व्रतमे-
तत्करिष्यामि सौभाग्यमतुलं कुरु ॥ ५ ॥ अद्य स्थित्वा निराहारो (रा)जित-
क्रोधो (धा) जितेन्द्रियः (या) ॥ नवमे (दशमे)ऽहनि भोक्ष्यामि शरणं पर-
मेश्वरि ॥ ६ ॥ इति नियमग्रहणं कृत्वा यथाविधि फलाहारादिकं कुर्यात् ॥

ततो नवम्यां नियमत्यागप्रकारः ॥ तत्रादौ अष्टम्यां वा नवम्यां
दिवा रात्रौ वा स्वकुलाचारेण पूर्वोक्तप्रकारेण होमादिकं कुर्यात् ॥ ततो
नवम्यां वा दशम्याम् उत्तरपूजने कृत्वा ब्राह्मणसुवासिनीकुमारिकाबटु-

कमोजनसंकल्पं नियममुक्तिं च देवताग्रे कुर्यात् ॥ हस्ते जलमादाय-
 अद्यपूर्वो० तिथौ अनेन करिष्यमाणब्राह्मणसुवासिनीकुमारिकावटुकमो-
 जनेन अष्टशक्तिसहितश्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यात्मिका नव-
 दुर्गा प्रीयतां नमम ॥ अथ नियममुक्तिमन्त्राः—उपोषणं ब्रह्मचर्यं
 भूशय्या च तथैव च । पूजनं दीपदानं च चण्डीपाठस्तथैव च ॥ १ ॥
 होमं चैव यथाशक्ति चैतत्सर्वं मया कृतम् । तत्तु सम्पूर्णतां यातु तव
 तुष्ट्यै महेश्वरि ॥ २ ॥ चण्डीसंतोषणार्थाय ये मया नियमाः कृताः ।
 अद्याहं देवि भोक्ष्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ३ ॥ अनेनोपोषणादिकेनाष्ट-
 शक्तिसहितश्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यात्मिका नवदुर्गा प्रीयतां
 नमम ॥ ततो यथाशक्ति संन्यासिब्राह्मणसुवासिनीकुमारिकावटुकान्
 भोजयित्वा सुहृद्युक्तः (क्ता) स्वयं भुञ्जीत ॥

अथ विसर्जनविधिः ॥ तत्रादौ निर्वाणमुद्रया कलशोपरितः पुष्पं
 गृहीत्वा तथैव मुद्रया तत्रैव स्थापयेत् ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय पठेत् ॥
 उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्व मम कल्याणम-
 ष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ १ ॥ इति कलशमुत्थाप्य भूपौ जलं प्रवाहयन्
 पठेत् ॥ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिता ॥ ब्रज स्रोतोजलं
 वृद्धयै स्वीयतां हृदये मम ॥ २ ॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युप-
 पादिताम् । रक्षार्थं त्वं समादाय ब्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ ३ ॥ इति
 विसर्जनं कृत्वा ॥ अद्यपूर्वोच्चरि० चण्डीप्रसादात् ब्राह्मणवचनाच्च यथा-
 शक्तिमिलितोपचारैर्दशकालाद्यनुसरतश्चण्डीपूजनविधौ यद्गुणं यदाति-

रिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णम् ॥ ततो नारिकेलं वधायं
तदुदकेन यवाङ्कुरान् सम्प्रोक्ष्य सर्वेभ्यो नैवेद्यं दद्यात् ॥

॥ इति नवरात्रे घटस्थापनादिपूजाप्रयोगः ॥

॥ इति देवीयागात्मकस्तृतीयो विभागः ॥

॥ अथ चतुर्थो विभागः ॥

॥ यज्ञोपयुक्तविविधदेवता-गृहवास्तु-पूजनात्मकः ॥

॥ ५० ॥ अथ विष्णोस्त्रिंशोपचारपूजा ॥

ध्यानम्-सुरकदंबकैः प्रश्रयेण वै नियतसेवितं गोकुलोत्सवम् ॥
किरिटकुंडलं पीतजाम्बरं खलनिपूदनं चिन्तये विभुम् ॥ १ ॥
आवा०-खगपवाहनं क्षीरजाप्रियं भवभयाप भुक्तिमुक्तिदम् ॥
सुरपतिं जगन्नाथपीश्वरं कमलभासमावाहयाम्यहम् ॥ २ ॥
आस०-विधिमुखामरैर्नम्रमूर्तिभिः प्रणतसंश्रितं दुर्धरादिमत् ॥
वरमणिप्रभाभासुरं नवं जनप गृह्यतां स्वर्णमासनम् ॥ ३ ॥ पाद्यम्-
कुसुमवासितं गंधविस्तृतं मुनिनिषेवितं सादरेण वै ॥ ध्रुवपराशराभि-
ष्टद प्रभो जनप गृह्यतां पाद्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ अर्घ्यम्-कनकसंपुटे स्था-
पितं वरं जलसुवर्णमुक्ताफलैर्युतम् ॥ करसरोरुहाभ्यां धृतं मया जनप
गृह्यतामर्घ्यमुत्तमम् ॥ ५ ॥ आच०-तत्र रमायुजः सेवनाज्जना नृपतिस-
न्निभाः संभवन्ति हि ॥ सुरतरंगिणीशुद्धवारिभिर्जनप गृह्यतामाचमं
शुभम् ॥ ६ ॥ पय०-सुरगयुद्धवं वीर्यवर्धकं निखिलदेहिनां जीवनप्र-
दम् ॥ शशवरप्रभं फेनसंयुतं जनप गृह्यतामर्पितं पयः ॥ ७ ॥ दधि०-
शुचिपयःसमुद्भूतमुत्तमं व्रजनिवासिभिः स्वादितं शुभम् ॥ रजतस-

त्निभं शीततामयं जनप गृह्यतामर्पितं दधि ॥८॥ घृतम्—हुतवहभिर-
 क्षीरजोद्भवं सकलदेहिनां सत्त्ववर्धकम् ॥ कुमुदसदृशं विष्णुदेवतं जनप
 गृह्यतामर्पितं घृतम् ॥९॥ मधु०—मधुलतोद्भवं स्वादु मंजुलं मधुपमसि-
 काद्यैर्विनिर्मितम् ॥ मधुरतामयं गंधसंपदं मधुह तेऽर्पितं गृह्यतां मधु
 ॥१०॥ शर्क०—मदनकार्मुकाद्याविनिर्मिता मधुरतान्विता सर्वपापहा ॥
 सरसतां गता तारकोपगा जनप गृह्यतां शुद्धशर्करा ॥११॥ अभ्यं०—
 कदंबकेतकीपुष्पसंभवं मृगमदान्वितं यंत्रनिर्मितम् ॥ अनुपकारिणा
 भक्तितो मया जनप गृह्यतां तैलमर्पितम् ॥ १२ ॥ स्नानम्—हरिपदा-
 बुजानर्मदामहीसरयुचंद्रभागाभ्य आहृतम् ॥ जलजवासितं स्नानहेतवे
 जनप गृह्यतामर्पितं जलम् ॥१३॥ वस्त्रम्—विविधतंतुभिर्गुणितं नवं सुत-
 पनीयभं सोत्तरीयकम् ॥ मधुरिपो जगन्नाथ माधव जनप गृह्यतां वस्त्र-
 मर्पितम् ॥ १४ ॥ यज्ञो०—त्रिगुणितं सितैरर्कतंतुभिः कृतमिदं मया
 शुद्धचेतसा ॥ निगमसंमतं वंधमोचकं जनप गृह्यतामुपवीतकम् ॥१५॥
 गंधः—मलयसंभवं पीतवर्णकं मृगमदादिभिर्वासितं वरम् ॥ मुदितपट्टपदं
 कुंकुमान्वितं जनप गृह्यतां गंधमर्पितम् ॥ १६ ॥ अक्ष०—कमलसंभवा
 मौक्तिकोपमास्त्रिपथगोदकैः क्षालिताः शिवाः ॥ अगरुकुंकुमैर्मिश्रिता वरा
 जनप गृह्यतामर्पिताक्षताः ॥१७॥ पुष्पाणि—तरुणमल्लिकाकुंदमालती-
 बकुलपंरुजानां समुच्चयैः ॥ सततमूर्त्रितं भक्तितो मया जनप गृह्यतां
 हारमर्पितम् ॥ १८ ॥ श्वेत०—कदंबकेतकीटक्षसंभवं विविधसौख्यदं
 क्वातिवर्धनम् ॥ सितकरोपमं स्नेहसत्कृतं जनप गृह्यतां श्वेतचूर्णकम्
 ॥१९॥ रक्त०—अमरजादिभिर्देवटंदकैः शिरसि वै धृतं मथ्रयेण वा ॥
 तपनसदृशं दृष्टिमुत्कलं जनप गृह्यतां रक्तचूर्णकम् ॥ २० ॥ सिद्रू०—
 गणपतिमियं शालघृत्यभं पवनमनुना स्वीकृतं सदा ॥ सुरभिवासितं

मूक्षमचूर्णकं जनप गृह्यतां नागसंभवम् ॥ २१ ॥ धूपः—अगरुगुग्गुला-
ज्यादिमिश्रितं तपनयोगजोद्भूतसौरभम् ॥ अमरवृन्दकैः स्नेहसत्कृतं जनप
गृह्यतां धूपमुत्तमम् ॥ २२ ॥ दीपः—अनलतैलिनीगोघृतान्वितं तिमिरना-
शकं दीप्ततंतुभिः ॥ कनकभाजने स्थापितं मया जनप गृह्यतां दीपमुत्तमम्
॥ २३ ॥ नैवे०—पनसदाडिमाघ्रादिसत्फलं सुघृतमोदकापूपपायसम् ॥
रजतभाजने स्थापितं मया जनप गृह्यतां खाद्यमुत्तमम् ॥ २४ ॥ आच०—
जलधिगोद्भवं शीततमयं सकलप्राणिनां प्राणदायकम् ॥ विधिसमर्पितं
शुद्धचेतसा जनप गृह्यतामाचमं शुभम् ॥ २५ ॥ ताम्बू०—खपुरसंभवं
पूगचूर्णयुग्ं मृगमदेलुकावासितं वरम् ॥ फणिलतादलैः क्लृप्तबीडकं
जनप गृह्यतामास्यभूषणम् ॥ २६ ॥ दक्षि०—निखिलयाचिनां श्रेष्ठभोगदा
निगमसंमता कर्मपूर्णदा ॥ सकलभूजनैर्वाञ्छिता सदा जनप गृह्यतां
हेमदक्षिणा ॥ २७ ॥ नीरा०—हुतवह्नियैर्मिश्रितं वरं जलधिजैर्युतं सर्व-
पापहम् ॥ मुखविलोकनार्थाय संस्कृतं जनप गृह्यतामार्तिकं शुभम् ॥ २८ ॥
मद०—वरद सञ्चितं पूर्वजन्मभिर्देहति किलिवपं त्वत्प्रदक्षिणा ॥ नरहरिं
मुदा शुद्धचेतसा सततमीश्वरं त्वां नमाम्यहम् ॥ २९ ॥ नम०—जय जय
प्रभो सात्वतापते शरणवत्सलाभिष्टसाधक ॥ यदुपते जगन्नाथ सर्वदा
शरणमागतं पाहि पाहि माम् ॥ ३० ॥ इति विष्णोस्त्रिशोपचारपूजा ॥

॥ ५१ ॥ अथ वर्धिनीकलशस्थापनम् ॥

अद्ये० अमुककर्माङ्गत्वेन वर्धिनीकलशदेवतास्थापनपूजनं कारिष्ये ॥
अक्षतान् गृहीत्वा—वर्धिन्मै नमः वर्धिनीम् आ०स्था० ॥ ब्रह्मणे० रुद्राय०
विष्णवे० मातृभ्यो० सागरेभ्यो० मह्ये० नदीभ्यो० तीर्थेभ्यो० गायत्र्यै०
ऋग्वेदाय० यजुर्वेदाय० सामवेदाय० अथर्ववेदाय० अग्नये० आदि-

स्येभ्यो० एकादशरुद्रेभ्यो० मरुद्भ्यो० गंधर्वेभ्यो० ऋषये० वरुणाय०
 वायवे० धनदाय० यमाय० धर्माय० शिवाय० यज्ञाय० विश्वेभ्यो
 देवेभ्यो० स्कन्दाय० गणेशाय० यक्षाय० अरुन्धत्यै० इत्यावाद्य प्रति-
 ष्ठाप्य ॥ “ वर्धिनीकलशदेवताभ्यो नमः ” इति संपूजयेत् ॥

॥ इति वर्धिनीकलशस्थापनम् ॥

॥ ५२ ॥ अथ चतुःपष्टिपदवास्तुमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

सपत्नीको यजमानः मण्डपस्य नैर्ऋत्यकोणे कृतवास्तुपीठसमीपे
 पश्चिमाभिमुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात्—अथ
 पूर्वोच्चरितशुभपुण्यतिथौ प्रारब्धस्य अमुकयागारुख्यस्य कर्मणः साङ्ग
 तासिद्धये चतुःपष्टिपदे वास्तुपीठे शिखादिवास्तुमण्डलदेवतावाहनप्र-
 तिष्ठापूजन करिष्ये ॥ वास्तुपीठस्याग्नेयादिकोणेषु चतुरः शङ्कून् रोपयेत्
 विशन्तु भूतले नागा लोकरूपालाश्च सर्वतः । मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु द्यापु-
 र्वलकराः सदा ॥ एवं चतुर्षु कोणेषु शङ्कुरोपणं कृत्वा द्विगुणीकृतमूत्रेण
 सर्वेषां वेष्टनं कुर्यात् ॥ आग्नेयादिरोपणक्रमेण शङ्कूनां पार्श्वे मापभक्तद-
 ध्योदनत्रलिदानम् अग्निःकोणशङ्कूसमीपे चलि संस्थाप्य—ॐ अग्निभ्योऽ

ह्यशीपपञ्चरात्रे—एकाशीतिपद वास्तु गृहकर्मणि शक्यत । चतुःपष्टिपद वास्तु प्रासाद
 देवभूमिजातम् ॥ सोमदम्भापि—पुर्यात्कोष्ठचतुःपष्टि प्रासाद वास्तुकर्मणि । गृहऽपि वर्तयद्वास्तु
 कित्वेकाशीतिकोष्ठकै ॥ महाकपिलपञ्चरात्रे—प्रासादार्थं चतुःपष्टिरकाशीतिर्गृहे तथा ॥ राजव-
 ग्रामे भूगतिमन्दिरं च नगरं पूजयन्तु पष्टिरैकाशीतिपदैः समस्तभवने जीर्णं नवाच्यशकै ॥
 प्रासादे तु धतानैरेतु सकले पूजयन्तु मण्डपं चूपा पण्यवचन्द्रभागसहिते वाग्ना तटागे वने ॥
 कपिलपञ्चरात्रे महर्ष्याधिकहोमेषु वास्तुपीठं त्वयश्चकम् । देव्यर्चने हस्तमात्रं पीठं योगिनीधम्म-
 वम् ॥ गौतमीये—यत्र कुण्डं तत्र वास्तुपीठं कुर्यात्प्रयत्नत । स्वर्गिण्ये चाल्यहोमे तु वास्तुपीठं
 कृतावृत्तम् ॥

प्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ नैर्ऋत्यकोणशङ्कुसमीपे वलिं संस्थाप्य—ॐ नैर्ऋत्याधिपति-
 श्वैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः । वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्त-
 मम् ॥ वायव्यकोणशङ्कुसमीपे वलिं संस्थाप्य—ॐ नमो वै वायुरक्षोभ्यो
 ये चान्ये तान्समाश्रिताः । वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥
 ऐशानकोणशङ्कुसमीपे वलिं संस्थाप्य—ॐ हृद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये
 तान्समाश्रिताः । वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृहन्तु सततोत्सुकाः ॥ शङ्कु-
 देवताभ्यो नमः वलिं समर्पयामि । “ शङ्कुदेवताभ्यो नमः ” इति नाम-
 मन्त्रेण पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥ अथ रेखाकरणं पूजनञ्च—वास्तुपीठे
 वल्लं प्रसार्य कनकशलाकया रत्नेन रजतफलपुष्पाणामन्यतमेन वा पश्चि-
 मारम्भाः प्रागन्ता उदक्संस्थाः समा द्वयङ्गुलान्तरा नवरेखाः कुर्यात् ॥
 यथा—ॐ लक्ष्म्यै नमः । यशोवत्यै० कान्तायै० सुमियायै० विमलायै०
 शिवायै० सुभगायै० सुमत्यै० इडायै० ॥ ततः दक्षिणारम्भा उदगन्ताः
 प्राक्संस्था नवरेखाः कुर्यात् । यथा—धन्यायै० प्राणायै० विशालायै०
 स्थिरायै० भद्रायै० जयायै० निशायै० विरजायै० विभवायै० नमः ॥
 ॐ मनोजुति० रेखादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत इति प्रतिष्ठाप्य “ ॐ रे-
 खादेवताभ्यो नमः ” इति नाममन्त्रेण पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥

॥ ततो वास्तुमण्डलदेवतास्थापनप्रतिष्ठापूजनं कुर्यात् ॥

तत्र मध्यगं पदचतुष्टयमेकीकृत्य तत्कोणचतुष्टयाद्द्विः कोणचतुष्टये
 रेखाभिः पदान्युत्कृत्य शिख्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताः स्थापयेत् ॥

अथ नाममन्त्रेणावाहनम्—॥१॥ ऐशानकोणदक्षिणार्धपदे—ॐ शिखिने
 नमः शिखिनम् आवाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥ तद्दक्षिणे सार्धपदे—
 पर्जन्याय ॥ ३ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये—जयन्ताय ॥ ४ ॥ तद्दक्षिणपदद्वये—

कुलिशायुधाय० ॥५॥ तदक्षिणपदद्वये-भूर्याय० ॥६॥ तदक्षिणपदद्वये-
 सत्याय० ॥ ७ ॥ तदक्षिणे सार्धपदे-भृशाय० ॥ ८ ॥ तदक्षिणाग्नेय-
 पदार्धे-आकाशाय० ॥ ९ ॥ तत्पश्चिमाद्धे-वायवे० ॥ १० ॥ तत्पश्चिमे
 सार्धपदे-पूष्णे० ॥ ११ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणपार्श्वे-वितथाय०
 ॥ १२ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणपार्श्वे-गृहक्षताय० ॥ १३ ॥ तत्पश्चि-
 मपदद्वये दक्षिणोरुभागे-यमाय० ॥ १४ ॥ तत्पश्चिमे पदद्वये-गन्ध-
 र्वाय० ॥ १५ ॥ तत्पश्चिमे सार्धपदे-भृङ्गराजाय० ॥ १६ ॥ पश्चिमे
 नैऋत्यपदार्धे-मृगाय० ॥ १७ ॥ तदुत्तरार्धपदे-पितृभ्यो०
 ॥ १८ ॥ तदुत्तरे सार्धपदे-दौवारिकाय० ॥ १९ ॥ तदुत्तरप-
 दद्वये-सुग्रीवाय० ॥ २० ॥ तदुत्तरपदद्वये-पुष्पदन्ताय० ॥ २१ ॥ तदु-
 चरपदद्वये-वरुणाय० ॥ २२ ॥ तदुत्तरपदद्वये-असुराय० ॥ २३ ॥
 तदुत्तरे सार्धपदे-शोपाय० ॥ २४ ॥ तदुत्तरे वायव्यपदार्धे-पापाय०
 ॥ २५ ॥ तत्प्राक्पदार्धे-रोगाय० ॥ २६ ॥ तत्प्राक्सार्धपदे-अह्ये०
 ॥ २७ ॥ तत्प्राक्पदद्वये-मुख्याय० ॥ २८ ॥ तत्प्राक्पदद्वये-भल्लाटाय०
 ॥ २९ ॥ तत्प्राक्पदद्वये-सोमाय० ॥ ३० ॥ तत्प्राक्पदद्वये-सर्पाय०
 ॥ ३१ ॥ तत्प्राक्सार्धपदे-अश्विन्यै० ॥ ३२ ॥ तत्प्रागर्धपदे-दित्यै० ॥ ३३ ॥
 मध्यपदेषु ईशानपदोत्तरार्धे-आपाय० ॥ ३४ ॥ आग्नेयपदोत्तरार्धे-सावि-
 त्राय० ॥ ३५ ॥ नैऋत्यपदोत्तरार्धे-जयाय० ॥ ३६ ॥ वायव्यपदोत्तरार्धे-
 रुद्राय० ॥ ३७ ॥ मध्ये प्राक्पदद्वये-अर्यम्णे० ॥ ३८ ॥ आग्नेयपदपूर्वार्धे-
 सवित्रे० ॥ ३९ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये-विवस्वते० ॥ ४० ॥ नैऋत्यपदपूर्वार्धे-
 विबुधाधिपाय० ॥ ४१ ॥ तदुत्तरपदद्वये-मित्राय० ॥ ४२ ॥ तदुत्तरे वायव्य
 पदपश्चिमाद्धे-राजयक्ष्मणे० ॥ ४३ ॥ तत्प्राक्पदद्वये-पृथ्वीधराय० ॥ ४४ ॥
 ईशानपददक्षिणार्धे-आपवत्साय० ॥ ४५ ॥ ततो मध्यपदचतुष्टये-ब्रह्मणे०

-॥ ४६ ॥ ततो मण्डलाद्बहिः ईशान्यां-चरक्यै० ॥ ४७ ॥ आग्रय्यां
विदार्यै० ॥ ४८ ॥ नैर्ऋत्यां-पूतनायै० ॥ ४९ ॥ वायव्यां-पापराक्षस्यै० ॥
॥ ५० ॥ ततो मण्डलाद्बहिः पूर्वे-स्कन्दाय० ॥ ५१ ॥ दक्षिणे-अर्यम्णे०
॥ ५२ ॥ पश्चिमे-जृम्भकाय० ॥ ५३ ॥ उत्तरे-पिलिपिच्छाय० ॥ ततः ॥ ५४ ॥
पूर्वे-इन्द्राय० ॥ ५५ ॥ आग्नेय्याम्-अग्रये० ॥ ५६ ॥ दक्षिणस्यां-यमाय०
॥ ५७ ॥ नैर्ऋत्यां-निर्ऋतये० ॥ ५८ ॥ पश्चिमे-वरुणाय० ॥ ५९ ॥
वायव्यां-त्रायवे० ॥ ६० ॥ उत्तरे-कुबेराय० ॥ ६१ ॥ ईशान्याम्-
श्वराय० ॥ ६२ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये-ब्रह्मणे० ॥ ६३ ॥ निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये
अनन्ताय नमः अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ॥ एवं प्रतिष्ठाप्य
'शिरूयादिवास्तुमण्डलदेवताभ्यो नमः' इति मंत्रेण पूजनं कुर्यात् ॥
॥ इति चतुःपष्टिपदवास्तुमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

॥ ५३ ॥ अथरुद्रकल्पट्टमानुसारिमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-
पूर्वकं स्कन्दकाशीखण्डोक्तचतुःपष्टियोगिनीस्थापनम् ॥

पीठे रक्तवस्त्रमाच्छाद्य तदुपरि पूर्वभागे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहा-
सरस्वतीकलशत्रयस्थापनार्थं त्रीणि त्र्यस्राणि देव्यष्टगंधेन सुवर्णशलाक-
या रञ्जितासतैर्वा विलिखेत् ॥ तेषामधोभागे अष्टौ त्र्यस्राणि इति एका पङ्क्तिः
एवमष्टौ त्र्यस्रपङ्क्तिः कृत्वा तेषु त्र्यस्रेषु वक्ष्यमाणदेवता आवाह्यपूजयेत् ॥
हस्ते जलमादाय-अद्यपूर्वोच्चरितशुभपुण्यतिथीं प्रारोपितामुक्कर्मार्ङ्ग-
त्वेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीपूर्वकगजाननादिमृगलोचना-
न्तचतुःपष्टियोगिनीदेवतावाहनप्रतिष्ठापूजनं करिष्ये ॥

प्रथमकलशपूर्णपात्रोपरि ॥ १ ॥ ॐ भर्भुवस्वः महाकाल्यै नमः
महाकालीमावाहयामि स्थापयामि ॥ महाकालि इहागच्छ इह तिष्ठ

(एवं सर्वत्र) ॥ तदुत्तरतः द्वितीयकलशपूर्णपात्रोपरि ॥२॥ ॐ भू० महा-
लक्ष्म्यै० ॥ तदुत्तरतस्तृतीयकलशपूर्णपात्रोपरि ॥३॥ ॐ भू० महासर-
स्वत्यै० ॥ (प्रथमपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ १ ॥ गजाननायै० ॥ २ ॥
सिंहमुख्यै० ॥ ३ ॥ गृध्राम्यायै० ॥ ४ ॥ काकतुण्डिकायै० ॥ ५ ॥
उष्ट्रीवायै० ॥ ६ ॥ हयग्रीवायै० ॥ ७ ॥ वाराह्यै० ॥ ८ ॥ शरभा-
ननायै० ॥ (द्वितीयपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ ९ ॥ उल्किकायै० ॥ १० ॥
शिवारावायै० ॥ ११ ॥ मयूर्यै० ॥ १२ ॥ विकटाननायै० ॥ १३ ॥
अष्टवक्रायै० ॥ १४ ॥ कोटराक्ष्यै० ॥ १५ ॥ कुब्जायै० ॥ १६ ॥
विकटलोचनायै० ॥ (तृतीयपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ १७ ॥ शुष्कोदर्यै०
॥ १८ ॥ ललज्जिह्वायै० ॥ १९ ॥ श्वर्दण्डायै० ॥ २० ॥ वानराननायै०
॥ २१ ॥ रुक्षाक्ष्यै० ॥ २२ ॥ कैकराक्ष्यै० ॥ २३ ॥ बृहत्तुण्डायै०
॥ २४ ॥ सुरामियायै० ॥ (चतुर्थपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ २५ ॥ कपालह-
स्तायै० ॥ २६ ॥ रक्ताक्ष्यै० ॥ २७ ॥ शुक्र्यै० ॥ २८ ॥ श्वेन्यै०
॥ २९ ॥ कपोतिकायै० ॥ ३० ॥ पाशहस्तायै० ॥ ३१ ॥ दण्डहस्तायै०
॥ ३२ ॥ प्रचण्डायै० ॥ (पञ्चमपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ ३३ ॥ चण्ड-
विक्रमायै० ॥ ३४ ॥ शिशुक्ष्यै० ॥ ३५ ॥ पापहन्त्र्यै० ॥ ३६ ॥
काल्यै० ॥ ३७ ॥ रुधिरणयिन्यै० ॥ ३८ ॥ वसाधयायै० ॥ ३९ ॥
गर्भभक्षायै० ॥ ४० ॥ शवहस्तायै० ॥ (षष्ठपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ ४१ ॥
आन्त्रमालिन्यै० ॥ ४२ ॥ स्थूलकेश्यै० ॥ ४३ ॥ बृहत्कुक्ष्यै० ॥ ४४ ॥
सर्पास्यायै० ॥ ४५ ॥ प्रेतवाहनायै० ॥ ४६ ॥ दन्दशूकरायै० ॥ ४७ ॥
क्रौञ्च्यै० ॥ ४८ ॥ मृगशीर्षायै० ॥ (सप्तमपङ्क्तौ अष्टत्रयस्त्रेषु-) ॥ ४९ ॥
वृषाननायै० ॥ ५० ॥ व्यात्तास्यायै० ॥ ५१ ॥ धूमनिःश्वासायै०
॥ ५२ ॥ व्योपैकचरणोर्ध्वदशे० ॥ ५३ ॥ तापिन्यै० ॥ ५४ ॥

शोपणीदृष्ट्यै० ॥५५॥ कौट्यै० ॥५६॥ स्थूलनासिकायै०॥ (अष्टमप-
ङ्क्तौ अष्टमस्रेषु-) ॥ ५७ ॥ विद्युत्प्रभायै० ॥ ५८ ॥ बलाकास्यायै०
॥ ५९ ॥ मार्जार्यै० ॥ ६० ॥ कटपूतनायै० ॥ ६१ ॥ अट्टाट्टहासायै०
॥ ६२ ॥ कामाक्ष्यै० ॥ ६३ ॥ मृगाक्ष्यै० ॥ ६४ ॥ मृगलोचनायै०॥
इति प्रतिष्ठाप्य “ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहितगजाननादि-
चतुःपाष्टियोगिनीभ्यो नमः ” इति गन्धादिना संपूजयेत् ॥

॥ इति चतुःपाष्टियोगिनीस्थापनम् ॥

॥ ५४ ॥ अथ एकपञ्चाशत्क्षेत्रपालस्थापनम् ॥

वायव्यकोणे हस्तमात्रविस्तृते द्वादशाङ्गुलोच्छ्राये क्षेत्रपालपीठे श्वेत-
वस्त्रं प्रसार्य तत्र चतुरस्रं विलिख्य तिर्यङ्प्रार्च्यां च मूत्रद्वन्द्वं समान्त-
रालं दद्यात् । एवं समा नवकोष्ठा भवन्ति । मध्यकोष्ठे अष्टदलं पद्मं
कुर्यात् ॥ पूर्वदिकोष्ठे आग्नेयदिकोष्ठे दक्षिणदिकोष्ठे नैऋत्यदिकोष्ठे
पश्चिमदिकोष्ठे वायव्यदिकोष्ठे उत्तरदिकोष्ठे ईशानदिकोष्ठे च पद्मदलानि
कुर्यात् ॥ एवं क्षेत्रपालपीठं निर्माय ॥ हस्ते जलमादाय-अद्यपूर्वोच्चरित-
शुभपुण्यतिथौ० ॥ प्रारोपितामुक्ककर्माङ्गत्वेन एकपञ्चाशत्क्षेत्रपाल-
देवतावाहनप्रतिष्ठापूजनं करिष्ये ॥

मध्ये स्थापितकलशोपरि पूर्णपात्रे ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय
नमः क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो क्षेत्रपाल इहागच्छ इह
तिष्ठ ॥ (एवं सर्वत्र) ॥ पूर्वदिकोष्ठे पद्मदले-॥२॥ अजराय० ॥३॥
व्यापकाय०॥४॥ इन्द्रचौराय० ॥५॥ इन्द्रमूर्तये० ॥६॥ उक्षाय० ॥७॥
कृष्माण्डाय०॥ आग्नेयदिकोष्ठे पद्मदले-॥८॥ वरुणाय० ॥९॥ बटुकाय०
॥१०॥ विमुक्ताय० ॥११॥ लिप्तकायाय०॥१२॥ लीलाकाय०॥१३॥

एकदंष्ट्राय०॥ दक्षिणदिकोष्ठे पद्दले-॥१४॥ ऐरावताय०॥१५॥ ओष-
धिघ्नाय०॥१६॥ वन्द्यनाय० ॥१७॥ दिव्यकाय०॥१८॥ कम्बलाय०
॥१९॥ भूषिणाय०॥ नैऋत्यदिकोष्ठे पद्दले-॥२०॥ गवयाय०॥२१॥
घण्टाय०॥२२॥ व्यालाय ॥२३॥ अणवे०॥२४॥ चन्द्रवारुणाय०
॥२५॥ पटाशोपाय०॥ पश्चिमदिकोष्ठे पद्दले-॥२६॥ जटालाय०॥२७॥
ऋतवे०॥२८॥ घण्टेश्वराय०॥२९॥ विटङ्काय० ॥३०॥ मणिमानाय०
॥३१॥ गणवन्द्यवे०॥ चायव्यदिकोष्ठे पद्दले-॥३२॥ डामराय०॥३३॥
दुण्डिकर्णाय०॥३४॥ स्थविराय०॥३५॥ दन्तुराय०॥३६॥ धनदाय०
॥३७॥ नागकर्णाय०॥ उत्तरदिकोष्ठे पद्दले-॥३८॥ महावलाय०॥३९॥
फेल्काराय० ॥४०॥ चीकराय० ॥४१॥ सिंहाय० ॥४२॥ मृगाय० ॥
उत्तरदिकोष्ठपद्दलस्यान्तिमदलार्धे-॥४३॥ यक्षाय०॥ उत्तरदिकोष्ठपद्द-
लस्यान्तिमदलार्धे यक्षादुत्तरतः-॥४४॥ मेघवाहनाय०॥ ईशानदिकोष्ठे
पद्दले-॥४५॥ तीक्ष्णोष्ठाय०॥४६॥ अनलाय०॥४७॥ शुक्लतुण्डाय०
॥४८॥ सुधालापाय० ॥४९॥ बर्बरकाय०॥ ईशानदिकोष्ठपद्दलस्या-
न्तिमदलार्धे-॥५०॥ पवनाय०॥ ईशानदिकोष्ठपद्दलस्यान्तिमदलार्धे
पवनादुत्तरतः-॥५१॥ पावनाय०॥ ततः “क्षेत्रपालदेवताभ्यो नमः”
इति संपूजयेत् ॥

॥ इति एकपञ्चाशत्क्षेत्रपालस्थापनम् ॥

॥ ५५ ॥ अथ सर्वतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

आचम्य प्राणानायम्य हस्ते जलमादाय अथेत्यादिपूर्वोचरितशुभ-
पुण्यतिथ्यां प्रार्षित्तामुक्कर्मोङ्गत्वेन सर्वतोभद्रमण्डलदेवतावाहन-
पतिष्ठापूजनं कारिष्ये ॥ ॐ ब्रह्मज्ञानं ॥ (एषोहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र मदी-

ययज्ञे पितृदेवताभिः । सर्वस्य घाताऽस्यमितप्रभात्र विश त्वमन्तः सततं
 शिवाय) मध्ये कर्णिकायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माण-
 मावाहयामि स्थापयामि भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥ ॐ ध्येय-
 सोम॥ (एहोहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम् । सर्वोप-
 धीपितृगणेन सार्धं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥) उत्तरे परिधिसमीपे
 वाप्याम्—ॐ भू० सोमाय० सोमम् आ० स्था० ॥ २ ॥ ॐ तमीशानुं० ॥ (एहोहि
 विश्वेश्वर विश्वनाथ कपालखट्वांगधरेण सार्द्धम् । लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसि-
 द्धये गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥) ऐशान्यां खण्डेन्दौ—ॐ भू०
 ईशानाय० ईशानम् आ० स्था० ॥ ३ ॥ ॐ त्रुतारुमिन्द्रमत्रितारुमिन्द्र-
 हवेहवेसुहव-
 शुरुमिन्द्रम् ॥ ह्यमिशुक्रम्पुरुहुतमिन्द्रं सुस्तिन्नोपधवा-
 धात्विन्द्रं ॥ (एहोहि सर्वाभिरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश । संवी-
 ज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते ॥) पूर्वे परिधिसमीपे
 वाप्याम्—ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रम् आ० स्था० ॥ ४ ॥ ॐ स्वन्नोऽअग्ने-
 तवदेवपायुभिर्मयोर्नोरक्षतुर्वृ श्वन्न्य ॥ त्रातातोकस्युतनयेगवामस्यनि-
 मेपुष्टरसमाणस्तववृते ॥ १३ ॥ (एहोहि सर्वाभिरहव्यवाह मुनिप्रवयैरभितोऽ
 भिजुष्टः । तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं रक्ष नमोऽस्तु तेऽग्रे) ॥
 आग्नेय्यां खण्डेन्दौ—ॐ भू० आग्नेये० अग्निम् आ० स्था० ॥ ५ ॥ ॐ यमा-
 युच्चाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहाघुर्मायुस्वाहाघुर्मपिब्रे ॥ ३६ ॥
 (एहोहि वैवस्वतधर्मराज सर्वाभिरैरर्चितधर्ममूर्ते । शुभाशुभानन्द शुचामधीश
 शिवाय नः पाहि मत्वं नमस्ते) दक्षिणे प० स० वाप्याम्—ॐ भू० यमाय०
 यमम् आ० स्था० ॥ ६ ॥ ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्ते नस्येच्यामद्वि-
 हितस्करस्या अनुयमस्मदिच्छसातऽदुच्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ३३
 (एहोहि रक्षोगणनायक त्वं विशालवैतालपिशाचसंघैः । ममाध्वरं पाहि

पिशाचनाय लोकेश्वर त्वं प्रणमामि नित्यम् ॥ नैर्ऋत्यां स्वण्डेन्दौ-ॐ भू०
 निर्ऋतये० निर्ऋतिम् आ० स्था० ॥७॥ ॐ तर्त्वायापिद्वहर्मणा० ॥ (एहोहि
 यज्ञे मम रक्षणाय यादोगणैः सार्धमपामधीश ॥ क्षपाधिरूढ त्वमिह प्रभो
 मणिरत्नप्रभाभास्वर पक्षापाणे) पश्चिमे प० स० वाप्याम् ॐ भू० वरुणाय०
 वरुणम् आ० स्था० ॥८॥ ॐ आनी० नियुहभिः शतिनी० भिरद्दुरदसहसिणी०
 भिरुर्षयाहि यज्ञम् ॥ द्वार्योऽभुस्मिन्सर्वनेमादयस्वद्युषम्पातस्वुस्तिभिर्द
 सदान् ॥९॥ (एहोहि वायो मम रक्षणाय मृगाधिरूढैः सह सिद्धसंघैः।
 प्राणाधिपो हव्यभुजः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥) वायव्यां
 स्वण्डेन्दौ-ॐ भू० वायवे० वायुम् आ० स्था० ॥ ९ ॥ ॐ सुगात्रोदेवात्
 सदानाऽअकर्मस्यऽआजुग्मेदऽसर्वनक्षुपाणाः ॥ भरमाणावहमानाहुवीर्य
 प्युस्मिधेत्तवसद्योवर्धनिस्वाहा ॥१०॥ (एहोहिवस्वीश महानिधीश रत्नाकरः
 सर्वसहस्रतेजाः । घनस्वरूपो मम पाहि यज्ञं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते)।
 वायुसोममध्ये भद्रे-ॐ भू० अष्टवसुभ्यो० अष्टवसून् आ० स्था० ॥१०॥
 ॐ रुद्राः सुहृत्सृज्यं पृथिवीम्बृहज्ज्योतिर्द समीधिरे ॥ तेषाम्भानुरन्-
 सुऽइच्छुक्रोदिवेपुरोचते ॥११॥ (एहोहि यज्ञेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वांग-
 धरेण सार्धम् । लोकेश विश्वेश्वर यज्ञसिद्धये गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते)।
 सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे-ॐ भू० एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्रान् आ०
 स्था० ॥११॥ ॐ युज्ञोदेवानाम्प्रच्यैतिसुम्न्रमादिच्वासो भवंतामृदयन्तः ॥
 आद्योर्वाचीं मुमुतिर्वृत्त्यादुर्दिहोश्चिद्द्या वरिद्योवित्तुरासदादित्येभ्य-
 स्वा ॥१२॥ (एहोहि पद्मासन पद्मपाणे सुरक्तसिदूरसमानवर्ण । सप्ताश्वर-
 क्ताम्बर मूर्य शीघ्रं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते)। ईशानपूर्वयोर्मध्ये भद्रे-
 ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्यान् आ० स्था० ॥१२॥ ॐ धावा-
 क्कशामधुं पच्यन्विनासूनुतावती ॥ तयायुज्ञमिमिक्षतम् ॥ उपयुयामर्ग-

हीतोस्यशिवश्चान्त्रैपतेयोनिर्माद्धींभ्यान्वा॥३॥ (द्विभुजौ देवभिपजौ
समायातं सुमङ्गलौ ॥ लोककल्याणकर्तारौ पातं यज्ञं ममाश्विनौ ॥)
इन्द्रान्योर्मध्ये भद्रे-ॐ भू० अश्विन्यां० अश्विनौ आ० स्था० ॥१३॥
ॐ ओंसांसच्चर्षणीधृतोविश्वेदेवासुऽअर्गत ॥ द्वाश्चाऽसौंद्वाशुपः-
सुतम् ॥ उपुयापगृहीतोसिद्धिश्चैभ्यस्त्वादेवेभ्यंऽएपतेयोनिर्विश्वे-
भ्यस्त्वादेवेभ्यः॥३॥ (विश्वेदेवानाह्वयामि देवेभ्यो वरदायकान् ॥
आयान्तु मम यज्ञेऽस्मिन् विश्वेदेवास्त्रयोदश ॥) अग्नि-
यमयोर्मध्ये भद्रे-ॐ भू० विश्वेभ्यो देवेभ्यो० विश्वान्देवान् आ०
स्था० ॥१४॥ ॐ अभिच्यन्देवऽसंवितारंमोण्योःकुविक्रतुमर्चांसितुच्य-
संवऽरत्कृधामभिप्रियम्मातिङ्गविम् ॥ कुर्वायस्यामातिर्भाऽअदिद्द्युत-
रसर्वीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुकृतंऽकृपास्वः ॥ प्रजाभ्यस्त्वाप्नु-
जास्त्वानुष्पार्णन्तुप्रजास्त्वमनुष्पार्णिहि॥३॥ (एह्येहि यज्ञो गणनायकत्वं
विशालवेतालपिशाचसंघैः । ममाध्वरं पाहि शिवाधिनाथ लोकेश्वरस्त्वं
भगवन्नमस्ते) यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे-ॐ भू० सप्तयज्ञेभ्यो० सप्तय-
ज्ञान् आ० स्था० ॥१५॥ ॐ भूतायंत्वनारांतयेस्वरभिविक्खयेऽपुन्द-
हन्तान्दुर्घ्याऽपृथिव्यामुर्ध्वन्तरिक्षुमन्त्रैमिपृथिव्यास्त्वानाभौसादयाम्मदि-
च्याऽउपस्थेगनेहुव्यऽरक्ष ॥३॥ (एतैत सर्पाः शिवकंठभूपा लोकोपका-
राय भुवं वहन्तः । जिह्वाद्वयोपेतमुखा मदीयां गृहीत पूजां सुखदां
नमो वः ॥) निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे-ॐ भू० भूतनागेभ्यो० भूतना-
गान् आ० स्था० ॥१६॥ ॐ ऋतापाडुतधाग्निगर्गन्धुर्वस्तस्यौपधयो-
ऽसुरसोमुदुनामाः।सर्नऽइन्द्रहर्मक्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहाहात्ताभ्युदस्वा-
हा॥३॥ (आवाहयेऽहं सुरदेवसेव्याःस्वरूपतेजोमुखपद्मभासः।सर्वापरेशैः
परिपूर्णक्रामाः पूजां गृहीतुं मम यज्ञभूमौ ॥) वरुणवायवोर्मध्ये भद्रे-ॐ भू०

गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आ० स्या० ॥ १७ ॥ ॐ षडक्रन्दं प्रथुम-
 ज्ञायमानऽउद्द्यन्तसंमुद्राद्भुतवापुरीपात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यंवाहऽउप
 स्तुच्युम्महिजातन्तेऽर्ध्वना ॥ १३ ॥ (एहोहि देवेश्वर शंभुमूनो शिखीन्द्रगामि-
 न्पुरसिद्धसंघैः । संस्तूयमानात्मशुभाय नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥
 ब्रह्मसोमयोर्मध्ये वाप्याम्-ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दम् आ० स्या० ॥ १८ ॥
 ॐ आशु? शिशानो ॥ (एहोहि देवेन्द्रपिनाकपाणेः खण्डेन्दुमौलेः प्रिय
 शुभ्रवर्ण । गौरीशयानेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥)
 तत्रैव स्कन्दादुत्तरे-ॐ भू० नन्दिने० नन्दिनम् आ० स्या० ॥ १९ ॥
 ॐ उग्रल्लोहितेन० ॥ (आयातमायातमुमाप्रियस्य प्रियां मुनीन्द्रादि-
 कसिद्धसेव्यै । गृहीतमेतां मम शूलकालौ पूजां सुखौघं कुरुतं नमो
 चाम् ॥) तत्रैव नन्दुत्तरे-ॐ भू० शूलमहाकालाभ्यां० शूलमहाकालौ
 आ० स्या० ॥ २० ॥ ॐ अदितिर्द्यौरदितिरुन्तरिक्षमदितिर्मातास-
 पिता सपुत्र? ॥ द्विभ्वेदेवाऽअदितिःपञ्चजनाऽअदितिर्जातमदिति-
 र्जनिन्त्वम् ॥ १३ ॥ (एहोहि देवालय विश्वमूर्ते चतुर्मुख श्रीधर शंभुमान्य ॥
 सुपुस्तकाप्तसुवपात्रपाणे गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥) ब्रह्मेशानयोर्म-
 ध्ये बल्ल्याम्-ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणान् आ०
 स्या० ॥ २१ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके० ॥ (एहोहि दुर्गेदुरिता-
 घनाशिनि प्रचंडदैत्यौघविनाशकारिणि । उमे महेशार्द्रशरीरधारिणि
 स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकर्मणि ॥) ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये वाप्याम्-ॐ
 भू० दुर्गायै० दुर्गाम् आ० स्या० ॥ २२ ॥ ॐ इदं विष्णुर्द्विचक्रमे० ॥
 (एहोहि नीलांबुदमेचक्र त्वं श्रीवत्सवत्सः कमलाधिनाथ । सर्वामरैः
 पूजितपादपत्र गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥) तत्रैव दुर्गापूर्वे-ॐ भू० विष्णवे०
 विष्णुम् आ० स्या० ॥ २३ ॥ ॐ पितृभ्यः-स्वधायिभ्यः+स्वधानमं+

पितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमृत्युपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः-
 स्वधा नमः ॥ अक्षद्विपुत्रोर्भीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरुपितरु
 शुन्धद्वम् ॥ ३६ ॥ (सुखाय पितृन् कुलवृद्धिकर्तृन् रक्तोत्पलाभानिह रक्त-
 नेत्रान् । सुरक्तमाल्याम्बरभूषिताश्च नमामि पीठे कुलवृद्धिहेतोः ॥)
 ब्रह्माग्नयोर्मध्ये वल्ल्याम्-ॐ भू० स्वधायै० स्वधाम्० आ० स्या० ॥ २४ ॥
 ॐ परंमृत्योऽअनुपरोद्विपन्थोऽध्वस्तैऽअन्यऽइतरोदेवयानात् ॥ चक्षु-
 ष्मतेशृण्वतेतैःब्रवीमिमानंस्पर्जाऽरीरिपोमोतव्वीरान् ॥ ३५ ॥ (आवाहया-
 म्यहं रोगमनेकविधलक्षणम् । नानालंकारसंयुक्तं रक्तश्मश्रुविद्योचनम् ॥)
 ब्रह्मयमयोर्मध्ये वाप्याम्-ॐ भू० मृत्युरोगाभ्यां० मृत्युरोगौ आ०
 स्या० ॥ २५ ॥ ॐ गुणानान्त्वा० ॥ (एहोहि विघ्नाधिपते सुरेन्द्र
 ब्रह्मादिदेवैरभिवंधपाद । गजास्य विद्यालय विश्वमूर्ते गृहाण पूजां
 भगवन्नमस्ते ॥) ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये वल्ल्याम्-ॐ भू० गणपतये० गणप-
 तिम आ० स्या० ॥ २६ ॥ ॐ शन्नोदेवीरुभिष्टयुऽआपो० ॥ (एहोहि
 लोकेश्वर पाशपाणे यादोगणैर्वदितपादपद्म । पीठेऽत्र देवेश गृहाण
 पूजां पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते ॥) ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्याम्-ॐ भू०
 अद्भ्यो० अपः आ० स्या० ॥ २७ ॥ ॐ मरुतोऽस्यहिक्षयैःपाथादिवो-
 द्विंमहसदं ॥ ससुंगोपातमोजनं ॥ ३७ ॥ (एहोहि यज्ञेश समीरण त्वं मृगा-
 धिरूढ सहसिद्धसंघैः । प्राणस्वरूपिन् सुखतासहाय गृहाण पूजां भग-
 वन्नमस्ते ॥) ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये वल्ल्याम्-ॐ भू० मरुद्भ्यो० मरुतः आ०
 स्या० ॥ २८ ॥ ॐ स्योनापृथिवि० ॥ (एहोहि पातालचराचरेन्द्र-
 नागागनाकिन्नरगीयमाने । यज्ञैर्गोद्रामरलोकसंघैः पृथिवि परक्षाध्वरमस्म-
 दीयम् ॥) ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायाम्-पृथिव्यै० पृथिवीम् आ० स्या०
 ॥ २९ ॥ ॐ पञ्चनुद्द्युःसरंस्वती० ॥ (एहोहि गंगे दुरिताघनाशीनि

क्षपाधिरुद्धे ह्युदकं महस्ते । श्रीविष्णुपादाम्बुजसंभवे त्वं गृहाण पूजां
 शुभदे नमस्ते ॥ तत्रैव पृथिव्या उत्तरतः—ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो०
 गङ्गादिनदीः आ० स्या० ॥ ३० ॥ ॐ इन्द्रमैव रूप० ॥ (एषोहि यादो-
 गणवारिधीनां गणेन पर्जन्यसहासरोभिः । त्रिधाधरेद्रामरगीयमान पादि
 त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥) तत्रैव गङ्गाद्युत्तरे—ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो०
 सप्तसागरान् आ० स्या० ॥ ३१ ॥ (एषोहि कार्तस्वरूप सर्वभृभृत्पते
 चंद्राखी दधान । सर्वापधिस्थान महेन्द्रमित्र लोकत्रयात्रास नमोऽस्तु तु-
 भ्यम् ॥ ब्रह्मणः मस्तके कर्णिकोपरि—ॐ भू० मेरवे० मेरुम् आ० स्या०
 ॥ ३२ ॥ मण्डलवाते श्वेतपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गदाद्यष्टायुधदे-
 यतावाहनम् ॥ उत्तरे सोमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः
 गदायावाहयापि स्थापयापि । सो गदे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ३३ ॥ ऐशा-
 न्याम् ईशानसमीपे—ॐ भू० त्रिशूलाय नमः त्रिशूलम् आ० स्या०
 ॥ ३४ ॥ पूर्वे इन्द्रसमीपे—ॐ भू० वज्राय नमः वज्रम् आ० स्या०
 ॥ ३५ ॥ आग्नेय्याम् अग्निसमीपे—ॐ भू० शक्तये नमः शक्तिम् आ०
 स्या० ॥ ३६ ॥ दक्षिणे यमसमीपे—ॐ भू० दण्डाय नमः दण्डम् आ०
 स्या० ॥ ३७ ॥ नैर्ऋत्यां निर्ऋतिसमीपे—ॐ भू० खड्गाय नमः खड्गम्
 आ० स्या० ॥ ३८ ॥ पश्चिमे वरुणसमीपे—ॐ भू० पात्राय नमः
 पात्रम् आ० स्या० ॥ ३९ ॥ वायव्यां वायुसमीपे—ॐ भू० भद्रुनाय
 नमः भद्रुगम् आ० स्या० ॥ ४० ॥ मण्डलवाते रक्तपरिधी उत्त-
 रादिक्रमेण गौतमाद्यष्टदेवतावाहनम् ॥ उत्तरे—ॐ भू० गौतमाय नमः
 गौतमम् आ० स्या० ॥ ४१ ॥ ऐशान्याम्—ॐ भू० भरुणायाय नमः
 भरुणायम् आ० स्या० ॥ ४२ ॥ पूर्वे—ॐ भू० विश्वामित्राय नमः
 विश्वामित्रम् आ० स्या० ॥ ४३ ॥ आग्नेय्याम्—ॐ भू० इन्द्राय नमः

कश्यपम् आ० स्था० ॥ ४४ ॥ दक्षिणे—ॐ भू० जमदग्नये नमः
जगदग्निम् आ० स्था० ॥ ४५ ॥ नैऋत्याम्—ॐ भू० वसिष्ठाय नमः
वसिष्ठम् आ० स्था० ॥ ४६ ॥ पश्चिमे—ॐ भू० अत्रये नमः अत्रिम्
आ० स्था० ॥ ४७ ॥ वायव्याम्—ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीम्
आ० स्था० ॥ ४८ ॥ मण्डलवाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण ऐन्द्र्या-
द्यष्टदेवतावाहनम् ॥ पूर्वे—ॐ भू० ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीम् आ० स्था० ॥ ४९ ॥
आग्नेय्याम्—ॐ भू० कौमार्यै नमः कौमारीम् आ० स्था० ॥ ५० ॥
दक्षिणे—ॐ भू० ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीम् आ० स्था० ॥ ५१ ॥ नैऋत्याम्—
ॐ भू० वाराह्यै नमः वाराहीम् आ० स्था० ॥ ५२ ॥ पश्चिमे—ॐ
भू० चामुण्डायै नमः चामुण्डाम् आ० स्था० ॥ ५३ ॥ वायव्याम्—
ॐ भू० वैष्णव्यै नमः वैष्णवीम् आ० स्था० ॥ ५४ ॥ उत्तरे—ॐ
भू० माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीम् आ० स्था० ॥ ५५ ॥ ऐशान्याम्—
ॐ भू० वैनायक्यै नमः वैनायकीमा० स्था० ॥ ५६ ॥ एवं सर्वतोभद्र-
मण्डलदेवता आवाह्य पूजनं बलिदानं च विधाय प्रधानहोमान्ते (अन्तिम-
दिने) तत्तन्मंत्रैर्वा नाममंत्रैः प्रत्येकं दशदशष्टताक्ततिलाहुतिभिः
एकैकयाऽऽज्याहुत्या वा होमः कार्यः ॥

॥ इति सर्वतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

॥ ५६ ॥ त्रिचत्वारिंशद् (४३) रेखात्मकमाग्निपुराणोक्तहरिहर-
मण्डलस्थद्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

हस्ते जलपादाय अग्नेत्यादिपूर्वोच्चरितशुभपुण्यतिथी० प्रारोप्सित-
(हवनात्मक) महाद्रुद्ररूपे कर्मणि हरिहरात्मकद्वादशलिङ्गतोभद्र-

मण्डलदेवतावाहनस्थापनपूजनानि करिष्ये ॥ (आदौ पूर्वोक्तक्रमेण सर्वतोभद्रमण्डलदेवता आवाह्य) इस्ते अक्षतान् गृहीत्वा-ईशान्यादिक्रमेण प्रथम-द्वितीय-तृतीयपूर्वलिङ्गे-१ ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाय नमः शिवमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो शिव इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ (एवं सर्वत्र) ॥ २ ॐ मू० तत्पुरुषाय नमः आ० स्था० ॥ ३ ॐ भू० पशुपतये नमः आ० स्था० ॥ प्रथम-द्वितीय-तृतीयदक्षिणलिङ्गे- ॥ ४ ॐ भू० उग्राय नमः आ० स्था० ॥ ५ ॐ भू० अघोराय नमः आ० स्था० ॥ ६ ॐ भू० रुद्राय नमः आ० स्था० ॥ प्रथम-द्वितीय तृतीय-पश्चिमलिङ्गे- ॥ ७ ॐ भू० भवाय नमः आ० स्था ॥ ८ ॐ भू० सद्योजाताय नमः आ० स्था० ॥ ९ ॐ भू० सर्वजाताय नमः आ० स्था० ॥ प्रथम-द्वितीय-तृतीयोत्तरलिङ्गे- ॥ १० ॐ भू० महालिङ्गाय नमः आ० स्था० ॥ ११ ॐ भू० वामदेवाय नमः आ० स्था० १२ ॐ भू० भीमाय नमः आ० स्था० ॥ पूर्वेशान्यादिक्रमेण षोडशवापीषु प्रत्येकं देवतास्थापनम्-॥ १३ असिताङ्गभैरवाय० ॥ १४ रुद्रभैरवाय० ॥ १५ चण्डभैरवाय० ॥ १६ क्रोधभैरवाय० १७ उन्मत्तभैरवाय० ॥ १८ कपालिभैरवाय० ॥ १९ भीषणभैरवाय० ॥ २० संहारभैरवाय० ॥ २१ भवाय० ॥ २२ शर्वाय० ॥ २३ ईशानाय० ॥ २४ पशुपतये० ॥ २५ ॥ रुद्राय ॥ २६ उग्राय० ॥ २७ भीमाय० ॥ २८ महते० ॥ २९ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये भद्रे शूलिने० ३० इन्द्रान्योर्मध्ये भद्रे-चन्द्रमौलिने० ॥ ३१ आग्निमयोर्मध्ये भद्रे-चन्द्रमसे० ॥ ३२ यमनिर्ऋत्योर्मध्ये भद्रे-वृषभध्वजाय० ॥ ३३ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे-त्रिलोचनाय० ॥ ३४ वरुणवाय्वोर्मध्ये भद्रे-शक्तिधराय० ॥ ३५ वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे-महेश्वराय० ॥ ३६ सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे-शूल-

धारिणे० ॥ अथेशानीमारभ्येशानीपर्यंतं प्रतिकोणं द्वे द्वे इत्यष्टवलीषु क्रमेणाष्टौ देवताः स्थापयेत्-॥३७ अनन्ताय० ॥ ३८ तक्षकाय० ॥ ३९ कुलिशाय० ॥ ४० कर्कोटकाय० ॥ ४१ शङ्खपालाय० ॥ ४२ कम्बलाय० ॥ ४३ अश्वतराय० ॥ ४४ पृथिव्यै० ॥ आग्नेयकोणे सप्तशृङ्खलादेवताः स्थापयेत्-॥ ४५ भूम्यै० ॥ ४६ हैहयाय० ॥ ४७ माल्यवते० ॥ ४८ पारिजाताय० ॥ ४९ दिक्पतये० ॥ ५० महादेवाय० ॥ ५१ ॥ विष्णवे० ॥ नैर्ऋत्यकोणे सप्तशृङ्खलादेवताः स्थापयेत्-॥ ५२ माल्यवते० ॥ ५३ महारुद्राय० ॥ ५४ कालाग्निल्लाय०-॥ ५५ द्वादशादित्येभ्यो० ॥ ५६ महेश्वराय० ॥ ५७ मृत्युरोगाभ्यां० ॥ ५८ वैनायक्यै० ॥ वायव्यकोणे सप्तशृङ्खलादेवताः स्थापयेत्-५९ शाकुन्तलेयाय० ॥ ६० भरताय ॥ ६१ नलाय० ॥ ६२ रामाय० ॥ ६३ सार्वभौमाय० ॥ ६४ नैपथाय० ॥ ६५ विन्ध्याचलाय० ॥ ईशानकोणे सप्तशृङ्खलादेवताः स्थापयेत्-६६ हेमकूटाय० ॥ ६७ गन्धमादनाय० ॥ ६८ कुलाचलाय० ॥ ६९ हिमाचलाय० ॥ ७० पृथिव्यै० ७१ अनन्ताय० ॥ ७२ कमलासनाय० ॥ चतुर्दिक्षु खण्डेन्दुषु देवताः स्थापयेत्- ७३ ऐशाने-अश्विनीकुमाराभ्यां० ॥ ७४ आग्नेये-विश्वेभ्यो देवेभ्यो० ॥ ७५ नैर्ऋत्ये-पितृभ्यो० ॥ ७६ वायव्ये-नागेभ्यो० ॥ तद्ग्रहिः सत्त्वरजस्तमः-परिधिषु देवतास्थापनं पूर्वादिक्रमेण ॥ ७७ सत्त्वरिधौ पूर्वे-इन्द्राय० ॥ ७८ आग्नेये-अग्नये० ॥ ७९ दक्षिणे-यमाय० ॥ ८० नैर्ऋत्ये-निर्ऋतये० ॥ ८१ पश्चिमे-वरुणाय० ॥ ८२ वायव्ये-वायवे० ॥ ८३ उत्तरे-कुबेराय० ॥ ८४ ऐशाने-ईशानाय० ॥ तद्ग्रहिः रजःपरिधौ आयुधा-वाहनम् ॥ ८५ पूर्वे-वज्राय० ॥ ८६ आग्नेये-शक्तये० ॥ ८७ दक्षिणे-दण्डाय० ॥ ८८ नैर्ऋत्ये-खड्गाय० ॥ ८९ पश्चिमे-पाशाय० ॥ ९०

वायव्ये० अङ्कुशाय० ॥ ९१ उत्तरे-गदायै० ॥ ९२ ऐशाने-त्रिश-
लाय० ॥ तद्रहिः तमःपरिधौ ऋषीन् स्थापयेत् ॥ ९३ पूर्वे-कश्य-
पाय० ॥ ९४ आग्नेये-अत्रये० ॥ ९५ दक्षिणे-भरद्वाजाय० ॥ ९६
नैर्ऋत्ये-विश्वामित्राय० ॥ ९७ पश्चिमे-गोतमाय० ॥ ९८ वायव्ये-
जमदग्नये० ॥ ९९ उत्तरे-वसिष्ठाय० ॥ १०० ऐशाने-ॐ भूर्भुवः स्वा
भृगवे नमः भृगुमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो भृगो इहागच्छ इह तिष्ठ ॥
प्रतिष्ठापनम् ॐ मनोज्ञति० ॥ षट्पञ्चाशदुत्तरशतसंख्यका हरिहरमण्डल-
देवताः सुप्रतिष्ठाः वरदाः भवता ॥ “ब्रह्माद्यावाहितहरिहरमण्डलदेवताभ्यो
नमः” इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः (वा अन्योपचारैः) सम्पूज्य तेभ्यो
पायसत्रलिं दद्यात् ॥ पूजनान्ते समर्पणम्-अनया पूजया हरिहरमण्डल-
देवताः प्रीयन्ताम् ॥

॥ इति त्रिचत्वारिंशद्रेखात्मकहरिहरमण्डलम्यद्वादशलिंगतोभद्रमण्डल-
देवतास्थापनम् ॥

॥ ५७ ॥ अथ (३४) चतुस्त्रिंशद्रेखात्मकं द्वादशलिंगतोभद्र-
मण्डलदेवतास्थापनम् ॥

मण्डले कर्णिकान्तराले मध्ये ईशानतः ईशानकोणे खण्डेन्दौ ॥
१ ईशान्याम्-ॐ गुरवे नमः । २ आग्नेय्याम्-गणपतये० । ३ नैर्ऋत्याम्-
दुर्गायै० । ४ वायव्याम्-क्षेत्रपालाय० । ५ भद्रमध्ये सदाशिवाय० । ततोऽ-
ष्टदले पूर्वस्याम्-१६ पूर्वे-कालाग्निरुद्राय० । ७ तत्रैव-कूर्माय० । ८ तत्रैव-
मंडूकाय० । ९ आग्नेय्याम्-वराहाय० । १० तत्रैव-अनंताय० । ११ दक्षि-
णस्याम्-पृथिव्यै० । १२ तत्रैव स्कंदाय० । १३ तत्रैव-सुधासिंधवे० । १४
नैर्ऋत्याम्-नलाय० । १५ तत्रैव-पद्माय० । १६ पश्चिमायाम्-पत्रेभ्यो०

१७ तत्रैव—केसरेभ्यो० । १८ तत्रैव—कर्णिकायै० । १९ वायव्याम्—सिंहास-
 नाय० । २० तत्रैव—पद्मासनाय० । २१ उत्तरस्याम्—धर्माय० । २२ तत्रैव
 ज्ञानाय० । २३ तत्रैव—वैराग्याय० । २४ ईशान्याम्—ऐश्वर्याय० । २५ ।
 तत्रैव—चिदाकाशाय० । २६ पद्ममध्ये—योगपीठाय० ॥ ततः कर्णिको-
 परि पूर्वतश्चतुर्दिक्षु—पृथिव्यै० कपालाय० सप्तसरिद्भ्यो० सप्तसागरे-
 भ्यो० (३०) । कर्णिकासमीपे चत्वारि श्वेतभद्राणि सन्ति तेषु पूर्वादि-
 चतुर्दिक्षु—तत्पुरुषाय० अघोराय० सद्योजाताय० वामदेवाय० (३४) ।
 तत्समीपे कृष्णान्यष्टभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु—भगवत्यै० उमा-
 यै० शंकरप्रियायै० पार्वत्यै० गौयै० काल्यै० कौर्म्यै० विश्वंभयै० (४२) ॥
 ततः कृष्णभद्राण्यधः अष्टौ रक्तभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु—नंदिने०
 महाकालाय० महावृषभाय० भृंगकिरीटिने० स्कंदाय० उमापतये० चंडेश्व-
 राय० योगमूत्राय० (५०) । चतुर्लिंगोपरि श्वेतभद्राणि सन्ति तेषु पूर्वा-
 दिचतुर्दिक्षु—धात्रे० मित्राय० यमाय० रुद्राय० (५४) ॥ तत्समीपे लिंगोपरि
 अष्टौ पीतभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु वरुणाय० मूर्याय० भगाय०
 विवस्वते० पुरुषोत्तमाय० सवित्रे० त्वष्ट्रे० विष्णवे० (६२) ॥ ततो
 द्वादशलिंगतोदेवतानां स्थापनम्—पूर्वे—शिवाय० तद्दक्षिणे—एकनेत्राय०
 तद्दक्षिणे—एकरुद्राय० ॥ दक्षिणस्याम्—त्रिमूर्तये० तत्पश्चिमे—श्रीकंठाय०
 तत्पश्चिमे—वामदेवाय० ॥ पश्चिमायाम्—ज्येष्ठाय० तदुत्तरे—श्रेष्ठाय० तदुत्तरे
 रुद्राय० ॥ उत्तरे—कालाय० तत्पूर्वे—कन्धविकरण्याय० तत्पूर्वे—बलविकर-
 णाय० (७४) ॥ ततः श्वेतपोडगवापीषु प्रत्येकं देवतास्थापनम्—अणि-
 मायै० महिमायै० लघिमायै० गरिमायै० प्राप्त्यै० प्राकाम्यै० ईशितायै०
 वशितायै० ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० वारायै० इंद्रायै०
 चामुण्डायै० चण्डिकायै० (९०) ॥ ततो वापीसमीपे अष्टरक्तभद्राणि

सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु—असितागभैरवाय० रुरुभैरवाय० चंड-
भैरवाय० क्रोधभैरवाय० उन्मत्तभैरवाय० कालभैरवाय० भीषण-
भैरवाय० संहारभैरवाय० (९८) ॥ ईशानाद्यष्टदिक्षु वलीदेवता-
स्थापनम्—घृताच्यै० मेनकायै० रम्भायै० उर्वश्यै० तिलोत्तमायै०
सुकेशायै० मंजुघोषायै० अप्सरोभ्यो० (१०६) ततो मण्डलमध्ये
परिधिसमीपे शृङ्खलादेवताः स्थापयेत्—आग्नेय्याम्—भवाय० शिवाय०
रुद्राय० पशुपतये० उग्राय० भीमाय० महादेवाय० ईशानाय० अन-
न्ताय० वासुकये० (११६) ॥ नैर्ऋत्याम्—तक्षकाय० कुलीरकाय० कर्को-
टकाय० शंखपालाय० कंबलाय० अश्वतराय० वैन्याय० अंगाय०
हृदयाय० अर्जुनाय० (१२६) ॥ वायव्याम्—शाकुन्तलेयाय० भरताय०
नलाय० रामाय० सार्वभौमाय० निपधाय० विंध्याचलाय० माल्यव्रते०
पारियात्राय० सदाय० (१३६) ॥ ऐशान्याम्—हेमकूटाय० गंधमादनाय०
कुलाचलाय० हिमवते० रैवताय० देवगिरये० मलयाचलाय० कनका-
चलाय० पृथिव्यै० अनन्ताय० (१४६) ॥ आग्नेयादिचतुर्दिक्षु खण्डेदुपु-
अग्निकुमाराभ्यां० विश्वेभ्यो देवेभ्यो० पितृभ्यो० नागेभ्यो० (१५०) ॥
ततो मण्डलाद्द्विः सत्त्वपरिधौ पूर्वादिक्रमेण—इंद्राय० अग्नये० यमाय०
निर्ऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय० ईशानाय० ऊर्ध्वायाम्-
ब्रह्मणे० अधः—अनन्ताय० (१६०) ॥ ततो रक्तपरिधौ पूर्वादिक्रमेण-
वज्राय० शक्तये० दण्डाय० खड्गाय० पाशाय० अंकुशाय० गदायै०
त्रिशूलाय० ऊर्ध्वायां पशाय० अधः—चक्राय० (१७०) ॥ ततः कृष्णप-
रिधौ पूर्वादिक्रमेण—ऋषयाय० अग्नये० भरद्वाजाय० विश्वमित्राय०
गान्धर्वाय० जमदग्नेये० वसिष्ठाय० अरुंधत्यै० । पूर्वे—ऋग्वेदाय० । दक्षि-
णे—यजुर्वेदाय० । पश्चिमे—सामवेदाय० । उत्तरे—अथर्ववेदाय नमः ॥ (१८२)
॥ इति (३४) चतुर्दिशद्देवात्मकद्वादशलिंगतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

॥ ५८ ॥ अथ गृहवास्तुपूजाप्रयोगः ॥

कर्त्ता पूर्वदिने देहशुद्धयर्थं प्रायश्चित्तं कुर्यात् ॥ आचम्य प्राणाना-
 प्त्य शान्तिमूक्तं पठेत् ॥ ततः सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा संकल्पः-
 अथे० मम सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनधान्यपुत्रपौत्राद्यनव-
 च्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्धयर्थमु-
 वर्णरजतताम्रत्रपुसीसकरास्यलोहपापाणाद्यष्टशल्यमेदिनीदोषायद्वयया-
 द्यन्यथाभवनदोषपरिहारार्थं नानाविधजीवाहिसादिजन्यसकलदोषपरि-
 हारपूर्वकसर्वारिष्टोपशान्त्यर्थम् अस्मिन्गृहे चिरकालनिवासार्थं श्रीपरमे-
 श्वरप्रीतये सग्रहमखां शालाकर्मपूर्विकां वास्तुशान्तिं करिष्ये ॥ तदंगतया
 दिग्रक्षणं कलशाराधनं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसो-
 ऽर्द्धारायुष्यमंत्रजपं नान्दीश्राद्धं ब्रह्माचार्यक्रान्तिग्वरणं च करिष्ये ॥ इति-
 संकल्प्य तानि ग्रहशान्तिवत् कुर्यात् ॥ अथ शालाकर्मप्रयोगः ॥ शालाभ्य-
 न्तरे प्रादेशमात्रं स्थण्डिलं कृत्वा तदुपरि अग्निस्थापनं कुर्यात् । आज्य-
 संस्कारान्कृत्वा आग्नेयादिक्रमेणावटमभिजुहुयात् ॥ ॐ अच्युताय
 भौमाय स्वाहा इदमच्युताय भौमाय नमः ॥ एवं चतुर्षु अवटेषु होमः ॥
 ततः स्तंभोच्छ्रयणम् ॥ ॐ इमामुच्छ्रयामि भुवनस्यनाभिवसोर्द्धाराप्र-
 तरर्णावमूनाम् ॥ इहैवध्रुवानिमिनोमिशालांक्षेमेतिष्ठतुष्टुतमुक्षमाणा ॥
 अश्ववतीगोमतीमूनुतावत्युच्छ्रयस्वमहतेसौभगाय ॥ आत्वाशिशुराक्र-
 न्दत्वागावोधेनवोवाशयमाना ॥ आत्वाकुमारस्तरुणभावत्सो जगदःसह ॥
 आत्वापरिष्कृतःकुम्भआदन्नःकलशैरुप ॥ क्षेमस्यपत्नीवृद्धतीसुवासारयि-
 नोधेहिमुभगेसुवीर्यम् । अश्ववद्रोमद्रूर्जस्वत्पण्वनस्पतेरिव ॥ अभिनःपूर्य-
 ताः ॥ ॐ श्रीरिदमनुश्रेयोवसानः ॥ ४ ॥ एवं प्रतिस्तंभे मंत्रपाठः । स्तंभ-
 मूले जलं निक्षिप्य । “ स्तंभाय नमः ” इति नाममंत्रेण पञ्चोपचारः
 पूजा कुर्यात् ॥

ततो गृहमध्ये हस्तमात्रं कुण्डं स्थण्डिलं वा कृत्वा कुण्डात् नैर्ऋत्य-
भागे वास्तुदेवतास्थापनार्थं पीठं कृत्वा दिग्दक्षिणं तथा पञ्चगव्यकरणं
भूमिकूर्मानन्तपूजनम् च कृत्वा कुण्डे स्थण्डिले वा पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं
शतमंगलनामानम् अग्निं स्थापयेत् ॥ ततो वास्तुदेवताः स्थापयेत् ॥

अथ वास्तुदेवतास्थापनम् ॥ तत्रादौ वास्तुपीठे श्वेतवस्त्रं प्रसार्य
तदुपरि तंदुलैरेकाशीतिपदं वास्तुमण्डलं कृत्वा जलमादाय ॥ अघो-
त्यादि० प्रारव्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं वास्तुमंडले देवतास्थापनं
पूजनं चाहं करिष्ये ॥ तत्रादौ वास्तुपीठस्य आग्नेयादिकोणेषु चतुरः
शंकुन् रोपयेत् ॥ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ॥
अस्मिन् गृहेऽवतिष्ठन्तामायुर्वलकराः सदा ॥१॥ इति मंत्रेण रोपयेत् ॥
अनेनैव मंत्रेण द्विगुणीकृतमूत्रेण सर्वेषां वेष्टनं कुर्यात् ॥ आग्नेयादिको-
णेषु क्रमेण शंकुपार्श्वे मापभक्तदध्योदनवलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥
अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः । वलिं तेभ्यः
प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥१॥ अग्नये० इमं वलिं समर्पयामि ॥ १ ॥
नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः ॥ वलिं० ॥२॥ निर्ऋतये०
वलिं सम० ॥२॥ नमो वै वायुरक्षोभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः ॥ वलिं०
॥३॥ वायवे० वलिं सम० ॥३॥ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समा-
श्रिताः ॥ वलिं० ॥४॥ ईशानाय० वलिं सम० ॥४॥ ततो वेद्युपरि प्रसा-
रितवस्त्रे कुंकुमादिना सुवर्णरजतादिशलाकया नाममंत्रैः पश्चादारभ्य
प्रागन्ता च उदक्संस्थाः समा अंगुलद्वयान्तरा गृहवास्तुत्वादेकाशीति-
पदमण्डले दश रेखाः कुर्यात् ॥ तत्र च रेखादेवताः स्थापयेत् ॥ यथा
शान्तायै० । यशोवत्यै० । कान्त्यै० । विशालायै० । प्राणवाहिन्यै० । सत्यै० ।
सुमत्यै० । नन्दायै० । सुभद्रायै० । सुरायै० ॥१०॥ तथैव दक्षिणारंभा

उदगन्ताः प्राक्संस्थाः दश रेखाः कुर्यात् ॥ तत्र च रेखादेवताः स्था० ॥
 हिरण्यायै० सुव्रतायै० लक्ष्म्यै० । विभूतयै० । विमलायै० । प्रियायै० ।
 जयायै० । ज्वालायै० । विशोकायै० इडायै० ॥१०॥ इत्यावाह मनोजू०
 इति प्रतिष्ठाप्य “रेखादेवताभ्यो नमः” ॥ इति मंत्रेण यथाशक्त्या पूजयेत् ॥

॥ अथ एकाशीतिपदवास्तुमण्डलदेवतास्थापनम् ॥

१ ऐशानकोणपदे—ॐ शिखिने नमः शिखिनम् आ० स्थापयामि ॥
 (एवं सर्वत्र) २ तदक्षिणैकपदे—पर्जन्याय० । ३ तदक्षिणपदद्वये—
 जयन्ताय० । ४ तदक्षिणपदद्वये—कुलिशायुधाय० । ५ तदक्षिणपदद्वये—
 सूर्याय० । ६ तदक्षिणपदद्वये—सत्याय० । ७ तदक्षिणपदद्वये—भृशाय० ।
 ८ तदक्षिणैकपदे—आकाशाय० । ९ तदक्षिणाग्नेयकोणपदे—वायवे० ।
 १० तत्पश्चिमैकपदे—पूष्णे० । ११ तत्पश्चिमपदद्वये—वितथाय० । १२
 तत्पश्चिमपदद्वये—गृहक्षताय० । १३ तत्पश्चिमपदद्वये—यमाय० । १४ तत्प-
 श्चिमपदद्वये—गन्धर्वाय० । १५ तत्पश्चिमपदद्वये—भृङ्गराजाय० । १६
 पश्चिमोपरिस्थितैकपदे—मृगाय० । १७ तत्पश्चिमे नैऋत्यकोणपदे—पितृ-
 भ्यो० । १८ तदुत्तरैकपदे—दौवारिकाय० । १९ तदुत्तरपदद्वये—सुग्री-
 वाय० । २० तदुत्तरपदद्वये—पुष्पदन्ताय० । २१ तदुत्तरपदद्वये—वरुणाय० ।
 २२ तदुत्तरपदद्वये—असुराय० । २३ तदुत्तरपदद्वये—शोपाय० । २४
 तदुत्तरोपरिस्थितैकपदे—पापाय० । २५ तदुत्तरवायव्यकोणपदे—रोगाय० ।
 २६ तत्प्रागैकपदे—अहये० । २७ तत्प्राक्पदद्वये—मुख्याय० । २८ तत्प्रा-
 क्पदद्वये—भल्लाटाय० । २९ तत्प्राक्पदद्वये—सोमाय० । ३० तत्प्राक्पद-
 द्वये—सर्पाय० । ३१ तत्प्राक्पदद्वये—अदित्यै० । ३२ तत्प्रागुपरिस्थितै-
 कपदे—दित्यै० । ३३ तदक्षिणे शिखिपदाधः—आपाय० । ३४ आग्नेय-
 वायुपदाधः—सावित्राय० । ३५ नैऋत्यपितृपदाधः—जघाय० । ३६

वायव्यरोगपदाधः-रुद्राय० । ३७ मध्येनवपदात्पूर्वं पदत्रये-अर्यम्णे० ।
 ३८ तद्दक्षिणाग्नेयकोणैकपदे-सवित्रे० । ३९ तत्पश्चिमपदत्रये-विवस्वते० ।
 ४० तत्पश्चिमनैर्ऋत्यकोणैकपदे-त्रिभुवाय० । ४१ तदुत्तरपदत्रये० मित्राय० ।
 ४२ तदुत्तरवायव्यकोणैकपदे-राजयक्ष्मणे० । ४३ तत्प्राक्पदत्रये-
 पृथ्वीधराय० । ४४ तत्प्राक् ईशानकोणैकपदे-आपवत्साय० । ४५ मध्ये
 नवपदेपु-ब्रह्मणे० । मण्डलाद्ब्रह्मिः श्वेतपरिधौ-४६ ईशान्याम्-चरव्यै० ।
 ४७ आग्नेय्याम्-विदार्यै० । ४८ नैर्ऋत्याम्-पूतनायै० । ४९ वायव्याम्-
 पापराक्षस्यै० । ५० मण्डलाद्ब्रह्मिः पूर्वे-स्कन्दाय० । ५१ दक्षिणे-अर्यम्णे० ।
 ५२ पश्चिमे-जृम्भकाय० । ५३ उत्तरे-पिलिपिच्छाय० । मण्डलाद्ब्रह्मिः-
 द्वितीयरक्तपरिधौ ॥ ५४ पूर्वे-इन्द्राय० । ५५ आग्नेय्याम्-अग्रये० ।
 ५६ दक्षिणस्याम्-यमाय० । ५७ नैर्ऋत्याम्-निर्ऋतये० । ५८ पश्चिमे-
 वरुणाय० । ५९ वायव्याम्-वायवे० । ६० उत्तरे-कुबेराय० । ६१ ईशा-
 न्याम्-ईश्वराय० । ६२ पूर्वज्ञानयोर्मध्ये-ब्रह्मणे० । ६३ निर्ऋतिपश्चिम-
 योर्मध्ये-अनन्ताय० । ६४ पूर्वे इन्द्रादुत्तरतः-उग्रसेनाय० । ६५ दक्षिणे
 यमादुत्तरतः-डामराय० । ६६ पश्चिमे वरुणादुत्तरतः-महाकालाय० । ६७
 उत्तरे सोमादुत्तरतः-पिलिपिच्छाय० । ६८ तृतीयकृष्णपरिधौ देवतास्था-
 पनम्-पूर्वे-हेतुकाय० । ६९ आग्नेय्याम्-त्रिपुरान्तकाय० । ७० दक्षिणे-
 अग्निवैतालाय० । ७१ नैर्ऋत्याम्-असिर्वैतालाय० । ७२ पश्चिमे-
 कालाय० । ७३ वायव्याम्-करालाय० । ७४ उत्तरे-एकपादाय० ।
 ७५ ईशान्याम्-भीमरूपाय० । ७६ पूर्वज्ञानयोर्मध्ये-खेचराय० । ७७
 निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये-तलवासिने० ॥ इत्यावाह मनोजू० इति प्रतिष्ठाप्य
 “वास्तुमंडलदेवताभ्यो नमः” इति पूजयेत् ॥

ततो मध्ये ताम्रकलशं संस्थाप्य तत्र वास्तुध्रुवमूर्त्योः अग्न्युत्तारण-
पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूर्त्यो कलशोपरि संस्थाप्य “वास्तुध्रुवमूर्तिभ्यां
नमः” इति मूलमंत्रेण षोडशोपचारैः संपूज्य मर्थायेत् ॥ वास्तुदेव
नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो ॥ मदगृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु
सर्वदा ॥ १ ॥ ततो नाममंत्रेण पायसचलिं दद्यात् ॥ इति ॥ ततः
पूर्वोक्तक्रमेण ग्रहवेद्यां ग्रहस्थापनं पूजनं च ॥ ततः कुशकण्डिकां कुर्यात् ॥
ब्रह्मोपवेशनादि चरुस्थाल्यधिश्रयणान्तं कृत्वा ॥ ततः सपत्निको
यजमानो वर्धनीकलशं गृहीत्वा ग्रहादृवहिर्निष्क्रम्य द्वारदेवतानां पूजनं
कुर्यात् ॥ यथा-अक्षतान् गृहीत्वा ॥ पूर्वद्वारे-ग्रामणीपीठे पक्षीन्द्राय नमः ।
दक्षिणे-चण्डाय नमः । वामे-प्रचण्डाय नमः । ऊर्ध्वं-द्वारश्रियै नमः ।
देहल्यां द्वारपीठस्य मध्ये-वास्तुपुरुषाय नमः । दक्षिणशाखायां-गंगायै ०
वामशाखायां-यमुनायै ० । दक्षिणे-शंखनिधये ० । वामे-पद्मनिधये ० ।
द्वारस्य ऊर्ध्वम् आग्नेय्यां-गणपतये ० । अधः-नैऋत्यां-दुर्गायै ० । अधः
वायव्यां-सरस्वत्यै ० । ऊर्ध्वम् ईशान्यां क्षेत्रपालाय ० । “द्वारश्रियाद्यावाहि-
तदेवताभ्यो नमः” इति गंधादिभिः संपूज्य तोरणपूजां कुर्यात् ॥ ततो
यजमान आचार्यं पृच्छेत् । ब्रह्मन् प्रविशामि । आचार्येण ‘प्रविशस्व’
इत्युक्ते ॐ “ऋचं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये” इत्युक्त्वा शान्तिमूक्तं, पठित्वा
दक्षिणपादपुरःसरं स्वदक्षिणस्कन्धेन द्वारवामशाखां च देहलिं स्पृशन्
गृहान्तः प्रविश्य वर्धनीकलशमैशान्यां स्थापयेत् ॥ ततः पूजां कृत्वा कुशक-
ण्डिकां समाप्य होमं कुर्यात् ॥ इहरतिरिति षड्ज्याहुतीनाम् उदपात्रे त्यागः ।
तेनोदकेन मंदिरं प्रोक्षयेत् ॥ यथा-ॐ इहरतिरिहरमध्वामिहधृतिरिहस्व-
धृतिः स्वाहा ॥ इदमप्रये नममा ॥ १ ॥ ॐ उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातर-
न्धयन् । रायस्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा ॥ इदम ० ॥ २ ॥ (अपराश्रतस्तः) ॥ ॐ
वास्तोष्पते ० । इदं वास्तोष्पतये नममा ॥ ३ ॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतरणेन ऽपि धिग-

यस्फानोगोभिरश्लेभिरिन्दो ॥ अजरासस्तेसख्येस्यामपितेवपुत्रान्प्रतिनो-
 ज्जुपस्वशन्नो भवद्विपदेशचतुष्पदे स्वाहा ॥ इदं वास्तो ० ॥ ४ ॥ ॐ वास्तोष्पते
 श्रग्मयासदृसदतिसक्षीमहिरण्वयागातुमत्या ॥ पाहिक्षेमऽऽतयोगेवग्नोयू-
 यपातस्वस्तिभिःसदानःस्वाहा ॥ इदं वा ० ॥ ५ ॥ ॐ अमीवहा वास्तोष्पते-
 त्रिधारूपाण्याविशम् ॥ सखासुशेवःपिधिनः स्वाहा ॥ इदं वास्तो ० ॥ ६ ॥
 (पुराणोक्तवास्तुमन्त्रः ॥ नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्याभिरत प्रभो । मद्गृहे
 धनधान्यादिसमृद्धिं कुरु सर्वदा ॥ इदं वा ०) ततो मनसि ॐ प्रजापतये
 स्वाहेत्यादि आचारावाज्यभागौ हुत्वा प्रोक्षणीपात्रे त्यागः ॥ ततश्चत्प-
 मिघार्य स्थालीपाकेन पडाहुतयः ॥ अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वाश्च देवा-
 नुपद्धये ॥ सरस्वतीं च वाजीं च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा
 (उदपात्रे संस्रवमक्षेपः) इदम् अग्नये इन्द्राय बृहस्पतये विश्वेभ्यो देवेभ्यः
 सरस्वत्यै वाज्यै च नमः ॥ १ ॥ ॐ सर्पदेवजनान्सर्वान्हिमवन्तः सुदर्शनम् ॥
 वसुंश्चरुद्रानादित्यानीशानंजगदैःसह । एतान्सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तुमेदत्तवा-
 जिनः स्वाहा । इदं सर्पदेवजनेभ्यः सर्वेभ्यो हिमवते सुदर्शनाय वसुभ्यो
 रुद्रेभ्य आदित्येभ्य ईशानाय जगदेभ्यश्च नमः ॥ २ ॥ ॐ पूर्वाह्नमपराह्नचोभौ
 मध्यंदिनासह । प्रदोषमर्धरात्रं च व्युष्टां देवीं महापथाम् । एतान्सर्वान्प्रपद्येऽहं
 वास्तुमेदत्तवाजिनः स्वाहा । इदं पूर्वाह्नायापराह्नाय मध्यंदिनाय प्र-
 दोषायार्धरात्राय व्युष्टायै देव्यै महापथायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ कर्तारं च विरु-
 त्तारं विश्वकर्माणमोषधींश्च वनस्पतीन् । एतान्स ० । इदं कर्त्रे, विकर्त्रे
 विश्वकर्माण ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यश्च ० ॥ ४ ॥ ॐ धातारं च विधातारं नि-
 धीनांचपतिं सह । एतान्स ० । इदं धात्रे विधात्रे निधीनां पतये च ० ॥ ५ ॥
 ॐ स्योनः शिवमिदं वास्तुदत्तं ब्रह्मप्रजापतिसर्वाश्च देवताः स्वाहा ।
 (उदपात्रे संस्रवमक्षेपः । गृहमोक्षणकाले अनेन जलेन प्रोक्षणम्) । इदं
 ब्रह्मणे प्रजापतये सर्वाभ्यो देवताभ्यश्च ० ॥ ६ ॥ ततो द्रव्यत्यागं ग्रहहोमं च

कुर्यात् ॥ ततो वास्तुपीठस्थदेवतानां होमं कुर्यात् ॥ पञ्चवित्स्वफलानां
होमः ॥ ततोऽष्टोत्तरशतसंख्यया वास्तुमंत्रेण मधुघृतदधिभिरभ्यक्ताभिः
औदुम्बरादियथालाभसमिद्धिश्वरुकृष्णातिलाज्यद्रव्येण च होमं कुर्यात् ॥
ततो ध्रुवासि० इत्यनेन मन्त्रेण ध्रुवस्य चरुणा कृष्णातिलैराज्येन च प्रति-
द्रव्यम् अष्टोत्तरशतं जुहुयात् ॥ ततः अघोरमन्त्रेणाज्येन अष्टोत्तरशतं जुहु-
यात् ॥ शिखादिवास्तुपीठदेवतानां प्रतिद्रव्यम् एकैकयाऽऽहुत्या होमः ॥
ततः स्विएकृतादिप्रणीतात्रिमोकान्तं कुर्यात् ॥ ततः पूर्वादिदिक्षु संधा-
वभिमर्शनं कुर्यात् ॥ गृहाद् बहिर्निष्क्रम्य दिशमुपातिष्ठते प्रागादिक्रमेण ॥
(मंत्रपाठः वास्तुशान्त्यादिपुस्तके द्रष्टव्यः ॥) ततः पूर्वादिक्रमेण ध्वजाप-
ताकां रोपयेत् ॥ त्रिराट्तेन सूत्रेण रक्षोघ्नमंत्रेण गृहं वेष्टयेत् ॥ दुग्धज-
लेन गृहस्य परितः पवमानरक्षोघ्नमूक्तं पठन् अविच्छिन्नधारां पातयेत् ॥
प्रागकृते गृहप्रवेशं कुर्यात् । तथा आग्नेयकोणे जानुपरिमितगर्तं खनयित्वा
मृत्पेटिकायां शैवालादिकं क्षिप्त्वा तत्र वास्तुमूर्तिं संस्थाप्य गंधा-
दिभिश्च संपूज्य ततः पेटिकां गर्ते शनैर्निक्षिपेत् । तस्मिन् गर्ते शनैर्जलं
मृदं च निक्षिपेत् ॥ ततो गोपयेनोपलिप्य गंधादिभिः संपूज्य पञ्च-
गव्येन गृहं प्रोक्षयेत् ॥ श्रेयः संपाद्य दानं च अभिषेकं विसर्जनं च
कृत्वा ब्राह्मणभोजनं कारयेत् ॥ इति संक्षेपतो वास्तुशान्तिप्रयोगः ॥
॥ इति चतुर्थो विभागः ॥

॥ अथ पञ्चमो विभागः ॥

॥ श्रावणीकर्मसहितविविधमन्त्रप्रयोगात्मकः ॥

॥ ५९ ॥ अथ हेमाद्रिप्रोक्तस्नानसङ्कल्पः ॥

श्रावण्यादिनैमित्तिकस्नाने प्रायश्चित्ते तीर्थस्नानादिषु च हेमाद्रिप्रोक्तं
महास्नानसङ्कल्पं कुर्यात् ॥

स्वस्तिश्रीसमस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अश्लेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादिनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेरुकोटिब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्तमहदहंकारपृथिव्यप्तेजोवाक्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादिवाराहदंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्तवासुकितक्षककुलिककूर्तकपद्ममहापद्मशंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावतपुंडरीकवामनकुमुदांजनपुष्पदन्तसार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानामतलवितलसुतलतलातलरसातलमहातलपाताललोमानामुपरिभागे भूर्लोकभुवर्लोकस्वर्लोकमहर्लोकजनूलोकतपोलोकसत्यलोकारुण्यसप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैलमहावलयनागमध्यवर्तिनो महाकालमहाफणिराजशेषस्य सहस्रकणामणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दिते अमरावत्यशोकवतीभोगवतीसिद्धवतीगान्धर्ववतीकाञ्च्यवन्त्यलकावतीयशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेशुसुरासर्पिर्दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जंबूप्लक्षकुशक्रौञ्चशाकशालमलिपुष्करारुण्यसप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्यताम्रगभस्तिनागसौम्यगन्धर्वचारुणभारतेतिनवखण्डमण्डिते सुवर्णागिरिकार्णिकोपेतमहासरोरुहाकारपञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमंडलेअयोध्यामथुरामायाकाशीकाञ्च्यवंतिकाद्वारावतीतिसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरुनिपधत्रिकूटरजतकूटाभ्रकूटचित्रकूटहिमवाद्दिग्ध्याचलानां हरिवर्षार्किंपुरुषभारतवर्षयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे मलयाचलसह्याचलविंध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थचण्डप्रस्थचार्द्रसूक्तावन्तकरमणकमहारमणकपांचजन्यसिंहलंकेतिनवखण्डमण्डिते गङ्गाभागीरथीगोदावरीक्षिप्रायमुनासरस्वतीनर्मदातापीचंद्रभागानावेरीपयोष्णीकृष्णावेण्याभीमरथीतुंगभद्रा-

ताम्रपर्णीविशालाक्षीचर्मण्वतीवेत्रवतीकौशिकीगंडकीविश्वामित्रीसरयूक-
रतोयाब्रह्मानंदामहीत्यनेकपुण्यनदीविराजिते भरतखंडे भारतवर्षे जंबू-
द्वीपे रामक्षेत्रे कूर्मभूमौ साम्यवति कुरुक्षेत्रादिसमभूमौ मध्यरेखायाः
पूर्वदिग्भागे श्रीशैलात्पश्चिमदिग्भागे श्रीकृष्णावेण्याकावेरीमध्यदेशे तुङ्ग-
भद्राया उत्तरे तीरे श्रीगोदावर्या दक्षिणे तीरे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्त-
कदेशे हेमकूटमातङ्गमाल्यवत्किष्किंधासाहितपंचक्रोशमध्ये चंपकारण्य-
नैमिषारण्यवदरिकारण्यकामिकारण्यदंडकारण्यार्बुदारण्यधर्मारण्यपद्मा-
रण्यजंबुकारण्यसमस्तपुण्यारण्यानां मध्यदेशे भास्करक्षेत्रे सकलजगत्स-
प्तुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे
प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अहो द्वितीये चामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंश-
त्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादिमन्वंतराणां मध्ये सप्तमे
वैवस्वतमन्वंतरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने
अष्टात्रिंशत्तितमे कलियुगे प्रथमचरणे भारतवर्षे भारतखण्डे जंबूद्वीपे राम-
क्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे श्रीमल्ल-
वणाद्ये रुत्तरे तीरे श्रीशालिवाहनशाके बौद्धावतारे प्रभवादिपट्टिसंवत्स-
राणां मध्येऽस्मिन्वर्तमाने अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकर्ता
अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशि-
स्थिते चंद्रे अमुकराशिस्थिते श्रीमूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु
ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषेण त्रिंशत्प्रायां
शुभपुण्यतिथौ मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्ययौवनवार्द्धवयाव-
स्थासु जाग्रत्स्वप्नसुपुण्यवस्थासु च वाक्पाणिपादपायूपस्थघ्राणरसनाच-
क्षुःस्पर्शनश्रोत्रमनोभिश्चरितानां ज्ञाताज्ञातकामाकाममहापातकोपपातका-
दिसंचितानां पापानां ब्रह्मह्ननसुरापानस्वर्णस्तेयगुरुदारगमनतत्सं-

गैरूपमहापातकानां तद्व्यतिरिक्तानां बुद्धिपूर्वकाणामबुद्धिपूर्वकार्णां च
 मनोवाक्यकृतानामुपपातकानां स्पृष्टास्पृष्टसङ्करीकरणमलिनीकरणापा-
 त्रीकरणजातिभ्रंशकरणविहिताकरणकर्मलोपजनितानां रसविक्रयकन्या-
 विक्रयहयविक्रयगोविक्रयसुतविक्रयधान्यविक्रयखरोष्ट्रविक्रयदासीविक्र-
 यपशुविक्रयपण्यविक्रयजलचरादिजंतुविक्रयस्थलचरादिविक्रयखेचरा-
 दिविक्रयसंभूतानां ब्राह्मणपितृमातृगुरुभ्रात्रादितर्जनताडनादिदोष-
 कथनदेवद्विजगोसंबन्धिभूम्यपहारान्यायार्जितद्विजवित्तापहारगुरुवधा-
 क्षेपसुहृद्भस्त्रीवधतडागाद्यारामच्छेदनदहनकर्मविषप्रयोगाभिचारसह-
 संग्राभोन्मादनासच्छास्त्राध्ययनचिकित्साप्रायश्चित्तशकृन्ननीतिज्योतिः-
 शास्त्रप्रयोगउन्दोनिन्दाकरणरूपानपाकरणकटपत्वकरणन्यायाकरण-
 धरणीवित्तहरणादिधर्मकार्यविघ्नाचरणात्मोत्कर्षपरनिन्दानृतभाषणपं-
 क्तिभेदवृथापाकपरिश्रुतानां ब्रह्महत्यासमानानां पुष्पिणीमुखास्वा-
 दनक्षालनोदकपाननखमुख स्वादनमुखनिःसृतनीरपानापियपानकपि-
 लापयःपानपञ्चयज्ञोपासनपरित्यागातिनिषिद्धभक्षणकूटसाक्ष्यादीनां
 सुरापानसमानानां दंभास्त्रधारणाङ्गवैकृत्यशूद्रसेवानश्रिकत्वब्रह्मद्रोह-
 बलाशिष्टपुरोहितत्वदेवलकत्वाध्वसंरक्षणाश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूयेनुविशेष-
 हरणकृपिकर्महयादिशिक्षाभारवाहित्वशिल्पविद्याभ्यासादीनां स्वर्णस्ते-

- १ ब्रह्महत्यां सुरापानं स्तेयं पुर्वगनागमः । महानित पातकान्याहुः समर्थश्च पि तेः सह ॥
 २ गुह्यगन्धविशेषो वेदनिन्दा मुद्रबधः । ब्रह्महत्यासमं श्रेयम्भीतस्य विनाशनम् ॥ अनृतं
 च गमुर्द्वयं राजगामि च पैद्यनम् । पुरोध्यादीकनिर्वन्धं रामानि ब्रह्मद्रव्या ॥ ३ प्रश्नो-
 फला वेदनिन्दा कौटुम्भं छन्दस्य । गार्हिकप्र द्योर्जग्धिः सुरागन्धमानि षट् ॥ निषिद्धभक्षणं
 जेह्म्यमुक्त्यै च यवोऽनृतम् । रजस्वलामुन्धत्वादः सुरापानममानि षट् ॥

यसमानानां पितृष्वसृमातृष्वसृभ्रातृपत्नीमातुलानीभगिन्याचार्यतन-
 यामातृसपत्नीसखिभार्याप्रवृत्ताशरणागताधात्रीसाध्वीवर्णोत्तमात्यजा-
 द्यगम्यागमनानां गुरुदारगमनसमानानां गजाश्वोष्ट्रखरखड्गम-
 हिपशरभसारमेयशार्दूलसिंहभल्लुकसूकरवृकशुकहरिणवानरचतुष्टयजंबू-
 काविमेषमृगादिप्राणिवधानां संकरीकरणसमानानां मयूरचापभारद्वाज-
 शुक्रचक्रवाकमीनादिकौश्वकशशहंसगृहगोधिकावधानामथैर्यादिमलि-
 नीकरणानाम् ॥ निन्दितेभ्यो धनादानशूद्रसेवानृतभाषणादिजिह्वाभैथुना-
 दिकोपात्यंतविषयासक्तकृतघ्नतादीनामपात्रीकरणानाम् अयोनिपशु-
 योनिरेतोत्सर्जनयतिगोब्राह्मणवृत्तिच्छेदनपुंमैथुनशास्त्रनिंदागोसंचिततृ-
 णसंचयाग्निप्रदानानां जातिभ्रंशकरणानाम् मुखनासारंध्रकरणार्हा-
 सनप्रदानविनिमयवृद्धद्युपज्विनविषमवाकशादण्डपाशसंग्रहणक्रीडाना-
 द्यतत्कालदन्तधावनाभ्यंगमैथुनक्षौरनिस्वापादीनां वेश्यागमनशूद्री-
 दासीगमनविधवागमनकन्यागमनपितृव्यपत्नीगमनरजस्वलागमनस्व-
 गोत्रागमनतिर्यग्योनिगमनप्रतिलोमजागमनसाधारणस्त्रीगमनानृतुभा-
 र्याभिगमनसुतवधुगमनानाम् ॥ एकादश्यन्नशूद्रान्नगणिकान्नगणान्नभि-
 च्चक्रांस्यभोजनादितालवृक्षफलभक्षणपलाण्डुभक्षणताम्बूलादिचर्वणा-
 नाम् ॥ अहःखट्वारोहणचित्रवस्त्रालङ्कारस्वप्नेन्द्रियनिपातितानाम् ॥

१ निक्षेपस्यापहरणं नराश्वरजतस्य च । भूमिवज्रमणीनां च रुक्मस्तेयसमं स्पृष्टम् ॥
 अश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूषेनुहरणं तथा । निक्षेपस्य च सर्वं हि सुवर्णस्तेयसंमितम् ॥ २ याज्ञवल्क्यः-
 सखिभार्याकुमारीषु स्वयोनिध्वन्यजासु च । स्वगोत्रासु सुतप्रीषु गुह्यतल्पसमं स्पृष्टम् । पितुः
 स्वसारं मातृध मातुलानीं स्तुभामपि । मातुः सपत्नीं भगिनीमाचार्यतनया तथा । आचार्यपत्नीं
 स्वसृता गच्छंस्तु गुह्यतल्पगः ॥ ३ मनुः-एतश्चोष्ट्रमृगोभानामजाविक्रयस्तथा । संकरीकरणं
 हेयं मीनादिमहिषस्य च ॥ ४ कृमिकीटवयोद्वया मथानुगतभोजनम् । फलैध.कुसुमस्ते-
 यमथैर्यं च मलावहम् ॥ ५ मनुः-निन्दितेभ्यो धनादानं वाणिज्यं शूद्रमेव नम् । अपात्रीकरणं
 ज्ञेयमसत्यस्य च भाषणम् ॥ ६ ब्राह्मणस्य रुजः कृत्वा प्रातिरघ्रेयमययोः । जैह्व्यं च मैथुनं
 पुंसि जातिभ्रंशकरं स्पृष्टम् ॥

संधानादिनाष्टमीचतुर्दशीदिवाभोजनभानुवारे पर्वरात्रिभोजनादिगृहि-
 ष्यागर्भिण्यागमनमनोरथक्षारत्रात्यान्नपतितप्रेरितान्नतुरुष्कान्नोच्छिष्टान्न-
 काराष्टहनिवासभोजनतुरुष्कमध्येनिवासतुरुष्कस्पृष्टद्रव्योपभोगतुरुष्क-
 स्पर्शतुरुष्कदेशनिवासादीनाम् ॥ कुग्रामवासवाह्निपुरदुर्गदुर्भाण्डदु-
 र्भोजनापक्वपाकयत्नकटकान्नखनिकृतनदीलंघनसमुद्रस्नानब्राह्मण-
 वृत्तिच्छेदनाभक्ष्यभक्षणानिमित्तभार्याविसर्जनब्राह्मणद्वेषद्विजभेदमित्रभे-
 दस्त्रीपुरुषभेदस्थूलमूक्ष्मजीवहिंसनक्रूरकर्मानृतलुब्धरूपिशुनचौरपाखंड-
 नारीलंपटचांडालशवास्थिस्पर्शशृंगनभक्षणलशुनभक्षणममूरान्नभक्षण-
 मार्जारोच्छिष्टभोजनपतितपङ्क्तिभोजनपतितसंभाषणादीनाम् ॥ बालस्तेष-
 ऋणापाकरणानाहिताश्रितापक्रयपरिवेदभृतकाध्ययनादानभृत्याध्यापन-
 परदारपरवित्तवात्मल्यस्त्रीशूद्रक्षत्रविद्वृंघुनिदार्थोपजीवननास्तिक्यव्रत-
 लोपकृष्यपशुस्वाध्यायत्यागस्तेयायाज्ययाजनपितृमातृमुत्त्यागतदागा-
 रामविक्रयकन्यासंदूषणपरनिंदकयाजनतत्कन्याप्रदानकौटिल्यव्रतलोप-
 नस्वार्थक्रियारंभपरस्त्रीनिषेधणस्याध्यायाग्निसुत्त्यागर्वाधवत्यागेन्धना-
 र्थद्वेषच्छेदनस्त्रीहिंसोपविजीवनहिंस्रमंत्रविधानव्यसनात्मविक्रयशूद्रभे-
 ष्यहीनयोनिनिषेधणानाम् ॥ भ्रमयासपराक्षपुष्टत्वासच्छास्त्राधिगतप्राश-
 राधिकारित्वभार्याविक्रयाद्यपपातज्ञानाम् ॥ तथैकादशाहादिश्राद्धान्नभोज-
 नदहनदत्तशूद्रदत्तघृतादिभोजनापोशनरहितभोजनयज्ञोपवीतरहितान्नभो-
 जनपराश्रभोजनग्नोमृयादिभक्षणमृष्टोष्टभक्षणपशुदेवरहितादिदूषिता-
 न्नभोजनगृष्टादिम्लेच्छान्नभोजनपुंसवनसीमंनोश्रवणादिभोजनज्ञानक-
 र्मादिभोजननीलरगरिधानभोजनोच्छिष्टभोजनवृत्तिमनपंक्तिभोजन-
 चाण्डालरूपभादोदकपाननाटाभ्यस्पृष्टजलक्षीरादिपानद्विजद्रव्यापहण-
 थाडदिनेगमनद्विवाभैशृनोन्मादृषद्रध्यभक्षणमूर्योदयास्तशयनपतितादि-

दुष्टप्रतिग्रहप्रायश्चित्तद्रव्यप्रतिग्रहस्वनिपिद्धवृत्तिधनार्जनमिथ्याब्राह्मण-
 क्रोधोत्पादनबलात्कारितम्लेच्छादिसंसर्गम्लेच्छभाषणपरस्परानुरक्तद्वे-
 पोत्पादनेन्द्रधनुःप्रदर्शनश्राद्धनिमंत्रितब्राह्मणानाह्वानदेवागारकृतेष्टशि-
 लादिहरणव्रतभङ्गखरोष्ठादियानाशिवनिर्माल्यस्पर्शशिवद्रव्योपजीवन-
 विष्णुद्रव्योपजीवनोपाधिकत्रैवर्णिकदेवार्चनद्वेष्याभिचारणकूटमंत्रकूटहो-
 मकरणपूज्यापूजनापूज्यपूजनपरवृत्तिहरणशरणागतपरित्राणाकरणकू-
 तोपकारविस्मरणविविधकपटविशोपजीवनपरविवाहान्तरायकरणदेवार्पि-
 द्विजनिन्दाकरणपरमसन्मानदूरीकरणगुणयुक्तस्यापमानकरणाकाल-
 भोजनादेशभोजनसर्वकालिकपरद्वेष्याभिनिवेशपरमार्थाचिन्तनयजन-
 याजनहोमदानान्तरायकरणादिसर्वपापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं
 देवब्राह्मणसवितृसूर्यनारायणसन्निधौ अमुकतीर्थे स्नानमहं करिष्ये ॥

॥ इति हेमाद्रिप्रोक्तस्नानसङ्कल्पः ॥

॥ ६० ॥ अथ दशविधस्नानानि ॥

तीर्थस्नाने तथा प्रायश्चित्तादिषु केचन दशविधस्नानानि कुर्वन्ति
 यथा-१ भस्मस्नानम्-ॐ नमस्तेरुद्रमन्त्रयवऽउतोत्तऽइपवेनमः ॥ ब्राह्म-
 ष्यामुततेनमः ॥ १ ॥ यथाऽग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसञ्चयम् । तथां
 मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम् ॥ १ ॥-२ अथ मृत्तिकस्नानम्-
 ॐ इन्द्रं विष्णुं त्रिचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाँसुरेस्वाहा-
 ॥ १ ॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । शिरसा धारयि-
 प्यामि रक्षस्व मां पदे पदे ॥ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।
 मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि
 काश्यपेनाभिवन्दिता । मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्

॥ २ ॥ ३ अथ गोमयस्नानम्—ॐमानंस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानो-
 गोपुमानोऽअश्वेपुरीरिपटं ॥ मानोहीरान्ब्रह्मापिनोब्रथीर्हविष्मन्तऽस-
 दुमिच्चाहवामहे ॥ १६ ॥ गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला ।
 स्नानार्थं संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय ॥ अग्रमग्रं चरन्तीनामोप-
 धीनां वने वने । तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ॥ यन्मे
 रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय ॥३॥४ अथ पञ्चगव्यस्नानम्—ॐस-
 हस्रंशीर्षापुरुषऽसहस्राक्षऽसहस्रपात् ॥ सभूमिऽसर्वतस्पृच्चाच्यतिष्टुद-
 शाहुलम् ॥ १ ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिःसमन्वितम् । सर्वपा-
 पविशुद्धयर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम् ॥४॥५ अथ गोरजःस्नानम्—ॐआ-
 यङ्गीऽपृश्चिरक्रमीदसदृपातरंम्पुरऽ ॥ पितरंश्चप्रयन्स्वः ॥ ६ ॥
 गवां सुरेण निर्द्धूतं यद्रेणु गगने गतम् । शिरसा तेन संलेपे महापा-
 तकनाशनम् ॥ ५ ॥ ६ अथ धान्यस्नानम्—ॐधान्यमसिधनुर्हिदेवा-
 न्प्राणार्थस्वोदानार्थत्वाद्यानार्थत्वा ॥ दीर्घामनुष्पसितिमायुषेधान्देवोर्व-
 सविताहिरण्यपाणिऽप्रतिभृष्णात्वच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुपेत्वामहीना-
 म्पयोसि ॥ १ ॥ धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् ।
 तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु ॥६॥७ अथ फलस्नानम्—ॐया-
 फलिनीर्घ्वाऽअफलाऽअपुष्पायाश्चंपुष्पिणीऽ ॥ बृहस्पतिप्रमृता-
 स्तानोमुन्ववद्वंसऽ ॥ १ ॥ वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः
 सदा । तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनंतरुम् ॥७॥८ अथ सर्षप-
 धीस्नानम्—ॐओषधयऽसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा ॥ यस्मैकृणोतिऽत्रा-
 क्षणस्तऽराजद्वारयामसि ॥ १ ॥ औषधः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मल-
 तास्तु याः । दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्षपेभ्यः पुनन्तु माम् ॥८॥९ अथ
 कुशोदकस्नानम्—ॐदेवस्यैवासवितुऽप्सुवेदिवनोर्व्राहुभ्याम्पुष्णो-

हस्ताभ्याम् ॥ १० ॥ कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः
 कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन नश्यतु पातरुम् ॥९॥१० अथ हिरण्यस्नान-
 म्—ॐ आकृष्णेनुरजसावर्त्तमानोनिवेश्यन्नमृतम्पर्त्यश्च ॥ हिरुण्ययै-
 नसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ११ ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्य
 हेमवर्जं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
 ॥ इति दशविधस्तानानि ॥

॥ ६१ ॥ अथ श्रावणीप्रयोगः ॥

श्रावणस्य पूर्णिमादिकाले प्रातः स्नानसन्ध्यादि नित्यकर्म विधाय
 गुरुः शिष्यगणैः सह ग्रामाद्बहिः प्राच्यामुदीच्यां वा नद्यादि रम्यं

१ पास्करशस्त्रसूत्रे-पौषस्य रोहिण्यां मध्यमाया वाष्टकायामध्यायानुत्सृजेयुर्दन्तं
 गत्वाऽद्धिर्देवाऽच्छन्दाऽसि वेदानृसीन्सुराणाचार्यान् गन्धर्वानितराचार्यान् सवत्सरस्य सावयवं
 पितृनाचार्यान् स्वाथ तर्पथेषु सावित्रीं चतुरस्रुदय विस्ता स्म. इति प्रन्युः क्षणं प्रवचनं च
 पूर्ववत् । तत्रैव-अर्थपठान्मासान् गीत्योत्सृजेयुर्षसप्तमासावाऽथ मामृच जपत्युभाकर्वायुना यो नो
 धर्मं परापतत् । परिसृष्ट्यानि धर्मिणो विसृष्ट्यानि विस्तृजामह इति त्रिरात्रुसहोपधिप्रतिष्ठेत् ।
 'तथा च' अथातोऽध्यायोपाकर्मावधीना प्रादुर्भवे धवणन श्रावणा पौर्णिमात्यां धवणस्य
 पवम्बाऽहस्तेन वा ज्यभागाविप्राज्याहुतीर्जुहोति इति ॥ याज्ञवल्क्य-अर्धातवेदोपाकर्म धावण्या
 धवणने च । हस्तेनौपध्यभावे वा पञ्चम्या श्रावणस्य तु ॥ पौषमासस्य रोहिण्यामष्टकायामयापि
 वा । जलान्ते छन्दसा कुर्यात्सुवर्गविधिं बहि ॥ ज्यह प्रेतैश्चनध्याय शिष्यत्विग्गुह्यन्धुपु । उपा-
 कर्मणि चोत्सर्गे स्वशाखाध्रोत्रिये मृते ॥ रेणु कादीक्षित — पौषमासस्य रोहिण्या कृष्णाष्टम्याम-
 ध पि वा । उदकान्तं समासाद्य वेदस्योत्सर्जनं बहि ॥ मनु — पुष्ये तु छन्दसा कुर्याद्बहिरुत्सर्जनं
 द्वित्र । माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्ने प्रथमेऽहनि ॥ कात्यायन — उत्सर्गश्च तदा तिस्ये कुर्या-
 द्योष्टपदेऽथवा ॥ स्वादिरुहो — पुष्ये तूत्सर्जनं कुर्यादुपाकर्म दिनेऽथवा ॥ स्मृतिमहर्षिणे सहका-
 न्तिप्रदं वापि पौर्णिमास्यां यश भवेत् । उपाकृतिस्तु पञ्चम्यां कार्या वाजसनेयिभिः ॥ वाचस्पति-
 निरुधे वैमिसि हे ज प्ये होमे यज्ञक्रियामु च । उपाकर्मणि चोत्सर्गे प्रदोरो न विद्यते ॥ 'वर्ज्यं
 कालं' — रेणु कदीक्षितकारिकायाम् — सहजान्तो प्रहणे चैव सूनेक मृतकेऽपि वा । गणनानं
 न कुर्वीत नारदस्य वचो यथा । (गणनानसन्देनोत्सर्गस्य कर्म ।) २ गर्गः — उपाकर्मणि
 चोत्सर्गे प्रेतैश्चनध्याय शिष्यत्विग्गुह्यन्धुपु । जज्ञस्योत्सर्गे न विद्यते ॥

जलाशयं गत्वा तत्तीरे शुभ्रां यथादेशसम्भवां वा मृदमाद्रं गोमयं
 भस्म कुशान् तिलाक्षतान् सुरभीणि पुष्पाणि दूर्वाङ्कुरापामार्गयज्ञोपवी-
 तादिसर्वां श्रावणीसामग्रीं सम्पाद्य ऋषिस्थापनार्थं पीठं श्वेतवस्त्रादिकं च
 पूजनार्थं गन्धपुष्पादिपूजासम्भारं च सम्पाद्य मूलेपनपूर्वकं प्रक्षालित-
 हस्तपादः प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा सपवित्रकरे गुरुः कृतपच्छौचादि-
 युक्तैः शिष्यैः सहाचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य सर्वैः सह
 सङ्कल्पं कुर्यात् ॥ यथा—सङ्कल्पः—अधीतानामध्येष्यमाणानां चाध्याया-
 नां स्थापनविच्छेदक्रोशयोपणदन्तविवृतिदुर्वृत्तद्रुतोच्चारितवर्णानां पूर्वस-
 वर्णानां गलोपलम्बितविवृतोच्चारितवर्णानां पूर्वसवर्णानां श्लिष्टास्पष्टवर्ण-
 विघटनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वं तत्परिहारार्थम् अपृष्टिश-
 दनध्यायाध्ययने रथयासञ्चरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छान्त्यजा-
 देः शृण्वतोऽध्ययने अशुचिदेशेऽध्ययने आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने अक्षर-
 स्वरानुस्वारपठच्छेदकण्ठिकाव्यञ्जनह्रस्वदीर्घप्लुतकण्ठतालुमूर्द्धन्योष्ठ्यद-
 न्त्यनासिकानुनासिकरेफजिह्वामूलीयोपध्मानीयोदात्तानुदात्तस्वरिता-
 दीनां व्यत्ययेनोच्चारं माधुर्याक्षरव्यक्तिहीनत्वाद्यनेरुप्रत्यवायपरिहारपू-
 र्वकं सर्वस्य वेदस्य सर्वार्थित्यसम्पादनद्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमे-
 श्वरमीत्यर्थं सशिष्योऽहं गुरुयजुर्वेदोत्सर्गोपाकरणं करिष्ये (अत्रावसरे
 हेमाद्रिप्रोक्तस्नानसंकल्पः कर्तव्यश्चेत् (२५९) पत्रे द्रष्टव्यः) इति सङ्कल्प्य
 गुरुः शिष्यैः सह 'उभाकवी'त्युच्चैः पठेत् ॥ तथा—'ॐ उभा कवी युवा यो न
 धर्मः परापतन् । परिसखयानि धर्मिणो विसखयानि विसजामहे ॥ ॥' इति
 मन्त्रं पठित्वा यथाक्रमेण सर्वे गुरोरभिवादनं कुर्युः । (पुनश्च देशकालौ
 स्मृत्वा सङ्कल्पयेद्यथा) 'सङ्कल्पः'—अध्यायोत्सर्गकर्मनिमित्तं गण-
 स्नानमहं करिष्ये ॥ पुनश्च इषे वादिखं ब्रह्मान्तेषु याः क्रियास्तत्र

विवस्वान् ऋषिः सर्वाणि यजूंषि सर्वाणि छन्दांषि प्रजापति-
 लिङ्गेक्ता देवताः स्नानादिसर्वकर्मसु विनियोगः । इत्युक्त्वा 'स्नाना-
 नुज्ञा' प्रार्थयेत् । यथा—नमोऽस्तु देवदेवाय शितिकण्ठाय वेधसे ।
 रुद्राय चापहस्ताय दण्डिन चक्रिणे नमः ॥ सरस्वती च गायत्री
 वेदमाता गरीयसी । सन्निधात्री भव त्वं च सर्वपापप्रणाशिनी ॥ यद्वा
 सागरनिर्वोप दण्डहस्तासुरान्तक ॥ जगत्स्रष्टृर्जगन्मित्र नमामि त्वां सुरा-
 न्तक ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्य-
 मनुज्ञा दातुमर्हसि ॥ नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्य-
 रूपम् । भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नरा-
 णाम् ॥ उत्तिष्ठन्तु महाभूता ये भूता भूमिवासिनः ॥ भूतानामवरोधेन
 स्नानकर्म समारभे ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता तीर्थद्रूपकाः ॥ ये भूता विघ्न-
 कर्तारस्ते नश्यतु शिवाज्ञया ॥ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा ॥
 आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ त्वं राजा सर्वतीर्थानां

१ नद्यादौ नित्यस्नानम्—स्नानकर्ता घटिकाद्वयावशिष्टाया राज्या मृदम् आर्द्रं गोमयं कुशान्ति-
 लान्सुरभीणि पुष्पाणि भस्म चादाय नद्यादितीर्थेनटे गवा आनीतसम्भारान् पृथक्सस्थाप्य
 हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य कुशपवित्रं धारयेत् ॥ ॐ पवित्रेस्थो० अनेन मन्त्रेण कुशपवित्रं
 धृत्वा पश्चात् बद्धत्रिकच्छिखलं यज्ञोपवीती जानूर्ध्वजले तिष्ठन् अन्यथा तूपविश्याचमनं कुर्यात् ॥
 तत्प्रकारः—बाहू जान्वन्तरे कृत्वा मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठिकेन दक्षिणहस्तेन फेनधुद्बुदवर्जं स्वच्छ माप-
 मज्वनपरिमितं जलमादाप्याङ्गुष्ठमूलस्थमद्भेग तीर्थेन शब्दमकुर्वन् त्रिः पिबेत् ॥ पश्चात् प्रवाहाभि-
 मुखो वा सूर्याभिमुखः सङ्कल्पं कुर्यात्—अद्यपूर्वाच्चारित एवंगुणविशेषगविशिष्टायां ह्यभपुण्यतिथौ
 ममारमनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तये मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कायिकवाचिकमान-
 सि क्रमासिर्गङ्गाताज्ञातस्पर्शास्पर्शमुक्तामुक्तीतापीतादिसकलप्रातःकनिरासपूर्वक्रमासनभोजनशय-
 नगमनादिष्वनृतभाषणादिदोषनिरासद्वाराधीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकतीर्थे प्रातःस्नानमहं करिष्ये ॥
 इति सङ्कल्प्य उत्तरोक्तक्रमेण स्नानानुज्ञामारभ्य स्नानान्तर्गणपर्यन्तं नद्यादौ नित्यस्नानं कुर्यात् ॥
 २ (इमं मन्त्रं समुच्चार्य तीर्थस्नानं समाचरेत् । अन्यथा तत्फलस्यार्थं तीर्थेशो हरति ध्रुवम्)

त्वमेव जगतः पिता । याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥
 अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव । वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां
 प्रयच्छ मे ॥ अधिष्ठास्यश्च तीर्थानां तीर्थेषु विचरन्ति याः । देवतास्ताः
 प्रयच्छन्तु स्नानाज्ञां मम सर्वदा ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि
 सरस्वति । कावेरि नर्मदे सिन्धो जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ इति
 संप्रार्थ्य अधोलिखितमंत्रेण न्युञ्जाञ्जलिहस्तेन तीर्थाभिमंत्रणं कुर्यात् ।
 ॐ उरुहिराजावरुणं च कारुमूर्खीयपन्थामन्वेतवाऽउ ॥ अपदेपादा-
 प्रतिधातवेकरुतापवक्ताहृदयाविधिंश्चित् ॥ नमोवरुणायामिष्टितोवरुण
 स्युपाशं ॥ ३३ ॥ इत्यभिमन्त्र्य पश्चाज्जलावर्तनम्—अथेतेशतंवरुणये-
 सहस्रयज्ञियाःपाशाविततामहान्तः । तेभिर्त्रोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेभ्यश्च-
 न्तुमरुतःस्वर्काः । (पारस्करगृह्यसू०) ॥ इतिमन्त्रेण जलं दक्षिणहस्ता-
 ङ्गुलिभिर्दक्षिणावर्तं त्रिवारं भ्रामयेत् ॥ पूर्णाञ्जलिनाऽर्पां ग्रहणम् ॥ ॐ सु-
 मित्रियान्ऽआप्ऽओर्षधयऽसन्तु ॥ ३३ ॥ इतिमन्त्रेणजलाञ्जलिं गृहीत्वा
 ॐ दुर्मिष्ट्रियास्तस्मैसन्तुयोस्मान्द्वेष्टियश्चब्रुयन्दिप्सम् ॥ ३३ ॥ इति म-
 न्त्रेणाञ्जलिस्थमुदकं स्वशत्रून्मनसा विचिन्त्य तन्नाशार्थं स्ववामभागे
 तीर्थतटे क्षिपेत् ॥ द्वेष्टुरभावे कामादीन्स्मृत्वाऽञ्जलिं प्रक्षिपेत् ॥ मृत्तिका-
 पादाय तस्यास्त्रिभागान्कृत्वा मथमभागं वामहस्तेन गृहीत्वा तेन नाभेरधः
 कटिप्रदेशमनुलंपयेत् । हस्तं प्रक्षाल्य पुनस्तेनैवहस्तेन द्वितीयभागेन वस्तिम्
 ऊरु जङ्घे चरणौ करौ च प्रत्येकं तूर्णान् त्रिस्त्रिरनुलिप्य पुनर्हस्तं प्रक्षाल्या
 चम्य तीर्थोदकं नमस्कुर्यात् ॥ ततस्तृतीयभागमादाय-इदंविष्णुर्वि० ॥ ३३ ॥
 इतिमंत्रेण तृतीयभागेन दक्षिणहस्तेन ललाटादिनाभिपर्यन्तानिगात्राण्युप-
 लिप्य हस्तं प्रक्षाल्याचम्य तीर्थोदकं नमस्कुर्यात् ॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते
 विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके हर
 मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेनाभिवन्दिता ।

त्वया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् ॥ इति संप्राथम्यं नाभिमात्रं तीर्थ-
जलं प्रविश्य मूर्त्याभिमुखः स्थित्वा स्नायात्-ॐ आपोऽअस्मान्मातरं-
शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतं प्लव्+पुनन्तु ॥ द्वि० ॥ १ ॥ ॐ हिरिष्पम्प्रवृहन्ति देवी ? ॥ ३ ॥
इति मन्त्रेण निमज्ज्य पुनः-ॐ उदिदांभ्यं शुचिरापुतऽमि ॥ ३ ॥ इति-
मंत्रेण द्वितीयवारं निमज्ज्य पुनस्तूर्णीं निमज्ज्योन्मज्ज्याचामेत् ॥ ततो गोमय-
मादाय तस्य त्रिभागान्कृत्वा प्रथमभागं वामहस्तेन गृहीत्वा तेन नाभेरधः
कटिप्रदेशमनुलेपयेत् ॥ हस्तं प्रक्षाल्य पुनस्तेनैव हस्तेन द्वितीयभागेन वस्ति
उरु जङ्घे चरणां करौ च प्रत्येकं तूर्णीं त्रिस्त्रिरनुलिप्य पुनहस्तं प्रक्षा-
ल्याचम्य तीर्थोदकं नमस्कुर्यात् ॥ पुनस्तृतीयभागमादाय ॥ अग्रमग्रं
चरन्तीनामोपधीनां वनेवने । तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ॥
तन्मे रोगांश्च शोकांश्च पापं मे हर गोमय ॥ इति मंत्रेण गोमयमभिर्मंज्य ॥
ॐ मानंस्तोकेतनं ये ० ॥ इति मंत्रेण तृतीयभागेन दक्षिणहस्तेन ललाटा-
दिनाभिपर्यन्तानि मात्राण्युपलिप्य क्षालयेत् ॥ ततो हस्ते भस्मादाय ॥
ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थल-
मिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षुःशपि
भस्मानि ॥ इति मंत्रेण भस्माभिर्मंज्य ॥ ॐ प्रसह्यं भस्मर्माद्योनिर्मप-
श्च पृथिवीर्मग्ने ॥ सुऽसृज्ज्यमातृभिश्च ज्योतिष्मान् पुनरासदं ॥ ३ ॥
इति मंत्रेण ललाटाद्यङ्गेषु भस्मलेपनं कुर्यात् ॥ ततो वक्ष्यमाणैरष्टभि-
र्मंत्रैः प्रतिमंत्रं कुम्भमुद्रया दक्षिणचुलुकेन वा शिरोऽभिपिञ्चेत् ॥
ॐ हुमम्मेव हृणश्शुधीहवंमह्याचंमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ १ ॥ तर्वा-
यामि ० ॥ १ ॥ त्वन्नोऽअग्नेव हृणस्य विवृहान् देवस्य हेडोऽअर्वयासिसी-

१ इदं भस्मानुलेपनं क्षेत्रकं कात्यायनपरिशिष्टसूत्रे नोक्तम् ॥ २ दक्षाङ्गुष्ठं पराङ्गुष्ठे क्षित्वा
हस्तद्वयेन तु । सावकाशमेकमुष्टिं कुर्यात्सा कुम्भमुद्रिका ॥

श्वाह ॥ यजिष्ठो विहितमहंशो शुचानो विश्वाद्देवाः ॐ सिधुर्मुमुक्षुस्म-
 त् ॥ ३ ॥ सत्त्वत्रोऽग्रमेव मोर्भवतीनेदिष्टोऽस्याऽऽपसोऽव्यष्टौ ॥
 अवयवश्च नो ववरुणं परराणो वीदिष्टोऽसुहवो नऽपि ॥ ३ ॥ मापो मा-
 पधीः ॥ सीर्द्धाम्नां रोजस्ततो ववरुणो मुञ्च ॥ यदा हुरुग्ध्याऽऽ-
 तिवरुणेति शपामहे ततो ववरुणो मुञ्च ॥ ३ ॥ उदुत्तमं ववरुणपाशं स्म-
 दवाधमं विमद्व्यमं ॐ श्रथाय ॥ अथा वृथमादिच्यते तवानां गसोऽ-
 दितये स्याम ॥ ३ ॥ मुञ्चन्तु माशपुथ्यादथो ववरुणया द्रुत ॥ अथो यमस्य-
 पहींशा रसवर्षस्माद्देवकिल्विपात् ॥ ३ ॥ अथ भूय निचुम्पुण निचुरसि-
 निचुम्पुण ॥ अथ देवैर्देवकृतमेनोयासिपमवमर्येर्मर्ये कृतम्पुणराणो-
 देवारिपस्पाहि ॥ ३ ॥ एतैर्मत्रैरभिपेचनं कृत्वा पश्चान्निमज्ज्योन्मज्ज्याऽऽ-
 चामेत् ॥ ततो वक्ष्यमाणमंत्रैः प्रतिमंत्रं कुशत्रयेण सजलेन नाभिदक्षि-
 णपार्श्वमारभ्य पाणिं शिर उपरि नीत्वा नाभिवामपार्श्वपर्यन्तं प्रदाक्षि-
 णमात्मानं पावयेत् ॥ आपो हिष्टा ॥ ३ ॥ शोर्वः शिवतमो ॥ ३ ॥
 तस्माऽअरङ्ग ॥ ३ ॥ उदमापुष्टपर्वहतावृद्धयश्चमलश्चमत् ॥ यथा-
 भिदुद्गोहानंतं च शोपेऽअभीरुणम् ॥ आपो मातस्मादेनं सत् पर्वमानश्च-
 मुञ्चतु ॥ ३ ॥ हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्मो रऽआविवासति ॥
 हविष्मान्देवाऽअद्व्यरो हविष्मो रऽअस्तु मुञ्च ॥ ३ ॥ देवीरापोऽअ-
 पानपादचोर्वऽऊर्मिर्हविभ्यऽइन्द्रियावाङ्मदिन्तमहं । तन्देवेभ्यो देव-
 आदत्तशुक्लपेभ्यो वेपाम्भागस्त्यस्वाहा ॥ ३ ॥ कार्पिरसिसमुद्भस्य-
 स्वाक्षिर्याऽउन्नयापि ॥ समापोऽअदिर्जरममतसमोपधीभिरोपधी ॥
 ॥ ३ ॥ अपो देवामधुं पतीरगृभ्णन्नुज्जस्वती राजस्युश्चिचतानाह । यार्भि-
 म्मिन्ना ववरुणा ववरुणपि च्चर्याभिरिन्द्रमनयन्नत्परातीह ॥ ३ ॥ द्रुपदा-
 दिवमुच्चानेस्विन्नस्नातोमलादिव ॥ पुतम्पविभ्रणे वाऽज्यमापः शु-

न्यन्तुयैनसहं ॥ ३० ॥ शन्नैदेवी० ॥ ३१ ॥ अपा० रसमुद्वयसुष्टुष्व्ये-
 सन्तं स्रमाहितम् ॥ अपा० रसस्युधोरसस्तं वोगृह्णाम्भ्युत्तममुपयामगृही-
 तोसीन्द्रायत्वा जुष्टं ब्रह्मणाम्भ्येपतेषो निरिन्द्रायत्वा जुष्टं तमम् ॥ ३२ ॥ अ-
 पोदेवीरुपसृजमधुमतीर्यक्ष्मायप्रजाभ्यः ॥ तार्सामास्थानादुर्जि-
 हतामोषं धयहं सुपिप्पला? ॥ ३३ ॥ पुनन्तुमापितरं सोम्यासं पुनन्तु-
 मापितामहा? पुनन्तुप्रपितामहाहं ॥ पवित्रेणशतायुषा ॥ पुनन्तुमापिता-
 म्हा? पुनन्तुप्रपितामहाहं ॥ पवित्रेणशतायुषा विश्वमायुह्यंश्नवै ॥ ३४ ॥
 अग्नेऽआयूषिपवसुऽआसुवोज्जमिपञ्चनहं ॥ आरेवाधस्वदुच्छुनाम्
 ॥ ३५ ॥ पुनन्तुमादेवजना? पुनन्तुमनसाधियं ॥ पुनन्तुविविश्वाभूता-
 निजातवेदहं पुनीहिमा ॥ ३६ ॥ पवित्रेणपुनीहिमाशुक्लेणदेवदीदयत् ॥
 अग्नेवक्रत्वावक्रतूँ १ ऽरन्तु ॥ ३७ ॥ यत्तेपवित्त्रंमार्चिष्यग्नेविततमन्तरा ॥
 ब्रह्मतेनपुनातुमा ॥ ३८ ॥ पर्वमानहंसोऽअदचनं पवित्रेणविवर्षणिहं ॥
 यपोतासपुनातुमा ॥ ३९ ॥ उभाभ्यान्देवसवितहंपवित्रेणसवेनच ॥
 माम्पुनीहिदिविश्वतः ॥ ४० ॥ वैश्वदेवीपुनतीदेव्याग्नादयस्यामिमाव-
 ह्यस्तुवृषोव्वीतपृष्ट्वाहं ॥ तयामदन्तहंसधुमादेपुष्टयं रसामपतयोरयी-
 णाम् ॥ ४१ ॥ एभिर्मंत्रैः सजलेन कुशत्रयेण नाभिदक्षिणपार्श्वमारभ्य
 शिरोवधि नीत्वा नाभिवामपार्श्वपर्यन्तं प्रदक्षिणमात्मानं पावयेत् ॥ पश्चा-
 दुदकं स्पृशेत् ॥ ततो मार्जनं तस्य मंत्राः—ॐ चित्पतिर्मा पुनात्वच्छिद्रेण-
 पवित्रेणसूर्वस्यराश्मिभिः ॥ तस्यतेपवित्त्रपतेपवित्त्रं पूतस्यसत्कामहंपु-
 नेतच्छक्रेयम् ॥ ४२ ॥ इतिमंत्रेण नाभेरुध्वं मार्जयित्वा ॥ ततो नाभे-
 र्मध्ये मार्जनम् व्यावपतिर्मापुनात्वच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्वस्यराश्मिभिः ॥
 तस्यतेपवित्त्रपतेपवित्त्रं पूतस्यसत्कामहंपुनेतच्छक्रेयम् ॥ ४३ ॥ इति मंत्रेण
 नाभेर्मध्ये मार्जयित्वा ततो नाभेरधः मार्जनम्—देवोमासवितापुनात्व-

चिच्छ्रेणपवित्त्रेणमूर्ध्वैस्परदिग्भिः+ ॥ तस्यैतेपवित्त्रपतेपवित्त्रपूतस्यय-
 स्कांमदपुनेतच्छक्रेयम् ॥ ११ ॥ इतिमंत्रेण नाभेरधो मार्जयित्वा ततः
 सर्वाङ्गे मार्जनम्-ॐ चिरपतिर्म्मापुनातुव्वास्वपतिर्म्मापुनातुदेवोमासवि-
 तापुनात्वच्छिद्रेणपवित्त्रेणमूर्ध्वैस्परदिग्भिः- ॥ तस्यैतेपवित्त्रपतेपवित्त्र-
 पूतस्ययस्कांमदपुनेतच्छक्रेयम् ॥ ११ ॥ इतिसंपूर्णमन्त्रेण सर्वाङ्गे मार्ज-
 यित्वा ततोऽधोलिखितमंत्रैः कुशैः पुनर्मार्जयेत् ॥ यथा-ॐ इममेध्वं
 ॐ पुनातु ॥ ॐ तस्वायां ॐ भूः पुनातु ॥ ॐ स्वन्नोऽभं ॐ भुवः पुनातु ॥
 ॐ सस्वन्नोऽभं ॐ स्वः पुनातु ॥ ॐ मापोमांषं ॐ महः पुनातु ॥ ॐ उरु-
 क्षमं ॐ जनः पुनातु ॥ मुञ्चन्तुमां ॐ तपः पुनातु ॥ ॐ अवेभृथनिं
 ॐ सत्यं पुनातु ॥ ॐ तत्संयितुर्ध्वं ॐ सर्वं पुनातु ॥ इति कुशैर्मार्जयित्वा ॥
 अपामार्गेण मार्जनम् ॥ ॐ अघामपिकिलिं चपमपंकुर्यामपोरपं+ ॥
 अपामार्गत्वमस्मदपं दुष्टेष्वप्यं दुःख ॥ १२ ॥ इति मंत्रेणापामार्गपत्रंभि-
 भिमार्जयेत् ॥ ततो दूर्वाङ्कुरेण मार्जनम्-ॐ काण्डांत्काण्डात्सुरोऽन्तीपरुपं
 परुपस्परि ॥ एतानोदूर्ध्वैर्वतनुसहस्रेणशनेनच ॥ १३ ॥ इति मन्त्रेण
 दूर्वाभिग्निभिमार्जयेत् ॥ नतः अन्तर्गच्छे ममोऽनुच्छस्येधमर्पणं कुर्यात् ॥

ॐ द्रुपदादिवमुच्चान्?स्त्रिभू?स्नातोमलादिव ॥ पूतम्पवित्त्रेणैवाञ्ज्य-
 मार्षश्शुन्धतुमैर्नसह ॥ ३० ॥ इति मन्त्रं त्रिः पठेत् ॥ पश्चात्स्नानाङ्ग-
 र्पणम् ॥ प्रथमं देवतर्पणम्—पूर्वाभिमुखः सन् कुशत्रयं गृहीत्वा तदग्रैः
 सव्येन देवतीर्थेन ॐकारपूर्वकं देवेभ्य एकैकमञ्जलिं दद्यात् । ॐ ब्रह्मा-
 दयो देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूदेवास्तृप्यन्ताम् ॥ ॐ भुवदेवास्तृप्यन्ताम् ।
 ॐ स्वदेवास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्भुवःस्वदेवास्तृप्यन्ताम् ॥ द्वितीयम् ऋषितर्प-
 णम्—उदगग्रान् दर्भान् धृत्वा तदग्रैर्निवीती भजापतितीर्थेन ॐकार-
 पूर्वकम् ऋषिभ्यो द्वौद्वावञ्जली दद्यात् । ॐ सनकादिद्वैपायनादयः ऋष-
 यस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् ।
 ॐ स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ तृतीयं पितृत-
 र्पणम्—भुग्रान् दक्षिणाग्रमूलान् दर्भान् धृत्वा अपसव्येन पितृतीर्थेन
 ॐकारपूर्वकं पितृभ्यस्त्रीस्त्रीन् तिलमिश्राञ्जलीन् दद्यात् । ॐ कव्यवाह-
 नलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूःपितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ भुवःपितर-
 स्तृप्यन्ताम् । ॐ स्वःपितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्भुवःस्वःपितरस्तृप्यन्ताम् ।
 तत आचम्य सव्येन तिलमिश्राञ्जलिं गृहीत्वा यक्ष्मतर्पणं कुर्यात् ॥
 तद्यथा—यन्मया द्रुपितं तोयं शारीरमलसंभवात् । तस्य पापस्य
 शुद्धयर्थं यक्ष्मतत्ते तिलोदकम् ॥ इति मन्त्रेण तीर्थतटे तिलमिश्रजला-
 ञ्जलिं निःक्षिपेत् ॥ पश्चात् शिखोदकत्यागः—लतागुल्मेपु वृक्षेषु पितरो
 ये व्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः ॥ इति
 मन्त्रेण स्वदक्षिणभागे शिखाग्रं निष्पीडयेत् ॥ ततो जलाद्बहिर्निष्क्रम्य अहते
 श्वेतधौतवाससी परिधाय भस्मादि धारयेत् ॥ ततो दर्भासनादौ प्राङ्मुख
 उदङ्मुखो वा उपविश्य भस्मगोपीचन्दनादि धृत्वा पवित्रपाणिराचम्य
 मध्याह्नसन्ध्यं कुर्यात् ॥ ततः सूर्योपस्थानं मण्डलघ्राहणं च सम्प्राह्य

(तच्च ९४-९५ पृष्ठे द्रष्टव्यम्) ॥ ततो ब्रह्मयज्ञं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं च कुर्यात् ॥ (तच्च ९८-१०२) पृष्ठे द्रष्टव्यम् ॥ ततः सप्तर्षिपूजनं कुर्यात् ॥

॥ ६२ ॥ अरुन्धतीयाज्ञवल्क्यसहितसप्तर्षिपूजनप्रयोगः ॥

तत्रादौ अरुन्धतीयाज्ञवल्क्यसहिता गौतमभरद्वाजविश्वामित्रजमदग्नि-
वसिष्ठकश्यपात्रयः एते सप्तर्षयः अपामार्गमिश्रितैस्त्रिभिस्त्रिभिः कुशैः
पृथक् पृथक् गायत्रीं पठित्वा ब्रह्मग्रन्थिपुताः कार्याः ॥ ते च पीठे
नवं सदशं धौतं वस्त्रं प्रसार्य तस्मिन्प्रागग्रा उदगग्रा वा स्थापनीयाः ।
तत्रादौ ऋचं वाचमिति शान्त्यध्यायं (८८ पृष्ठे द्रष्टव्यः) पठित्वा ॥
आचम्य प्राणानायम्य ॥ हस्ते जलमादाय- अद्यपूर्वो० त्रिथौ श्रीपर-
मेश्वरप्रीत्यर्थम् अध्यायोत्सर्गोपाकर्मायं विष्णुपूजनपूर्वकम् अरुन्धती-
याज्ञवल्क्यसहितानां सप्तर्षिणामात्राहनमतिष्ठापूजनमहं करिष्ये ।
तद्ब्रह्मत्वेन दिग्रक्षणकलशार्चनं शङ्खघण्टादीपपूजनं गणपतिपूजनं च
करिष्ये । इति संकल्प्य दिग्रक्षणादि गणपतिपूजनान्तं कर्म कृत्वा विष्णुं
च षोडशोपचारैः संपूज्य ततः सप्तर्षीनाञ्चाज्ञ षोडशोपचारैः सम्पूजयेत् ।
यथा-ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम संमुखः सुप्रसन्नो
वरदो भव ॥ १ ॥ ॐ भू० भरद्वाजाय नमः भरद्वाजम् आ०
स्या० । भो भ० इ० इ० पू० मम सं० सु० व० ॥ २ ॥ ॐ भू०
विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रम् आ० स्या० । भो वि० इ० इ० पू०
मम सं० सु० व० ॥ ३ ॥ ॐ भू० जमदग्नेये नमः जमदग्निम् आ०
स्या० । भो ज० इ० इ० पू० मम सं० सु० व० ॥ ४ ॥ ॐ भू०
वसिष्ठाय नमः वसिष्ठम् आ० स्या० । भो व० इ० इ० पू०
मम सं० सु० व० ॥ ५ ॥ ॐ भू० कश्यपाय नमः कश्यपम् आ० स्या० ।

भो क० इ० इ० पू० मम सं० सु० व० ॥ ६ ॥ ॐ भू० अत्रये
नमः अत्रिम् आ० स्था० ॥ भो अ० इ० इ० पू० मम सं० सु० व०
॥ ७ ॥ ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीम् आ० स्था० । भो
अ० इ० इ० पू० मम संमुखी सुप्रसन्ना वरदा भव ॥ ८ ॥ ॐ भू०
याज्ञवल्क्याय नमः याज्ञवल्क्यम् आ० स्था० ॥ भो याज्ञ० इ० इ०
पू० मम सं० सु० व० ॥ प्रतिष्ठामन्त्रः—ॐ मनोजुति० ॐ एष्वैप्रतिष्ठाना-
मयज्ञोयत्रैतेनयज्ञेनयजन्तेसर्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति ॥ ॐ इमामेवगौतमभरद्वा-
जावयमेवगौतमोऽयंभरद्वाजुऽइमामेवविश्वामित्रजमदग्नीऽअयमेवविश्वा-
मित्रोऽयंजमदग्निरिमावेवद्वसिष्ठकश्यपावयमेवव्वसिष्ठोऽयंकश्यपोद्वागे-
वात्रिर्वाचाह्यन्नमद्यतेतिर्हवैनामैतद्यदुत्रिरितिसर्वस्यात्ताभवतिसर्वस्या-
न्नंभवतियऽएवंवेद ॥ अरुन्धतीयाज्ञवल्क्यसहिताः सप्त ऋषयः सुप्रतिष्ठिता
वरदा भवन्तु ॥ हस्ते जलमादाय—सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य
नारायणः पुरुष ऋषिः जगद्धीजपुरुषो देवता आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टु-
प् अन्त्यायास्त्रिष्टुप् न्यासपूजनाभिपेक्षेण विनियोगः ॥ देहन्यासाः—
ॐसहस्रशीर्षा० वामकरे ॥ १ ॥ पुरुषऽए० दक्षिणकरे ॥ २ ॥ एता-
वानस्य० वामपादे ॥ ३ ॥ ॐत्रिपादूर्ध्व० दक्षिणपादे ॥ ४ ॥ ततो-
द्विराद० वामजानौ ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतसंस्मृतं० दक्षिणजानौ
॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः० वामकथ्याम् ॥ ७ ॥ तस्मादश्वा०
दक्षिणकथ्याम् ॥ ८ ॥ तंयज्ञं० नामौ ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं० हृदये ॥ १० ॥
ब्राह्मणोस्य० वामकुक्षौ ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसो० दक्षिणकुक्षौ ॥ १२ ॥
नाभ्याऽआसी० कण्ठे ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण० मुखे ॥ १४ ॥ सप्ता-
स्यासन्० नेत्रयोः ॥ १५ ॥ यज्ञेनयज्ञम० मूर्ध्नि ॥ १६ ॥ इति देहन्यासाः ॥
पश्चात् देवन्यासांश्च कृत्वा विष्णोः षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात् ॥

ततः सप्तर्षिपूजनमारभेत ॥ सप्तर्षिः ध्यानम्—ॐ सप्तः सप्तर्षयः सप्तर्षि-
 हिताः शरीरे सप्तर्षिः क्षन्ति सदुमर्षमादम् ॥ सप्तः सप्तः स्वर्पतो लोकाभिः युस्तत्र-
 जायतेऽअस्वप्नोऽसत्रसदोचदेवौ ॥ ५५ ॥ ॐ सहस्रशीर्षा ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः अरुंधतीयाज्ञवल्क्यसहितसप्तर्षिभ्यो नमः ध्यान-
 पूर्वकमावाहनं समर्पयामि ॥ आसनम्—ॐ पुरुषऽएवे ॥ ॐ भू-
 अरुंधतीयाज्ञ ० स ० सप्त ० नमः आसनम् समर्पयामि ॥ पाद्यम्—
 ॐ एतावानस्य ॥ ॐ भू ० अरुंधतीयाज्ञ ० सहितसप्त ० नमः पाद्यं समर्पया-
 मि ॥ अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादुर्ध्व ॥ ॐ भू ० अरुंधतीयाज्ञ ० स ० सप्त ० नमः
 अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आचमनम्—ॐ ततोऽविराड ॥ ॐ भू ० अरुंधतीयाज्ञ ०
 स ० सप्त ० नमः आचमनियं समर्पयामि ॥ स्नानम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व ॥
 ॐ भू ० अरुंधतीयाज्ञ ० स ० सप्त ० नमः स्नानं समर्पयामि ॥ पञ्चामृतस्ना-
 नम्—ॐ पञ्चानद्युहं सर ॥ ॐ भू ० अरुंधतीयाज्ञ ० स ० सप्त ० नमः पञ्चा-
 मृतस्नानं स ॥ गन्धोदकस्नानम्—ॐ त्वाङ्गन्धर्वा ॥ ॐ भू ० अरु-
 ण्धतीयाज्ञ ० स ० सप्त ० नमः गन्धोदकस्नानं स ॥ उद्दत्तनस्नानम्—ॐ
 अटिशुनाते ॥ ॐ भू ० अरुंधतीयाज्ञ ० स ० सप्त ० नमः उद्दत्तनस्नानं
 सम ॥ ततो गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ उत्तरे निर्मालयं विसृज्य ॥
 पुनः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य पुरुषसूक्तेनाभिषेकं कुर्यात् ॥ ॐ भू-
 अरुं ० याज्ञ ० स ० सप्त ० नमः महाभिषेकस्नानं समर्पयामि ॥ बस्त्रम्—
 ॐ तस्माद्यज्ञा ॥ ॐ भू अरुं ० याज्ञ ० स ० सप्त ० नमः वस्त्रं
 स ॥ यज्ञोपवीतम्—ॐ तस्माद्ब्रह्मा ॥ ॐ भू ० अरुं ० याज्ञ ० स ०
 सप्त ० नमः यज्ञोपवीतं स ॥ गन्धः—ॐ तैष्यज्ञं ॥ ॐ भू ० अरुं
 याज्ञ ० स ० सप्त ० नमः गन्धं स ॥ अक्षताः—ॐ अक्षतमी ॥ ॐ
 भू ० अरुं ० याज्ञ ० स ० सप्त ० नमः अक्षतान् स ॥ पुष्पाणि—ॐ

वत्पुरुषं० ॥ ॐ भू० अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः ऋतुकालोद्भव-
 पुष्पाणि स० ॥ तुलसीदलम्—ॐ विष्णोर्दकर्मणि० ॥ ॐ भू० अहं०
 याज्ञ० स० सप्त० नमः तुलसीदलं स० ॥ सौभाग्यद्रव्यम्—ॐ
 अहिरिवभोगै० ॥ ॐ भू० अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः सौभाग्यद्रव्याणि
 स० ॥ धूपः—ॐ ब्राह्मणो० ॥ ॐ भू० अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः धूपमा-
 द्रापयामि ॥ दीपः—ॐ चन्द्रमा० ॥ ॐ भू० अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः दीपं
 दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—ॐ नाभ्यांऽआ० ॥ अहंघतीयाज्ञ० स० सप्त०
 नमः नैवेद्यं स० ॥ नैवेद्ये तुलसीदलं निधाय गायत्रीमन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ।
 धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय० । ॐ व्यानाय० ।
 ॐ समानाय० । ॐ उदानाय० ॥ ५ ॥ नैवेद्यमध्ये पानीयं स० ।
 उत्तरापोशानं हस्तमक्षालनं मुखमक्षालनं करोद्वर्तनार्थं गन्धं च स० ॥
 फलानि—ॐ या० फुलि० ॥ ॐ भू० अहंघतीयाज्ञवल्क्यसहितसप्त-
 र्षिभ्यो नमः फलानि स० ॥ ताम्बूलम्—ॐ वत्पुरुषे० ॥ ॐ भू०
 अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः मुखवासार्थं पूगीफलताम्बूलं स० ॥
 दक्षिणा—हिरण्यगुर्भदं० ॥ ॐ अहं० याज्ञ० सहि० सप्त० नमः हिरण्य-
 दक्षिणां सम० ॥ कर्पूरारार्तिक्यम्—ॐ इदं हुं ॥ ॐ भू० अहं०
 याज्ञ० स० सप्त० नमः कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि ॥ प्रदक्षिणा—ॐ
 सप्तार्या० ॥ ॐ भू० अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः प्रदक्षिणां स० ॥
 मन्त्रपुष्पयुक्तनमस्कारः—ॐ युजेनंयज्ञ० ॥ ॐ भू० अहं० याज्ञ० स० सप्त०
 नमः मन्त्रपुष्पयुक्तनमस्कारं स० ॥ प्रार्थना—मन्त्रहीनं क्रियाहीनं
 भक्तिहीनं मुनीश्वराः । यत्पूजितं मया सर्वं परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ॐ भू०
 अहं० याज्ञ० स० सप्त० नमः प्रार्थनापूर्वकनमस्कारान्स० ॥ अर्पणम्—
 अनेन मया वेदोत्सर्जनाङ्गत्वेन कृतेन ध्यानावाहनादिषोडशोपचारादि-
 पूजनेन अहंघतीयाज्ञवल्क्यसहितगौतमादिसप्तर्षयः प्रीयन्तां नमम ॥
 ॥ इति सप्तर्षिपूजनम् ॥

॥६३॥ स्वपितृभ्यो यज्ञोपवीतदानम् ॥ प्राचीनावीती (अप० कृत्वा)
दक्षिणाभिमुखः सर्वे कुशोदकं गृहीत्वा पुरतो यज्ञोपवीतानि निधाय
प्रथमम् अमुकगोत्रेभ्यः अस्मात्पितृपितामहप्रापितामहेभ्यः । द्वितीयम्
अमुकगोत्रेभ्यः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः । तृतीयं
कव्यवाहनलादिदिव्यपितृभ्यः इमानि यज्ञोपवीतानि स्वधा सम्पद्यन्ताम्
॥ इति ऋष्युपरि समर्पयेत् । (जीवत्पितृकैरपि सव्येन पितुः पित्रादिभ्यो
मातामहादिभ्यश्च यज्ञोपवीतानि देयानि) ततः सव्यं कृत्वा सर्वान्ब्राह्म-
णान् गन्धादिना सम्पूज्य तेभ्यो यज्ञोपवीतानि दत्त्वा पश्चात् सर्वैः
स्वयमपि धार्याणि ॥

॥६४॥ अथ यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥
हस्ते जलगादाय—अद्यपूर्वो० तियौ मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्धयर्थम्
अध्यायोत्सर्गकर्माङ्गत्वेन यज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये ॥ सूत्रत्रिगुणीक-
रणम्—इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः

१ अथ यज्ञोपवीतनिर्माणप्रकारः ॥ कार्पासयज्ञोपवीतम्—प्राक्षणेन प्राक्षणास्त्रीभिर्विधवादिभि
श्च निर्मितं सूत्रं प्राहम् । सहितचतुरङ्गलिधूलेषु पण्णक्त्या सूत्रमावेश्य तत्रिगुणीकृत्योर्ध्वं कृतं वलितं
कृत्वा पुनरधो कृतरीत्या त्रिगुणीकृतं त्रिसूत्रं नक्तन्तु सम्पद्यते तत्रिरावेश्य दृढप्रस्थि कुर्यात् ॥
अन्यत्र वामावर्तं त्रिशुणं कृत्वा प्रदक्षिणावर्तं नवगुणं विधाय तदेवं त्रिसरं कृत्वा प्रस्थिमेकं
विदध्यात् ॥ १ ॥ त्रिशुणं कृतं कार्यं तन्नुत्रयमधो कृतम् । त्रिकृतं चोपवीतं स्यात्तत्सर्वैको प्रस्थि-
रुच्यते ॥ स्तनादूर्ध्वमधोनाभेन धार्यं तत्कार्यं चन ॥ पृष्ठवंशे च नाभ्या च धृतं यद्विन्दते कटिम् ।
तद्वार्यमुपवीतं स्यात्प्रातिलम्बं न चोच्छ्रितम् ॥ वामस्कन्धे कृतं नाभिद्वयपृष्ठवंशयोर्धृतम् ॥ (कटि-
पर्यन्तमाप्नोति सावत्सरिमाणकं कर्तव्यमित्यर्थः) ॥ २ ॥ कृते पञ्चमयं सूत्रं त्रेताया वनवोद्धवम् ।
द्वापरे राजनं प्रोक्ष कलौ कार्पाससंभवम् ॥ ३ ॥ शुचौ देशे शुचिः सूत्रं संहतं गुलिमूलके ।
आवेश्य यथावया तत्रिगुणीकृत्य यनतः ॥ अश्लिङ्गकेशिभिः सग्यक् प्रक्षाल्योर्ध्वं कृतं च तत् ॥
अप्रदक्षिणमावृत्तं सावित्र्या त्रिगुणीकृतम् ॥ अधःप्रदक्षिणावृत्तं समं स्यात्तन्मूत्रकम् । त्रिसवेश्य
दृढं बद्धा हरिप्रद्वेधराप्रमन् ॥

सूत्रत्रिगुणीकरणे विनियोगः ॥ ॐ इदं विष्णु ० ॥ प्रक्षालनम्—आपो-
 हिष्टेति तिस्रणां सिन्धुद्वीपऋषिः आपो देवता गायत्रीछन्दः यज्ञोपवीतप्र-
 क्षालने विनियोगः । ॐ आपोहि ० ॥३॥ इति त्रिभिर्मन्त्रैर्यज्ञोपवीतानि
 प्रक्षाल्यानन्तरं दशगायत्रीमन्त्रैरभिमन्त्र्य तन्तुदेवता आवाहयेत्—यथा—
 प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः प्रथमतन्तौ ॐ
 कारावाहने विनियोगः । ॐ प्रथमतन्तौ ॐ काराय नमः ॐ कारमावाहया-
 मि ॥ १ ॥ अग्निद्रुतामिति मेधातिथिर्ऋषिः अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः द्वितीय-
 तन्तौ अन्यावाहने वि० । ॐ अग्निद्रुतं ० । द्वितीयतन्तौ अग्रये नमः अग्निमा-
 वाहयामि ॥ २ ॥ नमोऽस्तु सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सर्पा देवताः
 अनुष्टुप् छन्दः तृतीयतन्तौ सर्पावाहने वि० । ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केचं-
 पृथिवीमनु ॥ चेऽअन्तरिक्षे घोदिविनेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ १/३ ॥ तृतीयत-
 न्तौ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि ॥ ३ ॥ वयसोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः
 सोमो देवता गायत्रीछन्दः चतुर्थतन्तौ सोमावाहने वि० । ॐ वयसो-
 म ० । चतुर्थतन्तौ सोमाय नमः सोमम् आवा ० ॥ ४ ॥ उदीरतामित्य-
 स्य शङ्खऋषिः पितरो देवता त्रिष्टुप् छन्दः पञ्चमतन्तौ पित्रावाहने वि० ।
 ॐ उदीरतामवरंऽउत्परासंऽउदमद्वयमापि पितरंऽसोम्यासंऽ । अमुं-
 व्यऽईयुर्ववृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरोऽहवेषु ॥ १/१ ॥ पञ्चमतन्तौ
 पितृभ्यो नमः पितॄन् आवा ० ॥ ५ ॥ प्रजापते इत्यस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः
 प्रजापतिर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः षष्ठतन्तौ प्रजापत्यावाहने वि० । ॐ प्रजा-
 पतेन स्वदेता इन्द्रो द्विभ्वांरूपाणि परितावभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्त-
 न्नोऽअन्तुवृथं स्यामपतयोर्योणाम् ॥ १/३ ॥ षष्ठतन्तौ प्रजापतये नमः
 प्रजापतिम् आवा ० ॥ ६ ॥ आनो नियोद्धिरित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः अनिलो
 देवता त्रिष्टुप् छन्दः सप्तमतन्तौ अनिलावाहने वि० । ॐ आनो नियोद्धि-

शुतिनीभिर्द्वारः सहस्रिणीभिरुपपाद्विद्युत्तम् ॥ द्वारोऽस्मिन्सर्वनेपाद-
यस्वयुयम्पातस्वस्तिभिर्दमदानं ॥ ३८ ॥ सप्तमन्तौ अनिलाय नमः
अनिलम् आवा० ॥ ७ ॥ सुगात्रइत्यस्यात्रिक्रपिः गृहपतयो देवता आर्षी
त्रिष्टुप् छन्दः अष्टमन्तौ यमावाहने वि० ॥ ॐ सुगात्रो देवाहंसदनाऽभक-
र्मयऽर्वाभ्रमेऽऽसर्वनञ्जुपाणाऽ ॥ भरमाणाव्वहमानाहवीऽस्य-
स्मैरंत्तवसवोवमूनिस्वाहा ॥ ३९ ॥ अष्टमन्तौ यमाय नमः यमम् आवा०
॥ ८ ॥ विश्वेदेवासऽआगत इत्यस्य मधुच्छन्दा ऋषिः विश्वेदेवा देवताः
त्रिष्टुप् छन्दः नवमन्तौ विश्वेषां देवानामावाहने विनि० । ॐ विश्वेदे-
वामऽआगतशृणुतापऽ इय ऋहवंम् । एदम्यर्हिर्विषीदत ॥ ४० ॥ नव-
मन्तौ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान्देवान् आवा० ॥ ९ ॥ यज्ञो-
पवीतग्रन्थिदेवतावाहनम्-ब्रह्मषड्ज्ञानमित्यस्य प्रजापतिक्रपिः ब्रह्मा दे-
वता गायत्री छन्दः ग्रन्थिमध्ये ब्रह्मावाहने वि० । ॐ ब्रह्म-
जज्ञानं ॥ ग्रन्थिमध्ये ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवा० ॥ १ ॥ इदं
विष्णुरित्यस्य मेधातिथिक्रपिः विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः ग्रन्थिम-
ध्ये विष्णवावाहने वि० । ॐ इदं विष्णुः ॥ ग्रन्थिमध्ये विष्णवे नमः
विष्णुम् आवा० ॥ २ ॥ ऋग्वक्त्रमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवता
विराद् ब्राह्मी त्रिष्टुप् छन्दः ग्रन्थिमध्ये रुद्रावाहने वि०—ॐ ऋग्वक्त्रं ०
॥ ग्रन्थिमध्ये रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० ॥ प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो
नमः यथास्थानमहं न्यसामि ॥ मानसोपचारीः सम्पूज्य ॥ ध्यानम्—
प्रजापतेर्यत्सहस्रं पवित्रं कारामन्त्रोद्भवप्रक्षयम् ॥ ब्रह्मन्वाप्तिद्रव्ये च
यगः प्रकानं नरस्य मिदं हृदं ब्रह्मन्वयम् ॥ पुत्रागुरामाः ० ॥ यज्ञोप-
वीतधारणम्—यज्ञोपवीतमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवताः
त्रिष्टुप् छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः ॥ ॐ यज्ञोपवीतम्यस्यविश्र-

म्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात् ॥ आयुष्यमऽयम्प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम्ब-
लमस्तुतेजः ॥ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ अनेन
मन्त्रेण यथाचारम् एकद्वित्रिचतुःपञ्च वा पृथक्पृथग्यज्ञोपवीतधारणमाद्य-
न्तयोराचमनं च कुर्यात् ॥ धारणान्ते जीर्णमूत्रत्यागः—एतावद्दिनपर्यन्तं
ब्रह्म त्वं धारितं मया ॥ जीर्णत्वाच्चत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥
अनेन मन्त्रेण जीर्णयज्ञोपवीतं शिरोमार्गेण निःसार्य शुद्धभूमौ त्यक्त्वा
यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रजपं च कृत्वा ॥ अर्पणम्—अनेन नूतनयज्ञोपवीत-
धारणार्थकृतेन यथाशक्ति गायत्रीजपकर्मणा श्रीसविता देवता प्रीयतां
नमम ॥ पुनर्जलमादाय—अनेन नूतनयज्ञोपवीतधारणारूपेण कर्मणा
श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां नमम ॥ इति यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः ॥

॥६५॥ अथोत्सर्गतर्पणम्—आचम्य प्राणानायम्य ॥ सङ्कल्पः—
अद्यपूर्वोऽदेशकालौ संकीर्त्य छन्दसां कचिदनध्यायादिकाले पठनादन-
धिकारिभिः श्रावणाच्च प्राप्तमालिन्यस्य निरासार्थमुत्सर्गाख्यतर्पणमहं
करिष्ये ॥ दक्षिणं जान्वाच्येशानाभिमुखः सव्येन प्रागग्रैर्देभैर्देवतार्थिन
देवानामञ्जलित्रयं दद्यात् ॥ देवतर्पणम् ॐ त्रिभुवो देवास्तु ॥ त्रिभुवो देवास्तु ॥
॥ इति मन्त्राभ्यां देवानावाह्य ॥ देवास्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ उन्दाष्टिसितृप्यन्ताम् ॥
ॐ वेदास्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ ऋषयस्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ पुराणाचार्यास्तुप्यन्ताम् ॥
ॐ गन्धर्वास्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ इतराचार्यास्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ संवत्सरः
सावयवस्तुप्यन्ताम् ॥ [केचित्संवत्सरावयवान्पृथक्त्वेन तर्पयन्ति तद्यथा)
ॐ अहोरात्रास्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ अर्धमासास्तुप्यन्ताम् ॐ मासास्तुप्य-
न्ताम् ॥ ॐ ऋतवस्तुप्यन्ताम् ॥] ॐ पितरस्तुप्यन्ताम् ॥ ॐ आचार्या-
स्तुप्यन्ताम् ॥ ततः सव्यं जान्वाच्य दक्षिणाभिमुखोऽपसव्येन तिल-
भिध्रितं जलमञ्जलौ घृहीत्वा अमुकपोत्राः अस्मत्पितरः अमुकशर्माणो

चतुरुपास्तृप्यध्वं स्वधा नमः॥अमुकगोत्राःअस्मत्पितामहाःअमुकशर्माणो
 रुद्ररूपास्तृप्यध्वं स्वधा नमः॥अमुकगोत्राः अस्मत्पितामहाः अमुकश-
 र्माणः आदित्यरूपास्तृप्यध्वम् स्वधा नमः॥ [अन्ये तु आभिरद्भिःअहरहः
 क्रियमाणेन उदीरतामित्यादिनोक्ततर्पणाविधिना सर्वान् पितॄन् तर्पयन्ति।
 जीवत्पितृकैः पुत्रैः शिष्यैश्चाचार्यपितृतर्पणं कार्यम् । तच्च—अमुकगोत्राः
 अस्मदाचार्यस्य पितरः अमुकशर्माणस्तृप्यध्वं स्वधा ॥ एवमाचार्यस्य
 पितामहमपितामहानामपि ज्ञेयम् ॥] ततः आचम्य वंशान् धूयात् ॥

॥६६॥ वंशानां त्रुवणम्-ॐ अथव्वऽशुदंसमानमासाञ्जीवीपुत्रात्सा-
 ङ्जीवीपुत्रोमाण्डकायनेर्माण्डकायनिर्माण्डव्यान्माण्डव्यदंक्रौत्सात्क्रौत्सो-
 माहित्येर्माहित्यव्यामरुक्षायणाद्दामरुक्षायणोवात्स्याद्दात्स्यदंशाण्डिल्या-
 च्छाण्डिल्यदंकुश्रेदंकुश्रिर्धनुवचसोराजस्तम्बायनाश्रुवचाराजस्तम्बाय-
 नस्तुरात्कावपेयात्तुरदंअवपेयदंमजापतेदंमजापतिर्ब्रह्मणोब्रह्मस्वयम्भुव-
 द्दणेनमदं॥१॥वंशोक्ताःऋषयस्त्वप्यन्ताम्।एवमुक्त्वाप्युपरिउदकंक्षिपेत्॥अ-
 थव्वऽशस्तदिदंव्वयऽशौर्षणाभ्याच्छौर्षणाभ्योगीतमाद्गौतमोव्यात्स्या-
 द्दात्स्योव्यात्स्याच्चपाराशर्य्याच्चपाराशर्य्यदंसाहृकृत्याच्चभारद्वाजाच्चभा-
 रद्वाजऽर्भादवाहेश्चशाण्डिल्यच्चशाण्डिल्योवैजवापाच्चगौतमाच्चगौतमोवैज-
 वापायनाच्चवैष्टपूरेयाच्चवैष्टपूरेयदंशाण्डिल्याच्चराहिणायनाच्चरा-
 हिणायनदंज्ञानकाशाच्चैश्याच्चरैभ्यदंशौतिमारयायणाच्चकौण्डिन्यायनाच्चकौ-
 ण्डिन्यायनदंशौण्डिन्यान्शौण्डिन्यदंशौण्डिन्यान्शौण्डिन्यदंशौण्डिन्याच्चा-
 प्रिवेष्ट्याच्च२।आप्रिवेष्ट्यदंमैतवात्सैनरदंपाराशर्य्यात्पाराशर्य्यात्तानूरुष्पा-
 वत्तानूरुष्पाभारद्वाजाच्चारद्वाजोभारद्वाजाचागुरापणाच्चगौतमाच्चगौ-
 तमोभारद्वाजाच्चारद्वाजोवैजवापायनाच्चवैजवापायनदंशौण्डिन्यायनेदंशौण्डि-
 कायनिर्धृतशौण्डिकादृत्तशौण्डिकदंपाराशर्य्यायणात्पाराशर्य्यायणदंपारा-

शंर्षात्पाराशर्ष्योञ्जातूकर्ण्यञ्जातूकर्ण्योभारद्वाजाञ्जारद्वाजोभारद्वाजाचा-
सुरायणाचयास्काञ्चासुरायणस्त्रैवणेस्त्रैवणिरौपजन्धनेरौपजन्धनिरासुरे-
रासुरिर्भारद्वाजाञ्जारद्वाजऽआत्रेयात् ॥३॥ आत्रेयोमाण्टेर्माण्टिर्गौतमाद्गौ-
तमोगौतमाद्गौतमोव्वात्स्याद्वात्स्यदंशाण्डिल्याच्छाण्डिल्यदंक्रैशोर्ष्यत्का-
प्यात्क्रैशोर्ष्यदंक्राप्यदंकुमारहारितत्कुमारहारितोगालत्राद्रालवोविदर्भा-
कौण्डिन्याद्विदर्भाकौण्डिन्योवत्सनपातोवभ्रवाद्दत्सनपाद्वाभ्रवदंपथदंसौ-
भरात्पन्थादंसौभरोयास्यादाङ्गिरसादयास्यऽआङ्गिरसऽआभूतेस्त्वाप्रा-
दुाभूतिस्त्वाप्रोव्विश्वरूपात्त्वाप्राद्विश्वरूपस्त्वाप्रोश्चिभ्यामश्चिनौदधीचा-
थर्वणाद्ध्यङ्गथर्वणोद्वैवादुथर्व्वर्द्धवोमृत्योदंप्राध्वदुसनान्मृत्युदंमाध्वदुस-
नात्प्राध्वदुसनऽएरुपरेकपिर्विप्रजितेर्विप्रजितिव्यष्टेर्व्यष्टिसनारोदंस-
नारुदंसनातुनात्सनातुनदंसनगात्सनगदंपरमेष्टिनदंपरमेष्टिब्रह्मणोब्रह्म-
स्वयम्भुब्रह्मणेनमदं ॥ ४ ॥ वंशोक्ताः ऋषयस्तुप्यन्ताम् ॥ अथवदंशस्त-
दिदंययदुःशौरिणाच्छौरिणाभ्योगौतमाद्गौतमोव्वात्स्याद्वात्स्यो-व्वा-
त्स्याच्चपाराशर्ष्याच्चपाराशर्ष्यदंसाङ्कृत्याच्चभारद्वाजाच्चभारद्वाजऽऔ-
दवाहेश्चशाण्डिल्याच्चशाण्डिल्योवैजवापाच्चगौतमाच्चगौतमोवैजवापायना-
च्चव्यैष्टपुरेयाच्चव्यैष्टपुरेयदंशाण्डिल्याच्चरौहिणायनाच्चरौहिणायनदंशौन-
काच्चजैवन्तायनाच्चरैभ्याच्चरैभ्यदंपौतिमाख्यायणाच्चक्रौण्डिन्यायनाच्चक्रौ-
ण्डिन्यायनदंक्रौण्डिन्याभ्यांक्रौण्डिन्याऽऔर्णवाभेभ्यऽऔर्णवाभादंक्रौ-
ण्डिन्यात्क्रौण्डिन्यदंक्रौण्डिन्यात्क्रौण्डिन्यदंक्रौण्डिन्याच्चाग्निवेश्याच्च ॥५॥
आग्निवेश्यदं सैतवात्सैतवदं पाराशर्ष्यात्पाराशर्ष्योञ्जातूकर्ण्यञ्जातूक-
र्ण्योभारद्वाजाञ्जारद्वाजोभारद्वाजाचासुरायणाच्चगौतमाच्चगौतमोभारद्वा-
जाञ्जारद्वाजोबलाकाकौशिकाद्रलाकाकौशिकदंकापायणात्कापायण-
दंसौकरायणात्सौकरायणिस्त्रैवणेस्त्रैवणिरौपजन्धनेरौपजन्धनिदंसायका-

यन्नात्सायकायनं कौशिकायनेकं कौशिकायनिर्धृतकौशिकाद्धृतकौशिकं
 पाराशर्व्यायणात्पाराशर्व्यायणं पाराशर्व्यात्पाराशर्व्याजातूरुपर्याज्जा-
 तूरुपर्योभारद्वाजाद्भारद्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्चयास्काच्चासुरायण-
 स्त्रैवणेश्चैवणिरौपजन्वनेरीपजन्वनिरासुरेरासुरिर्भारद्वाजाद्भारद्वाजऽ-
 आत्रेयान् ॥ ६ ॥ आत्रेयादात्रेयोमाण्डेर्माण्डिगौतमाद्गौतमो गौतमाद्गौतमो-
 च्चात्स्याद्वात्स्यंशाण्डिल्याच्छाण्डिस्यंशुशोर्ष्यात्काप्यात्कैशोर्ष्यंका-
 प्यं कृमारहारितत्कृमारहारितोगलवाद्गालवोव्विदूर्ध्वकौण्डिन्याद्विदूर्ध्व-
 कौण्डिन्योव्वत्सनपातोयाभ्रवाद्भ्रवत्सपाद्भ्रवत्सपथं सौभरात्पन्थां सौ-
 भरोयास्यादाङ्गिरसाद्यास्यऽआङ्गिरसऽआभूतेस्त्वाष्ट्राद्वाभूतिस्त्वाष्ट्रो-
 द्विश्वरूपाच्चाष्ट्राद्विश्वरूपस्त्वाष्ट्रोश्चिभ्यामश्विनोदधीचऽअथर्वशाह्वय-
 ङ्गाथर्वणोद्देवाधुधर्वादैवोमृत्योर्दंभाध्वऽसनान्मृत्युर्दंभाध्वऽसनात्प्राध्वऽ-
 सनऽएरुपेरेरुपिर्विप्रजितेर्विप्रजितिव्यष्टेर्व्यष्टिं सनारोऽसनारं सनात-
 नात्सनातनं मनगात्सनगं परमेष्टिनं परमेष्टिब्रह्मणो ब्रह्मस्वयम्भुव्रह्म-
 णेनमं ॥ ७ ॥ वंशोक्ताः श्रपयस्तुप्यन्ताम् ॥ अथवदृशस्त्विदुंबयदं
 भारद्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्रोच्चात्सीमाण्डवीपुत्राद्वात्सीमाण्डवीपुत्रं
 पाराशरीपुत्रात्पाराशरीपुत्रोर्गागीपुत्राद्गार्गीपुत्रं पाराशरीकौण्डिनी-
 पुत्रात्पाराशरीकौण्डिनीपुत्रोर्गागीपुत्राद्गार्गीपुत्रोर्गागीपुत्राद्गार्गीपुत्रो-
 देयीपुत्राद्देयीपुत्रोर्मौपिकीपुत्रान्मौपिकीपुत्रोहारिकर्णोपुत्राद्धारिक-
 र्णोपुत्रोभारद्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्रं पृथ्वीपुत्रात्पृथ्वीपुत्रं शौनकीपुत्रा-
 त्शौनकीपुत्रं ॥ ८ ॥ काश्यपीपालात्रयामाठरीपुत्रात्काश्यपीपालात्रयामा-
 ठरीपुत्रं एतसीपुत्रान्त्रैतसीपुत्रोर्वापीपुत्राद्वीधीपुत्रं शाण्ड्यायनीपुत्रा-
 च्छाण्ड्यायनीपुत्रोर्गार्पणीपुत्राद्गार्पणीपुत्रोर्गौतमीपुत्राद्गौतमीपुत्रऽआ-

त्रेयीपुत्राद्त्रेयीपुत्रोर्गौतमीपुत्राद्गौतमीपुत्रोन्वात्सीपुत्राद्वात्सीपुत्रोभार-
 द्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्रदंपाराशरीपुत्रात्पाराशरीपुत्रोव्वार्कारुणीपुत्राद्वा-
 र्कारुणीपुत्रऽआर्तभागीपुत्राद्दार्तभागीपुत्रदंशौङ्गीपुत्राच्छौङ्गीपुत्रदंसाङ्गी-
 पुत्रात्साङ्गीपुत्रदं ॥९॥ अलम्बीपुत्राद्दालम्बीपुत्रऽअलम्बायनीपुत्रा-
 दालम्बायनीपुत्रोजायन्तीपुत्राज्जायन्तीपुत्रोमाण्डकायनीपुत्रान्माण्डका-
 यनीपुत्रोमाण्डकीपुत्रान्माण्डकीपुत्रदंशाण्डलीपुत्राच्छाण्डलीपुत्रोरार्थीत-
 रीपुत्राद्दार्थीतरीपुत्रदंक्रौञ्चिकीपुत्राभ्यांक्रौञ्चिकीपुत्रोवैदभृतीपुत्राद्वैदभृ-
 तीपुत्रो भालुकीपुत्राद्भालुकीपुत्रदं प्राचीनयोगीपुत्रात्प्राचीनयोगीपुत्रदं
 साङ्गीवीपुत्रात्साङ्गीवीपुत्रदंकार्शकेयीपुत्रात्कार्शकेयीपुत्रदं ॥१०॥ प्राश्री-
 पुत्रादासुरिवासिनदंप्राश्रीपुत्रऽआसुरायणादासुरायणऽआसुरेरासुरि-
 र्याङ्गवल्क्याद्याङ्गवल्क्यऽउद्दालकादुद्दालकोरुणादुरुणऽउपवेशेरुपवेशि-
 दंकुत्रेदंकुत्रिर्वाजश्रवसोवाजश्रवाजिह्वावतोवाध्योगाज्जिह्वावान्वाध्यो-
 गोसिताद्वार्षगणादुसितोव्वार्षगणोहरितात्कश्यपाद्धरितदंकश्यपदंशिल्पा-
 त्कश्यपाच्छिल्पदंकश्यपदंकश्यपात्रैध्रुवेदंकश्यपोत्रैध्रुविर्वाचो वाग-
 म्भिण्याऽअम्भिण्यादित्त्यादादित्त्यानीमानिशुक्लानिष्वज्जुषिवाजसनेये-
 नयाङ्गवल्क्येनाख्यायन्ते ॥ ११ ॥ वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥
 ॐ तत्संवितुरितित्तुर्वारं गायत्रीं पठेत् ॥ इति मतिवंशोक्तानामृषीणां
 तर्पणम् ॥ ॐ विरताः स्म इति सर्वे सुकृदुचैर्भूयः ॥ शु० य० सं०
 अध्यायाः-हरिः ॐ इपेर्वा ॥ कृष्णोसि ॥ समिधाग्निम् ॥ एदम् ॥
 अग्नेस्तनुः । देवस्यर्त्वा । व्वाचस्पतये ॥ उपयामर्गृहीतोसि ॥ देवस-
 वितदं ॥ अपो देवाः ॥ युञ्जानः षथमम् ॥ दृशानोरुक्मः ॥ मयिंशु-
 ह्यामि ॥ ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः ॥ अग्नेजातान् ॥ नर्मस्ते ॥ अस्मन्नूर्जम् ॥
 व्वाजश्च ॥ स्वादीन्त्वा ॥ क्षत्रस्ययोनिः ॥ इमर्मे ॥ तेजोसि ॥ हिरु-

ण्यगर्भसम् ॥ अश्वस्तूपर? ॥ शार्दन्दाद्भि? ॥ अग्निश्च ॥
 समास्त्वा ॥ होतायज्ञत् ॥ समिद्धोऽञ्जन ॥ देवसवित् ॥ महसंशी-
 र्णापुरुषत् ॥ तदेवा ॥ अस्याजरासं+ ॥ यज्जाग्रत् ॥ अपेत? ॥ ऋचंवाचम् ।
 देवस्यत्त्वा । देवस्यत्त्वा । स्वाहाप्साणेभ्यं+ । ईशाव्वास्यम् ॥ ४० ॥ अं
 द्विरुपमयेनपात्रेणसत्यस्यापिहितम्मुखम् ॥ योसावादित्येपुरुषत्सोसा-
 वदम् ॥ अरे म् स्वम्ब्रह्म । अध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥

॥ ६७ ॥ श० त्रा० काण्डिकाः-व्रतमुपैह्यन् ॥ सर्वैकपालान्येवान्यतरऽ
 उपदुधाति । सर्वैस्तुर्वरंसम्माष्टिं ॥ दिङ्कृत्यान्वाह ॥ सर्वैमवरायाश्रावयति ॥
 ऋतुवोहवैदेवेषुयज्ञेभागमीपिरे ॥ सर्वैपर्णशास्त्रपावत्सानपाकरोति ॥ मन-
 वैहवैमातत् ॥ सयत्राह ॥ ससयद्राऽइत्थेतश्चसम्भरति ॥ उद्धृत्याह-
 वनीयम्पूर्णाहुतिंजुहोति ॥ सूर्ध्वोहवाऽअग्निहोत्रम् ॥ अथहुतेग्निहोत्रमुप-
 तिष्ठते ॥ प्रजापतिर्हवाऽइदमग्रऽएरुऽएवास ॥ पित्रामहाहविपाहवैदेवाण्ड-
 त्रंजमुत् ॥ देवयजनंयोपयन्ते ॥ दक्षिणेनाहवनीयंप्राचीनग्रीवेकृष्णा-
 जिनेऽउपस्तृणाति ॥ सप्तयद्दान्यनुनिर्दक्रामति ॥ शिरोवैघ्नस्यातिथ्यं-
 चाहुप्रायणीयोदयनीयौ ॥ तद्यऽएपपूर्वाध्वोन्वर्षिष्ठस्थूणराजोभवति ॥
 उदरमेगस्यसदत् ॥ अग्निमांदत्ते ॥ तद्यत्रैतत्प्रष्टनोहोताहोतृपदनऽउप-
 विगति ॥ प्रजापतिर्वैप्रजादसमृजानोरिरिचान्ऽइवामन्यत ॥ प्राणोह-
 वाऽअस्योपाँशुर्द ॥ चक्षुषीहवाऽअस्यशुक्रामन्थिनी ॥ भसपित्वासमु-
 पहृतादस्मऽइत्युत्त्वोत्तिष्ठति ॥ मनोहवाऽअस्यसविता ॥ आदित्येनच-
 रुणोदयनीयेनप्रचरति ॥ प्रजापतिर्वाऽएपयदृशुर्द ॥ देवाश्चत्राऽअमु-
 राश्र ॥ अथसुव्रश्चाज्यविलापनीचादाय ॥ अरुणपोरग्रीसमारोह ॥ केश-
 वस्वपुरुषस्य ॥ आग्नेयोष्टाफपाळदंपुरोडाशोभवति ॥ असद्राऽइदमग्रऽ-
 भासीन् ॥ प्रजापतिरिष्टरुण्यभ्यध्यायत् ॥ एतैदेवाऽअद्युवन् ॥ अपै-

नमत्तलंखनत्येव ॥ पर्णकशायनिष्पक्वाऽएताअपोभवन्ति ॥ भूयाँसि-
ह्वीँपिभवन्ति ॥ रुक्मम्पतिमुच्यविभर्ति ॥ व्वनीवाह्येताग्निविभ्रदि-
त्याहुः ॥ गार्हपत्यंचेप्यन्यलाशशाखयाव्युद्वहति ॥ अथातोनेऋताहर-
न्ति ॥ चितोगार्हपत्योभवति ॥ आत्मन्नग्निगृहीते चेप्यन् ॥ कूर्म्ममुपद-
धाति ॥ प्राणभूतउपदधाति ॥ द्वितीयांचितिमुपदधाति ॥ तृतीयांचि-
तिमुपदधाति ॥ चतुर्थींचितिमुपदधाति ॥ पञ्चमींचितिमुपदधाति ॥
नाकसदऽउपदधाति ॥ ऋतुव्याऽउपदधाति ॥ अथातंशतरुद्वयंजुहोति ॥
उपवसथीयेहन् प्रातरुदितऽआदित्ये ॥ अथातोवैश्वानरंजुहोति ॥ अथा-
तोराष्ट्रभूतोजुहोति ॥ अथातलंपयोत्रततायै ॥ अग्निरेपपुरस्ताचीयते ॥ प्रजा-
पतिंस्वर्गलोकमाजिगामः सत् ॥ प्राणोगायत्री ॥ प्रजापतिंविस्त्रस्तम् ॥
तस्यवाऽएतस्याग्नेः ॥ अथहैतेरुणे ॥ संवत्सररोवैयज्ञं प्रजापतिः ॥ त्रिह-
वैपुरुषोजायते ॥ वाग्धवाऽएतस्याग्निहोत्रस्याग्निहोत्री ॥ उद्दालकोहा-
रुणिः ॥ उर्वशीहाप्तराः ॥ भृगुर्हवैव्यारुणिः ॥ पशुबन्धेनयजेते ॥ तद्य-
थाहवै ॥ अयंवैयज्ञोवोयंपवते ॥ समुद्रंवाऽएतेप्रचरन्ति ॥ यद्दालोके ॥
दीर्घसत्रं हवाऽएतऽउपपन्ति ॥ तदाहुयदेपदीर्घसत्री ॥ सोमोवैराजा-
यज्ञं प्रजापतिः ॥ विश्वरूपं वै त्वाष्ट्रमिन्द्रोहन् ॥ इन्द्रस्यवैयत्र ॥ एत-
स्माद्वैयज्ञात्पुरुषोजायते ॥ ब्रह्मादनंपचति ॥ प्रजापतिदेवैभ्योयज्ञान्वया-
दिशत् ॥ प्रजापतेरुक्षस्वयत् ॥ प्रजापतिरकामयत् ॥ अथमातर्गोतमस्य ॥
पुरुषोहनारायणोकामयत् ॥ ब्रह्मवैस्वयम्भुतपोतप्यत् ॥ अथास्मैऽमशा-
नकुर्वन्तिघोऽशान्तिः ॥ देवाहर्वंसत्रानिपेदुः ॥ अथातोराहिणोजुहोति ॥
सत्रतृतीयेहन् ॥ द्वायाहप्राजापत्याः ॥ दत्तवालाकिर्हानूवानोगार्ग्यऽआस ॥
जनकोहव्येदेहः ॥ जनकः हव्येदेहंवाज्जवल्कयोजगाम ॥ पूर्णमदलंपूर्णमिदम् ॥
श्वेतकेतुर्हवाऽआरुणेयः ॥ माश्रीपुत्रादासुरिवांसिनः ॥ १०१ ॥ चतुर्द-

शकाण्डेष्वध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ० य० सं० शतस्थानानि—ॐ इषेत्त्वा ॥ परिते ॥ अग्नेनय ॥ उपयापयृहीतोसिसुशम्पसि । (प्रथमा) सोमस्यस्त्रिषिं ॥ परस्याऽअधि ॥ अन्याचं+ ॥ राक्षसि ॥ नमोहिरण्यवाहवे ॥ इन्द्रेमम् । इमौते । अन्नात्परिस्रुतं+ ॥ अश्विनान्तेजसा ॥ पृथिव्यैस्वाहा ॥ प्रजापतयेच ॥ तेऽअस्य ॥ तनूनपात्पथ ॥ अयमिह ॥ अनुनदं॥इत्यग्रे॥२०॥ शेषं पञ्चसप्ततिः॥ हिरण्येनपात्रेण० ॐ खम्व्रह्म । शतोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ अग्निमीळेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नघातमम् ॥१॥ इषेत्त्वोज्जेत्त्वा० ॥ २ ॥ अग्नऽआयाहित्रीतयेगृणानोहृव्यदातये ॥ निहोतासत्सिद्धिषिं ॥ ३ ॥ शन्नोदेवी०॥४॥ इत्यध्ययनं समाप्तम् । ततः ॐ तदेतदृचाभ्युक्तं न मृपाश्रांतं सद्वति देवाऽइतिनहृवैर्विदुप ६ किञ्चनमृपा श्रान्तं भवति तयोहास्यैतत्सर्वेदेवाऽअवन्ति ॥ १ ॥ इति नमस्कारः ॥

॥ ६८ ॥ अथ ऋषिश्राद्धम् ॥

कर्ताकृतप्राणायामो देशकालौ संकीर्त्य ॐ उत्सर्गाङ्गभूतमृषिश्राद्धमहं करिष्ये । इति संकल्प्य—ॐ इदं विष्णु० इति मंत्रेण दिग्बंधः॥ ऋषिश्राद्धस्पोपहाराः शुचयो भवन्तु । इत्युपहारप्रोक्षणम् । यथोपचारैः गौतमादीन् पूजयेत् ॥ गौतमादयः सप्त ऋषयो दत्तं गंधार्चनं यथाविभागं वः स्वाहा ॥ इति गंधादिदानम् ॥ ऋषिश्राद्धसाङ्गतासिद्धयर्थं सप्तसंख्याकान्ब्राह्मणान्यथासम्बन्धान्नेन तर्पयिष्ये तेन श्रीगौतमादयः ऋषयः प्रीयन्ताम् ॥ ऋषिश्राद्धसाङ्गतासिद्धयर्थं हिरण्यनिष्कयीभूतां दक्षिणाम् आचार्याय संप्रददे ॥ आचार्यः कोदादिति पठेत् ॥ ॐ कोदात्कस्मात्कामोदात्कामायादात् ॥ कामोदात्ताकामं प्रतिगृहीताकामैतत्त्वं ॥ १ ॥ उपविष्टेषु आचार्यादिब्राह्मणेपूदकादिदानम् ॥ तद्यथा ॥ ॐ

शिवा आपः सन्तु ॥ ॐ सौमनस्यमस्तु ॥ ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥
 ॐ अघोरा ऋपयः सन्तु ॥ सर्वत्र सन्त्विति विमाः प्रतिवचनं दद्युः ॥
 उत्सर्गकर्मणो न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
 भूयसीं दाक्षिणां विभज्य संप्रददे ॥ अद्य छन्दसामुत्सर्गाङ्गभूतमृपिश्राद्धं
 परिपूर्णमस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णमिति द्विजाः ॥ ततः सह नोस्तु सह नोवतु
 सह नऽऽदं वीर्यवदस्तु ब्रह्म ॥ इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहऽइति ॥
 उभाकवीयुवायो नोधर्मः परापतत् ॥ परिसख्यस्य धर्मिणो विस्ख्यानि वि-
 सृजामहे ॥ इति च सर्वे जपेयुः ॥ विरताः स्म इति द्यूयुः ॥ ततो नमस्कारः ॥
 तदेतद्देवाभ्युक्तं नमृपाश्रान्तं यद्वान्ति देवाऽइति नैवैवं विदुषः किञ्चन मृपा-
 श्रान्तं भवति तयोहास्यै तत्सर्वे देवाऽभवन्ति ॥ इति नमस्कारः ॥ ततो
 विसर्जनम् ॥ ॐ उतिष्ठु ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तु मरु-
 तः सुदानवऽइन्द्रं प्राशुर्भवांस च ॥ ३६ ॥ ततः सप्तर्षीन् जलाशये ग्रावयेत् ॥
 समुद्रं च्छ्वाहान्तरिक्षं च्छ्वाहा देवैः सवितारं च्छ्वाहा मित्रा-
 वरुणौ च्छ्वाहा होरात्रेण च्छ्वाहा छन्दांसि गच्छ्वाहा दधावापृथि-
 वीं च्छ्वाहा यज्ञं च्छ्वाहा सोमं च्छ्वाहा दिव्यन्नभोगच्छ्वाहा-
 ग्निर्वैश्वानरं च्छ्वाहा मनोमे हार्दियं च्छ्वाहा दिवन्तेधुमो गच्छतु स्तुः
 ज्योतिः पृथिवीं मम स्मना पृणं च्छ्वाहा ॥ ३७ ॥ (स्वस्वप्रवरान्विसर्जयेत् ॥)
 अनेनाध्यायोत्सर्गाङ्गत्वेन कृतेन ऋपिपूजनतर्पणादिकर्मणा श्रीभगवान्वे-
 दपुरुषः प्रीयतां न मम ॥ एवम् उत्सर्गं विधाय त्रिरात्रं गुरुगृहे सर्वे
 शिष्या निवसेयुः ॥ उत्सर्गोत्तरं त्रिरात्रमध्ययनं न कुर्युः ॥

॥ इति ऋपिश्राद्धं समाप्तम् ॥

॥६९॥ अथातोऽध्यायोपाकर्महवनप्रयोगः-आचार्यः आचम्य प्राणानायम्य आवसथ्याग्नेः पश्चात् शिष्यैश्च सह प्राञ्जुखउपविश्य आवसथ्ये खर्प रमथित्थित्य तत्र यवान्प्रक्षिप्य खर्परस्याधः अग्निं प्रज्वाल्य यवानां भर्जनं ते यवा धानाः ॥ आवसथ्यामन्यभावे पृष्ठोदिविविधानासिद्धाग्नेः पश्चादित्यादि । तदभावे ग्राम्याग्निस्थापनम् । तद्यथा अद्य त्रिधौ अध्यायोपाकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं सवितानामग्निस्थापनमहं करिष्ये । पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं प्रतिष्ठाप्य तदुपरि पूर्ववत् धानामर्जनं कृत्वा भर्जनानन्तरं पृथक्करणं होमार्थं भक्षार्थञ्च ॥ एवं गुरुः प्राणायामत्रयं कृत्वा संकल्पकुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अध्यायोपाकर्माहं करिष्ये ॥ वैकल्पिकरूपदार्थाविधारणं कुर्यात् ॥ तत्र पौर्णमास्यामुपाकर्म ॥ ब्रह्मासनादारभ्य पर्युक्षणान्तकुशकंडिका विधाय ॥ उपकल्पनीयानि-विशेषः-प्रतिशिष्यं नव नवांसमिध आर्द्राः सपत्रा औदुम्बरस्य ॥ दधि भक्षणार्थम् ॥ लौकिकधानाः ॥ बाहुमात्रं हस्तमात्रं वा औदुम्बरकाष्ठस्य स्रुवः । तिलस्थापनस्थाने सर्पफणाकारमाकर्षफलम् ॥ तिलाश्च ॥ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः (तूष्णीम्) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय ० ॥ ॐ अग्नये ० इदमग्नये ० ॥ ॐ सोमाय ० इदं सोमाय ० ॥ अनन्वारब्धः ॥ ऋक्-ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न मम ॥ ॐ अग्नये ० इदमग्नये ० ॥ ॐ ब्रह्मणे ० इदं ब्रह्मणे ० ॥ ॐ छन्दोभ्यः ० इदं छन्दोभ्यो ॥ यजुः-ॐ अन्तरिक्षाय ० इदमन्तरिक्षाय ० ॥ ॐ वायवे ० इदं वायवे ० ॥ ॐ ब्रह्मणे ० इदं ब्रह्मणे ० ॥ ॐ छन्दोभ्यः ० इदं छन्दोभ्यो ॥ साम-ॐ दिवे ० इदं दिवे ० ॥ ॐ सूर्याय ० इदं सूर्याय ० ॥ ॐ ब्रह्मणे ० इदं ब्रह्मणे ० ॐ छन्दोभ्यः ० इदं छन्दोभ्यो ॥ अथर्व-ॐ दिग्भ्यः ० इदं दिग्भ्यो ० ॥ ॐ चन्द्रमसे ० इदं

चन्द्रमसे० ॥ ब्रह्मणे० इदं ब्रह्मणे० ॥ ॐ छन्दोभ्यः० इदं छन्दोभ्यो० ॥ ॐ
 प्रजापतये० इदं प्रजापतये० ॥ ॐ देवेभ्यः० इदं देवेभ्यो० ॥ ॐ ऋषिभ्यः०
 इदम् ऋषिभ्यो० ॥ ॐ श्रद्धायै० इदं श्रद्धायै० ॥ ॐ मेधायै स्वाहा इदं मे-
 धायै० ॥ ॐ सदसस्पतये० इदं सदसस्पतये० ॥ ॐ अनुमतये० इदमनु-
 मतये० ॥ एताः सप्तविंशत्याहुतयः आज्येन ॥ ततः प्रोक्षितधाना-
 भिधारणम् ॥ स्रुवेण धाना अवदाय ॥ ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमि-
 न्द्रस्युकाम्म्यम् ॥ सनिम्भेधामयासिपुः स्वाहा ॥ ३३ ॥ इदं सदसस्पतये न-
 मम ॥ ततः उदुम्बरसमिञ्जितयमभिधार्य हस्ते गृहीत्वा उत्थाय प्राञ्जुस्वस्ति-
 ष्टन्तः ॥ ॐ तत्सवितु० स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ एवं द्वितीयां तृतीयां
 समिधं जुहुयात् ॥ ततः सर्वे उपविशेयुः ॥ एवं प्रत्येकं धानाः समिञ्जि-
 तयं पुनरपि द्विवारं कुर्यात् ॥ ततः अपरधानाः तिस्रः तिस्रः गृहीत्वा ॥
 ॐ शन्नोभवन्तुद्याजिनोहवेपुदेवतातामितद्वं वंस्वर्काः ॥ जम्भयन्तोहिबृ-
 क्कटरक्षाः ॥ सिंसनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥ १६ ॥ इति सर्वे प्राश्नीयुः ॥ द्विरा-
 चमनम् ॥ ॐ दुधिकक्राव्णोऽअकारिपञ्चिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः ॥
 सुरभिन्नोमुखाकरुप्रणऽआर्युः ॥ पितारिपत्न ॥ ३३ ॥ इति मंत्रेण दधि भक्षेयुः ॥
 द्विराचमनम् ॥ ततः आचार्यो यावन्तं शिष्यगणम् आत्मन इच्छेत्तावत-
 स्तिलान्गणयित्वा आकर्षकककेनावदाय ॐ तत्सवितुरिति वा शुक्र-
 ज्योतिरित्यनुवाकेन जुहुयात् ॥ इदं सवित्रे न मम ॥

अथ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः ॥ ततो धानाभिः स्विष्टकृद्धोमः—ॐ अग्नये
 स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ ततो भूरादिनवाहुतयः ॥
 ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० ॥ ॐ स्वः
 स्वाहा इदं सूर्याय० ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ॐ सत्त्व-
 नोऽअग्ने० इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ॐ अग्नाऽन्याग्ने० इदमग्नये अयस्ते० ॥ ॐ

येतेशतंवरुणये० । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
 स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण० । इदं वरुणायादित्यायादि-
 तये० ॥ ॐ प्रजापतये० इदं प्रजापतये० ॥ इत्याज्येन जुहुयात् ॥
 सर्वत्रैव अन्ते प्रोक्षणीपात्रे द्रव्यत्यागः ॥ ततः ज्यायुषं कुर्यात् ॥ ज्यायुषं
 जमदग्नेः इति ललाटे । कश्यपस्य ज्यायुषम् इति ग्रीवायाम् । अदेवेषु
 ज्यायुषम् इति दक्षिणवाहुमूले । तन्नोऽस्तु ज्यायुषम् इति हृदि ॥ संस्र-
 वप्राशनम् ॥ आचमनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥
 ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ ब्रह्मन् अस्योपाकर्मणोऽगतया विहितं पूर्णपात्रं
 प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्यातु ॥ इति
 ब्रह्मा पठन्गृह्णीयात् ॥ प्रणीताधिमोक्षः ॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमाः
 शांताः शांततमास्तास्ते कृष्वन्तु भेषजम् ॥ उपयमनकुशैर्मार्जयेत् ॥ उप-
 यमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ॥ तत्सवितु० इति त्रिः पठेत् ॥ पुनः इषेत्वादि
 ईशावास्यान्तम् ॥ १ ॥ व्रतमुपैष्यन्नित्यादिसंपूर्णमंत्रब्राह्मणयोरध्यायादि
 त्र्यात् ॥ एवं सर्वं गुरुः शिष्याश्च पठित्वा । ॐ सह नोस्तु सह नोवतु
 सह नऽइदं वीर्यवदस्तु ब्रह्म ॥ इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे ॥ इति
 मंत्रं पठित्वा ॥ कृतैतत्कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थम् आचार्याय दक्षिणां
 दातुमहमुत्सृजे ॥ ततो न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो
 ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ ततः प्रार्थना-प्रमा-
 दात्कुर्यतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं
 स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं
 सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ।
 विष्णवे नमः ॥

॥ इति श्रावणीप्रयोगः समाप्तः ॥

॥ ७० ॥ अथ रक्षाबंधनविधिः ॥ रक्षाबंधनमस्यामेव पूर्णिमायां
भद्रारहितायां कार्यम् ॥ तत्रादौ अपराह्णे । सर्पपाक्षतहेमसहितां विचित्रक्षौ-
मवस्त्रैर्वाकार्पासतंतुभिर्ग्रथितां शुभां रक्षापोटलिकां शुद्धभाजने संस्थाप्य
कुंकुमाक्षतैरभ्यर्च्य ब्राह्मणान्संपूज्य दक्षिणाभिः संतोष्य पूर्वमुखो ब्राह्म-
णद्वारा रक्षाबंधनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ येन बद्धो बली राजा दानवेद्रो
महाबलः । तेन त्वामभिवध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥ १ ॥ इति ।
अनेन विधिना यस्तु रक्षाबंधं समाचरेत् ॥ स सर्वदोषरहितः सुखी
संवत्सरं भवेत् ॥ २ ॥ इति रक्षाबंधनविधिः ॥

॥ ७१ ॥ अथ शिवपार्थिवेश्वरचिन्तामणिपूजाप्रयोगः ॥

तत्रादौ प्रातर्नित्यकर्म समाप्य उदीच्यां दिशि मृत्तिकानयनार्थं गत्वा
तत्र भूमिपूजनम्—आगच्छ पृथिवि देवि त्वद्रूपमृत्तिकामिमाम् । गृहि-
ष्यामि हि लिङ्गनर्थं प्रसन्ना भव सर्वदा ॥ ॐ भूम्यै नमः सकलपूजार्थं
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति संपूज्य “ ॐ भूम्यै नमः ” इति
नमस्कृत्य ईशानभागस्थितां मृत्तिकां शस्त्रेण खनित्वा अष्टाङ्गुलां वाहि-
निष्कास्य तदधःस्थमृत्तिकाग्रहणम्—ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन
शतवाहुना । मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च ॥ “ ॐ हराय नमः ”
इति मन्त्रेण शमीगर्भस्याम् अश्वत्थमूलस्थां वा मृत्तिकामादाय तूर्णान्
गृहमागत्य पवित्रभूमौ निधाय कुशादिविहितासने उदङ्मुख उपविश्य

१ लिङ्गमानं मंत्रमहोदधौ—अङ्गुष्ठमानादधिकं वित्तस्यवधि सुंदरम् । पार्थिवं तु भवेत्लिङ्ग न
न्यूनं नाधिकं च तत् ॥ अथ पार्थिवेश्वरमण्डलाकृतिः—भानुवासे सूर्याकृतिः । चन्द्रवासे नाग-
पाशम् । भीमवासे त्रिकोणाकृतिः । सौम्यवासे कच्छपाकृतिः । गुह्यासे समचतुरस्रम् । भृगु-
हासे षडङ्कोणाकृतिः । मन्दवासे शत्रुपाकृतिः ॥

शिवस्य जीव इह स्थितः । ॐ आँह्रीँक्रौँचैँरँलँवँशँषँसँहँसः सोहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । भो शिव इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ततः स्ववामभागे जलपूरितकलशं दक्षिणभागे पूजोपहारं च निधाय कलशपूजनम्—ॐ कलशस्य मुखे० ॥ इति अङ्कुशमुद्रया मूर्यमंडलात्सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य वं इति वीजेन धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मूलमंत्रेण अष्टवारम् अभिमंत्र्य तेन कलशोदकेन आत्मानं पूजोपहारं च प्रोक्षयेत्-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति प्रोक्ष्य गणपतिं षोडशोपचारैः संपूज्य न्यासाः—ॐ अस्य श्रीपार्थिवेश्वरचिन्तामणिविद्यामंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता ब्रह्मा ऋषिः। कामदुघा देवता । गायत्रीच्छन्दः। शीघ्रवरदस्वरूपिणी श्रीपार्थिवेश्वरचिन्तामणिदेवता ह्रीं वीजं ह्रीं शक्तिः नमः कालकं मम चतुर्विधफलमाप्तये श्रीपार्थिवेश्वरचिन्तामणिन्यासे पूजने च विनियोगः ॥ ॐ निग्रहानुग्रहकर्त्रे ब्रह्मणे नमः शिरसि । ॐ कामदुघा-देवतायै नमो हृदि । ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे । ॐ शीघ्रवरदस्वरूपिणीश्रीपार्थिवेश्वरचिन्तामणिदेवतायै नमो-हृदये । ॐ ह्रीं वीजाय नमो गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । ॐ नमः कालकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ करन्यासः—ॐ ह्रीँह्रीँ सर्वशक्तिधाम्ने शिवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीँह्रीँसर्वशक्तिधाम्ने शिवाय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रीँह्रीँनित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने शिवाय मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रीँह्रीँसर्वज्ञानशक्तिधाम्ने शिवाय अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीँह्रीँनित्यानन्दशक्तिधाम्ने शिवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीँह्रीँअनन्तशक्तिधाम्ने शिवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां

नमः॥ पढङ्गन्यासः—ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वशक्तिधाम्ने शिवाय हृदयाय नमः । ॐ
 ह्रीं ह्रीं सर्वशक्तिधाम्ने शिवाय शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रीं ह्रीं नित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने
 शिवाय शिखायै वषट् । ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वज्ञानशक्तिधाम्ने शिवाय कवचाय
 हुम् । ॐ ह्रीं ह्रीं नित्यानन्दशक्तिधाम्ने शिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ।
 ॐ ह्रीं ह्रीं अनन्तशक्तिधाम्ने शिवाय अस्त्राय फट् ॥ इति न्यासान्विधाय
 ध्यानम्—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाक-
 ल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्तात्स्तुतम-
 मरगणैर्व्यघ्रकृतिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्रं
 त्रिनेत्रम् ॥ इति रुद्ररूपमात्मानं ध्यात्वा मानसिकपूर्णां कुर्यात्—“ॐ नमः
 शिवाय” मानसिकचन्दनपुष्पधूपदीपनैवेद्यानि कल्पयामि ॥ ततः स्वहृ-
 दयकमलात्कुण्डालिनीमार्गेण ब्रह्मरंध्रद्वारा लिङ्गे आगतम् आत्मरूपं परं
 शिवं संभाव्य आवाहयेत् । आवाहनम्—ॐ भूः पुरुषमावाहयामि । ॐ भुवः
 पुरुषमावाहयामि । ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि । आयातु भगवान्महादेवः ॥
 सप्तमुद्राः—ॐ आवाहितो भव । स्थापितो भव । सन्मुखो भव । सन्निरुद्धो
 भव । विमलीकृतो भव । अवगुण्ठितो भव । अमृतीकृतो भव । इत्या-
 वाह्य आसनम्—ॐ ह्रीं ह्रीं जूंसः ॐ सद्योजातंप्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो
 नमः आसनं समर्पयामि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूंसः ॐ भवे भवे नाति भवे भवस्व
 माम् पाद्यं सम० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूंसः ॐ भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं सम० ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं जूंसः ॐ वायदेवाय नमः आचमनं सम० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूंसः ॐ ज्ये-
 ष्ठाय नमः मधुपर्कं सम० ॥ पयो दाधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः
 पञ्चामृतस्नानं सम० ॥ पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं
 सम० ॥ सकलपञ्चामृतस्नानपूजापरिपूरणार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ॥
 उत्तरे निर्माल्यं विभृज्य । ॐ सद्योजातं० इत्यादिपञ्चभिर्मन्त्रैः रुद्रमन्त्रैर्वा
 ॐ नमः शम्भवाय च० इत्येकेनैव मंत्रेण वा अभिषेकं कृत्वा (सुगन्ध-
 युतजलार्द्रपुष्पेणसेचनमेवात्राभिषेकः) तर्पणम्—ॐ भवं देवं तर्प-
 यामि । ॐ शर्वं देवं तर्प० । ॐ ईशानं देवं तर्प० । ॐ पशुपतिं देवं
 तर्प० ॐ उग्रं देवं तर्प० ॐ रुद्रं देवं तर्प० । ॐ भीमं देवं तर्प० ।
 ॐ महान्तं देवं तर्प० । ॐ भवादिदेवानाम् अष्टौ पत्नीस्तर्प० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं-
 जूं सः ॐ श्रेष्ठाय नमः वस्त्रं कौपीनं सम० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ रुद्राय नमः
 यज्ञोपवीतं सम० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ कालाय नमः चंदनं सम० ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ कलविकरणाय नमः अक्षतान्सम० ॥ त्रिदलं त्रिगु-
 णाकारं त्रिनेत्रं च त्रिवर्गदम् । त्रिजन्मपापसंहारमेकविल्वं शिवार्पणम् ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ बलविकरणाय नमः विल्वपत्राणि पुष्पाणि च सम० ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ बलाय नमः धूपमाग्रापयामि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ बल-
 प्रमथनाय नमः दीपं दर्शयामि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ सर्वभूतदमनाय नमः
 नैवेद्यं निवेदयामि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ मनोन्मनाय नमः आचमनं समर्प-
 यामि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ शम्भवे नमः ताम्बूलं सम० ॥ ॐ
 ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ शम्भवे नमः दक्षिणां सम० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः
 ॐ शम्भवे नमः नीतरत्नं सम० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः ॐ शम्भवे नमः पुष्पा-

झलि सम० ॥ ॐ ह्रौंक्षींजुंसः ॐ शम्भवे नमः प्रदक्षिणां नमस्कारांश्च
 सम० ॥ अष्टमूर्तिपूजनम्—पूर्वे—भवाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ ईशान्यां—
 शर्वाय जलमूर्तये नमः। उत्तरे—रुद्राय अग्निमूर्तये नमः। वायव्याम्—
 उग्राय वायुमूर्तये नमः। पश्चिमे—भीमाय आकाशमूर्तये नमः। नैऋत्यां—
 पशुपतये यजमानमूर्तये नमः। दक्षिणे—महादेवाय सोममूर्तये नमः।
 आग्नेय्याम्—ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः। इति अष्टदिक्षु गन्याक्षतपुष्पैः
 संपूज्य यथाशक्तिशिवपञ्चाक्षरमंत्रं जपित्वा जपार्पणम्—अनेन जपेन
 शिवः प्रीयताम्। प्रार्थना—शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं
 त्रिनेत्रं शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्। नार्गं
 पाशं च घंटं डमरुकसहितं चाङ्कुशं वामभागे नानालङ्कारयुक्तं स्फटिक-
 मणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥ १ ॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं
 वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वभेद-
 त्क्षमस्व जय जय करुणाव्ये श्रीमहादेव शंभो ॥ २ ॥ इति संप्रार्थ्य
 “ॐ प्रयातु भगवान्महादेवः” इति विसृज्य निर्माल्यमभिवन्द्य ॥ अर्पणम्-
 अत्राय० अनेन पार्थिवलिङ्गपूजनकृतेन श्रीसाम्भसदाशिवः प्रीयताम् ॥
 ततो निर्णेजोदकं पात्रे आदाय पिबेत्—कालमृत्युहरं पुण्यं ब्रह्मइत्या-
 विनाशनम्। व्याधिघ्नं पुण्यदं पास्ये शिवनिर्णेजोदकम् ॥ इति निर्मा-
 ल्यपुष्पादिकं लिङ्गं च नद्यादौ जलमध्ये क्षिपेत् ॥

॥ इति शिवपार्थिवेश्वरचिन्तामणिपूजाप्रयोगः ॥

॥ ७२ ॥ अथ गायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः ॥

कर्ता प्रारंभात्पूर्वदिने नित्यकर्म समाप्य सुमुहूर्ते गृहे तीर्थादौ विद्व-
 वृक्षाश्रये वा गत्वा। आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकाष्ठौ संकीर्त्य

करिष्यमाणगायत्रीपुरश्चरणे अधिकारासिद्धयर्थं कृच्छ्रत्रयममुकप्रत्या-
 म्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ इति संकल्प्य धेनुदानहोमसुवर्णादिप्रत्या-
 म्नायविधिना कृच्छ्राणि संपादयेत् ॥ पुनर्देशकालौ संकीर्त्य मम सक-
 लपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चतुर्विंशतिलक्षजपात्मकं गायत्री-
 पुरश्चरणं स्वयं विप्रद्वारा वाऽहं करिष्ये ॥ तदंगत्वेन गणपतिपूजनं स्वस्ति-
 पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धमाचार्यादिजपकर्तृवरणं च करि-
 ष्ये ॥ इति संकल्प्य सुमुखश्चेत्यादिना गणपतिपूजनादि नान्दीश्राद्धान्तं
 च विधाय नान्दीश्राद्धान्ते “सविता प्रीयताम्” इति पठित्वा देशकालौ
 संकीर्त्य गायत्रीपुरश्चरणे “जपकर्तारं त्वामहं वृणे” इति पृथक् पृथक् स्वयं
 जपार्थं विमान्दृशुयात् ॥ ततस्तान्वद्वासनकमंडलमालादिभिः संपूज्य देव-
 ताः प्रार्थयेत् ॥ सूर्यः सोमो यमः कालःसंध्ये भूतान्यहः क्षपा ॥ पवमानो
 दिक्पतिर्भूराकाशं खेचरामराः ॥ ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्नि-
 धिम् ॥ इति पठित्वा ततः कुशाद्यासनोपविष्टः पवित्रपाणिराचम्य देशकालौ
 स्मृत्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकशर्मणो मम यजमानस्य वा सकल-
 पापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गायत्रीपुरश्चरणान्तर्गतामुकसंख्या-
 परिमितगायत्रीजपं करिष्ये ॥ इति प्रत्यहं जपार्थं संकल्प्य ॥ पूर्वोक्तरीत्या
 भूतशुद्ध्यादिमहान्यासान् कृत्वा भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्याश्च पूजनमपि
 निर्वर्त्य जपार्थं ब्राह्मणान् उपवेश्य शापमोचनं चतुर्विंशतिमुद्राणां प्रद-
 र्शनादिकञ्च समाप्य मूलमंत्रेण आचमनं प्राणायामश्च कृत्वा न्यासांश्च
 कुर्यात् ॥ ॐ तत्सवितुरिति गायत्र्या विश्वामित्रऋषिः सविता देवता गायत्री
 छंदः जपे विनियोगः ॥ ॐ विश्वामित्राय ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्री-
 छंदसे नमो मुखे । ॐ सवितृदेवतायै नमो हादि ॥ इति न्यस्य ॐ तत्स-
 वितुरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ भर्गो देवस्य

मध्यमाभ्यां न० ॥ ॐ धिमहानामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धियोद्योः कनिष्ठिका-
 भ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां न० ॥ इति करन्यासं कृत्वा एव-
 मेव हृदयादिपदंगन्यासं कुर्यात् । स यथा— ॐ तत्सवितुरिति हृदयाय नमः
 ॥ १ ॥ ॐ वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भर्गो देवस्येति शिखायै वषट्
 ॥ ३ ॥ ॐ धीमहीति कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ धियो सो नः इति नेत्रयोवौषट्
 ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयादिति अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ततो जपार्थं रुद्राक्षमालां मूल-
 मन्त्रेण संमोक्ष्य ॐ माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्वर्गस्त्व-
 यि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव । इति प्रार्थ्य ॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले
 त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ॥ जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥
 इति तामादाय मंत्रदेवतां सवितारं ध्यायन् हृदयसमीपे मालां धारयन्
 मंत्रार्थं स्मरन्मध्यादिनावधि जपेत् ॥ अतित्वरायां सार्द्धत्रयमहरावधि
 जप्त्वाऽन्ते पुनः प्रणवमुक्त्वा “ ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा
 भव ॥ शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ” ॥ १ ॥ इति मालां
 शिरसि निधाय त्रिः प्राणानायम्य पूर्वोक्तं न्यासत्रयं कृत्वा सुरभिर्ज्ञानं
 इति अष्टौ मुद्राः प्रदर्शयेत् । जपमीश्वरायार्पयेत् ॥ प्रत्यहं समानसंख्यया
 एव जपो न तु न्यूनाधिकः ॥ उच्चमजपो द्विसाहस्रः मध्यमः सान्दर्द्धद्विसाहस्रः
 अधमस्त्रिसाहस्रो ज्ञेयः ॥ एवं पुरश्चरणजपसमाप्तौ होमः ॥ पुरश्चरणसां-
 गतासिद्धयर्थं होमविधिं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य पीठे
 कलशस्थापनान्तं सूर्यादिनवग्रहपूजनादि कर्म कृत्वा कुशकण्डिकां कुर्यात् ।
 ततः आज्यभागानि इदं हवनीयद्रव्यमन्वाधानोक्तदेवताभ्योऽस्तु न
 ममेति यजमानद्वारा त्यागं कृत्वा अर्कादिसामिचर्वाज्याहुतिभिर्ग्रहहो-
 मं संपाद्य प्रधानदेवतां सवितारं चतुर्विंशतिसहस्रतिलाहुतिभिस्त्रिसहस्रसं-
 ख्ययाकाभिः पायसाहुतीत्योदनाहुतिभिर्घृतमिश्रतिलाहुतिभिर्दूर्वाहुतिभिः

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवरसमिधाहुतिभिश्च हुत्वा शेषेण स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् ॥
 होमे सप्रणवव्याहृतिरहिता स्वाहाता गायत्री । दूर्वात्रयस्यैकाहुतिः । दूर्वास-
 मिधो दधिमध्वाज्याक्ताः । ततो होमांते बलिदानं कृत्वा यजमानस्याभि-
 पेकः कार्यः ॥ तत प्रतिलक्षं सुवर्णानिष्कत्रयं तदर्धं वा शक्त्या वा दक्षिणा ॥
 होमांते जले देवं सवितारं संपूज्य होमसंख्यादशांशेन २४००० गायत्र्यंते
 “सवितारं तपर्यामि” इत्युक्त्वा तर्पणं कार्यम् ॥ तर्पणदशांशेन २४०० गाय-
 त्र्यन्ते “आत्मानमभिर्षिचामि नमः” इतियजमानमूर्ध्न्याभिपेकः । होमतर्प-
 णाभिपेकाणां मध्ये यदेव न संभवति तत्स्थाने तत्तद्विगुणो जपः कार्यः ॥
 अभिपेकसंख्यादशांशेन विप्रभोजनम् ॥ पुरश्चरणं संपूर्णमस्त्विति विप्रान्
 वाचयित्वा ईश्वरार्पणं कार्यम् । प्रत्यहं यज्जाग्रत इति शिवसङ्कल्पमंत्रस्य
 त्रिः पाठः ॥ कर्त्ता ब्राह्मणैः सह हविष्याशी सत्यवाक् अधःशायी ब्रह्म-
 चारी भवेत् ॥ विष्णुशयनमासेषु पुरश्चरणं न कार्यम् ॥ तीर्थादौ शीघ्रं
 सिद्धिः । विल्ववृक्षाश्रयेण जपे एकाहात्सिद्धिः ॥

॥ इति गायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः ॥

॥ ७३ ॥ अथ चतुर्विंशतिगायत्र्यः ॥

ब्रह्मगायत्री-ॐ तत्सवितु ॥ १ ॥ विष्णु-ॐ नारायणाय विद्महे । वानुदेवाय धीमहि ॥
 तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ २ ॥ शिव-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे । महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो शिवः
 प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ राम-ॐ दाशरथाय विद्महे । सीतावराय धीमहि ॥ तन्नो रामः प्रचोद-
 यात् ॥ ४ ॥ लक्ष्मण-ॐ दाशरथाय विद्महे । रमिलेशाय धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्
 ॥ ५ ॥ कृष्ण-ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे । वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ ६ ॥
 नृसिंह-ॐ नृसिंहाय विद्महे । वज्रदंताय धीमहि ॥ तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥ ७ ॥ जल-ॐ
 जलविंदाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि ॥ तन्नोऽम्बु प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ सूर्य-ॐ आस्कराय
 विद्महे । दिवाकराय धीमहि ॥ तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ ९ ॥ अग्नि-ॐ महाग्वालाय विद्महे ॥
 अग्निमग्नाय धीमहि ॥ तन्नः अग्निः प्रचोदयात् ॥ १० ॥ पृथ्वी-ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे । पृथ-
 वी

मूर्तये धीमहि ॥ ततोः पृथ्वी प्रचोदयात् ॥ ११ ॥ नारायण०—ॐ नारायणाय विद्महे । शेषसाधि-
 ने धीमहि ॥ ततो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ १२ ॥ हनुमन्ना०—ॐ अंजनीजाय विद्महे । वायुपुत्राय
 धीमहि ॥ ततो वीरः प्रचोदयात् ॥ १३ ॥ गरुडगा०—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे । स्वर्णपक्षाय धी
 महि ॥ ततो गरुडः प्रचोदयात् ॥ १४ ॥ देवी०—ॐ देवैः ब्रह्माण्यै विद्महे । महाशरत्स्यै च
 धीमहि ॥ ततो देवी प्रचोदयात् ॥ १५ ॥ गोपालगा०—ॐ गोपीप्रियाय विद्महे । वासुदेवाय
 धीमहि ॥ ततो गोपः प्रचोदयात् ॥ १६ ॥ परशुराम०—ॐ जामदग्न्याय विद्महे । महावीराय
 धीमहि ॥ ततो विप्रः प्रचोदयात् ॥ १७ ॥ तुलसी०—ॐ तुलसीपत्रायै विद्महे । विष्णुप्रियायै
 धीमहि ॥ ततो वृन्श प्रचोदयात् ॥ १८ ॥ गुरु०—ॐ परब्रह्मणे विद्महे । गुरुदेवाय धीमहि ॥
 ततो गुरुः प्रचोदयात् ॥ १९ ॥ आकाश०—ॐ आकाशाय विद्महे । नभोदेवाय धीमहि ॥ ततो स
 दि प्रचोदयात् ॥ २० ॥ चन्द्र०—ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे । अमृतत्वाय धीमहि ॥ तत्रथंश्रः प्रचो-
 दयात् ॥ २१ ॥ इंश्र०—ॐ परमहृषाय विद्महे । महत्तत्त्वाय धीमहि ॥ ततो इंश्रः प्रचोदयात्
 ॥ २२ ॥ लक्ष्मी०—ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे । विष्णुप्रियायै धीमहि ॥ ततो लक्ष्मीः प्रचोदयात्
 ॥ २३ ॥ गंगा०—ॐ भागीरथ्यै च विद्महे । विष्णुपत्न्यै च धीमहि ॥ ततो गंगा प्रचोदयात् ॥
 ॥ २४ ॥ इति चतुर्विंशतिगायत्र्यः ॥

॥ ७४ ॥ शताक्षरागायत्रीमन्त्रः ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ जातवेदसेऽन्नवामसोऽममरातीत्यतो निदहाति वेदः । सनः पर्यदति-
 दुर्गाणि विधानावेवमिन्द्रुदुरितात्मिभिः ॥ ॐ त्र्यम्बकं सुजातमे सगान्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारक-
 मिवन्ननान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

॥ ७५ ॥ वेदाधिकाररहितानां गायत्रीमन्त्रः ॥ ॐ यो देवः सविताऽस्माकं
 मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ॥ प्रचोदयति तद् भर्गो वरेण्यं समुपास्महे ॥

॥ ७६ ॥ जपसिद्धयर्थं नियमाः ॥ शान्तः स्वरासस्युक्तो विन्दुमूषितमस्तकः । प्रसा-
 दाख्यो मनुः प्रोक्तो भजता कल्पभूढः । मनःसंवरणं शौचं मोहनं मन्त्रार्थचिन्तनम् । अव्यप्रल-
 मनिर्वेदो जपसप्तह्निदेवः ॥ धीरो धृतव्रतो मौनी जितक्रोधो जितेन्द्रियः । धीतवासास्त्वध शान्ति-
 यदलोके महीयते ॥

॥ ७७ ॥ जपफलम् ॥ - शूढं शैक्युणः प्रोक्तो गोष्ठे दशगुणः स्मृतः । अयुतं पवित्रं
 पुष्यं नद्या लक्षगुणो जपः ॥ कोटिर्दवालये प्राप्ते अनन्त शिवसन्निधौ । एवं यः प्रत्यां
 कुर्व्याच्छिवमयुज्यमान्पुयात् ॥ यस्मिन् स्थाने जपं कृत्वा शक्तो हरति तज्जपम् । तन्मृदा लक्ष-
 कुर्वीत स्रष्टे तिलकाकृति ॥

॥ ७८ ॥ अथ सन्तानगोपालमंत्रजपविधिः ॥

अस्य श्रीसंतानगोपालमंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः ।
 श्रीकृष्णो देवता । ग्लौं वीजम् । नमः शक्तिः ॥ मम (यजमानस्य वा)
 संतानगोपालप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ॥ न्यासः— ॐ देवकीसुत
 गोविंद हृदयाय नमः ॥ ॐ वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा ॥ ॐ देहि
 मे तनयं कृष्ण शिखायै वपद् ॥ ॐ त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम् ॥
 ॐ नमः अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तमर्जुनेन
 समन्वितम् ॥ समर्पयंतं विप्राय नष्टानानीय बालकान् ॥ १ ॥ मंत्रोद्धारः ॥
 ॐ (श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं) देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते । देहि मे
 तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १ ॥ (मंत्रमहोदधौ) लक्षं जपो-
 ऽयुतं होमस्ति लैर्मधुरसंयुतैः ॥ अर्चा पूर्वोदिता चैवं मंत्रः पुत्रप्रदो
 नृणाम् ॥ १ ॥ इति मूलमन्त्रः ॥ इति संतानगोपालमंत्रजपविधिः समाप्तः ॥

॥ ७९ ॥ अथ (सर्वारिष्टशान्त्यर्थं) महामृत्युञ्जयजपविधिः ॥

आसने उपविश्य शिखां बद्ध्वा रुद्राक्षमालां भस्मपवित्रे च धृत्वा आच-
 म्य प्राणानायम्य ललाटे तिलकं कृत्वा शान्तिपाठं पठित्वा गणेशदीन-
 मस्कृत्य सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा देशकालौ सङ्कीर्त्य अघेत्यादि ० मम यज-
 मानस्य वा शरीरे स्थितस्य अमुकरोगस्य समूलनाशनेन अपमृत्युनिवार-
 णार्थं क्षिप्रमारोग्यमाप्त्यर्थं विषमस्थानस्थितसकलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्यु-
 ञ्जयदेवताप्रीत्यर्थम् अमुकप्रणवयुतमहामृत्युञ्जयजपं स्वयं ब्राह्मणद्वा-
 रा वा अमुकसंख्ययाऽहं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं

१ चर्यब्राह्मणाः—वाणः कुटी सदाऽशुद्धः स्वयंभूः श्यामदन्तकः । क्लीबो ऽपि
 पतितः कृष्णः कुनखी शास्त्रवर्जितः ॥

मातृकापूजनं वसोर्धाराद्युप्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धम् आचार्यादिवरणं च करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य ब्राह्मणवरणान्तं कृत्वा हस्ते जलमादाय-अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वसिष्ठऋषिः श्रीमृत्युञ्जयरुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः हौं वीजं जूंशक्तिः सः कीलकं मृत्युञ्जयप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ इति संकल्प्य यथाशक्ति न्यासान् कुर्यात् यथा-वसिष्ठऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदये । हौं बीजाय नमः गुह्ये । जूं शक्तये नमः पादयोः । सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु ॥ ॐ ऽयं वक्रम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ षजामहे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः । ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥ ॐ ऽयम्बकं हृदयाय नमः ॥ ॐ ऽयजामहे शिरसे स्वाहा । ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं शिखायै वषट् । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुम् । ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ मामृतात् अस्त्राय फट् ॥ 'ध्यानम्'—चन्द्रोद्भासितमूर्धनं सुरपतिं पीयूषपात्रं महद्दस्ताब्जेन दधन्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केतहम् ॥ सूर्येन्दुगिबिलोचनं करतलैः वाशाक्षमूत्राङ्कुशाभोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥१॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि । ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि । ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि । ॐ सं सर्वात्मकं मंत्रपुष्पं समर्पयामि ॥ मृत्युञ्जयं पूजयित्वा निम्नदर्शितप्रकारत्रयात्मकमन्त्राणाम् अन्यतमेन जपानुष्ठानं विधेयम् ॥

अथ मृत्युञ्जयमन्त्रः—॥१॥ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ ऽयम्बकं ऽय-

जामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनाद्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
 ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ । इत्यष्टचत्वारिंशद्दर्पात्मकः केवलमृत्युञ्ज-
 यमन्त्रः अष्टप्रणवयुतः ॥२॥ अथ द्वितीयो मृतसञ्जीवनीमृत्युञ्जयमन्त्रः—
 ॐ ह्रीं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥
 उर्वारुकमिव बन्धनाद्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः
 जूं ह्रीं ॐ इति द्विपञ्चाशद्दर्पात्मको मृतसञ्जीवनीमन्त्रः षट्प्रणवयुतः ॥३॥
 तृतीयो महामृत्युञ्जयमन्त्रः— ॐ ह्रीं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः
 ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनाद्मृत्यो-
 र्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रीं ॐ
 स्वाहा ॥ इति द्विपष्टिवर्णात्मको महामृत्युञ्जयमन्त्रश्चतुर्दशप्रणवयुतः ॥
 जपसमाप्त्यनन्तरं पूर्वोक्तान् उत्तरन्यासान् कृत्वा देवाय जपनिवेदनं
 कुर्यात् । यथा—गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भ-
 वतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति जपं निवेद्य प्रार्थयेत्—मृत्युञ्जय
 महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् । जन्ममृत्युजराव्याधिपीडितं कर्मव-
 न्धनैः ॥ 'अर्पणम्'—अनेन यथासंख्याकेन महामृत्युञ्जयजपारूपेण
 कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम ॥ ततो जपसांगतासिद्धयर्थं
 यथाकामनाद्रव्येण तद्दशांशदुग्धाज्यसिक्तापामार्गसामिद्धिर्होमस्तद-
 शांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥
 पुराणोक्तमृत्युञ्जयमन्त्रः— ह्रीं मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणाग-
 तम् ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिपीडितं कर्मवन्धनैः ॥

॥ इति महामृत्युञ्जयजपविधिः ॥

१ कामनाविशेषपरत्वे 'होमद्रव्याणि'—पुत्रार्थे शाल्वीजेन धनार्थे
 विन्धपत्रकैः । इर्वाभिराणुष्कामस्तु पुष्टिकामस्तु वेतसैः ॥ कन्याकामस्तु लाजामिः पशुकामो
 घृतेन तु ॥ विद्याकामस्तु पालशैर्दशांशेन तु होमयेत् ॥ धान्यकामो यवैश्च गुग्गुलेन रिपुहृत्वे ।
 तिलैरारोग्यकामस्तु व्रीहिभिः सुखमश्नुते ॥

॥ ८० ॥ अथ (संक्षेपतो) वेदोक्तसवीजनवग्रहमन्त्रजपप्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य सङ्कल्पः—विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो
महापुरुषस्य० शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः यजमानस्य वा जन्मराशेः नाम-
राशेः सकाशाद्वा जन्मलगाद्दर्पलगाद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्टस्थानस्थि-
तामुकग्रहपीडापरिहारद्वारा तृतीयैकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्य-
र्थम् आयुरारोग्यप्राप्त्यर्थं च अमुकग्रहस्य अमुकसङ्ख्यया जपं करिष्ये ॥
इति सङ्कल्प्य जपं कुर्यात् ॥

सूर्यमन्त्रजपप्रयोगः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरसऋषिः त्रिष्टु-
च्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सः
ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेन रजसां चर्त्तमानो निवेशयन्नसृत्तम्पर्यञ्च ॥
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानिपश्यन् । ॐ
स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ सूर्याय नमः ॥ १३ ॥ अस्य जप-
सङ्ख्या सप्तसहस्राणि ७००० ॥ जपान्ते अर्कसमित्तिलपायसघृतैर्दशाः
शहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥
अथ दानद्रव्याणि—माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुम्भवासागुहहेमता-
म्रम् ॥ आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि सुदीप्तघाम्ने ॥ १॥

चन्द्रमन्त्रजपप्रयोगः—इममित्यस्य देववातऋषिः अत्याष्टिच्छन्दः
चन्द्रो देवता चन्द्रप्रीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ श्रौं श्रीं श्रींसः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ इमन्देवाऽअसप्तत्वनदिः सुवदूध्वम्महुतेक्षत्राय महतेज्ज्यैष्ठ्याय महतेजान-
राज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्ण्यं पुत्रममुष्ण्यैः पुत्रमस्यैः विशऽपुषवो-
मीराजा सोमोस्मार्कः ब्राह्मणा नाराजा । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः श्रीं श्रीं
श्रीं ॐ सोमाय नमः ॥ १६ ॥ जपसङ्ख्या एकादशसहस्राणि ११००० ॥

जपान्ते पलाशसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि—सदृशपात्रस्थिततन्दुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवह्मम् । गवोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद् घृतपूर्णकुम्भम् ॥ २ ॥

भौममन्त्रजपप्रयोगः—अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाक्षऋषिः गायत्री-च्छन्दः भौमो देवता भौमपीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ क्रौं क्रौं क्रौंसः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ अग्निर्मूर्द्धादिव? कृकुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाँ रेताँ सिजिन्वति । ॐ स्वःभुवःभूः ॐ सःक्रौं क्रौं क्रौं ॐ भौमाय नमः ॥ १३ ॥ जपसङ्ख्या दशसहस्राणि १०००० ॥ जपान्ते खदिरसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि—प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम् । आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं च भौमाय वदन्ति दानम् ॥ ३ ॥

बुधमन्त्रजपप्रयोगः—उद्बुधयस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता बुधपीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रौं ब्रौं ब्रौं सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ उद्बुधयस्वाग्नेऽपतिजागृहिच्वमिष्टापुत्तंसृष्टं जेथामयश्च ॥ अस्मिन्सधस्त्येऽअद्बुधुत्तरस्मिन्निहभ्वेदेवायर्जमानश्चसीदत । ॐ स्वःभुवःभूः ॐ सः ब्रौंब्रौंब्रौं ॐ बुधाय नमः ॥ १४ ॥ जपसङ्ख्या चतुःसहस्राणि ४००० ॥ जपान्ते अपामार्गसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि—चैलं च नीलं कलघातैकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम् । दासी च दन्तो द्विरदस्य नूनं वदन्ति दानं विधुनन्दनाय ॥ ४ ॥

शहस्पतिमन्त्रजपप्रयोगः—बृहस्पत इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः

त्रिपुच्छन्दः बृहस्पतिर्देवता बृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः॥ ॐ ज्रौं ज्रौं ज्रौं
 सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ बृहस्पतेऽअतिपदुर्घोऽअर्हाद्द्व्युपद्द्विभातिवक्रतुं-
 मज्जनेषु ॥ यद्दीद्यच्छर्वसऽरुनप्रजाततदुस्मासु द्वविणन्धेहिचित्रम् ।
 ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ज्रौं ज्रौं ज्रौं ॐ बृहस्पतये नमः ॥ ३६ ॥ जपसङ्ख्या
 एकोनविंशतिसहस्राणि १९००० ॥ जपान्ते अश्वत्थसमित्तिलपायस-
 घृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मण-
 भोजनम् । अथ दानद्रव्याणि-शर्करा च रजनी तुरङ्गमः पीतधान्यपि-
 पीतमम्बरम् । पुष्पराजलवणे च काञ्चन प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ ५ ॥

शुक्रमन्त्रजपप्रयोगः-अन्नात्परिस्त्रुत इति मन्त्रस्य अग्निसरस्वतीन्द्रा
 ऋषयोऽतिजगती छन्दः शुक्रो देवता शुक्रप्रीतये जपे विनियोगः ॥
 ॐ द्रौं द्रौं द्रौं सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसम्ब्रह्मणाव्युपिव-
 त्सत्रम्पयत्सोमम्प्रजापतिर्द ॥ ऋतेन सस्यमिन्द्रियं विवर्षान्शुक्रमन्त्रस्य
 इन्द्रस्येन्द्रियमिद्रम्पयोमृतमधु । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः द्रौं द्रौं द्रौं
 ॐ शुक्राय नमः ॥ ३७ ॥ जपसङ्ख्या षोडशसहस्राणि १६००० ॥ जपान्ते
 औदुम्बरसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन
 मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि-वित्राम्बरं
 शुभ्रतुरङ्गमथ धेनुश्च वर्जं रजतं सुवर्णम् । सुतण्डुलानुत्तमगन्धयुक्ता-
 न्वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ॥ ६ ॥

शनैश्वरमन्त्रजपप्रयोगः-शन्नोदेवीरिति मन्त्रस्य दृष्यद्दृष्टार्थवर्णश्रापिः
 गायत्रीछन्दः आपो देवता शनैश्वरप्रीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ स्वां स्वां
 स्वां सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ शन्नोदेवीरभिष्टंयत्स आपो भवन्तु प्रीतये ॥
 शंध्यो रभिसंरन्तु नर्द ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः स्वां स्वां स्वां ॐ शनैश्वराय

नमः ॥ ३६ ॥ जपसङ्ख्या त्रयोविंशतिसहस्राणि २३००० ॥ जपान्ते शमीसमितिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि-मापाथ तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलाः कुलित्या महिषी च लोहम् । कृष्णा च धेनू रविनन्दनाय दानं प्रदेयं विपमस्थिताय ॥ ७ ॥

राहुमन्त्रजपप्रयोगः-कयानथिन्न इति मन्त्रस्य वापदेवऋषिः गायत्री-छन्दः राहुदेवता राहुपीतये जपे विनियोगः ॥ ॐ भ्राँ भ्रीँ भ्रौँ सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ क्र्यां नश्चित्रऽ आभुवदुती सदाष्टधुंसखा ॥ कया शचिण्ड्यावृता । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौँ भ्रीँ भ्रौँ ॐ राहवे नमः ॥ ३७ ॥ जपसङ्ख्या अष्टादशसहस्राणि १८००० ॥ जपान्ते दूर्वासमितिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि-गोपेदरत्नं च तुरङ्गमथ सुनीलचैलं च सुनीलकम्बलम् । तिलाथ तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्मानवे दानमिदं प्रदेयम् ॥ ८ ॥

केतुमन्त्रजपप्रयोगः-केतुङ्कण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः आनिरुक्ता गायत्रीछन्दः केतवो देवताः केतुपीतये जपे विनियोगः-ॐ प्रौँ प्रीँ प्रौँ सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ केतुङ्कण्वन्नकेतवे पेशोमर्ष्याऽअपेशसे ॥ समुपदिद्धरजायथा ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः प्रौँ प्रीँ प्रौँ ॐ केतवे नमः ॥ ३८ ॥ जपसङ्ख्या सप्तदशसहस्राणि १७००० ॥ जपान्ते कुशसमितिलपायसघृतैर्दशांशहोमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ अथ दानद्रव्याणि-वैदूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलं चापि मदी मृगस्याशस्त्रं च केतोः परितोपहतोऽलागस्य दानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ९ ॥

॥ इति संक्षेपतो वेदोक्तसवीजनवग्रहमन्त्रजपप्रयोगः ॥

॥ ८१ ॥ अथ पुराणोक्तनवग्रहमन्त्राः ॥

अथ पुराणोक्तनवग्रहमन्त्राः-सूर्यमन्त्रः-जपाकुसुमसङ्काशं
 काश्यपेयं महाद्युतिम् ॥ तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
 चन्द्रमन्त्रः-दधिशंखतुपाराभं क्षीरोदार्वसन्निभम् ॥ नमामि शशिनं
 सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥ भौममन्त्रः-धरणीगर्भसम्भूतं विद्यु-
 त्कान्तिसमप्रभम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥
 बुधमन्त्रः-मियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ॥ सौम्यं सौम्यगु-
 णोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ गुरुमन्त्रः-देवानाञ्च ऋषीणाञ्च
 गुरुङ्गञ्चनसन्निभम् ॥ बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥
 शुक्रमन्त्रः-हिमकुन्दमृगालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं
 मार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥ शनैश्वरमन्त्रः-नीलाञ्जनसमाभासं
 रविपुत्रं यमाग्रजम् ॥ छायामार्तण्डसम्भूतं तन्नमामि शनैश्वरम् ॥ ७ ॥
 राहुमन्त्रः-अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ॥ सिंहिकागर्भसम्भूतं
 तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥ केतुमन्त्रः-पलाशपुष्पसङ्काशं तारका
 ग्रहमस्तरुम् ॥ रौद्रं राद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥

॥ इति पुराणोक्तनवग्रहमन्त्राः ॥

। इति श्रावर्णाप्रयोगसहितो विविधमन्त्रात्मकः पञ्चमो विभागः

समाप्तः ॥

॥ अथ षष्ठो विभागः ॥

॥ ग्रहशान्तिसहितषोडशसंस्कारात्मकः ॥

॥ ८२ ॥ अथ ग्रहशान्तिप्रयोगः ॥

कृतमङ्गलस्रानः स्वलङ्कृतः सम्भृतमङ्गलसम्भारः कृतनिर्णेजान्त-
पञ्चमहायज्ञान्तनित्यक्रियः परिहिताहतसोत्तरीयवासा यजमानो मङ्गल-
रङ्गवल्लीमण्डितशुद्धस्थले श्रीपर्ण्यादिपशस्तदारुनिर्मिते कुशोत्तरकम्ब-
लाद्यास्तृते स्वासने ऊर्णवस्त्राच्छादिते पीठे प्राङ्मुख उपविश्य पत्नीं स्वद-
क्षिणतः प्राङ्मुखीमुपवेशयेत् ॥ शिखां बद्ध्वा कुशपवित्रधारणम् पवित्रे-
स्थो० ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥

यजमानललाटे तिलकं कुर्यात्—ॐस्वस्तिनुऽइन्द्रो० । भद्रमूक्तं पठेत्
॥८३॥ भद्रसूक्तम् ॥ ॐआनोभुद्रा?वक्रन्वोयन्तुष्टिश्चतोदच्छासोऽ
अपर्णीतासऽउदद्भिर्दः ॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसुन्नर्मायुवोरक्षिता-
रोद्विवेदिवे ॥ १५ ॥ देवानाम्भुद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानां०रातिरुभि-
नोनिर्वर्त्तताम् ॥ देवानां०सुमरुयमुपसेदिमाद्ययन्देवानुऽआयुऽमति-
रन्तुर्जीवसे ॥ १५ ॥ तान्पूर्व्यानिविदाहूपहेष्टयम्भर्गाम्भिन्नमादितिन्दर्क्ष-
मुक्षिर्धम् ॥ अर्घ्यमणंवरुणऽसोममश्विनासरस्वतीनऽ सुभगामयस्करत्
॥ १५ ॥ तन्नोवार्तोमयोभुवस्तुभेषुजन्तन्मातापृथिवीतस्पिताद्घौशतद्द-
ग्रावाणऽ सोमसुतोमयोभुवस्तर्दश्विनाश्रुणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ १५ ॥
तमीशानुजगतस्तुस्त्युपस्पतिन्धियाञ्जिद्वमवसेहृमहेष्टयम् ॥ पूयानोव-
थावेदसामसद्दुधेरिक्षितापापुरदक्षदस्वस्तये ॥ १५ ॥ स्वस्तिनुऽइन्द्रो-
वृद्धश्रवाऽस्वस्तिर्नः—पुषाष्टिश्चवेदाऽ ॥ स्वस्तिनुस्ताक्षुर्योऽआरिष्टनेमि-

विस्तरः प्रयोगः कर्तव्यवेदस्माकं ग्रहशान्तिप्रयोगो द्रष्टव्यः ॥

८स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दिधातु ॥ ३९ ॥ पृषदम्भामरुतुं पृश्निमातरं शुभ्रं
 व्यावानो विद्वथे पुजगर्भय ॥ अग्निजिह्वाभनवुं मूर्चसुो विम्बेनो-
 देवाऽअवुसार्गमन्निह ॥ ३९ ॥ भुद्रङ्कणोभिंशृणुयापदेवाभुद्रम्पश्ये-
 माक्षभिर्व्वजन्ना ॥ स्थिरैरङ्गैस्नुष्टुवां सस्तनूभिर्व्व्यग्रे महिदेवहितुं व्य-
 दायुः ॥ ३९ ॥ शतमिन्नशुरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्रानुरसन्तनूनाम् ॥
 पुत्रासोयत्रपितरोभ्रन्तिमानोमुद्रथारो रिपुतायुर्गन्तो ॥ ३९ ॥ अदिति-
 द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिम्मातासपितासपुत्रः ॥ विम्बेदेवाऽअदिति-
 लंपञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्जनैश्चम् ॥ ३९ ॥ यौ शान्ति-
 रुन्तरिशुशान्तिः पृथिवीशान्तिरापुंशान्तिरोर्षधयुं शान्तिः ॥ वृत्त-
 स्पर्तयुं शान्तिर्व्विम्बेदेवाः शान्तिर्व्वृक्षशान्तिः सव्यंशान्तिः शान्तिरु-
 वशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ३९ ॥ यतोयतं सुमीहसेतोनोऽअर्भयंकुरु ॥
 शन्नं कुरुष्मजाव्योर्भयन्नं पशुर्भयं ॥ ३९ ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥ ततः
 सुमुखश्चेत्यादिना गणेशगुर्वादीन्मस्कृत्य ॥ (एतत् शिवपञ्चायतन-
 पूजाप्रयोगे २९ तमे पृष्ठे द्रष्टव्यम्) संकल्पं कुर्यात् ॥

॥८४॥ सङ्कल्पः—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतोऽशेषेषु ग्रहेषु
 यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभ-
 पुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिरमृतिपुराणोक्तकलमाप्त्यर्थं मम गुतस्य
 करिष्यमाणे उपनयने ग्रहानुकूलतासिद्धयर्थं ग्रहशान्तिं करिष्ये ॥

पुनर्जलमादाय—तदङ्गतया गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनम्
 अग्निपूजनं मण्डपदेवतापूजनं मातृकापूजनं वसोर्दारापूजनम् आपुष्य-
 मन्त्रजपं नान्दीभ्रातृं घ्रात्पाचार्यं क्रतिम्बरणं त्रिशूलं पंचगव्यकरणं

भूमिपूजनमग्निस्थापनं ग्रहस्थापनं च करिष्ये ॥ पुनर्जलमादाय—तत्रादी
दिग्रक्षणं कलशार्चनं च करिष्ये । दिग्रक्षणं कलशार्चनं दीपपूजनं च
(३१-३५ पृष्ठे द्रष्टव्यानि)

॥८५॥ गणपतिपूजनम् । ताम्रपात्रे सिद्धिवुद्धिसहितं महागणपतिं
संस्थाप्य ध्यानम्-उच्चैर्ब्रह्माण्डखण्डद्वितयसहचरं कुम्भयुग्मं दधानं प्रेह्वं
नागारिपक्षप्रतिभटविकटश्रोत्रतालाभिरामम् ॥ देवं शम्भोरपत्यं भुजगप-
तितनुस्पर्धिवर्धिष्णुहस्तं ध्याये पूजार्थमीशं गणपतिममलं धीश्वरं कुञ्जरा-
स्यम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिवुद्धिसहितमहागणपतये नमः ध्यायामि ॥
आवाहनम्-ॐ गुणानान्त्वा० ॥ ॐ भू० सि० म० आवाहयामि ॥ आसनम्-
ॐ वर्ष्मोऽस्मिसमानानामुद्यतामिवमूर्धः । इमन्तमभितिष्ठामिवोमाकथाभि-
दासति । ॐ भू० सि० म० आसनं समर्पयामि ॥ पाद्यम्-ॐ पुतावानस्य० ।
ॐ भू० सि० म० पाद्यं समर्पयामि ॥ अर्घ्यम्-ॐ घामन्तेविश्वम्भु-
र्वनुमर्धिश्श्रुतमुन्तसमुद्रेहद्वन्तरायुपि ॥ उपामनीकेसामिधेयऽआभृत-
स्तमंशश्यामुपधुमन्तन्तऽकुर्मिम् ॥ ११॥ ॐ भू० सि० म० अर्घ्यं स० ॥
आचमनीयम्-ॐ इमर्मेव्वरुणश्शुधीहर्वमुदद्याचमृदय । त्वामं वस्युराचके
॥ ११॥ ॐ भू० सि० म० आचमनीयं स० ॥ पयःस्नानम्-ॐ पयसो-
रूपं यद्वर्वादुद्धनोरूपं कुर्कन्धूनि ॥ सोमस्य रूपं वाजिनऽसुम्यस्य रूपमा-
मिसां ॥ ११॥ ॐ भू० सि० म० पयःस्नानं स० । पयःस्नानान्ते शुद्धोदक-
स्नानं स० । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं स० ॥ दधिस्नानम्-ॐ
दुधिक्राव्णोऽअकारिपञ्जिण्णोरश्वस्यव्वाजिनः ॥ सुरभिन्नो मुखी करु-
चमणऽआपूर्पितारिपत् ॥ ११॥ ॐ भू० सि० म० दधिस्नानं स० ॥ घृतस्ना-

नम्-ॐ धृतैनाञ्जन्तसम्पद्योदेवुयानान्प्रजानन्नुवाञ्जयत्पर्येतुदेवान् ॥ अनु-
 त्वासप्तेषुदिशं + सचन्ता ॐ स्वधामुस्मैवर्जमानायधेहि ॥ ३१ ॥ ॐ भू० सि०
 म० घृतस्नानं स० । मधुस्नानम्-स्वाहा मरुद्धिदं परिश्रीयस्वदिव १ सु ॐ स्पृश-
 स्वाहि । मधुमधुमधु ॥ ३२ ॥ ॐ भू० सि० म० मधुस्नानं स० ॥ शर्करास्नानम्-
 ॐ अवा ॐ रसमुद्द्वयस्र्मृद्यैसन्तं सुमाहितम् ॥ अवा ॐ रसं स्युयोरस-
 स्तं वी गृह्णाणाम्युत्तममुपशामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाणाम्युपतेवो-
 निरिन्द्रायत्वा जुष्टं तमम् ॥ ३३ ॥ ॐ भू० सि० म० शर्करास्नानं स० ॥ गन्धो-
 दकस्नानम्-ॐ गन्धुर्व्वस्वाविश्वश्वात्सु ६ परिदेधातु विश्वश्वस्यारिष्ट्यैष-
 र्जमानस्यपरिधिरस्युग्निरिहऽईहितः ॥ ३४ ॥ ॐ भू० सि० म० गन्धोदकस्ना-
 नं स० । उद्वर्तनस्नानम्-ॐ अदृगुनातेऽअदृशुः १ पृच्छ्यताम्पर्षपापर्षः ॥
 गुन्धस्तेसोमवतुमदायुरसोऽअन्युतदं ॥ ३५ ॥ ॐ भू० सि० म० उद्व-
 र्तनस्नानं स० ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य निर्मालयमुत्तरे
 विमृज्य अभिषेकः-ॐ आपोहि० योर्व० + तस्माम् ० ॐ अमृताभिषेकोऽ-
 स्तु । ॐ भूर्भुवःस्वाःसि० म० अभिषेकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानम्-
 ॐ शुद्धवात्सुर्षुशुद्धवालोपणिवालुस्तऽआमिश्रना १ श्येतं + श्येताक्षोरुण-
 स्तेरुद्राद्यं पशुपतेयकुर्गायामऽअवलिप्ताशौद्रानभोरूपात् पाञ्जिद्वया १
 ॥ ३६ ॥ ॐ भू० सि० म० शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ गणेशं वस्त्रेण प्रमृज्य
 रक्तवस्त्रप्रसारिते मृन्मये पीठे पट्टे वा अरुणाक्षतैर्गोधूमैर्वा कृतेऽएदके
 पद्मे गन्धानुलेपनपूर्वकं संस्थाप्य वस्त्रम्-ॐ सुजातौ ज्योतिषासुहृश-
 र्म्व्वरुंध्रमासंदुत्स्व + ॥ वासोऽअग्नेष्टिभ्रुर्षुसंव्ययस्वन्विभावसो
 ॥ ३७ ॥ ॐ भू० सि० म० वस्त्रं स० ॥ वस्त्रान्ते आ० स० ॥ उपवी-
 तम्-यज्ञोपवीते परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमार्गं

१ गणपरयवर्षोपेण अभिषेकः कर्तव्यश्चेदस्मिन् पुस्तके स्तोत्रविभागे ४७२ तमे पृष्ठे
 द्रष्टव्यम् ॥

पतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सि० म०
यज्ञो० समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतान्ते आ० स० ॥ गन्धम्-ॐ त्वाङ्गन्धु-
र्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिं- ॥ त्वामोपधेसोमोराजाबिद्वद्दान्य-
क्षमादमुच्यत ॥ १/२ ॥ ॐ भू० सि० म० गन्धं स० ॥ अक्षताः-ॐ अक्षु-
न्नमीमदन्तुहर्षप्रियाऽअधूपत ॥ अस्तौपतुस्वभानत्रोव्विप्रानविद्ध्या-
मुतीयोज्ञान्विन्द्रतेहरीं ॥ २/३ ॥ ॐ भू० सि० म० अक्षतान्स० ॥ पुष्पा-
णि-ॐ ओषधीं प्रतिमोदद्धूमपुष्पवतीं प्रसूवरीं । अश्वोऽश्वसुजि-
वरीर्वीरुधं पारायिष्णु- ॥ ३/४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सि० म० पुष्पाणि स० ॥
दूर्वाङ्कुराः-काण्डाकाण्डात्पुरोहन्तीपरुपटपरुस्पतिं ॥ पुवानोदूर्वेषत-
नुसहस्रेणशुतेनच ॥ ४/५ ॥ ॐ भू० सि० म० दूर्वाङ्कुरान्स० ॥ सौभा-
ग्यद्रव्याणि-ॐ अहिरिवभोगैः पर्व्येतिवाहुञ्जयायाहेतिम्परिवार्यमानं ।
हुस्तुग्नोविश्वोव्युनानिव्विद्वान्पुमान्पुमाँसुम्परिपातुव्विश्वतः-
॥ ५/६ ॥ ॐ भू० सि० म० सौभाग्यद्रव्याणि स० ॥ धूपः-ॐ अश्व-
स्यत्वावृष्णं शुकक्राधूपयामिदेव्यजनेपृथिव्या ? । मुखार्यत्वामुखस्य-
त्वाशीर्ष्णं ॥ अश्वस्यत्वावृष्णं शुकक्राधूपयामिदेव्यजनेपृथिव्या ? ।
मुखार्यत्वामुखस्यत्वाशीर्ष्णं ॥ अश्वस्यत्वावृष्णं शुकक्राधूपया-
मिदेव्यजनेपृथिव्या ? । मुखार्यत्वामुखस्यत्वाशीर्ष्णं ॥ मुखार्यत्वामुख-
स्यत्वाशीर्ष्णं ॥ मुखार्यत्वामुखस्यत्वाशीर्ष्णं ॥ मुखार्यत्वामुखस्यत्वा-
शीर्ष्णं ॥ ६/७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सि० महागणपतये नमः धूपमाघ्रापयामि ।
दीपः-ॐ चन्द्रमाऽअपस्वन्तरासुपुष्णोधावतोद्वि ॥ रुपिम्पिशङ्गम्बहुल-
म्पुरुस्पृहृहरिरोतिकनिःक्रदत् ॥ ७/८ ॥ ॐ भू० सि० म० दीपं दर्शयामि ॥
नैवेद्यम्-ॐ अन्नपतेन्नस्यनोदेह्यनसुवस्यं शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारन्तारि-
पुऽउज्जैन्नोयेहिद्विपदेचतुष्पदे ॥ ८/९ ॥ गायत्रीमन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य

धेनुमुद्रां प्रददर्शयं ग्रासमुद्रया—ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा
 ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा । ॐ भू० स्वः
 सि० म० नैवेद्यं निवेदयामि ॥ पूर्वापोशनं स० । नैवेद्यमध्ये पानीयम्—
 एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृह्णाण
 परमेश्वर ॥ ॐ भू० सि० म० मध्येपानीयं स० । उत्तरापोशनं स० ।
 हस्तप्रक्षालनं स० । मुखप्रक्षालनं स० । आचमनीयं स० । करोद्धर्तनार्थं
 गन्धं समर्पयामि ॥ मुखवासार्थं ताम्बूलं ॐ उतस्मास्युद्द्रवतस्तुरण्युतः
 पुष्पान्नवेरनुवातिप्रगुर्द्धिनः । इयेनस्यैवुद्धर्ततोऽभङ्गसम्परिदधिक्रा-
 षणं सुहोर्जातिरिब्रतुलं स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ भू० सि० म० ताम्बूलं स० ॥
 फलम्—ॐ वा ? फलिनीर्षाऽअफलाऽअपुष्पाचाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्प-
 तिप्रमृतास्तानोमुञ्चन्त्वष्टसह ॥ १६ ॥ ॐ भू० सि० म० फलं स० ॥
 दक्षिणा ॐ गृह्णतुत्सदा नुं चत्पुत्र्याश्च दक्षिणाः ॥ तद्गृह्णतुत्सदा नुं च
 र्मर्षणं स्वैवेपुनोदधत् ॥ १७ ॥ ॐ भू० सि० म० सुवर्णपुष्पदक्षिणा
 स० ॥ कर्पूरारतिवयम्—ॐ आरात्रिपार्थिवुद्धर्जन्पितुरंप्रायिधामभिः ॥
 दिवः सदा ॐ सिवृहतीवितिष्टसऽमात्वेपं चर्ततेतमः ॥ १८ ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः सि० म० कर्पूरारतिवयं दर्शयामि ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः—अञ्जलौ
 पुष्पाण्यादाय तिष्ठन् ॐ नयोगुणेऽभ्योगुणपतिभ्यश्च नमो नमो नमोऽत्राते-
 न्योऽत्रातेपतिभ्यश्च नमो नमो नमो गृह्णतुत्सदा नुं चत्पुत्र्याश्च दक्षिणाः ॥
 तद्गृह्णतुत्सदा नुं च र्मर्षणं स्वैवेपुनोदधत् ॥ १९ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
 सिद्धिबुद्धिसहितम० मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ प्रदक्षिणा-सप्तास्यां
 ॐ भू० सि० म० प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ अर्घपात्रे जलं प्रपूर्वं
 रक्तचन्दनपुष्पाक्षतसहितं नारिकेलं च धृत्वा विशेषार्थः—रक्ष रक्ष
 गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयकर्ता व्राता भव भवार्ण-

वात् ॥ द्वैमातुर कृपासिन्धो पाण्मातुराग्रज प्रभो । वरद त्वं वरं देहि
 वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥ अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः सि० म० विशेषार्घं स० ॥ प्रार्थना-विघ्नेश्वराय
 वरदाय सुरमियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय
 श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ नमस्ते
 ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः । नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय
 ते नमः ॥ विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तमियाय
 देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥ लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक-
 मिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ त्वां विघ्नशत्रुदलनेति
 च सुन्दरेति भक्तमियोति सुखदेति वरप्रदेति । विद्याप्रदेत्यघहरेति
 च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥ ॐ भू० सि० म०
 प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि । अनया पूजया सिद्धियुद्धिसहितः महा-
 गणपतिः साङ्गः सपरिवारः प्रीयतां न मम ॥

॥ इतिगणपतिपूजनम् ॥

॥ ८६ ॥ अथ पुण्याहवाचनप्रयोगः ॥

स्वपुरतः शुद्धायां भूमौ पञ्चवर्णैस्तन्दुलैर्वाऽष्टदलं कर्तव्यम् ॥ तत्र
 भूमिं स्पृष्ट्वा—ॐ महीद्वयोऽपृथिवीचनऽद्रुमध्यज्ञमिमिक्षताम् ॥ पिपृता-
 न्नोभरीमभिर्द ॥ १/२ ॥ तत्र यवप्रक्षेपः—ॐ ओषधयर्दसमवदन्तसोपे-
 नसुहराज्ञा ॥ यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तद्वराजन्पारयासि ॥ १/२ ॥ अष्ट-
 दलोपरि कलशस्थापनम्—ॐ आजिग्नकलशंमुद्यास्वाविशान्तिवन्द्व ॥
 पुनरूर्जानिर्वर्त्तस्वसानः सुहसन्धुवक्षत्रोरुधारापर्यस्वतीपुनर्माविशताद्
 यि? ॥ १/२ ॥ कलशे जलपूरणम्—ॐ वरुणस्योत्तमर्भनमसि वरुण-

स्यस्कम्भुसर्जनीस्थोव्वरुणस्यऽऋतसदंश्यासिव्वरुणस्यऽऋतसदंन-
 मसिव्वरुणस्यऽऋतसदंनमासीद ॥ ३६ ॥ गन्धप्रक्षेपः—ॐत्वाङ्गन्धर्वा-
 ऽअखनुँस्त्वामिन्द्रुस्त्याम्बृहुस्पतिः— ॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्राज्य
 र्मादमुच्यत ॥ ३६ ॥ धान्यप्रक्षेपः—ॐधान्यमसिधिनुहिदेवान्प्राणा-
 यन्वोदानायन्वा व्यानायन्वा ॥ दुर्ग्यामनुष्पसितिमायुपेधान्देवोव-
 सविताहिरण्यपाणिर्दंश्रतिर्गृष्णाचच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुपेत्वामहीना-
 म्ययासि ॥ ३७ ॥ सर्वोषधीप्रक्षेपः—ॐयाऽओषधीर्दंश्रुर्वाजातादेव-
 ष्यस्त्रियुगम्पुरा ॥ मत्तैनुवञ्छूणाप्रहृशतन्यामानिसप्तर्ष ॥ ३८ ॥
 दूर्वाप्रक्षेपः—ॐकाण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपहंपदंवरुणस्यारि ॥ एवानो
 दूर्वोऽप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ ३९ ॥ पञ्चपल्लवप्रक्षेपः—ॐअश्वत्येवो
 निपदंनम्पुष्पेर्वोवसतिष्कृता ॥ गोभाजुऽऽर्चिकलासथवत्स्रनवथपूरुपम्
 ॥ ४० ॥ सप्तमृदप्रक्षेपः—ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ वच्छ-
 न्दंश्रमैसप्तथादं ॥ ४१ ॥ फलप्रक्षेपः—ॐयाशुक्लिनीर्ष्याऽअफलाऽअ-
 पुष्पायाश्चपुष्पिणीर्दं ॥ बृहुस्पतिर्प्रमृतास्तानोमुञ्चन्वदंइसदं ॥ ४२ ॥
 पञ्चरत्नप्रक्षेपः—ॐपरिवाजपतिर्दंश्रुविरुग्निर्दंश्रुव्याज्यक्रमीत् ॥ दधु-
 र्नानिद्राशुषे ॥ ४३ ॥ हिरण्यप्रक्षेपः—ॐहिरण्यगर्भशेसमवर्त्तताग्नेभू-
 तस्यजातश्रुपतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीन्यामुत्तेमाङ्कस्मैदेवायहु
 विपाव्वियेम ॥ ४४ ॥ रक्तमूत्रेण वस्त्रेण च वेष्टयेत्—ॐयुवासुवासा परि
 वीतऽआगात्सऽऽश्रेयान्भवतिजायमानः॥तंधीरास कवयऽऽन्नयान्तिस्वा
 ध्योपनसादेवयन्तः । पा०गृ०का०२कं०२म०९ ॥ पूर्णपात्रमुपरि न्यसेत्
 -ॐपूर्णार्दंश्रिपरंपतसुपूर्णार्पुनरापत ॥ वृश्नेवविवर्कीणावहाऽऽपु-
 र्जीऽऽतःक्रतो॥ ४५ ॥ वरुणमावाहयेत्—ॐतत्रायामीत्यस्य शुन शेषश्रुपि
 त्रिपुल्लन्दः वरुणोदेवता वरुणावाहने विनियोगः । ॐतत्रायामिद्वहमणा-

वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्दिभः॥ अहं इमानो वरुणे हवो इधुहंशः सु-
मानऽआयुर्दं प्रमोपीदं॥ १८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं
सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि ॥ प्रतिष्ठापनम्-
ॐ मनोजुतिर्जुपतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्ष्यं ज्जमिमन्तनोऽस्वरीर्द्वेष्यं शङ्ख-
मिमन्दं धातु ॥ त्रिविधं देवासंऽइह मादयन्तामोऽम्पतिष्ठ ॥ १९ ॥ ॐ वरु-
णाय नमः वरुण सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय
नमः चन्दनं समर्पयामि ॥ इत्यादिपञ्चोपचारैः संपूज्य तत्त्वाधामीति
पुष्पाञ्जलिं समर्प्य अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम् ॥ ततः अनामिकाया
कलशं स्पृष्ट्वा अभिमन्त्रयेत्-कलशस्य मुखे० । कुक्षौ तु० । अङ्गैश्च
सहिता० । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ततो गायत्र्या-
दिभ्यो नमः इत्यनेन पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य कलशं प्रार्थयेत्-देवदानव-
संवादे० । त्वत्तोये० । शिवः स्वयं० । त्वयि तिष्ठन्ति० । साभिध्यं कुरु मे
देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय
मुमङ्गलाय । सुपाशहस्ताय शपासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक । पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं
सन्निधो भव ॥ ततः स्वस्तिवाचनार्थं युग्मं विप्रान्संपूज्य ॥ अवनिकृत-
जानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना
स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा वदेत्-ॐ श्रीणिपदाविवचं क्रमेव विष्णुं गुणोपाऽ-
अदांभ्यर्दं ॥ अतो धर्माणि धारयन् ॥ २० ॥ दीर्घा नागा नद्यो गिर-
यस्त्रीणि विष्णुपदानि च ॥ तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमा-
युरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ विप्रा वदेयुः-तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं
दीर्घमायुरस्तु ॥ एवं वारत्रयं कृत्वा कलशं भूमौ धान्यराशौ संस्थाप्य ॥
ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षितमस्तु ॥ शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवा

आपः ॥ सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।
 अस्त्वक्षतमरिष्टं च ॥ गन्धाः पान्तु सौमङ्गल्यं चास्त्विति भवन्तो
 ब्रुवन्तु । ॐ गन्धाः पान्तु सौमङ्गल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पान्तु
 आयुष्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ॐ अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु ॥
 पुष्पाणि पान्तु सौश्रियमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ॐ पुष्पाणि पान्तु
 सौश्रियमस्तु ॥ ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ।
 ॐ ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्तु ॥ पूगीफलानि पान्तु बहुफलमस्त्विति
 भवन्तो ब्रुवन्तु । ॐ पूगीफलानि पान्तु बहुफलमस्तु ॥ दक्षिणाः पान्तु
 बहुदेयं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ॐ दक्षिणाः पान्तु बहुदेयं
 चास्तु ॥ ॐ दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो
 वित्तं बहुपुत्रञ्चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ब्राह्मणा वदेयुः—ॐ दीर्घमायुः
 श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चास्तु । यज-
 मानो वदेत्—यद्भृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्माग्न्भाः शुभाः शोभना
 प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिङ्कृत्वा ऋग्यजुःसामाथर्वणाशीर्वचनं बहुश्रुषि-
 मतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । ॐ वाच्य-
 ताम् ॥ अथाशीर्वादः ॥ ब्राह्मणानां हस्तेष्वक्षतान्दद्यात् ॥ यजुः—ॐ
 भृद्द्रक्लृष्णेभिर्दृशुण्यामदेवाभृद्द्रम्पदशयेमासभिर्व्यजन्नात् ॥ स्थिरैरङ्गै-
 स्तुष्टुवा ॐ संस्तु नूभिर्व्यशेमहिदेवहितुष्यदायु— ॥ ३१ ॥ ॐ देवानाम्भु-
 द्द्रासुंमतिर्ऋजूयतान्देवानां ॐ रातिरभिन्नो निवर्त्तताम् देवानां ॐ सुवरय-
 मुपसेद्विमाव्ययन्देवानां ॐ आयुः ॐ पतिरन्तु जीवसे ॥ ३२ ॥ ॐ दूर्गायुस्तु ॐ
 ओषधेर्वन्तिनायस्मै च स्वाराशनाम्यहम् ॥ अथोच्चन्दीर्गायुंर्भुस्वाम्ना-
 तं वंशगिरोहतात् ॥ ३३ ॥ ऋक्—ॐ द्रविणोदाद्रविणसस्तुरस्यद्रवि-
 णोदाः सनरस्यप्रयंसत् ॥ द्रविणोदावीरवतीमिपंनोद्रविणोदारासतेद्वीर्घ-

मायुः ॥ अष्टक १६ ॥ यजुः-ॐ द्रविणोदाऽपिपीपतिजुहोतप्रचतिष्टुत ॥
 नेष्ट्राद्वतुभिरिष्यत ॥ ३३ ॥ ऋक्-ॐ सवितापथातात्सावितापुरस्तात्सावि-
 तोत्तरात्तात्साविताधरात्तात् ॥ सवितानःसुवतुसर्वतातिसवितानोरासता-
 दीर्घमायुः ॥ ७३ ॥ यजुः-ॐ सवितात्त्रासवानां सुवतामग्निर्गृहपती-
 नांसोमोव्वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रोज्ज्वैष्टुयायवृद्धऽप-
 शुब्भ्योमिन्नऽसस्योव्वरुणोधर्मपतीनाम् ॥ ३५ ॥ ऋक्-अनवोनवोभ-
 वतिजायमानोहोक्रेतुरुपसांमेत्यग्रम् ॥ भ्रागंदेवेभ्योविदधात्यायनप्रचन्द्र-
 मांस्तिरतेदीर्घमायुः ॥ ८३ ॥ यजुः-ॐ नतद्रसांसिनपिशाचास्त-
 रन्तिदेवानामोजं प्रथमजहोतत् । योत्रिभतिदाक्षायुणहिरण्यसदे-
 वेपुकुणुतेदीर्घमायुदंसमनुष्येपुकुणुतेदीर्घमायुः ॥ ३३ ॥ ऋक्-
 ॐ उच्चाद्विदक्षिणावन्तोऽसस्युर्येऽअं वदाःसहतेसूर्येण ॥ हिरण्य-
 दाऽअमृतत्वंभजतेत्रासोदाःसोमपतिरंतऽआयुः ॥ ८३ ॥ यजुः-
 ॐ उच्चातेजातमन्थसोद्विसद्भूम्याददे ॥ उग्रदृशर्ममहि-
 श्रवः ॥ ३६ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ + व्रतजपनियमतपःस्वाध्यायक्रतुदया-
 दमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ॥ * समाहि-
 तमनसः स्मः ॥ + प्रसीदन्तु भवन्तः ॥ प्रसन्नाः स्मः ॥ + ॐ शान्ति-
 रस्तु ॥ अस्तु ! ॥ ॐ पुष्टिरस्तु ॥ ॐ तुष्टिरस्तु ॥ ॐ शृष्टिरस्तु ॥ ॐ अवि-
 घ्नस्तु ॥ ॐ आयुष्यमस्तु ॥ ॐ आरोग्यमस्तु ॥ ॐ शिवं कर्मास्तु ॥ ॐ कर्म-
 समृद्धिरस्तु ॥ ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ धनधान्यस-
 मृद्धिरस्तु ॥ ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ अष्टसंपदस्तु ॥ ॐ अरिष्टनिरसन-
 मस्तु ॥ ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तदूरे प्रतिहतमस्तु ॥ ॐ यच्छ्रेय-
 स्नटतु ॥ ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॥ ॐ उत्तरोत्तरमदरहरमिष्टदि-

रस्तु ॥ ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्ताम् ॥ ॐ तिथि-
 करणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु ॥ पात्रे उदकसेकः ॥ ॐ तिथिकरण-
 मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे
 सग्रहे साधिदेवते प्रीयेताम् ॥ ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॥ ॐ आग्नि-
 पुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॥
 ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमापातरः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ अरुन्धतीपुरोगा एक-
 पत्न्यः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ ब्रह्मपुरोगाः
 सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ॥ ॐ श्रीसर-
 स्वत्यौ प्रीयेताम् ॥ ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ॥ ॐ भगवती कात्यायनी
 प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती ऋद्धिकरी
 प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती पुष्टिकरी
 प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवन्ती विघ्नविनायकौ
 प्रीयेताम् ॥ ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः
 प्रीयन्ताम् ॥ वहिः—ॐ हताश्च ब्रह्मद्विपः ॥ ॐ हताश्च परिपन्थिनः ॥
 ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः ॥ ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु ॥ ॐ शाम्यन्तु घोराणि ॥
 ॐ शाम्यन्तु पापानि ॥ ॐ शाम्यन्त्वधीतयः ॥ पुनः पात्रे—ॐ शुभानि वर्द्ध-
 न्ताम् ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु ॥ ॐ शिवा शतवः सन्तु ॥ ॐ शिवा ओषधयः
 सन्तु ॥ ॐ शिवा नद्यः सन्तु ॥ ॐ शिवा गिरयः सन्तु ॥ ॐ शिवा अतिथयः
 सन्तु ॥ ॐ शिवा अग्रयः सन्तु ॥ ॐ शिवा आहुतयः सन्तु ॥ ॐ अहोरात्रे
 शिवे स्याताम् ॥ यजुः—ॐ निक्रामेनिकामेन ऽपञ्चर्जन्योर्वर्षपुन्यफलव-
 स्योऽभोषधय ऽपच्यन्तौ ऽद्योगधेमोर्न—रुत्पताम् ॥ १३ ॥ ब्राह्मणम-
 ॐ निक्रामेनिकामेन ऽपञ्चर्जन्योर्वर्षपुन्यफलवस्योऽभोषधय ऽपच्यन्तामिति फलवत्योर्वैत-

त्रौपधयः पच्यन्ते यत्रैते न यज्ञे न यजन्ते यो गक्षेमो न कल्पतामिति यो गक्षेमो-
 वैतत्र कल्पते यत्रैते न यज्ञे न यजन्ते तस्माद्यत्रैते न यज्ञे न यजन्ते कल्पस्यै प्रजाना-
 यो गक्षेमो भवति ॥ ॐ शुक्राङ्गारकबुधवृहस्पतिशनैश्वरराहुकेतुसोमसहिता
 आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम् ॥
 ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् ॥ ॐ भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् ॥
 ॐ पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु ॥ ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु ॥
 ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु ॥ ॐ प्रातःमूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ॥
 ॐ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये । ॐ वाचयताम् ॥ ब्राह्म्यं पुण्यं महद्यच्च
 सृष्ट्युत्पादनकारकम् । वेदवृत्तौ च नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥ १ ॥ भो
 ब्राह्मणाः ! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमा-
 णाय मया क्रियमाणस्य ग्रहशान्त्यारूपस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो
 ब्रुवन्तु ॥ ॐ अस्तु पुण्याहम् । एवं त्रिः ॥ ऋक्-ॐ उद्गातेर्वशकुने-
 सामगायसि ब्रह्मपुत्रऽर्ध्वसर्वे नपुशंससि ॥ वृषे ववाजीशिशुमतीरपीत्या-
 सर्वतो नः शकुने भद्रमावदशिश्वतो नः शकुने पुण्यमावद ॥ २ ॥ यजुः-
 ॐ पुनन्तु मादेव जना पुनन्तु मनसा धियम् ॥ पुनन्तु षिन्वाभुतानि जातं-
 वेदं पुनीहि मां ॥ ३ ॥ ब्राह्मणम्-ॐ सयः कामयेत महत्प्राप्नुयामित्युद-
 गयन् ॐ आपूर्षमाणपक्षे पुण्याहेद्वादशाष्टपसद्व्रतीभुत्वौ दुर्वरे कष्टे च मसु-
 वासवो षधुः फलान्तीति सम्भृत्य परिसमूहपरिलिप्त्वा मिष्टपसमाध्यायावृता-
 ल्यर्षसंस्कृत्य पुर्षसान्क्षेत्रेण मन्यद्मन्त्री यजुहोति ॥ १ ॥ पृथिव्यामुद्धृतायां
 तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् । ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु
 नः ॥ २ ॥ भो ब्राह्मणाः ! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशी-
 र्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य ग्रहशान्त्यारूपस्य कर्मणः कल्याणं

भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ अस्तु कल्याणम् ॥ एवं त्रिः ॥ ऋक्—ॐ अपाः
सोमस्तपिन्द्रप्रयादिकल्याणीर्जायासुरर्णंगृहेत ॥ यत्रारथस्यबृहतो-
निधानंविषोचनंवाजिनोदोक्षिणावत् ॥ ३३ ॥ यजुः—ॐ यथेवावाच-
ङ्कल्याणीमावदानिजनैर्व्यपत् ॥ ब्रह्ममराजक्याख्यांशुद्रायचाध्या-
यचस्वायचारणायच ॥ मियोद्रेवानन्दक्षिणायैदातुरिहभूयासमयम्मे-
कामत्समृद्धयतामुपमादोर्नमतु ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणम्—ॐ अथाध्वर्यो-
प्रतिगरोरात्सुरिमेयजमानाभद्रमेभ्योयजमानेभ्योभूदितिकल्याणमेवैत-
न्मानुष्यैर्वाचोवदति ॥ २ ॥ सागरस्य यथा वृद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः
कृता । सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥ ३ ॥ भो
ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कूर्वाणाय आशीर्वचनमपे-
क्षमाणाय मया क्रियमाणस्य ग्रहशान्त्यारूपस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो
ब्रुवन्तु ॥ ॐ कर्म ऋद्धयताम् ॥ एवं त्रिः ॥ ऋक्—ॐ ऋद्धयामस्तो-
यंसनुयामवाजमानोमंत्रसरथेहोपयातम् ॥ यज्ञोत्पकंमधुगोध्वंतराभुता-
शोऽभिनोःकाममप्राः ॥ ८३ ॥ यजुः—ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्तु-
ऽऽयोतिर्मृताऽअभूम ॥ दिवम्पृथिव्याऽअद्वयारुहामाविदामद्रेवान्स्त्र-
ऽऽयोतिः ॥ ५३ ॥ ब्राह्मणम्—ॐ तऽऽत्तरस्यहुविर्दानस्यजघन्यायाङ्क-
वर्यांसापामिगायन्तिसत्रस्यऽऋद्धिरितिराद्धिमेवैतदभ्युत्तिष्ठन्त्युत्तर-
वेदेर्वोत्तरायांश्रोणावित्तरंतुऋत्तुत्तरम् ॥ ३ ॥ स्वस्तिस्तु याऽविनाशारुया
पुण्यकल्याणवृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥ ४ ॥
भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कूर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्ष-
माणाय मया क्रियमाणस्य ग्रहशान्त्यारूपस्य कर्मणः स्वस्तिं भवन्तो
ब्रुवन्तु ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति ॥ एवं त्रिः ॥ ऋक्—ॐ स्वस्तिरिद्धिप्रप-
थेश्रेष्ठरेवर्णस्वत्यभियाग्राममेति ॥ सानोऽअमासोऽअरणेनिपातुस्वावे-

शाभवंतुदेवगोषा ॥ ८५ ॥ यजुः—ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रोऽबुद्धप्रश्रवा ऽस्व-
 स्तिर्न+पुपाविवृभ्वेदाह ॥ स्वस्ति नस्ताक्षर्योऽअरिष्टनेमि ऽस्वस्ति नोवृ-
 हस्पतिर्दधातु ॥ ३५ ॥ ब्राह्मणम्—ॐ गानुञ्चज्ञाय गानुञ्चज्ञपतयऽइति-
 गानुञ्चोपयज्ञायेच्छति गानुञ्चज्ञपतये यो यज्ञस्य सऽस्थान्देवी स्वस्ति रस्तु-
 नः स्वस्तिर्मानुष्येभ्यऽइति स्वस्ति नो देवत्रास्तु स्वस्तिर्मानुष्यत्रेत्येवै तदा-
 होऽग्निगानुमेपजमित्यूर्ध्वो नो यज्यन्नो देवलोकज्यजत्वित्येवै तदा हश-
 न्नोऽअस्तु द्विपदेशञ्चतुष्पदऽइत्येतावद्वाऽइदऽसर्वज्यावद्द्विपाच्चैव चतुष्पा-
 चतस्माऽएवंतद्यज्ञस्य सऽस्थांगत्वाशं करोति तस्मादाहशन्नोऽअस्तु द्विपदे-
 शञ्चतुष्पदे। ४। समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च माह्वल्या
 तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः। ५। भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकृदुम्बिने महाजनान्नमस्कृ-
 र्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य ग्रहशान्त्याख्यस्य
 कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ अस्तु श्रीः ॥ एवं त्रिः ॥ ऋक्-
 ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसा-
 नाऽअमृतत्वमायुन्भवन्ति सुत्यासंमियामित्तौ ॥ ७६ ॥ यजुः—ॐ मनसु-
 ऽकाममाकृतिं वाचऽसत्यमशीय ॥ पशुना ऽरूपमन्नस्य रसो वशऽऽश्रीः
 श्रयताम्पयि स्वाहा ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणम्—ॐ ते नो हततऽईजेदसऽऽर्षवतस्तऽइ-
 मेप्येतर्हि दाक्षायणाराज्यमिवैव प्राप्साराज्यमिह वैव प्राप्नोति यऽएवं विद्वाने-
 तेन यज्ञेन च जते तस्माद्वाऽएतेन यजेत स वाऽएकैकऽएवानूचिनाहुं पुरोडाशो
 भवत्येतेनोहास्यासपत्नानुपवाधाश्रीर्भवति ॥ ५ ॥ कृतेऽस्मिन्पुण्याहवाचने
 न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणप-
 तिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णः ॥ अथाभिषेकः ॥
 कर्तुर्वामतः पत्नीम् उपवेश्य पात्रपातितकलशोदकेन अविधुराश्रित्वारो
 ब्राह्मणा इर्वाभ्रपटुवैरुदङ्मुखोऽस्तिष्ठन्तः सपत्नीकं यजमानमभिषिञ्चे-

युः ॥ तत्रमंत्राः-ॐ पर्यं-पृथिव्याम्पयऽओपंथीपवयोदिह्युन्तरिक्षेपर्यो-
 धा ॥ पर्यंस्वतींस्पृदिशं+सन्तुमहम् ॥ ३६ ॥ ॐ पञ्चानुदह्यु+सरंस्वती-
 मपियन्तिसस्रोतस ॥ सरंस्वतीतुपञ्चधासोदशेभेवचरित ॥ ३७ ॥
 ॐ ब्रह्मणस्योत्तमंभनमसिब्रह्मणस्यस्कम्भसर्जनीस्थोब्रह्मणस्यऽऋतसर्द
 ह्यसिब्रह्मणस्यऽऋतसर्दनमसिब्रह्मणस्यऽऋतसर्दनमासीद ॥ ३८ ॥ ॐ
 पुनन्तुमादेवजनापुनन्तुमनसुधिर्यं ÷ ॥ पुनन्तुविश्वाम्भूतानिजातवे-
 लंपुनीहिषा ॥ ३९ ॥ ॐ देवस्यंत्वासवितु? प्रसवोऽश्विनोर्वाहुभ्याम्पु-
 ष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरंस्वत्यैव्वाचोयन्तुव्यन्त्रियेदधामिबृहस्पतेर्वासा-
 म्प्राज्जयेनाभिपिञ्चाम्पसौ ॥ ४० ॥ ॐ देवस्यंत्वासवितु? प्रसवोऽश्विनोर्वाहु-
 हुभ्याम्पुष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरंस्वत्यैव्वाचोयन्तुव्यन्त्रेणाग्ने?साम्प्रा-
 ज्जयेनाभिपिञ्चामि ॥ ४१ ॥ ॐ देवस्यंत्वासवितु? प्रसवोऽश्विनोर्वाहु-
 भ्याम्पुष्णोहस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भैपंज्जयेनतेजसेब्रह्मवर्चसाया-
 भिपिञ्चामिसरंस्वत्यैभैपंज्जयेन व्रीह्यायान्नादद्यांयाभिपिञ्चामीन्द्रस्ये-
 न्द्रियेणवलायश्रियैयशसेभिपिञ्चामि ॥ ४२ ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितुर्द्विरिता-
 निपरांसुव ॥ यद्ब्रह्मन्तन्नुदआसुव ॥ ४३ ॥ ॐ धामच्छदुग्धिरिन्द्रोब्रह्मा-
 देवोबृहस्पतिं+ ॥ सचेतस्रोविश्वेदेवायज्ञमार्बन्तुनलंशुमे ॥ ४४ ॥ ॐ त्वं-
 प्यविद्ब्रह्मशुषोर्नृपाहि?शृणुधीगिरं+ ॥ रक्षातोऽऋतत्वमना ॥ ४५ ॥ ॐ
 अन्नपनेन्नस्यनोदेहानमीवस्यंशुष्मिणं ÷ ॥ मप्रदुतारंनारिपुऽऽज्ज-
 शोधेदिहिवदेचतुष्पदे ॥ ४६ ॥ ॐ द्यो?शान्तिरुन्तरिक्षे?शान्तिं+पृथिवी-
 शान्तिरापुलंशान्तिरोपधयलंशान्तिं+ ॥ वनस्पतयलंशान्तिर्विश्वेदेवा?
 शान्तिर्ब्रह्मशान्तिर्लसर्वं?शान्तिर्लशान्तिरेवशान्तिर्लसाम्प्राशान्तिरेधि ॥
 ॥ ४७ ॥ ॐ यतोयतलंसर्माहंसेततोऽभयंशुः ॥ शशं+कुक्षप्रजाभयो-
 भयंलंशुभ्यं ÷ ॥ ४८ ॥ ब्राह्मणम्-ॐ पालानंभवति ॥ तेनब्राह्मणो-

भिपिञ्चतिब्रह्मवैपलाशोब्रह्मणैवैनमेतदाभिपिञ्चति ॥ औदुम्बरंभवति ॥
 तेनस्वोभिपिञ्चत्यन्नंवाऽऽर्गुदुम्बरऽऽर्ग्वैस्वंश्यावद्वैपुरुषस्यस्वंभवतिनवैता-
 वदशनायतितेनोर्कस्वतस्माद्वाऽऽर्गुदुम्बरेणस्वोभिपिञ्चति ॥ नैष्यग्रोधपादंभव-
 तितेनामित्रोराजन्योभिपिञ्चतिपद्भिर्वैन्यग्रोधेऽप्रतिष्ठितोमित्रेणवैराजन्यः
 प्रतिष्ठितस्तस्मान्नैष्यग्रोधपादेनमित्रोराजन्योभिपिञ्चति ॥ आश्वत्यंभव-
 ति ॥ तेनवैशयोभिपिञ्चतिसयुदेवादोश्वत्येतिष्ठतऽऽन्द्रोमरुतऽऽरुपांमत्रयते
 तस्माद्दोश्वत्येनवैशयोभिपिञ्चति ॥ युदेवकल्पान्जुहोतिप्राणवैकल्पाऽभ-
 मृतमुवैपाणाऽऽमृतेनैवैनमेतदाभिपिञ्चति ॥ सर्वेषांवाऽऽपव्वेदानांॐ-
 सोयत्सामसर्वेषामैवैनमेतद्वेदानांॐरसेनाभिपिञ्चति ॥ शान्तिः शान्तिः
 मुशान्तिर्भवतु ॥ स्वस्थाने उपविश्य हस्ते जलं गृहीत्वा-अभिपेककर्तृ-
 केभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये तेन श्रीकर्माधीशःप्रीयताम् ॥
 ततः पुत्रवतीभिर्द्वन्द्वसुवासिनीभिर्नाराजनं कार्यम् ॥ तस्य मंत्रः-ॐअ-
 नाञ्चष्टा पुरस्ताद्गुप्तेराधिपत्येऽआयुर्म्मैदाऽपुत्रवतीदक्षिणतऽऽन्द्रस्याधि-
 पत्येऽप्रजाम्मैदाऽ ॥ सुपदापञ्चाद्वेवस्यंसावितुराधिपत्येऽक्षुर्म्मैदाऽआ-
 श्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्येरायप्प्योर्म्मैदाऽ ॥ विधृतिरुपरिष्टाद्बुहु-
 र्पतेराधिपत्येऽओजोमैदाविश्वोऽभ्योमानाष्टाभ्यंस्पाहिमनोरश्वासि
 ॥३३॥ अनेन पुण्याहवाचनेन कर्माङ्गदेवताः श्रीआदित्यादिनवग्रहाः
 प्रीयन्ताम् ॥ इति पुण्याहवाचनप्रयोगः ॥

॥ ८७ ॥ अथ मातृकापूजनप्रयोगः ॥

तत्रादौ वैश्वदेवं कुर्यात् ॥ तदकरणे सङ्कलरः— इदं वैश्वदेवहवनीय-
 द्रव्यं सदक्षिणाक्षत्रावसरे वैश्वदेवाकरणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं कर-

१ अविग्रो मंडपश्चैव मातृका पूजनं सङ्कल १ वैश्वदेवं वसोदारा नान्दीप्रादमनःपरम् ॥
 व्यावीर्यपूजनात्पूर्वं वैश्वदेवं विधाय च ॥

गणजनितफलप्राप्त्यर्थम् अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय विष्णुरूपाय तुभ्यमहं
संप्रददे ॥ अनेन वैश्वदेवकरणजनितफलासिद्धिरस्तु ॥ ततो गोधूमदि-
घान्यपूरिते हरिद्रादिरञ्जिते मृन्मये अविघ्नाख्यकलशे मोदादिपट्टिनाय-
कानां प्रतिमाः कुंकुमादिना लिखित्वा आवाहयेत्—ॐमोदाय नमः
मोदम् आवाहयामि ॥ ॐप्रमोदाय नमः प्रमोदम् आवाहयामि ॥ ॐ
सुमुखाय नमः सुमुखम् आवाहयामि ॥ ॐदुर्मुखाय नमः दुर्मुखम्
आवाहयामि ॥ ॐअविघ्नाय नमः अविघ्नम् आवाहयामि ॥ ॐविघ्नकर्त्रे
नमः विघ्नकर्तारम् आवाहयामि ॥ प्रतिष्ठापनम्—ॐमनोजुति० ॐभूर्भुवः
स्वः मोदादिपट्टिनायकाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ॥ ॐमोदादिपट्टि-
नायकेभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः संपूज्य अनया पूजया मोदादि-
पट्टिनायकाः प्रीयन्ताम् ॥ इत्यविघ्नपूजनम् ॥

अथमण्डपमातृकास्थापनम् ॥ निश्चितकोणे गतं खनेत् ॥ गतंसमी-
पे सभायो यजमानःपूर्वाभिमुख उपविश्य गोधूमनिर्मितगणपतिप्रतिमायां
पूर्ववत् गणपतिं षोडशोपचारैः सम्पूजयेत् ॥ ततो यजमानश्चतुर्षु कोणेषु
मध्ये च गतं कुर्यात् ॥ आचार्येण च दुर्वाशम्याम्नादिमशस्तवृक्षपत्राणां
रक्तमूत्रेण पञ्च वेष्टनानि कार्याणि । एषां मण्डपमातृसंज्ञा ॥ ताश्च
मण्डपमातृः मण्डपे स्थापयेत् ॥ तासां मध्ये एकां मदनफलेन युक्तां
कुर्यात् ॥ ततस्तासां तैलहरिद्राकुंकुमादिसुगन्धद्रव्येणोद्वर्तनम् ॥ ततो
यजमानो गतेषु अङ्गिरासेचनं कुर्यात् दध्ना च ॥ ततस्ता आप्रेयादि-
चतुर्षु मण्डपकोणस्तंभेषु क्रमेण चतस्रो मध्ये चैका एवं पञ्च कृत्वा ततः
स्थिरोभवेतिस्थिरीकरणम् ॥ ॐ स्थिरोभवंस्त्रीइवङ्गऽआशुर्भवंस्त्री-

१ शृङ्गादिप्रये वह्निकोणे श्रमं स्यात्तथा मिहकादिप्रये वेशकोणे । भवेद् दृष्टिक्रदि-
प्रये बायुकोणे घटादिप्रये निर्ऋती खातमाहुः ॥ एवं कोणनिश्चय कुर्यात् ॥

ज्ज्यर्बन ॥ पृथुर्ध्रुवसुपदस्त्वमग्नेऽपुंरीषवाहणद ॥ १ ॥ तत्र शाखास्तंभे
 ॥ अग्निकोणे-ॐ नन्दिन्यै नमः नन्दिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥
 नैर्ऋत्यकोणे-ॐ नलिन्यै न० नलिनीमा० ॥ २ ॥ वायव्यकोणे-ॐ
 मैत्रायै न० मैत्रामा० ॥ ३ ॥ ईशानकोणे-ॐ उमायै न० उमामा० ॥ ४ ॥
 मध्ये-पशुवर्धिन्यै न० पशुवर्धिनीमा० ॥ ५ ॥ मनोज्ञतिरिति ताः प्रति-
 ष्ठापयत् ॥ ॐ मनोज्ञतिर्जुपतामाज्यस्य बृहस्पतिर्ध्रुवमिमन्तनोचरिष्टं-
 द्युन्नसामिमन्तधातु ॥ विश्वेदेवासंद्दुहमादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठा ॥ ३ ॥
 इतिप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दिन्यादिमण्डपमातृभ्यो नमः इत्यनेन
 मंत्रेणावाहनादिषोडशोपचारैस्ताः पूजयेत् ॥ अनया पूजया नन्दिन्या-
 दिमण्डपमातरः प्रीयन्तां नमः ॥

अथ गौर्यादिमातृणां पूजनम् ॥ अग्निकोणे पीठोपरि रक्तवस्त्रं
 प्रसार्य तदुपरि गोधूमाक्षतपुञ्जेषु पूगीफलेषु वा सगणाधिपगौर्यादिच-
 तुर्दशमातृणां दक्षिणोपक्रमाणाम् उदगपवर्गाणां प्रत्यगुपक्रमाणां प्राग-
 पवर्गाणां वा स्थापनम् ॥ ॐ गृणार्नान्त्वा० ॥ १ ॥ ॐ गणेशाय नमः
 गणेशम् आवाहयामि स्थापयामि । भो गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥
 ॐ आयज्ञौ ऽपृश्निरवक्रमीदसंद्दमातरं म्पुरं ॥ पितरं च प्रयन्तस्व ॥ ६ ॥
 ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्यै नमः गौरीम् आवाहयामि स्था० । भो गौरि इहा-
 गच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥ ॐ हिरण्यरूपाऽउपसो विरोकऽउभाविन्द्राऽउ-
 दिपदं मूर्ध्निश्च ॥ आरोहंतं वरुणमिन्द्रं गतन्तं तं च क्षात्र्यामदिति न्दितिश्चामि-

१ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विद्यया जया । देवसेना स्वधा स्वहा मातरो लोकमातरः ॥
 धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः शान्तः कुलदेवताः । गणेशो नापिका हेता वृद्धी पृथ्याधतुर्दश ॥ अत्र चतु-
 र्दशपदसमाहारान्मातरो लोकमातर इति सर्वासां विशेषणम् ॥ केचन मातृः लोकमातृरपि आवाह-
 यन्ति तदयुक्तम् ॥

त्रोसिर्वरुणोसि ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि
 स्या० ॥ भो पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ २ ॥ ॐ कदाचनस्तरीरसिने-
 न्द्रसञ्चसिद्वाशुपे ॥ उपोपेन्नुपयवन्नभूयऽङ्गुतेदानन्देवस्यपृच्छयतऽआ-
 दित्येव्यस्ता ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि
 स्याप० ॥ भो शचि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ३ ॥ ॐ मेधाम्मेव्वरुणोददातु
 मेधामग्निप्रजापतिरं ॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धातादेदातुमेस्वाहा
 ॥ १५ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्या० ॥ भो मेधे
 इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ४ ॥ ॐ उपयामगृहीतोसिसावित्रोसिचनोधाश्च-
 नोधाऽअसिचनोमयिधेहि ॥ जिह्वैवृक्षञ्जिह्वैवृक्षपतिम्भर्गायदेवार्यचा-
 सवित्रे ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीम् आवाहयामि
 स्या० ॥ भो सावित्रि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ५ ॥ ॐ द्विज्ज्यन्धनुः-
 पर्दिनो ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयाम् आवाहयामि
 स्या० ॥ भो विजये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ६ ॥ ॐ यतिरुद्रशिवा०
 ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः जयायै नमः जयाम् आवाहयामि स्या० ॥ भो जये
 इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ७ ॥ ॐ देवानाम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानां
 श्रुतिरभिन्नोनिर्वर्त्तताम् ॥ देवानां सुख्यमुपसेदिमाध्वयन्देवान्ऽआ-
 युदं पतिरन्तुजीवसे ॥ १५ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः देवसेनायै नमः देवसे-
 नाम् आवाहयामि स्यापयामि ॥ भो देवसेने इहागच्छ इ० ॥ ८ ॥ ॐ पि-
 तृभ्यंस्वधायिभ्यंस्वधानमपितामहेभ्यंस्वधायिभ्यंस्वगान-
 मरुपितामहेभ्यंस्वधायिभ्यंस्वधानम- ॥ अक्षद्विपतरोर्मिमदन्त-
 पितरोतीतृपन्तपितरुदपितरुदंशुर्बध्वम् ॥ ३६ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै
 नमः स्वधाम् आवाहयामि स्यापयामि ॥ भो स्वधे इ० इह तिष्ठ ॥ ९ ॥
 ॐ न्वाहायज्ञं मनसुदंस्वाहोरोरन्तरिक्षात्स्वाहादृश्यावापृथिवीव्यात्स्वा-

द्वाद्वात्तादारंभेस्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः स्वाहाम् आ-
 वाहयामि स्थापयामि ॥ भो स्वाहे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १० ॥ ॐ धृ-
 ष्टिरेस्यपांग्मेऽअग्निमामादंज्ञहिनिष्कव्यादंमेधोदवयजंवह ॥ ध्रुवम-
 सिपृथिवीन्दृष्टं हन्नहमवनिच्चासन्नवनिंसजातवन्न्युपंदधामिभ्रातृव्य-
 स्यव्वधाय ॥ १७ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थाप-
 यामि ॥ भो धृते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ११ ॥ ॐ त्वष्टातुरापोऽअद्-
 द्भुतऽइन्द्राग्नीपुष्टिवर्द्धना ॥ द्विपदाच्छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौर्धयोदधुर्द
 ॥ ३० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥
 भो पुष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १२ ॥ ॐ वृहस्पते ० ॥ ३६ ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो तुष्टे इहागच्छ इह
 तिष्ठ ॥ १३ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिकेनमानयतिरुश्चन ॥ ससं-
 स्तयश्चक? सुभद्विकाङ्कगम्पीलवासिनीम् ॥ १९ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
 आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि ॥
 भो आत्मनः कुलदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १४ ॥ ॐ मनोजुति ०
 ॥ १३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सगणाधिपगौर्यादिमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः
 भवत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सगणाधिपगौर्यादिमातृभ्यो नमः इत्यनेन
 पोहशोपचारैः सम्पूजयेत् ॥

अथ श्र्यादिसप्तवसोर्द्वारापूजनम्—पात्रस्येन विलीनेन सगुडेन
 घृतेन मातृणां संनिहितकृड्यलम्बाः दक्षिणाद्युदपवर्गाः पश्चिमादि-
 प्रागपवर्गाः नातिनीचा न चोद्धिताः सप्तवसोर्द्वाराः कर्तव्याः ॥ ॐ व-
 सोऽपवित्रमसिशतधारं वसोऽपवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासवि-
 तार्पुनातुवसोऽपवित्रैश्शतधारेणसुप्सु ॥ ३ ॥ इत्यनेन सप्तधाराः
 कृत्वा ततः शिष्टाचारात् उर्ध्वभागे गुडेनैकीकरणम्-ॐ कामधुक्षदं

॥ ३ ॥ श्रीपूर्वसप्तमातृश्च घृतमातृस्तथैव च । गुडेन मेलयिष्यामि ताः
 सर्वार्थमसाधिकाः ॥ इत्यनेनैकीकृत्य कुङ्कुमादिना विन्दुकरणेनालङ्कृत्य
 प्रतिधारयामेकैकदेवतामावाहयेत् ॐ मनसूँ ॥ ॐ भू० श्रियै नमः
 श्रियम् आवाहयामि ॥ १ ॥ ॐ श्रीश्चते० ॥ ॐ भू० लक्ष्म्यै नमः
 लक्ष्मीम् आवाहयामि ॥ २ ॥ ॐ इहरति० ॥ ॐ भू० धृत्यै नमः धृतिम्
 आवाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ मेधाम्मे० ॥ ॐ मेधायै नमः मेधाम् आवाह-
 यामि ॥ ४ ॥ ॐ देवीजोष्टी० ॥ ॐ भू० पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि
 ॥ ५ ॥ ॐ व्रतेनंद्रीक्षा० ॥ ॐ भू० श्रद्धायै नमः श्रद्धाम् आवाहयामि
 ॥ ६ ॥ ॐ देवीस्तुस्तुस्तु० ॥ ॐ भू० सरस्वत्यै नमः सरस्वतीम् आवा-
 हयामि ॥ ७ ॥ ॐ मनोजुति० ॥ ॐ भूर्भुवस्वः श्यादिसप्तवसोद्धाराः
 सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥ ॐ भूर्भुवस्व श्यादिसप्तवसोर्द्धारादेवताभ्यो
 नमः इत्यनेन षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ प्रार्थना-यदङ्गत्वेन भो देव्यः
 पूजिता विधिमार्गतः । कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नं क्रतुर्भवम् ॥
 ॥ इति मातृकापूजनप्रयोगः ॥

॥८८॥ अथायुष्यमन्त्रजपः-ॐ आयुष्यं ब्रह्मस्यै रायस्पोषमौर्दिद्भदम् ॥
 इदं हिरेण्यं ब्रह्मस्यै ज्ञानाय विशताट्टुमाम् ॥ ५० ॥ नतद्रक्षां ऽसिनर्षि-
 शाचास्तरन्ति देवानामोजं प्रथमजं ह्येतत् ॥ योत्रिभर्तिदाक्षायणं हिरे-
 ण्यं सदेवेपुं कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येपुं कृणुते दीर्घमायुः ॥ ५१ ॥
 यदावद्धन्दाक्षायणाहिरैण्यं शतानीं कायसुमन्स्यमाना ॥ तद्गुप्सा
 वद्भामिशतशरद्वायुंष्माञ्जरदंष्ट्रिर्ब्रथासम् ॥ ५२ ॥

॥ ८९ ॥ अथ साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः ॥

अथ यज्ञोपवीती प्राङ्मुखो दक्षिणं जानु पातयित्वा पात्रे उदङ्मुखान् प्राक्संस्थान् स्वयम् उदङ्मुखश्चेत् प्राङ्मुखान् उदक्संस्थान् वैश्वदेवस्थाने द्वौ सपत्नीकपितृपार्वणस्थाने द्वौ सपत्नीकमातामहपार्वणस्थाने द्वौ च एवं षट् कुशवटून् दूर्वाकाण्डानि वा संस्थाप्य क्षणदानं कुर्यात्। यवान्गृहीत्वा-ॐ सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेपां देवानां नान्दीमुखानाम् अथ कर्तव्यप्रधानसङ्कल्पोक्तकर्माङ्गसाङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम् ॥ इति यवान्निक्षिप्य ॥ ॐ तथा ॥ प्राप्नुतां भवन्तौ ॥ प्राप्नुवाव ॥ यवान् गृहीत्वा-गोत्राणां नान्दीमुखानां पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानाम् अथ कर्तव्यप्रधानसङ्कल्पोक्तकर्माङ्गसाङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम् ॥ इति यवान्निक्षिप्य ॥ ॐ तथा ॥ प्राप्नुतां भवन्तौ ॥ प्राप्नुवाव ॥ यवान्गृहीत्वा-द्वितीयगोत्राणां नान्दीमुखानां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानाम् अथ कर्तव्यप्रधानसङ्कल्पोक्तकर्माङ्गसाङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम् । इति यवान्निक्षिप्य ॥ ॐ तथा ॥ प्राप्नुतां भवन्तौ ॥ प्राप्नुवाव ॥ पाद्यदानम्-सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ सङ्कल्पः—अथ पूर्वोच्चारितं शुभपुण्यतिथौ साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये ॥ आसनदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः आसनम् ॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः

सपत्नीकाः इदं वः आसनम् ॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहम्
 मातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम् ॥ गन्धादिदानम्—
 सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं
 स्वाहा नमः ॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीका
 इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा नमः ॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः
 मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथा-
 विभागं स्वाहा नमः ॥ भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वे-
 देवाः नान्दीमुखाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमनिष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं
 दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहा नमः ॥ गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामह-
 प्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमनिष्क्रयीभूतं किञ्चि-
 द्धिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहा नमः ॥ द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः
 मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ता-
 मनिष्क्रयीभूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहा नमः ॥ सक्षी-
 रयवमुदकदानम्—सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥
 गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम् ॥
 द्वितीयगोत्राः नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः
 प्रीयन्ताम् ॥ आशीर्ग्रहणम्—अघोराः पितरः सन्तु । सन्त्वघोराः पितरः ॥
 गोत्रं नो वर्धताम् । वर्धताम् वो गोत्रम् ॥ दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् ।
 अभिवर्द्धन्तां वो दातारः ॥ वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम् । अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः ॥
 सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम् । अभिवर्द्धतां वः सन्ततिः ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमत् ।
 मा व्यगमद्दः श्रद्धा ॥ बहुदेयं च नोऽस्तु । अस्तु वो बहुदेयम् ॥ अन्नं च नो
 बहु भवेत् । भवतु वो वल्लन्नम् । अतिथीश्च लभेमहि । अतिथीश्च लभध्वम् ॥

याचितारथ नः सन्तु। सन्तु वो याचितारः॥ एता आशिष सत्याः सन्तु। स-
न्वेताः सत्या आशिषः। दक्षिणादानम्-सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवे-
भ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामल-
कयवमूलनिष्कयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥ गोत्रेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः
पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्र-
तिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।
द्वितीयगोत्रेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः स-
पत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलकयव-
मूलनिष्कयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥ नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्। सुसम्प-
न्नम् ॥ विसर्जनम्-ॐ ह्यजैवाजेवतवाजिनो नो धनेषु विषाऽमृताऽऋ-
तज्ञाः ॥ अस्य मद्भ्रवंऽपि वत मादयं द्ध्वन्तु प्लावातपथिभिर्द्वेष्यानेः ॥ १८ ॥
अनुव्रजनम्-ॐ आप्रावाजस्य प्सवो जगम्या देभे द्यावापृथिवी विश्व-
रूपे। आप्रागन्तामिपतरां मातरां चामासो मे। ॐ अमृतत्त्वेन गम्यात् ॥ १९ ॥ हस्ते
जलमादाय-मयाऽऽचरितेऽस्मिन्साङ्कलिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो
यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः
परिपूर्णोऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णः ॥ अनेन साङ्कलिकविधिना नान्दीश्राद्धेन
नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम् ॥

॥ इति साङ्कलिकविधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः ॥

॥ १० ॥ आचार्यादि-ऋत्विग्वरणम् ॥ एकस्मिन्ताम्रपात्रे शरावे वा आ-
पः क्षीरं कुशाग्राणि दधि चन्दनम् अक्षताः दूर्वाः सर्पपाश्वेत्यष्ट द्रव्याणि
निक्षिप्य पात्रान्तरेण पिधाय रक्तमूत्रेण संवेष्टयतत् साचार्यविषाः ॐ पुण्या-
हमिति त्रिवारं वदन्तः यजमानहस्ते दद्युः। पत्नीहस्ते वाचनकलशं च दद्युः।

सपत्नीको यजमानः स्वासनादुत्थाय ब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ ब्राह्मणमार्थ-
 ना-पावनाःसर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः । अनुगृह्णन्तु मामद्य ग्रहशा-
 न्त्याख्यकर्मणि ॥ स्वस्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ श्रोत्रियाः
 सत्यवाचश्च ग्रहध्यानरताः सदा ॥ यद्वास्यामृतसंसिक्ता वृद्धिं यान्ति
 नरद्रुमाः । अङ्गीकुर्वन्तु मत्कर्म कल्पद्रुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमैर्युक्ता
 मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः । यत्कृपालोकनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः ॥
 आयुरारोग्यपुत्रादिसुखश्रीप्राप्तये मम । आपाद्विघ्नविनाशाय शत्रुबुद्धि-
 याय च । आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे राहुकेतुपुरःसराः ॥ ग्रहदेवाधिदेवैश्च
 नक्षत्राणां च दैवतैः ॥ इन्द्रादिभिश्च दिक्पालैर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः । वास्तुदु-
 र्गागणेशैश्च क्षेत्रपालेन संयुतैः ॥ भौमान्तरिक्षदेवैश्च कुलदेव्या च मातृभिः ॥
 चतुर्भिश्चैव वेदैश्च रुद्रेण सहितास्तथा ॥ स्वागतं वो द्विजथेष्टा मदनुग्रह-
 कारकाः । अयमर्घ इदं पाद्यं भवद्भिः प्रतिगृह्यताम् ॥ चरणक्षालनाद्देवा-
 स्तुप्यन्ति शुद्धमानसाः । तज्जलेन च संसिक्ताः पूर्णाः कामा भवन्तु
 मे ॥ इमं वोऽर्घ्यं प्रयच्छामि गृह्णन्तु प्रीतमानसाः । पावयन्तु च मां नित्यं
 पूरयन्तु मनोरथान् ॥ अन्यः कश्चिद् ब्राह्मणः वदति-अर्घोऽर्घोऽर्घ्यं ॥
 यजमानो वदेत्-प्रतिगृह्यन्ताम् । इत्युक्त्वा ब्राह्मणहस्ते तदग्रे वा अर्घ्यं
 स्थापयेत् ॥ ब्राह्मणा वदेयुः-प्रतिगृह्णीमः ॥ आचार्यवरणम्-यजमानः
 हस्ते पूगीफलं गृहीत्वा विप्रस्य दक्षिणजानुमालभ्य वदेत्-अमुकप्रवरा-
 न्वितामुकगोत्रःशुक्लयजुर्वेदान्नायवाजिमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायी अमु-
 कशर्मा यजमानोऽहममुकप्रवरान्वितामुकगोत्रं शुक्लयजुर्वेदान्नायवाजिमा-
 ध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन्ग्रहशान्त्याख्ये क-
 र्मणि आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे इत्युक्त्वा पूगीफलं दद्यात् ॥ यजमानेन
 दत्तं पूगीफलं गृहीत्वा विप्रो वदेत्-अवृत्तोऽस्मि ॥ ॐ व्युत्तेनदीक्षामा-

प्रोतिद्वीक्षयाप्रोतिदक्षिणाम् ॥ दक्षिणाश्रुद्धामप्रोतिश्रुद्धया-
सुच्यमाप्स्यते ॥३१॥ वृताय एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनमेप
तेऽर्थः ॥ गन्धाक्षतपुष्पमालादिभिः सम्पूज्य हस्ते रक्तमूत्ररूपकङ्कणव-
न्धनम्-अथदावंद्भन्दाक्षायुणाहिरण्यशुनार्नीकायसुमनुस्यमानात् ॥
तन्मुऽआवंद्घनामिश्रुतशरद्वयायुष्माञ्जरदपिट्टिर्ध्वथासम् ॥५३॥ यथा-
शक्ति सुवर्णहस्तमुद्रालङ्कारवस्त्रोपवस्त्रादिवरणसाहित्यं दत्त्वा वदेत्-
आवाहयाम्यहं विप्रमाचार्यं यज्ञकारिणम् । पुराणन्यायमीमांसाधर्मशा-
स्त्रार्थपारगम् ॥ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः । ग्रहशा-
न्त्याख्ययज्ञेऽस्मिन्नाचार्यस्त्वं तथा भव ॥ यावत्कर्म समाप्येत ताव-
त्त्वमाचार्यो भव ॥ आचार्यो वदेत्-भवामि ॥२॥ ॐ बृहस्पते ॥ ब्रह्म-
वरणम्-पूर्ववद्गोत्रोच्चारणं कृत्वा अस्मिन् कर्मणि ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणोऽं
वृतोऽस्मि ॥ ॐ वृतेनं ॥ वृताय एतत्ते पाद्यं ॥ कङ्कणवन्धनम्-
अथदावंद्भन्दाक्षायुणा ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । ग्रह-
शान्त्याख्ययज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥१॥ यावत्कर्म समाप्येत ताव-
त्त्वं ब्रह्मा भव । भवामि ॥ ग्रहमंजज्ञानं ॥ ततः गाणपत्यसदस्यवरणं कृत्वा
ऋत्विग्वरणं पूर्ववद्गोत्रोच्चारणपूर्वकं कुर्यात् ॥ एवं चतुरोऽष्टौ वा ऋत्विजो
वृणुयात् ॥ ऋत्विक्पार्थना-ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समा-
हिताः । देवानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम् ॥१॥ जपयज्ञैस्तथा होमैर्दा-
नैश्च विविधैः पुनः । देवानां च ऋषीणां च तृप्त्यर्थं याजकाः कृताः ॥२॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगन्नयम् । रक्षन्तु सततं ते मां ग्रहयज्ञे
व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥ ब्राह्मणां जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् । येषां
वावयोदकेनैव शुद्धयन्ति मलिना जनाः ॥ ४ ॥ पावनाः सर्ववर्णानां
ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः । सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ ५ ॥

श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च ग्रहध्यानरताः सदा । यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं
यान्ति नरद्रुमाः ॥६॥ अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाश्रिताः । यथोक्त-
नियमैर्युक्ता मंत्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥ ७ ॥ यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो
वृद्धिमाप्नुयुः । ग्रहयज्ञे मया पूज्या सन्तु मे नियमान्विताः ॥८॥ अक्रोधनाः
शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः । ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा
॥९॥ अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः । ममापि नियमा ह्येते
भवन्तु भवतामपि ॥ १० ॥ ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मत्वेऽभवन् ।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥ ११ ॥ ग्रहयागस्य निष्पत्तौ
भवन्तोऽभ्यर्थिता मया । सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम् ॥ १२ ॥
यजमानहस्ते कङ्कणवन्धनम् ॐ यदावधन्न्दाक्षायुणाहिरण्यऽशुता-
नीकायसुमनुस्यमाना ॥ तन्मुऽआवद्भामिशुतशारदायायुष्मन्मञ्जरदाष्टि-
र्यथासम् ॥ १३ ॥ दाक्षायणा शतानीकमवधन्सुहिरण्यकम् । आवध्ना-
मि तदेवाहमायुष्यस्याभिवृद्धये ॥ यजमानपत्न्याः वामहस्ते कङ्कणव-
न्धनम् ॐ तम्पत्कनीभिरेनुगच्छेमदेवा ॥ पुत्रैर्भ्रातृभिरुतचाहिरण्यैः ॥
नाकंद्गृह्णाना १ सुकृतस्य लोकेतृतीर्येषुष्टेऽअधिरोचुनोदिव १ ॥ १४ ॥
शुद्धयज्ञफलावाप्त्यै कङ्कणं सूत्रनिर्मितम् । हस्ते वध्नामि सुभगे त्वं जीव
शरदां शतम् ॥ द्विप्रक्षणम्-कृणुष्वपाजु ० । अपसर्पन्तु ० ॥ इति पूर्वोक्त-
रीत्या कार्यम् ॥ ११ ॥ पञ्चगव्यकरणम्-कांस्यपात्रे मन्त्रान्ते गोमूत्रं
क्षिपेत्-ॐ भूर्भुवःस्व-तत्संवितु ० ॥ गोमयं मन्त्रान्ते क्षिपेत्-ॐ मान-
स्तोत्रे ० ॥ क्षीरं मन्त्रान्ते क्षिपेत्-ॐ आप्यायस्वसमेततेषु ॥ श्वतःसोमवृ-
ण्यम् ॥ भवाहाजस्यसह्ये ॥ १२ ॥ दधि मन्त्रान्ते क्षिपेत्-दुधिवरा-
वर्णा ० ॥ आज्यं मन्त्रान्ते क्षिपेत्-ॐ तेजोसिञ्चुवक्रमस्युमृतमसिधामुना-
यासिप्पियन्दैरानामनाधृष्टन्देवुयर्जनमासि ॥ १३ ॥ कुशोदकं मन्त्रान्ते

क्षिपेत्-ॐ देवस्यैवासावितुः प्रसवेऽश्विनोऽर्वाहुभ्यां स्पुष्णो हस्ताब्ज्याम् ॥ १८ ॥ ॐ इति प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य प्रणवेनाभिमन्त्रयेत् ॥ कर्मभूमिं यज्ञसम्भारांश्च कुशैः सम्प्राक्षयेत् । ॐ आपोहिष्ठा ० । योर्वंशिवत्तमो ० । तस्माऽअरङ्ग ० । भूमिप्रार्थना-हस्तौ बद्ध्वा भूमिं सम्प्रार्थयेत् ॐ स्योनापृथिविनो ० । ॐ मुहीद्व्यौ ० । इत्येताभ्यामृग्भ्यां सम्प्रार्थ्य ॐ स्वस्तिनः इन्द्रोऽवृद्धश्रवां ॥ " ॐ देवा आयान्तु ॥ यातुधाना अपयान्तु ॥ विष्णो देवयजनं रक्षस्व " इति पठित्वा भूमौ प्रादेशं कुर्यात् ॥ १२ ॥ भूमिकूर्मानन्तपूजनम्-होममानतो यथार्हकृतचतुरस्रस्थण्डिलस्याग्रे अक्षतपुञ्जत्रयोपरि पूगीफलानि संस्थाप्य भूमिकूर्मानन्तानावाह्य पूजयेत्- ॐ भूरसि भूमिरुस्यदि-तिरसिऽश्विऽश्वधां युधिऽश्वस्युभुवनस्यधुर्वा ॥ पृथिवीऽश्वच्छपृथिवीऽहृहृपृथिवीऽमाहिऽसी ॥ १९ ॥ भूम्यै नमः भूमिमावाहयामि ॥ ॐ यस्य-कुर्मोऽगृहेऽविस्तमग्रेऽवर्द्धयात्त्वम् ॥ तस्मै देवाऽअधिऽस्तु वसुऽशुऽव्रह्मण-स्पतिः ॥ १३ ॥ ॐ कूर्मय नमः कूर्ममावाहयामि ॥ ॐ स्योनापृथिविनो ० ॥ ॐ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ प्रतिष्ठाप-नम्— ॐ मनोजुति ० ॥ भूमिकूर्मानन्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥ ॐ भूमिकूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः इत्यनेन पूजयेत् ॥ १३ ॥ स्थण्डिले पञ्चभूसंस्काराः-आचार्यः स्थण्डिलपश्चिमतः उपविशेत् । यजमानं स्वदाक्षिणे ब्रह्मणः पश्चिमतः उपवेश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य प्रारब्धग्रहशान्त्यारुये कर्माणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निप्रतिष्ठापनं करि-ष्ये ॥ १४ ॥ परिसमूहनम्—मूलधृतैस्त्रिभिर्दर्भाग्रैः पश्चिमतः आरभ्य प्रागन्त-मुदक्संस्थं त्रिः 'परिसमूह' तान्कुशान् ईशान्यां पूर्वतो वा परित्यजेत् ॥ १५ ॥ उपलेपनम्-गोमयोदकेन त्रिरुपलिम्पयेत् ॥ १६ ॥ उल्लेखनम्-यज्ञकाष्ठेन स्रुवेण कुशैर्वा दक्षिणत उदक्संस्थं त्रिरुल्लेखयेत् ॥ १७ ॥ उद्धरणम्—

अङ्गुष्ठात् अनामिकापर्यन्तं यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पांसुं नीत्वा
 प्राञ्चमुद्धरेत् ॥५॥ अभ्युक्षणम्-प्रतिरेखं न्युञ्जमुष्टिना प्राजापत्यतीर्थेन
 उदकेनाभ्युक्षणम् ॥ इति पञ्चभूसंस्काराः ॥ ९४ ॥ अग्निस्थाप-
 नम्—सुवासिन्या श्रोत्रियागारात्स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं तैजसेना-
 सम्भवे मृण्मयेन वा पात्रयुग्मेन सम्पुटीकृतमाहृतमग्निं स्थण्डिलस्य
 आग्नेय्यां निदध्यात् ॥ तस्मादाचार्यः “हुं फट्” इति मन्त्रेण क्रव्यादांशं
 नैर्ऋत्यां क्षिप्त्वा आत्माभिमुखमग्निं स्थापयेत्—ॐ अग्निन्दुतम्पुरो-
 दधेहव्युवाहुमुपंश्रुवे ॥ देवाँ २ऽआसादयादिह ॥ १३ ॥ ॐ वरद-
 नामानमग्निमुपसमादये ॥ आचारात् अग्न्याहरणपात्रे साक्षतोदकं निषिच्य
 तत्र किञ्चिद्विष्यमाभूपणं वा निक्षिप्य तद्द्रव्यं सुवासिन्यै दापयेत् ॥
 आवाहनम्—एषोर्हृदेवः प्रदिशोनु सर्वाँ लुपूर्वोह ज्ञातः सऽउगर्भेऽअन्तः ॥
 सऽएवजातः सज्जनिष्यमाणः प्रच्यङ्जनांस्तिष्ठति सुर्वतोमुखः ॥ १४ ॥
 ॐ वरदनामानमग्निमावाहयामि ॥ प्रतिष्ठापनम्—ॐ मनोजुति ॥ ॐ वर-
 दनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ मुखं कृत्वा ध्यायेत्—ॐ चुच्चारिभृ-
 ह्नात्रयोऽअस्युपाद्वाद्देशीर्षेसप्तहस्तांसोऽअस्यात्रिधावुद्धोवृषभोरारवी-
 तिमुहोदेवोमर्त्याँ २ऽआर्विवेशं १३ ॥ सप्तहस्तश्चतुःशृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः ।
 त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः । स्वार्हां तु दक्षिणे पार्श्वे
 देवीं वामे स्वर्धां तथा । विभ्रदक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्त्रं सूचं सूचम् ।
 तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन् । आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो
 हुताशनः ॥ अग्ने वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवर
 भूमिमातः वरुणपितः मेघध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव ।

॥ ९५ ॥ ततः स्थण्डिलस्य रुद्रदिग्भागे वेद्युपरि ग्रहमण्डलदेवतास्था-
 पनम् ॥ यजमानो हस्ते जलं गृहीत्वा अद्येत्यादि ० मारुधकर्मणः सांगता-

सिद्ध्यर्थमादित्यादिग्रहमण्डलदेवतानां स्थापनं पूजनं चाहं करिष्ये ॥
 १-ॐ आकृष्णेन० ॥ (प्राङ्मुखं मूर्यं पीठमध्ये वर्तुले द्वादशाङ्गुले
 मण्डले-ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो
 मूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ) ॥ ॐ मूर्याय नमः मूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥
 २-ॐ इमर्देवा० ॥ (प्रत्यङ्मुखं सोममाग्नेय्यां चतुरस्रे चतुर्विंशत्य-
 ङ्गुले मण्डले-ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भोसोम
 इ० इ०) ॐ सोमाय नमः सोममावा० स्था० ॥ ३-ॐ अग्निर्मूर्द्धा० (दक्षि-
 णाभिमुखं भौमं दक्षिणस्यां दिशि त्रिकोणे त्र्यङ्गुले मण्डले-ॐ भूर्भुवः
 स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह-
 तिष्ठ) ॐ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि ॥ ४-ॐ उद्बृहद्दय-
 स्वाग्ने० ॥ (उदङ्मुखं बुधमैशान्यां दिशि बाणाकारे चतुरङ्गुले मण्डले
 ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण भो बुध इहागच्छ
 इह तिष्ठ ॥) ॐ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५-ॐ वृह-
 स्पते० ॥ (उदङ्मुखं बृहस्पतिमुत्तरस्यां दिशि लम्बदीर्घचतुरस्रे पट्टाकारे
 षडङ्गुले मण्डले-ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण
 भो बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ) ॐ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमा० स्था० ॥
 ६-ॐ अन्नात्परिस्रुतो० (प्राङ्मुखं शुक्रं पूर्वस्यां दिशि पञ्चकोणे नवाङ्गुले
 मण्डले-ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट्टदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भोशुक्र
 इहागच्छ इह तिष्ठ) ॐ शुक्राय नमः शुक्रमा० स्था० ॥ ७-ॐ शन्नो देवी० ।
 (प्रत्यङ्मुखं शनिं पश्चिमायां दिशि घनुराकारे द्व्यङ्गुले मण्डले-ॐ भूर्भुवः-
 स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्वर इहागच्छ
 इह तिष्ठ) ॐ शनैश्वराय नमः शनैश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥
 ८-ॐ कयानश्चित्रऽआ० ॥ (दक्षिणाभिमुखं राहुं नैर्ऋत्यां दिशि शूर्पा-

भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ । शुक्रदक्षिणपार्श्वे-ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमा-
 वाहयामि स्थापयामि ॥ ७-ॐ व्रमायुश्चाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वा-
 हाघुर्मायुस्वाहाघुर्मर्षः पित्रे ॥ ३६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम इहागच्छ
 इह तिष्ठ । शनिदक्षिणपार्श्वे-ॐ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ॥
 ८-ॐ कार्पिरसिसमुद्रस्युत्थाक्षिस्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्धिरंग्म-
 तुसमोपधीभिरोपधीह ॥ ३७ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो काल इहागच्छ
 इह तिष्ठ ॥ राहुदक्षिणपार्श्वे-ॐ कालाय नमः कालमा० स्था० ॥ ९-
 ॐ चित्रावसोस्वस्तिर्तेपारमशीय ॥ ३८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो चित्रगुप्त
 इहागच्छ इह तिष्ठ । केतुदक्षिणपार्श्वे-ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमा०
 स्था० ॥ प्रत्यधिदेवतावाहनम्-१ ॐ अग्निन्दुतम्पुरोदधे हव्यवाहु-
 मुर्षब्धुवे ॥ देवां २ आसादयादिह ॥ ३९ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो
 अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ । सूर्यवामपार्श्वे-ॐ अग्नये नमः अग्निमा० स्था० ।
 २ ॐ आपोहिष्ठा० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो आप इहागच्छत इह तिष्ठत ॥
 सोमवामपार्श्वे-ॐ अद्रभ्यो नमः अप आ० स्था० ॥ ३ ॐ स्योनापृथिविनो०
 ॐ भूर्भुवः स्वः भो पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ भौमवामपार्श्वे-ॐ पृथिव्यै
 नमः पृथिवीमा० स्था० ॥ ४ ॐ इन्द्रं विष्णुं शिवं क्रमेणैवानिदधे पदम् ॥
 समूहमस्य पा० सुरेस्वाहा ॥ ४० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो इहागच्छ
 इह तिष्ठ ॥ बुधवामपार्श्वे-ॐ विष्णवे नमः विष्णुमा० स्था० ॥ ५ ॐ आ-
 तारुमिन्द्रं मवितारुमिन्द्रं हवे हवे सुहवः शूरुमिन्द्रं ॥ हयामिशुवक्रम्पुंरुहु-
 तमिन्द्रं स्वस्ति नो मघर्वाधुाचिन्द्रः ॥ ४१ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र
 इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ गुरुवामपार्श्वे-ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमा० स्था० ॥
 ६ ॐ अर्ध्वास्यासोऽसीन्द्राऽण्ड्याऽउत्तृष्णीपं=॥ पूषासिघुर्मायदीप्त्वा ॥ ३६ ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ शुक्रवामपार्श्वे-ॐ इन्द्रायै

नमः इन्द्राणीमा०स्था० ॥ ७ ॐ प्रजापते नस्वहेता न्युद्ययो विप्रश्वा रूपा-
 णिपरितावभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽभस्तु च्युय ० स्या० मुपतयोरु-
 णाम् ॥ ६/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ शनि-
 वामपार्श्वे-ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिमा० स्था० ॥ ८ ॐ नमोस्तु सुर्षे-
 ष्योयेकेचंपृथिवीमनुं ॥ येऽअन्तरिक्षेवेदिवितेभ्यः-सुर्षेभ्योनमः-
 ॥ ६/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो सर्पाः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ राहुवामपार्श्वे-
 ॐ सर्षेभ्यो नमः सर्पानावा०स्था० ॥ ९ ॐ ब्रह्मजज्ञानम्यधुमपुरस्तादिद-
 सीमितसुसुर्षोव्येनऽआवहं ॥ सवुद्धन्याऽउपमाऽअस्यविबुद्धाऽसुतश्च
 योनिमसतश्चिविः ॥ ३/१ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह
 तिष्ठ ॥ केतुवामपार्श्वे-ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा० स्था० ॥ पञ्चलो-
 कपालदेवतावाहनम्— ॥ १ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो
 गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ राहोरुत्तरतः-ॐ गणपतये नमः गणपति-
 मा० स्था० ॥ २ ॐ अम्येऽअम्यिकेम्बालिकेनमानयातिकश्चन ॥
 ससस्त्यश्चुक्रु?सुभद्विहाङ्गास्पीकवुासिनीम् ॥ ३/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो
 दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ । शनेरुत्तरतः-ॐ दुर्गायै नमः दुर्गामा०
 स्था० ॥ ३ ॐ द्वायोयेतेसहस्रिणोरयासुस्त्रोभिरा गहि ॥ निपुत्तान्तो-
 मपीतये ॥ ३/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ रवेरुत्त-
 रतः-ॐ वायवे नमः वायुमा० स्था० ॥ ४ ॐ घृतघृतपावानहं
 पियनुषमां वमापानानहं पिषनुन्नरिक्षस्यहुविरमिस्वाहा ॥ दिशंस्पुदि-
 न्ऽआदिशोऽधुदिशंऽउदिशोऽदिभ्य?स्वाहा ॥ ३/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो
 आशान इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ राहोर्दक्षिणे-ॐ आशानाय नमः
 आशानमा० स्था० ॥ ५ ॐ आशानाय नमः सुस्यभिधनामनुनावती ॥
 तपोनुद्विर्मिशितम् ॥ ३/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भो अभिना इहागच्छतम् इह

तिष्ठतम् ॥ केतुदक्षिणे—ॐ अश्विभ्यां नमः अश्विनावावाह० स्थाप० ॥
 अथ क्षेत्राधिपतेः वास्तोष्पतेश्चावाहनम् ॥ १ ॐ नुहिस्पशुमविदन्न-
 द्यमुस्माद्द्वैश्वानुरात्पुरऽऽपुतारंमुग्ने? ॥ एमेनमवृधन्नुमृताऽअमर्यवै-
 श्वानुरङ्गैत्रंजिन्पायदेवा? ॥ ६/३ ॥ गुरोरुत्तरे—ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रा-
 धिपतयेनमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो क्षेत्राधिपते इहा-
 गच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्यावेशोऽअनमीवो
 भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुपस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥
 क्षेत्राधिपोत्तरे—ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि
 स्थापयामि ॥ भो वास्तोष्पते इ० इ० ॥ ॥ अथ मण्डलाद्ब्रह्मिः प्रागा-
 दितः पीठसमन्तात् इन्द्रादिदशदिक्पालानामावाहनम् ॥ १ ॐ त्राता-
 रुमिन्द्रं प्रवितारुमिन्द्रुद्देवैहवेसुहवुऽशुरुमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शुक्रं स्युऽरुद्रुतमि-
 न्द्रं ॐ स्वस्ति नो मुघवांध्यास्विन्द्रं ॥ ६/३ ॥ मण्डलाद्ब्रह्मिः पूर्वे—ॐ भूर्भुवःस्वः
 इन्द्राय नमः इन्द्रमा० स्या० ॥ भो इन्द्र इहा० इह० ॥ २ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव
 देवपायुभिर्मघो नो रक्षतन्नश्चबन्ध ॥ त्रातातोकस्युतनयेगवामस्यनिभेषुऽ
 रक्षमाणस्तवव्युते ॥ ६/३ ॥ मण्डलाद्ब्रह्मिः आग्नेय्याम्—ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने
 नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो अग्ने इ० इ० ॥ ३ ॐ युमायुच्वा-
 ङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा ॥ स्वाहा युर्मायुस्वाहायुर्मं?पित्रे ॥ ६/३ ॥ मण्ड-
 लाद्ब्रह्मिः दक्षिणे—ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः यममावा० स्थापयामि ॥
 भो यम इ० इ० ॥ ४ ॐ असुहवन्तुमयंजमानमिच्छस्तेनस्येरयापन्निव-
 हितस्करस्य ॥ अन्नयमुस्मादिच्छसातऽइच्छानमोदेविनिर्ऋते तुबभ्यमस्तु
 ॥ ६/३ ॥ मण्डलाद्ब्रह्मिः नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋ-
 तिमावाहयामि स्थापयामि ॥ भो निर्ऋते इ० इ० ॥ ५ ॐ तत्त्वाधामिद्व-
 हर्मणावन्दमानुस्तदाशांस्ते वजमानोदविधिर्भः ॥ अद्वैदमानोवृणुणोह्रयोः

हमिषमूर्जुं समग्रममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं इष्टृणां मध्येपते
योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टं तमम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यादिग्रहमण्डलदेव-
ताभ्यो नमः ध्यायामि ॥ ततः “ ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याद्यावाहितग्रहमण्ड-
लदेवताभ्यो नमः ” इत्यनेन षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ अनया पूजया
सूर्याद्यावाहितग्रहमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ तत ईशान्यां ग्रहसंबन्धिरुद्र-
कलशस्थापनम् ॥ ततो ग्रहवेदीशानदिग्भागे सितैस्तंदुलैरष्टदलं कृत्वा
भूरसीत्यादिक्रमेण पूर्णपात्रनिधानान्तं कलशं कृत्वा तत्वायामीतिवहण-
मावाह्याभ्यर्च्य “सर्वे समुद्राः सरितः” इति गंगाद्यावाहयेत् ॥ ततः प्रति-
ष्ठादिकृतं रुद्रकलशं स्पृष्ट्वा साङ्गरुद्रजपः कार्यः ॥

॥ इति ग्रहस्थापनप्रयोगः ॥

॥९६॥ अथ अग्न्युत्तारणम्-यादि ग्रहाणां मूर्तयश्चेत् हस्ते जलमादाय
देशकालौ स्मृत्वा आसाम् अमुकामुकमूर्तीनाम् अग्नितपनताडनावघाता-
दिदोषपरिहारार्थम् अग्न्युत्तारणपूर्वकपाणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य
मूर्तीर्घृतेनाभ्यज्य पात्रे निधाय तदुपरि दुग्धमिश्रितजलधारां पातयेत् ॥
ॐ समुद्रस्य च्चावक्रयाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावक्रोऽअस्मभ्यं ऽशिवो भव
॥ १७ ॥ हिमस्य च्चाजरायुणाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावक्रोऽअस्म-
भ्यं ऽशिवो भव ॥ १७ ॥ उपज्जमन्नपत्रे तसैवतरनदीष्व ॥ अग्नेपित्त-
मपापसि मण्डूकितामिरार्गाहिसेमन्नोयज्ञम्पावक्रवर्णां ऽशिवकृषि ॥ १७ ॥
अपामिदं न्ययनं ऽसमुद्रस्य निवेशनम् ॥ अर्यास्तैऽअस्मत्तपन्तु हेतयः
पावक्रोऽअस्मभ्यं ऽशिवो भव ॥ १७ ॥ अग्नेपावकरोचिपामुन्द्रयादेव-
जिह्वया ॥ आदेवाग्नेवक्षियक्षिच ॥ १७ ॥ सनं पावकदीदिवोग्नेदेवो
२ ऽइहावह ॥ उपयज्ञं हविश्च नर्द ॥ १७ ॥ पावक्रयाथश्चितयन्त्याकृपा-

क्षामन्त्रुचऽउपसोनभानुना ॥ तूर्ध्वत्रयामन्त्रैतशस्यनूरणऽआयोघृगे-
 नतनृपाणोऽअजरं ÷ ॥ १७ ॥ नमस्तेहरंसेशोचिपेनमस्तेऽअस्वर्धि-
 पे ॥ अङ्ग्यस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयं-पावकोऽअस्मदभ्यर्त्तुऽशिवोर्भव
 ॥ १७ ॥ नुपदेवेदंस्सुपदेवेद्वर्हिपदेवेद्वर्नसदेवेद्वर्हिद्वेदे
 ॥ १७ ॥ येदेवादेवानाँव्यज्ञियायज्ञियानाँसंवत्सरीणमुपभागमासते ॥
 अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्स्वयम्पिबन्तुमधुनोद्युतस्य ॥ १७ ॥ येदेवा-
 देवेष्वधिदेवत्वमायन्नेव्रह्मणंपुरऽएतारोऽअस्य ॥ येभ्योनऽऋतेप-
 वंतेधामकिञ्चननतेदिवोनपृथिव्याऽअधिस्नुर्षु ॥ १७ ॥ प्राणदाऽर्षानदा-
 ब्यान्दावर्षोदावरीवोदा? ॥ अङ्ग्यस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयं-पावकोऽ
 अस्मदभ्यर्त्तुऽशिवोर्भव ॥ १७ ॥ इत्यग्न्युत्तारणम् ॥ १७ ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठा-
 प्रयोगः-अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ।
 ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि । परा प्राणशक्तिर्देवता । आं धीजं । ह्रीं
 शक्तिः । क्रौं कीलकम् । आसु अमुकामुकमूर्तिषु प्राणप्रतिष्ठापने
 विनियोगः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं पं सं हों ॐ हं सं हं
 सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं आसां मूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं
 यं रं लं वं शं पं सं हों ॐ हं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं आसां मूर्तीनां
 जीवा इह स्थिताः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं पं सं हों ॐ हं
 सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं आसाम् अमुकामुकमूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि
 वाय्वनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं
 चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ततः प्रतिष्ठादिकं कुर्यात् ॥ प्रतिष्ठापनम्-
 ॐ मर्तो जूति ॐ एष्यं प्रतिष्ठानामयज्ञोयं प्रतेनयज्ञे नयन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठा-
 तम्भवति ॥ अमुकामुकदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवताः । नेत्रोन्मीलनम्-
 ॐ ऋष्यासिऋनीनेकश्चक्षुर्दोऽअस्मि चक्षुर्मेदेहि ॥ ३ ॥ गन्धादिपञ्चो-

पचारान्दत्त्वा षोडशसंस्कारसिद्धये षोडशमणवावृत्तीः कृत्वा आसाम्
 अमुकामुकमूर्तीनां षोडशसंस्काराः सम्पद्यन्ताम्। इति प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः।
 १९८। वैकल्पिकपदार्थावधारणं देवताभिध्यानञ्च-आचार्यः अग्नेःपश्चिमत
 उपविशेत् ॥ यजमानस्तु दक्षिणतोऽग्नेर्ब्रह्मणः पश्चिमत उपविष्ट एवा-
 स्ते ॥ आचार्यः आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाण-
 ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि वैकल्पिकपदार्थावधारणं देवताभिध्यानं च
 करिष्ये ॥ वैकल्पिकपदार्थावधारणम्-पूर्वेण ब्रह्मणो गमनमपरेण वा ॥
 अग्नेः पश्चिमतः पात्रासादनमुत्तरतो वा ॥ त्रीणि पवित्राणि ॥ पवित्रे द्वे ॥
 मोक्षणीपात्रम् ॥ आज्यस्थाली च ह्यस्थाली च तैजसी मृन्मयी वा ॥
 पालाशयः समिधो यज्ञीयवृक्षोद्भवा अन्या वा ॥ प्राञ्चावाधारौ विदिशौ
 वा ॥ समिद्धतमेऽग्नौ आज्यभागौ आग्नेयमुत्तरपूर्वाद्धे सौम्यं दक्षिणपू-
 र्वाद्धे ॥ पूर्णपात्रं दक्षिणावरो वा ॥ एतन्वैकल्पिकपदार्थानहमस्मिन्कर्मणि
 करिष्ये ॥ देवताभिध्यानम्(अन्वाधानम्) समिद्द्वयं गृहीत्वा प्रजापतिम्
 इन्द्रम् अग्निं सोमम् एकंकयाऽऽज्याहुत्या ॥ आदित्यं सोमं भौमं बुधं
 बृहस्पतिं शुक्रं शनैश्वरं राहुं केतुम् इति नवग्रहान् मधुसर्पिर्दध्याक्ताभिः
 अर्कादियथालाभसमिच्च हतिलाज्यद्रव्यैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्येण अष्टाष्टसं-
 ख्याकाभिराहुतिभिः ॥ ईश्वरम् उमां स्कन्दं विष्णुं ब्रह्माणम् इन्द्रं
 यमं कालं चित्रगुप्तमित्यधिदेवताः अग्निम् अपः धरां विष्णुम् इन्द्रम्
 इन्द्राणीं प्रजापतिं सर्पान् ब्रह्माणमेताः प्रत्यधिदेवताश्च तैरेव द्रव्यैः प्रति-
 द्रव्येण चतुश्चतुःसंख्याकाभिराहुतिभिः ॥ विनायकं दुर्गां वायुम्
 आकाशम् अश्विनाविति पञ्चलोकपालान् क्षेत्राधिपतिं वास्तोष्पातिम्
 इन्द्रम् अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं कुबेरम् ईशानं ब्रह्माणम् अनन्तं
 तैरेव द्रव्यैः प्रतिद्रव्येण द्वाभ्यां द्वाभ्याम् आहुतिभ्यां न्यूनातिरिक्तदो-

पपरिहारार्थं घृताक्ततिलद्रव्येण व्यस्तसमस्तव्याहृत्या अष्टोत्तरसहस्रैः
 अष्टोत्तरशतैः अष्टाविंशतिराहुतिभिर्वा शेषेण स्विष्टकृत् ॥ अग्निं वायुं
 सूर्यम् अग्नीवरुणौ अग्नीवरुणौ अग्निं वरुणं सवितारं विष्णुं विश्वान्दे-
 वान्मरुतः स्वर्कान्वरुणम् आदित्यम् आदितिं प्रजापतिम् एता अङ्गप्र-
 धानार्थदेवताः एकैकयाऽऽज्याहुत्या अस्मिन्ग्रहशान्त्याख्ये कर्मण्यहं
 यक्ष्ये इति समिद्धयम् अग्नावादध्यात् ॥ इति अन्वाधानम् ॥

॥ ९९ ॥ अथ कुशकण्डिका ॥ अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनास्तरणम् ॥
 तत्र पञ्चाशत्कुशमयं यथासम्भवकुशमयं वा ब्रह्माणमुपवेश्य अस्मिन्क-
 र्मणि त्वं ब्रह्मा भव ॥ भवामीति प्रतिवचनम् ॥ तत्र पूर्वेण ब्रह्मणो गमनम् ॥
 उत्तरतः प्रणीताप्रणयनम् । ब्रह्मन् अपः प्रणेऽयामि ॥ ॐ प्रणय । यंदेवता-
 वर्द्धयत्वंनाकस्यपृष्ठेयजमानोऽअस्तु ॥ सप्तकृपीणां तु कृतांश्च लोकस्त-
 त्रेमंयजमानं च धेहि ॥ ॐ प्रणय ॥ इति ब्रह्मानुज्ञातः अग्नेरुत्तरतः प्राग्गैः
 कुशैः आसनत्रयप्रकल्पनम् ॥ तत्र एकम् अग्नेरुत्तरतः । द्वितीयं तदुत्तरतः ।
 तृतीयं तत्पश्चिमे (वायव्यामित्यर्थः) । वायव्याश्रितं वारुणं चमसं दक्षिण-
 हस्तेनादाया । वामपाणौ प्राग्गं निधाय । दक्षिणाहस्तोद्धृतपात्रोदकेन आत्मा-
 भिमुखं सम्पूर्य । पश्चिमासत्रे निधाय । दक्षिणानामिक्रया जलमालभ्य
 ब्रह्मणो मुखमवलोकयन्-अग्नेरुत्तरतः प्राक्कल्पिते प्रणीतासने निदध्यात् ॥
 ईशान्यादिपूर्वाग्रैस्त्रिभिस्त्रिभिर्दमैः अग्नेः परिस्तरणम् । तच्च प्रागुदगग्रैः ।
 दक्षिणतः प्राग्गैः । प्रत्यगुदगग्रैः । उत्तरतः प्राग्गैः ॥ अग्नेरुत्तरतः पश्चाद्वा
 प्रयोजनवतां पात्राणां प्राक्संस्थमुदकंसंस्थं वा प्रागग्रमुदगग्रं वा
 आसादनम् ॥ पवित्रच्छेदना दर्भास्त्रयः ॥ साग्नेऽनन्तर्गर्भे पवित्रे
 द्वे ॥ प्रोक्षणीपात्रम् ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्थाली ॥ सम्मार्गकुशाः
 पञ्च ॥ उपयमनकुशाः सप्त ॥ समिधस्तिस्रः ॥ स्रुवः ॥ स्रुक ॥

आज्यम् ॥ त्रिःपक्षालितास्तण्डुलाः ॥ पूर्णपात्रम् ॥ दक्षिणा वरो
वा-यथाशक्ति हिरण्यादिद्रव्यम् ॥ अन्यान्पुष्पकल्पनीयानि अर्कादि-
समिधः तिलादिहवनीयद्रव्याणि ॥ इति पात्रासादनम् ॥

पवित्रे कृत्वा-प्रागग्रयोर्द्रव्योः पवित्रयोरुपरि उदगग्राणि त्रीणि
पवित्राणि निधाय उपरि प्रादेशमात्रमवशेषयित्वा अधोभागे द्वयोर्मूलेन
द्वौ कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य नखैरस्पृशन्
अनामिकाङ्गुष्ठेन द्वयोरग्रे छेदयेत् द्वे ग्राह्ये द्वयोर्मूले त्रीण्युत्तरतः क्षिपेत् ॥
प्रणीतोत्तरतः प्रोक्षणीपात्रं निधाय तत्र चुल्हकेन प्रणीतोदकं त्रिः प्रपूर्य
पवित्राभ्यामुत्पूर्य पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय दक्षिणेन हस्तेन प्रोक्षणीपा-
त्रमुत्थाप्य सव्ये पाणौ कृत्वा दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिका-
ङ्गुल्योः मध्यमपर्वाभ्यामपामुद्दिङ्गन्नम् ॥ ताभिस्तासाम्प्रोक्षणम् ॥ आज्य-
स्थाल्याः प्रोक्षणम् ॥ चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम् ॥ सम्मार्गकुशानां प्रोक्षणम् ॥
उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् ॥ समिधां प्रोक्षणम् ॥ स्रुवस्य प्रोक्षणम् ॥
स्रुचः प्रोक्षणम् ॥ आज्यस्य प्रोक्षणम् ॥ तण्डुलानां प्रोक्षणम् ॥ पूर्ण-
पात्रस्य प्रोक्षणम् ॥ अन्येषामुष्पकल्पनीयहवनीयद्रव्याणां प्रोक्षणम् ॥
असञ्चरे प्रोक्षणीपात्रं निधाय ॥ आज्यस्थाल्यां आज्यनिर्वापो ब्रह्मणा ॥
चरुस्थाल्यां पवित्रे निधाय यजमान आचार्यो वा त्रिः पक्षालितास्तण्डु-
लान् प्रक्षिप्य तत्र प्रणीतोदकमासिच्य अन्यदापि जलं निपिच्य चरु-
स्थालीस्थितपवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय दक्षिणतः ब्रह्मणा आज्याधिभ्रय-

१ कंचन वामकरे पवित्राप्र दक्षिणे पवित्रयोर्मूलं धृत्वा मध्यतः पवित्राभ्यामुत्पवनम्
इति वदन्ति तत्र मूलं न पश्याम ॥ २ ताभिः प्रणीतापात्रस्थाभिरग्निः तासां प्रोक्षणीपात्रस्थायां
प्रोक्षणमित्यर्थः ॥ विक्रान्ते प्रोक्षणीपात्रस्थाभिरग्निः प्रणीतास्थानामवा प्रोक्षणम् ॥ ३ असञ्चर-
प्रणीताभ्याम्योरन्तराल ॥

णम् मध्ये यजमानेन आचार्येण वा चरोरधिश्रयणं युगपत् ॥ आज्योत्तरतः
 गृहीतेन ज्वलदुल्मुकेन उभयोः पेशानीमारभ्य पेशानीपर्यन्तं पर्यग्निक-
 रणम् । इतरथावृत्तिः । अर्धशते चरौ स्रुवस्य प्रतपनम् । दक्षिणेन
 हस्तेन स्रुवमादाय तं प्राञ्चमर्धामुखमग्नौ तापयित्वा सव्ये पाणौ कृत्वा
 दक्षिणेन सम्मार्गाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तं सम्मृज्य मूलैरग्रमारभ्य अधस्ता-
 न्मूलपर्यन्तं सम्मृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रतप्य दक्षिणतो
 निदध्यात् ॥ सम्मार्गकुशानग्नौ प्रास्य आज्योद्वासनम्—अग्नेः सकाशा-
 दाज्यं गृहीत्वा चरोः पूर्वोत्तरतो नीत्वा अग्नेरुत्तरतः प्रोक्षण्याः पश्चिमे
 निधाय चरुमुत्थाप्य पूर्वोत्तरतो आनीय आज्यस्य पश्चिमतो
 नीत्वा आज्यस्योत्तरतः निधाय आज्यमग्नेः पश्चादानीय स्थापयेत् ।
 चरुं च आज्यस्य पूर्वेण प्रदक्षिणमानीय आज्यस्योत्तरत आसादयेत् ।
 पवित्राभ्याम् आज्योत्पवनम् । अवेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् ।
 ताभ्यामेवाज्यलिप्ताभ्यां पवित्राभ्यां प्रोक्षण्याः प्रत्युत्पवनम् । पवित्रे
 प्रोक्षण्यां निधाय दक्षिणहस्तेन उपयमनकुशानादाय सव्ये गृहीत्वा
 दक्षिणेन पाणिना घृताक्तास्तिम्नः समिधः तिष्ठन्नग्रावाधाय दक्षिणबु-
 ल्लकृगृहीतेन सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन अग्नेः ईशानकोणादारभ्य
 ईशानपर्यन्तं प्रदक्षिणवत्पर्युक्षणम् इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु
 निधानम् । अग्नेः प्रदीप्तिकरणम् ॥

॥ १०० ॥ अथ आचारहोमः ॥ स्थानोपविष्टः दक्षिणं जान्वाच्य
 कुशैर्दक्षिणाऽन्वारब्धः उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलिहस्तं हृदि निधा-
 य समिद्धतमेऽग्नौ मनसा प्रजापतिं ध्यायम् प्रणवपूर्वकं तूर्णौ स्रुवेण
 प्राञ्चमूर्ध्वस्रुजुं सन्ततमाज्येन अग्नेरुत्तरप्रदेशे पूर्वाधारमाधारयेत् । १
 मनसा ॐ प्रजापतये (अत्र न स्वाहाकारः) (प्रोक्षण्यां संस्रवमक्षेपः)

यजमानः-इदं प्रजापतये न मम ॥ २ अग्नेर्दक्षिणप्रदेशे उत्तराधारमा-
 धारयेत्-ॐ इन्द्राय स्वाहा (प्रोक्षण्यां संस्रवप्रक्षेपः) इदमिन्द्राय न मम ॥
 इत्येतौ पूर्वोत्तरावाधारौ ॥ १०१ ॥ अथ आज्यभागहोमः ॥ ३
 अग्नेरुत्तरार्थपूर्वाद्धे-ॐ अग्नये स्वाहा (प्रोक्षण्यां संस्रवप्रक्षेपः) इदमग्नये
 न मम ॥ ४ अग्नेर्दक्षिणार्द्धपूर्वाद्धे-ॐ सोमाय स्वाहा (प्रोक्षण्यां संस्र-
 वप्रक्षेपः) इदं सोमाय न मम ॥ १०२ ॥ अथ द्रव्यत्यागसङ्कल्पः ॥ यज-
 मानो हस्ते जलमादाय-इदमुपकल्पितं समिच्चरुतिलाज्यादिहवनीयद्रव्यं
 या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम । यथादैवत-
 मस्तु ॥ १०३ ॥ अग्निपूजनम्-ॐ अग्नेनयं सुपर्था रायेऽअस्मिन्निव्वश्वानिदे-
 ववृष्टुनानिष्विद्वान् । युयोद्धुस्मज्जुं हुराणमेनोभूरियिष्टान्तेनमऽउर्विक्त
 विधेम ॥ १०४ ॥ शान्तिके वरदनामाग्नये नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि
 समर्पयामि । सप्तजिह्वाख्यमुद्रां प्रदर्श्य प्रार्थना-अग्ने त्वमैश्वरं तेजः पावनं
 परमं हि तत् । तस्मात्त्वदीयहृत्पत्रे सूर्यादीन्तर्पयाम्यहम् ॥ आचार्यादयः
 सावधानाः यजमानाभीष्टसिद्धिमाप्त्यर्थं मधुसर्पिर्दद्यात्कार्कादिसमिदा-
 ज्यचरुतिलद्रव्यं चाभिघार्य स्थापितदेवतानां होमं कुर्युः ॥ १०४ ॥ प्रधान-
 होमः । प्रथमा तु वराहुतिः ॥ ॐ गुणानान्त्वा इति मन्त्रेण एकामाज्याहुतिं
 हुत्वा आकृष्णेनेत्याद्यावाहितमन्त्रैरादित्यादिनवग्रहान् क्रमेण पूर्वोक्तां कार्का-
 दिसमिच्चरुतिलाज्यद्रव्यैरष्टाष्टसङ्ख्यया हुत्वा पूर्वोक्तग्रहहोमद्रव्येणावाहि-
 तमन्त्रैरधिप्रत्यधिदेवताश्चतुश्चतुःसङ्ख्यया हुत्वा (यस्य ग्रहस्य या समित्सा
 तस्याधिदेवतायाः प्रत्यधिदेवतायाश्च योज्या) विनायकादिदिक्पाला-
 न्तदेवताः पलाशोदुम्बराण्यतमसमिच्चरुतिलाज्यद्रव्येणावाहितमन्त्रैर्द्विद्वि-

सङ्ख्यया जुहुयात् ॥ एवं प्रधानहोमं समाप्य ततः ॥ १०५ ॥ गुग्गुलु-
होमः ॥ अद्यपूर्वोच्च० तियौ मम गृहे भूतप्रेतपिशाचदोषपरिहारार्थं ज्यम्ब-
कमन्त्रेण गुग्गुलुहोममहं करिष्ये ॥ ॐ ज्यम्बकं यजामहे ० स्वाहा ॥ १०६ ॥
सर्पहोमः ॥ सर्पान् घृतेनाभिघार्य ॥ अद्यपूर्वोच्च० मम गृहे सर्वा-
विष्टपरिहारार्थं सर्वशत्रुवलक्ष्यार्थं सर्पहोममहं करिष्ये ॥ ॐ सुजोषां
इन्द्रु सगणो मरुद्भिर्दंसोर्मम्पिव वृत्रुहा शूरं विद्वान् ॥ जहि शत्रूँः
रप मृत्यो नुदुस्वाथाभयङ्कुण्णिहि विवृश्वतो नदं स्वाहा ॥ ॐ ॥ १०७ ॥
ततो लक्ष्मीहोमः ॥ क्षीरदूर्वादौडिमादिहोमद्रव्याणि एकीकृत्य घृतेना-
भिघार्य अथेत्यादि० मम गृहे अलक्ष्मीविनाशार्थं दशविधलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं
लक्ष्मीहोममहं करिष्ये ॥ श्रीश्चतेलक्ष्मी० ॥ १०८ ॥ व्याहृतिहोमः ॥ यजमानः
हस्ते जलमादाय-अस्मिन्ग्रहशान्त्यारुये कर्मणि देशतः कालतस्तन्त्रतो
मन्त्रतोवाज्ञानतोऽज्ञानतोवा अयथाकरणन्यूनकरणचतुर्विधकर्मातिरिक्त-
करणभ्रेषजातप्रत्यवायपरिहारद्वाराकर्मसाद्गुण्यसिद्धये तथा प्रधानदेवता
ग्न्योश्च मध्ये गमने तथा समिदाज्यचरुतिलादिहविषां मध्ये अन्यत
मस्याभावे होमस्वाहाकारयोः पूर्वापराभावे अग्निमध्यं हविर्गतकीटा
द्युपघाते प्रणीताग्नयोर्मध्ये गमने प्रणीतास्कन्दे इधमपरिस्तरणादिदाहे
कुण्डाद्द्विहिरग्निपतने समिच्चरुतिलाज्यमध्ये कृमिकीटकादिसंयोगे होम-
मन्त्रपठनसमये स्वरवर्णादिविस्मृतौ देवतावदानमन्त्रतन्त्रकर्मविपर्या-

१ अत्र गुग्गुलुहोमः सर्पहोमः लक्ष्मीहोमश्च कृताकृतः ॥ २ अत्र केचन-ॐ ज्ञातवेदंसे
क्षन्वामुलोमेमरातिश्रुनोनिर्देहात्तुवेदं ॥ सने-पुन्यं दतिगुं गीणि विश्वानुवेदं सिन्धुं दुद्रितास्युमिः ॥
इत्यपि मन्त्रं पठन्ति परं चायं मन्त्र ऋग्वेदीयत्वात् परशास्त्रीयः ॥ ३ शीताफलं क्षीरमाज्यं दाडिम
'मधु सर्पशां शमीपत्राणि दूर्वा च विचरत्राणि तण्डुलाः । रुदलीफलमिषाणि कृत्वा वै जुहुयात्ततः ॥

समक्षिकाक्रीष्केशादिभिर्हविर्दुष्टदग्धपाकहितस्थाने होमाकरणादिज्ञाता-
 ज्ञातदोषपरिहारार्थम्—घृताक्तकृष्णतिलद्रव्येण व्यस्तसमस्तव्याहृत्या
 अष्टोत्तरसहस्रैराष्टोत्तरशतैरष्टाविंशतिभिराहुतिभिर्वा होमं करिष्ये ॥
 पुनर्जलमादाय—भूर्भुवःस्वरिति तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः
 गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि क्रमेण अग्निवायुमूर्या देवताः सर्वासां वा
 प्रजापतिर्देवता प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः ॥ १ ॐ भूः स्वाहा ॥ २
 ॐ भुवः स्वाहा ॥ ३ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ४ ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा ॥
 एवं सप्तवारं होमे अष्टाविंशत्याहुतयो भवन्ति । सप्तविंशतिवारं होमे
 अष्टोत्तरशताहुतयो भवन्ति । द्विपञ्चाशदधिकशतद्रव्याहुतिहोमे
 (२५२) अष्टोत्तरसहस्राहुतयो भवन्ति ॥ १०९ ॥ अथ उत्तरपूजनम् ॥
 हस्ते जलमादाय-पूर्वोच्चारितशुभपुण्यतिथौ कृतस्य ग्रहशान्त्याख्यक-
 र्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं स्थापितदेवतानां मृदाग्रेश्चोत्तरपूजनं करिष्ये ॥
 गणपतिपूजनम्—ॐ गुणानान्त्वा० ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धियुद्धिसहित-
 महागणपतये नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥
 मातृकापूजनम्—ॐ समं कख्ये देव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मा-
 म्ऽआयुः ष्मोऽपीम्मोऽअदन्तवच्चीरं विदेयतवदेविसुन्दशि ॥ ३३ ॥
 ॐ वसोऽहंपवित्रं मसिशतधोरुं वसोऽहंपवित्रं मसिसुहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा-
 सवितापुनातु वसोऽहंपवित्रं गशतधरिणसुप्त्वा कामधुक्षरं ॥ ३ ॥ ॐ
 भूर्भुवःस्वः वसोऽहारासहितसगणेशगौर्याद्यावाहितमातृभ्यो नमः स-

१ उत्तराङ्गानि-पूजा सिक्टे नवाहुतयो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा ॥ श्रेयः सम्पाद्य दानं च
 ह्यभिषेको विघ्नर्जनम् ॥ २ अवकाशे सति षोडशोपचारैर्वा पूजयेत् ॥ बृहच्छौनकः—
 ह्यमनि हविर्गन्धे बहिः पतति यद्भविः । इत्थञ्च स्कन्दमन्त्रेण तदमौ निक्षिपेत्पुनः ॥ इति
 तद्भयमानवर्वाद्याहुतेः हस्ताद् भूमौ पाते ज्ञेयम् ॥

वीपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ग्रहमण्डलदेवतापूजनम्-
 ॐ ग्रहाऽऽर्ज्जाहुतयोऽव्यन्तोऽधिप्रायमतिम् ॥ तेषां विशिष्टिप्रियाणां चोहमिषु-
 मूर्ज्जः समग्रममुपयामर्गृहीतोऽसिन्द्राय च्चाजुष्टृष्टृह्णाम्भ्युपेतुयो निरिन्द्रा-
 यत्वाजुष्टृतमम् ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याद्यावाहितग्रहमण्डल-
 देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥
 अग्निपूजनम्- ॐ अग्ने नयसुपथारुयैऽअस्माद्भिर्वश्वानि देवव्युनानि-
 च्चिद्द्वान् ॥ सुयोद्धुस्मज्जुहुराणमेनुभूर्यिष्टान्तेनमऽउक्त्वित्तद्विधेमा ३६ ॥
 ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा स्वधायुताय मृदांशये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धा-
 क्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इत्युत्तरपूजनम् ॥ ११० ॥ स्वित्कृद्धोमः- हविःशे-
 पोत्तरार्धात् द्विर्द्विरवदानधर्मणावदाय द्विरभिघार्य ब्रह्मणा अन्वारब्धः
 ॐ अग्नये स्वित्कृते स्वाहा इदमग्नये स्वित्कृते न मम ॥ उदकोपस्पर्शः ॥
 ॥ १११ ॥ अथ नवाहुतिहोमः ॥ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः- १ ॐ भूः स्वाहा इद-
 मग्नये न मम ॥ २ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ३ ॐ स्वः
 स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ४ ॐ त्वन्नोऽभग्नेर्वरुणस्य च्चिद्द्वान्ते-
 वस्य हे होऽभवं यासि सीष्ठा ॥ यजिष्ठो ब्रह्मि तमुहं शोऽनुचानो विश्वानो वि-
 ष्वानोऽसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ ५ ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥
 ॐ सत्त्वन्नोऽभग्नेवमो भवोतीने दिव्होऽस्याऽउपसोऽभ्युष्टौ ॥ अर्वयवश्च-
 न्नावरुणुत्तराणोऽष्टी हि मृड्डीकः सुहवेनऽएधि स्वाहा ॥ ६ ॥ इदमग्नीवरु-
 णाभ्यां न मम ॥ ६ ॐ अथाथाप्येस्य नभि शस्ति पाश्र्वसत्यमित्वमयाऽअसि ॥

१ अग्नये गन्धादिकं बहिरेव देयमिति कल्पद्रुमकाराः । अन्ये तु मध्ये पूजनमिच्छन्ति ।
 विष्णुधर्मोत्तरे-मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन्दद्यादमेने संशयः । बहिर्नवेद्यमाग्रन्तु दातव्यमिति
 निधितम् ॥ २ कल्पद्रुमे-उत्तरपूजाम् अत्रावगरे कंचिन्मन्यन्ते अन्ये तु नवाहुतिहोमन्ते
 अपरे तु यजमानाभिरेवान्ते ॥ ३ अनेकदिनप्राथम्ये होमवेत्तदा पर्युपितदोषपरिहारार्थं हविःशे-
 स्वित्कृदर्थं पृतमप्ये रथापयेत् ॥ नष्टे दुष्टे वा हविषि आग्नेनेन स्वित्कृद्धोमः ॥

अयानोयज्ञं वहास्ययानोधेहिभेषजदृग्स्वाहा ॥ इदमग्रये अयसे न मम ॥
 ॥७॥ ॐ श्वेतेशतंवरुणषेसहस्रंयज्ञियाःपाशाविततामहान्तः। तेभिर्नोऽअघ-
 सवितोतविष्णुर्विश्वेषुश्वन्तुमरुतःस्वकर्काःस्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे
 विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥८॥ ॐ उदु-
 क्षमं वरुणपाशं मुस्मदवाधमं विमं द्रुचमं श्रथाय । अथाव्ययमादिस्यव्रते-
 तवानांगसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ॥ ११ ॥ इदं वरुणाय आदित्याय
 अदितये च न मम ॥९॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥
 ॥ इति नवाहुतिहोमः ॥

॥ ११२ ॥ बलिदानप्रयोगः ॥

हस्ते जलमादाय—मारब्धस्य ग्रहमखकर्मणः साहतासिद्धयर्थं
 दिक्पालदेवतानां स्थापितदेवतानां च पूजनपूर्वकं बलिदानं करिष्ये ॥
 दिक्पालदेवताबलिदानम्—१ ॐ श्रुतारुमिन्द्रं० । प्राच्याम्—इन्द्रं साङ्गं
 सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि ॥
 इन्द्राय साङ्गय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्त-

१ दिक्पालेभ्यः एकतन्त्रेण बलिदानपक्षे—ॐ प्राच्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये दिशे
 स्वाहा दक्षिण्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये दिशे स्वाहा पृथ्व्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये दिशे
 स्वाहो दीच्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये दिशे स्वाहोर्वाच्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये
 दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये दिशे स्वाहाऽर्वाच्ये ॥ ११ ॥ इन्द्रादिदशदिग्पालान् साङ्गान् सपरिवारान्
 सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैः अहं पूजयामि ॥ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः
 सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपमापभक्तवलिं समर्पयामि ॥ भो भो इन्द्रादि-
 दशदिक्पालाः दिशो रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत ॥ आयुःकर्तारः
 क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदाः भवत ॥
 अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ॥

२ संपूर्णमन्त्राः द्रष्टव्याथेद् ग्रहस्थापनप्रयोगे (३५४ श्लो द्रष्टव्याः ।)

वलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्र दिशं रक्ष वलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्याभ्यु-
 दयं कुरु ॥ आयुःकर्त्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्न-
 कर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ॥ अनेन वलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ (एवं
 सर्वत्र) २ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने ॥ अग्नेयाम्-अग्निं साङ्गं ॥ अग्नये साङ्गाय
 सपरिवाराय ॥ भो अग्ने दिशं रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥ अनेन वलि-
 दानेन अग्निः प्रीयताम् ॥ ३ ॐ यमायुच्चाङ्गिस्वते ॥ दक्षिणस्थाम्-यमं
 साङ्गं ॥ यमाय साङ्गाय ॥ भो यम दिशं रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥
 अनेन वलिदानेन यमः प्रीयताम् ॥ ४ ॐ असुद्वन्तु ॥ निर्ऋत्याम्-
 निर्ऋतिं साङ्गं ॥ निर्ऋतये साङ्गाय ॥ भो निर्ऋते दिशं रक्ष ॥
 आयुःकर्ता ॥ अनेन वलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् ॥ ५ ॐ तच्चां वामि ॥
 पश्चिमाम्-वरुणं साङ्गं ॥ वरुणाय साङ्गाय ॥ भो वरुण दिशं
 रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥ अनेन वलिदानेन वरुणः प्रीयताम् ॥ ६ ॐ
 आनो नियोद्भिर्द्भ ॥ वायव्याम्-वायुं साङ्गं ॥ वायवे साङ्गाय ॥
 भो वायो दिशं रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥ अनेन वलिदानेन वायुः
 प्रीयताम् ॥ ७ ॐ द्युयऽसोम ॥ उदीच्याम्-सोमं साङ्गं ॥
 सोमाय साङ्गाय ॥ भो सोम दिशं रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥ अनेन
 वलिदानेन सोमः प्रीयताम् ॥ ८ ॐ तमीशानु ॥ ईशान्याम्-ईशानं
 साङ्गं ॥ ईशानाय साङ्गाय ॥ भो ईशान दिशं रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥
 अनेन वलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ॥ ९ ॐ अस्मेरुद्रा ॥ पूर्वैशान-
 ययोर्मध्ये ऊर्ध्वायाम्-वृद्धाणं साङ्गं ॥ वृद्धाणे साङ्गाय ॥ भो वृद्धान्
 दिशं रक्ष ॥ आयुःकर्ता ॥ अनेन वलिदानेन वृद्धा प्रीयताम् ॥
 १० ॐ स्योना पृथिवि ॥ निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये अधःस्थार्या दिशि-
 अनन्तं साङ्गं ॥ अनन्ताय साङ्गाय ॥ भो अनन्त दिशं रक्ष ॥

आयुः कर्ता० । अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम् ॥ स्थापितदेव-
ताबलिदानम् ॥ १ गणेशबलिः—ॐ गुणानन्त्वा० । गणपतिं
साङ्गं० । गणपतये साङ्गाय० । भो गणपते इमं बलिं गृहाण मम सकु-
ट्टुम्बस्याभ्युदयं कुरु ॥ आयुःकर्ता० । अनेन बलिदानेन गणपतिः प्रिय-
ताम् ॥ २ मातृकाबलिः—ॐ समं कल्पे देव्याधियासन्दक्षिणयोरुच-
क्षसा ॥ मामुऽआयुःपमोपीम्पोऽअहन्तवन्वीरंविदेयुतवदेविसुन्दारी
॥ १३ ॥ वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्याद्यावाहितमातुः साङ्गाः० ॥
वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्याद्यावाहितमातृभ्यः साङ्गाभ्यः० । भो भो
वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्याद्यावाहितमातरः इमं बलिं गृहीत मम
सकुट्टुम्बस्याभ्युदयं कुरुत । आयुःकर्त्र्यः० । अनेन बलिदानेन वसो-
र्द्धारासहितसगणेशगौर्याद्यावाहितमातरः प्रीयन्ताम् ॥ ३ ग्रहबलिः—
ॐग्रहाऽऽर्ज्जाहुतयोव्यन्तोविष्णायमुक्तिम् ॥ तेषांविशिष्टिप्रियाणांवोहमि-
पुमूर्जुःसमंग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टृङ्गृह्णाम्भ्युपेतुषोनि-
रिन्द्रायत्वाजुष्टृतमम् ॥ १ ॥ आदित्याद्यावाहितदेवताः साङ्गाः० ॥
वः अहं पूजयामि ॥ आदित्याद्यावाहितदेवताभ्यः साङ्गाभ्यः० ।
भो भा आदित्याद्यावाहितदेवताः इमं बलिं गृहीत मम० ॥ आयुः
कर्त्र्यः० । अनेन बलिदानेन आदित्याद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् ॥
४ क्षेत्रपालमहाबलिः—मण्डपाद्भिः वंशपात्रे सदीपमापभक्तदध्योद-
नताम्बुलदक्षिणाकूष्माण्डोदककुम्भयुतं बलिं संस्थाप्य हरिद्राकुङ्कुमसि-
न्दूरपताकायुतं कृत्वा । हस्ते जलमादाय० अद्य पूर्वोच्चारितशुभपुण्य-
तियौ सकलारिष्टशान्तिपूर्वकं प्रारीप्सितस्य ग्रहशान्त्यारूपस्य कर्मणः
साङ्गतासिद्धयर्थं क्षेत्रपालाय पूजनपूर्वकं बलिदानं करिष्ये ॥ बलिदा-

१ हेमाद्रिः—सोदकुम्भं सकूष्माण्ड क्षेत्रपालबलिं हरेत् ॥ चतुर्वर्तिसमायुक्तं दीपं तत्र
नियामयेत् ॥

नपात्रे पूर्गीफले क्षेत्रपालमावाहयेत् ॥ ॐ नुहिस्पशुमविंदल्लुह्यमु-
स्मादद्वैम्बानुरारपुरऽएतारंमुग्ने? ॥ एभेनमवृधनुमृताऽअमर्च्यं वैश्वा-
नुरह्वैत्रंजिरयायदेवा? ॥ ६/३ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्र-
पालमावाहयामि स्थापयामि ॥ क्षेत्रपालाय नमः इत्यनेन षोडशोपचारैः
पञ्चोपचारैर्वा सम्पूजयेत् । प्रार्थयेत्—ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूत-
मेतगणाधिप । पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥ आयुरारो-
ग्यम्मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ मा विघ्नं माऽस्तु मे पापं मा सन्तु
परिपान्थिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतमेताः सुखावहाः ॥ यं यं यं
यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं संसंहारमूर्तिं शिरमुकुटजत्र-
शेखरं चन्द्रविम्बम् । दं दं दं दीर्घकेशं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं
पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुमतिं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ ॐ नमः क्षेत्रपाल
चित्रतुरङ्गवाहन सर्वभूतमेतपिशाचशाकिनीढाकिनीवेतालादिपरिवृत
दध्योदनप्रियसकलशक्तिसहित इमां पूजां गृहाण। अनया पूजया क्षेत्रपालः
प्रीयताम् ॥ क्षेत्रपालाय साङ्गनय सपरिवाराय बर्बरकेशाय भूतमेतपि-
शाचशाकिनीढाकिनीकृष्माण्डगणवेतालादिपुताय सायुधाय सशक्ति-
काय सवाहनाय इमं सदीपमापभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो क्षेत्रपाल
सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु ॥ आयुःकर्ता
क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता क. क. वरदो भव ॥
अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ॥ पश्चादनवेक्षमाणेन दुर्घ्राक्षणेन
शूद्रेण वा बलिं नीत्वा चतुष्पथे स्थापयेत् ॥ यत्रमानस्तस्य पृष्ठतो
द्वारपर्यन्तं गत्वा जलं सिपेत्—ॐ—हिङ्गारायस्वाहाहिङ्गितायस्वाहाकृ-
न्दतेम्बाहावकृन्दायस्वाहापौषतेस्वाहाप्यप्रोषायस्वाहागन्धायस्वाहा-
ग्घ्रातायस्वाहानिबिंष्टायस्वाहापविष्टायस्वाहासादितायस्वाहावर्गतेस्वा-

हासीनायस्वाहाश्यानायस्वाहास्वपते स्वाहाजाग्रते स्वाहाकूर्जतेस्वाहा
 प्पुबुद्धायस्वाहाविजृम्भमाणाय स्वाहाविचृत्ताय स्वाहासङ्घर्षानायस्वा-
 होपस्थितायस्वाहायनायस्वाहाप्रार्थणायस्वाहा ॥ २१ ॥ पाणिपादं
 मक्षाल्य आचामेत् ॥

॥ ११३ ॥ पूर्णाहुतिहोमः । तत्र उपकल्पनीयानि—आज्यस्थाली होमा-
 वशिष्टादाज्यादन्यदाज्यं वैकङ्कन्ती स्रुक् खादिरः सुवः सम्मार्गकुशाः पवित्रे
 नारिकेलफलं ताम्बूलवीटकं पूर्णीफलं पट्टवस्त्रखण्डं रक्तसूत्रं पुष्पाणि
 पुष्पमाला च इत्येतान्युपकल्प्य हस्ते जलमादाय अद्यपूर्वोच्चारितशुभ-
 पुण्यतिथौ कृतस्य ग्रहशान्त्याख्यस्य सम्पूर्णतासिद्धयर्थं वसोर्धारासम-
 न्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ॥ आज्यं निरूप्याग्नावधिथित्य स्रुवं स्रुवं
 च प्रतप्य सम्मार्गकुशैः सम्मृज्य मणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य अग्नेः
 पश्चिमतो याम्यायां निदध्यात् ॥ आज्यमुद्वास्य पवित्राभ्यामुत्पूय अवेक्ष्य
 अपद्रव्यं निरस्य स्रुवेण चतुर्वारमाज्यं स्रुचि गृहीत्वा शिष्टाचारात्तस्यां
 सपूर्णीफलं ताम्बूलवीटकं निधाय तदुपरि रक्तवस्त्रवेष्टितं रक्तमूत्रबद्धं
 पुष्पमालापरिवेष्टितं सिन्दूरादिभिश्चर्चितं नारिकेलफलं निधाय अधो-
 मुखस्रुवच्छत्रां तां स्रुचमादाय वामस्तनान्तमानीय यजमानान्वारब्धः
 आचार्यः आसीन एव पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॥ ॐ समुद्राद्गुम्भिर्मर्धुमाँऽ-

१ द्रक्लपहुमहोमपरिच्छेदे—केचित्तिष्ठन् पूर्णाहुतिमाचरन्ति तन्निर्गुलम् ॥ परशुराम-
 हास्त्रप्रयोगे—होमोऽमी द्विविधः प्रोक्तः श्रौतः स्मार्तश्च होतृभिः । श्रौतो यजतिमंज्ञोऽथी स्मार्तो
 जुहोति संज्ञकः ॥ तिष्ठता ह्यते यत्र याज्यया चानुवाक्यया । वपद्रकारप्रदानेन स श्रौतः परिकी-
 र्तितः ॥ यत्र होत्रोपविष्टेन स्वाहाकारेण ह्यते । स स्मार्त इति विज्ञेयः पूर्णाहुत्यादिकर्मज्ञ ॥ के-
 चिदुत्थाय कुर्वन्ति कात्पायनमतं न तत् । तस्मादध्वर्युणा कार्या पूर्णासीनेन सर्वदा ॥ कल्पदमे तथा
 खण्डदीक्षितमहास्त्रपद्धतौ तु श्रुचा एव पूर्णाहुतिः ॥ अन्येषा मन्त्राणामपि विकल्पेनैव पूर्णाहुतिः
 प्रोक्ता यथा—सप्ततेअग्र इति मन्त्रेण वा अत्र इदमग्रये मस्रव इति त्यागः ॥ मूर्धान्दिव इ-
 रयेनेन वा अत्र इदमग्रयं वैश्वानरोयति त्यागः ॥ समुद्रार्दीर्मीरिति श्रुचेन वा पुनस्त्वेति वा पूर्णा

उदारदुपां शुनासममृतत्वमान् ॥ घृतस्यनामगुह्यदस्तिजिह्वादे-
 वानाममृतस्यनाभिः ॥ १७ ॥ वृयन्नामप्रद्ववामाघृतस्यास्मिन्वृयज्ञेधा-
 रयामानमोभिः ॥ उपवृहमाश्रुणवच्छस्यमानञ्चतुःशृङ्गोवमीदृगौरऽप-
 तत् ॥ १८ ॥ च्चारिशृङ्गात्रयोऽस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽस्य ॥
 त्रिधावृद्धोवृषभोरौरवीतिमृद्धोदेवोमस्यांरऽआविवेश ॥ १९ ॥ त्रिधाहि-
 तम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासोघृतमन्त्रविन्दन् ॥ इन्द्रऽएकऽस्यऽएक-
 ज्ञजानघेनादेकं स्वधयानिपृतभुः ॥ २० ॥ एताऽअर्पन्तिहृद्यार्समु-
 द्द्राच्छतव्रजारिपुणानावचसोघृतस्यधाराऽअभिचाकशीमिहिरुण्ययो-
 धेतसोमध्यऽआसाम् ॥ २१ ॥ सम्यक्सन्वन्तिसारितोनधेनाऽअन्तर्दाम-
 नंसापुयमानाः ॥ एतेऽअर्पन्त्युर्मयोघृतस्य मृगाऽईवक्षिपणोरीर्षमाणाः
 ॥ २२ ॥ सिन्धौरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातंप्रमियदंपतयन्तिवृद्धाः ॥ घृत-
 स्यधाराऽअरुपोनवृजाकाष्ठाभिन्दन्नुभिभिर्देपिन्वमानं ॥ २३ ॥ अभिर्-
 वन्तुसमनेवुषोपादं कल्प्याण्युःस्मयंमानासोऽअग्निम् ॥ घृतस्यधारादं-
 समिधोनसन्तताजुषाणोहंर्षतिजातवेदाः ॥ २४ ॥ कृद्याऽइवधृतुमेतवाऽ-
 उऽअञ्जयज्ञानाऽअभिचाकशीमि ॥ यत्रसोमंऽसूयतेयत्रसज्ञोघृतस्यधाराऽ
 अभितत्पवन्ते ॥ २५ ॥ अञ्च्युर्पतसुप्तुतिङ्गर्ष्यमाजिमस्मासुभुद्रा-
 द्रविणानिधत्त ॥ इमंयज्ञन्नयतद्वेवर्तानोघृतस्यधाराधुमत्पवन्ते ॥ २६ ॥
 धामन्तेविश्वभुवन्नुमधिश्चित्तुन्तुऽसमुद्वेहद्व्युन्तरायुपि ॥ अपामनीके
 समिधेयऽआभृतस्तर्षश्यामुमधुमन्तन्तऽऊर्मिम् ॥ २७ ॥ पुनंस्त्वा-

दधात्यनया वा प्रयाणादिमप्रय इति त्यागाः ॥ केचन विकल्पं विहाय सवैरपि मन्त्रैः पूर्णाहुति-
 होमं कुर्वन्ति तदेतत्करण मन्त्राणां विकल्पानुगमात् समुच्चये च प्रमाणाभावात् चिन्त्यमिति
 वरुणमुकाराः ॥

द्विच्यारुद्रद्रावसंबुद्धं समिन्धतु।म्पुनर्द्विद्दम्माणोवसुनीथयद्वै? ॥ घृतेनुच-
न्तुवृवृवृवृयस्वसुच्या? सन्तुयजमानस्यकामां६॥१२॥ सुप्ततेऽअग्नेसुमि-
धं+सुप्तजिह्वा?सुप्तऽऋषयं६सुप्तधामं प्प्रियाणि॥सुप्त होत्रां६सप्तधा-
त्वावजन्तिमप्तयोनीरापृणस्वघृतेनुस्वाहा ॥ १३ ॥ मुर्दानन्दिवोऽअरुति-
म्पृथिव्यावृश्वानरमृतऽआजातमुग्निम् ॥ कुविऽसुम्राजमतिथिञ्ज-
नानामासन्नापात्रंजनयन्तदेवा? ॥ १४ ॥ पूर्णादिर्विपरांपतसुपूर्णापुनरा-
पत ॥ वृस्त्रेवृविक्रीणावहाऽइपुमूर्जं६शतक्रतो ॥ १५ ॥ अथमातराहुते-
वाहुतेवावदरुयाकामयेतुसोस्याऽअनिरसितायैकुंभ्यैदव्योपहान्तिपूर्णा-
दिविपुरापतसुपूर्णापुनरापत । वृस्त्रेवृविक्रीणावहाऽइपुमूर्जं६शतक्रतो-
स्वाहा ॥ कां० २ । अ० ५ । प्रपाठकः ४ । ब्रा० ४ ॥ त्यागः-
इदमग्रये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवतेऽग्रये अद्भ्यश्च
न मम ॥ संस्रवप्रक्षेपः ॥ इति पूर्णाहुतिः ॥

॥ ११४ ॥ वसोद्धाराहोमः—औदुम्बरीम् ऋज्वीमकोटरां वाहु-
मात्रप्रमाणां निर्मलघृतपूरितां स्रुचं घृत्वा अग्नेरुपरि वसोद्धारां पातयेत् ॥
तस्यां च घृतधारायां स्रुवप्रणालिकया अग्नौ पतन्त्यां सत्यां
वक्ष्यमाणमन्त्रान्पठेत्—

ॐ सुप्ततेऽअग्नेसुमिधं+सुप्तजिह्वा?सुप्तऽऋषयं६सुप्तधामंप्प्रि-
याणि॥सुप्तहोत्रां६सप्तधात्वावजन्तिमप्तयोनीरापृणस्वघृतेनुस्वाहा ॥ १३ ॥
शुक्रज्योतिश्चक्षुत्रज्योतिश्चसुच्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिर्म्माम् ॥ शुक्रश्चऽ
ऋतुपाश्चात्त्यं६हा६॥१३॥ईदृश्चान्युदृश्चसुदृश्चप्रतिसदृश्च ॥ मितश्च-
सम्मितश्चसर्भरां६॥१३॥ऋतश्चसत्यश्चदध्रुवश्चध्रुणश्च ॥ घृत्तांचविधृत्ता-
ंचविधारुय? ॥१३॥ ऋतुजिचंसत्यजिचंसेनुजिचंसुपेणश्च ॥ अन्तिमि-
त्रश्चदूरेऽअमित्रश्चगुण? ॥ १३ ॥ ईदृक्षांसऽएतादृक्षांसऽकुपुणं+सुदृक्षां-

सुदंष्ट्रतिसदृक्षासुऽएतन ॥ मितासंश्चक्ष्मिंतासोनोऽअद्यसपरसोमरु-
 तोयज्ञेऽअस्मिन् ॥ ५५ ॥ स्वतंवांश्चक्ष्मघासासिधसान्तपुनश्चष्टदमेधीचं ॥
 क्रीडीवशाकीचीज्जेपी ॥ ५६ ॥ इन्द्रन्दैवीविंशोमुरुतोनुवत्वर्मानोभवद्दय-
 येन्द्रन्दैवीविंशोमुरुतोनुवत्वर्मानोभवन् ॥ एवामिष्यजमानन्दैवीश्चावि-
 शोमानुपीश्चानुवत्वर्मानोभवन्तु ॥ ५७ ॥ इमंस्तनमूर्जस्वन्तन्धयापा-
 म्पपीनमग्रेसरिरस्यमध्ये ॥ उरसञ्जुपस्वपधुमन्तमर्षन्तसमुद्रियुसद-
 नुमर्षिशर ॥ ५८ ॥ घृतमिमिसेघृतमस्ययेनिर्गधृतेश्चितोघनम्बस्य-
 धाम ॥ अनुष्थधमावंहमादयस्यस्वाहाकृतंष्टपमवाक्षिहुळ्यम् ॥ ५९ ॥
 वसोदंष्ट्रविभ्रमसिशतधारांवंसोदंष्ट्रविभ्रमसिसहस्रधारम् । देवस्त्वांमहि-
 तापुनातुवसोदंष्ट्रविभ्रणशतधारेणसुप्त्वाकामधुक्षदं ॥ ६० ॥ अयत्कु-
 र्मणात्यरीरिचं यद्दान्युनुमिहाकरम् ॥ अग्निंस्विष्टकृद्विद्वान्स्विष्टं सुहु-
 तंरुतोतुस्वाहा ॥ इदमग्रे न मम ॥ नात्र संस्त्रवप्रक्षेपः ॥ अग्निमद-
 क्षिणां कुर्यात्-असुदंष्ट्रयज्ञुऽउवाचनप्रतायावैविभेमीतिकृतेनप्रतेत्याभित-
 एवमापरिस्त्रणीयुरितितस्मादेतदग्निमभितःपरिस्तृणन्तितृणायवैविभे-
 मीतिकृतेतृप्तिरितिब्राह्मणस्यैवतुप्तिमनुतृप्येयमितितस्मात्सुस्थितेयज्ञे-
 ब्राह्मणन्तृप्येयैवतुपायजुषैवैतत्तर्पयति ॥ शतपथब्राह्मण काण्ड १
 मपाठक ६ ब्राह्मण १ मन्त्र २८ ॥ इत्यग्निं प्रदक्षिणीकृत्य अग्नेः पश्चात्
 प्राङ्मुखो यजमान उपाविशेत् ॥ १५ ॥ मस्मधारणम्-अज्यायुपञ्जमदग्नेर्द-
 ल्लाटे । कुशयपस्यत्यायुपम्-श्रीशायाम् । यदेवेपुंत्यायुपम्-वाहोः ।
 तन्नोऽअस्तु ज्यायुपम्-हृदये ॥ ततः संस्त्रवप्रक्षेपम् ॥ पवित्राभ्यां
 मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्राह्मणे पूर्णपात्रदानम्-प्रणीतोद-
 फेन सहूलः-कृतस्य ग्रहशान्त्याख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं
 ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ यजमानो वदेत्

प्रतिगृह्यताम् ॥ ब्रह्मा प्रतिगृह्णामि—ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा
प्रतिगृह्णातु ॥ अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः—ॐ आपः शिवाः शिव-
तमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥

॥११६॥ श्रेयोदानम्-ब्रह्मादय ऋत्विजादयश्च आचार्यद्वारा श्रेयो-
दानं कुर्युः ॥ उदङ्मुख आचार्यः प्राङ्मुखस्थितयजमानहस्ते श्रेयोदानं
कुर्यात्—शिवा आपः सन्तु इति यजमानहस्ते उदकं दत्त्वा सौमनस्यमस्तु
इति पुष्पाणि ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति अक्षतांश्च दत्त्वा ततो दीर्घमायुः
शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु इति पुनरुदकं दद्यात् ॥ तत आचार्यः—
हस्ते साक्षतसोदकपूर्णाफलं गृहीत्वा-भवन्नियोगेन मया अस्मिन् ग्रह-
शान्त्याख्ये कर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह
यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं च यः कृतो होमस्तस्मात् आचार्य-
त्वात् ब्रह्मत्वात् गाणपत्यात् सादस्यात् होमात् यदुत्पन्नं श्रेयः तत्तुभ्य-
महं सम्प्रददे ॥ तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वी भव ॥ प्रतिगृह्य “भवामि” इति
यजमानो वदेत् ॥११७॥ दक्षिणादानम् ॥ सपत्नीको यजमानः अग्नेः
पश्चिमतः उपविष्टः उदङ्मुखानाचार्यादीन्वरणक्रमेण पूजापूर्विकां दक्षिणां
दद्यात् ॥ हस्ते जलमादाय देशकालौ स्मृत्वा मया आचरितस्य ग्रहशान्त्या-
ख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धये आचार्यादिदृष्टेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः पूजन-
पूर्वकं दक्षिणाप्रदानं करिष्ये ॥ आचार्यपूजनम्-आचार्याय एतत्ते पाद्यं
शिष्टाचारात्पादौ प्रक्षाल्य इदमर्घ्यम् इमे तुभ्यं वार्हस्पत्ये वाससी एष
ते गन्धः । इमानि पुष्पाणि एष ते धूपः दीपः नैवेद्यताम्बूलादीनि
इति दत्त्वा एतावतीं दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ आचार्याय
गोप्रदानम्-अमुकशर्मणे आचार्याय गौनिष्कयभूतमिदं हिरण्यम्
अग्निदेवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ हिरण्यासम्भवे रजतं दद्यात् ॥ ततो

ब्रह्मन्नेतत्ते पाद्यमित्यादिनां पूर्वोक्तप्रकारेण पूजापूर्वकं ब्रह्मणे दक्षिणा
 दद्यात् ॥ एवं सदस्याय उपद्रष्ट्रे गाणपत्याय ऋत्विग्भ्यः ग्रहजापके-
 म्यश्च यथोक्तदक्षिणां दत्त्वा आशिषो गृह्णीयात् ॥ स्वर्णदानमन्त्रः—
 हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः ॥ अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं
 प्रयच्छ मे ॥ इदं यथाशक्ति सुवर्णम् अग्निदेवतम् अमुकशर्मणे तुभ्य-
 महं सम्पददे ॥ प्रतिगृह्णामि ॥ ॐ देवस्यंत्वासवितुः११सुवेऽश्विनोऽर्वा-
 हुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥ भूमिदानमन्त्रः—सर्वभूताश्रया भूमिर्वरा-
 हेण समुद्धृता । अनन्तसस्यफलदा ह्यतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ इमां
 भूमिं विष्णुदेवतां वा तन्निष्कयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यम् अमुकशर्मणे
 आचार्याय तुभ्यमहं सम्पददे ॥ ॐ देवस्यंत्वा० । तिलपात्रदानम्—महर्षे-
 र्गोत्रसम्भूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मादेयां प्रदानेन मम दोषो
 व्यपोह्यतु ॥ एतांस्तिलान् प्रजापतिदेवतान् आचार्याय तुभ्यमहं सम्पददे
 न मम ॥ ॐ देवस्यंत्वा० ॥ ११८ ॥ अथाभिषेकः—आचार्यादयः सर्वे
 उदङ्मुख्वास्तिष्ठन्तः ग्रहवेदीशानस्यकलशोदकं पात्रान्तरे उद्धृत्य दूर्वा-
 पञ्चपल्लवैर्वक्ष्यमाणैर्वेदिकैः मन्त्रैः प्राङ्मुखोपविष्टं सकुटुम्बं यजमानं
 तद्गामत उपविष्टां तत्पत्नीञ्च अभिषिञ्चेयुः ॥ ॐ आपोहिष्ठा० । योर्व-
 शिवतमो० । तस्माऽअरङ्गमामवोषस्य क्षयायजिन्वथ । आपो० ॥
 पर्यःपृथिव्या० । देवस्यंत्वासवितुः११सुवेऽश्विनोऽर्वाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ता-
 ब्भ्याम् ॥ सरस्वत्यैद्वाचोयन्तुर्ष्यन्त्रियैर्दधामिवृहस्पतेर्प्रासाम्प्राञ्जये-
 नुभिषिञ्चाम्मसौ ॥ ११९ ॥ देवस्यंत्वा० । सरस्वत्यैद्वाचोयन्तुर्ष्यन्त्रेणाग्ने-
 साम्प्राञ्जयेनुभिषिञ्चामि ॥ १२० ॥ देवस्यंत्वा० । अश्विनोऽर्भोपञ्जयेन्ते-

१ दानानि—स्वर्णमोभूतिलान्दद्यात् सर्वदोषापनुत्तये ॥

२ सविस्तारः अभिषेकः कर्तव्यश्चेत् पुण्याहवाचने (३२८) श्लोके इत्यर्थः ।

जसेब्रह्मवचुंसायुभिषिञ्चामिसरस्वच्यै भैषज्जयेनष्टीर्युयान्नाहर्था-
युभिषिञ्चामीन्द्रस्पेन्द्रियेणवलायश्रुयैशसेभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥
द्यौःशान्ति० । यतौयत६० । वि०श्वानिदेव० । पुलाशंभवति० सुर्वेपांवा-
ऽप्यवेदानांरुसोयत्सामसुर्वेपामेवैतद्वेदानांरुसेनाभिषिञ्चति० ॐशा-
न्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा-अभिषेककर्तृकेभ्यो
ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहदक्षिणां दास्ये तेन श्रीकर्माधीशः प्रीयताम् ।
अभिषिक्तः सपत्नीकौ यजमानः सर्वौषधिभिरुद्वर्तितान्ङ्गः गङ्गादिशुद्धो-
दकेन स्नात्वा उभाभ्यामभिषिक्ताभ्यां त्यक्तानि स्नानवस्त्राण्याचार्याय
दत्त्वा शुक्लमाल्याम्बरधरो घृतमङ्गलतिलकः स्वासने उपविशेत् ।
घृतपात्रदानम्—घृतपूरितकांस्यपात्रे मुखावलोकनं कुर्यात् । रूपेण बोरु-
पमुग्ध्यागान्तुधोर्वोव्वि०श्वेदेदाविभंजतु॥ऋतस्यप्रथाप्रेतचन्द्रदक्षिणावि-
स्वहंपश्यव्यन्तरिक्षंभ्यतस्व सदस्यैः॥३॥ इदम् आज्यपात्रं सद-
क्षिणाकम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः-
कृतस्य ग्रहशान्त्यारूपस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणान्
भोजयिष्ये तेन श्रीकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ भूयसीदक्षिणाप्रदानम्-
हस्ते जलमादाय-नानावेदान्तर्गतनानाशाखाध्यायिभ्यो नानागोत्रेभ्यो
नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दा-
तुमुत्सृजे॥ॐतरसदिति वदन भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा तेषाम् आशिषो गृही-
यात् ॥ देवताविसर्जनम् पुण्याक्षतपक्षेपेण स्थापितदेवान्त्रिसर्जयेत्-ॐ उ-
त्तिष्ठद्ब्रह्मणस्पतेदेवपन्तस्त्रमेहे॥उपप्रयन्तुमरुतंसुदानवऽन्द्रप्राश-
र्भवासर्वा ॥३॥ यान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया ॥ इष्ट-
कामप्रसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥ पीठादिदानम्-हस्ते जलं गृहीत्वा
इमानि गणेशमातृकाप्रहपीठानि समूर्तिकानि सकलशानि सब्रह्मणि

अवाशिष्टपूजोपस्कराणि च आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ अग्निविस
 र्जनम् ॐ अग्ने नयं सुपयारायेऽस्मान्निवृद्धवानिदेवव्युनानिबिद्धान् ।
 सुयोद्धधस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्वान्तेनमऽउक्तिविधेम ॥ ३६ ॥ अग्नये
 नमः सकलोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ॐ वृक्षयज्ञं च्छयज्ञ-
 पतिङ्गच्छस्वाँष्योनिङ्गच्छस्वाहा ॥ एषतेयज्ञोयज्ञपतेसहस्रं कृत्वा कृत्-
 सर्वधीरुस्तज्जुपस्वस्वाहा ॥ ३३ ॥ गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थाने
 विश्वतोमुख ॥ हव्यमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे ॥ गच्छ
 गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ
 हुतांशन ॥ सम्पूर्णतावाचनम् अञ्जलिं बद्धा-मया यत्कृतं ग्रहशा-
 न्त्याख्यं कर्म तत् कालहीनं भक्तिहीनं शक्तिहीनं श्रद्धाहीनं च भवतां
 ब्राह्मणानां वचनात् सर्वं परिपूर्णमच्छिद्रं चास्तु ॥ विप्रा वदेयुः-
 अस्तु परिपूर्णमच्छिद्रम् ॥ ११९ ॥ अथ प्रैपात्मकपुण्याहवाचनम् ॥
 स्वपुरतः पञ्चवर्णैः अष्टदलं कृत्वा तत्र भूमिं स्पृष्ट्वा- ॐ महीदधी ०
 यवप्रक्षेपः- ॐ ओषधयु ० । तदुपरि कलशस्थापनम्- ॐ आर्जिम्घ ०
 जलपूरणम्- ॐ ब्रह्मणस्यो ० गन्धप्रक्षेपः- ॐ त्वाङ्गन्धर्वा ० धान्यप्रक्षेपः-
 ॐ धान्यमसि ० सर्वौषधीप्रक्षेपः ॐ वाऽओषधी ० । दूर्वाप्रक्षेपः- ॐ का-
 ण्डाचक्राण्डा ० । पञ्चपञ्चवप्रक्षेपः ॐ अश्वत्थेवो ० । सप्तमृत्प्रक्षेपः- ॐ स्यो
 नार्पृथिवि ० । फलप्रक्षेपः- ॐ या ० फुलिनी ० । पञ्चरत्नप्रक्षेपः- ॐ परिवाज ०
 हिरण्यप्रक्षेपः ॐ हिरण्यगर्भ ० । रक्तसूत्रवेष्टनम्- ॐ मुजातो ० । पूर्णपा-
 त्रम्- ॐ पूर्णादंष्ट्रि ० । वरुणावाहनम् ॐ तत्रायामि ० । अस्मिन् कलशे
 वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिरुम् आवाहयामि स्थापयामि ॥
 प्रतिष्ठापनम्- ॐ मनोजुति ० । ॐ वरुणाय नमः चन्दनं समर्पयामि । इत्या-

दिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य तत्त्वाद्यामीति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य अनेन पूजनेन
 वरुणः प्रीयताम् ॥ अनामिकया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमन्त्रयेत् । कलशस्य ०
 दुरितक्षयकारकाः । 'गायत्र्यादिभ्यो नमः' इत्यनेन पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य
 कलशं प्रार्थयेत्-देवदानवसंवादे ० । प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ नमो नमस्ते
 स्फटिकप्रभाय सुभेतहाराय सुमङ्गलाय ॥ सुपाशहस्ताय झपासनाय
 जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ।
 पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सन्निधो भव । ततो यजमानः युग्मविप्रान्
 गन्धमाल्यवस्त्रदक्षिणादिभिः सम्पूज्य तान् उदङ्मुखानुपवेश्य पूजित-
 कलशं कराभ्यामालभ्य-मम गृहे ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ विप्राः
 ॐ अस्तु पुण्याहम् ॥ एवं त्रिः ॥ मम गृहे ॐ कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥
 विप्राः ॐ अस्तु कल्याणम् ॥ एवं त्रिः ॥ मम गृहे ॐ ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥
 विप्राः ॐ कर्म ऋद्धयताम् ॥ एवं त्रिः ॥ मम गृहे ॐ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥
 विप्राः ॐ आयुष्मते स्वस्ति ॥ एवं त्रिः ॥ मम गृहे ॐ श्रीरस्त्विति भवन्तो
 ब्रुवन्तु ॥ विप्राः ॐ अस्तु श्रीः ॥ एवं त्रिः ॥ इति पुण्याहं वाचयित्वा मन्त्रा-
 शिषो गृहीत्वा-प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणा-
 देव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या
 तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
 ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ततो
 ब्राह्मणान् भोजयित्वा दीनानाथांश्चान्नादिना सन्तोष्य स्वयं सुहृन्मि-
 त्वादियुतः सोत्साहः सन्तुष्टो हविष्यं भुञ्जीत ॥

॥ इति वैदिकग्रहशान्तिप्रयोगः ॥

॥ अथ षोडशसंस्कारप्रयोगः ॥

॥ १२० ॥ अथ गर्भाधानसंस्कारप्रयोगः ॥ १ ॥

अथर्तुमती स्त्री नूतनवस्त्रादिकं परिधाय शुभासने प्राङ्मुखमुपवि-
शेत् ॥ ततः पतिपुत्रवतीभिः कुलवृद्धसुमङ्गलस्त्रीभिर्गोधूमनारिकेलादि-
नानाफलैस्तत्पल्लवैश्च प्रवेशनं यथावृद्धाचारं कारयेत् ॥ शान्त्यभावे
पत्न्या सह कर्ता मातरभ्यङ्गस्नानं कृत्वा तथा सहोपविश्याचम्य
प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य अस्या मम भार्यायाः प्रथमगर्भा
तिशयद्वारा अस्यां जनिष्यमाणसर्वगर्भाणां वाजगर्भसमुद्भवैर्नोनिव-
र्हणार्थं गर्भाधानसंस्कारारण्यं कर्माहं करिष्ये ॥ इति संकल्पयेत् ॥
पुनर्जलमादाय ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं स्वस्ति-
पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये ॥ तानि कृत्वा ॥
कर्तुः क्षपारुर्मणो मन्त्राभिज्ञाने सति सूर्यमवलोक्य कर्माङ्गब्राह्मणान्
संभोज्य विप्राशिपो गृहीत्वा मातृगणं विसृज्य क्षपायामाभिगमनादिकं
कुर्यात् ॥ मन्त्राणामभिज्ञाने तु ॥ सूर्यावलोकनोत्तरं दिवैव मन्त्रजपमात्रं
नाभिदेशाभिर्षनादि हृदयालम्भनान्तं गर्भाधानारण्यं कर्म कृत्वा तदङ्ग
तथा ब्राह्मणान् सम्भोज्य तैर्भ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा तेषामाशिपो गृहीत्वा
मातृगणं विसर्जयेदिति ॥ आदित्यं गर्भमित्यादित्यमवेक्षते ॥ ॐ आदि-
त्यङ्गर्भमपर्यसासर्माद्दिधसहस्रस्यप्तिर्माङ्घ्रिः श्वरूपम् ॥ परिवृद्धधिहरसा-
मामिर्मधंस्थाहंशतायुपङ्कणुडिचीयमानहं ॥ ११ ॥ अनेन मन्त्रेण दम्प-

१ ऋतुदर्शनमारभ्य आद्यरात्रिचतुष्क पर्वदीनि पङ्कदिनानि च वर्जयित्वा ज्योति-
शास्त्रोक्ते ह्येते दिने ह्येते काले पुत्रार्थिना युग्माद्य रात्रिषु कन्यार्थिना तु अयुग्माद्य रात्रिषु
च गर्भाधान कार्यम् ॥ गर्भाधानसीमतोश्रयने तु स्त्रीसंस्कारत्वात्प्रतिगर्भे नावर्तेते किन्तु
प्रथमगर्भे एव कार्ये ॥

तिभ्यां सूर्यावलोकनं नमस्कारश्च कार्यः ॥ ततः सायङ्कालीनं नित्यं
सम्पाद्योभौ श्वेतवस्त्रधारणानुलेपनमाल्याभरणालङ्कृतौ सदीपशयनागारे
प्रविश्य तत्र सुप्रसारितशय्यायामारूढ्य सुमुहूर्ते प्राविशरः शयित-
स्त्रियमुत्तानां कृत्वा भर्ता तस्याः नाभिदेशे हस्तं दत्त्वाऽ-
भिमृश्य जपेत् ॥ ॐ पूषाभगऽसवितामेददातुरुद्रःकल्पयतुललामगुंवि-
ष्णुर्योनिङ्कल्पयतुत्वष्टारूपाणिपिष्टशतु ॥ आसिञ्चतुप्रजापतिर्धातागर्भ-
न्दधातुते ॥ गर्भधेहिसिनीवालिगर्भधेहिपृथुष्टुके ॥ गर्भन्तेऽअश्विनौदे-
वात्राधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ तेजो वैश्वानरो दद्यात् ॥ अथब्रह्मानुमन्त्रयते ॥
ब्रह्मागर्भं दधातुते ॥ अथाभिगमनम्-गायत्रेणस्वाच्छन्दसामन्यामित्रैष्टु-
भेनस्वाच्छन्दसामन्यामिजागतेनस्वाच्छन्दसामन्यामिदारेतोमूत्रं द्विज-
हातियोनिं प्रविशदिन्द्रियमागर्भोजुरायुणावृतऽउल्लवञ्जहातिजन्मना ।
ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानं ऽशुकृन्मन्थंसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृत-
म्मधु ॥ १६ ॥ अभिगमनोत्तरं तस्याः दक्षिणस्कन्धोपरि हस्तं नीत्वा तेन
हृदयमालभते ॥ ॐ यत्ते सुसीमेहृदयन्दिविचन्द्रमसिथितम् ॥ वेदाहन्त-
न्मान्तद्वियात्पश्येम शरदःशतञ्जीवेमशरदःशतऽशृणुयाम शरदःशतम् ॥
कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं स्मृत्युक्तान् दशसहस्राकान्ब्राह्मणान्
भोजयिष्ये ॥ तेन श्रीकर्मज्ञदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां
दत्त्वा तेषामाशिषो गृहीत्वा ॥ यान्तु मातृगणाः सर्वे ० ॥ इति मातृणां
विसर्जनं कार्यम् ॥ इति गर्भाधानसंस्कारप्रयोगः ॥ १ ॥

॥ १२१ ॥ अथ पुंसवनसंस्कारप्रयोगः ॥ २ ॥

तत्र गर्भाधानोत्तरं द्वितीये तृतीये मासि शुभेऽहनि गर्भिणीमृपवासं

१ पुंसवनं तु गर्भसंस्कारत्वात्प्रतिगर्भं कार्यमिति गर्भसिन्धौ । पुंसवनसंस्कारे गुरुगण-
स्तमलमासादिदेशो नास्तीति संस्काररत्नमालायाम् ॥

कारयित्वा शुचिः स्नात्वा भर्ता आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकाल
 कीर्तनान्ते अस्यां मम भार्यायामुत्पत्स्यमानस्य गर्भस्य वैजिकगार्भिक-
 दोषपरिहारार्थं पुरुषताज्ञानोदयप्रतिरोधपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरमीत्यर्थं
 पुंसवनाख्यं कर्माहं करिष्ये। पुनर्जलमादाय-तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं स्व-
 स्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये ॥ इति संकल्प्य
 गणपतिपूजनादि नान्दीश्राद्धान्तं सर्वं कुर्यात् ॥ (अत्र पुण्याहवाचनान्ते
 प्रजापतिः प्रीयतामिति वदेत् ।) ततस्तस्मिन्नहनि गर्भिणीं स्नापयित्वाऽऽ-
 ते वाससी परिधाप्योपवास्य रात्रौ न्यग्रोधावरोडाङ्कुराँश्चोदकेन पिष्ट्वा
 वस्त्रगालितं तदुदकं गर्भिणीदक्षिणनासिकायामासिञ्चति भर्ता ॥ तत्र
 मन्त्रौ ॥ ॐ हिरण्यगर्भदं ० ॐ अद्भ्यः सम्भृतदं ॥ कूर्मपित्तं चोपस्थे कृत्वा
 गर्भमभिमन्त्रयते ॥ तत्र मन्त्रः ॥ ॐ सुपण्णोसिगरुत्वमसिखिवृत्तेशिरो
 गायत्रश्चक्षुर्वृद्धयन्तरेपक्षौ ॥ स्तोमंऽआत्ममाच्छन्दाँस्यद्भानिबर्जू
 पिनामं ॥ सामतेतनूर्वामदेव्यै संज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिण्यादंज्ञपा? ।
 सुपण्णोसिगरुत्वमान्दिवंश्चच्छस्व-पत ॥ १ ॥ कृतस्यकर्मणःसाङ्गतासि-
 द्धयर्थं स्मृत्युक्तान्दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॥ ब्राह्मणेभ्यो
 दक्षिणां दत्त्वा तेषामाशिषो गृहीत्वा ॥ यान्तु मातृगणाः सर्वे ० ।
 इति मातृगणं विसर्जयेत् ॥ इति पुंसवनसंस्कारप्रयोगः ॥ २ ॥

॥ १२२ ॥ अथ सीमन्तोन्नयनसंस्कारप्रयोगः ॥ ३ ॥

प्रथमे गर्भे पष्ठेऽष्टमे वा मासे पुत्रक्षत्रे चन्द्रताराग्रहानुकूलदिने
 पत्न्या सह मङ्गलस्नानं कृत्वा अहतवासोयुगालङ्कृतः शुचिर्दर्भपाणिः
 पत्न्या सह बहिःशालायां शुभासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणा
 नायम्य देशकालसंकीर्तनान्ते तनुरुधिरामियाळक्ष्मीभूतराक्षसीगणदूर-

निरसनक्षमसकलसौभाग्यनिदानभूतमहालक्ष्मीसमावेशनद्वारा प्रति-
 गर्भवीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्धणजनकातिशयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं
 स्त्रीसंस्काररूपं सीमन्तोन्नयनारण्यं कर्म करिष्ये ॥ तत्र निर्विघ्नता-
 सिद्धयर्थं गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनम् अविघ्नपूजनं मण्डप-
 स्थापनं मातृकापूजनं वसोर्धारा आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं च
 करिष्ये ॥ तत्र बहिःशालायां स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं मङ्गल-
 नामाग्रेः स्थापनम् ॥ ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनादि आज्यासादनान्तरं
 तण्डुलतिलमुद्रानां पृथक्पृथगासादनम् ॥ तत्र उपकल्पनीयानि ॥
 मृदु पीठम् ॥ युग्मान्यौदुम्बरफलान्यपस्वान्येकस्तवकनिवद्धानि ॥
 त्रयोदशपरिमाणकाल्त्रयोदर्भपिञ्जुलाः ॥ ज्येष्ठी शलळी ॥ वीरतर-
 शङ्कुः ॥ (अश्वत्थो वैलवः शारेपीको वा) पूर्णपात्रम् ॥ वीणागायिनौ
 चेति ॥ आज्यनिर्वपणानन्तरं चरुपात्रे मुद्रप्रक्षेपं कृत्वाऽधिश्रयणम् ॥
 ईपच्छृतेषु तिलतण्डुलप्रक्षेपः ॥ पर्याग्निकरणान्ते आधारावाज्यभागौ
 स्रुवेण जुहुयात् ॥ (मनसा) ॥ ॐ प्रजापतये (स्वाहा) इदं प्रजापतये
 न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदम् इन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदम्
 अग्नये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ हस्ते अक्षता-
 न्गृहीत्वा ॥ ॐ अग्ने नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः
 गन्धाक्षतपुण्याणि समर्पयामि ॥ ततश्चरुमभिघार्य स्रुवेण चरुं जुहुयात् ॥
 ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ इति हुत्वा स्थालीपाकेनो-
 त्तरार्द्धात्स्विष्टकृत् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते
 न मम ॥ ततः आज्येन भूराद्या नवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये
 न मम ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐ स्वः स्वाहा

इदं सूर्याय न मम ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ
सत्त्वन्नोऽअग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ अयाथाप्ते० । इदमग्ने
अयसे न मम ॥ ॐ येतेशतं० ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो
देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुत्तमं० ॥ इदं वरुणाया-
दित्यायादितये च न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये
न मम ॥ ९ ॥ इति नवाहुतयः ॥ ततः संस्रवप्राशनादि प्रणीताविमोक्तान्तं
होमशेषं समाप्य ॥ ततोऽग्नेः पश्चाद्द्रुपीठनिधानम् ॥ तदुपरि गर्भवती-
मुपवेशयेत् ॥ ततो युग्मेन सटालुग्रप्सेनौदुम्बरेण त्रिभिश्च दूर्भपिञ्जुल-
स्त्रेण्या शलल्या वीरतरशङ्कुना पूर्णचात्रेण चेत्येतैः सर्वैः पुञ्जीकृतैः
सीमन्तं मूर्ध्नि विनयति भर्ता ॥ ततो विनयनम् ॥ ॐ भूर्विनयामि ॥ १ ॥
ॐ भुवर्विनयामि ॥ २ ॥ ॐ स्वर्विनयामि ॥ ३ ॥ इति त्रिभिर्मन्त्रै-
स्त्रिंविनयति ॥ तत औदुम्बरस्यादिपञ्चरुस्य वेण्यां बन्धनम् ॥ ॐ
अयमूर्जावतोऽवृक्षऽऊर्जाव फलिनी भव ॥ १ ॥ ततो भर्ता वीणागाथि-
नो राजानऽसंगायेतामिति प्रैषमाह । ततश्च तौ सौत्साहौ गायेताम् ॥
स च गाथामन्त्रः—ॐ सोमऽएवनोराजेमामानुषीः प्रजाः ॥ अविमुक्तच-
क्रऽआसीरंस्तीरेतुभ्यमसाविति ॥ १ ॥ असौ स्थाने समीपावस्थितायाः
नद्या नामग्रहणं रुयेव करोति ॥ गङ्गायमुनेत्येवमादिप्रथमान्तम् ॥
कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं स्मृत्युक्तान्दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणा-
न्भोजयिष्ये ॥ तेन श्रीकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ब्राह्मणान् गन्धा-
दिभिः सम्पूज्य तेभ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा तेषाम् आशिषो गृहीत्वा
अग्निं विसृज्य मातृणां विसर्जनम् ॥ इति सीमन्तोन्नयनसंस्कारः ॥ ३ ॥

॥ १२३ ॥ अथ शीघ्रप्रसवोपायो यन्त्रञ्च ॥

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शवरीनाम यक्षिणी ॥ तस्या नूपुरशब्देन विश-
ल्या स्यात्तु गर्भिणी स्वाहा ॥ इति मन्त्रेणैकविंशतिदूर्वाङ्कुरैरेकपलं
तिलतैलं प्रदाक्षिणमावर्तयन्नष्टशतं मन्त्रं जपित्वा तत्तैलं किञ्चित्पायये-
च्छेषमुदरे लेपयेदिति ॥ अथ सुखप्रसवयन्त्रमप्युक्तं यन्त्रप्रकाशे—
गजाश्रिवेदा उडुराट्शराङ्का रसर्पिपक्षा इति हि क्रमेण ॥ लिखेत्प्रमृतेः समये गृहे वै सुखेन नार्यः
प्रसवन्ति शीघ्रमिति ॥ इति सुखप्रसवयन्त्रम् ॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

॥ १२४ ॥ अथ जातकर्मसंस्कारप्रयोगः ॥ ४ ॥

यदुना सह यजमानो मङ्गलस्नातः आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमु-
खश्चेत्यादि० पठित्वा हस्ते जलमादाय अद्येत्यादि० अमुकवारान्वि-
तार्या मम अस्य कुमारस्य जातकर्मनामकर्मनिष्क्रमणान्नप्राशनचौळा-
न्तानां संस्काराणां स्वस्वकाले अकरणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं
अनादिष्टं प्रायश्चित्तं होष्ये ॥

॥ १२५ ॥ अथ अनादिष्टप्रायश्चित्तहोमः ॥

यजमानः एवं संकल्प (ग्रहयज्ञस्थण्डिलात् दाक्षिणे) द्वादशा-
ङ्गुलपरिमिते प्रादेशमात्रे वा स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्नि सं-
स्थापयेत् । यथा—सुवासिन्या आनीतमाग्निमाग्नेय्यां स्थापयित्वा ततः ॐ

१ ध्रुवा पुत्रं जातमात्रं सचैलं स्नात्वा कुर्याज्जातकर्मस्य तातः ॥ यावन्न छिद्यते नालं
तावन्प्राप्नोति सूतकम् । छिद्ये नाले ततः पश्चात्सूतकं नु विधीयते ॥

२ यदि स्वस्वकाले क्रियते तदा प्रतिसंस्कारे आदौ गणपतिपूजनं उप्याहवाचनं
मातृकापूजनपूर्वकम् आभ्युदयिकं धादं विधेयम् । यदि कालान्तरे एकस्मिन् दिवसे क्रियते
तदा पूर्वोक्तीत्यापि मातृणां पूजनम् आभ्युदयिकं धादं आदौ वर्तव्यं न पृथक् पृथक् ।

३ प्रतिसंस्कारं वाऽनादिष्टहोतव्यं नात्र मन्त्रोपवेशनादि ।

हुंफद् इति ऋष्यादांशं नैर्ऋत्यां परित्यज्य ॥ विट्नामानमग्निम् आवा-
 हयामि स्थापयामि ॥ इति अग्निं संस्थाप्य ॥ आज्यं निरूप्य ॥ अधि-
 श्रित्य ॥ स्रुवं प्रतप्य ॥ संमृज्य उद्वास्य उत्पूय अवेक्ष्य जुहुयात् ॥
 ॐभूः स्वाहा इदंमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐभुवः स्वाहा इदं नायवे
 न मम ॥ २ ॥ ॐस्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥
 ॐभूर्भुवःस्वः स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ ४ ॥ ॐत्वन्नोऽअग्ने-
 वरुणस्यच्चिद्द्वान्देवस्येहोऽअवयासिसीष्टाहं ॥ यजिष्ठोवहिंनमदंशो-
 शुचानोविविश्वाद्देवां ॐसिप्रमुमुग्ध्युस्मत्स्वाहा ॥ ५ ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां
 न मम ॥ ५ ॥ ॐसस्वन्नोऽअग्नेष्टमोभंवातीनेदिहोऽअस्याऽउपसोव्यु-
 ष्ठी ॥ अवयक्ष्वनोवरुणंरराणोन्वीहिर्महीकऽसुहवोऽनएधिस्वाहा ॥ ६ ॥
 इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ६ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिःशस्तिपाश्च-
 सत्यमित्वमयाऽअसि ॥ अयानोवजंवाहास्ययानोधेहिभेपजऽस्वाहा ॥
 इदमग्नये अयसे न मम ॥ ७ ॥ ॐवेते शतंवरुणवेसहस्रंयज्ञियाः-
 पाशाविततामहान्तः ॥ तेभिर्नोऽअद्यसावितोतविष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतः
 स्वर्काःस्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो
 मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ८ ॥ ॐ उदुत्तमंवरुणपाशंमस्मदवा-
 धमंषिमदध्यमं ॐश्रथाय ॥ अथाच्चयमादित्यञ्जतेतवानां सोऽअदितये-
 स्याम स्वाहा ॥ ९ ॥ इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम ॥ ९ ॥ अनेन
 अनादिष्टप्रायश्चित्तहोमकृतेन मम अस्य कुमारस्य जातकर्मादि चौला-
 न्तानां संस्काराणां कालातिक्रमदोषनिवृत्तिरस्तु ॥ जलमादाय—अद्ये-
 त्यादि० मम अस्य कुमारस्य जातकर्मस्वकालातिक्रमदोषपरिहारार्थं
 पादकृच्छ्ररूपप्रायश्चित्तं रजतप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ अनेन

अनादिष्टप्रायश्चित्तकृतेन मम अस्य कुमारस्य जातकर्मस्वकालातिक्रम-
दोपनिवृत्तिपूर्वकजातकर्मकरणाधिकारसिद्धिरस्तु ॥ इति अनादिष्टप्राय-
श्चित्तहोमः ॥

अथ जातकर्मसंस्कारप्रयोगः ॥ यजमान आचम्य प्राणानायम्य
अग्नेत्यादि० मम अस्य कुमारस्य गर्भाम्बुपानजनितसकलदोपनिवर्ह-
णायुर्मेधाभिष्टुद्धिबीजगर्भसमुद्भूतैरनोनिवर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरमीत्यर्थं
जातकर्माख्यं कर्म करिष्ये ॥ ॐ अग्नेत्यादि० ॥ मम अस्य कुमारस्य
जातकर्मसंस्काराङ्गनिमित्तं प्राक् पञ्चोपचारैः गणपतिपूजनमहं
करिष्ये ॥ ॐ गुणानान्त्वा० । ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धियुद्धिसहितमहागण-
पतये नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षनपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति
संपूजयेत् ॥ अनया पूजया सिद्धियुद्धिसहितमहागणपतिः प्रीयताम् ॥ ततः
अनामिकया सुवर्णान्तर्हितया कांस्यपात्रे मधुघृतं एकीकृत्य वा केवलं
कुमारं प्राशयति ॥ ॐ भूस्त्वयि दधामि ॥ ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॥
ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वं त्वयि दधामि ॥ इति
मन्त्रेण सकृत्प्राशयति वा प्रणवमन्त्रेण प्राशयति ॥ इति मेधाजननम् ॥
अथायुष्यकरणं करोति तद्यथा ॥ कुमारस्य नाभिसमीपे दक्षिण-
कर्णसमीपे वा अग्निरायुष्मान्नित्यादिमन्त्रान् जपति । यथा-ॐ अग्नि-
रायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ॐ
सोमऽआयुष्मान्सऽओषधिभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥
ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ॐ देवाऽ-
आयुष्मन्तस्तेमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ॐ ऋषयऽ-
आयुष्मन्तस्ते धर्तैरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ॐ पितरऽ-
आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ॐ

यज्ञऽआयुष्मान्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वायुपायुष्मन्तं करोमि ॥
 ॐ समुद्रऽआयुष्मान्स स्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुपायुष्मन्तं करोमि ॥
 (इत्येतावत्पर्यन्तम् अधिरायुष्मानित्याद्यारभ्य त्रिर्जपति ॥) तत
 ज्यायुषमिति च त्रिर्जपेत् ॥ ॐ ज्यायुषस्त्रयमदंग्रेदं कश्यपस्यः ज्यायुषम् ॥
 यद्देवेषु त्ज्यायुषं तन्नोऽस्तु ज्यायुषम् ॥ इति त्रिः ॥ ६३ ॥ पिता यदि
 कामयेदयं कुमारः सर्वमायुरियादिति तदा कुमारं दिवस्परीत्येकादश-
 मिः ऋग्भिरभिमृशेत् ॥ ॐ दिवस्परेत्पथमञ्जोऽग्निरस्मद्द्वि-
 तीयं परिजातवेदाहं ॥ तृतीयं मप्सु नृमणाऽअजं स्रमिन्धानऽएनञ्जरे-
 स्वाधी? ॥ १ ॥ ६४ ॥ विद्वातेऽअग्नेत्रेथात्रयाणि चिद्वातेधामविभृता-
 पुरुत्रा ॥ चिद्वातेनामपरमङ्गुहायद्विद्वातमुत्संध्यतऽआजगन्धं ॥ २ ॥
 समुद्रेत्त्वानृमणाऽअप्सवन्तर्हृचक्षाऽईधेदिवोऽअमनुऽऊधन् ॥ तृतीयं-
 चारजसितास्थिवा ॐ समपामुपस्थेमहिषाऽअवर्द्धन् ॥ ३ ॥ अवक्रन्ददु-
 ग्निस्तनयान्निवृद्यौ? क्षामारैरिहदद्वीरुधं समञ्जन् ॥ सदृशोजं ज्ञानो विदी-
 मिदोऽअत्रख्यदारोर्दसीभानुनाभाच्यन्त? ॥ ४ ॥ श्रीणामुदुरोध्रुणौ-
 रयीणाम्मनीषाणाम्प्रार्पणं सोमंगोपाहं ॥ वसुं सुनु? सहसोऽअप्सुराः
 जाविभ्रात्यग्रं उपसांभिधान? ॥ ५ ॥ विश्वस्यकेतुर्ध्रुवं नभ्यगर्भं
 आरोर्दसीऽअपृणाज्जायमानहं ॥ व्रीडुश्चिद्विभिनस्परायज्ञनायदुग्नि-
 मयं जन्तुपञ्च ॥ ६ ॥ उशिववपावकोऽअरति? सुमेधामस्येष्वाग्निरमु-
 तोनिधाये ॥ इयंति धूमं रूपम्भरिं भ्रदुच्छुक्क्रेणशोचिपाद्यामिनं सन
 ॥ ७ ॥ इज्ञानो रुक्मऽउर्ध्वोऽव्यद्व्यौ द्दुर्मर्षमायुः श्रियेरुचान? ।
 अग्निरमृतोऽअभवद्द्वयोभिर्च्यदेन्यौरजनयत्सुस्ताहं ॥ ८ ॥ यस्तोऽ-
 अद्रुक्कृणवद्भद्रदशोचेपुपन्दैवघतवन्तमग्ने ॥ प्रतत्रयप्रतुरं वस्योऽअ-
 च्छाभिः सुम्नन्देवभक्तैर्व्यविष्टु ॥ ९ ॥ आतम्भं जसौ भवसेष्वग्नेऽउक्त्वयऽ

उक्त्वथऽआर्भजशस्यमाने।प्रियऽमूर्ध्वाप्रियोऽअग्रार्भवाच्चुञ्जातेनभिनदु-
दुज्जनिच्वैहं।१०।त्वामंग्रेयजमानाऽअनुद्यून्निव^१श्यावसुदधिरेवाध्वानि॥
त्वयांसहद्रविणमिच्छमानाव्व्रजङ्गेमन्तमुशिजोद्विवन्वुहं॥११॥ ३६॥

ततः कर्ता बालस्य पूर्वादिचतुष्टयु दिक्षु चतुरो ब्राह्मणान् चैकं मध्ये
नैर्ऋत्ये वाऽवस्थाप्य तान्प्रति इममनुप्राणेत्यादि प्रैषं ब्रूयात् ॥ ततस्ते
प्रेषिताः पूर्वादिक्रमेण कुमारं लक्ष्मीकृत्य प्राणेत्यादि ब्रूयुः ॥ एवं
प्रैषानुप्रैषं सर्वत्र ॥ यथा-इममनुप्राण । प्राण इति पूर्वः ॥ इममनुव्यान ।
व्यानेति दक्षिणः ॥ इममन्वपान । अपानेति अपरः ॥ इममनूदान ।
उदानेत्युत्तरः ॥ इममनुसमान ॥ समानेति पंचमः उपरिष्ठादेवक्षमाणो
ब्रूयात् ॥ (अविद्यमानेषु विषेषु स्वयमेव पूर्वादितिं परिक्रम्य
प्राणेत्यादि ब्रूयात् ॥ नात्र प्रैषः ॥) स बालो यस्मिन्भूमागे जातो भवति
तमभिमन्त्रयते ॥ ॐ वेदतेभूमिहृदयन्दिविचन्द्रमसिथितम् ॥ वेदाहन्त-
न्मान्तद्विद्यात्पश्येमशरदःशतस्त्रीवेमशरदः शतऽमृणुयामशरदः शतम् ॥
अथैनं शिशुमभिमृशति ॥ ॐ अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्रुतम्भव ॥
आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम् ॥ हस्ते जलमादाय-
कृतस्य जातकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं स्मृत्युक्तान् दशसंख्याकान्
ब्राह्मणान् भोजयिष्ये तेन श्रीकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ लम्बोदरनमः ॥
यथाशक्त्या जातकर्मसंस्कारविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णता ॥
॥ इति जातकर्मसंस्कारप्रयोगः ॥ ४ ॥

॥ १२६ ॥ अथ पष्ठीपूजनप्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य । हस्ते जलमादाय-अद्येत्यादि० अनयोः
मूर्तिकाबालकयोः आरोग्याभिवृद्धयर्थं सकलारिष्टशक्तिद्वारा श्री-

परमेश्वरप्रीत्यर्थं विघ्नेशस्य जन्मदायाः पृष्ठीदेव्या जीवन्तिकायाश्च यथा-
मिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये ॥ एतत्प्रतिमाः (कंकुमादिना कुड्ये छेत्स-
नीयाः) पीठादौ वाऽक्षतपुञ्जेषु पूगीफलेषु विनिवेश्याः ॥ हस्ते अक्षतान्
गृहीत्वा ॥ विघ्नेश इहागच्छ इहतिष्ठ विघ्नेशाय नमः विघ्नेशमावाहयामि स्या०
॥ १ ॥ जन्मदे इहा० जन्मदायै० जन्मदामावा० स्या० ॥ २ ॥ पृष्ठीदेवि इहा०
पृष्ठीदेव्यै० पृष्ठीदेवीमावा० स्या० ॥ ३ ॥ जीवन्तिके इहा० जीवन्तिकायै०
जीवन्तिकायावा० स्या० ॥ ४ ॥ ॐ मनोजुति० मंत्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा “विघ्नेश-
जन्मदापृष्ठीदेवीजीवन्तिकाभ्यो नमः” इति मूलमंत्रेण षोडशोपचारैः
पूजनं कुर्यात् ॥ प्रार्थना—पृष्ठीदेवि नमस्तुभ्यं मृत्तिकागृहशालिनि । पूजिता
परमा भक्त्या दीर्घमायुः प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ जननी जन्मसौख्यानां
वर्धिनी धनसंपदाम् । साधिनी सर्वभूतानां जन्मदे त्वां नता वयम् ॥ २ ॥
गौरीपुत्रो यथा स्कंदः शिशुत्वे रक्षितः पुरा ॥ तथा ममाप्यमुं बालं
पृष्ठिके रक्ष ते नमः ॥ ३ ॥ सर्वविघ्नानपाकृत्य सर्वसौख्यप्रदायिनि ॥
जीवन्तिके जगन्मातः पाहि नः परमेश्वरि ॥ ४ ॥ इति संप्रार्थ्य ॥
अनया पूजया विघ्नेशजन्मदापृष्ठीदेवीजीवन्तिकाः प्रीयन्ताम् ।
ततः सूत्तिकागृहे सोपस्करं बलिं दद्यात् । बलिद्रव्याय नमः गंधं
पुष्पं समर्पयामि । (जलं गृहीत्वा) क्षेत्रस्याधिपते देवि सर्वारिष्ट-
विनाशिनि । बलिं गृहाण मे रक्ष क्षेत्रं सूतिं च बालकम् ॥ १ ॥ इमं
सोपस्करबलिं क्षेत्राधिपत्यै देव्यै नमः समर्पयामि । ततः “खड्गदे-
वताः” अक्षतपुञ्जेषु आवाहयेत् । तद्यथा—राकायै० राकामावा० ॥ १ ॥
अनुमर्त्य० अनुमतिमावा० ॥ २ ॥ सिनीवाल्यै० सिनीवालीमावा० ॥ ३ ॥
बुद्धे० कुहूमावा० ॥ ४ ॥ वातघ्न्यै० वातघ्नीमावा० ॥ ५ ॥ इत्यावाह्य
प्रतिष्ठां कृत्वा । “राकाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः” इति मूलमंत्रेण पंचो-

पचारैः संपूज्य । जलमादाय । अनेन पंचोपचारैः पूजनाख्येन कर्मणा राकाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् । ततो बहिरागत्य द्वारस्योभयतः कज्जलेन द्वे द्वे मातरौ लिखेत् ॥ तासां नामानि । धिषणा वृद्धिमाता च तथा गौरी च पूतना । आयुर्दाय्यो भवन्त्वेता अद्य बालस्य मे शेवाः॥ “धिषणादिचतसृमातृभ्यो नमः” इति मंत्रेण पंचोपचारैःसंपूज्य । स्ते जलमादाय । अनया पूजया धिषणादिचतसृमातरः प्रीयन्ताम् ॥ हृतस्य पृष्ठीपूजनकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं यथाशक्ति सुवासिनीः भोजयिष्ये । विभेभ्यश्च खाद्यतांबूलदाक्षिणादिकं दद्यात् । तेभ्य आशिषो वृह्णीयात् । दशमदिने पृष्ठीदेवतादिविसर्जनम् ॥ इति पृष्ठीपूजाविधिः ॥

॥ १२७ ॥ अथ नामकर्मसंस्कारप्रयोगः ॥ ५ ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेत्यादि० अद्येत्यादि० । मम अस्य कुमारस्य नामकरणस्य स्वकालाकृतजनितदोषप्रत्यवायपरिहारार्थं पाद-कृच्छ्ररूपं प्रायश्चित्तं रजतमत्याभ्रायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ अनेन पाद-कृच्छ्ररूपप्रायश्चित्तकृतेन मम अस्य कुमारस्य नामकरणस्वकालातिक्रमदोषनिवृत्तिपूर्वकं नामकरणसंस्कारकरणे अधिकारसिद्धिरस्तु ॥ पुनर्जलमादाय-मम अस्य कुमारस्य नामकर्मणि अधिकारार्थं सूत्रोक्तान् त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् यथाकाले भोजयिष्ये ॥ तेन ममास्य कुमारस्य नामकर्मण्यधिकारसिद्धिरस्तु ॥ अद्येत्यादि० मम अस्य शिशोः बीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिवर्हणायुरभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नामकरणसंस्काराख्यं कर्म करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन गणपतेः “महागणपतये नमः” इति पञ्चोपचारैः पूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य गणेशस्य पञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात् वा ॐ गुणानान्त्वा० । इति

मन्त्रेण सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इति पूजनम् ॥ ततः
 शिष्टाचारात्कांस्यपात्रे तंडुलान् प्रसार्य तदुपरि सुवर्णशलाक्या
 गणपतिस्वकुलदेवताभक्तनामलेख्यम् ॥ ततो मासनाम लेख्यम् ॥
 ततो ज्योतिःशास्त्रोक्तावकहृदाचक्रानुसारेण नक्षत्रनाम लेख्यम् ॥ ततो
 व्यवहारनाम लेख्यम् ॥ अद्येत्यादि० ममास्य शिशोः ब्रह्मायुष्यप्राप्त्यर्थं
 नामदेवतापूजनमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य । ॐ मनोजूतिरिति नामदे-
 वतायाः प्रतिष्ठा कार्या ॥ ततः ॐ भूर्भुवःस्वः “नामदेवतायै नमः” इति
 नाममन्त्रेण आवाहनम् आसनं पाद्यम् अर्घ्यम् आचमनीयं स्नानं वस्त्रं
 यज्ञोपवीतं गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलतांबूलं हिरण्यदक्षिणां प्रदक्षिणां
 नमस्कारान्मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि इति वा पंचोपचारैः संपूजयेत् ॥
 अनया पूजया नामदेवता प्रीयतां न मम ॥ ततः स्वदक्षिणतो मातु-
 रुत्सङ्गस्थस्य शिशोर्दक्षिणकर्णे कथयति ॥ हे कुमार ! त्वं गणपतिभ-
 क्तोऽसि । सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय ॥ अभिवादयामि ॥ आयुष्मान्भव
 सौम्य ॥ हे कुमार ! त्वं कुलदेव्या भक्तोऽसि । सर्वान्ब्राह्मणान् अभि-
 वादय ॥ अभिवादयामि ॥ आयुष्मान्भव सौम्य ॥ हे कुमार ! त्वं मास-
 नाम्ना अमुकशर्मासि । सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय ॥ अभिवादयामि ॥
 आयुष्मान्भव सौम्य ॥ हे कुमार ! त्वं नक्षत्रनाम्ना अमुकशर्मासि । सर्वा-
 न्ब्राह्मणान् अभिवादय ॥ अभिवादयामि ॥ आयुष्मान्भव सौम्य ॥ हे कुमार !
 त्वं व्यवहारनाम्ना अमुकशर्मासि । सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय ॥ अभि-
 वादयामि ॥ आयुष्मान्भव सौम्य ॥ (ततो विद्याः वेदोसीति मंत्रेणाश्रिपं

१ वृष्णोऽनन्तोऽच्युतध्वनी वैकुण्ठोऽय जनेन्दनः ॥ उपेन्द्रो यशस्रुषो ब्रह्मदेवस्तथा
 हरिः ॥ योगीशः पुंडरीकोक्षो मासनामान्यनुकमात् ॥ चैत्रादिक्रमतो मार्गशीर्षादिक्रमतो वा
 मासनाम लेख्यम् ॥

शिशवे दद्युः) ॐ ह्येदोसियेन च देवो देवेभ्यो ह्येदो भवस्ते नमः ॥ ३१ ॥
 ॥ ३१ ॥ मनोज्ञतिरिति प्रतिष्ठाकार्या ॥ ॐ मनोज्ञतिर्जु ० ॥ एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो
 यत्रैतेन यज्ञेन यजंते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥ अमुकनाम्नां प्रतिष्ठितं भवतु ॥
 हे कुमार सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय । अभिवादयामि ॥ आयुष्मान्भव
 सौम्य ॥ अथैनमभिमुशति ॥ ॐ अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्रुतं भव ।
 आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम् ॥ कृतस्य नामकर्मणः साङ्ग-
 तासिद्धयर्थं स्मृत्युक्तान्दशसंख्याकान्ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्ने-
 नान्नेनाहं भोजयिष्ये तेन कर्माङ्गदेवता प्रीयतां न मम ॥ लम्बोदर
 नमस्तुभ्यं ० ॥ यथाशक्त्या नामकरणाविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तु
 परिपूर्णता ॥ इति नामकरणसंस्कारप्रयोगः ॥ ५ ॥

॥ १२८ ॥ अथ निष्क्रमणसंस्कारप्रयोगः ॥ ६ ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्येत्यादि ० मम अमुकशर्मणः सुतस्य
 निष्क्रमणस्य स्वकालेऽकृतजनितदोषप्रत्यवायपरिहारार्थं पादकृच्छ्ररूप-
 प्रायश्चित्तं रजतप्रत्याम्नायद्वाराऽहमाचरिष्ये ॥ अनेन पादकृच्छ्ररूपप्राय-
 श्चित्तकृतेन मम अमुकशर्मणः सुतस्य निष्क्रमणकाले अकृतनिष्क्रमणसं-
 स्कारजनितदोषनिवृत्तिपूर्वकनिष्क्रमणसंस्कारकर्मण्यधिकारासिद्धिरस्तु ॥
 अद्येत्यादि ० मम सुतस्य बीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिवर्हणायुःश्रीवृद्धिद्वारा
 श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गृहनिष्क्रमणसंस्कारारूपं कर्माहं करिष्ये ॥
 तदङ्गतया विहितं महागणपतेः पंचोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥ ॐ
 गुणानान्त्वा ० । महागणपतये नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि
 समर्पयामि इति पूजनम् ॥ ततः पिता मातृगृहीतमलंकृतकुमारं सवा-

घघोषं गृहाद्बहिरानीय सूर्यमुदीक्षयति ॥ ॐ तच्चक्षुर्वेदहितं पुरस्ताच्छु-
 वक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदं शतञ्जीविमशरदं शतदृशृणुयामशरदं श-
 तम्पत्रं वामशरदं शतमदीनाहंस्यामशरदं शतम्भूर्यश्चशरदं शतात्
 ॥ ३५ ॥ भूर्भुवः स्वः सवित्रे सूर्यनारायणाय नमः सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपु-
 प्पाणि समर्पयामि इति सूर्यं पूजयेत् ॥ कृतस्य निष्क्रमणसाङ्गतासिद्धयर्थं
 स्मृत्युक्तान् दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्नेनाग्नेनाहं
 भोजयिष्ये तेन कर्मागदेवता प्रीयतां न मम ॥ लम्बोदर नमस्तुभ्यं ॥
 यथाशक्ति निष्क्रमणविधेः परिपूर्णताऽस्तु । अस्तु परिपूर्णता ॥
 ॥ इति निष्क्रमणसंस्कारप्रयोगः ॥ ६ ॥

॥ १२९ ॥ अथ अन्नप्राशनसंस्कारप्रयोगः ॥ ७ ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चैक ० इत्यादि पठित्वा ॥ अघेत्यादि ० मम
 सुतस्य अन्नप्राशननियतकालातिक्रमदोषप्रत्यवायपरिहारार्थं पादकृच्छ्र-
 रूपप्रायश्चित्तरजतप्रत्याग्नयद्वाराऽहमाचरिष्ये ॥ अनेन पादकृच्छ्ररूपप्रा-
 यश्चित्कृतेन मम सुतस्य अन्नप्राशननियतकालातिक्रमदोषनिवृत्तिपूर्वकं
 मन्नप्राशनसंस्कारकर्मण्यधिकारासिद्धिरस्तु ॥ अघेत्यादि ० मम सुतस्य
 मातृगर्भमलप्राशनाविशुद्ध्यर्थम् अन्नाद्यब्रह्मवर्चसतेजइन्द्रियायुर्वल्लस-
 णफलसिद्धयर्थं बीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिर्वहणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्
 अन्नप्राशनसंस्कारारूपं कर्माहं करिष्ये ॥ तदङ्गतया महागणपतेः पंचोप-
 चारैः पूजनमहं करिष्ये ॥ ॐ गृणानान्त्वा ० महागणपतये नमः सर्वोपचा-
 रार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणिस ० इति गणेशपूजनं कार्यम् ॥ ततः स्थंडिले
 पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्नेः स्थापनं कुर्यात् ॥ ततो दाक्षिणतो ब्राह्मणसनादि

पवित्रयोः प्रणीतासु निधानान्तं कर्म कृत्वा ॥ दक्षिणं जान्वाच्य
 ब्रह्मान्वारब्धः स्रुवेण होमं कुर्यात् ॥ तूर्णीं (ॐ प्रजापतये स्वाहा)
 (त्यागः) इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदम् इन्द्राय न मम ॥
 ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥
 हस्ते अक्षतान्मृहीत्वा ॥ ॐ अग्नेनयं ० ॥ ॐ शुचिनाम्ने वैश्वानराय
 नमः सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ततः आज्याहुति-
 द्रयं दद्यात् ॥ (पष्ठे मासेन्नप्राशनऽस्थालीपाकऽश्रपयित्वाज्यभागावि-
 ष्ट्वाज्याहुतीर्जुहोति) ॥ ॐ देवींवाचंमजनयन्तद्देवास्तांविश्वरूपां प्रशवोव-
 दन्ति ॥ सानोमंद्रेपमूर्ज्जुदुर्हानाधेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतुस्वाहां ॥ इदं वाचे
 न मम ॥ १ ॥ ॐ देवींवाचंमजनयन्तद्देवास्तांविश्वरूपां प्रशवोव-
 दन्ति ॥ सानोमंद्रेपमूर्ज्जुदुर्हाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ ॐ वार्जोऽ
 अदृद्यम्सुवातिदानं वार्जोदेवोऽऽक्रतुर्भिः कल्पयाति ॥ वार्जोहिमासर्व-
 वीरंजज्ञानं विश्वाऽआज्ञां वार्जपतिर्जयेयत्स्वाहा ॥ २ ॥ इदं देव्यै
 वाचे वाजाय च न मम ॥ ततः स्थालिपाकेन चतस्र आहुतयः ॥
 ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा इदं प्राणाय न मम ॥ १ ॥ ॐ अपानेन
 गंधानशीय स्वाहा इदमपानाय न मम ॥ २ ॥ ॐ चक्षुषा रूपाण्य-
 शीय स्वाहा इदं चक्षुषे न मम ॥ ३ ॥ ॐ श्रोत्रेण यशोशीय स्वाहा इदं
 श्रोत्राय नमम ॥ ४ ॥ चरुशेषेण स्विष्टकृत् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते
 स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ ततो भूराद्या नवाहुतयः । ॐ भूः
 स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम ॥ २ ॥
 ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने ० । स्वाहा
 इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥ ॐ सत्त्वन्नोऽअग्ने ० । स्वाहा इदमग्नी-
 वरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्वामे ० । स्वाहा इदमग्नये अयसे

न मम ॥ ६ ॥ ॐ येतेशतं० । स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥ ॐ उदुत्तमं वरुणं
 स्वाहा इदं वरुणायदित्यायादितये च न मम ॥८॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा
 इदं प्रजापतये नमम ॥९॥ संस्रवप्राशनम् पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अपौ
 पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य अन्नप्राशनारूपस्य
 कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं ब्रह्मन् अयं ते वरः ॥ प्रतिगृह्यताम् ॥ पश्चिमे
 प्रणीताविमोकः॥ आपःशिवा०।(प्राशनान्ते सर्वान् रसान् सर्वमन्नमेकतः
 उद्धृत्याथैनं प्राशयेत् ॥) ततः कटुक्षारतिक्तकपायमधुराम्लानि सर्वान्नि
 शाल्यादीनि च यथासंभवं कांस्यपात्रे एकीकृत्य सकृदेव “ हंत ”
 इतिमंत्रेण कुमारं प्राशयेत् ॥ “ ॐ हंत ” ॥ ततः कुमारं भूमौ उपवेश्य तदग्रे
 पुस्तकशेखरिहिरण्यवस्त्रादिशिल्पानि विन्यस्य जीविकापरीक्षां कुर्यात् ॥
 शिशुः स्वेच्छया यत्प्रथमं स्पृशेत् साऽस्य जीविकेति विद्यात् ॥ ततो
 ब्राह्मणभोजनम् ॥ कृतस्य अन्नप्राशनारूपस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं
 स्मृत्युक्तान्दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्नेनान्नेनार्हं
 भोजयिष्ये ॥ तेन कर्मांगदेवता प्रीयतां न मम ॥ लम्बोदर नमस्तुभ्यं०॥
 यथाशक्त्या अन्नप्राशनविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णता ॥
 ॥ इति अन्नप्राशनसंस्कारप्रयोगः ॥ ७ ॥

॥ १३० ॥ अथ चौलसंस्कारप्रयोगः ॥ ८ ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेत्पादि पठित्वा ॥ अग्रेत्पादि०

१ कुंवारो गज, मीठुं, आमली, मरी, हलधर, साकर. २ पुस्तक, शत्र, दिग्भ्य,
 वर, देखिनी । ३ सांस्कारिकस्य घृताकरणम् ॥ (द्वितीये वर्गे इत्यर्थः ॥) तृतीयं वा प्रतिशब्दे ॥
 (अथवा तृतीये संवत्सरे अर्पणे घृताकरणं कुर्यात्) यथा मङ्गलं वा सर्वेषाम् ॥ अथवा
 यथाकुलचारं पश्येद्भे वा उनीत्या वा राहू कियते तथा व्यवस्था ॥

मम सुतस्य चौलसंस्कारस्य स्वकालातिक्रमदोषप्रत्यवायपरिहारार्थम्
 अर्धकृच्छ्ररूपं प्रायश्चित्तं रजतप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचारिष्ये ॥ अनेन
 अर्धकृच्छ्ररूपप्रायश्चित्तकृतेन मम अमुं कर्मणः सुतस्य चौलसंस्कार-
 कर्मण्यधिकारसिद्धिरस्तु ॥ अथेत्यादि० मम सुतस्य चौलसंस्कार-
 कर्मण्यधिकारार्थं सूत्रोक्तान् त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् यथाकाले
 यथासंपन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये ॥ अथेत्यादि० मम सुतस्य बीजगर्म-
 समुद्भवैर्नोनिवर्हणेन वलायुर्वचोभिद्विद्विद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चौल-
 संस्कारारूपं कर्म करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धयर्थं श्रीमहा-
 गणपतेः पञ्चोपचारैः पूजनं करिष्ये ॥ “ महागणपतये नमः ”
 सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि स० ॥ इति पूजयेत् ॥ ततो वहिः-
 शालायां स्पण्डिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं सभ्यनामाग्नेः स्थापनम् ॥
 (माता कुमारमादायाप्लाव्याहते वाससी परिधाप्याके आधाय
 पश्चाद्भैरुपविशति ॥) ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्येत्यादि
 चरुवर्जं पात्रासादनान्तं कुर्यात् ॥ पात्रासादनानन्तरम् उपकल्पनीयानि ॥
 शीतोदकम् ॥ उष्णोदकम् ॥ नवनीतपिण्डो घृतापिण्डो दधिपिण्डो वा ॥
 ज्येष्ठी शलली ॥ साग्राणि सप्तविंशतिकुशतरुणानि ॥ ताम्रपरिष्कृत
 आयसः क्षुरः ॥ आनडुहगोमयपिण्डः ॥ नापितः वरश्चेति ॥ पवित्री-
 करणादि पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् ॥ दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मा-
 न्वारब्ध आधारावाज्यभागौ जुहुयात् ॥ (तूर्णी) (अप्रजापतये स्वाहा)
 इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥
 २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं
 सोमाय न मम ॥ ४ ॥ हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा ॥ ॐ अग्नेनयसुपर्धा० । चौले
 सभ्यनाम्ने वैश्वानराय नमः गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ततो

भूरादिनवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ १ ॥ ॐ भुवः
 स्वाहा इदं वायवे नमम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय
 नमम ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० । स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम ॥
 ४ ॥ ॐ सत्त्वन्नोऽअग्ने० । स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम ॥ ५ ॥
 ॐ अयाश्वाग्ने० । स्वाहा इदमग्नये अयसे नमम ॥ ६ ॥ ॐ येतेशतं० ।
 स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
 स्वर्केभ्यश्च नमम ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं० । स्वाहा इदं वरुणायादि-
 त्यायादितये च नमम ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये
 नमम ॥ ९ ॥ एवं नवाहुतीर्हुत्वा स्विष्टकृतादिकं कुर्यात् ॥ ॐ अग्नये
 स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम ॥ संस्रवपाशनम् ॥ पवि-
 त्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नी पवित्रमतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥
 ब्रह्मन् पूर्णपात्रम् अयं ते वरः प्रतिगृह्यताम् । एवं आचा-
 र्याय पूर्णपात्रं दत्त्वा पश्चिमे प्रणीताविमोकः तज्जलेन च मार्जनम् ॥
 आपः शिवा० ॥ ततः अद्येत्यादि० अस्य कुमारस्य चूडाकर्मर्तुमधि-
 कारार्थं दक्षिणगोदानं मुण्डनं च करिष्ये ॥ तत एकस्मिन्पात्रे शीतास्वप्न-
 णाऽअप आसिञ्चति ॥ ॐ उष्णेन वायुदकेनेह्यदिते केशान्वप ॥ अथात्र
 नवनीतपिंडं घृतपिंडं दध्ने वा पिंडं प्रास्यति ॥ ततः उदकमादाय दक्षि-
 णगोदानमुदति ॥ ॐ सवित्राप्रमृतादैव्याऽआपऽउन्दन्तुतेतन्मू ॥ दीर्घा-
 युत्वायवर्चसे ॥ ततस्त्र्येष्या शल्लया केशान् विनीय ॥ त्रीणि कुश-
 तरुणान्यंतर्दधाति ॥ ओषधेन्नायस्वस्वधिते मैत्रिं ऽहिं ऽसीहं ॥ शिवोनामे-
 तिलोद्भुरमादधाति ॥ ॐ शिवोनामासिस्वधितेस्तेपितानमस्तेऽअस्तु-
 मामाहिऽसीहं ॥ निवर्तयामीति मंत्रेण केशकुशधुरसंलघ्नीकरणम् ॥ निव-
 र्तयाम्यायुपेन्नाद्यायप्नजननायरायसोपायसुप्रजास्त्वायसुवीर्या-

य ॥ ६/३ ॥ ततः छेदनम् ॥ छेदनमंत्रः ॥ ॐ येनावपत्सविताक्षुरेणसो-
मस्यराज्ञोव्वरुणस्याव्विद्वान् ॥ तेनव्व्रह्मणोवपते दमस्यायुष्यंजरदष्टिर्व-
यासम् ॥ अनेन सकेशानि कुशतरुणानि प्रच्छिद्यानहुहे गोमयपिण्डे
प्रास्यत्यग्नेरुत्तरतो ध्रियमाणे ॥ १ ॥ एवं द्विरपरं तूष्णीम् ॥ तद्यथा-
उन्दनम् । विनयनम् ॥ त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलघ्नीकरणम् ।
छेदनम् ॥ आनहुहे गोमयपिण्डे प्रासनम् ॥ २ ॥ पुनः उन्दनम् ॥ विनय-
नम् ॥ त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् ॥ क्षुरग्रहणम् ॥ संलघ्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥
आनहुहगोमयपिण्डे प्रासनम् ॥ ३ ॥ इति दक्षिणगोदानम् ॥ पुनर्ज-
लमादाय-अस्य कुमारस्य चूढाकर्मकर्तुमधिकारार्थमुत्तरगोदानं मुण्डनं
च करिष्ये ॥ उन्दनम्—ॐ सवित्राप्रमृतादैव्याऽआपऽउन्दन्तुतेतनूम् ॥
दीर्घायुत्वायबलाय वर्चसे ॥ त्रेण्या शल्लया विनयनम् ॥ ततः त्रिकु-
शतरुणान्तर्धानम् ॥ ॐ ओपधेत्रायस्वस्वधितेमैनऽहिऽसीः ॥ शिवो-
नामां० । इति लोहक्षुरमादाय । निर्वर्त्तयाम्म्या० । इति लोहक्षुरं केशा-
नामुपरि निधाय केशच्छेदने मंत्रविशेषः ॥ ॐ त्र्यायुपञ्जमदग्नेऽङ्कश्य-
पस्यत्त्र्यायुपम् ॥ यद्वेवेषुत्र्यायुपन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुपम् ॥ ६/३ ॥ एवं
तूष्णीं वारद्वयम् ॥ यथा-उन्दनम् ॥ विनयनम् ॥ त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् ॥
क्षुरग्रहणम् ॥ संलघ्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥ गोमयपिण्डे निधानम् ॥ २ ॥
पुनः ॥ ३ ॥ इति पश्चिमगोदानम् ॥ हस्ते जलमादाय-अस्य कुमारस्य
चूढाकर्म कर्तुमधिकारार्थमुत्तरगोदानं मुण्डनं च करिष्ये ॥ ॐ सवित्राप्र-
मृतादैव्याऽआपऽउन्दन्तुतेतनूम् ॥ दीर्घायुत्वायबलायवर्चसे ॥ इति उन्द-
नम् ॥ त्रेण्या शल्लया विनयनम् ॥ त्रिकुशतरुणान्तर्धानकरणम् ॥ ॐ
ओपधेत्रायस्वस्वधिते मैनऽहिऽसीः ॥ शिवोनामां० । इति लोहक्षुर-
मादाय । निर्वर्त्तयाम्म्या० । इति लोहक्षुरं केशानामुपरि निधाय

केशच्छेदने मंत्रविशेषः ॥ ॐ येनभूरिश्वरादिवंज्योक्चपथादिमूर्त्यम् ॥
 तेनतेवपामिब्रह्मणाजीवातवेजीवनायसुश्लोक्यायस्वस्तये ॥ इति छेद-
 नम् ॥ गोमयपिण्डे प्रासनम् ॥ १ ॥ एवं तूष्णीं द्विपरम् ॥ यथा पुन-
 उन्दनम् ॥ वितयनम् ॥ त्रिकुशतरुणान्तधानम् ॥ क्षुरग्रहणम् ॥ संल-
 ग्रीकरणम् ॥ छेदनम् ॥ गोमयपिण्डे प्रासनम् ॥ २ ॥ ३ ॥ इति उत्तरगोदा-
 नम् ॥ ततस्त्रिःक्षुरेण शिरःप्रदक्षिणं परिहरति ॥ अथक्षुरेणमञ्जयतासुपे-
 शसावप्तावावपति केशाञ्छिन्धिशिरोमास्यायुःप्रभोपीः ॥ इतिसकृन्मन्त्रेण
 द्विस्तूष्णीम् ॥ ततस्तेनैवोदकेन सर्वं शिर आर्द्रं कृत्वा क्षुरं नापिताय
 प्रयच्छति ॥ ॐ अक्षुष्वन्परिवप ॥ वपामीति नापितो ब्रूयात् ॥
 नापितः उदङ्मुखस्थितस्य कुमारस्य प्राक्संस्थं प्राङ्मुखस्थितस्या-
 दक्संस्थं केशवपनं कुर्यात् ॥ कुलव्यवस्थया शिखास्थापनं केशशेषं
 करोति ॥ ततः सर्वान् केशान् गोमयपिण्डे वस्त्रादिनाऽऽवेष्ट्य अनुगुप्तं
 कृत्वा गवां गोष्ठे स्थापयेत् अथवा तडागे जलमध्ये वा प्रक्षिपेत् ॥
 ततः कुमारं स्नापयित्वा मस्तके स्वस्तिकं तथाच ललाटे तिलकं कुर्यात् ॥
 आचार्याय वरं ददाति ॥ (गां केशान्त संवत्सरं ब्रह्मचर्यमवपनं च ॥
 केशान्ते द्वादशरात्रूपहरात्रं त्रिरात्रमंततः॥) कृतस्य चौलाख्यस्य कर्मणः
 सांगतासिद्ध्यर्थं स्मृत्युक्तान् दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथा-
 संपन्नेनाच्चेनाहं भोजयिष्ये ॥ तेन कर्मागदेवता प्रीयतां न मम ॥ लम्बो-
 दरनमस्तु ॥ यथाशक्त्या चौलविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णता ॥

॥ इति चौलसंस्कारप्रयोगः ॥ ८ ॥

॥ १३१ ॥ अथ उपनयनसंस्कारप्रयोगः ॥ ९ ॥

तत्रोदगयने ज्योतिःशास्त्रोक्त शुभे मासे शुभे दिने सुमुहूर्ते उपनयनं

१ पारस्करः— अष्टवर्षे ब्राह्मणमुपनयेत् । गर्माष्टमे वा । एकादशवर्षे राजन्यं (क्षत्रियं)
 द्वादशवर्षे वैश्यं यथामद्गल वा ॥ १

कृतं तत्पूर्वेद्युः यजमानः पत्नीकुमाराभ्यां सह मंगलम्लानं कृत्वा
 भहतवाससी परिधायालंकृत्य धृततिलको वह्निःशालायां शुभासने
 गार्हमुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं तद्दक्षिणतः संस्कार्यं वटुं
 वोपवेश्य आचम्य प्राणानायम्य॥सुमुखश्चैकेत्यादि पठित्वा अद्येत्यादि०
 अमुकशर्मणो मम सुतस्य उपनयनसंस्कारकर्मणि अधिकारसिद्धयर्थं
 त्रींसंख्याकान् प्राजापत्यान् रजतप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥
 अनेन मम सुतस्य उपनयनसंस्कारकर्मण्यधिकारासिद्धिरस्तु ॥ एवं
 कुमारस्यापि प्रायश्चित्तं कारयेत् ॥ यथा अद्येत्यादि० मम कामचारका-
 मवादकामभक्षणादिदोपनिवृत्तिपूर्वकोपनयनसंस्कारकर्माधिकारार्थं त्री-
 ंसंख्याकान् प्राजापत्यान् रजतप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥
 तेन मम कामचारकामवादकामभक्षणादिदोपनिवृत्तिपूर्वकोपनयनसंस्का-
 रकर्मण्यधिकारसिद्धिरस्तु ॥ अद्येत्यादि० । आचार्यो हस्ते जलमादाय
 अमुकशर्मा आचार्योऽहं अमुकशर्मणो यजमानसुतस्य उपनयनसंस्कार-
 कर्माधिकारार्थं द्वादशसहस्रगायत्रीजपमहं करिष्ये ॥ ततो यजमानो
 हस्ते जलं गृहीत्वा अद्येत्यादि० मम सुतस्य द्विजत्वसिद्धयै
 वेदाध्ययनाधिकारार्थम् उपनयनारुख्यं कर्म करिष्ये ॥ अद्येत्यादि०
 करिष्यमाणोपनयनकर्माङ्गभूतं निर्विघ्नतासिद्धयर्थं षोडशोपचारैः वा
 पंचोपचारैः महागणपतिपूजनमहं करिष्ये ॥ ॐ गुणानान्त्वा० । इति
 मन्त्रेण गणपतिपूजनं कार्यम् ॥ ततः कुमारस्य वपनं कारयेत् ॥ देशकालौ
 संकीर्त्य अद्येत्यादि० मम सुतस्य उपनयनं कर्तुं तत्प्राच्याङ्गभूतं वपनं च
 कारयिष्ये ॥ एवं वपनं कारयित्वा स्नापयेत् ॥ ततो ब्राह्मणत्रयभोजनम् ॥
 अद्येत्यादि० अमुकशर्मणः मम सुतस्य उपनयनकर्मण्यधिकारार्थं

१ इदं प्रायश्चित्तम्-कृच्छ्रत्रयं चोपनेता त्रींशुकृच्छ्राद्य बटुवरेत् । आचार्यो दशसाहस्रं
 गायत्रीं श्रजपेत्तया ॥'

त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् अद्याहं भोजयिष्ये ॥ तेन अमुकशर्मणो मम
सुतस्य उपनयनकर्मण्यधिकारसिद्धिरस्तु ॥ ततो ब्राह्मणपङ्क्तौ मुंडित
शिरसं कुमारमपि भोजयेत् ॥ (मात्रांसह भुञ्जीत यथाचारं वा ॥) ततो
कुमारपिता बहिःशालायां वेद्यपरि पंचभूसंस्कारपूर्वकं समुद्रवनापान
लौकिकाग्निं स्थापयेत् ॥ ततः पुष्पमालादिभिरलंकृतं वडुम् आचार्य
समीपमानयति ॥ ततः आचार्य आनीतं कुमारम् अग्नेः पश्चात्स्वदक्षि
णतः अवस्थापयेत् ॥ ततः मध्येऽन्तर्पटं धारयित्वा ॥ ब्राह्मणाः सुमङ्गल
पद्यानि पठेयुः । भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः षट्
त्रिस्थो दशशोभनो गुरुशशीभौमेषुमित्रं सदा ॥ शुक्रो मन्दरिपुः कलिङ्ग
जनितश्चाग्नीश्वरौ देवते मध्ये वर्तुलपूर्वादिग्दिनकरः कुर्यात् वटोमंगलम् ॥
ॐ मनोजतिः ॥ १ ॥ एषवैपतिष्ठानामवज्ञोयत्रैतेन वज्ञेनयजन्तेसर्वमेव
प्रतिष्ठितंभवति ॥ २ ॥ ॐसुमुहूर्ते सुप्रतिष्ठितमस्तु ॥ इतिमंत्रमाचारार्द्र
द्विजाः पठेयुः ॥ ततः आचार्यः अंतर्पटं निःसार्य कुमारे आचार्यपादौ
प्रणमति स्वदक्षिणतः पश्चाद्ग्रेस्तमवस्थापयेत् ॥ ततः त्रेपद्वयम्-ब्रह्म
चर्यमागामिति ब्रूहि (इति कुमारं प्रति आचार्यो वदति) ॥ ब्रह्मचर्यमागाम्
इति (कुमारो ब्रूयात्) ॥ ब्रह्मचार्यसानि इति ब्रूहि (इति आचार्यो
वदति) ॥ ब्रह्मचार्यसानि (इति माणवकः) ॥ अथैनं माणवकम् आचार्यो
वासः परिधापयति ॥ येनेन्द्रायेतिमंत्रस्य आङ्घ्रिरस ऋषिः बृहतीच्छंदः बृ
हस्पतिर्देवता वासः परिधाने विनियोगः ॥ ॐ येनेन्द्रायबृहस्पतिर्वासःपर्य-
दधादमृतम् ॥ तेनत्वापरिदधाभ्यापुपेदीर्घायुत्वायबलायवर्चसे ॥ आचम-
नम् ॥ ततः आचार्यो ब्रह्मचारिणः कटिपदेशे यथोक्तमेसलां यथाप्रवर-
ग्रन्थिपुतां प्रदक्षिणं विवेष्टयित्वा वध्नाति ॥ इयं दुरुक्तमिति वामदेव

१ उपनयने मात्रा सह भोजनमनुगतं सप्रहकारेण ॥ मात्रा सहोपनयने विवाहे भार्यया सह ।
अन्यत्र सह भुक्षित्वेत्पातित्य प्राञ्जुयान्नर इति ॥

ऋषिः त्रिष्टुप् छंदः मेखला देवता मेखलाबंधने विनियोगः ॥ ॐ इयं-
दुरुक्तं परिधाधमाना वर्णं पवित्रं पुनतीमऽथागात् ॥ प्राणापानाभ्यां बल-
मादधाना स्वसादेवी सुभगामेखलेयम् (इति माणवकस्य मंत्रपाठः) ॥
इत्यनेन युवासुवासा इति मंत्रेण वा बंधनं तूष्णीं वा ॥ अत्रावसरे
आचारात् यज्ञोपवीतदानम् ॥ ततो यज्ञोपवीतपरिधानम् ॥ तत्रादावा-
चार्येण आपोहिष्टेति त्रिभिर्मन्त्रैर्यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य ॥ (आपोहिष्टेति तिसृणां
सिंधुद्वीप ऋषिः गायत्री छंदः आपो देवता यज्ञोपवीतप्रक्षालने विनि-
योगः) ॥ ॐ आपोहिष्टा० । ॐ योवःशिव्रतमो० । ॐ तस्माऽभरङ्ग० ।
इति यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य करसम्पुटे धृत्वा दशधा गायत्र्या अभिमंत्र्य ॥
ॐ ब्रह्मजज्ञानं० । ॐ इदं विष्णुर्वि० । ॐ नमस्ते रुद्र० । इति त्रिभिर्मन्त्रै-
रंगुष्ठमुपवीते भ्रामयित्वा ततो नवतंतुषु देवता आवाहयेत् ॥
प्रथमतंतौ-ॐ काराय नमः ॐ कारम् आवाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥
द्वितीयतंतौ-ॐ अग्नये नमः अग्निम् आ० स्था० ॥ २ ॥ तृतीयतंतौ
ॐ नागेभ्यो नमः नागान् आ० स्था० ॥ ३ ॥ चतुर्थतंतौ-ॐ सोमाय
नमः सोमम् आ० स्था० ॥ ४ ॥ पंचमतंतौ-ॐ पितृभ्यो नमः पितॄन्
आ० स्था० ॥ ५ ॥ षष्ठतंतौ-ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिम् आ०
स्था० ॥ ६ ॥ सप्तमतंतौ-ॐ अनिलाय नमः अनिलम् आ० स्था०
॥ ७ ॥ अष्टमतंतौ-यमाय नमः यमम् आ० स्था० ॥ ८ ॥ नवमतंतौ-
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान्देवान् आ० स्था० ॥ ९ ॥ ततः
यज्ञोपवीतग्रन्थिदेवतावाहनम् ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आ० स्था० ॥
ॐ विष्णवे नमः विष्णुम् आ० स्था० ॥ ॐ रुद्राय नमः रुद्रम् आ०
स्था० ॥ ततो ध्यानम् ॥ ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पासिमूत्रोद्भ-
वब्रह्ममूत्रम् ॥ ब्रह्मत्वसिद्धयै च यशःप्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु

ब्रह्मसूत्रम् ॥१॥ इति ध्यात्वा ॐ प्रणवादिनवतंतुदेवतासाहितब्रह्मविष्णु-
रुद्रेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति संपूज्य
उदुत्यमिति मूर्त्याय दर्शयेत् ॥ (उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋपिः गायत्री
छंदः सूर्यो देवता सूर्यावलोकने विनियोगः ॥) ॐ उदुत्त्यज्ञातवेद-
सन्देवंवहन्तिकेतवः ॥ वृशेद्विम्बाय मूर्ध्निम् ॥ ११ ॥ इतिमूर्त्याय दर्श-
यित्वा धारणम् ॥ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋपिः त्रिष्टुप् छन्दः
लिंगोक्ता देवता श्रौतस्मार्तिकर्मानुष्ठानसिद्धयर्थं यज्ञोपवीतधारणे विनि-
योगः ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमंपवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजंपुरस्तात् ॥ आयुष्यमयं
प्रतिमुञ्चशुभ्रयज्ञोपवीतं वलमस्तुतेजः ॥ यज्ञोपवीतमसियज्ञस्य त्वायज्ञो-
पवीतेनोपनह्यामि ॥ इति मंत्रं पठित्वा दक्षिणबाहुमुद्धृत्य वामस्कंधे
यज्ञोपवीतं धारयेत् ॥ आचमनम् ॥ अथाचार्यो माणवकस्याजिनं
प्रयच्छति ॥ मित्रस्य चक्षुरिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋपिः त्रिष्टुप् छंदः
लिंगोक्ता देवता अजिनधारणे विनियोगः ॥ ॐ मित्रस्य चक्षुर्दृष्टुं
बलीयस्तेजोयशस्विस्थविरुद्रसमिद्धम् ॥ अनाहनस्यं वसतनञ्जरिष्णुः परी-
दन्वाज्यजिनन्दधेहम् ॥ (इति माणवकस्य मंत्रपाठः) ॥ आचमनम् ॥
ततः आचार्यो माणवकस्य दंडं प्रयच्छति ॥ योमेदंड इति प्रजापति-
ऋपिः यजुःछंदः दंडो देवता दंडग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ योमेदंडः
परापतद्वैहायसोधिभूम्याम् ॥ तमहम्पुनरादधाम्यापुपे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्च-
साय ॥ (इति माणवकस्य मन्त्रपाठः) ॥ दंडं प्रतिगृह्यामि ॥ तत आचार्यः
स्वांजलिना अद्भिर्वृत्तोरंजलिं पूरयति ॥ आचार्यपठितैस्त्रिभिर्मन्त्रैः
माणवकः मूर्त्यापार्थत्रयं दद्यात् ॥ ॐ आपोऽहिष्ठा ॥ श्रीमूर्त्याय नमः इदमर्घ्यं
दत्तं न मम ॥ ॐ योवं+शिव० । श्रीमूर्त्याय० इदमर्घ्यं दत्तं० ॥ ॐ
।स्माऽअरं० । श्रीमूर्त्याय० इदमर्घ्यं दत्तं० ॥ ततः आचार्यो माणवकं

प्रेषयति सूर्यमुदीक्षस्वेति ॥ ततो माणवकस्तच्चक्षुरिति सूर्यं पश्यति ॥
 तच्चक्षुरिति दध्यङ्घ्रायर्वण ऋषिः उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्यो-
 दीक्षणे विनियोगः ॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं० (इति माणवकस्य
 मंत्रपाठः ॥) तत आचार्यो माणवकस्य दक्षिणस्कंधोपरि हस्तं
 नीत्वा तस्य हृदयमालभते ॥ मम व्रते इति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि-
 स्त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयालंभने विनियोगः ॥ ॐ मम
 व्रतेतेहृदयंदधामिममचित्तमनुचित्तन्तेऽवस्तु ॥ ममवाचमेकमनाजु-
 पस्व बृहस्पतिष्टानियुनक्तुमहम् ॥ (इत्याचार्यस्य मंत्रपाठः ॥) तत
 आचार्यो माणवकस्य दक्षिणहस्तं गृहीत्वाऽऽह ॥ को नामासि ? ॥ एवं
 पृष्टे माणवकः प्रत्याह ॥ अमुकशर्माऽहं भोः ॥ पुनराचार्यः पृच्छति
 माणवकम् ॥ कस्य ब्रह्मचार्यसीति ? ॥ “भवतः” इत्युच्यमाने माणवकेन
 तं प्रत्याचार्यो ब्रूयात् ॥ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्य-
 स्तवासौ अमुकशर्मन्निति ॥ अथैनं माणवकंभूतेभ्यः परिददात्याचार्यः ॥
 यथा-प्रजापतयेत्वा इत्यादीनां मन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः लि-
 ङ्गोक्ता देवता कुमाररक्षणे विनियोगः ॥ ॐ प्रजापतयेत्वापरिददामि दे-
 वायत्वासधित्रेपरिददाम्यद्भ्यस्त्वौपधीभ्यःपरिददामिद्यावापृथिवीभ्या-
 न्त्वापरिददामिविश्वेभ्यस्त्वाद्देवेभ्यः परिददामिसर्वेभ्यस्त्वाभूतेभ्यःपरि-
 ददाम्यरिष्ट्यै ॥ इत्याचार्यपठितमन्त्रेण माणवकरक्षणम् ॥ प्रदक्षिणमग्निं
 पर्युक्ष्योपविशत्याचार्यस्योत्तरतो माणवकः ॥ ततो ब्रह्मोपवेशनादि चरुव-
 ज्यं सर्वं प्रकृतिवत् ॥ पवित्रप्रणीतानिधानान्ते दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मान्वा-
 रब्धः स्रुवेण मनसा ॥ (ॐ प्रजापतये) स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ
 इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥
 ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ॐ अग्ने नर्यं० ॥ व्रतादौ

जातवेदस्नास्त्रे वैश्वानराय नमः गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥
 (भूर्भुवःस्वरिति महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छ-
 न्दांसि अग्निवायुसूर्या देवता उपनयनाङ्गप्रधानहेमे विनियोगः) ॥
 ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥
 ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां
 न मम ॥ ॐ सत्त्वन्नोऽअग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ अथाश्राग्ने० ।
 इदमग्नये अयसे न मम ॥ ॐ धेतेशतं० । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुत्तमं० । इदं वरुणाया-
 दित्यादितये च न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥
 ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदम् अग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ संस्रवमा-
 शनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे
 पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य उपनयनारूपस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं
 ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ पश्चिमे प्रणीताविमोक्तः । तज्ज-
 लेन मार्जनम् ॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमास्ताते० ॥ तत आचार्यः
 कुमारं शिक्षयति ॥ ब्रह्मचार्यसीत्याचार्य आह ॥ भवामीति ब्रह्मचारी
 वदति ॥ अपोशानेत्याचार्य आह ॥ अश्नानीति ब्रह्मचारी ॥ कर्म कुरु
 इत्याचार्यः ॥ करवाणीति ब्रह्मचारी ॥ मा-दिवा सुपुष्याः इत्याचार्यः ॥
 न स्वपानीति ब्रह्मचारी ॥ वाचं यच्छेत्याचार्यः ॥ यच्छामीति ब्रह्मचारी ॥
 समिधमाधेहीत्याचार्यः ॥ आदधामीति ब्रह्मचारी ॥ अपोशानेत्याचार्यः ॥
 अश्नानीति ब्रह्मचारी ॥ अथास्मै आसीनाय ब्रह्मचारिणे अग्रेरुत्तरतः
 प्रत्यङ्मुखोपविष्टायोपसन्नमसमीक्षमाणाय समीक्षिताय सावित्रीं ब्रूयात्
 आचार्यः ॥ अथोपदेशः ॥ तत्रादौ आचारात्कांस्यपात्रे तद्दुष्क-
 न्प्रसार्य तत्र सुवर्णशलाकया ॐ कारव्याहृतिपूर्वकं गायत्रीमंत्रं लिखि-

त्वा बहुर्जलं गृहीत्वा अयेत्यादि० मम ब्रह्मवर्चससिद्धिपूर्वकवेदा-
ध्ययनाधिकारसिद्धयर्थं गायत्र्युपदेशाङ्गविहितं गायत्रीपूजनमाचा-
र्यपूजनं चाहं करिष्ये ॥ तत्रादौ गणपतेः पञ्चोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥
इति गणपतिं संपूज्य मनोजूतिरिति गायत्रीं प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ मनोजू-
तिर्ज्जुप्ता० ॥ ततो नाममंत्रेण यथालाभोपचारैः गायत्रीं संपूज्याचार्य
पूजयेत् । ततःक्षीमं कार्पासकं वा वस्त्रमत्रगुण्ठय उपदेशं भाणवकाय दद्यात् ।
ॐ तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता उपदेशग्रहणे
विनियोगः ॥ तत आचार्यो गायत्रीं ब्रूयात् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ तत्सवितुर्व-
रेण्यम् । ॐ स्वस्ति ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो दे-
वस्य धीमहि ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देव-
स्य धीमहि ॥ धियो यो नो ऽप्यचोदयात् ॥ ॐ स्वस्ति ॥ (एवमुक्तप्रकारेण
उपदेशं गृहीत्वा प्रणवपूर्वकं स्वस्तीति ब्रूयाद् ब्रह्मचारी ॥) ततो यथो-
क्तमुपविश्य प्रकृतेऽग्नौ समिदाधानं करोति ब्रह्मचारी ॥ तत्र पूर्वमग्नेः
संधुक्षणं पंचभिर्भ्रैरिधनप्रक्षेपेण ॥ तद्यथा ॥ (अग्ने सुश्रवादीनां
ब्रह्मा ऋषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता संधुक्षणे विनियोगः) ॥ ॐ अग्ने-
सुश्रवःसुश्रवसंमाकुरु ॥ १ ॥ ॐ यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवाऽसि ॥ २ ॥
ॐ एवंमासुश्रवःसौश्रवसंकुरु ॥ ३ ॥ ॐ यथात्वमग्नेदेवानां यज्ञस्यनिधि-
पाऽसि ॥ ४ ॥ ॐ एवमहंमनुष्याणां विदेस्यनिधिपोभूयासम् ॥ ५ ॥ प्रद-
क्षिणमग्निमुदकेन पर्युक्ष्य (इतरथावृत्तिः ॥) उत्थाय समिधमादधाति ॥
अग्नेसमिधमिति प्रजापतिर्ऋषिः आकृतिच्छन्दः सविता देवता समिदा-
धानं विनियोगः ।) ॐ अग्नेयेसमिधमाहार्षम्वृहते जातवेदसे ॥ यथात्वमग्ने

१ प्रथमतः पाईपादम् ॥ पुनरर्द्धम् ॥ पुनः ममग्रं पठेत् ॥ २ छक्कगोमयखंड इधनप्रक्षेपः
इति गदाधरः ॥

समिधासमिध्यसऽएवमहमायुषामेधयावर्चसाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन-
समिधेजीवपुत्रोममाचार्योमेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वीतेजस्वी-
ब्रह्मवर्चस्यन्नादोभूयासऽस्वाहा ॥ इत्यनेन मंत्रेण प्रथमां तथा द्वितीयां
तथैव तृतीयां जुहुयात् ॥ (एपात इति वा ॥ ॐ एपाते अग्ने समिधयावर्ध-
स्वचाप्यायस्व । वर्धिपीमहि च द्वयमाचप्यासिपीमहिस्वाहा ॥ अनयोर्म-
न्त्रयोः समुच्चयो वा ॥) उपविश्य ॥ पुनः पूर्वोक्तपञ्चभिर्मन्त्रैः अग्नेः-
सन्धुक्षणं पर्युक्षणं च समिदाधानं च कुर्यात् ॥ यथा-ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्र-
वसंमाकुरु ॥ १ ॥ ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवाऽसि ॥ २ ॥ ॐ एवं
माँ सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥ ३ ॥ ॐ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपाऽ-
सि ॥ ४ ॥ ॐ एवमहमनुष्याणां विदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ५ ॥
इत्येतैः पंचभिर्मन्त्रैः प्रतिमंत्रं समिधनप्रक्षेपः ॥ अग्नेः पर्युक्षणम् ॥ ततः
तूष्णीं पाणी प्रतप्य ॥ तनूपाऽअग्नेसि इत्यादिसप्तभिर्मन्त्रैः प्रति-
मंत्रं मुखविमर्शनं करोति ब्रह्मचारी ॥ (तनूपा अग्ने इत्यादि सप्तमन्त्राणां
बृहदेवा ऋषयः यजुँपि छन्दांसि अग्निदेवता मुखविमर्शने विनि-
योगः) ॥ ॐ तनूपाऽअग्नेसितन्वम्मेपाहि ॥ ॐ आयुर्दाऽअग्नेस्यायु-
र्मेदेहि ॥ ॐ वज्रोदाऽअग्नेसिवज्रोमेदेहि ॥ ॐ अग्ने यन्मेतन्वाऽकृन्नन्त-
न्मऽआर्पण ॥ ॐ मेधाम्मेदेवः सविताऽआदधातु ॥ ॐ मेधाम्मे देवी-
सरस्वतीऽआदधातु ॐ मेधामश्विनौ देवावाधचांपुष्करस्रजौ ॥ इत्येते
मुखविमर्शनमन्त्राः ॥ अत्र शिष्टाचारतोऽनुष्ठेयाः पदार्थाः ॥ अंगानि-
चमऽआप्यायतामिति शिरःप्रभृतिपादांतसर्वांगान्यालभते ॥ (अंगानि-
चेत्यादिनां प्रजापतिर्ऋषिः यजुँछंदः लिंगोक्ता देवता अंगाप्यायने
विनियोगः) ॥ ॐ वाक्चमऽआप्यायतामिति मुखालंभनम् ॥ ॐ
प्राणश्चमऽआप्यायतामिति नासिकयोरालंभनम् ॥ ॐ चक्षुश्चमऽआप्या-

यतामिति नेत्रयोरालंभनम् युगपत् ॥ ॐ श्रोत्रञ्चमऽआप्यायतामिति
 दक्षिणकर्णमालभ्यानेनैव मन्त्रेण वामकर्णालंभनम् ॥ ॐ यशोवलञ्चमऽ
 आप्यायतामिति मन्त्रजपः ॥ ततस्त्यायुपाणि करोति भस्मना ललाटे
 ग्रीवायां दक्षिणेऽसे हृदि च ॥ (त्र्यायुपमितिनारायण ऋषिः उष्णिक्
 छन्दः अग्निर्देवता भस्मना तिलककरणे विनियोगः) ॥ ॐ त्र्यायुप-
 ञ्जमदग्गोरिति ललाटे ॥ ॐ कुशयर्षस्यत्र्यायुपमिति ग्रीवायाम् ॥
 ॐ बह्वेषु त्र्यायुपमिति दक्षिणांसे वामांसे च ॥ ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्या-
 युपमिति हृदि ॥ ततो गोत्रनामपूर्वकं वैश्वानरादीनाम् अभिवादनम् ॥
 अमुकगोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्मा अहं भो वैश्वानर त्वामभिवाद-
 यामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥ भो गुरो त्वामभिवादयामि ।
 आयुष्मान्भव सौम्य ॥ भो आचार्य त्वामभिवादयामि । आयुष्मा-
 न्भव सौम्य ॥ भो मातापितरौ युवाम् अभिवादयामि । आयुष्मान्भव
 सौम्य ॥ भो सूर्याचन्द्रमसौ युवाम् अभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥
 सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥ इत्यभिवादन-
 नम् ॥ अथ भिक्षाचर्यचरणम् ॥ ब्रह्मचारी दण्डं भिक्षापात्रं च प्रति-
 गृह्य सावित्र्या आदित्यमुपस्थाय अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य प्रथमं मातरं भि-
 क्षेत् ॥ ॐ भवति भिक्षां देहि ॥ ॐ स्वस्ति ॥ इति ब्राह्मणः ॥ (भिक्षां
 भवति देहि ॥ इति क्षत्रियः ॥ भिक्षां देहि भवति ॥ इति वैश्यः ॥)
 तिस्रः षट् द्वादश वा अपरिमिता भिक्षा ग्राह्याः ॥ आचार्याय भैक्ष्यं निवे-
 दयित्वा भुंक्त्व इति आचार्यानुज्ञातो भिक्षां स्वीकुर्यात् ॥ वाग्यतोऽ-
 दृश्येति तिष्ठेदित्येकेऽहिऽसन्नरण्या समिध आहृत्य तस्मिन्नग्नीं पूर्वव-

१ इत्यभिवादनम् ॥ संख्यावदनाधिकारोऽस्तु ॥ माषद् प्रज्ञोपदेशो न तावत्संध्यादिकं
 च न ॥ ततो मध्याह्नसंध्यादि सर्वकर्म समाचरेत् ॥ अत्र मध्याह्नसंध्यां कुर्यादिति श्रयोग-
 प्रारिजते ॥ तेति कृष्णभद्रिणे इति मत्परः ॥

त् आर्घाय ततः पाणिनाऽग्निं परिसमूहति ॥ (अग्नेसुश्रवादीनां
 ब्रह्मा ऋषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता समिन्धने विनियोगः) ॥ ॐ अग्ने-
 सुश्रवःसुश्रवसंमाकुरु ॥ १ ॥ ॐ यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवाऽअसि ॥ २ ॥
 ॐ एवं मा॑सुश्रवःसौश्रवसंकुरु ॥ ३ ॥ ॐ यथात्वमग्नेदेवानांयज्ञस्य
 निधिपाऽअसि ॥ ४ ॥ ॐ एवमहंमनुष्याणांवेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥
 ५ ॥ प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्योत्तिष्ठन्ममिधमादधाति ॥ (अग्नेसमिधमाहा-
 र्षमिति प्रजापतिर्ऋषिः आकृतिच्छन्दः सवितादेवता ॥ समिदाधाने विनि-
 योगः) ॥ ॐ अग्नेसमिधमाहापँवृहतेजातवेदसे ॥ यथात्वमग्नेसमिधा
 समिध्यसऽएवमहमायुषामेधयावर्धमाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्धसेनसमिधे-
 जीवपुत्रोपमाचार्योभेभ्राव्यहमसान्यनिराहुरिष्णुर्यशस्वीतेजस्वीब्रह्मवर्ध-
 स्व्यन्नादोभूयासँस्वाहा ॥ एवं द्वितीयां तथा तृतीयां समिधमादधाति ॥
 उपविश्य ॥ पूर्ववत्परिसमूहनम्-ॐ अग्नेसुश्रवः सुश्रवसंमाकुरु ॥ १ ॥

जपति ॥ ॐ अङ्गानिचमऽआप्यायताम् ॥ ॐ वाक्चमऽआप्यायताम् ॥
 ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम् ॥ ॐ चक्षुश्चमऽआप्यायताम् ॥ ॐ श्रोत्रं
 चमऽआप्यायताम् ॥ ॐ यशोवलयचमऽआप्यायताम् ॥ ततो ज्ञायु-
 पाणि करोति ॥ (ॐ ज्ञायुपमितिनारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः
 अग्निर्देवता भस्मना तिलककरणे विनियोगः) ॥ ॐ ज्ञायुपञ्जमर्द-
 ग्नेरिति ललाटे ॥ ॐ कृश्वर्यपस्यज्ञायुपमिति ग्रीवायाम् ॥ ॐ यद्द्व-
 पुत्ज्ञायुपमिति दक्षिणांसे वामांसे च ॥ ॐ तन्नोऽअस्तुत्ज्ञायुपमिति
 हृदि ॥ ततो गोत्रनामपूर्वकवैश्वानरादीनामभिवादनम् ॥ अमुकगोत्रो-
 त्पन्नः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहं भो वैश्वानर त्वाम् अभिवाद-
 यामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥ भो गुरो त्वाम् अभिवादयामि ।
 आयुष्मान्भव सौम्य ॥ भो आचार्य त्वाम् अभिवादयामि । आयु-
 ष्मान्भव सौम्य ॥ भो मातापितरौ युवाम् अभिवादयामि । आयुष्मा-
 न्भव सौम्य ॥ भो सूर्याचन्द्रमसौ युवाम् अभिवादयामि । आयुष्मान्भव
 सौम्य ॥ सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥
 इत्यभिवादनम् ॥ वाग्विमर्गः ॥ यावद् व्रतं तावदाग्निरक्षणं त्रिरात्रं वा ॥
 अत आरभ्य आ ब्रह्मचर्यसमाप्तेर्ब्रह्मचारिणो नियमाः कथ्यन्ते आचा-
 र्येण ॥ अधः शयीत ॥ अक्षारलवणाशी स्यात् ॥ दंढधारणम् ॥ अग्नि-
 परिचरणं समिदाधानं कर्तव्यम् ॥ गुरुशुश्रूषा कर्तव्या ॥ भिक्षाचर्यं
 कर्तव्यम् ॥ मधुमांसाशनं न कर्तव्यम् ॥ मज्जनं न कर्तव्यम् ॥ पर्यासने-
 नोपविशेत् ॥ स्त्रीणां मध्येऽवस्थानं न कर्तव्यम् ॥ अदत्तं न गृह्णीयात् ॥
 अवृतं न वदेत् ॥ अस्तसमये भास्करावलोकनं न कुर्यात् ॥ कांस्य-
 पात्रे मृन्मयपात्रे भोजनं न कुर्यात् ॥ तांबूलभक्षणं न कुर्यात् ॥ अभ्यं-
 त्मप्युपासं जन्तुपापञ्चलादृशं च न भोजेत् ॥ इति नियमाः ॥ पिता हस्ते

जलमादाय-कृतस्य मम पुत्रस्योपनयनारुच्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं
स्मृत्युक्तान् पंचाशत्संख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्नेनाग्नेनाहं
भोजयिष्ये तेन कर्माग्देवताः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ लंबोदर नमस्तुभ्यं० ॥ १॥
यथाशक्त्या उपनयनविधेः परिपूर्णताऽस्तु । अस्तु परिपूर्णता ॥

॥ इति उपनयनसंस्कारप्रयोगः ॥ ९ ॥

॥ १३२ ॥ अथ वेदारम्भसंस्कारप्रयोगः ॥ १०-१३ ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुख्यैकेत्यादि पठित्वा अद्येत्यादि०
अस्य ब्रह्मचारिणः स्वशाखापूर्वकं वेदारंभमहं करिष्ये ॥ ॐ गणानान्त्वा०
इति मन्त्रेण पञ्चोपचारैः गणपतिपूजनं कृत्वा ततो द्वितीयस्थंडिले
पंचभूसंस्कारपूर्वकं लौकिकाग्नेः स्थापनं कृत्वा ततो दक्षिणतो ब्रह्मास-
नादिचरुवर्ज्यं मकृतिवत्सर्वं कुर्यात् ॥ ब्रह्मान्वारब्धे सुवेण होमः ॥
मनसा ॥ (ॐ प्रजापतये) स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय
स्वाहा इदम् इन्द्राय मम । ॐ अग्नये स्वाहा इहम् अग्नये न मम ॥ ॐ
सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा ॥ ॐ
अग्नेनर्यं० । व्रतादेशे समुद्भवनामानं बलिम् आवाहयामि ॥ समुद्भवना-
ग्ने वैश्वानराय नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि ॥ ततः सर्वाश्च वेदाहुतयो
होतव्याः ॥ यथा (अथ यजुर्वेदाहुतयः) ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदम-
न्तरिक्षाय न मम ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० ॥ ॐ ब्रह्मणे
स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो० ॥ १४ ॥ (अथ
ऋग्वेदाहुतयः) ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै० ॥ ॐ अग्नये स्वाहा
इदमग्नये० ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा
इदं छन्दोभ्यो० ॥ १४ ॥ (अथ सामवेदाहुतयः) ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे० ॥

ॐ सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय० ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ॥
 ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो० ॥४॥ (अथाथर्ववेदोहुतयः) ॐ
 दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो० ॥ ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे० ॥
 ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो० ॥
 ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ॥ ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं
 देवेभ्यो० ॥ ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदम् ऋषिभ्यो० ॥ ॐ श्रद्धायै स्वाहा
 इदं श्रद्धायै० ॥ ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै० ॥ ॐ सदसस्पतये
 स्वाहा इदं सदसस्पतये० ॥ ॐ अनुमतये स्वाहा इदम् अनुमतये०
 ॥११॥२३॥ (ततो नवाहुतयः) ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ भुवः
 स्वाहा इदं वायवे० ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ॥ ॐ त्वन्नोऽग्ने०
 इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ सत्वन्नोऽग्ने० । इदमग्नीवरुणाभ्यां
 न मम ॥ ॐ अयाश्वाग्ने० । इदमग्नये अयसे न मम ॥ ॐ येतेशतं० । इदं
 वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥
 ॐ उदुत्तमं० । इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम ॥ ॐ प्रजापतये
 स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये
 स्विष्टकृते न मम ॥ संस्रवप्राशनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्र-
 प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य वेदारंभसाङ्गतासिद्धयर्थं
 ब्रह्मण अयं ते वरः प्रतिगृह्यताम् ॥ पश्चिमे प्रणीताविमोक्तः ॥ आपः शिवाः ॥
 कृतस्य वेदारंभरुर्भणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान्
 यथाकाले यथासंपन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये । तेन कर्मगदेवताः प्रीयन्तां
 न मम ॥ ततः शिष्टाचारात् वेदसरस्वतीपूजनम् । अथेत्यादि० तिथौ
 ब्रह्मवर्चससिद्धयर्थं वेदसरस्वतीपूजनमहं करिष्ये ॥ ॐ ह्येदोऽसिये न-
 त्वन्देवदेवोभ्यो वेदोभवस्ते न मर्हद्भुदोर्भूयात् ॥ १ ॥ ॐ प्रावृकान् देसरस्व-

तीर्थात्रेभिर्ब्रह्मजिनीवती ॥ यज्ञं ब्रह्म धियावसुत् ॥ १० ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भगवते
 वेदनारायणाय नमः तथाच भगवती महासरस्वत्यै नमः इति षोडशोप-
 चारैः सम्पूज्य अंजलौ पुष्पाण्यादाय ॥ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमा-
 माद्यां जगद्ब्राह्मिणीं वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥
 हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं
 भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भगवती महासरस्वत्यै
 नमः प्रार्थनां समर्पयामि ॥ अनया पूजया वेदसरस्वत्यौ
 प्रीयेतां न मम ॥ ततो यजुर्वेदादिमारभेत ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ तत्सं-
 वितुर्धरैरण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥
 ॐ इषेत्त्वो ज्ञेत्वा व्यायवस्थदेवो वः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठं तमायुः कर्मणः
 ऽआप्यायद् ध्वमरन्त्या ऽन्द्राय भागम् प्रजावती रनघ्नी वा ऽभ्रं युष्मा माव-
 स्तेन ऽशतमाघर्षा ऽसोद्ध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् बहुवीर्यं जमानस्य
 पशुव्याहि ॥ १ ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ यजुर्वेदाय नमः ॥ ॐ अग्निर्मिळे
 पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॐ ॥ स्वस्ति ॥
 ॐ ऋग्वेदाय नमः ॥ ॐ अग्नऽआयाहि वीतये शृणानो हव्यदातये ॥
 निहोता सत्सि वहिषि ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ सामवेदाय नमः ॥ ॐ
 शन्नो देवीरुभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंघोराभिस्त्रवन्तु नदं ॥ १२ ॥
 ॐ स्वस्ति ॥ ॐ अथर्ववेदाय नमः ॥ एवं वेदाध्ययनं कृत्वा संकल्पयेत् ॥
 कृतस्य वेदारम्भाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथाशक्ति ब्राह्म-
 णान् भोजयिष्ये तेन श्रीकर्माङ्गदेवता प्रीयतां न मम ॥ ॐ
 लम्बोदर ० ॥ वेदारम्भविधेः परिपूर्णता ऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णता ।
 ॥ इति वेदारम्भसंस्कारप्रयोगः ॥ १०-१३ ॥

॥ १३३ ॥ अथ केशान्तसंस्कारप्रयोगः ॥ १४ ॥

अत्र वहिःशाला ॥ पिता हस्ते जलमादाय-अस्य ब्रह्मचारिणः
केशान्ताख्यं कर्माहं करिष्ये ॥ गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनम-
विघ्नपूजनं मण्डपस्थापनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनमायुष्यमन्त्रजपं
नान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा अग्निं प्रतिष्ठाप्य ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनमा-
स्तीर्येत्यादि आचार्यवरणान्तं सर्वं चूडाकरणवत् ॥ तत्र विशेषः ॥
उपकल्पनीये वरस्थाने गौः ॥ उष्णेन वा उदकेनेह्यदितेकेशशमश्रुवप
इत्युदकासंके विशेषः ॥ त्रिः क्षुरेण शिरःप्रदक्षिणं परिहरति संमुखं
केशान्ते ॥ ॐ वत्क्षुरेण० प्रमोपीमुखम् ॥ आचार्याय गोदानम् ॥
संवत्सरं ब्रह्मचर्यमवपन्नं च ॥ द्वादशरात्रं षड्रात्रं त्रिरात्रमन्ततः ॥

॥ इति केशान्तसंस्कारप्रयोगः ॥ १४ ॥

॥ १३४ ॥ अथ समावर्तनसंस्कारप्रयोगः ॥ १५ ॥

आचम्य प्राणानायम्य सुमुखश्चैकेत्पादि पठित्वा ॥ अद्येत्यादि०
अस्य ब्रह्मचारिणः पश्चाद् गृहस्थाश्रममाप्तिद्वारा श्रीपरमेश्व-
रप्रीत्यर्थं समावर्तनाख्यं कर्म करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन गणपतेः
पंचोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य “श्रीमहागणपतये
नमः” इति गणपतिं पूजयेत् ॥ ततः “भो आचार्य अहं स्नास्यामि” इति
ब्रह्मचारिणः प्रश्नः ॥ “स्नाहीति” गुरुः ॥ पूर्ववदुपसंगृह्य गुरुम् ॥ ततः
परिश्रिते पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं मूर्यनामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य ततो दक्षिणतो
ब्रह्मासनमास्तीर्येत्यादि चरुवर्जं पात्रासादनान्तं कुर्यात् ॥ तत्र विशेषः ॥
पात्रासादनानन्तरम् उपकल्पनीयानि ॥ संधुक्षणानि । पर्युक्षणार्थमुदकम् ।

तिस्रः समिधः । हरिताः कुशाः । अष्टौ वारिकुम्भाः । दधि तिला
वा । धौतवस्त्रम् । नापितः । स्नानार्थमुदकम् । औदुम्बरं कनिष्ठिकाप्र-
वत्स्थूलं द्वादशाङ्गुलदीर्घं सरलं सत्वचं दन्तधावनकाष्ठं ब्राह्मणस्य ।
(दशाङ्गुलं राजन्यस्य । अष्टाङ्गुलं वैश्यस्य) उद्वर्तनद्रव्यम् । स्नानार्थमु-
ष्णोदकम् । चंदनम् । अहते वाससी ॥ यज्ञोपवीते द्वे श्रीणि वा । पुष्पाणि ।
जग्णिम् । कर्णालंकारौ । अञ्जनम् । आदर्शः । छत्रम् । उपानहौ । त्रैणवदंडः ।
ततः पवित्रच्छेदनादिपर्युक्षणान्तं कृत्वा आधारावाज्यभागौ च जुहु-
यात् ॥ ब्रह्मान्वारब्धः । सुवेण होमः ॥ (मनसा) (ॐ प्रजापतये) स्वाहा इदं
प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्नये
स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ हस्ते
गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय ॐ अग्ने नयं ० । व्रतविसर्गे सूर्यनाम्ने वैश्वानराय
नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इति सम्पूज्य होमं कुर्यात् ॥ अथ
वेदाहुतिः । (श्रु०) ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा इदम् अंतरिक्षाय न मम ॥ ॐ
वायवे स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥
ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥ (यजु०) ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं
पृथिव्यै न मम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ॐ ब्रह्मणे
स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥
(साम०) ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे न मम ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय न
मम ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा
इदं छन्दोभ्यो न मम ॥ (अथ०) ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो न मम ॥
ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे न मम ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं
ब्रह्मणे न मम ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥
ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ देवभ्य स्वाहा इदं

देवेभ्यो न मम ॥ ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदम् ऋषिभ्यो न मम ॥
 ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै न मम ॥ ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै
 न मम ॥ ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये न मम ॥ ॐ अनु-
 मतये स्वाहा इदमनुमतये न मम ॥ २३ ॥ (ततो नवाहुतयः ॥) ॐ भूःस्वाहा
 इदमग्नये न मम ॥ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐ स्वः स्वाहा
 इदं सूर्याय न मम ॥ ॐ त्वन्नोऽग्ने ० । स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥
 ॐ सत्त्वन्नोऽग्ने ० । स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ अया-
 श्वाग्ने ० । स्वाहा इदमग्नये अयसे न मम ॥ ॐ ये ते शतं ० । स्वाहा
 इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च
 न मम ॥ ॐ उदुत्तमं ० । स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न
 मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ अग्नये स्विष्ट-
 कृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ संस्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां
 मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य
 समावर्तनाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सद-
 क्षिणाकं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ एवमाचार्याय ॥ पश्चिमे प्रणीताविमोकः ॥
 ॐ आपः शिवा ० भेषजम् ॥ अत्र पूर्ववदग्नेः सन्धुक्षणं पञ्चभिर्षन्त्रैरिन्ध-
 नप्रक्षेपेण ॥ तद्यथा पाणिनाऽग्निं परिसमूहति ॥ (अग्ने सुश्रवादीनां ब्रह्मा
 ऋषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता समिन्धने विनियोगः) ॥ ॐ अग्ने-
 सुश्रवःसुश्रवसंमाकुरु ॥ ॐ यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवाऽसि ॥ ॐ एवं-
 माऽसुश्रवःसौश्रवसंकुरु ॥ ॐ यथात्वमग्नेदेवानांयज्ञस्यनिधिपाऽसि ।
 ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥ प्रदक्षिणमग्निमुदकेन
 पर्युक्ष्योत्थाय समिधमादधाति ॥ (अग्ने समिधमिति प्रजापतिर्ऋषिः
 आकृतिश्छन्दः सविता देवता समिदाधाने विनियोगः) ॥ ॐ अग्ने-

समिधमाहापर्ववृद्धतेजातवेदसे ॥ यथात्वमग्नेसमिधा समिध्यसऽएवमह-
 मायुषामेधयावर्चसाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिध्येजीवपुत्रोममाचा-
 र्योमेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वीब्रह्मवर्चस्यन्नादोभूया-
 सऽस्वाहा ॥ एवं द्वितीयां तृतीयां च ॥ (मन्त्रममुच्चयो वा) पूर्ववत्परि-
 समूहनम् ॥ तत उपविश्य पुन पंचभिर्मन्त्रैरग्नेः संधुक्षणं पूर्ववत् ॥
 ॐ अग्नेसुश्रवः सुश्रवसंमाकुरु ॥ ॐ यथात्वमग्नेसुश्रवःसुश्रवाऽअसि ॥
 ॐ एवंमासुश्रवःसौश्रवसंकुरु ॥ ॐ यथात्वमग्नेदेवानांयज्ञस्य
 निधिपाऽअसि ॥ ॐ एवमहंमनुष्याणांवेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥ अग्नेः
 पर्युक्षणम् । पाणी प्रतप्य मुखं विमृष्टयेत् ॥ यथा-ॐतनूपाऽअग्ने-
 सितन्वृम्मेपाहि ॥ ॐ आयुर्दाऽअग्नेसि आयुर्मेदेहि ॥ ॐ वज्रोदा-
 अग्नेसि वज्रोमेदेहि ॥ ॐ अग्नेयन्मेतन्वाऽउनन्तन्मऽआर्पण ॥ ॐ
 मेधाम्मेदेवःसविताऽआदधातु ॥ ॐ मेधामेदेवीसरस्वतीऽआदधातु ॥
 ॐ मेधामश्विनोदेवावाधत्तापुष्करस्रजौ ॥ (शिष्टाचारात् अङ्गा-
 न्यालभ्य जपति ॥) ॐ अङ्गानि च आप्यायतामिति शिरःप्रभृति
 पादान्तं सर्वाङ्गान्यालभते ॥ ॐ वाक्चमऽआप्यायताम् (मुखस्यालभ-
 नम्) ॥ ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम् (नासिरुपोरालंभनम्) ॥ ॐ
 चक्षुश्चमऽआप्यायताम् (नेत्रयोरालंभनं युगपत्) ॥ ॐ श्रोत्रं चमऽआप्या-
 यताम् ॥ (दक्षिणश्रोत्रस्यालंभनम् अनेनैव मंत्रेण वामश्रोत्रस्य) ॥
 ॐ यशो वलं चमऽआप्यायताम् (इति घाष्ठोरुपस्पर्शनम्) ॥ तत-
 स्त्रयायुपकरणम् ॥ अनामिकया अग्नेर्भस्म गृहीत्वा ॥ (त्रयायुपमिति
 नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः अग्निर्देवता भस्मना तिलकधारणे
 विनियोगः ॥ ॐ त्रयायुपञ्जमद्मग्नेरिति ललाटे ॥ ॐ कृद्दश्यर्षस्यत्र्यायु-
 पमिति ग्रीवायाम् ॥ ॐ यद्देवेषु त्रयायुपम् इति दक्षिणांसे वामांसे च ॥

ॐ तन्नोऽअस्तुऽयायुषम् इति हृदि ॥ ततो ब्रह्मचारी दक्षिणश्रोत्रे समौ
 करौ कृत्वा गोत्रनामपूर्वकं वैश्वानरादीनामभिवादनं कुर्यात् ॥ अमुकगोत्रः
 अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहं भो वैश्वानर त्वामभिवादयामि । आयु-
 ष्मान्भव सौम्य ॥ भो गुरो त्वामभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥
 भो आचार्य त्वामभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥ भो मातापि-
 तरौ युवामभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥ भो सूर्याचन्द्रमसौ युवा-
 मभिवादयामि । आयुष्मान्भव सौम्य ॥ सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादयामि ।
 आयुष्मान्भव सौम्य ॥ ततः आचार्यः परिश्रितम्योत्तरतः भूरसी-
 त्यादिना क्रमेण अष्टानामुदकुम्भानां दक्षिणोत्तरागतानां स्थापनं कुर्यात् ॥
 ॐ भूरसिभूमिरस्य० इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ १ ॥ ॐ धान्द्र्यमसिधिनूहि०
 इति यवानिक्षिप्य ॥ २ ॥ ॐ आर्जिग्घकूलशं० इति कुंभं संस्थाप्य ॥ ३ ॥
 ॐ बर्हणस्योत्तं० इति जलं प्रपूर्य ॥ ४ ॥ ॐ त्वाङ्गन्धर्वा० इति गन्धम्
 ॥ ५ ॥ ॐ वाऽओर्षधीदं० इति सर्वोपधीः ॥ ६ ॥ ॐ काण्डात्का-
 ण्डात्० इति दूर्वाः ॥ ७ ॥ ॐ अश्वत्थेयो० इति पंचपल्लवान् ॥ ८ ॥
 ॐ स्योनापृथिवि० इति सप्त मृदः ॥ ९ ॥ ॐ वाऽफुलिनीर्या० इति
 पृगीफलम् ॥ १० ॥ ॐ परिवाजंपतिदं० इति पंचरत्नानि ॥ ११ ॥
 ॐ हिरण्यगर्भदं० इति हिरण्यं च क्षिप्त्वा ॥ १२ ॥ ॐ बसोदं पृथि-
 व्रमसि० इति रक्तवस्त्रेणावेष्टय ॥ १३ ॥ ॐ पूर्णादर्वा० इति तण्डुल-
 पूर्णपात्रं निधाय ॥ १४ ॥ तत्र ॐ तत्त्वायामि० इति बर्हणमावाह्य
 संपूज्य ॥ १५ ॥ कलशस्य मुखे विष्णुरित्याभिमन्त्र्य । देवदानवसंवादे०
 इत्यादिना प्रार्थयेत् ॥ ॐ मनोजुति० । उदकुम्भाधिष्ठातृदेवताः सुमतिष्ठा
 वरदा भवेयुः ॥ उदकुम्भाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थं गन्धा-
 क्षतपुष्पाणि सम० । इति गन्धादिपञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात् ॥ तत

उदकुम्भानां पुरस्तात्प्रागग्रकृशास्तरणम् ॥ तेषु स्नानकर्ता उदङ्मुखः
 स्थित्वा स्वयं च दक्षिणकलशादारभ्य प्रथमकलशात् ॥ ॐ येऽअप्स्व-
 न्तरग्नयः प्रविष्टागोघऽउपगोघोमपूपोमनोहास्वलोविरुजस्तनृद्रूपुरिद्रि-
 यहातान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि ॥ इति मंत्रेण प्रथमकलशा-
 दुदकं गृहीत्वा तेनोदकेन ॥ ॐ तेनमामभिपिञ्चामिश्रियैषशसे-
 ब्रह्मणेब्रह्मवर्चसाय ॥ इति मन्त्रेण स्वस्य मस्तकेऽभिपिञ्चेत् ॥ १ ॥
 ॐ येऽअप्स्वन्तरग्नयः० इति मन्त्रेणैव द्वितीयोदकुंभादुदकं गृहीत्वा ॐ येन
 श्रियमकृणुतायेनावृशता ॐ सुगाम् ॥ येनाक्ष्यावभ्यपिचतायद्वातदश्विना-
 यशः इति मंत्रेणाभिपिञ्चेत् ॥ २ ॥ पुनः—ॐ येऽअप्स्वन्तरग्नयः० ।
 इत्यनेन तृतीयोदकुंभादुदकमादाय ॥ ॐ आपो हिष्ठा० । इति
 मंत्रेणाभिपिञ्चेत् ॥ ३ ॥ पुनः—ॐ येऽअप्स्वन्तरग्नयः० । इत्यनेन चतुर्थो-
 दकुंभादुदकमादाय ॥ ॐ यो ब्रह्मशिवतमो० । इति मंत्रेणाभिपिञ्चेत् ॥ ४ ॥
 पुनः—ॐ येऽअप्स्वन्तरग्नयः० । इत्यनेन पंचमोदकुंभादुदकमादाय ॥
 ॐ तस्मात् अरङ्गमा० इति मंत्रेणाभिपिञ्चेत् ॥ ५ ॥ पुनः—ॐ येऽअप्स्वन्तर-
 ग्नयः० । इत्यनेन मंत्रेण षष्ठममाष्टमोदकुंभेभ्यः उदकमादाय तूर्णीं
 वारत्रयाभिपिञ्चेत् स्नानकर्ताऽऽत्मानम् ॥ ८ ॥ तत उदुत्तममिति शिरो-
 मार्गेण मेखलान्मुमुच्य ॥ (उदुत्तममिति शुनःशेषं ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
 बरुणो देवता मेखलोन्मोचने विनियोगः) ॥ ॐ उदुत्तमद्वंद्वंरुणपाश-
 म्मुस्मदवाधुमद्विपद्ध्यम ॐ श्रथाय ॥ अथाह्वयमादित्यवृत्तेतवानांग-
 सोऽभदितयेस्याम ॥ १ ॥ तूर्णीं दंडं निधाय अजिनं च तूर्णीं
 निधाय स्नानकर्ता आदित्यमुपतिष्ठते ऊर्ध्ववाह कृत्वा ॥ ॐ उद्यन्भ्रा-
 जभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसिदशसनिंमाकुर्वा-
 विदन्मागमयोद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थाद्दिवायावभिरस्थाच्छतस-

निरसिशतसर्निमाकुर्वाविदन्मागमयोद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्धिरस्थात्सा
यंयावभिरस्थात्सहस्रसनिरसिसहस्रसर्निमाकुर्वाविदन्मागमयेति ॥ तत-
स्तूर्ण्णां दधि तिलान्वा प्राश्य ॥ आचम्य जटालोमनखान्संहृत्य ॥
औदुम्बरेण काष्ठेन दन्तान् धावयेत् ॥ (अन्नाद्येति मन्त्रस्य अथर्वण
ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता दन्तधावने विनियोगः) ॥
ॐ अन्नाद्यायव्यूहध्वःसोमोराजायमागमत् ॥ समेमुखंप्रमाक्ष्यते यशसा
च भगेन च ॥ इति ॥ तत उदकेन मुखशोधनम् ॥ ततः पुनः उष्णो-
दकेन स्नानम् ॥ गन्धेन अनुलेपनं भाले ॥ चन्दनाद्यनुलेपनं हस्ते
गृहीत्वा ॥ नासिकयोर्मुखे चोपगृहीयात् ॥ (प्राणापानौ मेति मंत्रस्य
प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः प्राणापानौ देवते चन्दनोपग्रहणे विनि-
योगः) ॥ ॐ प्राणापानौ मे तर्पय ॥ ॐ चक्षुर्मं तर्पय ॥ ॐ
श्रोत्रम्मे तर्पय ॥ ततः पाण्योरवनेजनं कृत्वा तदुदकमादाय ॥ अपसव्यं
कृत्वा ॥ दक्षिणाभिमुखो भूत्वा तदुदकं दक्षिणस्यां दिशि निनयेत्
यथा-(ॐ पितरः शुन्धध्वमिति प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः
अश्वीन्द्रासस्वतीदेवताः पाण्यावनेजनस्य दक्षिणस्यां दिशि निपेके
विनियोगः) ॥ ॐ पितरः शुन्धध्वमिति पितरःशुन्धध्वम् ॥ सव्यम् ॥
उदकस्पर्शः ॥ ततश्चन्दनादिना आत्मानमनुलिप्य जपेत् ॥ (सुचक्षा
इति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः आशीर्देवता जपे विनियोगः) ॥
ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यांभूयासःसुवर्चामुखेन ॥ सुश्रुत्कर्णाभ्यां भूया-
सम् ॥ ततः अहतं वासो धौतं वा “परिधास्यै” इति मन्त्रेण परिधायात् ॥
(परिधास्य इति मन्त्रस्य आलम्बायन ऋषिः पंक्तिश्छन्दः वासो
देवता वस्त्रपरिधाने विनियोगः ॥) ॐ परिधास्यैयशोधास्यै
दीर्घाप्तुत्वाजंरदष्टिरस्मि ॥ शतं च जीवामिशरदःपुरुचीरायस्पोपमेभि-

संव्यधिष्ये ॥ इति वासः परिधाय ॥ आचमनं कृत्वा ॥ ततः
पूर्ववत् यज्ञोपवीतधारणं कुर्यात् । यथा—(यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य
प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता यज्ञोपवीतधारणे विनि-
योगः ॥) ॐ यज्ञोपवीतपरमंपवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्य-
मग्न्यंपतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं वलमस्तु तेजः ॥ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा-
यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ इति यज्ञोपवीतधारणम् ॥ आचम्य । अथोत्त-
रीयधारणम् ॥ (यशसापेति मन्त्रस्य अवर्धेण ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः
लिङ्गोक्ता देवता उत्तरीयवस्त्रधारणे विनियोगः ॥) ॐ यशसापद्य्यावा-
पृथिवीयशसेन्द्रावृहस्पती ॥ यशोभगश्चमाविन्दद्यशोमाप्रतिपद्यताम् ॥
इत्यनेन उत्तरीयं धारयेत् । यदि एकं चेद्वासो भवति तदा
तस्यैव परिधानं कृत्वा तस्यैव वासस उत्तरार्द्धमुत्तरीयं कुर्यात् ॥ ततो
“याऽआहरज्जमदग्निरिति सुमनोमालाग्रहणम् ॥ (याऽआहरज्जमदग्नि-
रिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवताः पुष्पमा-
लापग्निग्रहणे विनियोगः) ॥ ॐ याऽआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामाये-
न्द्रियाय ॥ ताऽअहंगृह्यामि यशसाचभगेन च ॥ (इत्यनेन पुष्पमाला-
ग्रहणम्) ॥ ततस्तां पुष्पमालां “यद्यशोप्सरसमिति” शिरसि बध्नीयात् ॥
(यद्यशोप्सरसेति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सुमनसो
देवताः पुष्पमालाबन्धने विनियोगः ॥) ॐ यद्यशोप्सरसामिन्द्रश्चकाराविष्-
लंपृषु ॥ तेन संग्रथिताः सुमनसऽथाबध्नामि यशो मयि ॥ तत “युवा-
मुवासा ” इति संग्रथिताः शिरो वेष्टयेत् ॥ (युवामुवासा इति मन्त्रस्य
विश्वामित्र ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता उष्णीषेण शिरोवेष्टने विनि-
योगः) ॐ युवामुवासाः परिधीतऽआगात्सऽउश्रेपान्भवति ज्ञायमानः ।

तन्धीरासःकवयऽउन्नयन्तिस्वाध्यामनसादेवयन्तः ॥ तत दक्षिणकर्णे
 अलङ्करणमिति सुवर्णकण्डलधारणं करोति ॥ (अलंकरणमिति
 मन्त्रस्य भारद्वाज ऋषिः उष्णिक्छन्दः अलङ्करणदेवता अलङ्करणधा-
 रणे विनियोगः) ॐ अलङ्करणमसिभूयोऽलङ्करणम्भूयात् ॥ पुनर्वा-
 मकर्णे च ॥ ततो वृत्रस्येत्यक्षिणी अञ्जेत् (प्रथमं दक्षिणं ततो
 वामपनेनैव मन्त्रेण) (वृत्रस्येति मंत्रस्य प्रजापतिऋषिः गायत्री
 छन्दः अञ्जनो देवता चक्षुरञ्जने विनियोगः) ॐ वृत्रस्यासिकुनीन-
 कश्चक्षुर्दाऽअसिचक्षुर्भेदेहि ॥३॥ ततो "रोचिष्णुरसीति" आदर्श आत्मानं
 दर्शयेत् ॥ (रोचिष्णुमिति मंत्रस्य सूर्य ऋषिः यजुश्छन्दः आशीर्दे-
 वता आदर्श आत्मदर्शने विनियोगः) ॥ ॐ रोचिष्णुरसि ॥ (ततः छत्रं
 प्रतिगृह्णाति बृहस्पतेरिति ॥) (बृहस्पतेऽइतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः निचृद्-
 गायत्री छन्दः छत्रं देवता छत्रग्रहणे विनियोगः ॥) ॐ बृहस्पतेश्छदिर-
 सिपाप्मनोमामन्तर्धेहि तेजसोयशसोमामन्तर्धेहि ॥ इत्यनेन छत्रग्रह-
 णम् ॥ (प्रतिष्ठेस्थ इत्युपानहौ प्रमुञ्चते पादयोर्धुगपत् ॥) (प्रतिष्ठेति
 मंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः यजुश्छन्दः लिङ्गेक्ता देवता उपानहपरिधाने
 विनियोगः ॥) ॐ प्रतिष्ठेस्थो विश्वतोर्मापातम् ॥ (ततो विश्वाभ्य
 इति दण्डदानम् ॥) (विश्वाभ्य इति मंत्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः त्रिष्टुप्
 छन्दः दण्डो देवता दण्डग्रहणे विनियोगः) ॥ ॐ विश्वाभ्यो
 मानाष्ट्राभ्यस्परिपाहिसर्वतः ॥ (इति मन्त्रेण वैणवदंडमादत्ते ॥
 दन्तप्रक्षालनादीनि नित्यमपि वासश्छत्रोपानहश्चापूर्वाणि चेन्मन्त्रः ॥)
 तत आचार्यः स्नातकस्य नियमाञ्छ्रावयेत् ॥ यथा- शूद्रादिस्पर्शनं न
 कर्तव्यम् ॥ नृत्यगीतवादित्राणि न कुर्यान्न च गच्छेत् ॥ क्षेमे

सति रात्रौ ग्रामान्तरं न गच्छेत् अक्षेपे तु कामं गच्छेत् ॥ क्षेपे सति
 न धावेत् ॥ कूपमध्ये अवलोकनं न कर्तव्यम् ॥ वृक्षारोहणं न
 कर्तव्यम् ॥ फलत्रोटनं न कर्तव्यम् ॥ संध्यासमये गमनं न
 कर्तव्यम् ॥ नग्नस्नानं न कर्तव्यम् ॥ पर्वतगर्तादिलङ्घनं न कर्तव्यम् ॥
 लज्जाकरं दुःखकरममङ्गलभाषणं न कर्तव्यम् ॥ संध्यासमये उपरक्त-
 सूर्यत्रिंशदवलोकनं न कर्तव्यम् ॥ सवर्णं विना सिद्धभिक्षाचर्या न
 कर्तव्या ॥ जलमध्ये स्वमुखं न पश्येत् ॥ अनुत्पन्नलोम्नीं स्त्रीं
 पुरुषाकृतिं स्त्रीं नपुंसकं च एतान्नोपहसेत् ॥ अभिगमनं च न
 कारयेत् ॥ गर्भिणीं विजन्व्या इति ब्रूयात् ॥ सकुलमिति नकुलं
 ब्रूयात् ॥ कपालं भगालमिति ब्रूयात् ॥ इन्द्रधनुः मणिधनुरिति
 ब्रूयात् ॥ परस्य गां वत्सं पाययन्तीं परस्मै स्वामिने वा न
 कथयेत् ॥ सस्यवत्यां भूमौ केवलायां तृणैरन्तर्हितायां मूत्रपुरीषोत्सर्गं
 न कुर्यात् ॥ धावमानः सन् उत्तिष्ठन् सन् मूत्रपुरीषोत्सर्गं न कुर्यात् ॥
 स्वयं प्रशीर्णेनायज्ञियकाष्ठेन गुदं प्रमृजीत ॥ तृणाद्यन्तरभूमौ शिरः
 प्रावरणैरावेष्टय यज्ञोपवीतं निवीतं कृत्वा आलंबितं कर्णं कृत्वा
 दिवोदङ्मुखो रात्रौ दक्षिणमुख उपविश्य मौनी भूत्वा पुरीषोत्सर्गं
 कुर्यात् ॥ नील्यादिरंजितवस्त्रं न परिदधीत ॥ तिस्रो रात्रीर्व्रतं
 चरेत् ॥ अर्मासाशी भवेत् ॥ मृन्मयेन पात्रेण उदकादिकं न पिबेत् ॥
 स्त्रीशूद्रशककाकशुनां चादर्शनमसंभाषा च तैः ॥ शवशूद्रमूतकान्नि
 नाद्यात् ॥ मूत्रपुरीषे ष्टीवनं चात्पे न कुर्यात् ॥ सूर्यास्वमात्मानं
 छत्रादिना अंतर्हितं न कुर्यात् ॥ तप्तेन जलेन शौचाचमनादिकाः
 क्रिया न कुर्वीत ॥ रात्रौ दीपं प्रज्वाल्य भोजनं कुर्वीत ॥ सत्यवा-
 क्योच्चारणमेव कुर्यात् ॥ इत्यादयो यमानियमाः कर्तव्याः ॥ ततः

कृतस्य समावर्तनाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथासंख्याकान्
 ब्राह्मणान् वटुकान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च यथाकाले यथासंपन्नेनाग्ने-
 नाहं भोजयिष्ये तेन श्रीकर्माङ्गदेवता प्रीयतां नमम ॥ कृतस्य
 समावर्तनाख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
 यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे तेन श्रीकर्माङ्गदेवता
 प्रीयतां नमम ॥ तत आचार्यादीन् गंधवस्त्रादिना संपूज्य तेभ्यश्च दक्षिणां
 दत्त्वा तेपामाशिपो गृहीयात् ॥ आशीर्वादः ॥ ॐ शतञ्जीवशरदो-
 वर्धमानःशतंहेमन्ताच्छतमुवसन्तान् ॥ शतमिन्द्राशिसचिता बृहस्पतिः
 शतायुषा हविषेभं पुनर्दुः ॥ १ ॥ ॐशतञ्जीवशरदो वर्धमानऽइत्यपिनि-
 गमोभवति शतमिति शतंदीर्घमायुर्मरुते मां वर्धयन्ति ॥ शतमेवशत-
 मात्मानं भवति ॥ शतमिति शतं दीर्घमायुः ॥ शतमिन्द्रशरदोऽअन्तिदेवाव-
 त्रान्शक्राजुरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानो मद्ध्यारीरिप-
 तायुर्गन्तोऽं ॥ २ ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परांसुव ॥ यद्भ-
 द्रन्तन्नऽआसुव ॥ ३ ॥ इत्याशिपो गृहीत्वा देवताश्रविसर्जनं मातृणां
 विसर्जनं च कृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥

॥ इति समावर्तनसंस्कारप्रयोगः ॥ १५ ॥

॥ १३५ ॥ अथ वाग्दानप्रयोगः ॥

ज्योतिर्विदादिष्टे विवाहनक्षत्रादिष्टुते शुभे काले प्रशस्तवेपैर्द्युग्मव्रा-
 ह्मणैः पुरंध्रीभिर्ज्ञातिवांधवैश्च सह वरपिता गंधाक्षतपुष्पद्युग्मवस्त्रभूष-
 णतांबूलादि गृहीत्वा तूर्यमंगलवाद्यादिभिर्धुतः कन्यागृहमागत्य शुभ-
 वस्त्रपीठासने प्रत्यङ्मुख उपविशेत् ॥ तद्गदासने कन्यापिता प्राङ्मुख
 उपविश्य स्वदक्षिणतः प्राङ्मुखीं कन्यामुपवेश्य स्वपुरतः गणपतिं

कलशं च संस्थाप्य श्रीगणपत्यादिस्मरणपूर्वकं देशकालसंकीर्तनान्ते
 करिष्यमाणकन्याविवाहांगभूतं वाग्दानमहं करिष्ये इति संकल्पं कुर्यात् ॥
 वरपिताऽपि करिष्यमाणपुत्रविवाहांगभूतं कन्यानिरीक्षणं पूजनं च
 करिष्ये इति संकल्पयेत् ॥ तदंगविहितं गणपतिपूजनं वरुणपूजनं च करिष्ये
 इति उभौ कुर्याताम् ॥ ततो वरपिता अमुकगोत्रोत्पन्नाय अमुकप्रवरान्विताय
 अमुकशर्मणे वराय अमुकगोत्रोत्पन्नाममुकप्रवरान्विताममुकनाम्नीं कन्यां
 भार्यात्वेन वृणीमहे । इति कन्यापितरं प्रति ब्रूयात् ॥ ततो दाता
 भार्यासुहृद्गन्धनुमतिं गृहीत्वा यथोक्तमनुवाद्य वा वृणीध्वमिति वदेत् ॥
 ततो वरपिता कन्यानिरीक्षणपूर्वकं कुंकुमाक्षतपुष्पयुग्मवस्त्रभूषणतांबू-
 लादिभिः कन्यां स्थाने पूजयेत्संप्रदायागतमंत्रैः ॥ ततो दाता प्रत्य-
 ङ्गमुखोपविष्टवरपितरं गंधतांबूलादिभिः पूजयेत् ॥ स च वरपिता दातारं
 पूजयेत् ॥ ततो दाता हरिद्राखंडयुतानि पंच वा सप्त पूगीफलानि गृहीत्वा
 पठेत् ॥ अव्यंगेऽपतितेऽङ्गीवे दशदोषविवर्जिते ॥ इमां कन्यां
 प्रदास्यामि देवाग्निद्विजसन्निधौ ॥ १ ॥ अमुकसगोत्रोत्पन्नाय अमुकप्र-
 वरान्विताय अमुकशर्मणः प्रपौत्राय अमुकशर्मणः पौत्राय अमुक-
 शर्मणः पुत्राय अमुकशर्मणे वराय ॥ अमुकगोत्रोत्पन्नाम् अमुकप्रवरा-
 न्विताम् अमुकशर्मणः प्रपौत्रीम् अमुकशर्मणः पौत्रीम् अमुकशर्मणः पुत्री-
 म् अमुकनाम्नीमिमां कन्यां ज्योतिर्विदादिष्टे मुहूर्ते दास्ये इति वाचा
 संप्रदादे ॥ यदावघ्नन्निति मंत्रेण हरिद्राखंडपूगीफलानि वरपितृवस्त्रप्रान्ते

१ गणपतिपूजनं कन्यापितुरेवोक्तं रत्नगदाधराभ्या प्रयोगदर्पणे धर्मसिधौ च ।
 उभयोरप्युक्तम् । आचारसुण्याहवाचनमपि केचित् कुर्वन्ति ॥ २ गदाधरेण गोत्राशुचार विवेक
 कन्यावरणमुक्तम् । ३ भोत्रोच्चारपूर्वकं वृणीध्वमित्यंतं पुनर्वारद्वयं कार्यमिति प्रयोगरत्नादयः ।
 उक्तस्य पुनर्भाषणमनुवादः । कन्यापूजनं वाचा दत्तेति स्वकीकाराते गदाधरेणोक्तम् ।

वद्धा ग्रन्थि चंदनेनार्चयित्वा पठेत् ॥ वाचा दत्ता मया कन्या पुत्रार्थे
स्वीकृता त्वया ॥ कन्यावलोकनविधौ निश्चितस्त्वं सुखी भव ॥ १ ॥ ततो
वरापिता पूर्ववत् हरिद्राखंडघृतपूगीफलानि गृहीत्वा अमुकगोत्रोत्पन्नाम्
अमुकप्रवरान्विताम् अमुकशर्मणः प्रपौत्रीम् अमुकशर्मणः पौत्रीम् अमुकश-
र्मणः पुत्रीम् अमुकनाम्नीमिमां कन्याम् अमुकसगोत्रोत्पन्नाय अमुकप्रव-
रान्विताय अमुकशर्मणः प्रपौत्राय अमुकशर्मणः पौत्राय अमुकशर्मणः
पुत्राय अमुकशर्मणे वराय दातारो भवन्तो निश्चिता भवंत्विति दातृवस्त्र-
प्राप्ते पूर्वघ्नमंत्रेण वद्धा ग्रन्थि चंदनेनार्चयित्वा पठेत् ॥ वाचा दत्ता त्वया
कन्या पुत्रार्थे स्वीकृता मया ॥ वरावलोकनविधौ निश्चिन्तस्त्वं सुखी
भव ॥ १ ॥ ततो दाता पात्रस्थसिततंडुलपुंजोपरि शचीमावाह्य कन्याहस्तेन
संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ देवेंद्राणि नमस्तुभ्यं देवेंद्रमियभामिनि ॥ विवाहं
भाग्यमारोग्यं पुत्रलाभं च देहि मे ॥ १ ॥ पुरंध्रीभिर्नाराजनादि
मांगलिकं कार्यम् ॥ विप्रान् गंधतांबूलदक्षिणादिभिः संपूज्य
तेपामाशिपो गृहीत्वा गणपत्यादि विसर्जयेत् ॥ इति वाग्दानविधिः ॥

॥ १३६ ॥ अथ विवाहसंस्कारप्रयोगः ॥ १६ ॥

तत्र तावत्कन्यापिता अर्हणवेलायां मंडपे उदङ्मुख उपविश्य
स्वदक्षिणतः पत्नीं चोपविश्य मंडपं समागताय वरायोपवेशनार्थं
शुद्धमासनं दत्वा तत्र प्राङ्मुखं वरमूर्ध्वजानुं तिष्ठतं मधुपर्केणार्चयेत् ॥

॥ १३७ ॥ अथ मधुपर्कप्रयोगः ॥

अचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा ॥ कन्यापिता
हस्त जलमादाय ॥ अद्येत्यादि ० शुभपुण्यतिथौ कन्यार्थिनं मंडपम्

इत्युक्ते “प्रतिगृह्णामी”ति वरेणोक्ते वरहस्ते अर्घ्यं दद्यात् ॥ ततो वरः
 “ॐ आपस्थयुष्माभिःसर्वान्कामानवाप्नवानि” (इति शिरसार्घ्यवन्दनं
 कृत्वानिनयन्नभिमंत्रयते ॥) “ॐ समुद्रं वःप्रहिणोमिस्वाधोनिमभिगच्छत ॥
 अरिष्टाऽऽस्माकंवीरामापरासेचिमत्पयः ॥ ” (प्राग्वाउदग्वा क्षिपेत्) ॥
 ततः कन्यापिता आचमनीयपात्रं गृहीत्वा ॥ अन्येन “ आचमनी-
 यमुदकमाचमनीयमुदकमाचमनीयमुदकम् प्रतिगृह्णताम् ” इत्युक्ते
 “प्रतिगृह्णामी”ति वरेणोक्ते च वरहस्ते आचमनीयपात्रं दद्यात् ॥
 ततो वरः तस्मात् ॐ “ आमागन्धशसासऽमृजवर्चसा ॥ तंमाकुरु-
 मिद्यं प्रजानामधिपतिपशुनामरिष्टिं तनूनाम् ॥ ” (इति मन्त्रेण सकृदा-
 चमनं कुर्यात् ॥ द्विस्तूप्णीम्) ॥ ततः कन्यापिता कांस्यपात्रे दधिमधुघृ-
 तम् एकीकृत्य ॥ अन्येन “ ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः प्रतिगृह्णताम् ॥ ”
 इत्युक्ते (मित्रस्य त्वेति मधुपर्कं प्रतीक्षते) वरः कन्यापितुर्हस्त-
 स्थितं मधुपर्कम् ईक्षते ॥ “ ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ॥ ” (ततो देव-
 स्येति प्रतिगृह्णाति वरः ॥) “ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेत् विश्वोर्व्याहु-
 ब्यां पुष्णो हस्तांभ्याम् ॥ प्रतिगृह्णामग्नेष्टास्येन प्राश्नामि ॥ ” इति मन्त्रेण
 वरो मधुपर्कपात्रं गृहीत्वा सव्ये पाणौ कृत्वा ॥ दक्षिणस्यानामिक्रया त्रिः
 प्रयौति ॥ (मधुपर्कं त्रिःपदक्षिणमालोडयति ॥) “ ॐ नमः श्यावाश्यायान्न-
 शनेवत्तऽआधिद्धंतत्ते निष्कृन्तामि ॥ ” (अनामिकांगुष्ठेन च त्रिर्निरुक्षयति ॥)
 ततः (तस्य त्रिः प्राश्नाति ॥ प्रतिप्राशनं मंत्रावृत्तिः) “ ॐ यन्मधु-
 नोमध्व्यं परमद्रूपमन्नाद्यम् ॥ तेनाहं मधुनोमध्व्येन परमेण रूपेणाद्याद्ये-
 न परमोमध्व्योन्नादोसानिति ॥ ” इति मन्त्रेण त्रिः प्राश्नीयात् ॥ (मधुमती-
 भिर्वाप्रत्यृचंपुत्रायांतिवासिनेवोत्तरतः आसीनायोच्छिष्टं दद्यात् ॥ सर्व-
 : सा प्राश्नीयात् प्राग्वाउदग्वा क्षिपेत्) आचमनं कुर्यात् ॥ ततो यज-

मानो वरवामहस्ते जलं दद्यात् ॥ वरः अङ्गन्यासं कुर्यात् ॥ (प्राणान्
संमृशति ॥ मुखं कराग्रेण) ॐ वाङ्मऽआस्येस्तु ॥ (तर्जन्यंगुष्ठा-
म्याम्) ॐ नसोर्मे प्राणोस्तु ॥ (अनामिकांगुष्ठाभ्याम्) ॐ अक्षोर्मे-
चक्षुरस्तु ॥ (मध्यमांगुष्ठाभ्याम्) ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ (कराग्रेण)
ॐ बाहोर्मे बलमस्तु (युगपदस्तेन) ॥ ॐ ऊर्वोर्मे ओजोस्तु ॥
(शिरःप्रभृतिपादांशानि सर्वांगानि उभाभ्यां हस्ताभ्याम्) ॐ अरिष्टानि
मेङ्गानितनूस्तन्वामेसहसन्तु इति ॥ (आचान्तोदकायसासमादाय-
गौरातीत्रिःप्राहमत्याह ॥) ततोऽन्येन “गौगौर्गौः” इत्युक्ते यजमानेन
गोरुत्सर्जनद्रव्ये स्थापिते वरः । “ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः ॥ प्रनुवोचंचिकित्तुपेजनायमागामनागाम-
दितिबधिर्ष्ट ॥ ममचामुष्य च पाप्मानद्दहनोमि इति (यद्यालभेत) ॥ ” (अथय-
द्युसिसृक्षेन्मम चामुकशर्मणो यजमानस्य उभयोः पाप्माहतः ॥) इति-
उपांशु ॥ ततः उच्यते ॥ “ ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु ” इति ब्रूयात् (नत्वेवा-
मासोर्धःस्यादधियज्ञमधिविवाहंकुरुतेत्येवब्रूयाद्यद्यसकृत्संवत्स-
रस्य सोमेनयजेतकृताध्याऽएवैनंयाजयेयुर्नाकृताध्या इति श्रुतेः ॥) अत्र-
शिष्टाचारप्राप्ताः केचन पदार्था लिख्यन्ते ॥ (गंधाश्लंकारान्तेषु वरस्येव
मंत्रपाठः ॥) ॐ मुचक्षाऽअहमक्षीभ्यांभूयासऽसुवर्चापुखेन ॥ सुश्रुत्कर्णा-
ब्ध्याम्भूयासम् । इति मंत्रेण वरस्य ललाटे यजमानो गंधं कुर्यात् । ॐ
अनांघृष्टापुरस्तादुग्रेराधिपस्युऽआयुर्मैदाहं । पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्या-
धिपस्ये पूजाम्मैदाहं ॥ सुपदांश्चाद्देवस्यसच्चितुराधिपस्येचक्षुर्मैदाहं ॥

१ अथ गवालमनम्—मद्यपि सूयक्षरेण गवालंभो निषेधेन उल्लेख्यमपि मधुपर्के
यशोवर्धन इति स्मृत्यन्तरयत्नार्याज्य एव ॥ अतः कश्चिद्युगे निषेधः ॥ तस्याने तद्विरुध-
द्व्योत्सर्गः ॥

आ श्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्त्येरायस्पोपंम्मेदात् ॥ विधृतिरुपरिष्ठाद्-
 बृहस्पतेराधिपत्त्यऽओजोमेदा वि॒श्वो॒भ्योमाना॒ष्ठाभ्य॑स्पाहिमनोर-
 ॑श्वासि ॥३३॥ इति वरस्य ललाटे अक्षतान् दद्यात् ॥ ॐ यज्ञोपवीतंपरमं
 पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्न्यंप्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं
 बलमस्तु तेजः ॥ इति मंत्रेण वराय यज्ञोपवीतदानम् ॥ ॐ परिधास्यै-
 यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ॥ शतं च जीवामिशरदः पुरुचीराय-
 स्पोपमभिसंव्ययिष्ये इति ॥ मंत्रेण वराय बह्वं दद्यात् ॥ यजमानो
 हस्ते जलमादाय अनेन मधुपर्कार्चनेन लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेताम् ॥
 ॥ इति मधुपर्कप्रयोगः ॥

अथ विवाहसंस्कारप्रयोगः ॥ ततो वरो विवाहवेद्यां गत्वा
 शुभासने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्ये० तिथौ धर्मार्थ-
 कामप्रजासिद्ध्यर्थं दारपरिग्रहणं करिष्ये । इति संकल्प्य ॥ तत्र पंचभू-
 संस्कारपूर्वकं योजकनामाग्निप्रतिष्ठापनं करिष्ये ॥ इति पुनः संकल्प्य
 योजकनामाग्निं स्थापयेत् ॥ ततः कन्यामानयेत् । अन्तरपटं कुर्यात् ॥
 अत्रावसरे मंगलघोषं कारयेत् ॥ ब्राह्मणाश्च मंगलाष्टकं पठेयुः ॥
 विशेषका उच्चारणीयाः

॥ अथ मङ्गलाष्टकम् ॥

श्रीमत्पङ्कजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
 श्चन्द्रो भास्करवित्तपालवरुणप्रेताधिपादिग्रहाः ॥

१ अत्रावसरे अग्निस्थापनं कृत्वा चेत् पद्यान् कर्तव्यम् । संप्रति कन्यादानानन्तरमग्नि-
 प्रतिष्ठापनं कुर्वन्ति तत्र यथाचारं कर्तव्यम् ॥

२ कन्यादाता सावधान । कन्याप्रतिप्राही सावधान । प्रतिश्लोके ६०, ५०,
 ४०, ३०, २०, १०, ५, अक्षरं पूर्णनोद्यम ए प्रमाणे पुरोहिते बोलवुं ॥

प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगुरुर्धितामणिः कौस्तुभः
 स्वामी शक्तिधरश्च लाङ्गलधरः कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ १ ॥
 गौरी श्रीरदितिर्दितिश्च सुभगा कण्डूः सुपर्णा शिवा
 सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रताऽरुन्धती ॥
 स्वाहा जांबुवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्नविघ्नं सिनी
 वेला चांबुनिधेः सुमौनमकरा कुर्यात् सदा मंगलम् ॥ २ ॥
 नेत्राणि त्रितयं महत्पशुपतेरग्रेस्तु पादत्रयं
 तद्द्विद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम् ॥
 गंगोद्यस्य गतित्रयं सुविमलं तद्दृष्ट्वापीणां त्रयं
 संध्यायास्त्रितयं द्विजैरभिमतं कुर्यात् सदा मंगलम् ॥ ३ ॥
 गंगा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविंदगोवर्धनौ
 गीतागोमयगोरजो गिरिसुता गंगाधरो गौतमः ॥
 गायत्री गरुडो गदाधरगयागंभीरगोटावरी
 गांधर्वगृहगोपगोकुलधरः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥ ४ ॥
 अश्वत्थो वटवृक्षचन्द्रनतश्मंदारकल्पद्रुमो
 जांबुनिधकदंबकाप्रसरला वृक्षाथ ये स्त्रीरिणः ॥
 सर्वस्त्रैः फल्गुपुष्पपञ्चवैर्युक्तैः सदा वंदितं
 रम्यं चैश्वर्यं सनंदनवनं कुर्यात् सदा मंगलम् ॥ ५ ॥
 यान्मौक्तः सनकः सनंदनगुनिर्च्यसो वसिष्ठो भृगु-
 र्गोवाल्किर्जमदग्निर्ब्रह्मजन्मो गगो गिरा गौतमः ॥
 मांधाता क्रतुपर्णवनसगरा घन्या दिव्यापो नलः
 पुष्यां धर्मयुतो ययाकिनहृषी कुर्यात् सदा मंगलम् ॥ ६ ॥

गंगा सिंधुसरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा ।
 कावेरी सरयूर्महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ॥
 क्षिणा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गंडकी ॥
 पुण्याः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥ ७ ॥
 लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्वंद्रमा
 गावः कामदुग्धा सुरेश्वरगजो रंभादिदेवाङ्गनाः ॥
 अश्वः सप्तसुरः सुधा हरिधनुः शंखो विपं चांबुधे
 रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वै मङ्गलम् ॥ ८ ॥

एवं मङ्गलाष्टकं पठित्वा ततो अन्तर्पटं निस्सार्य (मंगलस्मृतिपाठाव-
 सरे वच्वा पुष्पग्रथितवरमालां वरस्य कण्ठे धारयित्वा ।) ॐ मनोज्ञिति०
 सुप्रतिष्ठितमस्तु दम्पत्योरविच्छिन्ना प्रीतिरस्त्वित्युक्त्वा अक्षतान् ढंपत्योः
 शिरसि प्रक्षिपेयुः॥ ततः ॐ श्रीश्वेतलक्ष्मीश्चपत्स्न्यावहोरात्रेपाश्वेनक्षत्रा-
 णिरूपमश्विनौड्यात्तम्॥इष्णानिषाणामुर्मडडपाणसर्वलोकम्मडडपाण॥
 इतिमंत्रेण कन्यापादप्रक्षालनम्॥(अथैनां वासःपरिधापयति जरांगन्डेति
 मन्त्रेण) ॐ जरांगच्छपरिधत्स्ववासोभवा कृष्टीनामभिशास्तिपावा ॥ शतंच
 जीवशरदःसुवर्चारयिंचपुत्राननुमंव्ययस्वायुभर्तादिंपरिधत्स्ववासःइति ॥
 अथोत्तरीयम् ॥ ॐ याऽअकृतश्रवयंयाऽअतन्वत ॥ याश्चदेवीस्तंतूनभि-

१ कारिका-कन्यत्रपरिधाने तथैव चोत्तरीयके । तथा समीक्षकाले तु पितुर्निक्रमणे
 गृहात् ॥ १ ॥ अरमनो रोहणे चैव हस्तप्रदे तथैव च ॥ तथा सप्तदे चैव बभ्रुर्ध्याभिपेक्षने ॥ २ ॥
 हृदयालमने चैव तथैव चाभिमन्त्रेण ॥ हृत्पुत्रे क्रमेणैव एतान्मन्त्रान्वरः पठेत् ॥ ३ ॥ ॐ चन्वार-
 पाक्यशाहुतोऽहुतप्रहुतः प्राशिनऽइति पंचसुबहि शालायाविवादेचूडाकरणऽअनयनेकेशान्ते
 सीमन्तोत्थनऽइत्युपलिप्तऽउद्धृताधोक्षितेभिमुपसमापायनिर्मन्थ्यमेकेविनाहऽउदगयनऽआपूर्य-
 माणपक्षेपुण्याहेकुमार्याःप्राणिगृहीयात् ॥ त्रिपुत्रिपूतारादिस्वातौमृगशिरशिरोहिव्यानातिद्यो
 प्राह्मणस्पवर्गानुपूर्व्येणद्वेराजन्यस्यैकावेदयस्यसर्वेषांशुद्रामन्येकेमन्त्रवर्जम् ॥ (पा. गृ सू)

तोततन्थ तास्त्वादेवीर्जरसेसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्ववासः ॥ ततो
 वधुवरौ परस्परं समंजयति ॥ ३० ॥ समंजंतुविश्वेदेवाःसमापोहृदया-
 निनौ ॥ सम्मातरिश्वा संधाता समुदेष्टीदधातुनौ ॥ ततो द्विजाः परित्वा-
 गिर्वणोगिरऽइत्यादि जुपाणोऽअप्तु राज्यस्यवेतुस्वाहित्यन्तेनानुवाकेन
 वधुवरावच्छिन्नचतुर्विंशतितंतुभिद्विगुणीकृतमूत्रेण कंठे ईशानादि वेष्टयेत्
 यथाचारम् ॥ अयं देशाचारः ॥ तत्रमंत्राः ॥ ॐ परित्वागिर्वणोगिरिऽ-
 इमाभवंतुद्विविश्वतः ॥ वृद्धायुमनुद्वयो जुष्टाभवंतु जुष्टयदं ॥ १ ॥
 इन्द्रस्यस्पूरसीन्द्रस्यध्रुवोसि ॥ ऐन्द्रमंसिद्वैश्वेदेवमंसि ॥ २ ॥ द्विभूरांसि-
 प्रवाहणोद्विहिरसिद्विहयवाहनं ॥ श्वाघोसिमर्चतास्तुथोसिद्विश्वेदेदं
 ॥ ३ ॥ उशिर्गंसिकविरक्षारिरसिबम्भारिरिवस्पूरांसिदुर्वस्वाञ्जुन्धुःपूर-
 सिमाञ्जुन्धुःसम्भ्राटीसिकृशानुःपरिपद्व्योसिपर्वमानो नभोसिपूत-
 यवांमूष्टोसि दृश्यमूर्दनऽऽकृतधामासिभुज्ज्योतिरं ॥ ४ ॥ समुद्रोसिद्वि-
 श्वरह्यंचाऽअञ्जोस्येकपादोहिरसिबुध्न्योऽवागंस्येन्द्रमंसिसद्रोभ्यतेस्यद-
 शारिमामामंतासुमदध्वनामदध्वपनेप्रमातिरस्वास्तिमेस्मिन्पथिदेवयाने
 भूयात् ॥ ५ ॥ मित्रम्यमाचक्षुपेक्षदध्वमग्रयदंमगरादंसगरास्त्युमगरंणना-
 म्भ्रागंष्टेणानीकेनपातमाग्रय दं पिपूतमाग्रयोगोपायतमानमोवोस्तुमामा-
 षिष्मिष्टि ॥ ६ ॥ ज्योतिरंसिद्विश्वरुपंष्टिश्चैवान्द्रेवानांऽसमित्वात्त्वत्सो-
 मतनुकृष्ट्योद्रेपोऽन्योन्यहृनेऽन्यऽऽरुयन्तासिद्विरुथऽस्वाहाजुपाणोऽ
 अप्तुराज्यस्यवेतुस्वाहा ॥ ७ ॥ ३१ ॥ (अत्रावसरे कन्यापिता याननि-
 कथादं कुर्यात् ॥) यथा-आचम्य ॥ मत्पापनिस्वरूपिणे वराय एतत्ते पापं
 पादावनेजनं पादप्रक्षालनं हस्ताभ्याम् एष तेऽर्थः ॥ इदमघोदकं सह
 चंदनं पुष्पम् ॥ पादोदकं परित्यज्य ॥ गौरीस्वरूपिणि कन्यके एतमे
 पापं पादावनेजनं पादप्रक्षालनम् एष तेऽर्थः ॥ पादोदकं परित्यज्य ॥

आचम्य ॥ स्वपादौ करौ प्रक्षालयाचम्य ॥ दिग्बंधनम् ॥ ॐ स्वस्तिनऽ
 इन्द्रो० ॥१॥ कन्यादाननिमित्तं वाचनिकश्राद्धोपहारानां सर्वेषां पवित्र-
 तास्तु ॥ देशकालपाकपात्रोपहारद्रव्यश्रद्धासंपदस्तु ॥ कन्यापिता हस्ते
 जलमादाय ॥ अद्येत्यादि० मम एकोत्तरशतकुलोद्धारणार्थं कन्यादा-
 नारम्भाङ्गनिमित्तं वाचनिकश्राद्धमहं करिष्ये ॥ प्रजापतिस्वरूपिणे वराय
 इदमासनम् ॥ गौरीस्वरूपकन्यकायै इदमासनम् ॥ प्रजापतिस्वरूपिणे
 वराय यथादत्तं गंधाद्यर्चनं कंकणकुंडलमुद्रिकावासांसि भोजनपात्रादीनि
 नानादैवतानि गंधपुष्पाद्यर्चितानि तन्निष्कयभूतं द्रव्यं वा तुभ्यमहं
 संप्रददे ॥ गौरीस्वरूपकन्यकायै यथा० संप्रददे । दीपादीनां प्रसादात्
 इदं वो ज्योतिः सुज्योतिः शेषोपचाराः संपूर्णाः संभवन्तु ॥ भोजनसं-
 कल्पः ॥ यथातृप्तिपर्यन्तं ब्राह्मणभोजनं सपरिवाराय प्रजापतिस्वरू-
 पिणे वराय अहं दास्ये वा अन्नाद्येनाहं तर्पयिष्ये ॥ यथातृप्ति० गौरीस्वरूप-
 कन्यकायै अहं दास्ये ॥ दक्षिणासंकल्पः ॥ प्रजापतिस्वरूपिणे वराय
 फलमुखवासतांबूलं हिरण्यदक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ गौरीस्वरूपक-
 न्यकायै फल० ॥ अस्य हिरण्यश्राद्धविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तु
 परिपूर्णता ॥

॥ १३८ ॥ अथ कन्यादानसंकल्पः ॥

ततो दाता स्वदक्षिणास्थितपत्न्या सह वरपार्श्वभागे शुभासन
 उदङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य ॥ हस्ते जलमादाय-विष्णुर्विष्णु-
 विष्णुःएवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अस्मिन्पुण्याहे अस्याः
 कन्याया अनेन वरेण धर्मप्रजया उभयोः वंशवृद्धयर्थं तथा च मम सम-
 स्तपितृणां निरतिशयानंदब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफला-

वास्ये अनेन वरेण अस्यां कन्यायामुत्पादायिष्यमाणसंतत्यां दश पूर्वान्
दशापरान् मां च एकविंशतिपुरुषानुद्धतुं ब्रह्मविवाहविधिना श्रीलक्ष्मी-
नारायणप्रीतये गोत्रोच्चारपूर्वकं कन्यादानमहं करिष्ये ॥ (ततः आचा-
रात् वरहस्ते सुप्रोक्षितादिकरणम् ॥ शित्रा आपः सन्तु । सन्तु शिवा
आपः ॥ सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।
अस्त्वक्षतमरिष्टं च ॥ अत्राः पान्तु सुप्रोक्षितमस्तु ॥ गन्धाः पान्तु सौमंगल्यं
चास्तु ॥ अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणि पान्तु सौश्रियमस्तु ॥ यत्पापं
रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ॥) ततः गोत्रोच्चारः—वरस्य
प्रथमं पश्चात् कन्यायाः ॥ अमुरुगोत्रोत्पन्नस्य अमुरुप्रवरस्य अमुरुशर्मणः
प्रपौत्राय ॥ १ ॥ अमुरुगोत्रस्य अमुरुप्रवरस्य अमुरुशर्मणः पौत्राय
॥ २ ॥ अमुरुगोत्रस्य अमुरुप्रवरस्य अमुरुशर्मणः पुत्राय ॥ ३ ॥
अमुरुगोत्राय अमुरुप्रवराय शुक्लपञ्चदशान्नायवाजिमाध्यंदिनीयशाखा-
ध्यायिने अमुरुशर्मणे वराय ॥ स्थिरस्थावरसंयोगो बहुपुत्रं बहुधनं
चायुष्यं चास्तु ॥ ततः कन्याया गोत्रोच्चारः ॥ अमुरुगोत्रस्य
अमुरुप्रवरस्य अमुरुशर्मणः प्रपौत्रीम् ॥ १ ॥ अमुरुगोत्रस्य अमुरुप्र-
वरस्य अमुरुशर्मणः पौत्रीम् ॥ २ ॥ अमुरुगोत्रस्य अमुरुप्रवरस्य
अमुरुशर्मणः पुत्रीम् ॥ ३ ॥ अमुरुगोत्राम् अमुरुप्रवराम् अमुक-
नार्त्त्रां श्रीरूपिणीमिमां कन्धां दास्ये ॥ उभयोः पाणिग्रहणं भवतु ॥ एवं
पुनः द्विवारं पठित्वा ॥ (अथ वरमातुलपक्षगोत्रोच्चारः) अमुरुगोत्रोत्पन्नस्य
अमुरुप्रवरस्य अमुरुशर्मणः प्रदौहित्राय ॥ अमुरुगोत्रस्य अमुरुप्रवरस्य
अमुरुशर्मणः दौहित्राय अमुरुशर्मणे वराय ॥ (ततः कन्यामातुलपक्ष-
गोत्रोच्चारः) अमुरुगोत्रस्य अमुरुप्रवरस्य अमुरुशर्मणः प्रदौहित्रीम् ॥

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः दौहित्रीम् अमुकनाम्नीं
 श्रीरूपिणीमिमां कन्यां दास्ये ॥ अथ कन्यादानसंकल्पः ॥ हस्ते जलमादा-
 य-विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः० अथ मंडपाद्यस्तात्कुलशीलसौभाग्यसामुद्रिकल-
 क्षणलावण्यावयवारोग्यां कांचनकुंडलकंकणवलयनूपुरकाटिमैखलाभुज-
 चूडिकेयूरांगदभूपितां यवनालिकेरहस्तां भ्रमरध्वनिसुगंधिमालालंकृतां
 कर्पूरागरुधूपितां गंधयक्षकर्दमद्रव्यादिसहितां मुकुटमालादिविविधालं-
 कृतां शृंगारराशिशय्याम् आसनलत्रोपानहवासःकर्मंडलुकांस्यपात्रसौ-
 वर्णराप्यमुद्रिकोपेतां गजदंतकंकणान्विताम् एतेषां वस्तुमात्राणां स्वह-
 स्तोपार्जितगृहवित्तानुसारेण भक्ष्यभोजनपयःपानादिकिंचिन्मात्रद्रव्यादि-
 सहितां श्रौतस्मार्तकर्मदक्षां प्रियंवदां कुंकुमरुज्जलमुक्ताफलमालालंकृतां
 व्रीह्यंजलिपूरिताम् आदर्शहस्तां मदनफलवद्धां त्रिमातुलशुद्धां दशपुरुष-
 विख्यातां वेदशास्त्रपुराणनिगमान्वितां दूर्वाकुरप्रसारितप्रयागवटशाखा-
 विस्तारेण एकोत्तरशतकोटिकुलोद्धारश्रेयसे अमुकगोत्राय अमुकप्रवरा-
 न्विताय यजुर्वेदमाध्यन्दिनीशाखाध्यायिने अमुकशर्मणे वराय मधुपर्केण
 पूजिताय तत्संतानपरंपरावृद्धये आचंद्राकं यावत् इमां कन्यां यथा-
 शक्यलंकृतां गृहमंडपोपविष्टस्वजनसाक्षिभिर्विष्णुबह्निब्राह्मणसन्निधौ
 वेदशास्त्रपुराणोक्तशतगुणीकृतज्योतिष्टोमातिरात्रफलप्राप्तिकामः भार्य-
 त्वेन तुभ्यमहं संप्रददे ॥ तेन भगवन्तौ लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेतां न
 मम ॥ कृतस्य कन्यादानस्य साङ्गतासिद्धचर्थं सुवर्णनिष्करीं दक्षिणां
 तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इत्युक्त्वा सकुशजलाक्षतकन्यादाक्षिणहस्तं वरद-
 क्षिणहस्ते दद्यात् ॥ “ॐ स्वस्ति” इति वरो ब्रूयात् ॥ ततः कन्यामाता-
 पितरौ उभौ पठतः ॥ कन्यां लक्षणसंपन्नां कनकाभरणैर्युताम् ॥
 दास्यामि ब्रह्मणे त्रभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥ पथिव्यान्निष्ठायाः ॥

साक्षिण्यः सर्वदेवताः ॥ इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणाय च ॥
मम वंशकुले जाता यावद्वर्षाणि पोषिता ॥ तुभ्यं वर मया दत्ता
पुत्रपौत्रविवर्धिनी ॥ गौरां कन्यामिमां विप्र यथाशक्ति विभूषिताम् ॥
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥ “मयापि दत्ता” इति माता
वदेत् “मया प्रतिगृहीता” इति वरः ॥ कोदात् इति पठेत् ॥ ॐ कोदात्क-
स्मात् अदात्कामोदात्कामायादात्कामोदात्ताकामं प्रतिग्रहीताकामैतत्तै
॥ ॐ ॥ “यस्त्रया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह धर्मे चार्थे च कामे च
त्वयेयं नातिचरितव्या” ॥ “अहं न अतिचरामि” इति वरः ॥ एवं त्रिवारं
पठित्वा वरमालार्पणम् ॥ वस्त्रग्रन्थि (छेडाछेडी) बन्धनम् ॥ गोदा-
नम् ॥ कन्यादानसांगतासिद्धयर्थमिमां गां रुद्रदेवत्यां वा गोनिष्कयीभू-
तमिदं द्रव्यं प्रजापतिरूपिणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ततः कन्यामाता
कृताञ्जलिः कन्यादाक्षिणकर्णे पठति ॥ (ब्रह्मासावित्रीनुं सौभाग्य ।
ईश्वरपार्वतीनुं सौभाग्य) ततः पित्रा भक्त्यामादाय गृहीत्वा
निष्क्रामति ॥ यदपि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा ॥ हिरण्यपर्णो
वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोत्वित्यसायिति ॥ अथैनां समीक्षयति ॥
ॐ अघोरचक्षुरपातिञ्च्योधिं शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।
वीरमूर्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ सोमः
मथमो विधिदे गंधर्वो विविदऽउत्तरः ॥ तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते
मनुष्यजः ॥ सोमोद्दद् गंधर्वाय गंधर्वोद्दद्दमये ॥ रपि पुत्रांश-
दादप्रिमेऽमयोऽष्टमाम् ॥ सा नः पूषा शिवनमामिरयस्तानऽऊरुऽउग्री
विहर ॥ यस्यामुशन्नः महसाम शपं यस्यामु कामा पहवो निविष्टया
शमि ॥ ततः आचारप्राप्तं स्वस्तिपुण्याहवाननं कुर्यात् ॥ ततः
आपोहिष्टेति त्रिभिर्वनैः पंचवारुणैर्वाग्भियेकः ॥ ॐ आपोहिष्ठा ० ।

ॐ योवः शिवतमो० । ॐ तस्माऽअरङ्ग० ॥ ॐ पयः पृथिव्यां० ॥ ॐ
 त्रतारमिन्द्र० ॥ ॐ वरुणस्यो० ॥ ॐ इम्मो० ॥ ॐ तत्वायामि० ॥
 अथ आशीर्वादः ॥ शतं जीवशरदो० ॥ ॐ शतमिन्नुशरदो० ॥ कृतस्य
 कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान्
 कुमारिकाः षडुकान् सुवासिन्यादीन् अद्याहं भोजयिष्ये ॥ कृत-
 स्य कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथो-
 त्साहं दक्षिणां दास्ये ॥ लम्बोदरनमस्तुभ्यं० ॥ इति कन्यादानप्रयोगः ॥

॥ १३९ ॥ अथ विवाहहोमः ॥

वरो हस्ते जलमादाय अग्रेत्यादि० प्रारीप्सितकर्मणः सांगता-
 सिद्धयर्थं भार्यात्वसिद्धयर्थं विवाहहोममहं करिष्ये ॥ तदंगत्वेन
 गणपतिपूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिं पोडशोपचारैः
 पूजयेत् ॥ ततः आचार्यः पंचभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निं संस्थापयेत् ॥
 अग्रेरुत्तरतो भूरसि० इत्यादिक्रमेण उदककुंभस्थापनम् ॥ ततो दक्षिणतो
 ब्रह्मासनमास्तीर्येत्यादि चरुवज्र्यं पात्रासादनादि प्रोक्षण्याः प्रत्युत्पवना-
 न्तं कर्म कृत्वा तिष्ठेत् ॥ तत्र उपकल्पनीयानि ॥ उत्तरे शमीपलाश-
 मिश्रा लाजाः ॥ अशमा ॥ अखंडलोहितम् ॥ आनहुहं चर्म ॥ कुमारीभ्राता
 ॥ शूर्पम् ॥ दृढंपुरुषः ॥ पूर्णपात्रं वरो वा ॥ (प्रोक्षणकाले उपकल्पनीयानां
 प्रोक्षणम् ॥) ततः उपयमनकुशानादाय तिष्ठन् समिधोभ्याधाय ॥
 प्रोक्षणीशेपोदकेन अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य इतरथाटत्तिः ॥ पवित्रयोः प्रणीतासु
 निधानम् ॥ (वरेणान्वारब्ध आचार्यो वा) ब्रह्मणा दक्षिणहस्तेनान्वा-
 रब्धः वरः दक्षिणं ज्ञान्वाच्यं स्तुवेण जुहुयात् ॥ (मनसा) (ॐ प्रजापतये)

ऋक्सामभ्योऽसरोभ्यऽएष्टिभ्यो नमम ॥ १२ ॥ १३ ॥ इति राष्ट्रभृद्भ्योः ॥

॥ १४ ॥ अथ जयाहोमः ॥ (चित्तं चेत्यादित्रयोदशमंत्राणां परमेष्ठी ऋषिः सर्वाणि यजुःपि छन्दोसि लिङ्गोक्ता देवताः विवाहकर्मणि जयाहोमे विनियोगः) ॥ ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय नमम ॥ १ ॥ ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै नमम ॥ २ ॥ ॐ आकूतं च स्वाहा इदम् आकूताय नमम ॥ ३ ॥ ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदम् आकूत्यै नमम ॥ ४ ॥ ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय नमम ॥ ५ ॥ ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै नमम ॥ ६ ॥ ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे नमम ॥ ७ ॥ ॐ शकवर्यश्च स्वाहा इदं शकवरीभ्यो नमम ॥ ८ ॥ ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय नमम ॥ ९ ॥ ॐ पौर्णमास च स्वाहा इदं पौर्णमासाय नमम ॥ १० ॥ ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते नमम ॥ ११ ॥ ॐ रथन्तरं च स्वाहा इदं रथन्तराय नमम ॥ १२ ॥ ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्रायवृष्णेभायच्छुक्रः पृतनाजयेषु ॥ तस्मै विश्वः समनमन्त सवाः सऽउग्रः सऽइहव्यो बभूव स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये जयानिन्द्राय नमम ॥ १३ ॥ इति जयाहोमः ॥

॥ १४ ॥ अथाभ्यातानहोमः ॥ (अग्निर्भूतानामित्याद्यष्टादशानां मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः तत्तन्मंत्रोक्ता देवताः अभ्यातानहोमे विनियोगः) ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्सत्रे स्यामाश्विन्यापुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यादेवहृत्या ७ स्वाहा ॥ इदमग्रये भूतानामधिपतये नमम ॥ १ ॥ (एवमभ्यातानहोमे प्रत्याहृता समावत्वस्मिन्श्रित्यारभ्यसर्वत्रसमानम्) ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः समावत्व ० स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये नमम ॥ २ ॥ (अन्तर्पटं कुर्यात् ॥) ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः समावत्व ० स्वाहा ॥

इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये नमम ॥ ३ ॥ (दक्षिणस्याम् अन्यपात्रं
निधाय तन्मध्ये त्यागः॥ अन्तर्पटं निःसार्य॥ मणीतोदकस्पर्शः॥) ॐ वायु-
रन्तरिक्षानामधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥ इदं वायवे अन्तरिक्षानामधि-
पतये नमम ॥ ४ ॥ ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥ इदं सूर्याय
दिवोऽधिपतये नमम ॥ ५ ॥ ॐ चंद्रमा नक्षत्राणामधिपतिः समावत्व०
स्वाहा ॥ इदं चंद्रमसे नक्षत्राणामधिपतये नमम ॥ ६ ॥ ॐ बृहस्पति-
र्ब्रह्मणोऽधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥ इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये
नमम ॥ ७ ॥ ॐ मित्रः सत्यानामाधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥ इदं
मित्राय सत्यानामधिपतये नमम ॥ ८ ॥ ॐ बरुणोऽपामधिपतिः समा-
वत्व० स्वाहा ॥ इदं बरुणायापामधिपतये नमम ॥ ९ ॥ ॐ समुद्रः
स्रोत्यानामधिपतिः समावत्वस्मि० स्वाहा ॥ इदं समुद्राय स्रोत्यानामधि-
तये नमम ॥ १० ॥ ॐ अन्नः साम्राज्यानामधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥
इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये नमम ॥ ११ ॥ ॐ सोमोऽओषधी-
नामधिपतिः समावत्वस्मि० स्वाहा ॥ इदं सोमाय ओषधीनामधिपतये
नमम ॥ १२ ॥ ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥
इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये नमम ॥ १३ ॥ (अन्तर्पटं कुर्यात् ॥)
ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥ इदं रुद्राय पशूनामधि-
पतये नमम ॥ १४ ॥ (ऐशान्याम् अन्यपात्रं निधाय तन्मध्ये त्यागः॥
अन्तर्पटं निःसार्य, मणीतोदकस्पर्शः ॥) ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः
समावत्व० स्वाहा ॥ इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये नमम ॥ १५ ॥ ॐ
विष्णुः पर्वतानामधिपतिः समावत्व० स्वाहा ॥ इदं विष्णवे पर्वता-
नामधिपतये नमम ॥ १६ ॥ ॐ मरुतो गणानामधिपतयः समावत्व०
स्वाहा ॥ इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो नमम ॥ १७ ॥ (अन्तर्पटं

• कुर्यात् ॥ ॐ पितरः पितामहाः परेवरेततास्ततामहाः समावत्व० स्वाहा ॥
इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च नमम
॥ १८ ॥ (दक्षिणाग्न्योर्मध्ये अन्यपात्रं निधाय तन्मध्ये त्यागः ॥
अन्तर्पटं निस्तार्य प्रणीतोदकस्पर्शः) इति अभ्यातानहोमः ॥

॥ १४३ ॥ अथ अग्निरित्यादिर्पंचाहुतयः ॥ (अग्निरैत्वित्यादिर्पंचानां
प्रजापतिर्क्षापरितिपस्य संकर्षणपिराग्निर्देवता चतुर्थस्य वैवस्वतो देवता
पंचमस्य मृत्युर्देवता त्रिष्टुच्छन्दः सर्वेषां होमे विनियोगः ॥) ॐ
अग्निरैतुमथमोदेवतानां ॐ सोस्यै प्रजांमुञ्चतुमृत्युपाशात् ॥ तदयद्भ्राजा-
वरुणोनुमन्यतांयथेयं ॐ स्त्रीपौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा ॥ इदमग्रये नमम
॥ १ ॥ ॐ इयामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजापस्यै नयतु दीर्घमायुः ॥ अश्रन्यो-
पस्या जीवतामस्तु मातापौत्रमानंदमभिविबुध्यतामियं ॐ स्वाहा ॥ इदमग्रये
नमम ॥ २ ॥ ॐ स्वस्तिनोऽअग्नेदिवऽआपृथिव्याविश्वानिधेह्ययथायजत्र ॥
यदस्यां माहिदिविजातं प्रशस्तंतदस्मात्सुद्रविणंधेहिचित्रं ॐ स्वाहा ॥ इदमग्रये
नमम ॥ ३ ॥ ॐ सुगधुपन्यां प्रादिशन्नऽपहिज्योतिर्मध्येह्यज्रश्चऽआयुः ॥
अपैतुमृत्युरमृतं नऽआगाद्वैवस्वतो नोऽअभयं कृणोतु स्वाहा ॥ इदे वैवस्व-
ताय नमम ॥ ४ (दक्षिणस्याम् अन्यपात्रे त्यागः ॥ प्रणीतोदकस्पर्शः ॥)
(अन्तर्पटं कुर्यात्) ॐ परंमृत्योऽअनुपरैर्हिपन्यां स्वस्तेऽअन्नयऽईरोदेव-
यानात् ॥ वशुष्मतेनृण्युनेर्तेह्यवीमिमानं ॐ प्रजा ॐ रिरिपोमोतच्छीरान्
स्वाहा ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥ इदं मृत्यवे नमम ॥ (इत्यग्रां त्यागो वा भूमौ
त्यागः ॥ अन्तर्पटं निस्तार्य ॥ प्रणीतोदकस्पर्शः ॥) इति पञ्चकहोमः ॥
॥ १४४ ॥ अथ लाजाहोमः ॥ अथ कुर्यात् भ्राता शमीपलाशमिधा-

१ अग्निर्देवतामृ-आचारोमयवे मंत्रानरमकारोदो तथा ॥ अग्राय वै ६ मय ७ अन्नं
पति र्वचध् ॥ धुवर्त-नयने च पृथु री उदाहृतः । भृश्यादिभेदेऽप्यस्य तत्र विनिमित्तम् ॥
अन्ताहोमे प्रकर्षणं भ्रातृभ्युच संनवे ॥ २ रेणु-अन्तो प्रपुराको ह्यन्ताहोमे इति ॥

नासादितशूर्पस्थान् लाजानंजलिनाऽऽदाय कुमार्या अंजलावावपति ॥ तान्
 लाजान् माङ्गुली तिष्ठन्ती कुमारी अंजलिना जुहोति ॥ (अर्घ्यमणामि-
 त्यादित्रयाणामार्घ्यवर्णऋषिस्त्रिपुच्छन्दस्त्वृतीयस्थानुपुच्छन्दोऽग्निदेवताला-
 जाहोमे विनियोगः ॥) ॐ अर्घ्यमणदेवंकन्याऽअग्निमयक्षत ॥ सनोऽअ-
 र्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतुमापतेः स्वाहा ॥ इदमर्घ्ये नमम ॥ १ ॥ (अनेन
 मंत्रेण अञ्जलिस्थलाजानां तृतीयांशं जुहोति ॥) ॐ इयंनार्युपब्रूतेला-
 जानावपन्तिका ॥ आयुष्मानस्तुमेपतिरेधन्तांज्ञातयोमम स्वाहा ॥ इदमग्नये
 नमम ॥ २ ॥ (अनेन अंजलिस्थलाजाहोमं जुहोति ॥) ॐ इमां
 लाजानावपाम्यग्नौसमृद्धिकरणंतव ॥ ममतुभ्यंचसंवननंतदग्निरनु-
 पन्पतामियं स्वाहा ॥ इदमग्नये नमम ॥ ३ ॥ (इत्पनेन मंत्रेणाञ्ज-
 लिस्थान्सर्वालाजाञ्जुहोति ॥ इदं मंत्रत्रयं कन्यैव पठति ॥) वरः कन्या-
 या दक्षिणहस्तं सांगुष्ठम् उत्तानं गृह्णाति पठति च ॥ (गृभ्णामीत्यादीनां
 चतुर्णां याज्ञवल्क्यभरद्वाजात्रिप्रजापतय ऋषयः ॥ त्रिष्टुबुष्णिगनु-
 ष्टुबुधजुदछंदांसि लिङ्गोक्ता देवताः बध्वाः पाणिग्रहणे विनियोगः) ॥
 ॐ गृभ्णामितेसौभगत्वायहस्तंमयापत्या जरदाष्टिर्वथासः ॥ भगोऽअ-
 र्यमासवितापुरंधिमंयंत्वादुर्गाहंपत्यायदेवाः ॥ १ ॥ अमोहमास्मि सात्वद्-
 सात्वमस्यमोऽअहम् ॥ सामाहमस्मिऽऋक्त्वंद्यौरहं पृथिवीत्वम् ॥ २ ॥
 तावेवविवहावहै सहरेतोदधावहै ॥ मजांप्रजनयावहैपुत्रान्विद्यावहैव-
 हून् ॥ ३ ॥ तेसन्तुजरदप्रयः संप्रियारोचिष्णूसुमनस्यमानौपश्येमश-

१ रेषुः—ययूत्राताऽजली तस्या लाजानंजलिनाऽऽवेत् । तिष्ठन्त्यास्तिष्ठता पत्या गृहीताञ्ज-
 लिनैव सा । जुहोत्यर्घ्यमणं देवमित्थाद्यैस्त्रिभिरेव तान् । अंजलिस्त्रिषोऽत्रिधा सर्वांग्राह्यमुखी
 प्रतिमंत्रतः ॥ प्राजापत्येन तीर्थेन दैवेनैवेति बह्वृचाः ॥ २ अयार्यै दक्षिणं हस्तं वरो
 गृह्णाति साङ्गुष्ठम् ॥

रदः शतं जीवेमशरदः शतं शृणुयामशरदः शतम् ॥ ४ ॥ (वरस्य मंत्र-
 पाठः) ततः वधूमग्रे कृत्वा अग्रेरुत्तरतो गत्वा तत्र वरी वध्वा दक्षिणपादं
 सव्यहस्तेन गृहीत्वा दक्षिणेन वा गृहीत्वा ॥ पूर्वोपकल्पितहृत्पदुपरि
 करोति ॥ (आरोहेममेति मंत्रस्य आथर्वणऋषिः त्रिष्टुप्छंदः अग्निदेवता
 अश्मारोहणे विनियोगः) ॥ ॐ आरोहेममश्मानमश्मेवत्वस्थिराभव ॥
 अभितिष्ठपृतन्यतोववाधस्वप्रतनायतः ॥ (इत्यश्मारोहणे वरस्य मंत्रपाठः) ॥
 अथ गार्था गायति ॥ ॐ सरस्वतिमेदमवतुभगेवाजिनीवती ॥ यान्त्वा-
 विश्वस्यभूतस्यप्रजायामस्याग्रतः ॥ यस्यांभूतसमभवच्चस्याविश्वमिदं-
 जगत् ॥ तामन्नगार्थांगास्यामियाह्वीणामुत्तमंयशः ॥ (इत्यन्तं वरो
 गार्था गायति ॥) अथ परिक्रामतः (अग्रे कन्या वरः पृष्ठतः) (तुभ्यमग्रे-
 इत्याथर्वण ऋषिः ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ अग्निदेवता ॥ अग्निपरि-
 क्रमणे विनियोगः) ॥ ॐ तुभ्यमग्नेपर्यवहन्मूर्यावहतुनासह ॥ पुनः
 पतिभ्योजायांदाग्नेप्रजयासह ॥ (इति परिक्रमणे वरस्य मंत्रपाठः) ॥ एवं
 कुमार्या भ्राता शमीपलाशमिश्राल्लाजानञ्जलिनाञ्जलावावपति ॥ इत्या-
 रभ्य परिक्रमणान्तं पुनः वारद्वयं कुर्यात् ॥ ततः तृतीयमदक्षिणानन्तरं
 शूर्पकोणमदेशेन कुमार्या भ्राता कुमार्यञ्जलौ सर्वान् लाजान् आवपति ॥
 कुमारी तिष्ठन्ती सर्वान् लाजाञ्जुहोति ॥ ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय
 नमम ॥ (इति मंत्रं कन्याया वाचयति वरः ॥) ततः समाचारात् तूर्णो
 चतुर्थपरिक्रमणं कुरुत ॥ (तत्र अग्रे वरः पृष्ठे कन्या ॥) नेतरथावृत्तिः ॥
 (परिक्रमणान्ते वरः कन्याया आसने स्वयं स्थित्वा कन्यां च स्वस्यासने
 उपवेशयेत् ॥) ततश्च पुनः उभौ पश्चादग्नेः प्राग्वत् स्वासने उपवेशिताम् ॥
 वरो ब्रह्मान्वारब्धः प्राजापत्यहोमं कुर्यात् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं
 प्रजापतये नमम ॥ इति मोक्षण्या त्यागः ॥ इति लाजाहोमः ॥

॥१४५॥ अथ सप्तपदाक्रमणम् ॥ तत्रादौ शिष्टाचारात् अग्रेरुत्तरत
उदकसंस्थानं सप्ततंडुलपुंजान्कृत्वा वरः तत्र सप्ताचलपूजनं कुर्यात् ॥
यथा-वरो हस्ते जलमादाय देशकालौ संकीर्त्य मम गृहीतकन्यापातित्व-
सिद्धये सप्ताचलपूजनमहं करिष्ये ॥ ॐ प्रतिपदं सिस्रप्रतिपदं चानुपदं स्यनु-
पदं च्वासम्पदं सिस्रम्पदं च्वातेजोसितेजसे च्वा ॥ १ ॥ इति मंत्रेण गंधादिपं-
चोपचारैः संपूज्य वरः सप्तपदानि प्रक्रमस्वेति प्रैषं कुर्यात् ॥ ॐ एकमिषे
विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति वरोक्ते बधूर्दक्षिणैकपदमुदग्रधान्याचले दद्यात् ॥
एवं सर्वत्र ॥ ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति द्वितीयम् ॥ ॐ त्रीणि
रायस्पोपाय विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति तृतीयम् ॥ ॐ चत्वारि मायोभवाय
विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति चतुर्थम् ॥ ॐ पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥
इति पंचमम् ॥ ॐ षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति षष्ठम् ॥ ॐ
सत्वे सप्तपदा भव सामानुग्रहा भव विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति सप्तमम् ॥
केचिदत्र प्रतिपदं बधुः प्रतिज्ञावचनं पठेदित्याहुः ॥

॥ १४६ ॥ सप्तपदी-गुर्जरटीकोपेता ॥ वरवचनानि ॥

ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु ॥ १ ॥

हे बधु ! तने सर्वं पुरुषार्थना साधनभूत एवा आ मुख्य भूलोकमां
बधां सौभाग्य विगेरे इच्छित फलनी प्राप्ति थाय ते माटे अने मारा
घरमां अन्न, वस्त्र, द्रव्य विगेरे घरनी बधी वस्तुओ संभाळवामां मदद
करवा माटे तुं मारा घरनी अधिकारिणी था ॥ १ ॥

ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वानयतु ॥ २ ॥

हे बधु ! तने भूलोक अने भुवर्लोकना स्थानमां वळवती रहेवा माटे

परमात्मा सहायरूप थाओ, कारण के तारा बळधी मारा बळना
वधारो थशे ॥ २ ॥

ॐ त्रीणि रायस्पोपाय विष्णुस्त्वानयतु ॥ ३ ॥

हे वधु ! तुं भूर्लोक, भुवर्लोक अने स्वर्गलोकना स्थानमां मारा
धननी वृद्धि अने संभाळ माटे मारा घरनी अधिकारिणी था ॥ ३ ॥

ॐ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वानयतु ॥ ४ ॥

हे वधु ! भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक अने महर्लोकमां मारा सुखनी
उत्पात्ति माटे मारा घरनी तुं अधिकारिणी था ॥ ४ ॥

ॐ पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥ ५ ॥

हे वधु ! तुं भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक आ
पांच लोकनां स्थानोमां परमात्माने एवी रीतथी प्राप्त कर के, जेनाथी
घरमां रहेलां पशुओनी संभाळ तुं सारी रीते राखी शके ॥ ५ ॥

ॐ ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥ ६ ॥

हे वधु ! तुं भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक अने
तपोलोकना स्थानमां अने वसंतादि छ ऋतुओमां मारी साथे
उत्तम सुख भोगवनारी था ॥ ६ ॥

ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुग्रहा भव ॥ ७ ॥

हे वधु ! तुं भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक,
तपोलोक अने सत्यलोकना सुखोनी प्राप्ति माटे पातिव्रत्य धर्मनुं यथार्थ
रीते परिपालन करी उत्तम सुख भोगवनारी अने मारी आज्ञां
पालन करनारी था ॥ ७ ॥

आ प्रमाणे वर सात पगळां उत्तर तरफ चोलीने बोले छे ते
वखते कन्या पण पोताना पतिने नीचे प्रमाणे कहे छे.

॥ ૧૪૭ ॥ કન્યાપ્રતિજ્ઞા ॥

ત્વત્તો મેઽસ્તિલસૌભાગ્યં પુણ્યૈસ્ત્વં ત્રિવિધૈઃ કૃતૈઃ ॥

દેવૈઃ સંપાદિતો મહ્યં વધૂરાથૈ પદેઽન્નવીત્ ॥ ૧ ॥

હે સ્વામિનાથ ! મારાં અનેક પુણ્યોના પ્રભાવથી આપનાથી આ જગત્માં મને સૌભાગ્ય મળ્યું છે, અને દેવોણ આપને મારા સ્વામી બનાવ્યા છે અને તેથી આપનાથીજ મારું સર્વ પ્રકારનું કલ્યાણ છે. (આ પ્રમાણે પહેલું પગલું ભરતી વચ્ચે કન્યા વોલે છે.) ॥ ૧ ॥

કુટુંબં પાલયિષ્યામિ હ્યાવૃદ્ધવાલકાદિકમ્ ॥

ચયાલબ્ધેન સંતુષ્ટા દ્યુતે કન્યા દ્વિતીયકે ॥ ૨ ॥

હે સ્વામિનાથ ! આપના કુટુંબના વૃદ્ધ પુરુષોના વચ્ચનનું પાલન કરી તેઓની આજ્ઞામાં રહી તેઓનું, વાલકોનું તથા કુટુંબનું હું પાલન કરીશ, અને જેટલું ધન પ્રાપ્ત થાય તેથી સંતુષ્ટ રહીશ (અને આપને ટોડું લાગે તેવું વચ્ચન કદાપિ વોલીશ નહિ). (આ પ્રમાણે કન્યા ત્રીજું પગલું ભરતી વચ્ચે વોલે છે.) ॥ ૨ ॥

મિષ્ટાન્નવ્યજ્જનાદીનિ કાલે સંપાદયે તવ ॥

આજ્ઞાસંપાદિની નિત્યં તૃતીયે સાઽન્નવીદિરમ્ ॥ ૩ ॥

હે પ્રાણનાથ ! આપ તથા આપના કુટુંબને દરરોજ સમયસર ઉત્તમ રસોઈ કરી ભોજન કરાવીશ અને નિરંતર તમારી આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તીશ. (આ પ્રમાણે કન્યા ત્રીજું પગલું ભરતી વચ્ચે વોલે છે.) ॥ ૩ ॥

શુચિઃ શૃંગ્ગરભૂપાઽહં વાઙ્મનઃકાયકર્માભિઃ ॥

ક્રીડિષ્યામિ ત્વયા સાર્થં તુરીયે સાઽન્નવીદિદમ્ ॥ ૪ ॥

હે સ્વામિન્ ! હું હંમેશ પવિત્ર રહી સૌભાગ્યના શળગારને ધારણ કરી, મનથી, વચ્ચનથી તથા સત્કર્મોથી આપને પ્રસન્ન કરીશ અને

आपनुं शुभचिंतन करीश. (आ प्रमाणे कन्या चोथुं पगळुं भरती वखते बोले छे.) ॥ ४ ॥

दुःखे धीरा सुखे हृष्टा सुखदुःखविभागिनी ॥

नाहं परतरं गच्छे पञ्चमे साऽब्रवीत्पतिम् ॥ ५ ॥

हे नाथ ! आपना आपत्तिना समयमां हुं धीरज राखीश अने आपना सुखथी हुं प्रसन्न रहीश अने आपना सुखदुःखमां हुं भाग छईश, तेमज कोई पण परपुरुषनी कदापि इच्छा करीश नहि. (आ प्रमाणे कन्या पांचमुं पगळुं भरती वखते बोले छे.) ॥ ५ ॥

सुखेन सर्वकर्मणि करिष्यामि गृहे तव ॥

सेवां श्वशुरयोश्चापि बन्धूनां सत्कृतं तथा ॥

यत्र त्वं वा ह्यहं तत्र नाहं वञ्चे प्रियं वचिन् ॥

नाहं प्रियेण वञ्चयाऽम्भि कन्या पष्टे पदेऽब्रवीत् ॥ ६ ॥

हे नाथ ! हुं आपना घरनुं सर्व काम सारी रीते करीश अने आपना मातापितानी सेवा करीश अने आपना भाईओनो पण सत्कार करीश, आप ज्यां जशो त्यां हुं आपनी साथे आवीश अने कदापि आपनाथी दूर रहीश नहि अने क्यारेय पण तमने छेतरीश नहि, तेम आपे मने पणछेतरवी नहि. (आ प्रमाणे कन्या छठुं पगळुं भरती वखते बोले छे.) ॥ ६ ॥

होमयज्ञादिकार्येषु भवामि च सहायकृत् ॥

धर्मार्थकामकार्येषु मनोवृत्तानुसारिणी ॥

सर्वे च साक्षिणस्त्वं मे पतिभूतोऽसि सांपतम् ॥

देहो मयाऽर्पितस्तुभ्यं सप्तमे साऽब्रवीद्द्वरम् ॥ ७ ॥

हे स्वामिनाथ ! होम तथा यज्ञादि धर्मकार्यने विषे हुं आपने सहाय करीश, धर्म, अर्थ तथा काम ए व्रण पुरुषार्थना दरेक कार्यमां

हुं आपनी इच्छा प्रमाणे वर्तीश, देव ब्राह्मण विगेरेनी साक्षीमां
आप मारा पति थया छो अने में मारुं शरीर आपने अर्पण कर्णुं
छे. (आ प्रमाणे कन्या सातमुं पगळुं भरती वखते बोले छे.) ॥७॥

॥ इति सप्तपदाक्रमणम् ॥

(निष्क्रमणमारभ्य वरः अग्नेर्दक्षिणतः स्थितस्य वाग्यतस्य दृढ-
पुरुषस्य वा स्वस्य स्कंधधृतोदकुंभाद्धस्तेन जलमादाय एनां वधूं
शिरसि आपः शिवाश्च आपोहिष्ठोतित्रिभिर्मंत्रैरभिपिचति ॥) ॐ आपः
शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततपास्तास्ते कुण्वन्तु भेषजम् ॥
ॐ आपोहिष्ठामं० ॥ ॐ योवः-शिवतमो० ॥ ॐ तस्मिन्ऽअरङ्गमा० ॥
ततो दिवा विवाहश्चेद्दरः सूर्यमुदीक्षस्वेति वधूं प्रेरयति ॥ सा च तच्चक्षु-
रित्यादि शरदः शतादिति स्वपठितमंत्रेण सूर्यमुदीक्षते ॥ ॐ तच्चक्षुर्दे-
वहितं० ॥ (वध्वा एव मंत्रपाठः ॥ ततो वरो वध्वा दक्षिणस्कंधोपरि
हस्तं नीत्वा ममव्रतेति स्वपठितमंत्रेण तस्या हृदयमालभते ॥ ममव्रते-
तेहृदयं दधामिममचित्तमनुचित्तन्तेऽअस्तु ॥ मम वाचमेकमनाजुपस्वप्र-
जाप्रतिष्ठानियुक्तमक्षम् ॥ ततो वरोऽनामिकाग्रे वधुशिरसि धृत्वा एना-
मभिमंत्रयते ॥ ॐ सुमंगलीरियंवधूरिमाऽसमेतपश्यत ॥ सौभाग्यमस्यैद-
च्चायाथास्तंविपरेतन ॥ अत्र आचाराद्यतस्रः स्त्रियो मंगलं कुर्वन्ति ॥ ततो

१ (शेषः—पतिपुत्रान्विता भव्याश्चतस्रः सप्तभागा अपि । सौभाग्यमस्यै दद्युस्ता मंगला-

चारपूर्वकम् ॥) चतस्रः सप्तसिन्धुः प्रथम वरस्य कन्यायाश्च भाले तिलकं कृत्वा कन्यायाः पृष्ठभागे
गत्वा कन्याया वस्त्रान्तरे लाजान् प्रक्षिपन्त्यः दक्षिणरुगे कथयेयुः । दक्षताविश्वोः सौभाग्यम् ।
इन्द्रेन्द्राण्योः सौभाग्यम् । शिवपार्वत्योः सौभाग्यम् । रुक्मीनारायणयोः सौभाग्यम् । अखंड
सौभाग्यवती पुत्रपौत्रवती भव ॥ अनन्तरं कन्या लाजान् स्वकीयांजली गृहीत्वा शिष्टाचारात्
स्वस्य 'पशुः शिरसि प्रक्षिपेत्' १ ।

वधुं वरस्य वामभागे उपवेशयति ॥ अत्र च वध्वाः सीमन्ते वरः सिद्धं
 ददाति ॥ ॐ व्वाममद्यसंवितव्वाममुभ्वोदिवेदिवे व्वाममस्मभ्यः
 सावीदं ॥ व्वामस्यद्विषयस्यदेवभूरैरयाधियावामभाजः-स्याम ॥ ६ ॥
 (इति मंत्रपाठो वरस्य) ततस्तां दृढपुरुषेणोन्मथ्याग्नेः प्राग्बोदग्वानु-
 गुप्तऽआगारेप्राग्ग्रीवऽउत्तरलोमास्तीर्णैरोहितेऽआनङ्गुहचर्मण्युपवेशयती-
 हगावइति) ॥ ॐ इहगावोनिपीदंस्विहाश्वाऽइहपूरुषाः ॥ इहोसहस्रदक्षि-
 णोयज्ञऽइहपूपानिपीदतु ॥ (इति मंत्रपाठो दृढपुरुषस्य ॥) तत
 आगत्य पूर्ववद्यथास्थानमुपविश्य ब्रह्मान्वारब्धो वरः स्विष्टकृतं
 जुहोति ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इन्द्रमग्नये स्विष्टकृते नमः ॥
 संस्रवमाशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥
 पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं ब्रह्मणे पूर्णपात्रं
 तुभ्यमहं संपददे ॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थम् आचार्याय
 पूर्णपात्रं तुभ्यमहं संपददे ॥ प्रणीताविमोकः ॥ आपः शिवा० इति
 मार्जनम् ॥ परिस्तरणान्युत्तरे विमृजेत् ॥ ततः स्वकीयाचार्याय गां
 ददाति ब्राह्मणश्चेद्धरः ॥ अत्र ग्रामवचनं च कुर्युर्विवाहस्मशानयोरित्येनं
 यथाकुलाचारं तिलककरणादिकं कुर्यात् ॥ ततोऽस्तमिते ध्रुवं दर्शयति
 दिवा विवाहश्चेद्रात्रौ चेत्तदा वरदानानंतरं ध्रुवमसीति ॥ तत्र वरो वधुं
 भेषयति ध्रुवमीक्षस्वेति । ॐ ध्रुवमासिध्रुवंत्वापश्यामिध्रुवैधिपोष्येमसि ॥
 महत्त्वादात् वृहस्पतिर्मयापत्यामजावतीसंजीवशरदः शतम् ॥ इति ॥
 सा यदि ध्रुवं न पश्येत्तदा पश्यामीत्येव ब्रूयात् ॥ ततो विवाहदिनमारभ्य
 दंपत्योर्नियमाः ॥ त्रिरात्रमक्षारलवणाशिनौ स्याताम् ॥ त्रिरात्रमधः

१ गौर्माग्नस्य वरः । ग्रामो राजन्दस्य । अश्वो वैश्यस्य । २ ग्रामशब्देन स्वकुलवृद्धाः
 स्त्रिय इति गदापरः ॥ ग्रामवचनं लोकवचनमिति भर्तृमयः ॥

शयीयाताम् ॥ संवत्सरं न मिथुनमुपेयातां द्वादशरात्रऽपह्नात्रं त्रिरात्र-
मन्ततः ॥ कृतस्य विवाहाख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं यथासंख्या-
कान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्नेनान्नेनाहं तर्पयिष्ये तेन कर्माङ्गदेवताः
श्रीयन्तां नमम ॥ कृतस्य विवाहहोमकर्मणः सांगतासिद्धयर्थम् आचार्यादि-
नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो गंधादिभिः सम्पूज्य यथोत्साहं दक्षिणां
दास्ये ॥ अथाशीर्वादमंत्राः ॥ ॐ शतंजीवशरदो० ॥ ॐ शतमिन्नुश-
रदो० ॥ ॐ त्रिभुवनिदेव० ॥ इत्याशीर्वादः इति ॥

॥ इति विवाहसंस्कारप्रयोगः समाप्तः ॥ १६ ॥

॥ १४८ ॥ अथ चतुर्थीकर्मप्रयोगः ॥

विवाहदिवसाच्चतुर्थ्यामपररात्रे भार्यया सह मंगलं स्नात्वाऽहतवाससी
परिधाय धृतमंगलतिलकः शुभासने वर उपविशति ॥ तत्र दक्षिणतो वधुः ॥
वरः आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेति पठित्वा ॥ अद्येत्यादि० विवाहा-
गभूतं चतुर्थीकर्म करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धयर्थं गणपतेः पोड-
शोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥ तत्र गूढाभ्यंतरतः स्थंडिले पंचभूसं-
स्कारपूर्वकं वैवाहिकाग्नेः स्थापनं कुर्यात् ॥ ततो अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मा-
सनाद्यासादनं कृत्वा अग्नेरुत्तरत उदकुंभं स्थापयेत् ॥ ॐ भूरसिभू-
मिरसि० ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ ॐ आजिघ्न० ॥ इति कलशस्थापनम् ॥
ॐ इव्रुणस्यो० इति जलपूरणम् ॥ ॐ मुजात० ॥ इति मंत्रेण सूत्रवेष्टनम् ॥
ॐ वाऽभोपधी० ॥ इति सर्वोपधीप्रक्षेपः ॥ ॐ स्योनापृथिवि० ॥ इति

१ चतुर्थ्यामपररात्रेऽ (विवाहमारभ्य चतुर्थेऽहनि अपररात्रे इत्यर्थः) भ्यन्तरतोऽ-
मिसुपसमाधाय ॥

मृत्तिकापक्षेपः ॥ ॐ याःफालिनीः०। इति फलम् ॥ ॐ हिरण्यगर्भ०। इति
 हिरण्यम् ॥ ॐ परिवाजपतिः०। इति पंचरत्नानि ॥ ॐ पूर्णाद्वी०। इति
 पूर्णपात्रम् ॥ ॐ मनोजृति०। इति मंत्रेण प्रतिष्ठा कार्या ॥ “ॐ उदकुंभा-
 धिष्ठातृदेवताभ्यो नमः” इति षोडशोपचारैः पूजनं कार्यम् ॥ ततः
 पात्रासादनादिकम् । आज्योद्वासनं चरोरुद्वासनं च आज्योत्पवनादिप्रोक्ष-
 ण्याः प्रत्युत्पवनान्तं कृत्वा उपयमनकुशानादाय ॥ ॐ तिष्ठन्
 समिधोऽभ्याधाय ॥ मोक्षणीशेषोदकेन अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पवित्रयोः
 मणीतासु निधानम् ॥ इतरथावृत्तिः ॥ ब्रह्मान्वारब्धेन सुवेण होमः ॥
 (मनसा ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा) इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय
 स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥
 ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥
 ॐ अग्नेय० ॥ चतुर्थीकर्मणि साक्षिनाम्ने वैश्वानराय नमः गंधाक्षत-
 पुष्पाणि समर्पयामि ॥ ततो वर आज्येन पश्चाज्याहुतीर्जुहुयात्
 (उदपात्रे सर्वासां त्यागः) यथा-ॐ अग्नेप्रायश्चित्तेत्वंदेवानां प्रायश्चित्ति-
 रसिग्नात्प्रणस्त्वानायकामऽउपपावामि यास्यैपतिघ्नीतनूस्तामस्यै नाशय
 स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ वायोप्रायश्चित्तेत्वंदेवानां प्रायश्चि-
 त्तिरसिग्नात्प्रणस्त्वानायकामऽउपपावामिमियास्यैप्रजाघ्नीतनूस्तामस्यैनाश-
 यस्वाहा ॥ इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ सूर्यप्रायश्चित्तेत्वंदेवानां प्रायश्चि-
 त्तिरसिग्नात्प्रणस्त्वानायकामऽउपपावामिमियास्यैवसुघ्नीतनूस्तामस्यैनाशय-
 स्वाहा ॥ इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥ ॐ चन्द्रप्रायश्चित्तेत्वंदेवानां प्रा-
 यश्चित्तिरसिग्नात्प्रणस्त्वानायकामऽउपपावामिमियास्यैचन्द्रघ्नीतनूस्तामस्यैनाश-
 यस्वाहा ॥ इदं चन्द्रमसे नमः ॥ ४ ॥ ॐ गन्धर्वप्रायश्चित्तेत्वंदे-

वानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामियास्यैयशोघ्नीतनू-
 स्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ इदं गंधर्वाय न मम ॥ ५ ॥ ततः स्थालीपा-
 केन एकामाहुतिं जुहुयात् ॥ चरुमभिघार्य ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं
 प्रजापतये न मम ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते
 न मम ॥ ततो आज्येन भूराद्या नवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्न-
 ये न मम ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐ स्वः स्वाहा
 इदं सूर्याय न मम ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० । स्वाहा ॥ इदमग्नीविरुणाभ्यां
 न मम ॥ ॐ सत्त्वन्नो अग्ने० । स्वाहा ॥ इदमग्नीविरुणाभ्यां न मम ॥
 ॐ अयाश्वाग्ने० । स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥ ॐ येतेशतं० ।
 स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
 स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ॐ उदुंत्तमं० । स्वाहा ॥ इदं वरुणायादित्यायादि-
 तये च न मम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ ततः सं-
 स्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे
 पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य चतुर्थीकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं ब्रह्मन् पूर्णपात्रं
 तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ तत- आचार्याय पूर्णपात्रं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥
 पश्चिमे प्रणीताविमोकः ॥ तज्जलेन ॐ आप शिवा० इति मार्जनम् ॥
 (तत उदपात्रजलेन वरो वधूमूर्ध्न्यभिषिचति यातेपतिघ्नीरिति ॥)
 ॐ यातेपतिघ्नीप्रजाघ्नीपशुघ्नीगृहघ्नीयशोघ्नीनिदितातनूर्जरघ्नीततऽपर्ना-
 करोमिसाजीर्यत्वंमयासहासौ ॥ - (असौस्थाने नामग्रहणं करोति
 वरः) अमुकी देवी इति ॥ अथैनां वधुं स्थालीपाकं (कंसार)
 वरः प्राशयति । कन्यामात्रा चतुर्वारं परिवेषणं कार्यम् ॥ ततो वर
 णां प्राशयति ॥ प्राणैस्ते प्राणान्संदधामि ॥ १ ॥ अस्थिभिरस्थीनि
 संदधामि ॥ २ ॥ मांसैर्मांसं संदधामि ॥ ३ ॥ त्वचा त्वचं संदधामि

॥ ४ ॥ अत्र वधूः शुद्ध्यर्थमाचामेत् ॥ अत्र समाचारात् वधूः वरमा
 पूर्वोक्तैर्मंत्रैः प्राशयेत् ॥ तत आचार्यो हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा ॥ ॐ मनो जूति ॥
 उभयोर्वधुवरयोः सुमतिष्ठितमस्तु ॥ इति तयोः शिरसि क्षिपेत् ॥ ततो वरः
 वधुदक्षिणस्कंधोपरि हस्तं नीत्वा पठेत् ॥ ॐ यत्सेसुसीमेहृदयं दिवि चंद्रम-
 सिश्रितम् ॥ वेदाहंतन्मातद्विद्यात्पश्येमशरदः शतं जीवेमशरदः शतं ऽशृणुया-
 मशरदः शतम् इति ॥ कृतस्य चतुर्थां कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं यथासंख्या
 कान् ब्राह्मणान् कुमारिका वटुकान् यथाकाले यथासंपन्नेनाप्नेनाहं तर्प-
 यिष्ये ॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथो-
 त्साहं दक्षिणां दास्ये ॥ अथाशीर्वादः ॥ ॐ विश्वान्निदेवं ॥ ॐ
 पुनस्त्वा ॥ ॐ शतं जीव शरदो ॥ ॐ शतमिन्नुशरदो ॥ ततो
 वध्वा सह वरो गृहान्तगत्वा कुलदेव्याः पूजनं कुर्यात् । पूज्यान्
 वृद्धांश्च नमस्कृत्य यथासुखं विहरेत् ॥ इति चतुर्थां कर्म समाप्तम् ॥
 ॥ इति षोडशसंस्कारप्रयोगः समाप्तः ॥

॥ १४९ ॥ अथ विवाहहोमकाले कन्यायामृतुमत्यां होमविधिः ॥
 कन्या सुस्नाता शुभासने उपविश्य । ऋतुदोषविनाशार्थं प्राप्तकर्मणि
 योग्यतासिद्धयर्थं युञ्जानहवनं पयस्विनीगोदानं पयःप्राशनं च करिष्ये
 इति संकल्प्य निर्विघ्नतासिद्धयर्थं गणेशं सम्पूज्य । युञ्जानहोमकृतुं स्थंडिले
 आचार्यद्वारा पंचभूसंस्कारपूर्वकं विटनामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य सम्पूजयेत् ।
 ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनाधाज्यभागान्तं कुर्यात् । नान् चरुः । युञ्जाः

१ अत्र द्विधा सह भोजनेऽपि न दोष इत्याह ॥ एक्यान्सामारोह एकगत्रे च भोज-
 नम् ॥ विश्वे पयि सात्रायां वृत्वा विप्रो न दोषमाह ॥ अन्यभादोषमाप्नोति पयाचान्द्रायनं
 चरेत् ॥

न०प्रथमं० युञ्जतेमनं०इति ऋग्भ्यां चतुर्दशाष्टत्याऽष्टाविंशत्याहुतीराज्येन जुहुयात् । तौ च मंत्रौ । ॐ युञ्जान०प्रथमम्मनस्तत्रार्य सत्रिताधियं०। अग्नेज्योतिर्दिवाद्यं पृथिव्याऽअध्याभरत्स्वाहा ॥ इदं सवित्रे न मम ॥ १ ॥ ११ ॥ युञ्जतेमनं०उतयुञ्जतेधियोविष्माविष्प्रस्यवृहतोविषश्चित्तं । विहोत्रादधेवपुनाविदेकऽइन्महीद्वेवस्यंसवितुः परिष्ठुतिहंस्वाहा ॥ २ ॥ ११ ॥ इदं सवित्रे न मम ॥ ततो भूराद्याःस्विष्टकृदन्ता दशाहुतयः। संस्रवप्राशनादि प्रणीताविमोकान्तं होमशेषं समाप्य ततः पयस्विनीं गां दद्यात् ॥ अथवा गोनिष्कयीभूतं निष्कं निष्कार्थं वा सुवर्णमूल्यरज-तद्रव्यं दद्यात् ॥ ततः पयःप्राशनम् । कामधेनुसमुद्भूतं घृतबीजं शशि-प्रभम् । तस्य प्राशनमात्रेण रजोदोषो विनश्यतु । इदं रजोदोषनिवृत्त्यन्तं त्रिदिनं पयः प्राश्यम् । अग्निं विसृजेत् ॥ इति युञ्जानहोमविधिः ॥

॥ १५० ॥ कन्यागृहे भोजनविचारः ॥

मदनरत्ने भविष्ये-अप्रजायां तु कन्यायां न भुञ्जीत कदाचन । दौहित्रस्य मुखं दृष्ट्वा किमर्थमनुशोचति ॥ अपरार्के आदित्यपुराणे-विष्णुं जामातरं मन्ये तस्य क्रोधं न कारयेत् । अप्रजायां तु कन्यायां नाश्रीयात्तस्य वै गृहे । यदि भुञ्जीत मोहाद्वा पूयाशी नरकं व्रजेत् ॥

॥ १५१ ॥ अथार्कविवाहः ॥

चरो विवाहसम्भारान्गृहीत्वा स्वकीयतृतीयविवाहात्प्राक् दिनचतु-ष्टयाधिकव्यवाहिते हस्तनक्षत्रयुते शुभे शनिवारे रविवारे वा ग्रामाद्बहिः

१ धर्माग्नौ-तृतीया मानुषी कन्या नोद्वासा त्रियने हि सा । विचित्रा वा भवेत्तस्मात्तृ-तीयेऽर्के समुद्रोत् ॥ सद्गृहे-चतुर्योदिविवाहार्थं तृतीयेऽर्के समुद्रोत् । आदित्यदिवसे वापि हस्तर्षे वा शनैश्चरे ॥

प्राच्यामुदीच्यां वा पुष्पफलाद्यैर्युतम् अर्कं सम्पाद्य तत्र गत्वा तस्य समीपे स्थण्डिलं कृत्वा तस्य पश्चिमतः पूर्वाभिमुख उपविश्य आचमनं प्राणायामं पवित्रधारणञ्च कृत्वा प्रधानसङ्कल्पं कुर्यात् ॥ विष्णुर्विष्णु-
 विष्णुः । श्रीमद्भगवतोऽइत्यादि पठित्वा एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम तृतीयमानुषीविवाहजन्यदोषनिवृत्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर-
 भीतये तृतीयमर्कविवाहमहं करिष्ये ॥ पुनर्जलं पृहीत्वा । तत्रादौ निर्वि-
 घ्नतासिद्धये गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धा-
 रापूजनम् आचारद्वैश्वदेवसङ्कल्पं नान्दीश्राद्धम् आचार्याद्यृत्विग्वरणञ्च
 करिष्ये । तत्रादौ दिग्प्रक्षणं कलशार्चनञ्च करिष्ये ॥ इति दिग्प्रक्षणं
 कलशार्चनं गणपतिपूजनाद्याचार्यवरणान्तं च कर्म कृत्वा आचार्यं
 प्रार्थयेत् ॥ (अत्राचार्यद्वयम् ॥ कर्माथं स्वकुलाचार्यमपरकन्यादानार्थं च)
 “कन्यापिता यथा सूर्यो देवानाञ्च प्रजापतिः । तथा त्वमर्कदानार्थ-
 माचार्यत्वं कुरु प्रभो” ॥ एवं संप्रार्थित आचार्यस्ततो वरस्य मधुपर्क-
 णार्चनं कुर्यात् ॥ सङ्कल्पः—अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ अर्कविवाहा-
 र्थम् आगतं वरं मधुपर्केणार्चयिष्ये इति सङ्कल्पं कृत्वा “पदध्व्या
 भवन्त्याचार्य०इत्यारभ्य [पृ. ४१९] अनेन मधुपर्कार्चनेन परमेश्वरः
 प्रीयताम् ॥” इत्यन्तं कुर्यात् ।

ततो वरः अर्कस्य समीपे स्थित्वा अर्कं प्रार्थयेत् । “त्रिलोकवासिन्
 सप्ताश्व छायाया सहितो रवे । तृतीयोद्वाहजं दोषं निवारय सुखं कुरु ॥”
 ततो वरः अर्कवृत्ते ॐ “आकृष्णेन०” इति मंत्रेण छायाया सहितं
 सूर्यम् आवाह्य प्रतिष्ठापयेत् । ॐ भूर्भुवः स्वः छायासहिताय सूर्याय
 नमः छायासहितं सूर्यमस्मिन्नर्के आवा०स्थाप० ॥ ततः “ॐ छायासहि-
 ताय श्रीसूर्याय नमः” इति मंत्रेण षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात् । तत्र

गुडौदनं नैवेद्यं दक्षिणां दत्त्वा आरातिं कृत्या । अनेन पूजनेन छाया-
सहितः श्रीमूर्यः प्रीयतां न मम ॥ इति पूजनान्तं कुर्यात् ॥ एवं संपूज्य
ततोऽर्कं वस्त्रेण सूत्रेण च आवेष्ट्य “ॐ आपोहिष्ठा०” इति मंत्रेण
अर्कं जलैरभिषिच्य वरोऽर्कस्य प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ “अर्कप्रीतिकर
येयं त्वया सृष्टा पुरातनी । अर्कजा ब्रह्मणा सृष्टा ह्यस्माकं परिरक्षतु ॥
नमस्ते मङ्गले देवि नमः सवितुगत्मजे । त्राहि मां कृपया देवि पत्नी
त्वं म इहागता ॥ ” इति प्रदक्षिणां कृत्वा वरोऽर्कं प्रार्थयेत्-“अर्कस्त्वं
ब्रह्मणा सृष्टः सर्वप्राणिहिताय च ॥ वृक्षाणामादिभूतस्त्वं देवानां प्रीतिव-
र्धनः ॥ तृतीयोद्वाहजं मृत्युं त्वं भे भो सुविनाशय ॥ ” इति ॥ तदन-
न्तरम् आचार्यः अर्कस्य वरस्य च मध्येऽन्तर्पटं धृत्वा मङ्गलाष्टकं
[पृ. ४२३] पठेत् ॥ ततोऽन्तर्पटं निःसार्यर्कस्योपरि अक्षतान् दद्यात् ॥

तत आचार्यो हस्ते जलं गृहीत्वा देशकालौ सङ्कीर्त्य एवंगुणविशेषेण
विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अस्य वरस्य तृतीयोद्वाहजनितसर्वारिष्ट-
विनाशार्थं तथा च श्रीसवितृमूर्यनारायणप्रीतये (ब्रह्मविवाहविधिना)
अर्कविवाहविधिना अर्कविवाहं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य वरस्य हस्ते
सुप्रोक्षितादिकं कुर्यात् ॥ “शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवाः आपः ॥
सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चारिष्टञ्चास्तु । अस्त्व-
क्षतमरिष्टञ्च ॥ गन्धाः पान्तु सौमङ्गल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पान्तु
आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणि पान्तु सौश्रियमस्तु इति ॥” तृतीयोद्वाहन्य-
दोषपरिहारोऽस्तु ॥ इति वदेत् ॥

ततो वरस्य गोत्रोच्चारपूर्वकदानसङ्कल्पः-“अमुकगोत्रस्य अमुक-
प्रवरान्वितस्य अमुकवेदशाखाध्यायिनः अमुकनाम्नः प्रपौत्राय । अ०गो०
अ०प्र० अ०वे० अ०ना० पौत्राय । अ०गो०अ०प०अ०वे०अ०ना०
पुत्राय । अमुकनाम्ने वराय । काश्यपगोत्रस्य काश्यपवत्सारनैष्ठ्येति

त्रिपवरान्वितस्य आदित्यस्य प्रपौत्रीम् । सवितुः पौत्रीम् । सूर्यस्य पुत्रीम् ।
 आर्कानाम्नीं कन्यां सूर्यदैवत्यां भार्यात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ इति
 वरहस्ते सकुशं जलं दद्यात् ॥ तथाच “ अर्ककन्यामिमां विप्र यथा-
 शक्तिविभूषिताम् ॥ गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥”
 इति दानमन्त्रं पठेत् ॥ पुनर्जलं गृहीत्वा । कृतस्यार्कदानकर्मणः
 साङ्गतासिद्धचर्यम् इमां दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति दक्षिणां
 दद्यात् ॥ वरः “ ॐ स्वस्ति ” इति ब्रूयात् ॥

ततो वरः अर्कवृक्षस्योपरि गन्धाक्षतपुष्पसमन्विताञ्जलाञ्जलीन्
 दद्यात् ॥ यथा मन्त्रः- “ ॐ यज्ञो मे कामः समृद्धयताम् । ॐ धर्मो मे कामः
 समृद्धयताम् । ॐ यशो मे कामः समृद्धयताम् । ” इति जलाञ्जलि-
 दानम् ॥ ततो गायत्रीमन्त्रेण “ ॐ परिच्वा ” इति मन्त्रेण च पश्चाद्वृता
 सूत्रेणार्कमावेष्टयेत् ॥ पुनः पञ्चगुणेन सूत्रेण अर्कस्य दक्षिणस्कन्धं
 “ वृहत्साम० ” इति मन्त्रेण “ ॐ यदावध्नन्० ” इति मन्त्रेण च
 रक्षार्थं बध्नीयात् ॥ यथा- “ वृहत्सामनक्षत्रमद्गृह्यद्वृष्ण्यं त्रिष्टुभौजशुभि-
 तमुग्रवीरम् । इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातनु समरेण रक्ष ॥”
 “ ॐ यदावध्नन्० ॥” ततोऽर्कस्य दिक्षु विदिक्षु च अष्टौ कुम्भान् संस्थाप्य
 वस्त्रेण त्रिसूत्रेण चावेष्ट्य हरिद्रागन्धादीन् कुम्भे क्षिप्त्वा तेषु कुम्भेषु
 “ ॐ विष्णवे नमः ” इति नाममन्त्रेण महाविष्णुम् आवाह्य षोडशोपचारैः
 पूजयेत् ॥ ततः स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् आचार्यद्वाराऽग्निस्यापनं
 कृत्वा ब्रह्माणश्च वृत्त्वा प्रोक्षण्याः प्रत्युत्पवनान्तं विधाय उपयमनकृशा-
 नादाय “ निष्टन् समिधोऽभ्याधाय ” इत्यारभ्य पथ्यक्षणात्तं कृत्वाऽऽ
 धारावाज्यभागौ जुहुयात् (मनसा) ॥ “ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजा० ।
 ॐ इन्द्राय० इदमिन्द्राय० । ॐ अग्नये० इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा

इदं सोमाय० । ” एवमाचारावाज्यभागौ हुत्वा ॐ सङ्गोभिः० । इति मंत्रेण होमं कुर्यात् ॥

ॐ सङ्गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणोभर्गऽइवेदर्यमणानिनाय । जनेमि-
त्रोनदम्पतीऽअनक्तिवृहस्पतेवाजयाशूरिवाजौ स्वाहा ॥ इदं बृहस्पतये न
मम ॥ १ ॥ यस्मै त्वा कामकामाय वयं सम्राड् यजामहे । तामस्मभ्यं कामं
दत्त्वा यथेर्यं घृतं पिव स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ २ ॥

ततो व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिरष्टोत्तरशतम् अष्टाविंशतिरष्टौ वा होमः ।
ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः
स्वाहा इदं सूर्याय० । ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति
हुत्वा ततो भूराद्याः स्विएकृदन्ता दशाहुतयः । ततः संस्रवप्राशनादि
प्रणीताविमोकान्तं सर्वं कुर्यात् ।

ततो वरः अर्कं प्रदक्षिणीकृत्य प्रार्थयेत् ॥ “मया कृतमिदं कर्म
स्थावरेषु जरायुणा । अर्कापत्यानि नो देहि तत् सर्वं क्षन्तुमर्हसि ॥”
इति ॥ तत आचार्यः “ ॐ ऋचंवाचम् ” इति शान्त्यध्यायं जपेत् ।
ततो वर आचार्याय गीयुगं वा तन्मूल्यं दद्यात् । यथाकालेऽष्टौ ब्राह्म-
णान् भोजयिष्ये इति भोजनसंकल्पं कृत्वा अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
भूयसीम् आचार्याय च दक्षिणां सर्वोपस्करं च दद्यात् ॥
ततो वरो गणेशं कुम्भस्थितं महाविष्णुम् अग्निश्च विमृज्य जळं
गृहीत्वा—अनेन यथाज्ञानेन कृतेनार्कविवाहकर्मणा श्रीपरमेश्वरस्वरूपी
श्रीमूर्धनारायणः प्रीयतां न मम । अनेन कर्मणा तृतीयमानुषीविवाह-
जन्यदोषपरिहारोऽस्तु ॥ पुनर्विष्णुं प्रार्थयेत्—“ यस्य स्मृत्या० ” ॐ
विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । इति अर्कविवाहः ॥

ग्रहानित्यकर्मसमुच्चयः

॥ १५२ ॥ अथ कुम्भविवाहः ॥

आपिता सपत्नीकः कुम्भविवाहोक्तान् सम्भारानादाय देवालये
गत्वा शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा
स्वकन्याया विपकन्यात्वदोषपरिहारार्थं कुम्भविवाहं कुर्यात् ॥

सङ्कल्पः—विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो० इत्यादि पठित्वा एवंगु-
णविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम अस्याः कन्याया नक्षत्रादि-
योगेन ग्रहयोगेन च विपाख्ययोगजननमूचितवैधव्यारिष्टपरिहारार्थं
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कुम्भविवाहाख्यं कर्म करिष्ये ॥ पुनर्जलमादाय ।
तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धयर्थं गणपतिपूजनं श्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृका-
पूजनं वसोर्धारापूजनं वैश्वदेवसङ्कल्पं नान्दीश्राद्धम् आचार्यवरणञ्च
करिष्ये । तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनञ्च करिष्ये । इति दिग्रक्षणादि
कृत्वा ततो गणपतिपूजनाद्याचार्यवरणान्तं कुर्यात् ।

ततो मुख्यदेवतायाः स्थापने कलशं निधाय स्वर्णमयविष्णुरूपा-
श्वत्थद्रुमप्रतिमाया अग्न्युत्तारणं कुर्यात् । मूर्तिं घृतेनाभ्यज्य तदुपरि
“ॐ समुद्रस्यत्वा०” इत्यादि पठित्वा जलधारया अग्न्युत्तारणं विधाय

१ अथ कुम्भविवाहो विषयोगसमुत्पन्नायाः कन्याया वैधव्यदोषपरिहारार्थं कार्यः ।
विषयोगाच्चविधः । सूर्यभौमाकिंवाग्निपु तिथिभद्राशतामिधम् ॥ आश्लेषाकृत्तिकानागो तत्र जाता
विवाहना । जनुर्लभे रिपुक्षेत्रे संस्थितः पापखेचरः । द्विसाम्यमपि योगेऽस्मिन्तज्जाता विप-
कन्यका ॥ लभे शनिधरो यस्याः सुतेऽको नवमे कुजः । विपाख्या सापि भोद्राहा त्रिविधा
विपकन्यसा ॥ तदोषपरिहारोपाय-सावित्र्यादिव्रतं कृत्वा वैधव्यादिनिवृत्तये । अश्व-यादिभिष्ट्राह्या
दयात्ता चिरजीविने ॥ बालवैधव्ययोगे तु कुम्भद्रुमप्रतिमादिभिः । कृत्वा लभं तत पश्चात्
कन्योद्गमेति चापरे ॥ तथैव-वैश्वयोगे विदिते च कञ्च विवाहनादौ विदधीत कुम्भे । फला-
द्रिवाह्या विविष्ट्रधूः सा विधिस्तु तस्यावरतोऽवधार्यः ॥ स्वर्णट्टिपिपलानां च प्रतिमा विष्णु-
पिथी । तया सह विवाहे तु पुनर्भूयत्र जायते ॥ इति विधानखण्डे ॥

णप्रतिष्ठां कुर्यात् । मूर्तौ दक्षिणहस्तं न्युञ्जं धृत्वा पठेत् ॥ ॐ आँ
 क्रौं यं रं लं वं शं पं सं हं सः अस्याः विष्णुमूर्तेः प्राणा
 प्राणाः ॥ ॐ आँ० । अस्याः विष्णुमूर्तेः जीव इह स्थितः । ॐ आँ०
 स्याः विष्णुमूर्तेः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपा-
 पायूपस्थानीहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । गर्भाधानादिपोडश-
 संस्कारार्थं पोडश प्रणवान् जपेत् । तत आवाहनादिपोडशोपचारपर्यन्तं
 पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ “वरुणाङ्गस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय ।
 पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु ॥ देहि विष्णो वरं देहि कन्या
 पालय दुःखतः ॥ ” इति संप्रार्थ्य अनेन पूजनेन स्वर्णमयविष्णुस्वरूपा-
 श्वत्यः प्रीयताम् इति जलमुत्सृजेत् ॥

ततो यथोचितं मधुपर्कं कृत्वा वस्त्रालङ्काराणि समर्पयेत् ॥ ततः
 कन्याकुम्भयोरन्तरे अन्तर्पटं धृत्वा कन्यां तस्य सम्मुखे प्रत्यङ्मुखी-
 मुपवेशय मङ्गलाष्टकं पठेत् । “ ॐ प्रतिष्ठ ” इति पठित्वा अन्तर्पटं
 निष्कास्य कन्यायै वस्त्रोपवस्त्रे दत्त्वा मंगलतंतुबंधनसमीक्षणान्तं कृत्वा
 दशवारमधस्तादुपरि च कुम्भं कन्यां च “ परित्वा० ” इत्यनुवाकेन
 सूत्रेण संवेष्ट्य कुम्भरूपविष्णवे कन्यादानं कुर्यात् ॥

कन्यादानसङ्कल्पः- विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य
 विष्णो० इत्यादि पठित्वा । एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ
 अस्याः कन्याया विपाख्ययोगजननवैधव्यदोषापनुत्तये श्रीविष्णु-
 स्वरूपिणे अश्वत्यकुम्भाय श्रीरूपिणीमिमां कन्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।
 इति पठित्वा कन्याया दक्षिणहस्ते जलं दत्त्वा तद्भस्तं विष्णुस्वरूपाया-
 श्वत्यकुम्भाय समर्प्य मन्त्रं पठेत् ॥ “गौरीं कन्यामियां श्लक्ष्णां यथा-
 शक्तिं विभूषिताम् । ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा ॥ ”

विष्णुरूपिणे कुंभायेमां कन्यां संप्रददे ॥ इति समर्पयेत् ॥ अनन्तं
बह्वप्रन्थिकादिकं विमुच्य कुम्भं गृहीत्वा जले निक्षिपेत् ॥

ततः आचार्यः शुद्धजलेन “ ऐन्द्रवारुणपावमानीयमंत्रैः ” कन्यां
पञ्चपल्लवेनाभिपिच्य शुद्धवाससी परिधापयेत् ॥

ततः कन्या शुद्धोदकेन स्नात्वा स्वयं धारितानि नूतनानि वस्त्राणि
सालङ्काराणि आचार्याय दत्त्वा आचार्यायान्येभ्यश्च दाक्षिणां दुदात् ।
ततः आचार्यादीनां समीपे उपविश्य “ भो ब्राह्मणाः अहम् अनेन
कुम्भविवाहकर्मणा अनघाऽस्मि ? ” इति त्रिवारं पृच्छेत् । “ त्वमनघाऽसि
एवमस्तु ” इति आचार्यादयोऽपि त्रिवारं धूयुः ॥ ततः कर्मेश्वराय
समर्प्य गणपतिभृतिदेवानां विसर्जनं कुर्यात् ॥ इति कुम्भविवाहः ॥

॥ इति ग्रहशान्तिसहितपोडशसंस्कारात्मकः षष्ठो विभागः ॥

॥ अथ विविधशांतिप्रयोगात्मकः सप्तमो विभागः ॥

॥ १५३ ॥ अथ रजोदोषे श्रीशान्तिः ॥

बधूवरमातुरजःप्राप्तौ नान्दीश्राद्धोत्तरं मुहूर्तान्तरालाभे संकटे
कर्माधिकारार्थं श्रीशान्तिं कुर्यात् ॥ यथा यजमानः आचम्य प्राणा-
नायम्य अग्नेत्यादितयी० अस्य संस्कार्यस्य (संस्कार्याया वा)
विवाहादिमंगलकर्मणि मम पत्न्या रजोदोषनिरासार्थं सकलारिष्टशां-
त्यर्थं संस्कारस्य (संस्कार्याया वा) ब्रह्मायुष्यप्राप्त्यर्थं श्रीशान्तिमहं
करिष्ये । तद्ब्रह्मन्वेन दिग्रक्षणादीनि करिष्ये इति संकल्प्य दिग्रक्षणादि
अग्निप्रतिष्ठापनान्तं कर्म कृत्वा पुरतो भद्रपीठे पटीयौरित्यादिना कलशं
संस्थाप्य तदुपरि कृताग्न्युत्तारणमाणप्रतिष्ठां स्वर्णमयीं श्रीमूर्तिं
श्रीश्वने० इत्यावाह मनोज्ञि० इति प्रतिष्ठाप्य पुष्पसूक्तेन श्रीसूक्तेन

विविधशांतिप्रयोगः-गोमुखप्रसवशान्तिः

॥ १५५ ॥ अथ गोमुखप्रसवशांतिप्रयोगः ॥

दुष्टकालप्रसवे बहवः शान्तयः सन्ति । तासां मध्ये आश्लेषाज्येष्ठा-
मूलनक्षत्रेषु वैधृतिव्यतीपातादियोगेषु च बालके जाते सति गोमुख-
प्रसवशान्तिपूर्विका शान्तिः कार्या ॥ तत्र प्रथमं सर्वशान्तिसाधारणो
गोमुखप्रसवशांतिप्रयोगः कथ्यते ॥ सपत्नीको यजमानः प्राङ्मुख
उपविश्य शान्तिपाठपठनपूर्वकं देवब्राह्मणानामस्कृत्य ॥ जलमादाय ॥
अघेत्यादि० त्रिंशो अस्य बालकस्य अमुकनक्षत्रयोगोत्पत्तिभूचितारि-
ष्टशान्त्यर्थं गोमुखप्रसवशान्तिं करिष्ये ॥ तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशारा-
धनं गणपतिपूजनमाचार्यवरणं च करिष्ये ॥ पूर्वोक्तरीत्या दिग्रक्षण-
मारभ्य आचार्यवरणान्तं कुर्यात् ॥ तत आचार्यः श्वेतचूर्णैः गृहाद्बहि-
रीशानदिग्भागे पञ्चं कृत्वा तत्र व्रीहिराशिं कृत्वा तत्र शूर्पं स्थापयित्वा
शूर्पे रक्तबल्लं प्रसार्य तत्र तिलान् विकीर्य शूर्पे प्राङ्मुखं शिशुं निधाय
सूत्रेण सशिशुं शूर्पं वेष्टयित्वा शिशुसमीपे गोमुखमानीय प्रसवं
विभाव्य पठेत् ॥ योनिं विष्णुः कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंसतु ॥
प्रजापतिः प्रसिञ्चतु सृष्टा गर्भं दधातु ते ॥ १ ॥ धेहि गर्भं सिनीवालि
धेहि गर्भं पृथुष्टुके ॥ ते देवावश्विनां गर्भमाधत्ता पुष्करस्रजौ ॥ २ ॥
हिरण्ययीऽअरणीयम् अश्विनानिर्मथतः ॥ गर्भं द्वामहे तं ते दशमे
मासि मृतये ॥ ३ ॥ परापते न जायेत पुनः सुपुत्र आपतत् ॥ मेस्यै
च पुत्रकामायै गर्भं धेहि प्रमृतये ॥ ४ ॥ इति ॥

ततो गां सर्वाङ्गेषु वामाङ्गेषु वा स्पृष्ट्वा पठेत् । गवामंगेषु तिष्ठन्ति
भुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ १ ॥
तत आचार्यः शिशुमादाय मात्रे दद्यात् ॥ विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेण गवि
नायां प्रमृतके ॥ पुत्रान् पुमांसमाधेहि दशमे मासि सूत्रे ॥ १ ॥

वातावर्यादींश्च प्रक्षिप्य तदुपरि पूर्णपात्रं निधाय सुवर्णमय्या बृहस्पतिमूर्तेः “ॐ समुद्रस्पर्शा” इत्यादिमन्त्रैरभ्युत्तारणादि कृत्वा “ॐ बृहस्पतेऽभति०” इति मन्त्रेण बृहस्पतिमावाप “ॐ मनोज्ञतिर्जुष० ॥” इति प्रतिष्ठा कुर्यात् ॥ ततः स्यण्डिले पथभूर्लंकारपूर्वम् अग्नि स्थापनं कृत्वा ब्रह्मणं कृत्वा अन्वाधानं कुर्यात् ॥ ममिद्द्रव्यं गृहीत्वा-प्रजापतिम् इन्द्रम् अग्नि सोमम् एकैकयाऽऽज्याहुत्या बृहस्पतिम् अथत्यसमिद्धिराज्यप्लुताभिः सर्षपैर्मिश्रणयत्नेन आज्य-मिश्रितयन्त्रीदितिलैश्च प्रतिद्रव्यम् अयोत्तरदाताहुतिभिः श्रेणेण स्विष्टकृतम् अग्निं वसुं सूर्यम् अग्नीवदणौ अग्निवदणौ अग्निं वरुणं सवितारं विष्णुं विश्वान् देवान्मरुतः स्वर्गान् वरुण आदित्यम् अदितिं प्रजापतिम् एता अद्भ्यप्रधानार्या देवता एकैकयाऽऽज्याहुत्या अस्मिन् बृह-स्पतिस्नान्तिकर्मभ्यर्हं यक्ष्ये ॥ इति समिद्द्रव्यम् अमावाद्यात् ॥ ततः प्रणीताप्रणयनाद्यागोप्य-नान्ता सर्षो वृत्ताक्छिर्वा कुर्यात् ॥ “ॐ बृहस्पतेऽभति०” इति वैदिकमन्त्रेण “ॐ बृह-स्पतये नमः” इति नाममन्त्रेण वा षोडशोपचारैर्बृहस्पतिपूजनं कुर्यात् । तत्र च पीतं वस्त्रद्वयम्, पीतं चक्षुषरीतम्, पीतं चन्द्रनम्, पीताद्यताः, पीतपुष्पाणि, घृतदीपम्, मोदवर्नवेदम्, दक्षि-णाया मागिर्यं सुर्वीष वा दद्यात् ॥ ततः क्लृप्ताभिमन्त्रणं कृत्वा आपारावाज्यमागी हुत्वा ॥ ॐ बृहस्पतेऽभति० इति वैदिकमन्त्रेण आज्यप्लुताभ्यत्यसमिद्धिः पूतमिश्रितपायसमाज्यमि-श्रितनैदियवतिलैश्चान्वाधानानुसारेण होमं विदध्यात् ॥ ततो बृहस्पतरत्नपूजनं कृत्वा नूत्ने तावन्ने जलं गृहीत्वा पीताद्यनान्, पीतचन्द्रनम्, पीतपुष्पाणि, सुवर्ण्य निपाय अर्घं दद्यात् । तत्र मन्त्रः-“यम्भीर ह्यरुणाह देवेभ्य एमते प्रभो । । नमस्ते वाग्मते इत्य गृहार्णवे नमोऽस्तु ते ॥” इति नवा प्रार्थयेत् ॥ “अथवा यतो ह्यथर्वायं होमद्वारि संश्रुतम् । तत्त्वं गृहाण घान्मस्यं बृहस्पते नमो नमः ॥ योषो बृहस्पतिः सूरिवाचसो पुस्त-द्विषाः । काषस्पतिदेवमन्त्री शुभं भूर्यामदा मम ॥ इति नवा पूजाभिरनं विधाय सिद्ध इत्वं कृत्वा नाहुतीष दत्त्वा सर्वं पूर्णोद्भयन्तं समापयेत् ॥ ततो बृहस्पतेः कृत्वाजलं गृहीत्वा कर्वां कुमां धोरदेव शुभनीहस्य यत्रमानस्य तिरसि ॥ ॐ आगोदिति० इति ह्युष, तावदाग्निः, शर्वादित्याः, समुद्राज्येत्तनाः, इत्यादिभिः पुष्पान्तुमाः इत्यादिभिर्नैदियैश्च पुष्पान्तुः एतावत् ॥ इत्यादिभिरभिरर्कं कुर्यात् ॥ ततोऽभिरिगन्नादिकं कृत्वा बृहस्पतिमूर्तिं कृत्वा इत्यादिभ्यः आवादाय कृत्वा पूजेभ्यो मन्त्रेभ्य आवादाय वा दद्यात् प्रदाय भोजयेत् ॥

॥ इति बृहस्पतिरहितः ॥

- (१) वास्तुनातिप्रयोगस्तु (मंथेयनः) २५३ तमे पृष्ठे दृष्टव्यः ॥
- (२) ब्रह्मनातिप्रयोगस्तु पृष्ठ ३१३ तः ३७१ पर्यन्तं दृष्टव्यं ॥

॥२८॥ इति वा) होमं कुर्यात् ॥ ततो ग्रहमंत्रैश्चैकैकाहुतिं दधिमध्वाज्येन जुहुयात् ॥ ततः स्विष्टकृन्नवाहुतीर्हुत्वा संस्रवपाशनं पवित्राभ्यां मार्जनम् अग्रां पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ प्रणीताविमोकोदकेन मार्जनं ब्राह्मणभोजनसंकल्पं च कुर्यात् ॥ ततो “यान्तु देव०” इति पत्रेण देवताविसर्जनमग्रेश्च “यज्ञयज्ञं०” इति “गच्छ गच्छ०” इति वा विसर्जनं कुर्यात् ॥ इति गोमुखप्रसवशान्तिः ॥

॥ १५६ ॥ अथ मूलशांतिप्रयोगः ॥

सपत्नीको यजमानः शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य शांतिपाठपठनपूर्वकदेवब्राह्मणान् नमस्कृत्य ॥ जलमादाय ॥ अग्नेत्यादि० तिथौ ममास्य बालकस्य कुमार्या वा मूलप्रथमचरणादिजननमूचितसर्वारिष्टविनाशार्थं शुभफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं सनवग्रहपर्यां मूलजननशान्तिं करिष्ये ॥ तदंगभूतं गणपति-पूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोद्धारां नांदिश्राद्धं ब्राह्मणवरणं पंचगव्यकरणं भूमिपूजनमग्निस्थापनं देवतास्थापनानि च करिष्ये ॥ तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं च करिष्ये इति दिग्रक्षणादि बह्विस्थापनान्तं सर्वं समापनीयम् ॥ ततः अग्नेः प्राच्यां पीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि पंचवर्णकैः स्वस्तिकं कृत्वा तन्मध्ये पूर्णपात्रान्तं कलशं संस्थाप्य तस्य कलशस्य चतुर्दिक्षु चतुरोऽन्यान् कलशान् स्थापयित्वा मध्यकुंभोपरि कृताग्न्युच्चारणपूर्विकां सुवर्णमयीं रुद्रमूर्तिं संस्थाप्य ॥ ॐ ज्यंब० ॥ “ रुद्राय नमः । ” इति यथाज्ञाभोपचारैः संपूज्य तत्र “ नमस्ते० ” इति रुद्रमूर्त्तं पठेत् । अन्ये चत्वारो ब्राह्मणाश्चतुरः कलशान् स्पृष्ट्वा पूर्वादि-क्रमतः शांतिमूक्तम्, अग्निमूक्तम्, रुद्रमूक्तम्, ज्यंबकमंत्राश्च जपेयुः ॥

इति । ततो माता पित्रे दद्यात् ॥ पिता मात्रे दद्यात् ॥ ततः पिता वस्त्रम्
उद्घात्य पुत्रमुखमीक्षेत ॥ तत आचार्यः पंचगव्येन-ॐ आपोहिष्ठा० ।
ॐ शोवः० । ॐ तस्मा० इति मंत्रत्रयेण अपवित्रः पवित्रोवा० इति मंत्रेण
च शिशुमभिर्पिचेत् ॥ ततः पिता शिशुं मूर्धनि जिघ्रेत् ॥ अंगादंगात्सं-
भवसि हृदयादधि जायसे ॥ आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदां शतम्
॥१॥ सकृत् मंत्रेण द्विस्तूर्णाम् ॥ ततो ब्राह्मणैः पंचवाक्यैः पुण्याहं
वाचयेत् । भो ब्राह्मणाः अस्य कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवन्तु ॥ विप्राः
अस्तु पुण्याहम् ॥ एवं कल्याणम् ऋद्धिं स्वस्ति श्रीरस्तु इत्यादि ब्रूयु ॥
तत आचार्याय गां वा गोरभावे तन्निष्कयं दद्यात् ॥ ततः पंचभूसं-
स्कारपूर्वकं स्यण्डिलोपरि अग्निं संस्थाप्य अधिप्रत्यधिदेवतारहितानाम्
केवलं सूर्यादिनवग्रहाणां स्थापनं कृत्वा यथाशक्त्या पूजनं कुर्यात् ॥ ततो
अग्नेरीशान्यां पीठोपरि श्वेतवस्त्रं मसार्थं तदुपरितंडुलेनाष्टदलं निर्माय मध्ये
महीशौरित्यादिना कलशं संस्थाप्य तस्मिन्कलशे पंचगव्यं तिलान्
क्षीरद्रुमरूपायं (अश्वत्थवटोदुम्बरवृक्षाणां क्वाथितं जलं) सिप्त्वा
वस्त्रयुग्मेन वेष्टयित्वा तदुपरि कृतान्युत्तारणपूर्वकं सुवर्णमयं तद्विष्णो०
इति विष्णोः । तत्त्वायामि० इति वरुणस्य । च ॐ नारायित्रीब्रह्मसं-
स्यार्जितऽऽवृत्तितामसि । अथो ज्ञतस्य यक्ष्माणांम्पाकारोरसिनाशनी
॥१॥ इति यक्ष्मणश्च इति मूर्तित्रयं प्रतिष्ठाप्य । “ विष्ण्वाशावा-
हितदेवेभ्यो नमः ” इति मूलमंत्रेण यथाशक्त्या पूजनं कुर्यात् ॥ ततो
यजमानः द्रव्यत्यागं कृत्वा प्रधानदेवतानां मिलितदधिमध्वाज्यैः
विष्णुं सकृन् अपश्चतुर्वारं यक्ष्माणमष्टाविंशतिसंख्ययाऽष्टौ वा तत्तन्मन्त्र-
नाममंत्रैर्वा यथा- (विष्णवे स्वाहा १ । वरुणाय स्वाहा ४ । यक्ष्मणे स्वाहा

ति०॥२२॥ विशाखाधिष्ठितौ इन्द्राग्नी इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ॥२३॥
 अनुराधाधिष्ठित मित्र इहा०इ०ति० ॥२४॥ तत इन्द्रादिदशदिक्पालान्
 आवाह ॥ ॐ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठां कृत्वा ॥“निर्ऋत्याद्यावाहितदेवेभ्यो
 नमः” इत्यनेन तान् यथाशक्ति षोडशोपचारैः संपूज्य ॥
 तदुत्तरतः ग्रहपीठे आकृष्णेन० इत्यादिभिर्मन्त्रैः ग्रहाणां स्थापनं कृत्वा
 पूर्वोक्तप्रकारेण पूजनं कृत्वाऽग्निप्रतिष्ठादि ग्रहहोमान्तं कर्म कुर्यात् ॥
 ततः प्रधानहोमं कुर्यात् । घृतमिश्रपायससमिदाज्यचरुणां प्रत्येकस्य
 प्रधानमधिदेवताः प्रत्यधिदेवताश्चतुर्विंशतिदेवांश्चोद्दिश्य तत्तन्मन्त्रैः नाम-
 मन्त्रेण वा क्रमेणाष्टोत्तरशताष्टाविंशत्यष्टसंख्याभिराहुतीर्दद्यात् । तद्यथा ॥
 “निर्ऋतये स्वाहा” ॥१०८॥ “इन्द्राय स्वाहा” ॥२८॥ “वरुणाय
 स्वाहा” ॥२८॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यः० ॥८॥ विष्णवे० ॥ वसुभ्यः० ॥ वरु-
 णाय० ॥ अजैरुपदे० ॥ अद्विर्युध्याय० ॥ पूष्णे० ॥ अश्विभ्यां० ॥
 यमाय० ॥ अग्नये० ॥ प्रजापतये० ॥ सोमाय० ॥ रुद्राय० ॥ अदितये० ॥
 बृहस्पतये० ॥ सर्पाय० ॥ पितृभ्यः० ॥ भगाय० ॥ अर्यम्णे० ॥
 सवित्रे० ॥ त्वष्ट्रे० ॥ वायवे० ॥ इन्द्राग्निभ्यां० ॥ मित्राय० ॥ ८ ॥
 ॥२७॥ इत्याहुतीर्दत्त्वा इन्द्रादिदशलोकपालानां प्रतिद्रव्यमेकैकाहुतिं
 दद्यात् ॥ यथा ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ अग्नये० ॥ यमाय० ॥ निर्ऋतये०
 वरुणाय० ॥ वायवे० ॥ सोमाय० ॥ ईशानाय० ॥ ब्रह्मणे० ॥ अनन्ताय० ॥
 ततः पायसमध्ये तिलान् निक्षिप्य । अयमेव कृसरपायसः ॥ तेनैव
 कृसरपायसेन वक्ष्यमाणहोमं कुर्यात् ॥ निर्ऋतये० ॥८॥ सवित्रे० ॥८॥
 दुर्गायै० ॥८॥ वास्तोष्पतये० ॥८॥ अग्नये० ॥८॥ क्षेत्राधिपतये० ॥८॥
 मित्रावरुणाभ्यां० ॥ ८ ॥ अग्नये० ॥ ८ ॥ थियं समिदाज्यचरुद्रव्यैः
 “थियै स्वाहा” ॥८॥ सोमं पायसद्रव्येण त्रयोदशवारं (१३) सोमाय

अथ प्रधानदेवतास्थापनम् ॥ मध्ये पीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि
 पंचवर्णैस्तण्डुलैश्चतुर्विंशतिपत्रात्मकं पंकजं कृत्वा ॥ तन्मध्ये पूर्णपात्रान्तं
 कलशं संस्थाप्य ॥ तन्मध्ये शतमूलानि तदभावे सप्तविंशति-
 मूलानि तदभावे विष्णुकान्तां सहदेवीं तुलसीं शतावरीं कुशं कुंकुमं च
 मक्षिप्य तदुपरि कृताष्टदलं क्षौमं वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि कर्णिकायां
 कृताग्न्युत्तारणपूर्विकाः सुवर्णमयीः निर्ऋत्यादिप्रतिमा आवाहयेत् ॥
 ॐ असुन्व० । मूलनक्षत्राधिष्ठित निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥ तदक्षिणे
 ॐ त्रातार० । ज्येष्ठाधिष्ठित इन्द्र० इहा० इह० ॥ २ ॥ तदामे तच्चाप्यामि०
 पूर्वापादाधिष्ठित वरुण इहा० इह० ॥ ३ ॥ ततः पंकजस्य चतुर्विंशतिदलेषु
 पूर्वमारभ्य प्रदक्षिणक्रमेण ॥ उत्तरापादाधिष्ठिता विश्वेदेवा इहागच्छत
 इह० ॥ १ ॥ श्रवणाधिष्ठित विष्णो० इ० इ० ॥ २ ॥ धनिष्ठाधिष्ठिता अष्टवसवः
 इहा० इ० ॥ ३ ॥ शतभिषाधिष्ठित वरुण इहा० इह० ॥ ४ ॥ पूर्वाभाद्रपदाधिष्ठित
 अजैकपाद् इहा० इ० ति० ॥ ५ ॥ उत्तराभाद्रपदाधिष्ठित अहिर्बुध्न्य इहा० इ०
 तिष्ठ ॥ ६ ॥ रेवत्याधिष्ठित पूषन् इहा० इह तिष्ठ ॥ ७ ॥ अश्विन्याधिष्ठित
 अश्विनौ० इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ॥ ८ ॥ भरण्याधिष्ठित यम इहा०
 इ० ति० ॥ ९ ॥ कृत्तिकाधिष्ठितं अग्ने० इहा० इ० ति० ॥ १० ॥ रोहिण्यधिष्ठित
 प्रजापते इहा० इ० ति० ॥ ११ ॥ मृगशीर्षाधिष्ठित सोम इहा० इ० ति० ॥ १२ ॥
 आर्द्राधिष्ठित रुद्र इहा० इ० ति० ॥ १३ ॥ पुनर्वसुधिष्ठित अदिते इहा०
 इ० ति० ॥ १४ ॥ पुष्याधिष्ठित बृहस्पते इहा० इ० ति० ॥ १५ ॥ आश्लेषाधिष्ठित
 सर्प इहा० इ० ति० ॥ १६ ॥ मघाधिष्ठितपितरः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ १७ ॥
 पूर्वाफाल्गुन्याधिष्ठित भग इहा० इ० ति० ॥ १८ ॥ उत्तराफाल्गुन्याधिष्ठित
 अर्यमन्निहा० इ० ति० ॥ १९ ॥ हस्ताधिष्ठित सूर्य इहा० इह तिष्ठ ॥ २० ॥
 चित्राधिष्ठित त्वष्टः इहा० इ० तिष्ठ ॥ २१ ॥ स्वात्यधिष्ठित वायो इहा० इ०

मूलादिसर्वगंडान्तं दोषमाशु व्यपोहतु ॥ ८ ॥ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा
 लोफाला नवग्रहाः ॥ सर्वदोषप्रशमनं सर्वं कुर्वन्तु शान्तिदाः ॥ ९ ॥
 मूलनक्षत्रजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च ॥ भ्रातृभ्रातिकुलोत्थानां दोषं
 सर्वं व्यपोहतु ॥ १० ॥ पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा ॥
 मूलनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिवांधवान् ॥ ११ ॥ सुरास्त्वाम-
 भिर्पिचन्तु ० ॥ इत्यादिकान् त्रिष्यणीस्थान् मंत्रान् पठित्वा अमृताभि-
 पेकोऽस्तु ॥ अभिपेकानन्तरं स्नायात् ॥ कांस्यपात्रे घृतं प्रपूर्य तस्मिन्
 पिता पुत्रपत्न्योः मुखं पश्येत् ॥ छायापात्रं सुवर्णसहितमाचार्याय
 दद्यात् ॥ ततः तिलपात्रादि दानं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् ॥
 तेभ्यो आग्नीर्वादं गृहीत्वा देवान् विसृजेत् ॥ ततो ब्राह्मणान् संभोज्य
 स्वयं सपरिवारो भुञ्जीत ॥ ॥ इति मूलशान्तिप्रयोगः ॥

१ सुरास्त्वामभिर्पिचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ १ ॥
 प्रभुभयानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ॥ आखण्डलोऽभिर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥
 वरुणः पवनश्चैव घनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणाऽन्तसहिता दिक्पालाः षान्तु ते सदा ॥ ३ ॥
 कीर्तिर्लक्ष्मीर्भृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ॥ मुष्टिर्लज्जा वपुः सतिस्तुष्टिः कशिव्य मातरः ॥ ४ ॥
 एतास्त्वामभिर्पिचन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥ आदित्यश्चंद्रमा भौमो धुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥
 मद्रास्त्वामभिर्पिचन्तु राहुकेतुश्च तर्पिताः ॥ ६ ॥ ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ॥
 देवपत्न्यो द्रुमा नागा देव्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥ अन्नानि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि
 च ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा
 नदाः ॥ एते त्वामभिर्पिचन्तु सर्वसामर्थसिद्धये ॥ ९ ॥ सहस्राक्षं शतधारमृत्पाभिः पावनं
 कृतम् ॥ तेन त्वामभिर्पिचामि पावमान्यः पुनन्तु ते ॥ १० ॥ भगं ते धरणो राजा भगं सूर्यो
 बृहस्पतिः ॥ भगमिन्द्राय वायुय्य भगं सप्तर्षयो वसुः ॥ ११ ॥ यत्ते वेदेषु द्वौर्भौम्यं क्षीमन्ते
 यच्च मूर्धनि । ललाटे र्गर्ग्योरक्षोरारपो निप्रन्तु ते सदा ॥ १२ ॥

स्वाहा इति ॥ सुवेण सुचिं पूरयित्वा “ रुद्राय स्वाहा ” ॥ १ ॥
 इति जुहुयात् ॥ एवं प्रधानहोमं समाप्य लक्ष्मीहोमं गुग्गुलुहोमं
 सर्पपहोमं च कृत्वा उत्तरपूजां नवाहुत्यादिप्रणीताविमोक्तान्तं कुर्यात् ॥
 तत आचार्यादयः सर्वकलशोदकं पात्रान्तरे गृहीत्वा सर्वौपध्यनुलिप्तां-
 गमुभयधृतैकनववस्त्रं सपत्नीकं सवालं यजमानमग्नेः पश्चादुपवेश्य
 तस्योपरि शिष्यादौ सदस्रच्छिद्रं शतच्छिद्रं वा कुंभं निधाय कुंभे पूर्वोक्तानि
 शतमूलानि यथा मिलितानि वा मूलानि क्षिप्त्वा शूर्पमन्तर्धायाभि-
 पिचेयुः ॥ अभिपेके पत्नी वामतः ॥ माक् आपोहिष्ठा० इत्यादिवारुणम-
 न्त्रैरभिपिच्य ततो पौराणिकमन्त्रैरभिपेकं कुर्यात् ॥ योऽसौ वज्रधरो
 देवो महेन्द्रो गजवाहनः ॥ मूलजातं शिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ॥ १ ॥
 योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्क् मेपवाहनः ॥ सप्तजिह्वश्च देवोऽग्नि-
 मूर्लदोषं व्यपोहतु ॥ २ ॥ योऽसौ दंडधरो देवो धर्मो माहिपवाहनः ॥
 मूलजातं शिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम ॥ ३ ॥ योऽसौ खड्गधरो
 देवो निर्कृती राक्षसाधिपः ॥ प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गंडान्तसंभ-
 वम् ॥ ४ ॥ योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ॥ नक्रवाहः
 प्रचेतानो मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ५ ॥ योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो
 मृगवाहनः ॥ प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं घालस्य शान्तिदः ॥ ६ ॥
 योऽसौ निषिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः ॥ मातापित्रोः शिशोश्चैव
 मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ७ ॥ योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः ॥

१ मूलजातो-अभिपेके “ मूलदोषं”, “ मूलोत्थं”, “ मूलनक्षत्रजातस्य ” इत्येता-
 स्याने । ज्येष्ठायां-“ ज्येष्ठादोषं”, “ ज्येष्ठोत्थं”, “ ज्येष्ठानक्षत्रजातस्य ” आश्लेष्यायां-
 “ अश्लेषादोषं”, “ अश्लेषोत्थं”, “ अश्लेषानक्षत्रजातस्य ” वैश्वतौ-“ वैश्वतित्थं”, “ वैश्वतित्थं”, “ वैश्वति-
 योगजातस्य ” । इत्यतिपाते-“ पातदोषं”, “ पातोत्थं”, “ पातयोगे तु जातस्य ”
 शिकगान्तौ-“ शिकदोषं”, “ शिकोत्थं”, “ शिकप्रमृतिजातस्य ” इत्यादिकं वक्ष्यन्म ॥

कुर्यात् ॥ ततः आज्यभागांतं द्रव्यत्यागं च कृत्वा ग्रहहोमं विधाय प्रधानहोमं त्रातारामिन्द्र० । इति इन्द्राय घृतमिश्रितपायससमिदाज्य-चरुभिः प्रत्येकं १०८ पङ्क्तिशतिसप्तत्रिंशत्तदेवताभ्यः ८ आहुतिभिः लोकपालेभ्यः एकैकाज्याहुत्या च कुर्यात् । ततः पूजा स्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा ॥ श्रेयः संपाद्य दानं चेति कुर्यात् ॥ ततः आचार्यादयो भार्याशिशुसहितयजमानस्याभिपेकं पूर्वोक्तरीत्या वारुणमंत्रैः योऽसौ वज्रधरो० सुरास्त्वा० इति मंत्रैश्च कुर्युः ॥ अभिपेकान्ते आज्यावलोकनं तद्दानं च ॥ ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा तेभ्यः आशिषो गृहीत्वा देवताविसर्जनं कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा सपरिवारः स्वयं भुञ्जीतेति ॥

॥ १५८ ॥ अथ आश्लेषाशांतिप्रयोगः ॥

आदौ पूर्ववत् गोमुखप्रसवशांतिं कृत्वा सपत्नीको यजमानः प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य शांतिपाठपठनपूर्वकं देवब्राह्मणान् नमस्कृत्य ॥ जलमादाय ॥ मम अस्य बालकस्य कुमारी वा आश्लेषानक्षत्रप्रथमचरणादिजननमूचितसकलारिष्टानिरसनद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं सग्रहमत्त्वाम् आश्लेषानक्षत्रजननशांतिं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणादिदेवतास्थापनान्तानि करिष्ये इति संकल्प्य दिग्रक्षणकलशा-राधनगणपतिपूजनादि अग्निस्थापनान्तं कर्म कृत्वा पूर्ववत् अग्नेः ईशान्यां महीशौरित्यादिना कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्य चतुर्विधं चतुरः कलेशान् संस्थाप्य तेषु सर्वापिध्यादिश्वेतसर्पपांश्व प्रक्षिप्य बरुणपूजनं च कृत्वा ॥ मध्यकलशोपरि क्षौमं वस्त्रं प्रसार्य तत्र पूर्ववद्द्रुप्रतिमां संस्थाप्य पूजयेत् । एको विप्रः तं कलशम् अन्ये च चत्वारो विप्राः कलशचतुष्टयं

॥ १५७ ॥ अथ ज्येष्ठाशान्तिप्रयोगः ॥

प्रथमतः पूर्वोक्तप्रकारेण गोमुखप्रसवशान्तिं संपाद्य सपत्नीको यजमानः शुभासने उपविश्य । आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठ-
पठनपूर्वकं देवब्राह्मणान्नमस्कृत्य जलमादाय ॥ अद्येत्यादि० त्रिथौ
अस्य शिशोः ज्येष्ठाजननमूचितसकलारिष्टशान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वर-
प्रीत्यर्थं सनवग्रहमखां ज्येष्ठाजननशान्तिं करिष्ये ॥ तदंगभूतं
दिग्रक्षणं कलशाराधनं गणपतिपूजनं० देवतास्थापनानि च करिष्ये
इति संकल्प्य दिग्रक्षणं कलशाराधनं गणपतिपूजनादि अग्निस्था-
पनान्तं कृत्वा ॥ स्थंडिलात्पूर्वं पीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि
तंदुलैरष्टदलं पद्मविंशतिदलं वा कमलं विरच्य तन्मध्ये महीधौः
इत्यादिना पूर्णपात्रान्तं कलशं संस्थाप्य तदुपरि क्षौमं वस्त्रं
प्रसार्य तन्मध्ये ॐ त्रातारमिन्द्र० । इत्यनेन मंत्रेण इन्द्रमावाह्य
स्थापयेत् ॥ ततः कलशाधोभागे निर्ऋत्यादिपद्मविंशतिनक्षत्राधिपती-
नावाह्य संस्थाप्य ततो मंडलाद्ब्रह्मिः इन्द्रादिलोकपालानावाह्य मनोज्ञादि०
इति प्रतिष्ठापयेत् ॥ ततः पौडशोपचारैः संपूज्य तत्पुरतः उत्तरतो
वा पीठे श्वेतवस्त्रोपर्यष्टदलं कृत्वा तत्परितश्चतुरोऽक्षतपुञ्जान् कृत्वा
मध्ये शतच्छिद्रं घृहकलशं तच्चतुर्दिक्षु चतुरः कलशान् पूर्वमारभ्य
प्रादक्षिण्येन महीधौरित्यादिना संस्थाप्य मध्ये पंचगव्यादिकं क्षिप्त्वा ॥
मध्यमकलशे ॥ ॐ तत्रायामि० ॥ १ ॥ पूर्वकलशे ॥ ॐ त्वन्नोऽग्ने०
॥२॥ दक्षिणकलशे ॥ ॐ सत्त्वन्नोऽग्ने० ॥ ३ ॥ पश्चिमकलशे ॐ समुद्रो-
त्सिनभ० ॥४॥ उत्तरकलशे ॥ इमम्मे० ॥५॥ इति यथावत् वरुणस्य प्रति-
ष्ठादिमंत्रपुष्पाञ्जलिपर्यन्तं पूजनं कृत्वा विप्राः पूर्वादिक्रमतः शान्तिमूक्तम्,
अग्निमूक्तम्, रुद्रमूक्तम्, श्याम्वकमन्त्रान् १०८ जपेयुः । ततो ग्रहस्थापनं

चतुर्वारं सृष्टिं पूरयित्वा ज्यंक्कं० इति ज्यम्बकमंत्रेण "रुद्राय स्वाहा"
इति वा जुहुयात् ॥ तत आचारात् फलहोमं विधाय व्याहृतिहोमं
च कृत्वा उत्तरपूजनं च कृत्वा स्विष्टकृदाहुतिं हुत्वा नवाहुतीर्हुत्वा
बलिदानं पूर्णाहुतिहोमं च विधाय प्रणीताविमोक्तान्तं कृत्वा सर्वकल-
शोदकं गृहीत्वा सवालं सपत्नीकं यजमानमाचार्यादयो वारुणमंत्रैः-योऽ-
सौ वज्र० इति सुरास्त्वादिमंत्रैश्च पूर्ववदभिषिंचेयुः ॥ ततः स्नात्वा आज्याव-
लोकनदानं तिलादिदानं च कृत्वा ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणादिकं दत्त्वा तेभ्य
आशिषो गृहीत्वा देवताविसर्जनं कृत्वा ब्राह्मणान् संभोज्य भुञ्जीत ॥

॥ १५९ ॥ अथ वैधृतिशांतिप्रयोगः ॥

तत्रादौ पूर्ववत् गोमुखप्रसवं कृत्वा शान्तिपाठपठनपूर्वकं देवब्राह्मणा-
न्नमस्कृत्य ॥ जलमादाय ॥ अद्येत्यादि० अस्य शिशोर्वैधृतिजननसूचित-
सर्वारिष्टशान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वैधृतिजननशान्तिं करिष्ये ॥
तत्रादौ दिग्रक्षणादि देवतास्यापनान्तं कर्म करिष्ये इतिसंकल्प्य दिग्रक्षणा-
दि अग्निस्थापनान्तं पूर्ववत् कुर्यात् ॥ ततः स्पंडिलस्य पूर्वस्यां पीठोपरि
श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि व्रीहिराशिं च कृत्वा तदुपरि वस्त्रं तदुपरि तंदु-
लराशिं तदुपरि वस्त्रं तदुपरि तिलराशिं कृत्वा तदुपरि वस्त्रं प्रसार्य तदु-
परि पंचवर्णतंदुलैरष्टदलं कृत्वा मध्ये ॥ महीद्योः० इत्यादिना पूर्ण-
पात्रान्तं कुंभं संस्थाप्य तत्र अधिदेवप्रत्याधिदेवप्रधानमूर्तीनामग्न्युत्तारण-
पूर्वकप्राणप्रतिष्ठां कृत्वा स्थापनं कुर्यात् ॥ यथा ॐ नमस्ते० । रुद्राय नमः
रुद्रम् आ० स्था० । तदक्षिणे ॐ आकृष्णेन० । मूर्याय० सूर्यम् आ० स्था० ।
तदुत्तरे ॐ इमन्देवा० । सोमाय० सोमम् आ० स्था० ॥ मनोजूति० इति प्रति-

स्पृष्ट्वा नमस्ते० इति सकलं रुद्राध्यायम् ॥ आशुभशिशान इति अप्रतिरथ-
सूक्तम् । शांतिमूक्तम् । अग्निमूक्तम् । कृणुष्वपाजः० । इति पंचच
रक्षोन्नं च जपेत् ॥ ततो रुद्रस्थापनादुत्तरतो द्वितीयपीठे चतुर्विंशति-
पत्रात्मकं दलं विरच्य तत्र महीधौः० इति कलशं संस्थाप्य तत्र शतौ-
पथानि तद्भावे शतावरीं हिरण्यमूलं सप्तधान्यानि वस्त्रे वृद्धानि निःक्षि-
पेत् ॥ ततः कलशोपरि सुवर्णमयीं सर्पमूर्तिमग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठा
पूर्वकमावाह्य ॥ नमोस्तु सर्पेभ्यः० ॥ इति मंत्रेण प्रतिष्ठाप्य ॥ तदक्षिणे
पुण्याधिपतिवृहस्पतिं वृहस्पते० । इति वामे च मघाधिपतीन् पितॄन्
उदीरता० । इति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः संपूज्य सर्पदेवतायाः पूर्वा-
दिदिक्षु नागाष्टकमावाह्य पूजयेत् ॥ यथा—ॐ अनन्ताय० ॥ वासुक्ये० ॥
तक्षकाय० ॥ कर्कोटकाय० ॥ पत्राय० ॥ शेषाय० ॥ कंबलाय० ॥ शंखपा-
लाय० ॥ ततः चतुर्विंशतिदलेषु पूर्वाफाल्गुन्यधिष्ठितभगादिमारभ्य पुनर्व-
स्वधिष्ठितादित्यन्तान् देवानावाह्य दिक्षु दिवपालांश्चावाह्य पूजयेत् ॥ ततो
ग्रहपीठे ईशान्यां ग्रहमंडलदेवानावाह्य संपूज्य कुशकंडिकां कृत्वा आघा-
रादिभागान् हुत्वाऽग्निं संपूज्य द्रव्यत्यागं कृत्वा वराहुतिं दत्त्वा ग्रहहोमं
विधाय प्रधानहोमं कुर्यात् ॥ तत्र घृतमिश्रितपायससामिदाज्यचरुणां
मत्त्येकस्य “नमोस्तुसर्पेभ्यः०” इति १०८ । “वृहस्पतये०” इति २८
“उदीरता०” इति २८ । चतुर्विंशतिभगादिदेवानुद्दिश्य ८ अष्ट आहु-
तीलोकपालेभ्यो नामेभ्यश्च एकैकाहुतिं दद्यात् । ततः पायसमध्ये तिलान्
निक्षिप्य तेन कृसरेण निर्झतये स्वाहा । ८ । सवित्रे० । रुद्राय० । दुर्गायै० ।
यास्तोप्पतये० । अग्रये० । शेषाधिपतये० । मित्रावरुणाभ्यां० । अग्रये० ।
इति ८ अष्टाष्टाहुतीर्हुत्वा सामिदाज्यचरुद्रव्यैरष्टसंख्यया “श्रियं नमः”
इति हुत्वा फेवलपायसेन “सोमाय नमः” इति अष्टाहुतीर्दद्यात् ॥ ततः

होमान्तं पूर्ववत् कुर्यात् ॥ प्रधानहोमः सूर्याय १००८ ॥
 अग्नये २८ ॥ रुद्राय २८ तत्तन्मन्त्रैर्नाममंत्रैर्वा जुहुयात् । ...
 व्यम्बक्यन्त्रेण १०८ आहुतीर्हुत्वा लक्ष्मीहोमादिकं कृत्वा पूजा स्विष्टं
 इत्यादि विसर्जनान्तं पूर्ववत् कृत्वा ब्राह्मणान् संभोज्य स्वयं भुञ्जीत ॥
 ॥ इति व्यतीपातशांतिप्रयोगः ॥

॥ १६१ ॥ अथ त्रिकप्रसवशांतिप्रयोगः ॥

आदौ गोमुखप्रसवशांतिं कृत्वा शांतिपाठं पाठित्वा आचम्य प्राणाना-
 यम्य हस्ते जलमादाय । यम सुतत्रयजन्मानन्तरं कन्याजनन (वा कन्या-
 त्रयजन्मानन्तरं पुत्रजन्म) सूचितसर्वारिष्टनिवृत्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्री-
 त्यर्थं त्रिकप्रसवशांतिं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणादि देवतास्थापनान्तं
 करिष्ये इति संकल्प्य दिग्रक्षणादि अग्निस्थापनं ग्रहस्थापनं च कृत्वा
 ग्रहस्थापनान्ते कलशपंचके ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञा० ॥ इति ब्रह्माणम् ॥ ॐ इदं-
 विष्णुर्वि० इति विष्णुम् ॥ ॐ व्यंघ्रं० । इति व्यंघ्रम् ॥ ॐ त्रातार-
 मिन्द्र० । इति इन्द्रम् ॥ ॐ नमस्ते० । इति रुद्रम् । इत्यावाह्य षोडशो-
 पचारः पूजयेत् ॥ ततः कुशकंडिका कृत्वा क्रमेण पूर्ववत् ग्रहहोमान्तं
 संपाद्य ॥ ततो ब्रह्मादिदेवेभ्यः मत्येकं समिवाज्यचरुतिलैः १०८ अष्टो-
 त्तरशताहुतीर्दद्यात् ॥ एवं प्रधानहोमं संपाद्य पूजास्विष्टकृतादिनवाहुती-
 र्वलि पूर्णाहुतिं च कृत्वा होमशेषं समाप्य श्रेयः संपाद्य दक्षिणादानं च
 कृत्वा सकुटुम्बम् अभिषेकं कारयित्वा आज्ये गुलावलीकनं कृत्वा
 तद्दानं कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा च स्वयं भुञ्जीत इति ॥
 ॥ इति त्रिकप्रसवशांतिप्रयोगः ॥

१ सुतत्रये घृता चेत्यात्तत्रये वा घृतो यदि ॥ मातापित्रोः कुलत्यापि तदाऽग्निर्दं
 महद्भवेत् ॥ ज्येष्ठनाभो वितदानिर्दु.पं वा समदद्भवेत् ॥

प्राप्य “ रुद्राद्यावाहितदेवेभ्यो नमः ” इति षोडशोपचारैः संपूजयेत् ॥ अत्र मूर्तिं कुंभं च स्पृष्ट्वा रुद्रसूक्तम्, अपतितरयसूक्तम्, इन्दुसूक्तम्, त्र्यम्बकमन्त्रांश्च विमा जपेयुः ॥ तत ऐशाने ग्रहमंडलस्थापनं कृत्वा कुशकंडिका पात्रासादनादिकं च कृत्वा ग्रहहोमान्तं पूर्ववत् विधाय प्रधानं रुद्रं समिदाज्यचरुद्रव्यैः अष्टसहस्रमष्टोत्तरशतंवा १०८ सूर्यसोमौ तैरेवाष्टाविंशतिभिराहुतिभिर्जुहुयात् । ततः त्र्यम्बकमन्त्रेणाष्टोत्तरशतं तिलैर्होमः ॥ ततः पूजां स्विष्टं नवाहुत्यो वलिः पूर्णाहुतिस्तथा ॥ श्रेयः संपाद्य दानं च इति कृत्वा पूर्ववत् अभिषेकं कृत्वा देवता विसृज्य ब्राह्मणान् संभोज्य स्वयं भुञ्जीत ॥

॥ इति वैधृतिशांतिप्रयोगः ॥

॥ १६० ॥ अथ व्यतीपातशांतिप्रयोगः ॥

तत्रादौ गोमुखमसवशांतिं कृत्वा जलमादाय ॥ अग्नेत्यादि० ॥ अस्य शिशोः व्यतीपातजननसूचितसर्वादिष्टशान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरंप्रीत्यर्थं व्यतीपातजननशान्तिं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणादि देवतास्थापनान्तं कर्म करिष्ये इति संकल्प्य दिग्रक्षणाद्यग्निप्रतिष्ठान्तं पूर्ववत् कृत्वा ॥ पूर्वस्यां पीठोपरि श्वेतवस्त्रोपरि त्रीहिराशिं तदुपरि वस्त्रं तंदुलराशिं तदुपरि वस्त्रं तिलराशिं तदुपरि वस्त्रमष्टदलं च कृत्वा तत्र महीधौरिति कलशं संस्थाप्य तत्र ॥ ॐ आकृष्णेन० । सूर्याय नमः सूर्यमा० स्था० इति सूर्यम् ॥ ॐ अग्निन्दूतं० । अग्रये० इत्यग्निम् ॥ ॐ नमस्ते० । रुद्राय० इति रुद्रम् आवाद्य प्रतिष्ठाप्य ॥ “ सूर्याद्यावाहितदेवेभ्यो नमः ” इति मंत्रेण यथाशक्त्या संपूज्य ॥ ततः विमाः कलशं स्पृष्ट्वा त्रिभ्राट्०, अग्निमूक्तम्०, रुद्र-
) यक्तं तथा च त्र्यम्बकमंत्रं जपेयुः ॥ ततः ऐशाने ग्रहाणां स्थापनादि

द्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि
सर्वं जगदिदं त्वचो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं
त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽन-
लोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥ त्वं गुणत्रयातीतः ।
त्वमवस्थात्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं
मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो
ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं
वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ गणादीन्पूर्वमु-
च्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् ।
तारेण रुद्रम् । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो
मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्तरूपम् । विन्दुरुत्तररूपम् । नादः
सन्धानम् । सद्गहिता सन्धिः । सैषा गणेशविद्या । गणकृ ऋषिः ।
निचद्रायत्रीछन्दः । गणपतिर्देवता ॥ ॐ गं गणपतये नमः । एकदन्ताय
विग्रहे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ एकदन्तं
चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूपकध्वजम् ॥
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः
सुपूजितम् ॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च
सृष्ट्यादौ प्रकृतैः पुरुषात्परम् ॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी
योगिनां वरः ॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये
नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये
नमः ॥ एतदथर्वशीर्षं योऽधीते । स ब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्ववि-
घ्नैर्वाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥
सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं

॥ १६२ ॥ कृष्णचतुर्दशीशान्तिः॥—चतुर्भिः कलशैः सह मध्यकुंभे रुद्रस्थापनं होमे च अश्वत्थप्लक्षपलाशखदिरसमिच्चर्वाज्यमापतिलसर्पपैथ प्रतिद्रव्यं १०८।२८ वा त्र्यम्बकं० इति मन्त्रेण “ रुद्राय स्वाहा” इति वा होमः इति विशेषः । अन्यत् पूर्ववत् ॥ इति. कृ. च. शान्तिः ॥

॥ १६३ ॥ दर्शशान्तिः ॥—कुंभं संस्थाप्य तत्र न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थ-चूतनिंबवृक्षाणां मूलत्वक्पल्लवांश्च निक्षिप्य बरुणं पूजयेत् । तस्य पश्चिमे हरिद्राक्तताम्रकृष्णतंडुलैः भद्रमंडलं विरच्य तत्र कलशोपरि मध्ये पितृन् दक्षिणे चन्द्रं वामे च सूर्यं सुवर्णरजतताम्रमयान् प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् ॥ होमे समिच्चर्वाज्याहुतिभिः पितृभ्यः १०८ चन्द्राय २८ सूर्याय च २८ आहुतिभिर्जुहुयात् ॥ इति विशेषः । अन्यत् पूर्ववत् ॥
॥ इति दर्शशान्तिः ॥

॥ इति विविधशान्तिप्रयोगात्मकः सप्तमो विभागः ॥

॥ अथ स्तोत्रादिसंग्रहात्मकः अष्टमो विभागः ॥

॥ १६४ ॥ अथ गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अत्र त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अत्र धातारम् । अवानूचानमव शिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं साधिदानन्दा-

द्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि
 सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं
 त्वयि लयमेप्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽन-
 लोऽनिलो नमः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥ त्वं गुणत्रयातीतः ।
 त्वमवस्थात्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं
 मूढाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो
 ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं-
 वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ गणादीन्पूर्वमु-
 चार्यं वर्णादींस्तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् ।
 तारेण रुद्रम् । एतत्तत्र मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो
 मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्तरूपम् । विन्दुरुत्तररूपम् । नादः
 सन्धानम् । सङ्ग्रहिता सन्धिः । सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः ।
 निचद्रायत्रीछन्दः । गणपतिर्देवता ॥ ॐ गणपतये नमः । एकदन्ताय
 विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ एकदन्त
 चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् । रत्नं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मृपकध्वजम् ॥
 रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः
 सुपूजितम् ॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च

नाशयति । सायम्प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । सर्वत्राधीयानोऽप-
 विज्ञो भवति । धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति ॥ इदमथर्वशीर्षमशि-
 प्याय न देयम् । यो यदि मोहाद्दास्यति । स पापीयान्भवति ॥
 सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते । तं तमनेन साधयेत् ॥ अनेन गणपति-
 मभिपिञ्चति । स वाग्मी भवति ॥ चतुर्थ्यामनभ्रञ्जपति । स विद्यावा-
 न्भवति ॥ इत्यथर्वणवाक्यम् ॥ ब्रह्माद्यावरणं विद्यान् विभेति कदा-
 चनोति ॥ यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति । स वैश्रवणोपमो भवति ॥ यो लाजैर्य-
 जति । स यशोवान् भवति । स मेधावान् भवति ॥ यो मोदकसहस्रेण
 यजति । स वाञ्छितफलमवाप्नोति ॥ यः साज्यसमिद्धिर्यजति । स
 सर्वं लभते स सर्वं लभते ॥ अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी
 भवति ॥ सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो
 भवति ॥ महाविघ्नात्प्रमुच्यते । महादोषात्प्रमुच्यते । महाप्रत्यवायात्प्रमु-
 च्यते ॥ स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति । य एवं वेद ॥ इत्युपनिषत् ॥
 ॥ इति गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

॥ १६५ ॥ अथ श्रीसूक्तम् ॥

ॐ हिरण्यवर्णाभितिपञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य आनन्दकर्मचिकीतेन्द्रि-
 रामुता ऋषयः श्रीदेवता आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः चतुर्थी वृहती पञ्चमीप-
 ष्ठी त्रिष्टुभौ ततोऽष्टावनुष्टुभः अन्त्या प्रस्तारपङ्क्तिः जपे विनियोगः ॥ हरिः
 ॐ हिरण्यवर्णाहरिणीसुवर्णरजतस्रंजाम् । चन्द्रो हिरण्यवर्णी लक्ष्मीजातवेदो-
 मुऽआवंह ॥ १ ॥ तामऽआवंह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरं-
 ष्यां विन्देयं गामभ्रं पुरुषान्नुहम् ॥ २ ॥ अश्वपूरं रथमध्यां ह्वस्तिनां दप्रशोधि-
 नीम् । श्रियं देवीमुपदये श्रीमां देवीं जुषनाम् ॥ ३ ॥ कांसोस्मि तां हिरण्यप्राका-

हृस्पतिर्वरुणंधनमश्विनौ ॥ वैनतेयसोमंपिवसोमंपिवतुष्ट्रहा । सोमंध-
 नस्यसोमिनोमह्यं ददातुसोमिः ॥ नक्रोधोनचंमात्सर्यं नलोभोनाशुभा-
 मतिः । भवन्ति कृतपुण्यां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ सरसिजनिलये
 सरौजहृस्ते धवलतरांशुगन्धमाल्यशोभे ॥ भगवति हरिवल्लभे मनो
 ज्ञेत्रिभुवनभूतिररिप्रसीत्यम् ॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधव-
 प्रियाम् ॥ लक्ष्मीं प्रियवीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ महालक्ष्मीं च-
 विद्महे विष्णुपत्नीं च धीम् ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ श्रीवैश्वमा-
 युष्यमारोग्यमाविधा च भवानंमहीयते ॥ धान्यंधनंपशुं बहुपुत्रलाभं-
 शतसंवत्सरं दीर्घमायुः इति श्रीसूक्तं समाप्तम् ॥

॥ १ ॥ अथ शिवमहिम्नःस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः । पुष्पदन्त उवाच ॥ महिम्नः पारं ते परमविदुषो
 यद्यसदृशी स्तुतिदीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥ अथावाच्यः
 सर्वः स्वमतिपरिवाधि गृणन्ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परि-
 करः ॥ १ ॥ अ पन्यानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्वावृत्त्या यं
 चकितमभिधत्तैरपि ॥ स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य
 विषयः पदे त्रीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥ मधुस्फीता
 वाचः परमर्षोर्मितयतस्तत्र ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ॥
 मम त्वेताः गुणरूयनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन
 बुद्धिर्व्यवा ३ ॥ तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षामलयकृन्नयीवस्तु
 व्यस्तं तिणभिन्नामु तनुषु ॥ अभव्यानामस्मिन्वस्द रमणीया-
 मरमर्णां व्यात्रोर्शां विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥ किमिहः
 किमाय उ किमुपायास्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजाति किमु-

पादान इति च ॥ अतर्क्यैश्वर्ये त्यय्यनवसरदुःस्थो हतधिपः कुतर्कोऽयं
 काश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥ अजन्मानो लोकाः किमवय-
 चन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति । अनीशो
 वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वा प्रत्यमरवर संशेरत
 इमे ॥६॥ त्रयी सार्व्व्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने
 परमिदमदः पथ्यमिति च ॥ रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुर्पा
 नृणामेको गम्यस्त्वमासि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥ महोक्षः खट्वाङ्गं पर-
 शुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेर्तायत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ॥
 सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रमणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृ-
 गतुष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥ ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो
 भ्रौव्याभ्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ॥ समस्तेऽप्येतास्मिन्पुरमध-
 न तैर्विस्मित इव स्तुवन् जिह्मेमि त्वां न खलु ननु घृष्टा मुखरता ॥९॥
 तवैश्वर्यं यत्ताद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरथः परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्क-
 न्धवपुषः ॥ ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्स्वयं तस्ये
 ताभ्यां तव किमनुश्रुतिर्न फलति ॥ १० ॥ अयत्नादापाद्य त्रिभुवनम-
 न्नैरव्यतिकरं दशास्यो यद्वाहनभृत् रणकण्डूपरवशान् ॥ शिरःपद्म-
 श्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जित-
 मिदम् ॥ ११ ॥ अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात्कै-
 ल्लासेऽपि त्वदाधिवसतौ विक्रमयतः ॥ अलभ्या पातालेऽप्यलसच-
 लिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वद्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुद्यति खलः
 ॥ १२ ॥ यदृद्धिं सुत्रांभ्यां वरद परमोच्चरापि सतीपथश्चक्रे वाणः
 परिजनविधेयत्रिभुवनः ॥ न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वचर-
 णयोर्न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वद्यवनतिः ॥ १३ ॥ अका-

षड्रह्माण्डक्षयचकित्तेदेवासुरकृपाविधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृत-
 वतः ॥ स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि
 श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥ असिद्धार्था नैव क्वचिदपि
 सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ॥ स
 पश्यत्रीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मान हि वशिषु
 पथ्यः परिभवः ॥ १५ ॥ मही पादाघाताद्भ्रजति सहसा संशयपदं
 पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भ्रजपरिघरुग्णग्रहगणम् ॥ मुहुर्घौर्दौस्थ्यं यात्यानि-
 भृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥
 वियद्वापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृपतलघु-
 दृष्टः शिरसि ते ॥ जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यने-
 नैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥ रथः क्षोणी यन्ता
 शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्राकौ रथचरणपाणिः शर इति ॥
 दिघक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु
 परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥ हरिस्ते साहस्रं कमलवलिमाधाय
 पदयोर्यद्वेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ॥ गतो भवत्युद्रेकः
 परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्
 ॥ १९ ॥ क्रतौ सुप्ते जाग्रस्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क कर्मप्रध्वस्तं फलति
 पुरुषाराधनमृते ॥ अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुपु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां
 चध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥ क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपाति-
 रधीशस्तनुभृतामृषीणामास्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ॥ क्रतुभ्रं-
 शस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय
 हे मत्वाः ॥ २१ ॥ प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं
 तैर्दिद्भृतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ॥ धनुष्पाणेर्पातं दिवमपि

सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥
 स्वलावण्याशंसा घृतघनुपमह्वाय तृणवत्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन
 पुष्पायुधमपि ॥ यदि ह्यैषं देवी यमनिरत देहार्थघटनादवैति त्वामद्वा
 वत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥ श्मशानेष्वक्कीडा स्मरहर
 पिशाचाः सहचराश्रिताभस्मालेषः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥
 अमङ्गल्यं शीलं तत्र भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तुर्णां वरद
 परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधर्मवधायान्त-
 परतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ॥ यदालोक्याह्लादं
 हृद इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यंतस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल
 भवान् ॥ २५ ॥ त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमा-
 पस्त्वं व्योम त्वमु धराणिरात्मा त्वमिति च ॥ परिच्छिन्नामेवं त्वयि परि-
 णता विभ्रतु गिरं नविन्नस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥ त्रयीं
 तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनापि सुरानकारार्द्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधतीर्ण-
 विकृति ॥ तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः समस्तव्यस्तं त्वां
 शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥ भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः
 सहमहांस्तथाभीमेशानाविति यदाभिघानाष्टकमिदम् ॥ अमुष्मिन्प्रत्येकं
 प्रविचरति देवश्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते
 ॥ २८ ॥ नमो नेदिष्ठाय प्रियदवदविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर
 मादिष्ठाय च नमः ॥ नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः
 सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥ २९ ॥ वहलरजसे विश्वोत्पत्तौ
 भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ॥ जनसुख-
 कृते सत्त्वोद्विक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निह्यैगुण्ये शिवाय
 नमो नमः ॥ ३० ॥ कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव

गुणसीमोलुंघिनी शश्वद्विद्धिः । इतिचकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
 द्वरदचरणयोस्ते वाग्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥ असितगिरिसमं स्यात्क-
 ज्जलं सिन्धुपात्रे सुस्तरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी । लिखति यदि गृहि-
 त्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥
 असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥
 सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार
 ॥ ३३ ॥ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभवत्या शुद्ध-
 चित्तः पुमान्यः ॥ स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः
 पुत्रवान्कीर्तिमांश ॥ ३४ ॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ॥
 अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥ दीक्षा दानं
 तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ॥ महिम्नःस्तवपाठस्य कलां
 नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥ कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशु-
 शशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ॥ सगुरुनिजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोपा-
 त्तस्तवनमिदमकार्षीदिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३७ ॥ सुरवरमुनिपूज्यं
 स्वर्गमोक्षकहेतुं पठति याद्वि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ॥ व्रजति
 शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तधर्णीतम्
 ॥ ३८ ॥ श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण क्लित्तिपहरेण हरमि-
 येण ॥ कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्म-
 हेशः ॥ ३९ ॥ इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ॥ अर्पिता
 तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४० ॥

। इति पुष्पदन्तगन्धर्वराजविरचितं त्रिशिवमहिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ १६७ ॥ श्रीमद्भगवद्गीतायाः पञ्चदशोऽध्यायः ।

श्रीभगवानुवाच ॥ ऊर्ध्वमूलमघःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् । छन्दा-
सि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥१॥ अघश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य
शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः । अघश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मा-
नुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥२॥ न रूपमस्यैह तयोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न
च सम्प्रतिष्ठा । अश्वत्थमेनं सुखिलमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्वा ॥३॥
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः । तमेव
चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥४॥ निर्मानमोहा जित-
सङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः । द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःख-
संज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥५॥ न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को
न पावकः । यद्भवा न निवर्तन्ते तद्भाम परमं मम ॥६॥ ममैवांशो जीव-
लोके जीवभूतः सनातनः । मनःपट्टानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥७॥
शरीरं यद्वाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः । गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्ग-
न्धानिवाशयात् ॥८॥ श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च । अधिष्टाय
मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥९॥ उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणा-
न्वितम् । विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥ यतन्तो योगि-
नश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् । यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्य-
चेतसः ॥११॥ यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् । यच्चन्द्रमसि
यच्चाप्रौ तत्तेशो विद्धि मामकम् ॥१२॥ गामाविश्य च भूतानि धारयाम्प-
हमोजसा । पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥१३॥ अहं
बैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं
चतुर्विधम् ॥१४॥ सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो यत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं
च । वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्देविविदेव चाहम् ॥१५॥ द्वाविमौ पुरुषौ

लोके क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते । १६ ।
 उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः । यो लोकत्रयमाविश्य विभ-
 र्त्यव्यय ईश्वरः । १७ । यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः । अतोऽस्मि
 लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः । १८ । यो मामैवमसम्मूढो जानाति पुरु-
 पोत्तमम् । स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत । १९ । इति गुह्यतमं शास्त्र-
 मिदमुक्तं मयाऽनघ । एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥
 इति श्रीमद्भगवद्गीतामूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णा-
 र्जुनसंवादे “श्रीपुरुषोत्तमयोगो” नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥

॥ १६८ ॥ अथ पुराणोक्तपुरुषसूक्तम् ॥

ॐ जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश
 महापुरुषपूर्वज ॥ १ ॥ नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानाव्यक्तरूपिणे । ॐ
 नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥ २ ॥ देवानां दानवानां च
 सामान्यमसि दैवतम् । सर्वदा चरणद्वंद्वं ब्रजामि शरणं तव ॥ ३ ॥
 एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टां संहारकस्तथा । अव्यक्तश्चानुमन्ता च गुण-
 मायासमावृतः ॥ ४ ॥ संसारसागरं धोरमनन्तं क्लेशभाजनम् । त्वामेव
 शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥ ५ ॥ न ते रूपं न चाकारो
 नायुधानि न चास्पदम् । तथापि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ ६ ॥
 नैव किञ्चित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽसि नै कस्यचित् । नैव किञ्चिदसिद्धं ते
 न च सिद्धोऽसि कस्यचित् ॥ ७ ॥ कार्याणां कारणं पूर्वं वचसां
 वाच्यमुत्तमम् । योगिनां परमा सिद्धिः परमं ते पदं विदुः ॥ ८ ॥

१ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इति प्राद्वणानाम् ऋग्विद्यानोक्तः पाठः ॥ २ सृष्टियंहार-
 कारः इत्यपि पाठः ३ प्रत्यक्षोऽसि न कस्यचित् इत्यपि पाठः । ४ परं ते परमं विदुः इत्यपि
 केचन पठन्ति ।

अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन्मयावहे । त्रादि मां पुण्डरीकाक्ष
न जाने शरणं परम् ॥९॥ कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ।
शरीरे च गृहे चापि वर्तते मे महद्भयम् ॥ १० ॥ त्वत्पादकमलादन्यत्र
मे जमान्तरेष्वपि । निमित्तं कुशलस्यास्ति येन गच्छामि सद्गतम् ॥११॥
विज्ञानं यदिदं प्राप्तं यदिदं ज्ञानमर्जितम् । जन्मान्तरेऽपि मे देव मा
भूदस्य परिक्षयः ॥ १२ ॥ दुर्गतावपि जातायां त्वं गतिस्त्वं मतिर्मम ।
यदि नायं च विन्देयं तावताऽस्मि कृती सदा ॥ १३ ॥ अक्रामकलुषं
चित्तं मम ते पादयोः स्थितम् । कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्मसु केव-
लम् ॥ १४ ॥ पुरुषस्य हरेः सूक्तं स्वर्ग्यं धन्यं यशस्करम् । आत्म-
ज्ञानमिदं पुण्यं योगज्ञानमिदं परम् ॥ १५ ॥ इत्येवमनया स्तुत्या
स्तुत्वा देवं दिनेदिने । किं करोऽस्मीति चात्मानं देवायैव निवेदयत् ॥१६॥
फलाहारो जपेन्मासं पश्यन्नात्मानमात्मानि । फलानि भुक्तोपवसेन्मा-
समद्भिश्च वर्तयेत् ॥ १७ ॥ अरण्ये निवसेन्नित्यं जपन्निदमृषिः सदा ।
ऋग्भिस्त्रिपवणं काले यजेदप्सु समाहितः ॥ १८ ॥ आदिरयमुपतिष्ठेत
सूक्तेनानेन नित्यशः । आज्याहुतेनैव हुत्वा चिन्तयेदपिभिस्तथा ॥१९॥
ऊर्ध्वं मासात्फलाहारस्त्रिभिर्वर्षैर्जपेदिदम् । तद्भक्तस्तन्मना युक्तो दश-
वर्षाण्यनन्यभाक् ॥ २० ॥ साक्षात्पश्यति तं देवं नारायणमनामयम् ।
ग्राह्यमत्यन्तयत्नेन स्रष्टारं जगतोऽव्ययम् ॥२१॥ अथवा साधमानोऽपि
भक्तिं न परिहापयेत् । भक्तानुरुम्पी भगवाञ्जायते पुरुषोत्तमः ॥२२॥
येन येन च कामेन जपेत प्रयतः सदा । सस कामः समृद्धः स्याच्छू-
धानस्य कुर्वतः ॥२३॥ होमं वाऽप्यथवा जाप्यमुपहारमनुत्तमम् । कुर्वति
येन कामेन तत्सिद्धिमवधारयेत् ॥ २४ ॥ इति पुराणोक्तपुरुषसूक्तम् ॥

॥ १६९ ॥ अथ चण्डीकवचम् ॥

ॐ नमश्चाण्डिकायै । मार्कण्डेय उवाच । ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वर-
क्षाकरं नृणाम् । यन्न कस्य चिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१॥ ब्रह्मो-
वाच । अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् । देव्यास्तु कवचं
पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥२॥ प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं
कात्यायनीति च । सप्तमं कालरात्रिश्च महागौरीति चाष्टमम् ॥४॥ नवमं
सिद्धिदा प्रोक्ता नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः । उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्म-
णैव महात्मना ॥५॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे । विपमे
दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं
रणसङ्कष्टे । नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं नहि ॥ ७ ॥ यैस्तु
भक्त्या स्मृता नूनं तेषामृद्धिः प्रजायते । प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही
महिषासना ॥ ८ ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना । माहेश्वरी
वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥९॥ लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता
हरिप्रिया । श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ॥१०॥ ब्राह्मी हंससमारूढा
सर्वाभरणभूषिता । इत्येता भातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ ११ ॥
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥१२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा
देव्यः क्रोधसमाकुलाः । शङ्खं चक्रं गर्दां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥१३॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च । कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायु-
धमुत्तमम् ॥ १४ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च । धार-
यन्त्यायुधानीत्यं देवानां च हिताय वै ॥ १५ ॥ नमस्तेऽस्तु
महारौद्रे महाघोरपराक्रमे । महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि
॥ १६ ॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्दिनि ॥ प्राच्यां रक्ष-

तु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥१७॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्ग-
 धारिणी । प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी । उदीच्यां रक्ष
 कौबेरी ईशान्यां शूलधारिणी ॥१८॥ ऊर्ध्वं ब्रह्मणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी
 तथा । एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ॥१९॥ जया मे चाग्रतः
 पातु विजया पातु पृष्ठतः । अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ॥२०॥
 शिखां मे द्योतिनी रक्षेद्दुर्गा मूर्ध्नि व्यवस्थिता । मालाधरी ललाटे च
 भ्रुवां रक्षेद्यशस्विनी ॥२१॥ त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।
 शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥२२॥ कपोलौ कालिका रक्षे-
 त्कर्णमूले तु शाङ्करी । नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका
 ॥२३॥ अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती । दन्तान् रक्षतु कौमारी
 कण्ठमध्ये तु चण्डिका ॥२४॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ।
 कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमङ्गला ॥२५॥ ग्रीवायां भद्रकाली च
 पृष्ठवंशे घनुर्धरी । नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकां नलकूबरी ॥२६॥
 खड्गधारिण्युभौ स्कन्धौ बाहू मे वज्रधारिणी । हस्तयोर्दण्डिनी रक्षे-
 दम्बिका चाङ्गुलीस्तथा ॥२७॥ नखाञ्जलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेन्नलेश्वरी ।
 स्तनौ रक्षेन्महालक्ष्मीर्मनश्शोकविनाशिनी ॥२८॥ हृदये ललिता देवी उदरे
 शूलधारिणी । नाभौ च कामिनी रक्षेद्दुर्गां गुह्येश्वरी तथा ॥२९॥ कठ्यां
 मगवती रक्षेज्जातुनी विन्ध्यवासिनी । भूतनाथा च मेढूं मे ऊरू
 महिषवाहिनी ॥३०॥ जङ्घे महाबला प्रोक्ता सर्वकामप्रदायिनी । गुल्फयो-
 र्नीरासिही च पादौ चामिततेजसी ॥३१॥ पादाङ्गुलीः श्रीर्भे रक्षेत्पादाधस्त-
 लवासिनी । नखान्दंष्ट्राकराली च केशाश्रैवोर्ध्वकेशिनी ॥३२॥ रोमरूपेषु
 कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा । रक्तमज्जावसापांसान्यस्थिमेदांसि
 पार्वती ॥३३॥ अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी । पत्रावती

पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ॥३४॥ ज्वालामुखी नखज्वाला अभेद्या सर्व-
 सन्धिषु । शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥३५॥ अहङ्कारं
 मनो बुद्धिं रक्ष मे धर्मचारिणी । प्राणापानौ तथा व्यानं समानोदान-
 मेव च ॥३६॥ यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च सदा रक्षतु वैष्णवी । गोत्र-
 मिन्द्राणी मे रक्षेत्पशुमे रक्ष चण्डिके ॥३७॥ पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भायां
 रक्षतु भैरवी । मार्गं क्षेमकरी रक्षेद्विजया सर्वतः स्थिता ॥३८॥ रक्षाहीनं
 तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु । तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पाप-
 नाशिनी ॥३९॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः । कवचेनावृतो
 नित्यं यत्र यत्राधिगच्छति ॥४०॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ॥
 यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥४१॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते
 भूतले पुमान् । निर्भयो जायते मर्त्यः सङ्गमेव पराजितः ॥४२॥ त्रैलोक्ये
 तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् । इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि
 दुर्लभम् ॥४३॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः । दैवी कला
 भवेत्तस्य त्रैलोक्येव पराजितः ॥४४॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥
 नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूनाविस्फोटकादयः ॥४५॥ स्थावरं जङ्गमं वापि
 कृत्रिमं चापि यद्विषम् । अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥४६॥
 भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः । सहजाः कुलजा मालाः
 शाकिनी डाकिनी तथा ॥४७॥ अन्तरिक्षचरा घोरा हाकिन्यश्च महाबलाः ।
 ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥४८॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा
 भैरवादयः । नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥४९॥ मानोन्नति-
 र्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् । यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डित-
 भूतले ॥५०॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा । यावद्भूमण्डलं
 घृत्ते सशैलवनकाननम् ॥५१॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ।

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ ५२ ॥ माम्नोति पुरुषो नित्यं
महामायाप्रसादतः ॥ ५३ ॥
॥ इति श्रीवाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ १७० ॥ अथ तान्त्रिकं रात्रिसूक्तम् ॥

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णो-
रतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि
वपट्कारः स्वरात्मिका ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका
स्थिता ॥ २ ॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ॥
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ३ ॥ त्वयैतद्द्वार्यते
विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पान्यते देवि त्वमत्स्पन्ते च
सर्वदा ॥ ४ ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा
संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥ महाविद्या महामाया महा-
मेधा महास्मृतिः ॥ महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ॥ ६ ॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ कालरात्रिर्महारात्रिमोहरा-
त्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं द्वीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥८॥ खड्गिनी शूलिनी
घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी वाणभुशुण्डीपरिघायुधा
॥९॥ सौम्या सौम्यतरा शेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा
त्वमेव परमेश्वरी ॥१०॥ यच्च किञ्चित्काचिद्दस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥ ११ ॥ यया
त्वया जगत्सृष्टा जगत्पात्यात्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः
कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥ विष्णुश्शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्यं
 प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्पावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४ ॥
 प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य
 हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ १५ ॥ इति तान्त्रिकं रात्रिमूक्तम् ॥

॥ १७१ ॥ शक्रादिकृता देवीस्तुतिः ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दु-
 रात्मनि सुरारिवले च देव्या ॥ तां तुष्टुषुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
 वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदा-
 त्मशक्त्या निशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ॥ तामंबिकामखिलदेवमह-
 र्षिपूजां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३ ॥ यस्याः
 प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च ॥ सा
 चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु
 ॥ ४ ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधि-
 यां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां
 नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥ किं वर्णयाम तव रूपमचि-
 न्त्यमेतत्किंचातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ॥ किंचाह्वेषु चरितानि तवाति-
 यानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुः समस्तजगतां
 त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाऽखिलाभिर्दं
 जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्याः
 समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मलेषु देवि ॥ स्वाहाऽ-
 सि वै पिठगणस्य च तृप्तिहेतुरुचार्यसे त्वमतएव जनैः स्वधा च
 ॥ ८ ॥ या मुक्तिहेतुराधिचिंत्य महाव्रता त्वमभ्यस्यसे मुनियतैर्द्रियत-

चत्सरैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसि सा भगवती
 परमा हि देवी ॥ ९ ॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथर-
 म्यपदपाठवतां च साम्नाम् ॥ देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
 चार्तासि सर्वजगतां परमार्तिहंत्री ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिताऽ-
 खिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसंगा ॥ श्रीः कैटभारिहृद-
 यैरुक्ताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ इष-
 त्सहासममलं परिपूर्णचंद्रविम्वानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ॥
 अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुपा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण
 ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भुक्नुवीकरालमुद्यच्छशांकसदृशच्छ-
 वियन्न सद्यः ॥ प्राणान्मुमोच महिपस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि
 कुपितांतकदर्शनेन ॥ १३ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो
 विनाशयसि कोपवती कुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं
 बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४ ॥ ते संमता जनपटेषु धनानि
 तेषां तेषां यशांसि न च सीदति बंधुवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृता-
 त्पजभृत्यदारा येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥
 धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृतीकरोति ॥
 स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन
 ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः स्वस्थैः स्मृता मातिम-
 तीव शुभा ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपका-
 रकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्हेतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु
 नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयांतु
 मत्वेति नूनमहिदान्विनिर्हंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्ट्वै किं न भवती प्रक-
 रोति भस्म सर्वासुरानरिपु यत्प्रहिणोपि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिप-

वोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु सा-त्री ॥१९॥ खड्ग-
 प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकातिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ य-
 न्नागता विळयमंशुपर्दिदुखंडयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥
 दुर्वृत्तवृत्तशमनं तवदेवि शीलं रूपं तथैतदविचिंत्यमतुल्यमन्यैः ॥ वीर्यं
 च हंतुं हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकृष्टितैव दया त्वयेत्यम् ॥ २१ ॥
 केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥
 चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२२॥
 त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥
 नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्मारुमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते
 ॥२३॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन
 नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च
 चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथे-
 श्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥
 यानि चात्यंतघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ खड्गशूलगदा-
 दीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष
 सर्वतः ॥ २७ ॥ ऋषिर्वाच ॥ २८ ॥ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमै-
 नैर्दनोद्भवैः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गधानुलेपनैः ॥ २९ ॥
 भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ॥ प्राह प्रसादसुमुखी सम्-
 स्तान्प्रणतान्सुरान् ॥ ३० ॥ देव्युवाच ॥ ३१ ॥ त्रियतां त्रिदशाः सर्वे
 यदस्मत्तोऽभिर्जाडितम् ॥ ३२ ॥ देवा ऊचुः । ३३ ॥ भगवत्या कृतं
 सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥३४॥
 यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरी ॥ संस्मृता संस्मृता त्वन्नो
 हिंसेयाः परमापदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यः स्तत्रैरोभिस्त्रां स्तोप्यत्यम

लानने ॥ तस्य वित्तधिंविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ॥ ३६ ॥ वृद्धयेऽस्म-
त्पसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाऽम्बिके ॥ ३७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥
इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्रकालीं वभू-
वांतर्हिना नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ॥
देवी देवशरीरेभ्यो जगन्नयहितैषिणी ॥ ४० ॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा-
समृद्धता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुभनिशुंभयोः ॥ ४१ ॥
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ॥ तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं
यथावत्कथयामि ते ॥ ह्रीं ॐ ॥ ४२ ॥ इति शक्रादिकृता देवीस्तुतिः ॥

॥ १७२ ॥ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ॥ न जाने मुद्रास्ते
तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम्
॥ १ ॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तत्र
चरणयोर्या च्युतिरभूत् ॥ तदेतत्सन्तव्यं जननि सकलो-
द्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत कचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः संति सरलाः परं तेषां मध्ये विरल-
तरलोऽहं तव सुतः ॥ मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत कचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥ जगन्मातर्मातस्तत्र
चरणसेवा न रचिता न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ॥
तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरूपे कुपुत्रो जायेत कचिदपि
कुमाता न भवति ॥ ४ ॥ परित्यक्त्वा देवान्विविधविधिसेवाकुलतया
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ॥ इदानीं चेन्मातस्तत्र यदि

कृपा नापि भविता निरालंबो लंबोदरजननि कं यापि शरणम् ॥ ५ ॥
 श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा निरातंको रंको विहरति
 चिरं कीटिकनकैः ॥ तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलामिदं जनः
 को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥ चिताभस्मालेपो
 गरलमशनं दिक्पटधरो जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ॥
 कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरि-
 पाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥ न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववाञ्छाऽपि
 च न मे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः । अतस्त्वा
 संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृदानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति
 जपतः ॥ ८ ॥ नाराधिताऽसि विधिना विविधोपचारैः किं रुक्षचित्त-
 नपरैर्न कृतं वचोभिः ॥ श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाये धत्से
 कृपाश्रुचितमंब परं तवैव ॥९॥ आपत्सु ममः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे
 करुणार्णवोशि ॥ नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरंति
 ॥१०॥ जगदेव विचित्रमत्र किं परिपूर्णां करुणाऽस्ति चेन्मयि ॥ अपराध-
 परम्परावृत्तं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥ मत्समः पातकी नास्ति
 पापघ्नी त्वत्समा न हि ॥ एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥
 ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ १७३ ॥ अथ कुञ्जिकास्तोत्रम् ॥

ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकामन्त्रमुत्तमम् ॥ येन
 मन्त्रप्रभावेण चण्डीपाठफलं लभेत् ॥ १ ॥ न धर्म नागंलास्तोत्रं कीलकं
 न रहस्यकम् ॥ न सूक्तमपि न ध्यानं न न्यासस्थ न पूजनम् ॥ २ ॥
 कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ॥ अतिगुह्यतरं देवि देवानामपि
 दुर्लभम् ॥ ३ ॥ स्वयोनियतप्रयत्नेन गोपनीयं हि पार्थति ॥ मारणं मोहनं

वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ॥ कुत्रिकोत्तममन्त्रस्य पाठमात्रेण
सिद्धयति ॥ ४ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रूं ह्रूं जूं सः ज्वल ज्वल
प्रज्वल प्रज्वल मन्त्र प्रज्वल ह्रूं स्रूं ल्रूं क्षीं फट्स्वाहा ॥ नमस्ते रुद्ररूपायै
नमस्ते मधुमर्दिनि ॥ नमस्ते कैटभारिण्यै नमस्ते महिवासनि ॥ १ ॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥ जागृहि धीमहादेवि
जुपसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ १ ॥ ऐंकारिसृष्टिरूपायै ह्रींकारिप्रतिपालिके ॥
ह्रींकारिकालरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ चामुण्डाचण्डना-
शिन्यै त्रैकारि धरदायिनि ॥ विद्ये नोऽभयदे नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ४ ॥
धौं धौं ध्रूं ध्रूं जंटेः पतिं धौं धौं वागीश्वरीति च ॥ कां क्रीं कूं कालिके देवि श्रौं ध्रौं-
श्रूं ध्रीं शुभं कुरु ॥ ५ ॥ ह्रूं ह्रूं ह्रूं काररूपिण्यै जं जं जं भालनादिनि ॥ भ्राम्रौं ध्रूं भैरवी
भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ६ ॥ ॐ अं कचं हंतं पैयं सयिन्दुराविमर्दय विमर्दय
लक्षं मलय मलय जाग्रय जाग्रय श्रोत्रय श्रोत्रय दीप्तं कुरु दीप्तं कुरु स्वाहा ॥
पाँ पाँ पूँ पार्वति पूर्णं खौं खौं ध्रूं खेचरीति च ॥ साँ साँ स्रूं सप्तशति सिद्धिं कुरुष्व
जपमात्रतः ॥ ७ ॥ इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागृतिहेतवे ॥ अमक्ताय न
दातव्यं गोपनीयं हि पार्वति ॥ ८ ॥ कुञ्जिकारहितां देवि यस्तु सप्तशतीं
पठेत् ॥ न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥ ९ ॥

॥ इति डामरतन्त्रे ईश्वरपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ १७४ ॥ शीतलाष्टकम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अस्य श्रीशीतलास्नोत्रस्य महादेव ऋषिः ॥
भजुष्टुप् छन्दः ॥ शीतला देवता ॥ लक्ष्मी बीजम् ॥ भवानी शक्तिः ॥
सर्वविस्फोटकनिवृत्तये जपे विनियोगः ॥ ईश्वर उवाच ॥ वन्देऽहं शीतलां
देवीं रासभस्यां दिगम्बराम् ॥ मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम्
॥ १ ॥ वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥ यामासाद्य नियतैत
विस्फोटकभयं महत् ॥ २ ॥ शीतले शीतले वेति यो श्रूयाद्धारपीडितः ॥
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वामुदकमध्ये तु
धृत्वा पूजयते नरः ॥ विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ४ ॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च ॥ प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जी-

वनौषधम् ॥ ५ ॥ शीतले तनुजान्‌रोगानृणां हरसि दुस्त्यजान् ॥ विस्फोटकविदीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥ ६ ॥ गलगंडग्रहा रोगा ये चान्ये दारणा नृणाम् ॥ त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥ ७ ॥ न मन्त्रा नौषध तस्य पापरोगस्य विद्यते ॥ त्वामेकां शीतले धार्त्री नान्या पश्यामि देवताम् ॥ ८ ॥ मृणालतन्तुसदृशी नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥ यस्त्वां संचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ ९ ॥ अष्टक शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा ॥ विस्फोटकमयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ १० ॥ श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः ॥ उपसर्गविनाशाय पर स्वस्त्ययन महत् ॥ ११ ॥ शीतले त्व जगन्माता शीतले त्व जगत्पिता ॥ शीतले त्व जगद्धात्री शीतलायै नमोनमः ॥ १२ ॥ रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनन्दनः ॥ शीतलावाहनश्चैव दुर्वाकन्दनिकुन्तनः ॥ १३ ॥ पतामि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत् ॥ तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुद्र न जायते ॥ १४ ॥ शीतलाष्टकमेवेदं न देय यस्य कस्यचित् ॥ दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे शीतलाष्टकस्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ १७५ ॥ विष्णोरष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथेत्यादिपुं पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं ममेप्सितकामनासिद्धयर्थं श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं तद्विद्याष्टोत्तरशतनामभिः अष्टोत्तरशतसंख्याकममुकद्रव्यसमर्पणं करिष्ये ॥ अथ ध्यानं ॥ शांताकार भुजगशयन पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥ लक्ष्मीकांत कमलनयन योगिभिर्ध्यानगम्यं वदे विष्णुं भवभयहर सर्वलोकैकनाथम् ॥ ॐ विश्वस्मै नमः । विष्णवे० वषट्काराय० भूतभयभयवत्प्रभवे० भूतहृते० भूतभूते० भाग्य० भूतात्मने० भूतभावनाय० पूतात्मने० परमात्मने० मुक्तानां परमायै गतये० अन्यथाय० पुत्रपाय० साक्षिणे० क्षेत्रज्ञाय० अक्षराय० योगाय० योगचिदां नेत्रे० प्रधानपुरुषेश्वराय० नारसिंहवपुषे० श्रीमने० केशवाय० पुरुषोत्तमाय० सर्वाय० शर्वाय० शिवाय० स्वर्णवे० भूतादये० निधये० अव्ययाय० संभवाय० भावनाय० भर्त्रे० प्रमवाय० प्रभूते० ईश्वराय० स्वयंभुवे० शंभवे० आदित्याय० पुण्डरीकाय० महास्वनाय० अनादिनिधनाय० धात्रे० विधात्रे० घातुकृत्-

माय० अप्रमेयाय० हृषीकेशाय० पद्मनाभाय० अमरप्रभवे० विश्वकर्मणे०
मनत्रे० त्वष्ट्रे० स्थविष्टाय० स्थविरधुवाय० अप्राह्वाय० शाश्वताय०
कृष्णाय० लोहिताक्षाय० प्रतर्दनाय० प्रभूताय० विककुम्भाक्षे० पवित्राय०
मंगलाय० परस्मै० ईशानाय० प्राणदाय० प्राणाय० ज्येष्ठाय० श्रेष्ठाय०
प्रजापतये० हिरण्यगर्भाय० भृगुर्भाय० माधवाय० मधुसूदनाय० ईश्वराय०
विक्रमिणे० धन्विने० मेघाविने० विक्रमाय० क्रमाय० अनुत्तमाय० दुराध-
र्षाय० कृतज्ञाय० कृतये० आत्मवते० सुरेशाय० शरणाय० शर्मणे० विश्व-
रेतसे० प्रजाभवाय० अहाय० संवत्सराय० व्यालाय० प्रत्ययाय० सर्वदर्श-
नाय० अजाय० सर्वेश्वराय० सिद्धाय० सिद्धये० सर्वाद्देवे० अच्युताय०
वृषारूपये० अमेयात्मने० सर्वयोगविनिःसृताय० धसवे० वसुमनसे० सत्या-
य० (वनमालिने० देवकीनन्दनाय नमः) ॥ १०८ ॥

॥ अनेनाष्टोत्तरशतनामसंख्याकामुक्त्वव्यसमर्पणेन भगवान् श्रीमहाविष्णुः
प्रीयताम् ॥

॥ १७६ ॥ विष्णोर्नाराजनम् ॥

जयदेव २ वन्दे गोपालं प्रभु व० मृगमदशोभितभालं कहणा कल्लोलम् ॥
जयदेव० ॥ निर्गुणसगुणाकारं संहतभूभारम् १ कहणापारावारं गोवर्धन-
धारम् । कुञ्चितकुंतलनीलं शरदिन्दुवदनम् २ मणिगणमण्डितकुण्डलरा-
जच्छ्रुतिगुगलम् ॥ जयदेव० ॥ १ ॥ फुलेन्दीवरनयनं विलसितभ्रूयुगलम् २
विंशाधरमतिसुन्दरनासामणिलोलम् ॥ कम्बुम्रीवं कौस्तुभमणिकण्ठाभर-
णम् २ श्रीचरसाङ्कितवक्षोर्लवितवनमालम् ॥ जयदेव० ॥ २ ॥ मुरलीवा-
दनलीलासप्तस्वरगीतं २ जलचरस्थलचरचररञ्जितसमगीतम् ।
निर्मलयमुनातीरे अगणिततवचरितं २ गोपीजनमनमोहन दधतं श्रीका-
न्तम् ॥ जयदेव० ॥ ३ ॥ रासकीडामण्डितवेष्टितजललनम् २ मध्येता-
ण्डवमण्डितकुवलयदलनयनम् ॥ कुसुमाकारं रञ्जितमन्दस्मितवदनम् २
कालियकणिवरदमनं पक्षीश्वरगमनम् ॥ जयदेव० ॥ ४ ॥ किंकिणिमेल-
लमध्ये पीताम्बरवसनम् १ तोडरनूपुरगर्जितविलसितभ्रूयुगलम् ।
गोपीजनपरिवेष्टितयमुनातटसंस्थं २ दासामयदं सुखदं भुवनत्रयपालम् ॥
जयदेव० ॥ ५ ॥ मासुरमणिगणराजितभूपणलसदंगं २ मृगमदकेशरभालं
पदनखभयमङ्गम् । विश्वंभरहेस्वामिधगणितगुणसंगं २ त्वामहमीडे
माधव तर्तु भयमङ्गम् ॥ जयदेव० ॥ ६ ॥

॥ १७७ ॥ श्रीशिवनीराजनम् ॥

ॐ जय गङ्गाधर हर शिव, जय गिरिजाधीश, त्वं मां पालय
 कृपया जगदीश ॥ हरहरहरमहादेव ॥ कैलासे गिरिशिखरे, कल्पद्रुमविपिने
 शिव० ॥ गुंजति मधुकरपुंजे, कुंजवने गहने ॥ हरहर० ॥ कोकिलकूजति
 खेलति, हंसावनललिता ॥ शिव० ॥ रचयति कलाकलापं, नृत्यति
 मुदसहिता ॥ हरहर० ॥ तस्मिँल्ललितसुदेशे, शाला मणिरचिता ॥ शिव०
 तन्मध्येहरनिकटे, गौरी मुदसहिता ॥ हरहर० ॥ क्रीडां रचयति भूपा,
 रंजितनिजमीशम् ॥ शिव० ॥ ब्रह्मादिकसुरसेवित, प्रणमति ते शीर्षम् ॥
 ॥ हरहर० ॥ विद्युधवधू बहु नृत्यति, हृदये मुदसहिता ॥ शिव० ॥
 किन्नरगानं कुरुते, सप्तस्वरसहिता ॥ हरहर० ॥ धिनकतथैधिनकत,
 मृदङ्गवादयते ॥ शिव० ॥ कणकणललितसुवेषुर्मधुरं नादयते ॥ हरहर० ॥
 रुण्णुधरणे रचयति, नूपुरमुज्वलिता ॥ शिव० ॥ चक्रावर्ते भ्रमयति
 कुरुते तां धिक् ताम् ॥ हरहर० ॥ तांतां लुपचुप तालं, मधुरं नादयते ॥
 शिव० ॥ अंगुष्ठाङ्गुलिनादं, लास्यकतां कुरुते ॥ हरहर० ॥ कर्पूरद्युतिगौरं,
 पंचाननसहितम् ॥ शिव० ॥ त्रिनयनशशिधरमौले, विषधरकण्ठयुतम् ॥
 हरहर० ॥ सुन्दरजटाकलापं, पावकयुतभालम् ॥ शिव० ॥ त्रिशूलडमरु-
 पिनाकं, करधृतनृकपालम् ॥ हरहर० ॥ शंखनिनादं कृत्वा, झल्लरी
 नादयते ॥ शिव० ॥ नीराजयते ब्रह्मा, वेद ऋचां पठते ॥ हरहर० ॥
 इतिमृदुचरणसरोजे, हृदिकमले धृत्वा ॥ शिव० ॥ अवलोकयति महेशम् ॥
 ईशम् अभिनत्वा ॥ हरहर० ॥ रुंडरचितउरमाला, पद्मगमुपपीतम् ॥
 ॥ शिव० ॥ घामविभागे गिरिजा, रूपम् अतिललितम् ॥ हरहर० ॥
 सकलशरीरे मनसिज, कृतमसाभरणम् ॥ शिव० ॥ इतिवृषभध्वजरूपं,
 तापश्रयहरणम् ॥ हरहर० ॥ ध्यानम् आरतिसमये, हृदये इतिगृत्वा ॥
 शिव० ॥ रामं त्रिजटानाथम् ईशम् अभिनत्वा ॥ हरहर० ॥ प्रतिदिनमेवं
 पठनं संगीतं कुरुते ॥ शिव० ॥ शिवसायुज्यं गच्छति, भक्त्या यः
 शृणुते ॥ हरहर० ॥ १७ ॥

॥ १७८ ॥ देवीनीराजनम् ॥ पृष्ठ २१९ ॥

॥ इति स्तोत्रादिसंप्रदात्मकः अष्टमो विभागः ॥

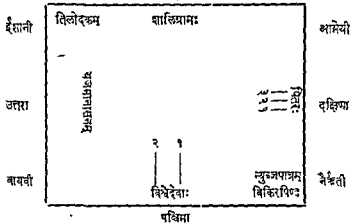
परिशिष्टप्रकरणम् ।

॥ १७९ ॥ वैदिकमहालयचतुश्राद्धप्रयोगः ।

॥ १८० ॥ टिप्पणीस्थ-मासिक-सांवत्सरिक-श्राद्धसहितः ।

॥ श्राद्धमण्डलम् ॥

पूर्वा



श्रीगणेशाय नमः ॥ तत्रादौ ब्रह्मयज्ञपूर्वकानित्यतर्पणविष्णुपूजनादिकं कृत्वा श्राद्धारम्भः कर्तव्यः । तत्रादौ देवस्थाने द्वौ चतौ पितृस्थाने त्रयश्चतस्रः स्थापनीयाः । महाविष्णुस्थाने शालिग्रामः चतौ वा ॥ देवस्थानीययोश्चतयोर्मुखं पूर्वस्यां पितृस्थानीयानां मुखम् उत्तरस्यां च महाविष्णुस्थानीयस्य मुखं पश्चिमस्यां दिशि कर्तव्यम् । एवं श्राद्धेषु सर्वत्र बोध्यम् । श्राद्धकर्ता स्वयं पूर्वाभिमुखो ब्रह्मयज्ञतो विष्णुपूजनान्तं सर्वं समाप्य दक्षिणाभिमुखः श्राद्धमाचरेत् अपि तु विष्णोः पूजने पूर्वाभिमुखो विश्वेदेवानां पूजने पश्चिमाभिमुखः पित्र्यादीनां पूजने पिण्डदाने च दक्षिणाभिमुखो भूत्वा सर्वश्राद्धं कुर्यात् ॥

आचम्य प्राणानायम्य । पवित्रधारणम् । ॐ पुवित्रैस्त्यो० ॥
अत्रावसरे घृतपूरितं दीपं प्रज्वालयेत् ॥

संकल्पः-अथ पू० तिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं कुरुकुत्ससंज्ञकानां विश्वेषां देवानां तथा च द्वितीयविश्वेषां देवानाम् (अपसव्यं कृत्वा) अमुकगोत्राणाम् अस्मत्पितृ-पितामह-प्रपितामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणाम् अमुकामुकानां, द्वितीयगोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धममातामहानां सपत्नीकानां वसु० अमुका० गोत्राणां मदीयसमस्तपूर्वजानां (पत्नी-सुत-पितृव्य मातुल-भ्रातृ-पितृष्व-सृ-मातृष्वसृ-आत्मभगिनी-श्वशुर-गुर्वाप्तानां चात्र सर्वेषामूहः कार्यः) मम पितुर्वा अमुकस्य कन्यागते सवितरि महालयापरपक्षश्राद्धं विश्वेदेवपूर्वकम् अर्घ्यपिण्डसहितं गयागमनादिश्राद्धफलप्राप्त्यर्थं पार्वणिकोद्दिष्टविधिना सद्यः करिष्ये ॥ (सव्यम्) यवान गृहीत्वा । श्राद्धकर्ता स्वदक्षिणहस्तेन प्रथमदेवस्थानीयं दर्भचटं स्पृष्ट्वा 'दैवे क्षणः क्रियताम्' तथा 'प्राप्नोतु भवान् । प्राप्नवानि' ॥ अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः ॥ भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा ॥ सर्वायासविनिर्मुक्तैः कामक्रोधविवर्जितैः ॥ भवद्भिर्देवकार्यं नः संपाद्यं मे प्रसीदत ॥ कुरुकुत्ससंज्ञकाः विश्वेदेवाः आगतं वः । सुस्वागतम् ॥ एतद्दः पार्थं पादावनेजनं पादमक्षालनम् एष वोऽर्घ्यः ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० ॥ कुरुकुत्स-

१. मासिके सांस्वरिके च "पुरवार्दसंज्ञकौ विश्वेदेवौ" ॥ (वाचस्पती इष्टिभ्राद्धे ऋतुर्दक्षो नान्दी सव्यवसु तथा । पुरुवार्द्वेवौ चाब्दे तीर्थे व धूरिलोचनो । कालनामौ सपिण्ड्यां व कुरुकुत्सो महालये ॥) २. मासिके सांस्वरिके च-अमुकगोत्राणाम् अस्मत्पितृ पितामह-प्रपितामहानाममुकामुकार्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणिकविधिना मम पितुः अमुकमासिकश्राद्धमहं करिष्ये ॥ (सांस्वरिके) सांस्वरिकश्राद्धमहं करिष्ये ॥ मातुलमासिके सांस्वरिके च अमुकगोत्राणाम् अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां पार्वणिकविधिना मम मातुः अमुकमासिकश्राद्धमहं करिष्ये ॥ (सांस्वरिके) सांस्वरिकश्राद्धमहं करिष्ये ॥

संज्ञकाः विश्वेदेवाः एष वोऽर्घ्यः संपद्यताम् । अस्तु पादार्घ्यः । एवं द्वितीयचटे
क्षणमर्घ्यं च दद्यात् ॥ (अपसव्यम् ।) तिष्ठान्मृहीत्वा । श्राद्धकर्ता
प्रथमपितृस्थानीयचटं स्पृष्ट्वा ' पित्र्ये क्षणः क्रियताम् ' तथा ' प्राप्नोतु
भवान् । प्राप्नवानि ' । अक्रोधनेः० ॥ भवाद्भिः पितृकार्यं नः संपाद्य
मे प्रसीदत । अमुकगोत्राः अस्मत्पितृ-पितामह-प्रपितामहाः सपत्नीकाः
अमुकामुकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः आगतं वः । सुस्वागतम् ॥
एतद्वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनम् एष वोऽर्घ्यः ॥ ॐ
पितृर्भ्यः+स्वध्यायिर्भ्यः+स्वधानम+पितामहेर्भ्यः+स्वध्यायिर्भ्यः+स्वधा-
नमुदं ष्वपितामहेर्भ्यदंस्वध्यायिर्भ्यः+स्वधानम+ । अक्षिपितरोमीम-
दन्तपितरोतीतृपन्तपितरुदं पितरुदंशुन्धदध्वम् ॥ ३६ ॥ इति मन्त्रेणार्घदानम् ॥
द्वितीयपितृस्थानीयचटं स्पृष्ट्वा । क्षणादिकं दत्त्वा ॥ द्वितीयगोत्राः
मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः अमुकामुकाः वसुरुद्रा-
दित्यस्वरूपाः आगतं वः । सुस्वागतम् ॥ एतद्वः पाद्यं पादावनेजनं
पादप्रक्षालनम् एष वोऽर्घ्यः ॥ ' ॐ पितृर्भ्यः+० ' ॥ इति मन्त्रेणार्घ-
दानम् ॥ तृतीयपितृस्थानीयचटं स्पृष्ट्वा । क्षणादिकं दत्त्वा नानाविध-
गोत्राः अस्मदेकोद्विष्टसमस्तपूर्वजा अमुकामुकाः वसुस्वरूपाः आगतं
वः । सुस्वागतम् ॥ एतद्वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनम् एष
वोऽर्घ्यः ॥ ' ॐ पितृर्भ्यः+० ' ॥ इति मन्त्रेणार्घदानम् ॥ (सव्यम् ॥)
शालिग्रामं स्पृष्ट्वा क्षणादिकं दत्त्वा । अतिथये महाविष्णवे नमः
एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनमेष तेऽर्घ्यः । ॐ सुहृत्संशीर्षा० ॥
महाविष्णवे ष्य तेऽर्घ्यः ॥ स्वपादकरान् प्रक्षाल्याचम्य प्राणानायम्य ॥

१ मामिके सावत्सरिके च-एकचटपक्षेऽयं विधिः । यदा त्रयश्वयास्तदा पित्रादीनां
भिन्ने भिन्नं क्षणादिकं कर्तव्यम् । यथा-अमुकगोत्र अस्मत्पितः अमुकगर्भं वसुस्व आगतम् ।
सुस्वागतम् ॥ एवं पितामहस्य प्रपितामहस्यापि । सर्वभित्तवि विद्या एवं भिन्नकर्मो, ज्ञेयः ॥

(अपसव्यम् ॥) तिलाक्षतैर्दिग्बन्धः कार्यः । अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्रार्चीं रक्षन्तु मे दिशम् ॥ तथा वर्हिषदः पान्तु याम्यां ये पितरस्तथा ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः ॥ उद्ध्वृतस्त्व-
र्यमा रक्षेत् कव्यवाडनलोऽप्यधः ॥ -रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुर-
द्रूपितः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ॥ वायुभू-
त्पितृणां च तृप्तिर्भवति शाश्वती ॥ य इमं श्राद्धकाले तु
कुर्याद्द्वि पितृपंजरम् ॥ अक्षयं तद्भवेच्छ्राद्धं पितृभ्यः परिरक्षतु ॥
तिला रक्षंत्वसुरात् (सव्यम्) दर्भा रक्षन्तु राक्षसात् । पंक्ति वै
श्रोत्रियो रक्षेदातिथिः सर्वरक्षकः ॥ (अपसव्यम् ।) दक्षिणकटौ नीवी-
बन्धनम् । तिलकुशानादाय ॥ सोमस्यनीविरसिद्विष्णोर्दं शर्मोसिश-
र्मवर्जमानस्येन्द्रस्ययोनिरसिसुसस्याः कूपीस्कृधि ॥ १० ॥ इति मन्त्रेण
नीवीबन्धनम् ॥ (सव्यम्) कुशोपरि भूमिप्रार्थना । श्राद्धभूमौ गयां
ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ॥ ताभ्यां कृत्वा नमस्कारं ततः श्राद्धं
प्रवर्त्तयेत् ॥ सप्तव्याधा दशारण्ये मृगाः कालंजरे गिरौ ॥ चक्रवाकाः
शरद्वीपे हंसाः सरासि मानसे ॥ तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपा-
रगाः ॥ प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं तेभ्योऽवसीदथ ॥ देवताभ्यश्च
(अपसव्यम्) पितृभ्यश्च (सव्यम्) महायोगिभ्य एव च ॥
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ गयायां पितृरूपेण
स्वयमेव जनार्दनः ॥ तं ध्यात्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात् ॥
तिलोदककरणम्—ईशानकोणे त्रिदर्भासनम् । आसने पार्श्वं पात्रे
शन्नो देवीरिति जलपूरणम् ॥ ॐ शन्नोदेवी० ॥ ॐ पवित्रैस्त्यो० इति

१ सर्व्व नीवी तु विप्रस्य चतुर्दशैश्च संयुता । एकैकन्यूनमात्रेण वर्णे वर्णे यथाकामात् ।
पुनश्च-सव्यं नीवी तु विप्राणामपसव्यं (वर्णं) प्रमात्मके । वर्णभेदं न जानाति निराशाः पितरो
गताः ॥ परच-का० १० सू० श्राद्धप्रयोगे-तिलकुशान्वितानां पलाशपत्रे (आच्छादितानां) परिहि-
रःस्थितदशानां वामकटिखलप्रवक्ष्यदिर्भागेन संवेष्ट्य गोपनम् कुर्यादेतन्नीवीबन्धनमुच्यते ॥

नवदर्भात्मककुशकूर्चप्रक्षेपः ॥ यवोसीति यवाः । ॐ यवोऽसियवया-
 स्मद्वेषोयवयारातीद्विवेचान्तरिक्षायच्वा पृथिव्यैच्वाशुन्धन्ताँल्लोकाः
 पितृपदनां पितृपदनमसि ॥ ३६ ॥ तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवो
 देवनिर्मितः ॥ पृत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ।
 इति तिलप्रक्षेपः ॥ 'त्वाङ्गन्धर्वा०' इति गंधप्रक्षेपः । तूष्णीं पुष्पम् ॥
 तुलसीशतपत्राणि भृंगराजस्तथैव च ॥ मालती मोगरं चैव पितृणां
 दक्षप्रक्षयम् ॥ तूष्णीं पूगीफलम् । हिरण्यप्रक्षेपः ॥ पुनन्तुमेति नव-
 भिस्तिलोदकाभिमन्त्रणम् ॥ ॐ पुनन्तुमापितरंः सोम्यासंः पुनन्तु
 मापितामहाः पुनन्तुप्पापितामहाः ॥ पवित्रेणशुतायुंपा ॥ पुनन्तुमापितामहाः
 पुनन्तुप्पापितामहाः ॥ पवित्रेणशुतायुंपाद्विश्वमायुर्ह्यश्नवै ॥ १ ॥ अग्नोऽ-
 आयुः ॥ पिपवसः ॥ आसुवोर्जमिषश्चनदं ॥ अरेवाधस्वदुच्छुनाम् ॥ २ ॥
 पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधिर्यः ॥ पुनन्तुद्विश्वाभूतानिजातवे-
 दं पुनीहिमा ॥ ३ ॥ पवित्रेणपुनीहिमाशुक्लेणदेवदीर्घात् ॥ अग्ने-
 क्रत्वाक्रतुँऽरनु ॥ ४ ॥ यत्तेपवित्रंमर्चिष्यग्नेद्विततमन्तरा । ब्रह्मतेन-
 पुनातुमा ॥ ५ ॥ पवमानोऽसोऽअद्यनः पवित्रेणद्विर्चर्षणिदं । यः
 पोतासपुनातुमा ॥ ६ ॥ उभाभ्यान्देवसावितदंपवित्रेणसुवेनच ॥
 माम्पुनीहिद्विश्वतः ॥ ७ ॥ इश्वदेवीपुनुतीदेहयागुह्यस्यामिमाबुह्य-
 स्तुत्रोवृतिपुष्पादं ॥ तयामदन्तदं सधुमादंपुह्यस्वामुपतयोरयीणाम्
 ॥ ८ ॥ ३७-३४ चिचपतिर्मापुनातुष्टावपतिर्मापुनातु देवोमासावितापु-
 नाचवच्चिद्वेणपवित्रेणमूर्ध्वस्य रश्मिभिः ॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रं पूत-
 स्ययस्कांमदंपुनेतच्छक्रेयम् ॥ ९ ॥ ३५ ॥ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः
 सरितस्तथा ॥ आगच्छन्तु पवित्राणि श्राद्धकाले सदा मम ॥

ततः कुशकूर्चेण श्राद्धीयद्रव्यप्रोक्षणम् ॥ अपवित्रः पवित्रो वा
 सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

तत एकस्मिन्पात्रे तिलोदकं गृहीत्वा तज्जलं ॐ यद्देवादेवुहेडनुन्देवास
 श्वकृमाद्ययम् ॥ अग्निर्मातस्मुदिनेसोविश्वान्द्रमुश्चवृहसदं ॥ १ ॥
 ॐ यद्विदिवुयदिनक्तुमेनाँसिचकृमाद्ययम् ॥ द्वायुर्मातस्मुदिनेसो
 विश्वान्द्रमुश्चवृहसदं ॥ २ ॥ ॐ यद्विजाग्रदद्यादिस्वप्नुऽएनाँसि
 चकृमाद्ययम् ॥ सूर्व्योमातस्मुदिनेसोविश्वान्द्रमुश्चवृहसदं ॥ ३ ॥
 इति त्रिभिर्मंत्रैर्गायत्र्या चाभिमन्त्र्य पाकशालायां गत्वा (अपसव्येन)
 पाकप्रोक्षणम् ॥ उदक्यादिक्षुद्रदृष्टिनिपातिताः पाकादिदोषाः पाकादीनां
 पवित्रताऽस्तु ॥ देशकालपाकपात्रद्रव्यश्रद्धासंपदस्तु ॥ सर्वे पाकाः
 शुचयो भवन्तु ॥ (सव्यम्) आसने उपविश्य । अद्यपूर्वोऽतिथौ कुरुकु-
 त्ससंज्ञकानां विश्वेषां देवानां (अपसव्यम्) गोत्राणां पितृपितामहप्रपि-
 तामहानां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामह-
 नां सपत्नीकानां मम सप्तपूर्वजानां मम पितुर्वा कन्यागते सवितरि
 महालयापरपक्षश्राद्धं पार्वणं विश्वेदेवपूर्वकम् अर्घ्यपिण्डसहितं युष्म-
 दनुज्ञयाऽहं करिष्ये । कुरुष्व ॥ (सव्यम्) आसनदानम् । देव-
 दाक्षिणे आसनार्थे द्वौ दर्भौ दद्यात् ॥ यथा—कुरुकुत्ससंज्ञकानां विश्वेषां
 देवानामिदमासनम् । स्वासनम् ॥ अत्रास्यतां धर्मोसि आपः । देवे क्षणः
 क्रियतां तथा प्राप्नोतु भवान् । प्राप्नवानि ॥ हस्तमक्षालनं दत्त्वा पिष्ट-
 रार्थं यक्कुशानादाय अयं विष्टरः । सुविष्टरः ॥ एवं द्वितीयचटेऽपि
 आसनदानम् ॥ (अपसव्यम्) पितृणां वामभागे त्रीन्दर्भानासनार्थं
 दद्यात् ॥ यथा—अमुकगोत्राणामस्मत्पितृ-पितामहप्रपितामहानां सप-

१ मासिके सावसरिके च—पुरवर्द्धप्रज्ञकानां विश्वेषां देवानाम् इदमासनम् ॥ २ ॥ पितृ
 मासिके सावसरिके एतत्रेण—अमुकगोत्राणाम् अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम् अमुकामु-
 कशर्मणां यद्यद्यादित्यस्वरूपाणाम् इदमासनम् ॥ भिन्नरथे—(१) अमुकगोत्रस्य अस्म-
 त्पितृः अमुकशर्मणं यद्यरूपस्य इदमासनम् ॥ (२) अमुकगोत्रस्य आमत्पितामहस्य-
 अमुकशर्मणो यद्यरूपस्य इदमासनम् ॥ (३) अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितामहस्य अमुक

त्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणाम् अमुकामुकानाम् इदमासनम् ।
 स्वासनम् ॥ अत्रास्यतां धर्मोसि आपः । पित्र्ये क्षणः क्रियतां तथा
 प्राप्नोतु भवान् । प्राप्तवानि ॥ हस्तप्रक्षालनं दत्त्वा विष्टरार्थं तिलकु-
 शानादाय अयं विष्टरः । सुविष्टरः ॥ द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामह-
 प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानाम् अमुकामुकानां वसुरु-
 द्रादित्यस्वरूपाणामिदमासनम् । स्वासनम् ॥ अत्रास्यतां धर्मोऽसि
 आपः । पित्र्ये क्षणः क्रियतां तथा प्राप्नोतु भवान् । प्राप्तवानि ॥
 हस्तप्रक्षालनं दत्त्वा विष्टरार्थं तिलकुशानादाय अयं विष्टरः । सुवि-
 ष्टरः ॥ गोत्राणामस्मदेकेद्विष्टरमस्तपूर्वजनानां वसुरूपाणामिदमासनम् ।
 स्वासनम् ॥ अत्रास्यतां धर्मोसि आपः । पित्र्ये क्षणः क्रियताम्
 तथा प्राप्नोतु भवान् प्राप्तवानि ॥ हस्तप्रक्षालनं दत्त्वा विष्टरार्थं
 तिलकुशानादाय अयं विष्टरः । सुविष्टरः ॥ (सव्यम्) आतीथिस्वरू-
 पिणे महाविष्णवे इदमासनम् । स्वासनम् ॥ अत्रास्यतां धर्मोसि आपः ।
 महाविष्णो क्षणः क्रियताम् तथा प्राप्नोतु भवान् । प्राप्तवानि ॥ हस्तप्र-
 क्षालनं दत्त्वा विष्टरार्थं यवकूशानादाय अयं विष्टरः । सुविष्टरः ॥

अथ आवाहनम् । कुरुकुत्ससंज्ञकान्विश्वान्देवान्भवत्सु आवाहायिष्ये ।
 आवाहय ॥ ॐ विश्वेदेवासुऽआगतशृणुतामंऽइमं हवम । एदम्बुर्हिनि-
 पीदत ॥ ॐ मदक्षिणं यवानवकीर्य ॥ ॐ विश्वेदेवाहं शृणुतेमहवम्मे-
 येऽअन्तरिक्षेयऽउपुद्यधिष्ठ ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउतवायनंत्राऽआसद्द्या-

शर्मण आदित्यरूपस्य इदमासनम् ॥ मातु धाद्वे एकत्त्रपथे- (१) अमुकगोत्राणाम्
 आत्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनाम् अमुकामुकानाम् वसु० इदमासनम् ॥ मातु धाद्वे भिन-
 पथे-(१) अमुकगोत्राया अस्मन्मातुः अमुकदाया वसुस्वरूपाया इदमासनम् ॥ (२)
 अमुकगोत्र या अस्मत्पितामहा अमुकदाया रुद्रस्वरूपाया इदमासनम् ॥ (३) अमुकगो-
 त्राया अस्मत्प्रपितामहा अमुकदाया आदित्यस्वरूपाया इदमासनम् ॥

१. मासिजे. मासिपीक. च-पुत्रवर्द्धनं तत्रात्. विश्वान्देवत. भवत्सु आवाहायिष्ये ॥

स्मिन्नुर्हिपिमादयद्ध्वम् ॥५३॥ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महा-
 बलाः ॥ ये चात्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥ एवं द्वितीये ॥
 (अपसव्यम्) अमुकगोत्रान् अस्मत्पितृ-पितामह-प्रपितामहान् सप-
 त्नीकान् वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् भवत्सु आवाहयिष्ये । आवाहय ॥
 अप्रदक्षिणं तिलानवकीर्य ॥ ॐ उशन्तस्त्वानिधीमहृशन्तुंमपिधी-
 महि ॥ उशन्तुशतऽआवहपितृद्वहविपेऽअत्तवे ॥ ५२ ॥ आयन्तुनः इति
 जपेत् ॥ ॐ आयन्तुनदं पतरं-सोम्यासोऽग्निष्वात्ताऽपृथिभिर्देव-
 यानिं ॥ अस्मिन्व्यज्ञेस्वधयामदन्तोर्षिब्रुवन्तुते वन्त्वस्मान् ॥ ५२ ॥
 द्वितीयगोत्रान् अस्मन्मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहान् सपत्नीकान्
 वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् भवत्सु आवाहयिष्ये । आवाहय ॥ अप्रदक्षिणं
 तिलानवकीर्य पूर्ववत् मन्त्रद्वयपठनम् । यथा । ॐ उशन्तस्त्वा० ॥ ॐ
 आयन्तुनदं० ॥ अमुकगोत्रान् अस्मदेकोदिष्टसमस्तपूर्वजान् वसुरुपान्
 भवत्सु आवाहयिष्ये । आवाहय ॥ अप्रदक्षिणं तिलानवकीर्य ॥ ॐ उशन्त-
 स्त्वा० ॥ ॐ आयन्तुनदं० ॥ (सव्यम्) विष्णवे आवाहनं नास्ति ॥
 अर्घ्यकरणम् । ततो देव-पितृ-विष्णुसन्निधौ पलाशपत्रनिर्मितपद्-
 पात्राणि स्थापयित्वा तन्मध्ये अधोलिखितद्रव्याणि निक्षिपेत् ।

१ पितृ मासिके सावत्सरिके च एकतन्त्रे-अमुकगोत्रान् अस्मत्पितृपितामहप्रपिताम-
 हान् अमुकगोत्रान् अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहान् सपत्नीकान् वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् भवत्सु आवाहयिष्ये ॥ पितृभिन्नपक्षे-(१)
 अमुकगोत्रम् अस्मत्पितरम् अमुकगोत्रान् वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् भवत्सु आवाहयिष्ये ॥ (२) अमुकगोत्रम्
 अस्मत्पितामहम् अमुकगोत्रान् वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् भवत्सु आवाहयिष्ये ॥ (३) अमुकगोत्रम् अस्मत्प्रपि-
 तामहम् अमुकगोत्रान् वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् भवत्सु आवाहयिष्ये ॥ एवं मानुष्ये यथा-

अनुमासिके सावत्सरिकश्राद्धे एकतन्त्रे-अमुकगोत्रा अस्मन्मानुपितामही-
 प्रपितामही अमुकगोत्रा वसुरुद्रादित्यस्वरूपा भवत्सु आवाह० ॥ मातृभिन्नपक्षे-(१)
 अमुकगोत्रान् अस्मन्मातरम् अमुकगोत्रा वसुरुद्रादित्यस्वरूपा भवत्सु आवाह० ॥ (२) अमुकगोत्राम् अस्मत्पि-
 तामहाम् अमुकगोत्रा वसुरुद्रादित्यस्वरूपा भवत्सु आवाह० (३) अमुकगोत्राम् अस्मत्प्रपितामहीम् अमुक-
 गोत्राम् आदित्यस्वरूपा भवत्सु आवाह० ॥

देवपात्रयोः ॐ पवित्रैस्त्यो० इति मन्त्रेण द्वाँ द्वाँ प्रागग्रौ कुशौ निधा-
पयेत् । ॐ पवित्रैस्त्यो० ॥ ॐ शन्नोदेवीत्युदकपूरणम् । ॐ शन्नो-
देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये० ॥ ॐ यवोसीति मन्त्रेण यवा-
निक्षिपेत् ॥ ॐ यवोसि० । तूर्णीं गन्धपुष्पे निक्षिप्य । देवपात्रे
सम्पन्ने । सुसम्पन्ने ॥ (अपसव्यम्) पितृपात्राणि पूरयेत् ॥
पवित्रैस्त्यो० इति मन्त्रेण पवित्रत्रयं निधाय । ॐ शन्नोदेवीत्युदकपूरणम् ॥
तिलोसीति मन्त्रेण तिलान् ॥ तूर्णीं गन्धपुष्पाणि निक्षिप्य । पितृपात्राणि
सम्पन्नानि । सुसम्पन्नानि ॥ (सव्यम्) महाविष्णुपात्रे ॐ पवित्रैस्त्यो० ।
इति मन्त्रेणैकं पवित्रम् ॥ जलपूरणम् । ॐ शन्नोदेवी० ॥ यवोसीति
यवाः ॥ तूर्णीं गन्धपुष्पे च । महाविष्णोरर्घपात्रं सम्पन्नम् । सुसम्पन्नम् ॥

ततः अर्घदानम् ॥ 'ॐ देवेभ्यो नमः' इति द्वे पवित्रे पुष्पं चार्पयि-
त्वा ॥ अर्घं गृहीत्वा । ॐ या दिव्याऽआपः पयसा सम्बभूवुर्द्याऽअन्तरिक्षा
उत्त पार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शशस्योनाः
सुहवा भवन्तु ॥ कुरुकुत्ससंज्ञकाः विश्वेदेवाः एष वोऽर्घ्यः संपद्यताम् ।
अस्त्वर्घ्यः । सर्वपात्रेषु किञ्चिज्जलमवशेषणीयम् ॥ एवं द्वितीयचट्टे ॥ (अपस-
व्यम्) 'ॐ पितृभ्यो नमः' इति सपवित्राणि पुष्पाण्यर्पयित्वा । अर्घं गृही-
त्वा । ॐ या दिव्याऽआपः ० ॥ अमुरुगोत्रेभ्यः अस्मात्पितृ-पितामहप्रपिता-

१ मासिक सावत्सरिके च-पुस्तकार्द्रसंज्ञका विश्वेदेवा एष वोऽर्घ्यं संपद्यताम् ॥

२ एतन्त्रे पितृ श्राद्धेऽनुमासिके सावत्सरिके च-अमुकगोत्र अस्मत्पितृपितामह-
प्रपितामहा अमुकामुकशर्मणो बसुह्यादित्यस्वरूपा एष० ॥ पितृश्राद्धे भित्तपक्षे—(१)
अमुकगोत्र अस्मत्पित अमुकशर्मन् बसुह्य एष तेऽर्घ्यं (२) अमुकगोत्र अस्मत्पितामह
अमुकशर्मन् स्वरूप एष० ॥ (३) अमुकगोत्र अस्मत्प्रपितामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप
एष तेऽर्घ्यः ॥

महेभ्यः सपत्नीकेभ्यः वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः एष वोऽर्घ्यः । अस्त्वर्घ्यः ॥
द्वितीयगोत्रेभ्यः अस्मन्मातामहप्रमातामहदृष्टप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः
वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः एष वोऽर्घ्यः । अस्त्वर्घ्यः ॥ गोत्रेभ्यः अस्मदे-
कोदिष्टसमस्तपूर्वजेभ्यः वसुरूपेभ्यः एष वोऽर्घ्यः । अस्त्वर्घ्यः ॥ (सव्यम्)
‘ॐ महाविष्णवे नमः’ इति पवित्रं पुष्पं चार्पयित्वा ॐ या दिव्याऽआपः ० ॥
अतिथिस्वरूपिणे महाविष्णवे एष तेऽर्घ्यः । अस्त्वर्घ्यः ॥ (अपसव्यम्)
प्रथमपितृपात्रे संस्रवान्समवनीय । शुन्धन्ताँल्लोकाँपितृखर्दनाँ पितृख-
र्दनमसि । इति मन्त्रेण पितृचामे प्रथमविश्वेदेवचटस्य दक्षिणे भूमिं
प्रोक्ष्य दर्भं च तत्र निधाय तदुपरि “ पितृभ्यः स्थानमसि ” इति पात्रं
न्युञ्जं करोति । तदुपरि सर्वाणि पितृपवित्राणि निदधाति । तदुपरि
अन्यानि त्रीणि चापूजनम् ॥ स्थानमसि अन्नं नमः । स्थानमसि गंधं नमः ।
स्थानमसि तिलाक्षतपुष्पं नमः । स्थानमसि नमो नमः ॥ न्युञ्जपात्रोदकेन
स्वमूर्ध्नि मार्जनम् ॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते
कृष्वन्तु भेषजम् ॥ (सव्यम्) अत्रावसरे गंधादिदानम् । (चटपूजनम्)
देवचटे । देवेभ्यः अत्राः । स्वत्राः ॥ देवेभ्यो गंधः । सुगन्धः ॥ देवेभ्यः
अक्षतपुष्पम् । स्वक्षतपुष्पम् ॥ यवमाच्छादनम् ॥ फलार्थं पूगीफलम् ।
सुफलम् ॥ ब्रह्मकर्मार्थं यज्ञोपवीतम् । सुयज्ञोपवीतम् ॥ आच्छादनार्थं वस्त्रं वा
किञ्चिद्व्यावहारिकं द्रव्यम् । स्वाच्छादनम् ॥ शेषोपचारार्थं इमौ कुर्वा ।
सुकुशौ ॥ जलं गृहीत्वा । इदमनुलेपनम् एतावत्सुमनस एष वो धूपः
सुधूपः इदं वो ज्योतिः सुज्योतिः शेषोपचारार्थं इमौ कुशौ यथादत्तं गन्धा-

एवं मातृपक्षे यथा-एकत्रेण ध्राद्धकर्मणि मातृप्रादेऽनुमासिके साकामरिके च । अनुकगोत्रा
अस्मन्मातृ-पितामही प्रपितामहाः अमुस्मानुक्दा वसुरुद्रादित्यस्वरूपा एष वोऽर्घ्यः ० ॥ भिनपक्षे-
(१) अमुकगोत्रे अस्मन्मातः अमुकदे वसुरूपे एष तेऽर्घ्यः । (२) अमुकगोत्रे अस्मदिस्तामहि
अमुकदे इदम् एष तेऽर्घ्यः ० ॥ (३) अमुकगोत्रे अस्मत्प्रितामहि अमुकदे आदित्यरूपे
एष तेऽर्घ्यः ० ॥

घर्चनं कुरुकुत्ससंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा संपद्यतां न मम ॥
 एवं द्वितीयचटे ॥ (अपसव्यम्) पितृस्थानीयचटे । पितृभ्यः अत्राः ।
 स्वत्राः ॥ पितृभ्यः गन्धः । सुगन्धः ॥ पितृभ्यः निलाः । सुतिलाः ॥
 माल्यार्थं इमानि वः पुष्पाणि तुलसीदलसहितानि । सुपुष्पाणि ॥
 तिलमाच्छादनम् ॥ फलार्थं पूगीफलम् । सुफलम् ॥ ब्रह्मकर्मार्थं
 यज्ञोपवीतम् । सुयज्ञोपवीतम् ॥ आच्छादनार्थं बल्लं वा किञ्चिद्व्यावहा-
 रिकं द्रव्यम् । स्वाच्छादनम् ॥ शेषोपचारार्थं इमे कुशाः । सुकुशाः ॥
 जलमादाय । इदमनुलेप० गन्धाद्यर्चनम् अमुकगोत्रेभ्यः अस्मत्पितृ-
 पितामह-प्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः स्वधा सम्पद्यतां न मम ॥
 द्वितीयगोत्रस्थानीयचटे पूर्ववत्पूजनम् । जलं गृहीत्वा । इदमनुलेप०
 गन्धाद्यर्चनं द्वितीयगोत्रेभ्यः अस्मन्मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहे-
 भ्यः सपत्नीकेभ्यः स्वधा सम्पद्यतां न मम ॥ तृतीयचटे पूर्ववत्पूजनम् ।
 जलं गृहीत्वा । इदमनुलेप० गन्धाद्यर्चनम् अस्मत्समस्तपूर्वजेभ्यः
 वसुरूपेभ्यः ययायथाविभागं स्वधा सम्पद्यतां न मम ॥ (सव्यम्)
 अतिथये महाविष्णवे अत्राः । स्वत्राः ॥ गन्धः । सुगन्धः । यवाः ।
 सुयवाः ॥ माल्यार्थं इमानि पुष्पाणि तुलसीदलसहितानि । सुपुष्पाणि ॥

१ मासिके सावत्सरिके च-पुरुरवार्यर्चकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा संपद्यतां न मम ॥

२ एकत्रेण—पितुः श्राद्धे मासिके सावत्सरिके च-अमुकगोत्रेभ्यः अस्मत्पितृपितामहप्र-
 पितामहेभ्यः वसुरूपेभ्यः स्वधा सम्पद्यतां न मम ॥ भित्तखंडे (१) अमुरगोत्राय अस्मत्पितृ
 अमु० वसु० स्वधा सम्पद्यतां न मम (२) अमुकगोत्राय अस्मत्पितामहाय अमु० रूद्र०
 स्वधा० । (३) अमुकगोत्राय अस्मत्प्रपितामहाय अमु० आदित्य० स्वधा सम्पद्यतां न मम ॥

एवं मानुश्राद्धेऽनुमासिके सावत्सरिके च एतत्रेण—अमुकगोत्राभ्यः अस्मन्मातृ
 पितामहीप्रपितामहीभ्यः वसु० स्वधा० ॥ भित्तखंडे—(१) अमुकगोत्राय अस्मन्मातृ
 अमु० वसु० स्वधा० ॥ (२) अमुकगोत्राय अस्मत्पितामहाय अ० रूद्र० स्वधा ॥ (३) अमुकगो-
 त्राय अस्मत्प्रपितामहाय अ० आदि० स्वधा० ॥

यवमाच्छादनम् ॥ फलार्थे पूगीफलम् । सुफलम् ॥ ब्रह्मकर्मार्थे यज्ञो-
पवीतम् । सुयज्ञोपवीतम् ॥ आच्छादनार्थे वस्त्रं वा किञ्चिद्द्व्यावहारिकं
द्रव्यम् । स्वाच्छादनम् ॥ शेषोपचारार्थे इमौ कुशौ । सुकुशौ ॥ जलं
गृहीत्वा । इदमनुलेप० गन्धाद्यर्चनं महाविष्णवे स्वाहा सम्पद्यतां नमः ॥

अथ तिलोद्धरणं पात्रासादनं मण्डलकरणं च ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा
'तिलोद्धरणं पात्रासादनं मण्डलकरणं च करिष्ये ।' (ॐ कुरुष्व)
(अपसव्यम्) अर्घ्यपात्राणि निष्कास्य भूमौ स्थितान् तिलादीनुद्धृत्य
(सव्यम्) परिवेषणार्थं पात्राणामासादनं कुर्यात् ।

यथा-(अपसव्यम्) पितृस्थानीयचटसमीपे भूमौ स्थितान्
तिलादीनुद्धृत्य पात्राणामासादनञ्च भस्मना पङ्क्तिवारणं कुर्यात् ॥
प्रथमा दक्षिणा रेखा द्वितीया वामतो न्यसेत् । तृतीया चाग्रभागे तु मेलनं
कुरु दक्षिणे ॥ इत्यनया रीत्या यावन्ति पात्राणि तावन्ति ॐ पुरीत्य-
भूतानि पुरीत्यं लोकाद् पुरीत्यं सर्वाः-ऽप्यदिशो दिशश्च ॥ उपस्थाय-
मथमजामृतस्यात्ममनात्कर्मभिर्भिसंविवेश ॥ ३३ ॥ एवं मातामहादीनां
समस्तपितृणां चटसमीपे च पात्रासादनं पंक्तिवारणं च कुर्यात्

ततः प्रथमविश्वेदेवस्थानीयचटसमीपे पात्रमासाद्य पात्रस्य परितः ॥
'यथाचक्रधरो विष्णुर्लोक्यं परिरक्षति । भस्मना मण्डलं तद्वत्सर्वभूतानि
रक्षतु ॥ सर्वेषां पापदृष्टीनां चक्षुर्भ्रंशति केशवः । मंत्रः- ॐ पुरीत्यं भूतानि ० ॥
इत्यनेन भस्मना पङ्क्तिवारणम् । एवं द्वितीयविश्वेदेवसमीपेऽपि
पात्रासादनं पङ्क्तिवारणम् ॥

महाविष्णोः समीपेऽपि एवमेव पात्रासादनं पङ्क्तिवारणञ्च
कार्यम् ।

(अपसव्यम्) पिशादीनां करशुद्धयर्थं तिलोदकाज्जलं गृहीत्वा ॐ
रतीत्यर्निं० इति पठित्वा सर्वेषु चटेषु दद्यात् ॥ (सव्यम्) देवानां

करशुद्धयर्थं द्वयोर्विश्वेदेवयोश्चटयोरपि महाविष्णोरपि करशुद्धयर्थं
 ॐ धेतीर्त्थानि० इत्यनेन तिलोदकाज्जलं देयम् ।

अधान्नौकरणम्—ततो घृताक्तमन्नं प्रयच्छति । पलाशपत्रपुटे
 अन्नमानीय गायत्रीमंत्रेण संप्रोक्ष्य जलं गृहीत्वा—अप्स्वग्नौकरणं
 करिष्ये । कुरुष्व ॥ तत्र पत्रावलीसमीपे अन्यपात्रं जलपूरितं संस्थाप्य
 हस्ते गायत्र्याऽभिमंत्रितमोदनमादाय (अपसव्येन) पातितवापजानुः
 पितृतीर्थेनावदानधर्मेण द्विराहुतिं जले जुहुयात् ॥ ॐ अग्नये
 कव्यवाहनाय स्वाहा इदमग्नये कव्यवाहनाय न मम ॥ ॐ सोमाय
 पितृमते स्वाहा इदं सोमाय पितृमते न मम ॥ इति द्विराहुतिं जले
 हुत्वा शेषमन्नं पिण्डार्थमवशेषणीयम् ॥

ततः पितृपितामहमपितामहपात्रे परिवेषणीयम् ॥ एवं मातामहा-
 दीनां पात्रे समस्तपितृणां पात्रे च परिवेषणीयम् ॥ (सव्यम्) देवपात्रयोः
 परिवेषणीयम् । महाविष्णुपात्रे परिवेषणीयम् ॥ देवपात्रस्यमन्नं गाय-
 त्रीमंत्रेण संप्रोक्ष्य । देवाः अन्नं रक्षध्वम् । ॐ इदं विष्णु० इति अंगुष्ठ-
 मन्त्रेऽवगाह्य । ॐ इदं विष्णु० ॥ अपहता० इति यवान्विकीर्य । ॐ
 अपहता० ॥ दक्षिणहस्तेन पात्रमालभ्य जपति । ॐ पृथ्वी ते पात्रं
 द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतेऽभ्रमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ जलं
 गृहीत्वा । इदमन्नं कुरुकुत्ससंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा सम्प-
 द्यतां हव्यं न मम ॥ एवं द्वितीयचटे ॥ (अपसव्यम्) पितृपात्रस्थ-
 मन्नं सावित्र्याऽभ्युक्ष्य । पितरः कव्यं रक्षध्वम् । इदं विष्णु० इति मन्त्रेण
 अंगुष्ठमन्त्रेऽवगाह्य । अपहता० इति त्रिलान्विकीर्य । पात्रमालभ्य जपति ।
 ॐ पृथ्वी ते पात्रं० । जलं गृहीत्वा । इदमन्नमस्मात्पितृ-पितामह-

मपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः स्वधा सम्पद्यतां कव्यं न मम ॥ एवं
 द्वितीये मातामहादीनां चटे पूर्ववत्कृत्वा । जलं गृहीत्वा । इदमन्नमस्म-
 न्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः स्वधा सम्पद्यतां
 कव्यं न मम ॥ एवं तृतीयचटे पूर्ववत्कृत्वा । जलं गृहीत्वा । इदमन्नमस्म-
 त्समस्तपूर्वजेभ्यः स्वधा सम्पद्यतां कव्यं न मम ॥ इति जलमुत्सृजेत् ॥
 (सव्यम्) महाविष्णुपात्रस्थमन्नं गायत्र्या संप्रोक्ष्य महाविष्णो हव्यं रक्ष ।
 इदं विष्णु० इति मंत्रेणांगुष्ठमन्त्रेऽवगाह्य । अपहता० इति यवान्विकीर्य ।
 पात्रमालभ्य । ॐ पृथ्वी ते पात्रं० । जलं गृहीत्वा । इदमन्नं महा-
 विष्णवे स्वाहा सम्पद्यतां हव्यं न मम ॥ संकल्पः । जलं गृहीत्वा ।
 ब्रह्मार्पणं ब्रह्म ब्रह्मिर्ब्रह्माग्नां ब्रह्मणा हुतम् ॥ ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म-
 कर्मसमाधिना ॥ हरिर्दाता हरिर्भोक्ता हरिरन्नं प्रजापतिः ॥ हरिर्विप्र-
 शरीरस्यो भुंक्ते भोजयते हरिः ॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च ॥
 ह्यते च पुनर्द्वाभ्यां स ये विष्णुः प्रसीदतु ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
 (अपसव्यम्) पितृणामपोशनार्थं सकृत्सकृदपो दत्वा । (सव्यम्)
 देवानां विष्णोर्थापोशनं दत्वा देवतान्वेशं कृत्वा । (अप-
 सव्यम्) एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ॥ त्रिलोकान् व्याप्य
 भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥ अनेन भोजनसमारोधनेन मम समस्त-
 पितृस्वरूपी जनार्दनवामुदेवः प्रीयताम् ॥ निवीती भूत्वा प्रार्थयेत् ।

ईशानविष्णुकमलासनकार्तिकेयवाह्नित्रयार्करजनीशगणेश्वराणाम् ॥
 काँचामरेंद्रकुलशोद्धवकश्यपानां पादान्नमामि सततं पितृमुक्तिहेतोः ॥
 (सव्यम्) देवाः अमृतं जुषध्वम् ॥ (अपसव्यम्) पितरः अमृतं
 जुषध्वम् ॥ (सव्यम्) महाविष्णो अमृतं जुषस्व ॥ श्रद्धया प्राणेन
 जुहोमि । ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय
 स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ मधुघाता०
 इति ज्यृचं जपेत् ॥ गायत्रीपठनम् ॥ तृप्ताञ्ज्ज्ञात्वा अन्नं विकिरेत् ।
 विकिरासनं दद्यात् ॥ । (अपसव्यम्) असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां
 कुलद्रूपिणाम् ॥ उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् ॥ इति
 नैऋत्यकोणे दर्भासनं दत्त्वा विकिरापिण्डदानम् । पिण्डमादाय ।
 अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन पिण्डेन
 तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ ये अग्निदग्धाः ये अनग्निदग्धास्तेभ्यः
 अस्मत्कुलप्रभूतेभ्योऽयं विकिरापिण्डः स्वधा न मम ॥ (सव्यम्) पवित्र-
 त्यागः ॥ पाणिपादौ प्रक्षाल्याचम्य प्राणानायम्य पवित्रधारणम् ॥
 ॐ पवित्रेस्थो ॥ (अपसव्यम्) पितृगामुत्तरापोशानं दत्त्वा । (सव्यम्)
 देवानां विष्णवे चोत्तरापोशानं दत्त्वा । पूर्ववद्वायव्रीं जपित्वा ।
 (अपसव्यम्) रेखाकरणम् । ॐ अपहताऽअसुरारक्षाः ॐ सिधेद्विपदः ॥
 उदकापस्पर्शः । रेखायामवनेजनम् । अमुकगोत्राः अस्मत्पितृ-पिता-
 मह-प्रपितामहादिसमस्तपूर्वजाः पिण्डस्थाने अवनेनिग्ध्वम् ॥

पिण्डदानम् । (श्राद्धकर्ता एकस्मिन्पात्रे पिण्डद्रव्यं निष्कास्य तत्र
 घृतं तिलान् तिलोदकं शर्करां पयः दधि मधु गन्धं पुष्पञ्च प्रक्षिप्य

१ तीर्थश्राद्धे गयाश्राद्धे श्राद्धे मातान्हे तथा । विकिरं नैव दातव्यं श्राद्धे पोशसे तथा ॥

पिण्डान् कृत्वा दद्यात्) यथा-- ॥ अमुकगोत्र अस्मत्पितॄः अमुकशर्म-
 न्वसुरूप एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदम् अमुकगोत्राय अस्मत्पित्रे अमुकशर्मणे
 वसुरूपाय अयं पिण्डः स्वधा नमः ॥ एतत्ते गोदावर्यां दत्तमस्तु गयाग-
 दाधरस्तृप्यतु ॥ एवं सर्वत्र ॥ अमुकगोत्र अस्मत्पितामह अमुकशर्म-
 न्द्रूप एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदं० । एतत्ते० ॥ अमुकगोत्र अस्मत्प्रपितामह
 अमुकशर्मन् आदित्यरूप एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदं० । एतत्ते० ॥ अ० गो०
 अस्मन्मातः अमुकदे वसुरूपे एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदं० । एतत्ते० ॥ अ० गो०
 अस्मत्पितामहि अमुकदे रुद्ररूपे एतत्तेऽन्नं स्वधा० । इदं० । एतत्ते० ॥ अ०
 गो० अस्मत्प्रपितामहि अमुकदे आदित्यरूपे एतत्तेऽन्नं स्वधा ।
 इदं० । एतत्ते० ॥ (ततो द्वितीयगोत्रेभ्यः) अ० गो० अस्मन्मातामह
 अमुकशर्मन् वसुरूप एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदं० । एतत्ते० ॥ अ०
 गो० अस्मत्प्रमातामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदं० ।
 एतत्ते गो० ॥ अ० गो० अस्मद्बृद्धप्रमातामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप
 एतत्तेऽन्नं स्वधा । इदं० । एतत्ते गोदा० ॥ एवं मातामहीप्रपातामहीशृङ्ग-
 प्रमातामहीभ्यः ॥ एवं मृतेभ्यः समस्तेभ्यः स्वसंबंधिभ्यः (पत्नी-सुत-
 पितृव्य-मातुल-भ्रातृ-पितृष्वस्र मातृष्वस्रात्मभगिनीश्वशुर-गुरु-शिष्या-
 स्तेभ्यः क्रमेण प्रत्येकं) पृथक्पृथक् पिण्डान् दद्यात् ॥ ततः पिण्डं गृहीत्वा
 वदति । आश्रमणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ॥
 वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्वयंवाश्रितसेवकाश्च ॥ मित्राणि
 मत्स्यः पशवश्च वृक्षा वृष्टाश्च पृष्टाश्च कृतोपकाराः ॥ जन्मान्तरे ये मम

१ त्रि- श्राद्धे मायिके, गांवगहिके वा—(१) अमुकगोत्राय अस्मत्पित्रे अमुकशर्मणे
 वसुरूप एतत्तेऽन्नं० ॥ (२) अमुकगोत्राय अस्मत्प्रपितामहाय अमुकशर्मणे रुद्ररूप एतत्तेऽन्नं० ॥
 (३) अमुकगोत्राय अस्मत्प्रपितामहाय अमुकशर्मणे आदित्यरूप एतत्तेऽन्नं० ॥ १ मातु-
 श्राद्धे मायिके गहिके वा (१) अमुकगोत्राय अस्मत्प्रमाते अमुकदाये वसुरूप एतत्तेऽ-
 न्नं० ॥ (२) अमुकगोत्राय अस्मद्बृद्धप्रमाते अमुकदाये रुद्ररूप एतत्तेऽन्नं० ॥ (३)
 अमुकगोत्राय अस्मत्प्रपितामहे अमुकदाये आदित्यरूप एतत्तेऽन्नं० ॥

संगताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि ॥ पितृवंशे मृता ये च मातृ-
वंशे तथैव च । गुरुश्वशुरबन्धूनां येचान्ये बान्धवाः स्मृताः ॥ ये
मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवाजिताः । क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः
पङ्कजस्तथा ॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम । तेभ्यः
पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ अक्षिपत्रवने घोरे कुंभीपाके च
ये गताः । तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥ उच्छिन्नकुलवं-
शानां येषां दाता कुले नहि ॥ धर्मपिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥
शेषमन्नं पुरतः स्थाप्य । हस्तलेपमाजः पितरः प्रीयन्ताम् ॥ पिण्डो-
परि प्रत्यवनेजनं स्वधा इत्यवनेजनं कुर्यात् ॥ पिण्डसमीपे नीवीवि-
सर्जनम् । नमो वः इति पङ्कजलिं करोति ॥ ॐ नमोवदं पितरोर-
सायु १ । ॐ नमोवदं पितरुं शोपायु २ । ॐ नमोवदं पितरो जी-
वायु ३ । ॐ नमोवदं पितरुं स्वधायै ४ । ॐ नमोवदं पितरो घो-
रायु ५ । ॐ नमोवदं पितरो मङ्गयवे । नमोवदं पितरुं पितरो नमोवदं
६ ॥ ॐ गृहार्त्नः-पितरो दत्त सुतोर्व-पितरो देष्मैतद्दं-पितरो वासुऽ-
आर्धत्त ॥ उदङ्मुखः श्वासं नियम्य पुनरावृत्य प्रतिपिण्डं “ एतद्दं-
पितरोवासुः ” इत्युक्त्वा त्रीणि सूत्राणि द्रव्यात् ॥ (सव्यम्) कुला-
भिद्वन्द्वर्थं पिण्डपूर्जा करिष्ये ॥ पिण्डसंस्थाः पितरः अन्नं स्वधा नमः ।
पिण्डसंस्थाः पितरः गंधं स्वधा नमः । पिण्डसंस्थाः पितरः यवतिला-
क्षताः स्वधा नमः । पिण्डसंस्थाः० तुळसीदलानि भृंगराजपत्रसहितानि
स्वधा नमः । पिण्डसंस्थाः पितरः धूपं स्व० न० ॥ पिण्डसंस्थाः० दीपं स्व०
न० ॥ पिण्डसंस्थाः पितरः नैवेद्यं स्व० न० ॥ पिण्डसंस्थाः पितरः फल-
मुखत्रासतांघ्रुलंसदाक्षिणाकं स्वधा नमः । पिण्डसंस्थाः पितरः नीराजनं
स्व० न० । पिण्डसंस्थाः० पुष्पांजलिः स्वधा नमः । सर्वैः सह पिण्डान्
नमस्कृत्य पिण्डस्वार्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु । अस्तु परिपूर्णता ।

चयोपरि सुप्रोक्षितादिकरणम् । शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवा आपः॥
 सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अस्त्व-
 क्षतपरिष्टं च ॥ जलं गृहीत्वा कुरुकुत्ससंज्ञकानां विश्वेषां देवानां यद्दत्तं
 कन्यागते सवितरि महालयापरपक्षश्राद्धे इदमन्नमुदकादिकं तदक्षय्य-
 मस्तु ॥ एवं द्वितीयचटे ॥ (अपसव्यम्) पितृस्थानीयचटेषु । शिवा
 आपः सन्तु । सन्तु० ॥ सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौ० ॥ अक्षतं चारिष्टं
 चास्तु । अस्त्वक्षत० ॥ अ० गोत्रेभ्यः अस्मत्पितृपितामहपितामहेभ्यः
 सपत्नीकेभ्यः द्वितीयगोत्रेभ्यः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहेभ्यः
 सपत्नीकेभ्यश्च मम समस्तपूर्वजेभ्यो यद्दत्तं कन्यागते सवितरि महालया-
 परपक्षश्राद्धे इदमन्नमुदकादिकं तदक्षय्यमस्तु ॥ (सव्यम्) महाविष्णवे
 शिवा आपः सन्तु० इत्यादि पूर्ववत् ॥ महाविष्णवे यद्दत्तं कन्या० इद-
 मन्नमुदकादिकं तदक्षय्यमस्तु ॥ (अपसव्यम्) न्युञ्जपात्रस्योपरिस्थितानि
 पवित्राणि पिण्डेषु न्यस्य पात्रमुत्तानं कृत्वा । (सव्यम्) अघोराः
 पितरः सन्तु । गोत्रं नोऽभिवर्द्धताम् । अभिवर्द्धतां वो गोत्रम् ॥
 दातारो नोऽभिवर्द्धताम् । अभिव० ॥ संततिर्नोऽभिवर्द्धताम् । अभिव० ॥
 श्रद्धा च नो मा व्यगमत् । मा व्यग० ॥ बहुदेयं च नोऽस्तु । अस्तु
 वो० ॥ अन्नं च नो बहु भवेत् । भवतु वो० ॥ अतिर्थाश्च लभामहे ।
 लभ० ॥ एता आशिपः सत्याः सन्तु । सन्त्वेताः सत्याशिपः ॥
 (अपसव्यम्) भो पितरः स्वधोच्यताम् । अस्तु स्वधा ॥ पिण्डमूले
 तिलोदकं निषिचेत् । ॐ ऊञ्जुं ब्रह्मन्तीरुमृतं द्यूतम्पर्यः फीलाढंम्प-

१ पितुः मासिके सांस्मरिक श्राद्धे-अमुं ऋगोत्राणाम् अस्मत्पितृपितामहपितामहानाम्
 अमुकामुकशर्मणा यद्दत्तमन्नमु० ॥ मातुः मासिके सांस्मरिकश्राद्धे-अमुकगोत्राणाम् अस्मन्मातृ-
 पितामहीप्रपितामहीनाम् अमुं रामुं रदानां यद्दत्तमन्नमु०

रिञ्जुतम् ॥ स्वयास्त्र्यतुर्ष्वयतमेपितृन् ॥ ३५ ॥ (सव्यम्) दक्षिणासं-
कल्पः । कुरुकुत्ससंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो देवानां सुवर्णं तदभावे
किञ्चिद्वावहारिकं द्रव्यं दक्षिणामुखवासताम्बूलं स्वाहा ॥ एवं द्वितीय-
चटे ॥ (अपसव्यम्) मम प्रथमद्वितीयनानाविधगोत्रेभ्यः पितृभ्यः
पितृणां रजतं तदभावे किञ्चिद्द्रव्यावहारिकं द्रव्यं दक्षिणामुखवासता-
म्बूलं स्वभा ॥ (सव्यम्) अतिथये महाविष्णवे दक्षिणामुखवासताम्बूलं
स्वाहा ॥ स्वभाले तिलकं कुर्यात् । पिण्डोद्धरणम् ॥ स्थाल्यामवधा-
यावजिघ्रति ॥ संवरमभ्युक्ष्य । पिण्डानां स्वस्थाने वासः ॥ पिण्ड-
स्थाने इदमन्नं चंदनपुष्पे ॥ कुले कुलदीपकवृद्धिरस्तु ॥ (सव्यम्)
वाजेवाजेति(दंभैः) विसर्जनम् ॥ ३६ ॥ वाजेवाजेवतवाजिनोनोधनेषुविष्पाऽ-
अमृताऽऽकृतज्ञाऽ ॥ अस्थपद्ध+पिवतमादयद्धन्तु सायातपुथिभिर्देवुयानैर्दं ॥
॥ ३७ ॥ (अपसव्यम् ।) उत्तिष्ठन्तु पितरः । (सव्येन) विश्वेदेवैः सह ॥
(अपसव्यम् ।) तिलोदकविसर्जनम् । भोजनपात्राण्युच्चारयेत् ॥ विकिरं
त्यजेत् । (सव्यम् । आचम्य) । आशीर्वादः । आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं
मोक्षं सुखानि च ॥ मयच्छन्तु तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः ॥ यं
यं कामं कामयते सोऽस्मै समृद्ध्यते ॥ पूर्वोद्धरितं कुरुकुत्ससं-
ज्ञकानां विश्वेषां देवानाम् (अपसव्यम् ।) गोत्राणामस्मत्पितृ-पितामह-
प्रपितामहानां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहममातामह-
वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां गोत्राणामस्मत्समस्तपूर्वजनानां वसुरू-
पाणां मम पितृणां अमृकस्य कन्यागते सवितरि महालयापरपक्षश्राद्ध-
यज्ञारख्येन कर्षणा मम समस्तपितृस्वरूपी भगवान् जनार्दनवासुदेवः

१ पितृश्राद्धे मासिके मम पितुः (अमृक) मासिकश्राद्धश्राद्धेन ॥ सावत्सरिके-
मम पितुः सावत्सरिकश्राद्धश्राद्धेन ॥ मातृश्राद्धे मासिके—मम मातुः (अमृक) मासि-
कश्राद्धश्राद्धेन ॥ सावत्सरिके—मम मातुः सावत्सरिकश्राद्धश्राद्धेन ॥

प्रीयताम् ॥ कृतेऽस्मिन् श्राद्धे यद्व्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं महाविष्णोः
 प्रसादात् परिपूर्णमस्तु । अस्तु०॥ (सव्यम्) तुलसीदलं गृहीत्वा ।
 यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपःश्राद्धक्रियादिषु ॥ व्यूनं संपूर्णतां
 याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ आचार्यभाले तिलककरणम् ॥ यथाशक्ति
 दक्षिणां दद्यात् ॥ श्राद्धसांगतासिद्धयर्थं यथाशक्ति दक्षिणां तुभ्यमहं
 संप्रददे ॥ गोनिष्कयीभूतं द्रव्यं श्राद्धयज्ञसिद्धयर्थमाचार्याय तुभ्यमहं
 संप्रददे ॥ आचार्यो ब्रूयात् । गयाकृतश्राद्धसफलमस्तु । पितृणां प्रसा
 दोऽस्तु । धनकनकसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ अच्युताय नमः । ॐ गयायै नमः
 ॐ गदाधराय नमः । ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥

ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः— अद्यपूर्वाचरित० मम पितुः अमुक्
 श्राद्धनिमित्तब्राह्मणभोजनसमाराधनेन मम पितृस्वरूपी जनार्दन
 वासुदेवः प्रियतां नमम ॥

गोग्राससङ्कल्पः— सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता
 गोग्रासं च मया दत्तं सुरभे प्रतिगृह्यताम् ॥ इदं गोभ्यो न मम ॥

श्वानग्रासमंत्रः— द्रौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ
 ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि रक्षेतां पथि मां सदा ॥ इदं श्वभ्यां न मम ।

वायसान्नमंत्रः— यमोऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महाबलः
 तुभ्यमन्नं प्रदास्यामि वायस प्रतिगृह्यताम् ॥ इदं वायसेभ्यो न मम ।

इति ठाकरोपाह्वगीर्वाणविद्याभूषणशास्त्रिदुर्गाशङ्करतनूजयज्ञदत्तश
 र्मणा संयोजितो महालयचटश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥

॥ इति महालयचटश्राद्धप्रयोगः ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

